अग्नि-दीक्षा

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की

अग्नि-दीक्षा

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की

अग्नि-दीक्षा

अनुवादक
अमृतराय

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.,
नयी दिल्ली

दिसम्बर १९७७ (PH 27)

पहला हिन्दी संस्करण : नवम्बर १९५४
दूसरा हिन्दी संस्करण : जुलाई १९६३
तीसरा हिन्दी संस्करण : जनवरी १९७३
चौथा हिन्दी संस्करण : दिसम्बर १९७७

मूल्य : ६ रुपये

जितेन सेन द्वारा न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, रानी झांसी रोड, नयी दिल्ली में मुद्रित और उन्हीं के द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड, रानी झांसी रोड, नयी दिल्ली की तरफ से प्रकाशित।

निकोलाई आॅस्त्रोवस्की के उद्देश्य के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए फ्रांस के मनीषी श्री रोम्यां रोलां ने लिखा था :

"विप्लव के बीच जिन नये मनुष्यों का जन्म होता है, वे ही मनुष्य विप्लव की सबसे महान रचना होते हैं। कष्टों से पीड़ित पृथ्वी को विदीर्ण करके उसीके भीतर से एक महान, उदात्त संगीत की तरह नवजीवन का विस्फोट होता है। वह एक ऐसे अग्निमय प्राण के समान होता है जो नये विश्वास की घोषणा करके सातों आकाशों को गुंजाता दिखाई देता है। ऐसे मनुष्य जब पृथ्वी से उठ जाते हैं, तो उसके बहुत दिनों बाद तक भी उनकी विश्वासभरी वाणी दसों दिशाओं में प्रतिध्वनित होती रहती है। भविष्य में ये ही व्यक्ति महाकाव्यों और वीरचरित गाथाओं के नायक और प्रेरक बनते हैं।

"निकोलाई आॅस्त्रोवस्की ऐसे ही मनुष्य थे। साहसपूर्ण और उद्दीप्त प्राण के लिये समर्पित उनकी जीवन कहानी मानो एक उदात्तमय संगीत है।... आॅस्त्रोवस्की का समग्र अस्तित्व कर्मभुख संग्राम की एक अग्निमय शिखा के समान था। मृत्यु की रात्रि उसे जितना ही चारों ओर से घेरती थी, वह शिखा उतनी ही उज्ज्वल ज्योति से उद्भासित हो चमक उठती थी।

"आॅस्त्रोवस्की ने एक बार भावनापूर्ण भाषा में मेरे पास अभिनन्दन भेजा था और उसके उत्तर में मैंने लिखा था: 'आपको जीवन के अनेक अन्धकारमय दिनों के बीच से गुजरना पड़ा है, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि आपका वही जीवन आकाशदीप की तरह सहस्रों व्यक्तियों को दिशाओं का निर्देश करायेगा। दुनिया के लिये आप एक उदाहरण हैं। व्यक्तिगत मुसीबतों के आप पर जो छिपे प्रहार हुए, उनके खिलाफ आपका जीवन आत्मिक शक्ति की विजय का एक प्रेरणाप्रद उदाहरण है। कारण कि आपने अपना जीवन स्वदेश की महान जनता के साथ एकाकार कर दिया था—उसी जनता के साथ जो अपनी शक्ति के बल पर आज पुनर्जीवित हो दृढ़ता के साथ अधिकारों का उपभोग कर रही है। जनता के उसी शक्तिप्रद आनन्द और दुर्दम्य प्राणशक्ति को आपने अपने जीवन में आत्मसात किया। जनता के साथ आपका वह एकाकार होना पूर्ण रूप से सफल हुआ है।'..."

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की और उनका उपन्यास

सोवियत साहित्य के इतिहास में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास **अग्नि-दीक्षा** की बहुत महत्वपूर्ण जगह है। इस पुस्तक की रचना, और इसी की रचना नहीं, ऑस्त्रोवस्की का समूचा साहित्यिक कृतित्व एक वीर बोल्शेविक के साहस की कहानी है।

ऑस्त्रोवस्की का जन्म १९०४ में रोवनो प्रदेश के ऑस्त्रोजस्की जिले के विलिया नामक ग्राम में हुआ था। उसका पिता मजदूर था मगर आमदनी इतनी कम थी कि उसकी माँ और छोटी बहनों को खेत-मजदूर का काम करना पड़ता था। उसका बड़ा भाई एक लुहार का अपरेन्टिस था जो अपने मजदूरों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करता था। इस भावी लेखक के बचपन पर बेहद गरीबी और कठोरतम शोषण की जो छाया पड़ी थी, उसने उसके हृदय में अपने वर्ग-शत्रुओं के विरुद्ध तीक्ष्ण घृणा का बीज बो दिया था और सामाजिक अन्याय और मनुष्य के अपमान के विरुद्ध प्रतिवाद करने की प्रेरणा भी डाल दी थी। नौ बरस की उम्र में वह गड़ेरिये का काम करता था और ग्यारह बरस की उम्र में उक्रैन के शेपेतोवका नामक नगर के स्टेशन पर एक छोटे से रेस्तोराँ में बावर्चीखाने में काम करता था।

रेस्तोराँ में गन्दगी और गुलामी का जो वातावरण था, उससे बचने के लिए किशोर निकोलाई अपना अधिकांश समय अपने भाई के साथ गुजारता था जो रेलवे डिपो में एक मिस्त्री था।

इसी जगह पर उसने मानव अधिकारों के लिए मजदूरों के संघर्ष की बात सीखी और बोल्शेविकों के मुंह से लेनिन और उनके विचारों के बाबत सुना।

गांव के स्कूल में किशोर निकोलाई आॅस्त्रोवस्की ने अपना परिचय एक असाधारण मेधावी विद्यार्थी के रूप में दिया। जब वे लोग शेपेतोवका आ गये तो निकोलाई के माता-पिता ने उसको एक-दो साल स्कूल में भेजा। मगर कुछ ही महीनों बाद धर्मशास्त्र पढ़नेवाले पादरी की सिफारिश पर उसको वहां से निकाल दिया गया क्योंकि वह टेढ़े-टेढ़े सवाल करके पादरी साहब को तंग किया करता था।

१९१७ की क्रान्ति ने निकोलाई आॅस्त्रोवस्की के लिए शिक्षा के दरवाजे खोले। वह बिजलीघर में आगवाले का काम भी करता था और उसके साथ ही साथ पढ़ता भी था और स्कूल से निकलनेवाले एक साहित्यिक पत्र और अपनी ही स्थापित की हुई एक साहित्यिक गोष्ठी के संचालन में भी योग देता था। किशोरावस्था में निकोलाई आॅस्त्रोवस्की के सबसे पूजनीय वीर गैरीबाल्डी और गैड-फ्लाई जैसे लोग थे। वह बहुत पढ़ता था और उक्रेन के महान क्रान्तिकारी कवि तारस शेवचेन्को की कृतियां, गोगोल की रोमानी कहानी 'तारस बुल्बा' और दूसरे महान प्राचीन लेखकों की कृतियां किशोर आॅस्त्रोवस्की को सबसे ज्यादा भाती थीं और उसके मन पर उन्हीं का सबसे ज्यादा असर था।

उक्रेन में घमासान गृहयुद्ध हो रहा था और नयी पीढ़ी के लोगों को अपनी ओर खींच रहा था। किशोर आॅस्त्रोवस्की और उसके अन्य मित्र, आक्रमणकारियों से और देश के साथ विश्वासघात करके जर्मन सेनाओं से मिल जानेवाले उक्रेनी पूंजीपतियों से लड़ने में गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी को मदद पहुंचाते थे। शेपेतोवका के मुक्त हो जाने पर नौजवान आॅस्त्रोवस्की ने आगे बढ़कर वहां की जिन्दगी को व्यवस्थित करने और चोरबाजारी करनेवालों और क्रान्ति के दुश्मनों से लड़ने में क्रान्तिकारी कमिटी को मदद पहुंचाई।

निकोलाई आॅस्त्रोवस्की शेपेतोवका के सबसे पहले के पांच नौजवान कम्युनिस्टों में से एक था। अगस्त १९१९ में वह घर से भाग गया और लाल सेना में दाखिल हो गया और यहां पर उसने अपना परिचय एक बहादुर सैनिक के रूप में दिया। १९२० के ग्रीष्म में वह पहली घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी के साथ, जिसने क्रान्ति-विरोधी पोलों के विरुद्ध संघर्ष में बड़ी कीर्ति अर्जित की थी, अपने नगर लौटा। मगर युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ था और पन्द्रह वर्षीय आॅस्त्रोवस्की फिर मोर्चे पर जाने के लिए सेना में भर्ती हुआ। लुओव की लड़ाई में वह बुरी तरह घायल हुआ और उसकी दाहिनी आंख की रोशनी जाती रही। अस्पताल में दो महीना गुजारने के बाद उसे सेना से छुट्टी दे दी गई और वह शेपेतोवका लौट आया।

१९२१ के ग्रीष्म में आॅस्त्रोवस्की कीव चला गया जहां वह एक स्थानीय कोमसोमोल (नौजवान कम्युनिस्ट) संगठन का प्रधान बना और उसके साथ ही साथ

एक रेलवे कारखाने में एलेक्ट्रीशियन का काम भी करता रहा। ये बहुत कठिन दिन थे। रोटी और ईंधन की सख्त कमी थी। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की नौजवान मजदूरों की एक टुकड़ी का नेता बना जिसका काम कुछ दूर के एक जंगल से शहर में लकड़ी लाने के लिए नई रेलवे लाइन बिछाना था। यह काम बहुत ही कठिन हालतों में किया गया और गोकि इस काम में कामयाबी मिली मगर इसमें शक नहीं कि निकोलाई ऑस्त्रोवस्की की तन्दुरुस्ती टूट गई। इसके तुरन्त बाद ही पतझड़ के दिनों में, जब कि अभी निकोलाई ऑस्त्रोवस्की अपनी बीमारी के बाद ठीक भी नहीं हो पाया था, वह अपने कोमसोमोल साथियों के साथ मिलकर बाढ़ में से लकड़ी के पट्टे बचाकर निकालने में लग गया और इस काम के लिए उसे नीपर नदी में घुटने-घुटने भर बर्फानी पानी में खड़ा रहना पड़ता था।

लड़ाई का उसका जख्म, टाइफस बुखार और भयंकर गठिया—तीनों ने मिल कर ऑस्त्रोवस्की की तन्दुरुस्ती को इस बुरी तरह से तोड़ दिया कि उसे कीव का अपना काम छोड़ना ही पड़ा। मगर यह बात उसके गले के नीचे नहीं उतरती थी कि उसे बाकायदा रोगी करार दिया जाय और देश के राजनीतिक और रचनात्मक जीवन से उसका सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया जाय। वह बराबर आग्रह करता था कि उसको काम दिया जाय और तब फिर मजबूर होकर उसकी इच्छा का पालन करने के लिए उसे बेरोजदोव भेजा गया। बेरोजदोव पुरानी पश्चिमी सीमा पर एक छोटा सा उक्रेनी नगर था और वहां पहुंचकर ऑस्त्रोवस्की तुरन्त ही पार्टी और कोमसोमोल के महत्वपूर्ण काम में जुट गया।

१९२४ में ऑस्त्रोवस्की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बना। तब तक उसकी तन्दुरुस्ती इतनी चौपट हो चुकी थी कि उसके लिए कोई भी काम करना असम्भव था। अच्छे से अच्छे विशेषज्ञों ने उसकी चिकित्सा की और उसे बहुत दिन तक सेनेटोरियम में भी रखा गया, मगर उस सबसे कोई नतीजा नहीं निकला और उसकी बीमारी बराबर तेजी से बढ़ती गई। १९२६ के अन्त तक आते-आते यह बात साफ हो गई कि यह वीर नवयुवक इसी तरह आजीवन शैया-ग्रस्त ही रहेगा। तीन साल बाद वह बिलकुल अन्धा हो गया और १९३० में हाथों और कुहनियों को छोड़कर सारा शरीर ऐसा जकड़ गया कि हिल-डुल भी न सकता था।

अब उसके अच्छे होने की कोई उम्मीद न थी और ऐसी हालत में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने एक ऐसी योजना अपने लिए निकाली, "जो उसके जीवन को कुछ सार्थकता दे सके।" उसकी अपनी स्थिति चाहे जितनी करुण रही हो, यह नौजवान बोल्शेविक ऐसे जीवन की कल्पना भी न कर पाता था जो जनता के कार्यों और संघर्षों से अलग हो। उसने लड़नेवालों की कतार में एक बार फिर शरीक होने का संकल्प किया और इस बार उसके हाथ में एक नया हथियार था—उसकी कलम। उसको

एक ऐसी किताब लिखने की लौ लगी थी जिसमें गुजरे हुए बहादुर जमाने की कहानी हो और जो पार्टी की नई पीढ़ी को कम्युनिस्ट भावना के अनुसार ढालने में मदद पहुंचा सके। पार्टी के प्रति उसकी यही सेवा होगी।

शायद १९२५ या १९२६ में अपनी भयानक बीमारी के पहले दौर में, यह विचार पहली बार ऑस्त्रोवस्की के मन में आया। बीते हुए सबसे शुरू के दिनों के कोमसोमोल सदस्यों के बहादुरी से भरे कारनामों और उन बीते दिनों के बारे में बातें करना उसे अच्छा मालूम होता था। और जिस तरह वह कहानी सुनाता था, उससे साफ पता चलता था कि उसको कहानी कहना आता है। मगर उन दिनों ऑस्त्रोवस्की यह नहीं सोचता था कि वह लेखक बनेगा। वह तो बाद में जब कम्यु-निस्ट विश्वविद्यालय ने चिट्ठी-पत्री के कोर्स के जरिए उसको मार्क्सवाद और लेनिनवाद की खूब अच्छी शिक्षा दी, तब वह अपने अनुभवों को नई रोशनी में देखने लगा और उसने इस बात को समझा कि उसकी मातृभूमि की आजादी में लेनिन की पार्टी ने कितना अधिक योग दिया है और कम्युनिज्म के विचारों में वह कौन-सी ताकत है जिसने उसके देश, देशवासियों को और खुद उसको भी एकदम बदल दिया है।

ऑस्त्रोवस्की बड़े मनोयोग से पुराने रूसी लेखकों—पुश्किन, गोगोल, तुर्गनेव, तोल्सतोय, चेखोव और, सबसे अधिक गोर्की की कृतियां पढ़ता था। गोर्की की कुछ चुनी हुई रचनाओं का एक संग्रह, 'मां' और ऐसी ही कुछ और किताबें ऑस्त्रोवस्की बराबर पढ़ा करता था। बाद के सालों में जब उसकी आंख की रोशनी चली गई थी, तब वह अपने दोस्तों और सम्बन्धियों से अनुरोध करता था कि वे उसको गोर्की पढ़कर सुनायें और साहित्य के सम्बन्ध में और मजदूर वर्ग के लेखक के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में गोर्की के विचार नकल करके उसको दें। उसने गृहयुद्ध के बारे में समस्त राजनीतिक साहित्य बहुत अच्छी तरह पढ़ा और उसमें भी खास तौर पर दिमित्री फुर्मानोव की दो कृतियां 'चपाइयेव' और 'म्युटिनी', सेराफिमोविच का 'आयरन फ्लड' और फादियेव का 'डिबेकिल'। इन सभी किताबों में रूस के स्वतंत्रता संग्राम और नये सोवियत मानव के जन्म की कहानी थी।

इसके बाद प्रथम पंचवर्षीय योजना के वर्ष आए।

अन्य सोवियत नागरिकों की तरह लाखों कोमसोमोल सदस्यों ने भी मेगनिटोगोर्स्क के लोहे के कारखाने, नीपर के लेनिन हाइड्रो-एलेक्ट्रिक स्टेशन, वोल्गाग्राद ट्रैक्टर प्लान्ट और इसी तरह के दूसरे विशाल निर्माण-कार्यों में हाथ बटाया। दूसरी ओर इन्हीं दिनों करोड़ों किसानों ने सामूहिक खेती के आन्दोलन में अपना योग दिया।

इन्हीं महान घटनाओं के असर से निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के नायक का अन्तिम रूप उसके मन में आया, वह नायक जिसे उसका सृष्टा "हमारे युग का चरित-नायक" पुकारता है।

नवम्बर १९३० में एकदम अन्धे और अशक्त हो जाने पर उसने अपने उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा' पर काम करना शुरू किया। इस किताब का कुछ हिस्सा लेखक ने अपने हाथ से लिखा था, बावजूद उन तमाम कठिनाइयों और उस दर्द के जो निश्चय ही उसे महसूस हुआ होगा। बाकी उसने अपनी पत्नी, बहन और सबसे आत्मीय मित्रों को बोलकर लिखाया था। जून १९३३ में यह किताब पूरी हुई।

* * *

'अग्नि-दीक्षा' नये मानव के जन्म की कहानी है, समाजवादी युग के उस नये मनुष्य की जो मानवता के सुख के लिए होनेवाले संघर्ष में सब कुछ करने की योग्यता अपने अन्दर दिखलाता है, जो बड़े-बड़े काम अपने सामने रखता है और उन्हें पूरा करके दिखलाता है।

जिस हालत में यह किताब लिखी गई—इसको लिखने के लिए लेखक को जिस तरह यन्त्रणा से और रोग से लड़ना पड़ा, पार्टी और सोवियत अधिकारियों ने जिस तरह उसकी सहायता की जो न तो उसके मित्र थे और न सम्बन्धी—वह खुद इस बात का परिचायक है कि मानव-सम्बन्धों में कितना बड़ा परिवर्तन आ चुका है और नये मनुष्य का जन्म हो गया है।

जीवन की घोषणा करनेवाले जिस सशक्त विचार ने इस युवा लेखक के मन को पकड़ लिया था, और जिस तरह लेखक ने अपने-आपको "संसार की श्रेष्ठतम वस्तु: मानवता की स्वतंत्रता" के संघर्ष पर अपने-आपको न्यौछावर कर दिया था, यही वह चीज थी जो उन सब लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लेती थी जो निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के सम्पर्क में आते थे।

'अग्नि-दीक्षा' लेखक की अपनी जिन्दगी की कहानी है मगर वह इससे भी ज्यादा कुछ है—"वह एक उपन्यास है और केवल कोमसोमोल के सदस्य ऑस्त्रोवस्की का जीवन-चरित्र नहीं है," जैसा कि उसके लेखक ने स्वयं लिखा है। यह बात कि पावेल कोर्चागिन के रूप में हम आसानी से उसके सृष्टा को पहचान लेते हैं, ऑस्त्रोवस्की का एक विशेष गुण है—अपने नायक के साथ उसका अत्यन्त घनिष्ठ सम्पर्क। नायक और लेखक दोनों के निजी, सामाजिक व रचनात्मक जीवन घनिष्ठ रूप में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और दोनों ही का लक्ष्य जनता की सेवा है। यह गुण सभी सोवियत लेखकों में पाया जाता है और यही कारण है कि उनके विचित्र चरित्रों में सच्चाई और विश्वसनीयता आती है।

अपने जीवन-चरित्र को नये सांचे में ढालते हुए, जो कि बहुत हद तक उसकी समूची पीढ़ी का जीवन-चरित्र है, निकोलाई ऑस्त्रोवस्की अपना उपन्यास अपने नायक के बचपन की एक तस्वीर देकर शुरू करता है और पाठक को दिखलाता है कि किस तरह एक शत्रुता से भरे हुए परिवेश के विरुद्ध संघर्ष करते हुए पावेल कोर्चागिन के मन और चरित्र का निर्माण होता है; कैसे उसके विचार पकते हैं और उसकी इस आवश्यकता की जागृति होती है कि परिवेश और सम्पूर्ण समाज-व्यवस्था को नये सिरे से बनाना है; कैसे समाजवाद के लिए जनता का संघर्ष सामाजिक जीवन की आर्थिक स्थितियों को बदलकर एक नई समाजवादी चेतना को जन्म देता है और सामाजिक और वैयक्तिक आचरण के एक नये मानदंड की स्थापना करता है, जो कि वास्तव में एक मानवीय आचार का आधार है।

समाजवादी प्रणाली में श्रम की प्रकृति, उसका रूप और प्राण दोनों बदल जाते हैं और करोड़ों आदमी निर्माण में लगी हुई एक ही समष्टि के अंग बन जाते हैं जो एक ही योजना के अन्तर्गत अपनी मातृभूमि के लिए एक नये जीवन का निर्माण करते हैं। ये परिवर्तन फिर ऑस्त्रोवस्की के नायकों के विचारों, भावनाओं और उनके आपसी सम्बन्धों को बदल देते हैं।

जहां तक पावेल कोर्चागिन की बात है, श्रम और समाजवादी सम्पत्ति के प्रति नया दृष्टिकोण उसके अन्दर लड़ाई के मोर्चे से लौटने के तत्काल बाद ही दिखाई देने लग जाता है। उसके अन्दर इस भावना का जन्म होता है कि वह अपने कार-खानों और अपने देश का मालिक है। उत्पादन के नये सम्बन्धों से पैदा होनेवाली यह नई भावना ही कोर्चागिन के उस संघर्ष की अनुप्रेरक शक्ति है जो वह आलसी और स्वार्थी लोगों के खिलाफ करता है, उन मजदूरों के खिलाफ जो अपने औजारों के प्रति लापरवाही बरतते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि वे सब अब जनता की मिल्कियत हैं। वही भावना कोर्चागिन को कोमसोमोल का एक कर्मठ कार्यकर्ता बनाती है, तोड़-फोड़ करनेवालों और चोरी-छिपे व्यापार करनेवालों के खिलाफ डट कर लड़नेवाला सैनिक बनाती है और गांवों में सामूहिक खेती का एक अत्यन्त उत्साही संगठनकर्ता बनाती है। समाजवादी निर्माण के युग में स्वामित्व की भावना एक नये उच्चतर धरातल पर पहुंच जाती है। करोड़ों आदमी समाजवादी उद्योग-धन्धों और सरकारी व सामूहिक खेतों के सजग निर्माता बन जाते हैं। अपनी जनता के रचनात्मक श्रम में योग देने की अदम्य भावना ही पावेल को अपनी उस अन्तिम रचनात्मक सिद्धि के पास पहुंचाती है।

पावेल कोर्चागिन की वीरता रूस के मजदूर वर्ग के अन्दर निहित वीरता है। इस वीरता की प्रकृति पावेल कोर्चागिन की जिन्दगी के हर नये दौर के साथ बदलती जाती है। वह लड़का जो जुखराई को पेतुल्युरा के सिपाही के चंगुल से छुड़ाता है,

अभी पूर्ण रूप से क्रान्तिकारी नहीं है। अपनी जीवन स्थिति के खिलाफ जो सहज प्रतिवाद पावेल कोर्चागिन करता है, वह उसको वर्ग-संघर्ष के भीतर खींच लाता है और उसी रास्ते पर बढ़ते हुए उसके अन्दर समाजवादी चेतना का उदय होता है। गृहयुद्ध के दिनों में ऊंचे आदर्शों के लिए उसके भीतर जो आत्मोत्सर्ग की भावना रहती है, उसीसे उस सजग कम्युनिस्ट आत्म-अनुशासन का जन्म होता है जो जनता के लिए एक उदाहरण बनता है और फिर धीरे-धीरे उपन्यास के अन्त तक पहुंचते-पहुंचते एक प्रौढ़ समाजवादी चेतना का रूप ले लेता है, जो कोर्चागिन के चरित्र और आचरण का नियमन करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह बीमार और अशक्त नायक निर्माण के संघर्ष में लगे हुए लोगों की पंक्ति में एक बार फिर से आने के लिए जिस तरह का अनोखा संघर्ष करता है, उसके लिए वह किसी रूप में बाध्य नहीं है और अगर कोई बाध्यता है तो यही कि वह भी समाजवाद के लिए संघर्ष करनेवाली करोड़ों जनता का एक अंग बनना चाहता है और इसी की अदम्य प्रेरणा उसको निरन्तर आगे बढ़ाती रहती है।

पावेल कोर्चागिन ने शुरू-शुरू में क्रान्ति के प्रति अपने कर्त्तव्य को जिस रूप में समझा था उसमें अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी के लिए कोई भी जगह न थी, यहां तक कि उस प्रेम के लिए भी कोई जगह न थी जो यौवन का एक नैसर्गिक गुण है। पावेल मध्यवर्गी घराने की लड़की तोनिया से अपनी दोस्ती को खतम कर देता है और कम्युनिस्ट लड़की रिता उस्तिनोविच के प्रति अपने प्रेम को शुरू में ही दबा देता है। मगर कुछ ही वर्षों बाद पावेल कोर्चागिन अपने सृष्टा की भांति, अपने वैराग्य को छोड़ता है अपनी इच्छाशक्ति का कड़े-से-कड़ा इम्तहान लेने के लिए अकारण ही अपने-आपको कष्ट देना, जो कि उन दिनों कोमसोमोल के पहले सदस्यों में बहुत हुआ करता था, बन्द कर देता है।

पावेल की मां और उसकी पत्नी ताया क्रान्तिकारी संघर्ष में उसकी साथिनें हैं। वह खुद उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर लाता है और इस तरह उनके जरिए निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करता और उस क्रम को टूटने नहीं देता है।

* * *

अपने नायक का चित्रण करने में निकोलाई आस्त्रोवस्की दिखलाता है कि किस तरह पावेल कोर्चागिन के सबसे अच्छे गुण, समाजवाद के लिए जनता के संघर्ष में योगदान देने की प्रक्रिया में पैदा होते, मंजते और निखरते हैं। आस्त्रोवस्की के नायक का जो आन्तरिक सौन्दर्य है, जिस चीज के लिए वह खड़ा है, उसकी विजय का बीज उन तमाम घटनाओं में है और उनकी ऐतिहासिक सच्चाई में है जिसका चित्रण उपन्यास में हुआ है। यही वह चीज है जो पावेल कोर्चागिन को अपनी पीढ़ी का एक प्रतिनिधि नायक बनाती है।

समष्टि से हटकर हम पावेल कोर्चागिन की कल्पना भी नहीं कर सकते। हम उसे अपने ऐसे साथियों से अलग करके देख ही नहीं सकते—जैसे सर्योजा ब्रुजाक जो कि इसलिए युद्ध में जाता है ताकि फिर युद्ध न हो; जैसे सर्योजा की बहन वालिया, वह वीर युवती देशभक्त जिसे क्रान्ति-विरोधी पोल मार डालते हैं; जैसे ईवान जार्की, वह अनाथ लड़का जिसे लाल सेना की एक कम्पनी गोद ले लेती है; जैसे जिला कोमसोमोल का मंत्री ओकुनेव; और नौजवान जहाजी मजदूर ईवान पांक्रातोव।

अपने साथियों की भांति पावेल कोर्चागिन ने भी अपने सबसे अच्छे गुण पुराने बोल्शेविकों से पाये हैं, जो क्रान्तिकारी संघर्ष में उन नौजवानों के नेता और शिक्षक हैं। उपन्यास में इस पुरानी बोल्शेविक पीढ़ी का नेतृत्व इस तरह के लोग करते हैं, जैसे बोलोस्त की गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी का प्रधान दोलिनिक जो थकना नहीं जानता; जैसे वह बहादुर क्रान्तिकारी फियोदार जुखराई जो पहले मल्लाह था और १६१५ से ही बोल्शेविक पार्टी का सदस्य था; जैसे तोकोरेव जो गुप्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का कार्यकर्त्ता था; जैसे फौजी कमिसार क्रेमर और इसी तरह के और भी बहुत से लोग। ये दोनों पीढ़ियां आपस में ऐसे धागों से जुड़ी हुई हैं जो दिखायी नहीं देतीं मगर अटूट हैं।

कोर्चागिन के बहादुरी के कारनामे वैसे ही हैं जैसे उसके साथियों के। पावेल कोर्चागिन किसी मतलब में उन हजारों लोगों से अलग नहीं है जो उसी रास्ते पर चलते हैं। बिना इस बात की चिन्ता किए कि इसका क्या नतीजा होगा, पावेल गिरफ्तार जुखराई को पकड़कर ले जाने वाले पेतल्युरा सैनिकों पर हमला बोल देता है; सर्योजा ब्रुजाक, जिसके मन में अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह और मानवता के प्रेम की भावना है, अपने को एक बूढ़े यहूदी के आगे डाल देता है जब एक नशे में चूर पेतल्युरा सैनिक बुड्ढे पर अपनी तलवार चलाता है। पावेल कोर्चागिन पहली घुड़सवार सेना की मशहूर कार्रवाइयों में हिस्सा लेता है; ईवान जार्की क्रान्ति-विरोधियों के हाथ से क्रीमिया को मुक्त कराने की लड़ाई में नाम कमाता है।

रेल की पटरी बिछाने के काम में कोर्चागिन के मित्र भी उसी लगन और निःस्वार्थ सेवा-भावना का परिचय देते हैं जो स्वयं पावेल में पाई जाती है। यह भी गौर करने की बात है कि सेर्गेई ब्रुजाक का चरित्र भी ऑस्त्रोवस्की ने जीवन से ही लिया है। इस उपन्यास के अनेक चरित्रों में एक से ही मानव-गुण पाये जाते हैं और यही चीज उनको उतना सजीव और प्रातिनिधिक बना देती है।

पावेल और उसके मित्रों के सामने प्रेम और मैत्री का एक बहुत ही ऊंचा और नैतिक दृष्टि से अत्यन्त पवित्र मानदण्ड रहता है। उपन्यास में प्रेम और मैत्री

की भावना अजस्र भाव से बहती रहती है और उसको अनेक दृश्यों में विशेष महत्व दिया गया है—जैसे पावेल और तोनिया की मुलाकात और सर्योजा और रिता की मुलाकात, जिसमें कि प्रेम के उदय का वर्णन किया गया है, और पावेल व ताया, उसकी पत्नी और साथिन, के परस्पर सम्बन्ध का चित्रण। रिता उस्ति-नोविच, आना बोर्हार्ट, लिदिया पोलेविख और दूसरे नारी पात्र, सभी पवित्र और ऊंचे चरित्र वाले हैं और उन सबसे पता चलता है कि मानव-सम्बन्धों में कितने महान परिवर्त्तन हो चुके हैं।

यह उपन्यास उन सभी बातों की भर्त्सना करता है जो कुत्सित हैं और मनुष्य का अधःपतन दिखलाती हैं। इस चीज का पता बहुत सी बातों से चलता है—जैसे पावेल का रवैया उस पतित त्रात्स्कीपन्थी दूबावा की ओर; उस दुश्चरित्र फाइलो से उसकी मुलाकात; और फिर लेखक ने राजवालिखिन और लिदा के बीच की बातों का चित्रण जिस प्रकार से किया है, उससे भी इस बात का पता चल जाता है। निकोलाई आॅस्त्रोवस्की दिखलाता है कि किस तरह राजनीतिक जिन्दगी में दुरंगी चाल चलने और अपनी निजी जिन्दगी में नैतिक रूप से पतित होने का चोली-दामन का साथ है। वह दिखलाता है कि जनता के दुश्मन और पार्टी और कोमसोमोल के क्षणिक अनुयायी किस प्रकार स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को कुत्सित दृष्टि से देखते हैं। इस उपन्यास के भीतर-भीतर चलनेवाला एक सबसे महत्वपूर्ण विचार यह है कि बोल्शेविक आदर्श ऊंचे-से-ऊंचे नैतिक मानदण्ड के साथ अभेद्य रूप में जुड़े रहते हैं और दोनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

इस उपन्यास के अलग-अलग जो व्यक्ति पात्र हैं, वे सब मिलकर जनता की एक विशाल मूर्ति बन जाते हैं और यह कहा जा सकता है कि जनता ही इस उप-न्यास की नायक है। पूरे उपन्यास में जनता की सामूहिक कार्रवाइयों के जो चित्र मिलते हैं, उन सबमें जनता का चित्रण बहुत अच्छी तरह किया गया है—जैसे लड़ाई, रेल की पटरियों का बिछाना, पार्टी और कोमसोमोल की मीटिंगें जिनमें त्रात्स्कीपन्थियों को पीछे ढकेला जाता है, सोवियत-पोलिश सीमा पर उत्सव मनाया जाना। ये दृश्य पात्रों के निजी जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। इन सभी दृश्यों में वे बड़ी-बड़ी समस्याएं, जो कि समूचे राष्ट्र के सामने हैं, अपना हल पा लेती हैं। देश से प्रेम, देश के शत्रुओं से दुर्दान्त घृणा, सभी छोटी-बड़ी बातों में वीरता और ऊंचे आदर्श, अन्तर्राष्ट्रीयता की एक गहरी चेतना जो कि मजदूर वर्ग की अपनी खास चीज है और समाजवादी मानवता—ये सब चीजें आॅस्त्रोवस्की के नायकों के वैयक्तिक गुण या विशेषता न होकर एक समूचे राष्ट्र का गुण बन जाती हैं। यह ध्यान देने की बात है कि जहां रेल की पटरी बिछाने का वह कमर-तोड़ काम हो रहा था, वहीं पर ये शब्द बोले गये थे—लोहा इसी तरह आग में तप कर फौलाद बनता है।

कलाकार आॅस्त्रोवस्की जीवन के तीक्ष्ण अन्तर्विरोधों से कन्नी नहीं काटता और न अत्याचार और शोषण के दम तोड़ते हुए संसार के खिलाफ एक नये संसार, रचनात्मक श्रम के संसार के निर्माण के लिए होनेवाले संघर्ष की कठिनाइयों को ही कम करके देखता है। वह इस बात को नहीं छिपाता कि वह पिछला अभिशप्त अतीत किस प्रकार मजदूर वर्ग पर अपना प्रभाव डालता रहता है और किस प्रकार यह प्रभाव नये समाज के निर्माण की क्रिया में ही खतम होता है। वह अपने नायक पावेल कोर्चागिन की कमजोरियों से भी आँख नहीं चुराता। आॅस्त्रोवस्की के उपन्यास की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण यह है कि वह जहां यह दिखलाता है कि किस प्रकार एक वीर चरित्र का निर्माण होता है, वहां साथ ही यह भी दिखलाता है कि व्यक्तियों की चेतना में से पूंजीवाद के अवशेषों को कैसे दूर किया जाता है।

रूसी उपन्यास की यह जो ख्याति रही है कि उसमें भावों की गहराई और सामाजिक अन्तर्विरोधों और सामाजिक संघर्षों के भीतर गहरी अन्तर्दृष्टि मिलती है, रूसी उपन्यास की इस परम्परा को आॅस्त्रोवस्की आगे ले जाता है। रूसी साहित्य में अब तक जितने भी वीर चरित्रों की सृष्टि हुई है, उन श्रेष्ठतम वीर चरित्रों में से पावेल भी एक है। मगर आॅस्त्रोवस्की ने अपने नायक में एक नये गुण का समावेश किया है जो कि पावेल कोर्चागिन के किसी भी पूर्वज में नहीं था। समाजवाद के निर्माण की क्रिया ने, समाजवादी समाज ने उसके अन्दर इस गुण का समावेश किया और वह गुण था एक आगे बढ़े हुए सामाजिक आदर्श के संघर्ष की क्रिया में व्यक्ति का अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्य। १६२८-२६ के आसपास से लेकर १६३३-३४ के आसपास तक की जिन्दगी ने ही लेखक को यह बात दिखला दी थी कि सोवियत मनुष्य केवल नेता या सेनापति या संगठनकर्ता नहीं है, बल्कि एक साधारण बोल्शेविक या साधारण कोमसोमोल सदस्य के नाते उसके पास अपनी एक समृद्ध आन्तरिक दुनिया है और अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति अपना नया दृष्टिकोण है, और खुद अपनी निजी जिन्दगी है। पावेल कोर्चागिन, जो अपने-आपमें एक बहुत संगठित चरित्र है, सोवियत समाज के विकास के एक पूरे दौर का प्रतिनिधित्व करता है, उस दौर का जिसमें इतिहास के प्रांगण में एक नये मनुष्य का आविर्भाव होता है।

जनता समाजवाद के लिए जो संघर्ष करती है, वही इस उपन्यास के कथानक की पृष्ठिभूमि है। लेखक ने जिस प्रकार इस संघर्ष का चित्रण किया है और जिस प्रकार उपन्यास के चरित्रों के अनुभवों, कार्यों और भाग्यों का चित्रण किया है; जिस प्रकार उसने श्रम का चित्रण किया है जो जीवन का रूपान्तर कर देता है और उसके साथ ही श्रम करने वालों का भी रूपान्तर कर देता है; और सबसे अन्त में जिस प्रकार उसने मनुष्यों के पारस्परिक नये सम्बन्धों का चित्रण किया है—उस सब के कारण आॅस्त्रोवस्की का उपन्यास समाजवादी यथार्थवाद की एक सच्ची कृति

बन गया है। दूसरे सोवियत लेखकों की तरह निकोलाई ऑस्त्रोवस्की भी गोर्की की परम्परा का लेखक था। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह केवल अनुसरण करता था। ऑस्त्रोवस्की ने नई बातों का आविष्कार भी किया और एक नये साहित्यिक नायक की सृष्टि की।

आनेवाली अनेक पीढ़ियों तक पावेल कोर्चागिन नवयुवकों का आदर्श रहेगा। हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी से ज्यादा बड़ी संख्या में कोर्चागिन की धातु के नवयुवकों को जन्म देती है। उसके महान शिक्षक मैक्सिम गोर्की में जो अन्तर्दृष्टि थी, वैसी ही अन्तर्दृष्टि ऑस्त्रोवस्की में भी दिखाई देती है जिसके द्वारा उसने अपने काल की वास्तविकता में से आगे आनेवाले सत्य को पहचान लिया। पावेल कोर्चागिन की वीरतापूर्ण विशेषताएं सोवियत नवयुवकों में अधिकाधिक मिलती हैं। पिछली लड़ाई ने इस बात को दिखलाया कि ऐसे ही गुण लाखों-करोड़ों सोवियत जनता में भी पाये जाते हैं। आज के रोज बहुत से विशाल कारखानों में सबसे अच्छे काम करनेवाले नौजवान मजदूरों की टोलियों ने अपने नाम निकोलाई ऑस्त्रोवस्की और उनके नायक पावेल कोर्चागिन के नाम पर रखे हैं।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की एक सोद्देश्य कलाकार था जो अच्छी तरह इस बात को जानता था कि उसे क्या करना है। वह जानता था कि उसे एक ऐसे युवा सैनिक के चित्र की सृष्टि करनी है, जिसके उदाहरण पर देश के नवयुवक चलें। इस काम को पूरा करने के लिए यह जरूरी था कि उसकी पुस्तक किसी एक सामान्य व्यक्ति का जीवन-चरित्र हो, जो यह दिखला सके कि कोई भी नवयुवक उस रास्ते पर आगे बढ़ सकता है। मगर उसके साथ ही साथ यह भी जरूरी था कि वह एक वीरतापूर्ण जीवन-चरित्र हो, क्योंकि ऑस्त्रोवस्की प्रति-दिन के जीवन में देश की सामान्य मेहनतकश जनता को जिस प्रकार संघर्ष करते देखता था, उसमें उसको एक गहरा रोमानी गुण मिलता था और ऐसी बहुत सी बातें मिलती थीं जो कि अनुकरणीय थीं और यही वह भावना थी जिसे उसने अपने मुख्य नायक और दूसरे पात्रों के अन्दर डाली। कहानी की तफसीली बातों को उसने अपने और अपने साथियों के तजुर्बों से लिया और उन्हें चित्रित किया।

यह ध्यान देने की बात है कि उसने जिन्दगी के बहुत से बहादुरी के कारनामों के बारे में सिर्फ इसलिए नहीं लिखा कि उसको डर था कि उनके बारे में लिखते समय वह बात को बढ़ा-चढ़ा देगा। उसने कहीं भी इस बात का उल्लेख नहीं किया कि एक बार जब वह अभी छोटा सा लड़का ही था, तब उसने गुप्त क्रान्तिकारी कमिटी के बहुत से इश्तिहार एक जर्मन सन्तरी के ठीक नाक तले दीवार पर चिपकाये थे और न इस घटना का कि जब वह पंद्रह साल का छोकरा ही था तभी उसने नोवोग्राद वोलिन्स्की के पास एक पुल को बारूद से उड़ा दिया था, और न यही

कहानी उसने कहीं पर लिखी कि कैसे वह एक कुलक गिरोह के कब्जे में आये हुए एक कस्बे के अन्दर गया और वहां की सारी बातें, जिनकी क्रान्तिकारी आन्दोलन को जरूरत थी, पता लगाकर लौट आया। एक सच्चे कलाकार की भांति ऑस्त्रोवस्की ने वे सभी चीजें छोड़ दीं जिनके समावेश करने के कारण उसके नायक के जीवन की कहानी असाधारण बन जाती।

जहां यह बात सच है कि ऑस्त्रोवस्की ने अपनी पुस्तक में अपने जीवन के कुछ जोखिम के कारनामे लिये हैं, वहां यह भी सच है कि उनको लेते समय वह उनके जोखिम को और इनके पीछे काम करनेवाली बहादुरी को कम करके दिखाता है। उदाहरण के लिए जब वह यह वर्णन करता है कि वह कैसे एक जोखिम से भरी हुई सड़क पर होकर बहुत सी बेशकीमत चीजें बेरेजदोव से सूबाई केन्द्र ले गया, तब वह सिर्फ इतना कहता है कि वे चीजें हिफाजत के साथ पहुंच गईं; जब कि सच बात यह है कि ऑस्त्रोवस्की और उसके साथ के दो सैनिकों के साहस के कारण ही वह यात्रा सफल हुई थी और उन्हें रास्ते में डाकुओं के एक हमले का मुकाबला भी करना पड़ा था।

कोर्चागिन के बाद के जीवन में रेडियो एक बहुत महत्व की चीज हो जाती है। उपन्यास में जो रेडियो सेट शैय्या-ग्रस्त पावेल के जीवन में आनन्द का संचार करता दिखलाया गया है, उसके बारे में बताया गया है कि उसके दोस्त बेरसेनेव ने उसको बनाया था। मगर सच बात यह थी कि ऑस्त्रोवस्की ने खुद उसको बनाया था और इस काम में उसको डेढ़-दो महीना लगा था। इस काम को पूरा करने के बाद खुद ऑस्त्रोवस्की ने कहा था :

"जरा सोचो! मैं एकदम अन्धा और उस पर से मैंने एक रेडियो फिट करना शुरू किया और पुर्जे भी मुझे कितने गये-गुजरे मिले कि अच्छी भली आंखवाला आदमी भी पसीने-पसीने हो जाता। कैसा मुश्किल काम था वह! उस समय मुझे केवल स्पर्श ज्ञान का सहारा था! जहन्नुम में जाय! जब यह काम पूरा हुआ और मेरा रेडियो सेट बन कर तैयार हुआ तो मैंने कसम खाई कि फिर कभी ऐसा कोई काम न करूंगा।"

इसमें सन्देह नहीं कि ऑस्त्रोवस्की के जीवन की सबसे बड़ी वीरता थी उन अत्यन्त कठिन स्थितियों में उपन्यास को लिखना। आज जब हम ऑस्त्रोवस्की के बारे में सोचते हैं तो उसकी इसी वीरता का ध्यान हमको आता है। मगर तब भी उपन्यास में इस वीरता पर जोर नहीं दिया गया है, बल्कि नायक के जीवन की उन बातों पर ही जोर दिया गया है जो कि दूसरों के भी उन्हीं गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऑस्त्रोवस्की के जीवन में जिस चीज को पाने में बरसों का

वीरतापूर्ण संघर्ष लगा था, वह सब कोर्चागिन की कहानी में कुछ महीनों में ही पूरा हो जाता है। सच्चे वीर की सहज विनय-शीलता से आॅस्त्रोवस्की इस पुस्तक की सृष्टि के बारे में केवल दो-तीन पृष्ठ लिखता है।

* * *

१९२५ में जब उसने सुना कि उसको आर्डर आफ लेनिन का पदक मिला है, तब निकोलाई आॅस्त्रोवस्की ने उत्तर में धन्यवाद देते हुए लिखा था :

"मेरा लालन-पालन पार्टी की सच्ची सहायिका कोमसोमोल ने किया है और जब तक मेरी जान में जान है, तब तक मेरा जीवन अपनी समाजवादी मातृभूमि की नई पीढ़ी की बोल्शेविक शिक्षा-दीक्षा के लिए लगा रहेगा।"

इस नौजवान लेखक ने अपने कौल को पूरा किया। जनता के भीतर उसका मान बढ़ा, समाज के निर्माताओं की कतार में वह एक बार फिर और बड़ी शान से शामिल हुआ, उसके उत्साही पाठकों की हजारों चिट्ठियां उसके पास आईं और सैकड़ों मिलने-जुलने वाले आये जो उसका परिचय प्राप्त करना चाहते थे; उसके देश ने, सोवियत राज्य ने, कम्युनिस्ट पार्टी और कोमसोमोल ने हर तरह से उसकी देख-रेख की और इन सब चीजों से आॅस्त्रोवस्की के जिन्दगी के आखिरी साल सुखी जीवन की दीप्ति से भर उठे और उन्होंने उसकी प्रतिभा को और भी पैना बनाया।

अभी जब वह अपने पहले उपन्यास के ही एक नये संस्करण पर काम कर रहा था, तभी निकोलाई आॅस्त्रोवस्की ने एक दूसरी पुस्तक की रचना में भी हाथ लगा दिया था। उसका नाम था "तूफान के बेटे"। उस वक्त क्षितिज पर दूसरे विश्वयुद्ध के काले-काले बादल मंडरा रहे थे। अंग्रेज-अमरीकी साम्राज्यवाद की ओर से प्रोत्साहन पाकर जर्मन और जापानी फासिस्ट समाजवाद के देश के खिलाफ युद्ध की तैयारी कर रहे थे।

निकोलाई आॅस्त्रोवस्की ने लिखा, "हम सब शान्तिपूर्ण श्रम में लगे हुए हैं। शान्ति ही हमारा झण्डा है। पार्टी और सरकार ने इस झण्डे को ऊपर उठाया है... हम शान्ति चाहते हैं क्योंकि हम कम्युनिज्म की आधारशिला रख रहे हैं। मगर हम अपने देश के साथ गद्दारी करेंगे अगर हम उन क्रूर दुश्मनों को भूल जायें जो हमें घेरे हुए हैं।"

आॅस्त्रोवस्की ने अपनी नई पुस्तक में अपने सामने यही लक्ष्य रखा था कि नई पीढ़ी को, जो समाजवादी समाज में ही पली और बढ़ी थी, यह दिखलाये कि उसके दुश्मन कौन हैं।

निकोलाई आॅस्त्रोवस्की ने अपने इस उद्देश्य की व्याख्या करते हुए लिखा, "मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूं ताकि अगर आगे चलकर लड़ाई होती है—यानी अगर

हमारे ऊपर लड़ाई थोपी जाती है—तब उस हालत में किसी नौजवान का हाथ अपनी बन्दूक पर काँपे नहीं।"

अपने इस नये उपन्यास में लेखक का ध्यान पोलैंड की उच्च मध्यवर्गीय और ज़मींदार श्रेणियों पर जाता है और पोलैंड उस समय फासिज़्म के रास्ते पर था। वह अपनी इस किताब का केवल पहला ही भाग पूरा कर पाया था जब उसकी मृत्यु हो गई। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की की मृत्यु २२ दिसम्बर १९३६ को हुई, ठीक उसी दिन जिस दिन उसके दूसरे और अन्तिम उपन्यास "तूफान के बेटे" का पहला भाग प्रकाशित हुआ था।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने कहा, "इससे अच्छी बात किसी आदमी के लिए और क्या हो सकती है कि वह मरने के बाद भी मानवता की सेवा करता रहे।"

इस बोल्शेविक उपन्यासकार की रचनाएं, उसके उत्साह से भरे हुए लेख और भाषण जो उसने नवयुवकों के सामने दिये थे, आज भी संसार की जनता के उस संघर्ष को उसकी एक अनमोल देन हैं, जो शान्ति और रचनात्मक श्रम के लिए तथा मानवता के सुख के लिए किया जा रहा है।

—एन. वेन्ग्रोव

पहला भाग

एक

"खड़े तो हो जाओ तुम सब जो ईस्टर की छुट्टियों के पहले इम्तहान देने मेरे घर पर आये थे!"

बोलने वाला पादरी की पोशाक पहने एक मोटा थुलथुल आदमी था। एक बड़ा सा क्रॉस उसके गले में लटक रहा था। उसने क्लास के लड़कों को गुस्से की निगाहों से देखा।

ऐसा लगता था कि उसकी दो छोटी-छोटी कठोर आंखें उन छ: बच्चों को, जिनमें चार लड़के थे और दो लड़कियां, आर-पार छेद देंगी। बच्चे सीट पर से उठे और उन्होंने पादरी का चोगा पहने हुए उस आदमी को सहमी-सहमी निगाहों से देखा।

पादरी ने लड़कियों की ओर संकेत करते हुए कहा—"तुम लोग बैठ जाओ।"

लड़कियों ने इतमीनान की सांस ली और तुरन्त आदेश का पालन किया।

फादर वासिली की छोटी-छोटी आंखें उन बाकी चार पर गड़ गईं।

"अच्छा भाई जान, अब आप ज़रा इधर तशरीफ लाइए!"

फादर वासिली उठे, अपनी कुर्सी उन्होंने पीछे सरकाई और उन लड़कों के पास पहुंचे जो एक-दूसरे से बिलकुल सटे खड़े थे।

"तुम में से कौन बदमाश तम्बाकू पीता है?"

"हम लोग नहीं पीते, फादर," चारों ने डरते-डरते जवाब दिया।

पादरी के चेहरे पर खून उतर आया।

"अच्छा, तो तुम लोग तम्बाकू नहीं पीते, क्यों? बदमाश कहीं के! तब फिर मेरे आटे में तम्बाकू किसने मिलाई? बोलो! ठहरो अभी पता चल जाता है कि पीते हो कि नहीं। उलटो, अपनी जेब उलटो! देर मत करो, मैं कहता हूं उलटो, फौरन उलटो!"

तीन लड़कों ने अपने-अपने जेब की चीजें निकाल-निकाल कर मेज पर रखना शुरू किया।

पादरी ने तम्बाकू के चूरे की तलाश में सीवनों को बड़े गौर से देखा मगर उन्हें कुछ नहीं मिला। और तब वह उस चौथे लड़के की तरफ मुखातिब हुए। इस छोकरे की आंखें काली-काली थीं और वह भूरे रंग की कमीज और नीला पतलून पहने हुए था जिसके घुटने पर थेगड़ा लगा था।

"तुम ऐसे कैसे खड़े हो पुतले की तरह?"

लड़के ने सवाल करने वाले को खामोश नफरत की आंखों से देखा।

उसने आक्रोशपूर्ण स्वर में जवाब दिया—"मेरे कोई जेब-वेब नहीं है।"

"जेब नहीं है, क्यों! तुम समझते हो मुझे मालूम नहीं है कि किसने मेरा आटा खराब किया? कि यह बदमाशी किसकी है? तुम समझते हो कि इस बार भी मैं तुमको छोड़ दूंगा? वह नहीं होने का, तुम्हें इसकी सजा मिलेगी। पिछली बार मैंने तुमको स्कूल में रहने दिया था, क्योंकि तुम्हारी मां मेरे पास आकर रोई गिड़गिड़ाई, मगर अब बस। बाहर निकल जाओ!" उसने लड़के का कान उमेठ कर उसे बरामदे में ढकेल दिया और अन्दर से किवाड़ झटके से बन्द कर लिया।

लड़के खामोश बैठे रहे, सहमे हुए। उन बच्चों में से कोई भी नहीं समझ सका कि क्यों पावेल कोर्चागिन को क्लास से बाहर किया गया। किसी की समझ में यह बात नहीं आई, एक सर्गेई ब्रुजाक को छोड़ कर जो पावेल का सबसे गहरा दोस्त था। उसने पावेल को पादरी साहब के बावर्चीखाने में ईस्टर के केक के आटे में मुट्ठी भर घर की उगाई तम्बाकू छिड़कते देखा था—वहीं, पादरी साहब के उसी बावर्चीखाने में, जहां क्लास के छः पिछड़े हुए लड़के पादरी साहब का इन्तजार कर रहे थे कि वे आयें और उनका सबक सुनें।

क्लास से निकाला जाकर पावेल स्कूल की इमारत की सबसे निचली सीढ़ी पर बैठ गया और परेशान होकर सोचने लगा कि जब वह आज की घटना अपनी मां को बतायेगा तब वह क्या कहेगी, उसकी गरीब, मेहनती मां जो सबेरे से लेकर रात तक आबकारी के दरोगा साहब के यहां रसोई मे बेटे के लिए खटती थी।

आंसुओं से उसका गला रुंध गया।

"मैं क्या करूं अब ? यह सब उसी कम्बख्त पादरी के कारण हुआ । मगर मुझे भी क्या सूझी कि गया और उसके आटे में तम्बाकू मिला आया । यह सर्योजका की सूझ थी । उसने कहा था, आओ जरा इस बूढ़े खूसट की खबर ली जाय । और वही हमने किया । मगर सजा तो देखो, सर्योजका तो साफ निकल गया और मेरी शामत आ गई; ठोकर लगा कर मुझे क्लास से बाहर कर दिया गया ।"

फादर वासिली से उसका झगड़ा बहुत पुराना था । इसकी शुरुआत उस दिन हुई थी जब मिश्का लेव्चुकोव से उसका झगड़ा हुआ था और सजा के तौर पर स्कूल के बाद उसको रोक लिया गया था । खाली कमरे में लड़का कोई शरारत न करे, इस खयाल से मास्टर साहब उसे दर्जा दो में ले गये जहां पढ़ाई चल रही थी ।

पावेल पीछे की एक सीट पर बैठ गया । मास्टर साहब, जो दुबले-पतले, चुसे हुए से छोटे से आदमी थे और काला कोट पहने हुए थे, क्लास को पृथ्वी के बारे में और आकाश के ग्रह-नक्षत्रों के बारे में बतला रहे थे; और पावेल ने तब मारे अचरज के मुंह बा दिया जब उसे पता चला कि यह पृथ्वी करोड़ों साल से अस्तित्व में है और ये तारे जो दिखाई देते हैं, ये भी दुनियाएं हैं । उसने जो कुछ सुना उससे उसे इतना अचम्भा हुआ कि बड़ी मुश्किल से वह यह कहने से अपने को रोक पाया : "मगर बाइबिल में तो ऐसा नहीं लिखा है ।" पर बोला नहीं क्योंकि वह और मुसीबत में नहीं पड़ना चाहता था ।

पादरी साहब ने हमेशा पावेल को धर्मशास्त्र में पूरे-पूरे नम्बर दिये थे । उसे प्रार्थना की लगभग पूरी किताब कंठस्थ थी—और बाइबिल के पुराने और नये टेस्टामेन्ट भी । उसे ठीक-ठीक पता था कि सप्ताह के किस दिन परमात्मा ने क्या बनाया था । अब उसने निश्चय किया कि फ़ादर वासिली से इसके बारे में सवाल पूछेगा ।

अगले ही दिन क्लास में, इसके पहले कि पादरी साहब ठीक से अपनी कुर्सी पर बैठ पायें, पावेल ने हाथ उठा दिया और बोलने की इजाजत पाते ही सीट पर से उठ खड़ा हुआ ।

"फ़ादर ! दर्जा दो के मास्टर साहब यह क्यों कहते हैं कि यह पृथ्वी करोड़ों साल पुरानी है, जब कि बाइबिल में लिखा है कि वह पांच ह—जा—र..."

फादर वासिली की भारी चीख ने उसकी बात को बीच ही में काट दिया ।

"क्या कहा तुमने ? बदमाश कहीं के ! तो इसी तरह तुम अपनी धर्म पुस्तक पढ़ते हो ।"

इसके पहले कि पावेल समझ पाये कि बात क्या हुई, पादरी साहब ने उसका कान पकड़ा और दीवार से उसका सिर टकराने लगे । कुछ मिनट बाद,

दहशत और दर्द से कांपते हुए उसने क्लास के बाहर के बरामदे में अपने आपको खड़ा पाया।

उस बार मां ने उसको खूब फटकार बताई थी और उसके दूसरे रोज वह स्कूल गई थी और फादर वासिली से उसने विनती की थी कि पावेल को फिर से स्कूल में रख लें। उस दिन से पावेल जी-जान से पादरी साहब से घृणा करने लगा था। वह उनसे घृणा करता था और डरता था। उसका बच्चे का हृदय किसी भी अन्याय के खिलाफ, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, विद्रोह करता था। वह कभी उस मार के लिए, जो उस पर बेजा पड़ी थी, पादरी साहब को माफ नहीं कर सका और उसका मन गुस्से और नफरत से भर उठा था।

उसके बाद पावेल को बराबर फादर वासिली से द्वेषपूर्ण उपेक्षा ही मिली। पादरी साहब बराबर उसे क्लास के बाहर कर देते थे, जरा-जरा सी गलती के लिए उसे लगभग रोज ही कोने में खड़ा कर देते थे और कभी उससे कोई सवाल नहीं पूछते थे। नतीजा यह कि ईस्टर की छुट्टियों के ठीक पहले पावेल को क्लास के दूसरे पिछड़े हुए लड़कों के साथ पादरी साहब के मकान पर दुबारा इम्तहान देने के लिए जाना पड़ा। और वहीं बावर्चीखाने में उसने उनके आटे में तम्बाकू मिला दिया था।

किसी ने उसको ऐसा करते देखा नहीं था, लेकिन पादरी साहब फौरन ताड़ गये कि यह किसकी करतूत होगी।

आखिरकार क्लास खतम हुआ और बच्चे बाहर निकल कर हाते में आये और पावेल को घेर कर खड़े हो गये। पावेल उदास खामोशी में डूबा खड़ा रहा। सर्गेई ब्रुजाक क्लास में ही रुका रहा। वह महसूस कर रहा था कि वह भी अपराधी है। मगर, वह अपने दोस्त की मदद के लिए कुछ नहीं कर सकता था।

हेडमास्टर, एफ्रेम वासीलियेविच ने मास्टरों के कमरे की खुली खिड़की में से सिर बाहर निकाला और आवाज लगाई :

"कोर्चागिन को फौरन मेरे पास भेज दो।" हेडमास्टर साहब की गहरी भारी आवाज सुन कर पावेल चौंक पड़ा और धड़कते हुए दिल से वह उनके पास चला।

रेलवे स्टेशन रेस्तोरां के मालिक ने, जो पीला सा अधेड़ आदमी था और जिसकी आंखें बेरंग और बुझी-बुझी सी थीं, कनखियों से पावेल को देखा।

"क्या उम्र है इसकी ?"

"बारह।"

"ठीक है। रह सकता है। इसे महीने में आठ रूबल मिलेंगे। और खाना भी, जिन दिनों काम करेगा। एक दिन छोड़ कर हर दूसरे रोज चौबीस घंटे काम करना होगा। लेकिन हां, एक बात अच्छी तरह समझ लो : चोरी-चमारी नहीं चलेगी।"

"अरे नहीं साहब, कैसी बात कहते हैं। वह चोरी नहीं करेगा। मैं इसका जिम्मा लेती हूं," मां ने डर कर फौरन आश्वस्त करने के लिये कहा।

"तो फिर आज से ही काम शुरू कर दे," मालिक ने आदेश दिया और काउंटर के पीछे खड़ी औरत की ओर मुड़ते हुए कहा : "जीना, इस लड़के को बावर्चीखाने में ले जाओ और फ्रोसिया से कहो कि ग्रिश्का की जगह इसको काम पर लगा दे।"

उस औरत ने अपने हाथ की वह छुरी रख दी जिससे वह गोश्त के टुकड़े कर रही थी, पावेल को इशारा किया और आगे-आगे चलते हुए हॉल को पार करके किनारे के दरवाजे पर पहुंची जो बर्तन धोने की कोठरी में खुलता था। पावेल उसके पीछे-पीछे गया। उसकी मां भागती हुई आई और जल्दी-जल्दी उसके कान में फुसफुसा कर कहा : "देखो बेटा पावलुश्का, खूब जी लगा कर काम करना और कभी कोई गन्दी हरकत मत करना।"

उदास आंखों से मां ने उसे जाते हुए देखा और फिर वापस चली गई।

भीतर काम जोरों के साथ चल रहा था। रकाबियों, कांटों, छुरियों का ढेर मेज पर लगा हुआ था और बहुत सी औरतें अपने कंधों पर पड़े तौलियों से उन्हें पोंछ रही थीं।

एक लड़का जिसके सिर में बड़-बड़े लाल-लाल बालों का गुच्छा था, और जो पावेल से थोड़ा बड़ा था, दो बड़े समोवारों* को ठीक कर रहा था।

वह जगह बड़े से कंडाल में खौलते हुए पानी की भाप से भरी हुई थी। उसी पानी से रकाबियां धुल रही थीं। भाप के कारण पावेल एकाएक उन औरतों के चेहरों को न देख सका। वह अनिश्चय की हालत में खड़ा रहा कि कोई उसे बतलाए कि क्या करना है।

शराबखाने की नौकरानी जीना ने एक रकाबी धोने वाली के पास जाकर कंधा छुआ और बोली :

"देखो फ्रोसिया, मैं तुम्हारे लिए ग्रिश्का की जगह एक नया लड़का ले आई हूं। तुम इसको काम बतला दो।"

---

* एक खास तरह का बड़ा चूल्हा जिसके ऊपर सोने की भी जगह होती है। —अनु.

जिस औरत को उसने फ्रोसिया कह कर पुकारा था, उसकी ओर इशारा करते हुए जीना ने पावेल से कहा, "यहां का इन्तजाम इन्हीं के हाथ में है। यह तुम्हें बतला देंगी कि तुमको क्या करना है।" यह कह कर वह मुड़ी और वापस अपनी जगह पहुंच गई।

"अच्छा," पावेल ने धीरे से कहा और प्रश्न करती हुई आंखों से फ्रोसिया को देखा। फ्रोसिया ने माथे का पसीना पोंछते हुए बड़े गौर से पावेल को सिर से पैर तक देखा जैसे उसे परख रही हो और आस्तीन ऊपर चढ़ाते हुए, जो कुहनी के नीचे आ गई थी, गहरी और बड़ी प्यारी आवाज में कहा :

"ऐसा कुछ बहुत काम नहीं है, भैया ! मगर फंसे रहोगे खूब। वह तांबे की जो चीज तुम वहां देखते हो न, सबेरे से ही उसको सुलगा देना पड़ता है और हमेशा गरम रखना पड़ता है ताकि खौलता हुआ पानी हमेशा तैयार मिले ! और फिर लकड़ी चीरनी होती है और समोवार हैं जिनकी फिक्र करनी पड़ती है। कभी तुम्हें छुरी-कांटे भी साफ करने पड़ेंगे और गन्दे पानी की बाल्टी भी बाहर ले जानी पड़ेगी। काम की यहां कोई कमी नहीं है भाई !"

उसका बोलने का ढंग और तमतमाया हुआ चेहरा और उसकी छोटी सी उठी हुई नाक, यह सब पावेल को बहुत अच्छे लगे।

"काफी भली मालूम होती है," उसने अपने मन में कहा। फिर अपनी झप को बस में करते हुए बोला, "अब मुझे क्या करना है मौसी ?"

रकाबी धोने वाली औरतें ठहाका मार कर हंस पड़ीं :

"हा ! हा ! देखो तो फ्रोसिया को बैठे-बिठाये एक भानजा मिल गया..."

पर फ्रोसिया दूसरों से भी ज्यादा जोर से हंस रही थी।

भाप के बादलों के बीच से पावेल ठीक से नहीं देख सका था कि फ्रोसिया जवान लड़की है। उसकी उम्र किसी भी हालत में अठारह से ज्यादा न थी।

घबरा कर वह दूसरे लड़के की तरफ मुड़ा और उससे पूछा :

"अब मुझे क्या करना है ?"

मगर वह लड़का बेफिक्री से खड़ा रहा और बोला : "अपनी इन्हीं मौसी से पूछो, यही तुमको सब बतलायेंगी। मैं तो चला।" यह कहते हुए वह बावर्चीखाने में खुलने वाले दरवाजे से तीर की तरह निकल गया।

"यहां आओ, इन कांटों को पोंछो।" एक रकाबी धोने वाली अधेड़ औरत ने कहा।

"अपनी यह खी-खी बंद करो," दूसरों को डपटते हुए वह बोली : "लड़के ने ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे तुमको हंसी आ रही है। यहां आओ, यह लो," कहते हुए उसने पावेल को रकाबी पोंछने का तौलिया दिया, "इसका एक सिरा अपने दांत से पकड़ लो और दूसरा सिरा हाथ से पकड़कर कस कर

तानो। यह देखो, कांटा है। इसके दांतों के बीच-बीच तौलिये को अन्दर-बाहर करो और देखो जरा भी मैल न रहने पाये। इन चीजों के मामले में यहां बड़ी सख्ती बरती जाती है। गाहक हमेशा कांटों को बड़े गौर से देखते हैं और अगर जरा सा भी मैल मिल जाता है तो बड़ा बावेला मचाते हैं। और तब, मालकिन खड़े-खड़े तुमको निकाल बाहर करेगी।"

"मालकिन ?" पावेल ने उसकी बात को दुहराते हुए कहा, "मैं तो समझता था कि वह साहब जिन्होंने मुझे रखा वही मालिक हैं।"

रकाबी धोने वाली हंसी और बोली, "इस मालिक को तो बस यहां की एक सजावट समझो। असली मालिक तो है मालकिन। आज वह यहां नहीं है। लेकिन अगर कुछ दिन यहां टिके तो खुद ही देख लोगे।"

बर्तन धोने की कोठरी का दरवाजा खुला और तीन नौकर बड़ी-बड़ी ट्रे लिये हुए दाखिल हुए जिन पर गन्दी रकाबियों का ढेर लगा हुआ था।

उनमें से एक ने जिसका कंधा बहुत चौड़ा था और जिसकी आंखें तिरपट और जबड़े भारी और चौखुटे थे, कहा, "जरा तेजी से हाथ चलाओ। बारह बजे की गाड़ी आने ही वाली है, और अभी तुम लोग यहां खेल ही कर रहे हो।"

उसने पावेल को देखा और पूछा, "यह कौन है ?"

"अरे वही नयावाला लड़का है," फ्रोसिया ने कहा।

वह बोला, "अच्छा, वह नयावाला लड़का।...अच्छा जरा सुनो तो," कहते हुए उसने अपना भारी हाथ पावेल के कंधे पर रखा और उसे ठेल कर समोवार के पास ले जाते हुए बोला : "तुम्हारा काम इनको सदा खौलाते रखना है। यह देखो, इनमें से एक तो बुझ भी गया और दूसरा किसी तरह आखिरी सांसें गिन रहा है। आज तो तुम्हें माफ किया जाता है, लेकिन कल से ऐसा हुआ तो तुम्हारी मरम्मत होगी।"

पावेल बिना एक शब्द बोले समोवारों को ठीक करने में जुट गया।

और इस तरह उसकी मशक्कत की जिन्दगी शुरू हुई। आज पहले रोज उसे जितना काम करना पड़ा था, उतना अपनी जिन्दगी में पावुश्का ने और कभी नहीं किया था। उसने महसूस किया कि यह उसका घर नहीं था जहां मां का हुक्म टाला जा सकता है। उस तिरपट आंख वाले बैरे ने यह बात बिलकुल साफ कर दी थी कि अगर वह कहे मुताबिक ठीक-ठीक काम नहीं करेगा तो उसे इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।

उसने अपना एक जूता चिमनी के ऊपर रखा और दूसरे से धौंकना शुरू किया। थोड़ी ही देर में उन बड़े-बड़े मटके जैसे समोवारों से चिनगारियां निकलने लगीं। उसने गन्दे पानी की बाल्टी उठाई और जाकर कूड़े की टीन में उलट दी, गरमे में और ईंधन डाल दिया, रकाबी पोंछने वाली गीली तौलियों

को गरम समोवार पर सुखाया—गरज, उसने वह सब कुछ किया जो उसे करने को कहा गया था। बहुत रात बीत जाने पर जब थका हुआ पावेल बावर्चीखाने की तरफ चला तो उस अधेड़ रकाबी धोने वाली ने पावेल के पीछे बन्द होते दरवाजे की ओर देखते हुए कहा :

"उस लड़के में कुछ अजीब सी बात है। देखो, कैसे पागल की तरह दौड़ता है। कौन जाने इसीलिए उसे काम से लगाया गया हो।"

फ्रोसिया ने कहा : "अच्छा काम करने वाला है। उसे ठेलना नहीं पड़ता।"

लूशा की राय थी, "जल्दी ही उसका जोश ठंडा हो जायगा। शुरू-शुरू में सब इसी तरह जोरों से काम करते हैं...।"

दूसरे रोज सबेरे सात बजे रात भर खड़े रहने के कारण थक कर चूर पावेल ने खौलते हुए समोवार को उस लड़के को संभलवाया जो उसकी जगह लेने वाला था। इस लड़के ने, जिसके गाल फूले-फूले से थे और आंखों में बड़ी भद्दी-सी चमक थी, खौलते हुए समोवारों का मुआइना किया और इस बात का इतमीनान हो जाने पर कि सब कुछ ठीक है, उसने अपने हाथ जेब में डाल लिये और पावेल को नीची नजर से देखते हुए बड़ी ऐंठ से, दांत बन्द किये पिच्च से थूका।

"सुन बे नकचपटे!" उसने चुनौती के स्वर में कहा और पावेल को अपनी बेरंग आंखों से देखा। "देखना, कल तुझे ठीक छः बजे सबेरे अपने काम पर हाजिर हो जाना है।"

"क्यों, छः बजे क्यों?" पावेल ने जानना चाहा, "शिफ्ट तो सात बजे बदलती है न?"

"इसकी फिकर तू छोड़ दे कि शिफ्ट कब बदलती है, कब नहीं बदलती। तुझे यहां पर छः बजे हाजिर हो जाना है। और देख, ज्यादा बकबक मत करना नहीं तो वह झापड़ रसीद करूंगा कि मुंह टेढ़ा हो जायगा। जरा ढिठाई तो देखो, आज ही काम शुरू किया और अभी से दिमाग सिकहर पर।"

रकाबी धोने वाली औरतें, जिन्होंने अभी-अभी अपनी पाली का काम खतम किया था, दोनों लड़कों की बातचीत बड़ी दिलचस्पी से सुन रही थीं। पावेल को उस लड़के के इस तरह गुंडई ढंग से बात करने पर गुस्सा आ गया। वह उस बदमाश की तरफ एक कदम बढ़ा और करीब था कि उस पर हाथ छोड़ दे। लेकिन, यह सोच कर कि नई-नई लगी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा, वह रुक गया।

उसने गुस्से से स्याह पड़ते हुए कहा : "बन्द करो यह शोर मचाना और मुझसे जरा दूर ही रहना, नहीं तो ठीक नहीं होगा। मैं यहां कल सात बजे आऊंगा। और जहां तक झापड़ की बात है, मैं तुमसे कमजोर नहीं हूं, यह बात

याद रखना। या यह चाहते हो कि एक-एक हाथ हो ही जाय ? बोलो ? मैं इसके लिए भी तैयार हूं।"

उसका दुश्मन डर कर पीछे हटा और गरमे से लग कर खड़ा हो गया वह आश्चर्य से क्रोधित होकर पावेल को देख रहा था। उसे उम्मीद नहीं थी कि पावेल इतना तगड़ा प्रतिवाद करेगा।

"अच्छा-अच्छा देखेंगे," उसने बुदबुदाते हुए कहा।

काम का पहला रोज बिना किसी दुर्घटना के बीत गया था, इसलिए पावेल जल्दी-जल्दी घर की ओर चला। उसके मन में यह भाव था कि उसने ईमानदारी से मेहनत करके अपने विश्राम के इन घंटों को अर्जित किया है। अब वह भी एक मजदूर था। अब कोई उस पर यह तोहमत नहीं लगा सकता था कि वह कुछ नहीं करता और दूसरे पर आश्रित है।

लकड़ी चीरने के कारखाने की छिटपुट फैली हुई इमारतों पर सुबह का सूरज चढ़ने लगा था। थोड़ी ही देर में पावेल का छोटा सा मकान लेशचिन्स्की के बगीचे के पीछे दिखाई देने लगेगा।

"मां अभी-अभी उठी ही होंगी और देखो मैं काम पर से लौट रहा हूं।" पावेल ने सोचा और अपनी रफ्तार तेज कर दी। चलते-चलते वह सीटी बजाता जा रहा था। "स्कूल से निकाला जाना बहुत बुरा नहीं रहा। वह कम्बख्त पादरी किसी तरह मुझे चैन न लेने देता। और अब मुझे क्या, जहन्नुम में जाय वह, मेरे ठेंगे से," यही सोचते हुए पावेल घर पहुंचा और दरवाजे को खोला। "जहां तक उस नवाब के नाती का ताल्लुक है, मैं जरूर किसी दिन उसको ठोकूंगा।"

उसकी मां ने, जो आंगन में समोवार सुलगा रही थी, अपने बेटे को आते हुए देखा तो कुछ चिन्ता के स्वर में पूछा :

"कहो, कैसा रहा ?"

"बहुत अच्छा," पावेल ने जवाब दिया।

मां कुछ कहने ही वाली थी कि खुली हुई खिड़की से पावेल को अपने भाई आर्तेम की चौड़ी पीठ दिखाई दी।

"अच्छा, तो आर्तेम आ गया ?" उसने उद्विग्नता से पूछा।

"हां, कल आया था। अब वह यहीं रहेगा और रेलवे यार्ड में काम करेगा।"

कुछ झिझकते हुए उसने सामने का दरवाजा खोला।

उस आदमी ने, जो मेज के सामने दरवाजे की ओर पीठ किये बैठा था,

कमरे में दाखिल होते हुए पावेल की ओर अपनी विशाल काया को मोड़ा। घनी काली भवों के नीचे उसकी आंखों में कठोरता का भाव था।

"अच्छा, यह आया तम्बाकू वाला लड़का! कहो क्या हालचाल हैं?"

अब जो सवालों की झड़ी लगेगी, उससे पावेल को डर मालूम हो रहा था।

उसने सोचा, "आर्तेम को पहले से ही सब बातों का पता है। लगता है अच्छी-खासी झड़प होगी और शायद मरम्मत भी।" पावेल अपने बड़े भाई से कुछ-कुछ डरता हुआ खड़ा रहा।

मगर आर्तेम का कोई इरादा लड़के को डांटने-डपटने का नहीं था। वह मेज पर कोहनी टेके स्टूल पर बैठा रहा और पावेल के चेहरे को कुछ मनोरंजन और कुछ उपेक्षा के मिले-जुले भाव से ध्यानपूर्वक देखता रहा।

"अच्छा तो तुम युनिवर्सिटी से दीक्षित होकर निकल आये, क्यों? जो कुछ लिखना-पढ़ना था, लिख-पढ़ चुके और अब रकाबियां धोने में लग गये हो, क्यों?"

नीचे फर्श में एक दरार थी। पावेल उसी पर आंख गड़ाए, एक कील के सिरे को बहुत बारीकी से देख रहा था। आर्तेम उठा और रसोई घर में चला गया।

इतमीनान की सांस लेते हुए पावेल ने सोचा, "लगता है मार-वार नहीं पड़ेगी।"

बाद में चाय के वक्त आर्तेम ने पावेल से स्कूल वाली घटना के बारे में पूछा। पावेल ने सब कुछ बतला दिया।

"बड़े होकर तुम इतने आवारा निकलोगे, तो जिन्दगी में क्या करोगे," उसकी मां ने उदास आवाज में कहा। "हम लोग इसके संग क्या करें? मेरी समझ में ही नहीं आता कि यह लड़का किस पर गया है! हे भगवान, इस लड़के के पीछे मुझे क्या-क्या नहीं भोगना पड़ा," उसने शिकायत के लहजे में कहा।

आर्तेम ने अपना खाली प्याला अलग सरकाया और पावेल की ओर मुड़ा।

"अब तुम मेरी बात सुनो दोस्त," उसने कहा। "जो हो गया सो हो गया। उसका कोई इलाज नहीं। हां इतना है कि अब आगे से सावधान रहो और जी लगा कर अपना काम करो। और देखो, कोई शरारत न करना। अगर इस जगह से भी तुम निकाले गये तो याद रखना, मैं तुम्हारी खूब ही मरम्मत करूंगा। तुम मां को काफी दुख दे चुके हो। जब देखो कोई न कोई मुसीबत खड़ी किये रहते हो। मगर अब इस चीज को बन्द होना है। तुम यहां साल-छः महीना काम कर लो, फिर मैं कोशिश करके तुमको डिपो में अपरेंटिसी पर लगवा दूंगा। क्योंकि इस तरह तमाम जिन्दगी गन्दी रकाबियां धोते रहने से तो बेड़ा पार नहीं होगा। तुम्हें कोई न कोई धंधा सीखना ही होगा।

अभी तुम जरा छोटे हो। मगर साल भर में मैं कोशिश करूंगा कि तुम्हारा कुछ बन्दोबस्त हो जाय और शायद वे लोग तुमको लगा भी लें। अब मैं यहीं काम करूंगा। मां को अब काम पर नहीं जाना पड़ेगा। सारी जिन्दगी उन्होंने बहुत काफी गुलामी की, एक से एक हरामजादों की। पावका, देखो तुम्हें आदमी बनना है।"

वह उठ खड़ा हुआ। उसकी विशाल काया के आगे आसपास की सारी चीजें बौनी नजर आती थीं। कुर्सी पर लटकते कोट को पहनते हुए उसने अपनी मां से कहा, "मुझे घंटे भर के लिए जरा बाहर जाना है," और बाहर निकल गया। दरवाजे में से निकलने के लिए वह जरा झुका।

बाहर के गेट की ओर बढ़ते हुए वह खिड़की के पास से निकला और अन्दर झांकते हुए उसने पावेल को आवाज देकर कहा, "मैं तुम्हारे लिए एक जोड़ा जूता और एक चाकू लाया हूं। मां से ले लेना।"

स्टेशन का रेस्तोरां दिन-रात खुला रहता था।

छः रेलवे लाइनें इस जंक्शन पर मिलती थीं और स्टेशन हमेशा मुसाफिरों से खचाखच भरा रहता था; सिर्फ रात को दो-तीन घंटे के लिये, दो गाड़ियों के दरमियान, वहां कुछ शान्ति रहती थी। सभी दिशाओं के लिए सैकड़ों गाड़ियां इस स्टेशन से गुजरती थीं। गाड़ियां, जो मोर्चे के एक भाग से दूसरे भाग को जाती थीं और एक जैसे भूरे रंग के ओवर कोट पहने हुए नये लोगों को ले जाती थीं और यह आना-जाना अनवरत चलता रहता था।

पावेल ने दो बरस तक उस जगह काम किया—दो बरस, जिनमें उसने सिवाय रकाबी धोने की जगह और बावर्चीखाने के और कुछ नहीं देखा। वे बीस-बाईस लोग जो बावर्चीखाने में काम करते थे, दिन-रात पागलों की तरह जुते रहते थे। रेस्तोरां और बावर्चीखाने के बीच दस बैरे बराबर दौड़ लगाते रहते थे।

अब पावेल को आठ के बदले दस रूबल मिलने लगे थे। इन दो सालों में वह और लम्बा और चौड़ा-चकला हो गया था। इन्हीं दो बरसों में उसे बहुत सी परीक्षाओं का सामना भी करना पड़ा था। छः महीने उसने बावर्चीखाने में काम किया था, मगर फिर उसे गन्दी रकाबियां धोने के काम पर भेज दिया गया। बात यह थी कि सर्व शक्तिमान खानसामा उससे रुष्ट था—बड़ा खतरनाक छोकरा है यह, ज्यादा मारते डर लगता है, कौन जाने कब वह छुरा भोंक दे। और इसमें सन्देह नहीं कि अब तक न जाने कभी की अपने गुस्सैल मिजाज के कारण पावेल की नौकरी छूट गई होती, बशर्ते उसमें कड़ी मेहनत

का भी जबरदस्त माद्दा न होता। क्योंकि यह बात सही है कि वह दूसरे किसी आदमी से ज्यादा काम कर सकता था और थकता तो जैसे कभी था ही नहीं।

जिन घंटों में काम की बहुत भीड़ होती, वह लदी हुई ट्रे लिये बावर्ची-खाने की सीढ़ी पर ऊपर-नीचे, चार-चार, पांच-पांच सीढ़ियों को एक-एक डग में भरता तूफान की तरह दौड़ता था।

रात को, जब रेस्तोरां के दोनों हॉलों में शोर-गुल मद्धिम पड़ जाता, तब बैरे नीचे बावर्चीखाने के भंडारघरों में इकट्ठे होते और सुध-बुध खोकर दीवानों जैसे ताश के जुए खेलने लगते। कई बार पावेल ने बड़ी रकम के नोटों को एक हाथ से दूसरे हाथ में जाते देखा था। उसे इतना ढेर सा पैसा इस तरह पड़े हुए देख कर अचम्भा नहीं होता था, क्योंकि उसे मालूम था कि हर बैरे को रूबल-आधा रूबल की बखशीश से शिफ्ट के पीछे तीस-चालीस रूबल मिल जाते थे जिनको वे शराब और जुए में खर्च कर देते थे। पावेल को इनसे नफरत थी।

"सुअर के बच्चे हैं," उसने सोचा। "एक वह आर्तेम है, आला दर्जे का मेकैनिक और उसे महीने में कुल अड़तालीस रूबल मिलते हैं और मुझे मिलते हैं दस। और ये लोग हैं कि दिन भर ही में इतना सारा पैसा बटोर लेते हैं। और किस बात के लिए? सिर्फ इस बात के लिए कि यहां से वहां ट्रे लाते-ले जाते हैं। और फिर यह सारा पैसा शराब और जुए में खर्च किया जाता है।"

पावेल के लिए ये बैरे भी उतने ही बेगाने और दुश्मन जैसे थे जितना कि मालिक। "ये सुअर यहां तो पेट के बल रेंगते हैं मगर वहां शहर में इनकी बीवियां और बेटे रईसों की तरह इठलाते चलते हैं।"

कभी-कभी वे लोग अपने बेटों को भी लाते जो हाई स्कूल की ठाठदार वर्दियां पहने होते। कभी-कभी वे अपनी बीवियों को भी लाते जो अच्छी आराम की जिन्दगी के कारण नर्म और गुदाज नजर आतीं। पावेल ने सोचा, "मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि इन लोगों के पास उन रईसजादों से ज्यादा पैसा है जिनकी मेज पर दौड़-दौड़ कर वे चीजें पहुंचाते हैं।" रात को बावर्चीखाने के अंधेरे कोनों और भंडारघरों में जो कुछ हुआ करता था उससे भी अब पावेल को कोई आघात न लगता था। उसे अच्छी तरह मालूम था कि कोई भी रकाबी धोनेवाली या शराबखान की नौकरानी ज्यादा दिन तक अपनी नौकरी सलामत नहीं रख सकती थी, अगर वह चन्द रूबलों के लिए उन लोगों को अपना शरीर न बेचे जो यहां उसके स्वामी थे।

पावेल को जिन्दगी की घिनौनी खन्दक की सबसे निचली तहों की एक झलक मिलती थी और वहां से एक अजीब खट्टी बदबू निकल रही थी जो कि

सड़ते हुए दलदल की बदबू थी। और यह बदबू पहुंची उसके पास जो हर नई और अनजान चीज को पाने के लिए ललक रहा था।

आर्तेम अपने भाई को रेलवे यार्ड में अपरेंटिसी पर लगाने में नाकाम रहा; पन्द्रह साल से कम उम्रवाले की उनको जरूरत नहीं थी। मगर पावेल धुएं से काली उस ईंट की इमारत की तरफ एक खिंचाव महसूस करता था और उस दिन का इन्तजार कर रहा था जब वह रेस्तोरां से छुट्टी पा सकेगा।

वह अक्सर आर्तेम से मिलने के लिए यार्ड में जाया करता था और तब उसके संग गाड़ियों की देख-भाल पर निकल जाता और जो मदद बन पड़ती, उसे दे देता था।

फ्रोसिया के चले जाने पर उसने खास तौर से अकेलापन महसूस किया। उस खुशदिल हंसती हुई लड़की के चले जाने पर पावेल को इस बात का और भी पैना एहसास हुआ कि उसके संग उसकी दोस्ती कितनी पक्की हो गई थी। अब, जब वह सबेरे काम पर आता और शरणार्थी स्त्रियों के झगड़ों और तेज चीख-पुकार को सुनता तो उसे अपना अकेलापन, अपना खालीपन और भी शिद्दत से महसूस होता।

एक रात गरमे को सुलगाते हुए वह आतिशदान के सामने बैठा लपटों को देख रहा था। स्टोव की गरमी उसे सुख पहुंचा रही थी। इस वक्त वहां पर वह अकेला ही था।

न जाने कैसे अनायास वह फ्रोसिया के बारे में सोचने लगा और हाल ही में उसने जो एक दृश्य देखा था, वह उसकी मन की आंखों के आगे घूम गया।

सनीचर की रात को फुर्सत के वक्त पावेल नीचे बावर्चीखाने में जा रहा था, जबकि कुतूहलवश वह लकड़ी के एक ढेर पर चढ़ गया और वहां से उसने नीचे भंडारघर को देखा जहां जुआड़ी अक्सर इकट्ठा हुआ करते थे।

खेल पूरे जोर पर था। इस वक्त जालीवानोव नाल इकट्ठा कर रहा था। आवेश से उसका चेहरा लाल हो रहा था।

तभी सीढ़ी पर पैरों की आहट सुनाई दी। घूम कर पावेल ने प्रोखोश्का को नीचे उतरते हुए देखा और सीढ़ी के नीचे छुप गया ताकि वह आदमी बावर्चीखाने में चला जाय। सीढ़ी के नीचे अंधेरा था और प्रोखोश्का उसको देख न सका।

प्रोखोश्का ने जैसे ही सीढ़ी के मोड़ को पार किया, पावेल ने उसकी चौड़ी पीठ और बड़े से सिर की एक झलक पाई। ठीक तभी कोई और हलके पैरों से भागता हुआ उस बैरे के पीछे-पीछे आया और पावेल ने एक परिचित आवाज को बोलते सुना।

"रुको प्रोखोश्का!"

प्रोखोश्का रुक गया और पीछे घूम कर सीढ़ी के ऊपर की ओर उसने देखा और गुर्रा कर बोला, "क्यों क्या चाहिये ?"

कदमों की आहट पास आ गई और फ्रोसिया दिखाई दी।

उसने बैरे की बांह पकड़ ली और टूटती सी रुंधती हुई आवाज में बोली:

"प्रोखोश्का ! लेफ्टिनेन्ट साहब ने तुमको जो पैसा दिया वह कहां है ?"

आदमी ने झटक कर लड़की से अपनी बांह छुड़ा ली।

"कैसा पैसा ? मैंने तुम्हें दे दिया था न ?" उसकी आवाज तेज और दुष्टता से भरी हुई थी।

"मगर उसने तो तुम्हें तीन सौ रूबल दिये थे ?" फ्रोसिया की आवाज रुंधी हुई सिसकियों में तबदील हो गई।

"कहीं दिया न हो ! तीन सौ, हुं: !" प्रोखोश्का ने व्यंग्य के स्वर में कहा। "सबका सब लेना चाहती हो, क्यों ! जरा देखिये तो साहबजादी को, धोती तो हैं आप रकाबियां और दिमाग आसमान पर है ! पचास जो मैंने तुमको दिए, बहुत हैं। तुमसे कहीं ज्यादा खूबसूरत और पढ़ी-लिखी लड़कियां भी इतना नहीं लेतीं। जो कुछ तुम्हें मिला, उसके लिए तुमको मेरा एहसान मानना चाहिए— एक रात के लिए पचास रूबल बहुत होते हैं। मगर खैर, तुम कहती हो तो तुम्हें दस और दे दूंगा, बीस भी दे सकता हूं, मगर और नहीं। और, तुम अगर बेवकूफ न होगी तो कुछ और भी कमा लोगी। मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं।" यह कह कर प्रोखोश्का घूमा और बावर्चीखाने में पहुंचकर आंख से ओझल हो गया।

"बदमाश ! सुअर !" फ्रोसिया ने चीखते हुए कहा और लकड़ी के ढेर से टिक कर जोर-जोर से सिसकियां लेने लगी।

पावेल के उस वक्त के मनोभावों को शब्द नहीं बयान कर सकते जब सीढ़ी के नीचे अंधेरे में खड़े-खड़े उसने फ्रोसिया को पागलों की तरह लकड़ी के कुन्दों पर सर पटकते देखा। मगर वह सामने नहीं आया; सिर्फ उसकी उंगलियां रह-रह कर जीने के लोहे के खम्भों को पकड़ लेती थीं।

"अच्छा तो उन्होंने इसको भी बेच डाला, खुदा गारत करे ! हाय फ्रोसिया, फ्रोसिया..."

प्रोखोश्का के लिए उसकी नफरत उसके दिल को पहले से कहीं ज्यादा सुलगाने लगी और अपने चारों तरफ वह जो कुछ भी देखता था, उसीसे उसको नफरत और घिन मालूम होती थी। "अगर मुझ में ताकत होती तो मैं उस हरामजादे को पीट-पीट कर उसका हलुआ बना देता ! मैं आर्तेम की तरह लम्बा-चौड़ा और मजबूत क्यों नहीं हुआ।"

गरमे के नीचे लपटें उठीं और बुझ गईं, उनकी कांपती हुई लाल जीभ एव लम्बी नीली रेखा के संग लिपटी हुई थी। पावेल को ऐसा लगा मानो कोई नन्हा सा शरारती भूत उसे जीभ दिखा-दिखाकर उसका मजाक उड़ा रहा हो।

कमरे में खामोशी थी। सिर्फ आग के चटकने की आवाज सुनाई दे रही थीं और बम्बे से पानी रुक-रुक कर टपक रहा था।

क्लिम्का ने आखिरी बर्तन, जो इतना मांजा गया था कि चमक रहा था, आलमारी पर रखा और अपने हाथ पोंछे। बावर्चीखाने में और कोई नहीं था। ड्यूटी पर का रसोइया और उसका मददगार गुसलखाने में सो रहे थे। रात के तीन घंटों के लिए बावर्चीखाने पर खामोशी छा गई। यह घंटे क्लिम्का, पावेल के संग ऊपर गुजारा करता था क्योंकि उस बावर्चीखाने के छोकरे और इस काली आंख वाले पावेल में, जो गरमे की देख-रेख करता था, गहरी दोस्ती हो गई थी। ऊपर क्लिम्का ने पावेल को खुले हुए आतिशदान के आगे पालथी मारे बैठा पाया। पावेल ने एक परिचित, झबरे बालों वाली आकृति की छाया दीवाल पर पड़ते देखी और बिना उस ओर मुड़े बोला :

"बैठ जाओ, क्लिम्का।"

लड़का लकड़ी के ढेर पर चढ़ गया, और इतमीनान के साथ लेट कर, खामोश पावेल को देखने लगा।

"आग में अपना भाग्य पढ़ रहे हो, क्या ?" उसने मुस्कराते हुए पूछा।

पावेल ने जोर लगा कर अपनी दृष्टि लपटों की उन ललिहान जिह्वाओं से फेरी और क्लिम्का को अपनी उन दो बड़ी-बड़ी चमकती हुई आंखों से देखा जो एक अव्यक्त व्यथा से भरी हुई थीं। क्लिम्का ने कभी अपने दोस्त को इतना उदास नहीं देखा था।

थोड़ी देर की खामोशी के बाद क्लिम्का ने पूछा, "आज तुम्हें क्या हुआ है पावेल ? कोई खास बात हो गई है क्या ?"

पावेल उठा और जाकर क्लिम्का के पास बैठ गया।

उसने धीरे से जवाब दिया, "नहीं, कुछ हुआ नहीं है। बस यह है क्लिम्का कि मेरा यहां रहना कठिन है।" और घुटनों पर टिके हुए उसके हाथों की मुट्ठियां बंध गईं।

"क्या हो गया है तुम्हें आज ?" क्लिम्का ने कुहनियों का सहारा लेकर उठते हुए जानने के लिए आग्रह किया।

"आज ? आज की बात नहीं है। जिस दिन से मैं इस काम पर आया, उसी दिन से मुझे ऐसा लग रहा है। जरा देखो कैसी जगह है यह ! हम खच्चरों की तरह काम करते हैं और हमें मिलता क्या है ? शुक्रिया नहीं, लात-घूंसे ! कोई भी तुम्हें मार सकता है, फिर कोई नहीं मिलेगा जो तुम्हारी तरफदारी

करे। मालिक लोग हमको रखते हैं नौकरी करने के लिए, मगर कोई भी आदमी जिसके बदन में ताकत हो, बड़े अधिकार के साथ हमको पीट सकता है। भले तुम दौड़-दौड़ कर अपनी जान ही क्यों न दे दो, तुम कभी सबको खुश नहीं कर सकते और जिसको खुश न कर सको, वही तुम्हारी खबर लेने के लिये तैयार रहता है। तुम चाहे कितनी कोशिश इस बात की क्यों न करो कि हर काम ठीक से हो ताकि कोई गलती न निकाल सके। मगर फिर भी, कोई न कोई ऐसा आदमी निकल ही आता है जिसका काम उसकी मनचाही मुस्तैदी से नहीं हो सका और बस फिर तो तुम्हारी मरन रखी ही है, कुछ भी करो, ऐसे भी, वैसे भी...!"

"इस तरह चिल्लाओ मत, कोई यहां चला आयेगा और सुन लेगा!" क्लिम्का ने डरते हुए उसको टोका।

पावेल उछल कर खड़ा हो गया।

"सुनने दो, मैं तो काम छोड़ने जा ही रहा हूं। यहां इस चांइयों, बदमाशों के अड्डे पर काम करने से अच्छा बेलचा भर-भर कर बरफ फेंकने का काम होगा। देखो तो इनके पास कितना पैसा है। हमको तो वे धूल समझते हैं और लड़कियों के संग जो मन आए करते हैं। भली लड़कियां, जो उनके इशारों पर नहीं नाचतीं, ठोकर मारकर बाहर कर दी जाती हैं और उनकी जगह भूख से मरती हुई शरणार्थी औरतें लगा ली जाती हैं जिन्हें दुनिया में और कहीं जगह नहीं है। और फिर वे जरूर यहां टिक जाती हैं क्योंकि यहां उन्हें कम से कम दोनों वक्त खाने को तो मिल जाता है और इतनी बदहाल होती हैं वे कि एक टुकड़ा रोटी के लिये कुछ भी कर सकती हैं।"

वह इतने आवेश में बोल रहा था कि क्लिम्का को डर लगा कि कहीं कोई सुन न ले। बावर्चीखाने में खुलने वाले दरवाजे को बन्द करने के लिए वह जल्दी से उठ खड़ा हुआ। पावेल बदस्तूर अपनी आतमा में भरे हुए तीखेपन को उंडेलता रहा।

"और तुम क्लिम्का, पिटते हो और कभी कुछ नहीं बोलते। यह ठीक नहीं है!"

पावेल मेज के सहारे एक स्टूल पर बैठ गया और थकान के मारे उसने अपना सिर हथेली पर टिका लिया। क्लिम्का ने आग में कुछ लकड़ी डाल दी और वहीं आकर बैठ गया।

उसने पावेल से पूछा, "आज हम लोग पढ़ेंगे नहीं क्या?"

"कुछ नहीं है पढ़ने को," पावेल ने जवाब दिया, "बुकस्टाल बन्द है।"

क्लिम्का ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों? आज बन्द क्यों है?"

पावेल ने जवाब दिया, "पुलिस वालों ने बुकसेलर को गिरफ्तार कर लिया। उसके यहां उनको कुछ मिला है।"

"गिरफ्तार कर लिया? काहे के लिये?"

"कहते हैं कोई सियासी बात है।"

पावेल की बात का मतलब समझने में असमर्थ विलम्का उसे आंख फाड़े देखता रहा।

"सियासी बात? वह क्या होती है?"

पावेल ने कंधे उचका दिए:

"पता नहीं क्या होती है। जार के खिलाफ जाओ, तो वही सियासी बात कहलाती है, ऐसा लोग कहते हैं।"

विलम्का अचम्भे से देखता रहा:

"लोग ऐसा क्यों कहते हैं?"

पावेल ने जवाब दिया, "मैं क्या जानूं।"

दरवाजा खुला और ग्लाशा कमरे में दाखिल हुई। उसकी आंखें नींद के कारण सूजी हुई थीं।

"तुम दोनों सो क्यों नहीं रहे हो? अगली गाड़ी आने के पहले घंटे भर की नींद निकाल लेने का वक्त है। तुम जरा आराम कर लो पावेल और मैं तुम्हारी तरफ से अंगीठी को देख लूंगी।"

जितनी जल्दी सोचा था, उससे भी पहले ही पावेल ने काम छोड़ दिया। और इस तरह छोड़ा जिसकी उसने कल्पना भी न की थी।

जनवरी के महीने में एक दिन जब खूब पाला गिर रहा था और पावेल अपना काम खतम करके घर जाने की तैयारी कर रहा था, तो उसने देखा कि उसकी जगह लेने वाला लड़का नहीं आया है। पावेल मालिक की स्त्री के पास गया और उसने उसको बतलाया कि जो भी हो, वह तो घर जायगा ही। मालिक की स्त्री यह सुनने को भी तैयार नहीं थी। लिहाजा पावेल को मजबूरन काम पर लगे रहना पड़ा, गोकि पूरे एक दिन और एक रात की मेहनत के बाद वह थक कर चूर हो गया था। शाम होते-होते उसकी यह हालत हो गई थी कि लगता था कि थकान के मारे वहीं ढेर हो जायगा। रात में फुर्सत के वक्त उसे गरमे को भरना पड़ा और तीन बजे वाली गाड़ी के लिए समय से पानी खौला कर तैयार रखना पड़ा।

पावेल ने बम्बा खोला मगर उसमें पानी नहीं था। जाहिर था कि पम्प काम नहीं कर रहा है। बम्बे को खुला छोड़ कर वह लकड़ी के ढेर पर लेट

गया; मगर थकान ने उस पर काबू पा लिया और थोड़ी ही देर में वह गहरी नींद में डूब गया।

कुछ ही मिनट बाद बम्बे में गुर्र-गुर्र सूं-सूं की आवाज होने लगी और गरमे में पानी भरने लगा। थोड़ी ही देर में गरमा लबालब हो गया और फिर पानी बह कर कोठरी के फर्श पर फैलने लगा। हस्ब मामूल कोठरी इस वक्त वीरान थी। पानी बहता रहा, बहता रहा—यहां तक कि फर्श डूब गया और पानी दरवाजे के नीचे से बह कर रेस्तोरां में पहुंचने लगा।

ऊंघते हुए मुसाफिरों के बिस्तरों और बक्सों के नीचे छोटे-छोटे चहबच्चे तैयार हो गए, मगर किसी का ध्यान इस चीज की तरफ तब तक नहीं गया जब तक कि पानी फर्श पर सोये हुए एक आदमी के पास नहीं पहुंचा और वह घबरा कर चीख कर जल्दी से उठ नहीं खड़ा हुआ। तब तो फिर सामान को बचाने के लिए बड़ी रेल-पेल मची और गजब का हो-हल्ला हुआ।

पानी बह कर लगातार अन्दर आता रहा।

प्रोखोश्का, जो दूसरे हॉल में मेजों की सफाई कर रहा था, शोर सुन कर अन्दर दौड़ा। पानी के ढेर से छलांग लगाते हुए वह दरवाजे की ओर लपका और तेजी से धक्का देकर उसे खोला। दरवाजे का खुलना था कि वह रुका हुआ पानी तेजी से हॉल में बह निकला।

तब तो फिर और ज्यादा शोर मचा। ड्यूटी पर के बैरे भाग कर गन्दे बर्तनों वाली कोठरी में पहुंचे। प्रोखोश्का सोते हुए पावेल पर टूट पड़ा।

लड़के के सिर पर लात-घूंसे बरसने लगे। वह हक्का-बक्का रह गया।

अभी भी वह आधी नींद में था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। उसे सिर्फ आंख के आगे टूटती हुई बिजलियों की तेज चमक, और जिस्म भर में दौड़ते हुए दर्द की ऐंठन की चेतना थी।

पावेल को तो इस बुरी तरह मार पड़ी थी कि बड़ी मुश्किल से, लड़खड़ाते हुए, वह घर पहुंच पाया।

सवेरे, गुस्से में भरे आर्तेम ने छोटे भाई से पूछा कि क्या बात हुई।

पावेल ने उसे सब कुछ बतला दिया।

आर्तेम ने भारी फटी हुई आवाज में पूछा, "तुमको किसने मारा ?"

"प्रोखोश्का ने।"

"अच्छा अब तुम चुपचाप पड़े रहो।"

बिना और एक शब्द बोले आर्तेम ने अपना कोट चढ़ाया और बाहर निकल गया।

"बैरा प्रोखोर कहां है ?" उसने एक रकाबी धोने वाली से पूछा। ग्लाशा ने अपने सामने खड़े हुए मजदूर की पोशाक पहने इस अजनबी को देखा।

उसने जवाब दिया, "अभी आता हूँ।"

यह भारी-भरकम आदमी दरवाजे के हैंडिल से टिक कर खड़ा हो गया।

"अच्छा, मैं यहीं इन्तजार करता हूं," उसने कहा।

एक ट्रे में रकाबियों का एक पहाड़ लादे प्रोखोर पैर से दरवाजे को धक्का देता हुआ कोठरी में दाखिल हुआ।

ग्लाशा ने बैरे की तरफ इशारा करते हुए कहा, "यही प्रोखोर है।"

आर्तेम आगे बढ़ा और प्रोखोर के कंधे पर जोर से हाथ मारते हुए उसकी आंखों में आंखें डाल कर देखा।

"तुमने मेरे भाई पावका को क्यों मारा ?"

प्रोखोर ने अपने कंधों को उसकी गिरफ्त से छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन एक घूंसा जो कस कर पड़ा तो वहीं फर्श पर लम्बा हो गया। उसने उठने की कोशिश की। मगर पहले से भी ज्यादा भयानक दूसरा घूंसा पड़ा तो वह लेटा का लेटा ही रह गया।

डर के मारे रकाबी धोने वाली औरतें इधर-उधर जा खड़ी हो गईं।

आर्तेम घूमा और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

प्रोखोश्का फर्श पर पड़ा रहा, उसके घायल चेहरे से खून बह रहा था।

उस शाम आर्तेम रेलवे यार्ड से घर नहीं लौटा।

उसकी मां को पता चला कि पुलिस ने उसको पकड़ रखा है।

छः दिन बाद बहुत रात गये आर्तेम घर लौटा जब उसकी मां सो गई थी। वह पावेल के पास गया जो अपने बिस्तर में बैठा हुआ था और बड़ी नरमी से उसने पूछा :

"अब कैसी तबियत है भैये ?" आर्तेम पावेल के पास बैठ गया। "मामला और भी बिगड़ सकता था।" फिर एक मिनट की खामोशी के बाद उसने कहा : "कोई बात नहीं, तुम बिजली घर में काम करने जाना। मैंने उनसे तुम्हारे बारे में बात की है। वहां तुम सचमुच ढंग का काम सीख सकोगे।"

पावेल ने आर्तेम के मजबूत हाथ को अपने दोनों हाथों में थाम लिया।

दो

उस छोटे से कस्बे में एक तूफान की तरह यह जबर्दस्त खबर फैल गई कि "जार का तख्ता उलट दिया गया !"

कस्बे वालों ने इस खबर को मानने से इनकार किया।

उन्होंने इस खबर को तब माना जब एक गाड़ी तूफान में धीरे-धीरे रेंगती हुई सी स्टेशन में दाखिल हुई और उसमें से फौजी बरानकोट पहने और कंधों पर राइफिलें लटकाए दो विद्यार्थी और लाल-लाल फीते बाहों में बांधे हुए क्रान्तिकारी सैनिकों का एक दस्ता प्लेटफार्म पर उतरा और उसने स्टेशन के फौजी सिपाहियों, एक बूढ़े कर्नल और गैरिसन के प्रधान को गिरफ्तार कर लिया। बर्फ से ढंकी सड़कों पर चलते हुए हजारों आदमी कस्बे के चौक में आ पहुंचे।

आजादी, बराबरी और भाईचारा— ये लफ्ज, जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुने थे, अब सुने और उन्हें प्यासों की तरह पी गए।

उसके बाद तूफानी दिन आए, हलचल और खुशी से भरे हुए दिन। फिर एक ठहराव सा आ गया, और उस टाउन हॉल पर लहराता हुआ लाल झंडा ही होने वाले परिवर्तन की अकेली निशानी रह गया। उसी टाउन हॉल में मेन्शेविकों और बुन्द के मानने वालों ने अपनी किलेबन्दी की थी। उस पर फहराते हुए लाल झंडे के अलावा और सब कुछ ज्यों का त्यों रहा।

जाड़े के अन्त में एक घुड़सवार रेजिमेन्ट उस कस्बे में ठहराई गई। सबेरे ये घुड़सवार अपने दस्ते बना कर दक्खिनी-पच्छिमी मोर्चे से भागने वाले सैनिकों की तलाश में रेलवे स्टेशन पहुंचते थे।

ये सैनिक बहुत मोटे-ताजे थे और उनके चेहरों से जाहिर था कि उन्हें खाने-पीने का आराम है। उनके ज्यादातर अफसर बड़े-बड़े काउन्ट और राजकुमार थे; उनके कंधों पर सुनहरी पट्टियां थीं और बिरजिसों पर पतली-रूपहली गोट लगी हुई थी, ठीक वैसी ही जैसी कि जार के जमाने में—गोया क्रान्ति नाम की कोई चीज हुई ही न हो।

पावेल, क्लिम्का और सर्गेई ब्रुजाक के लिए कुछ भी नहीं बदला था। मालिक लोग अब भी बदस्तूर कायम थे। नवम्बर के महीने में पहुंच कर ही कुछ असाधारण बातें शुरू हुई। स्टेशनों पर एक नई तरह के लोग नजर आने लगे जिन्होंने व्यवस्था में कुछ हलचल पैदा करनी शुरू की। इनमें से ज्यादातर लोग मोर्चे पर से लौटे हुए सैनिक थे और उन्हीं की संख्या बराबर बढ़ती जा रही थी। उनका नाम कुछ अजीब सा था—"बोल्शेविक।"

किसी को नहीं मालूम था कि यह तगड़ा और वजनदार लफ्ज कहां से आया।

मोर्चे से भागे हुए सैनिकों को रोक कर रखना इन सैनिकों के लिए उत्तरोत्तर मुश्किल होता जा रहा था। स्टेशन पर राइफिलें दगने और शीशे टूटने की आवाजें बराबर बढ़ती जा रही थीं। ये लोग दल बांध कर मोर्चे से आते थे और जब उन्हें रोका जाता, तो संगीनों से लड़ते थे। दिसम्बर के शुरू में गाड़ी भर-भर कर ये लोग आने लगे।

सन्तरी लोग अपनी पूरी ताकत से स्टेशन पर आए, इस इरादे से कि उन सैनिकों को रोक रखेंगे। मगर उन्होंने अपने को मशीनगनों की बौछार का सामना करते पाया। रेल के डिब्बों से निकलने वाले इन सैनिकों के लिए मौत मानो एक खिलवाड़ थी।

मोर्चे पर से लौटे, भूरे रंग के कोट पहने इन लोगों ने सन्तरियों को वापिस कस्बे के अन्दर ढकेल दिया और फिर स्टेशन पर लौट आए और गाड़ियां भर-भर कर अपनी अगली मंजिल के लिए रवाना हो गए।

१९१८ के वसन्त में एक रोज तीन दोस्त सर्गेई ब्रुजाक के घर से लौटते हुए, जहां पर वे ताश खेल रहे थे, कोर्चागिन के बागीचे में आए और घास पर लेट गए। वे लोग जिन्दगी से ऊबे हुए थे। अब तक जो काम वे करते आ रहे थे, उनसे उनको उकताहट मालूम हो रही थी और वे अपने दिन ज्यादा उमंग और उत्साह से बिताने का तरीका खोजने के लिए परेशान होने लगे थे और तभी उन्होंने अपने पीछे घोड़ों की टापों की आवाज सुनी और एक घुड़सवार को तेजी से अपनी तरफ आते हुए देखा। एक छलांग में घोड़े ने सड़क और बागीचे की नीची सी बाड़ी के बीच का गढ़ा पार कर दिया और घुड़सवार ने अपनी चाबुक से पावेल और क्लिम को इशारा किया।

"ओ छोकरो, जरा यहां आओ!"

पावेल और क्लिम उचक कर खड़े हो गए और दौड़ कर बाड़ी के पास गए। घुड़सवार धूल से भरा हुआ था; धूल की एक मोटी सी परत उसकी टोपी पर जमी हुई थी जिसे वह माथे से दूर पीछे की ओर सरका कर पहने हुए था। उसके खाकी ब्लाउज और बिरजिस पर भी धूल की परत जमी हुई थी। उसके भारी फौजी कमरबन्द से एक रिवाल्वर और दो जर्मन दस्ती बम लटक रहे थे।

घुड़सवार ने उनसे पूछा, "क्यों लड़को, तुम मुझे पानी पिला सकते हो?"

पावेल पानी लेने घर की तरफ भागा तो घुड़सवार अपनी ओर घूरते हुए सर्गेई की तरफ मुड़ा। "बतलाओ तुम्हारा कस्बा किसके कब्जे में है?"

सर्गेई ने आगन्तुक को एक सांस में सारी मुकामी खबरें सुना डालीं।

"दो हफ्तों से यहां पर किसी का कब्जा नहीं है। आजकल तो होमगार्डों की ही सरकार है। यहां के सारे रहने वाले रात को शहर की गश्त करते हैं। मगर तुम कौन हो?" सर्गेई ने पूछा।

घुड़सवार मुस्कराया और बोला, "देखो अभी से बहुत ज्यादा जानने की कोशिश मत करो—सब बात अभी से जान जाओगे तो जल्दी बूढ़े हो जाओगे।"

पावेल एक मग्गे में पानी लिये घर से भागता हुआ आया।

घुड़सवार ने एक घूंट में मग्गे को खाली कर दिया और उसे वापस पावेल को पकड़ा दिया। इसके बाद लगाम को झटका देते हुए वह तेजी से चीड़ के जंगलों की तरफ निकल गया।

पावेल ने क्लिम से पूछा, "वह कौन था?"

क्लिम ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया, "मुझे क्या मालूम।"

"लगता है कि फिर सरकार में रद्दोबदल होगी। इसीलिए लेशचिन्स्की परिवार कल ही यहां से चला गया। अगर अमीर लोग भाग रहे हैं, तो इसका मतलब होता है कि छापेमार आ रहे हैं।" सर्गेई ने ऐलान किया, और दृढ़ता के साथ इस राजनीतिक सवाल को यूं हल कर दिया जैसे अब उसमें और कुछ कहने-सुनने को बाकी न रह गया हो।

इस बात का तर्क इतना प्रबल था कि पावेल और क्लिम को झट विश्वास हो गया और उन्होंने फौरन सर्गेई की बात मान ली।

अभी इन लड़कों की बहस खतम भी नहीं हुई थी कि बड़ी सड़क से आती हुई घोड़ों के टापों की आवाज सुन कर वे तीनों फिर दौड़ कर बाड़ी के पास आ गए।

उधर जंगल के हाकिम के बंगले के पास, जो पेड़ों की झुरमुट में इस तरह छिपा हुआ था कि मुश्किल से ही दिखाई देता था, उन्होंने जंगल में से आदमियों और गाड़ियों को निकलते देखा और निकटतर, बड़ी सड़क पर, उन्होंने लगभग पन्द्रह घुड़सवारों के एक दल को देखा जिनके घोड़ों की काठी से राइफिलें लटक रही थीं। घुड़सवारों के आगे-आगे एक अधेड़ आदमी अपने घोड़े पर सवार चला आ रहा था। वह खाकी फौजी कोट पहने और अफसरों का कमरबन्द लगाए हुए था। दूरबीन उसके गले से लटक रही थी। उस आदमी के ठीक पीछे था वह जिससे अभी-अभी लड़कों की बात हुई थी। उस अधेड़ आदमी के सीने पर एक लाल फीता टंका हुआ था।

सर्गेई ने पावेल की पसली में उंगली गड़ाते हुए कहा, "मैंने क्या कहा था तुमसे? उस लाल फीते को देखते हो? ये लोग छापेमार हैं, चाहे शर्त बद लो...।" और खुशी से नाचते हुए वह कूद कर बाड़ी के पार सड़क पर जा खड़ा हुआ।

दूसरों ने भी ऐसा ही किया और तीनों सड़क के किनारे खड़े हो गए और गौर से अपने करीब आते घुड़सवारों को देखते रहे।

जब ये घुड़सवार काफी पास आ गए, तब उस आदमी ने जिससे उनकी मुलाकात पहले हो चुकी थी, उनको इशारा किया और लेशचिन्स्की के मकान को अपनी चाबुक से दिखलाते हुए पूछा :

"उसमें कौन रहता है ?"

पावेल घुड़सवार के संग-संग चलने लगा।

"लेशचिन्स्की वकील। वह कल भाग गया। जरूर आप लोगों का डर लगा होगा उसे...।"

"तुम्हें क्या मालूम कि हम लोग कौन हैं ?" अधेड़ आदमी ने मुस्कराते हुए पूछा।

पावेल ने फीते की ओर इशारा करते हुए कहा, "क्यों, वह क्या है ? कोई भी बतला सकता है...।"

शहर में दाखिल होती हुई फौजी टुकड़ी को देखने के लिए कुतूहल के मारे लोगों की भीड़ सड़क पर जमा हो गई। हमारे ये तीन नौजवान दोस्त भी इन गर्द से ढंके हुए, थक कर चूर लाल सैनिकों को वहां से गुजरते हुए देखते रहे। और जब उस टुकड़ी की अकेली तोप और मशीनगनों की गाड़ियां सड़क के पत्थर पर आवाज करती हुई आगे बढ़ीं तो लड़कों की कतारें भी छापेमारों के पीछे हो लीं और लोग तब तक अपने घर नहीं गए जब तक कि यह टुकड़ी शहर के बीचोबीच रुक नहीं गई और सिपाहियों को लोगों के घरों पर ठहराने का काम शुरू नहीं हो गया।

उस शाम को लेशचिन्स्की के मकान में, उसके लम्बे-चौड़े बैठकखाने में उस नक्काशीदार पायों वाली लम्बी-चौड़ी मेज के इर्द-गिर्द चार लोग बैठे हुए थे : टुकड़ी के कमांडर कामरेड बुल्गाकोव, जो एक अधेड़ आदमी थे और जिनके बाल पकने शुरू हो गए थे और उनके तीन सहायक।

बुल्गाकोव ने उस सूबे का नक्शा मेज पर फैला रखा था और उनकी उंगलियां उस पर चल रही थीं।

"कामरेड एरमाचेंको, तो तुम्हारा कहना यह है कि हम लोग इस जगह पर पैर जमाएं," उन्होंने अपने सामने बैठे हुए उस आदमी को सम्बोधित करते हुए कहा जिसके गाल की हड्डियां बहुत चौड़ी और दांत बहुत मजबूत थे। "मगर मेरा तो खयाल है कि सबेरे ही हमें यहां से चल देना चाहिए। रात ही को चल दें तो और अच्छा हो। मगर वह शायद मुमकिन न हो, हमारे जवानों को आराम की जरूरत है। हमारा काम है जर्मनों के यहां पहुंचने के पहले खुद पीछे हट कर कजातिन पहुंच जाना। अपनी मौजूदा ताकत से उनका

मुकाबला करना बेवकूफी की बात होगी। एक तोप और तीस गोले, दो सौ पैदल सिपाही और साठ घुड़सवार! क्या कहने हैं, बड़ी दुर्दान्त सेना है न, जब कि जर्मन लोग फौलाद का एक पहाड़ लेकर आगे बढ़ रहे हैं। जब तक हम लोग पीछे हटती हुई दूसरी लाल टुकड़ियों के संग मिल नहीं जाते, तब तक हम मोर्चा नहीं ले सकते। इसके अलावा कॉमरेड, हमको यह भी याद रखना चाहिए कि जर्मनों के अलावा दूसरे क्रान्ति-विरोधी दस्ते भी होंगे जिनका मुकाबला हमें करना होगा। मेरा प्रस्ताव है कि हम लोग कल सवेरे स्टेशन के उस पार वाले रेलवे पुल को उड़ाने के बाद पीछे हट जायं। उसकी मरम्मत करने में जर्मनों को दो-तीन दिन लग जायेंगे और इस बीच रेलवे लाइन से उनका आगे बढ़ना रुक जायगा। क्यों, तुम्हारा क्या खयाल है साथियो? हम लोगों को ही निश्चय करना है...।" इतना कह कर वह मेज के चारों ओर बैठे हुए दूसरे लोगों की ओर देखने लगे।

स्त्रुजकोव, जो बुल्गाकोव के ठीक सामने बैठा हुआ था, अपने ओठों को चूस रहा था। उसने पहले नक्शे को और फिर बुल्गाकोव को देखा और अन्त में अपनी राय दी:

"मैं बुल्गाकोव से सहमत हूं।"

उनमें जो सबसे कम उम्र का आदमी था और जो मजदूरों के कपड़े पहने हुए था, उसने भी अपनी सहमति प्रकट की। बोला:

"बुल्गाकोव ठीक कहते हैं।"

लेकिन एरमाचेंको ने सिर हिलाया। एरमाचेंको वही आदमी था जिसने लड़कों से पहले बात की थी।

"अगर यही था तो हम लोगों ने फिर टुकड़ी बनाई ही क्यों? बिना लड़े जर्मनों को पीठ दिखाने के लिए? मैं समझता हूं कि हम लोगों को इसी जगह पर जर्मनों से मोर्चा लेना चाहिए। भागते-भागते मैं तो थक गया। अगर मुझे तय करना हो तो मैं जरूर इसी जगह पर उनसे मोर्चा लूं...।" उसने तेजी से अपनी कुर्सी पीछे को सरकाई, उठा और कमरे में टहलने लगा।

बुल्गाकोव ने असहमति प्रकट करते हुए उसकी ओर देखा।

"एरमाचेंको! हमको अपनी अक्ल से काम लेना चाहिए। हम अपने आदमियों को किसी ऐसी लड़ाई में नहीं झोंक सकते जिसका अन्त हार और तबाही में हो। यह भारी बेवकूफी की बात होगी। हमारे ठीक पीछे बड़ी-बड़ी तोपें और बख्तरबन्द गाड़ियों की एक पूरी डिवीजन है...कामरेड एरमाचेंको, यह लड़कपन का वक्त नहीं है कि हम झूठ-मूठ बहादुरी दिखलाएं...," दूसरों की ओर मुड़ते हुए उसने बात जारी रखी: "अच्छा तो यह तय हो गया; कल सवेरे हम लोग यहां से जा रहे हैं...और अब आइए अगले सवाल

को तय करें। दूसरी फौजी टुकड़ियों के साथ अपना सम्बंध कायम करने का सवाल है।...चूंकि हम लोग इस जगह को छोड़ने वाले आखिरी लोग हैं, इसलिए यहां जर्मन पांतों के पीछे काम के संगठन की जिम्मेदारी हमारी है। यह बहुत बड़ा रेलवे जंकशन है और शहर में दो स्टेशन हैं। रेलवे के काम को जारी रखने के लिए हमें एक बहुत भरोसे का कॉमरेड चाहिए। हमको यहीं पर फैसला करना होगा कि काम को शुरू करने के लिए हम किसको पीछे छोड़ जायें। क्या तुम्हारे जेहन में कोई आदमी है ?"

एरमाचेंको ने मेज के पास आते हुए कहा : "मेरा खयाल है कि मल्लाह फियोदोर जुखराई को यहां पर रहना चाहिए। पहली बात तो यह कि वह यहीं के आदमी हैं। दूसरी बात यह कि वह फिटर और मेकेनिक हैं और उनको स्टेशन पर काम मिल सकता है। और किसी ने फियोदोर को हमारी टुकड़ी के साथ देखा भी नहीं है। आज रात को वह यहां पर आयेंगे। वह काफी समझदार आदमी हैं और काम को अच्छी तरह चला सकेंगे। मैं समझता हूं कि इस काम के लिए वही सबसे माकूल आदमी हैं।"

बुल्गाकोव ने हामी भरते हुए सिर हिलाया :

"ठीक है, मैं तुम से सहमत हूं एरमाचेंको। साथियो, किसी को कोई आपत्ति तो नहीं है ?" उन्होने दूसरों की ओर मुड़ते हुए पूछा। "कोई नहीं। तो यह मामला भी तय। हम लोग जुखराई के लिए कुछ पैसा छोड़ जायेंगे और कुछ परिचय-पत्र जिनकी उसको जरूरत पड़ेगी...। अच्छा, अब तीसरा और आखिरी सवाल साथियो। इस शहर में जो हथियार जमा हैं, उनका क्या हो ? यहां पर हथियारों का अच्छा खासा स्टाक है, बीस हजार राइफिलें, जो जार के खिलाफ लड़ाई के वक्त यहां पर छूट गयी थीं और जिनके बारे में सब लोग भूल चुके हैं। वे सब एक किसान के शेड में जमा हैं। शेड के मालिक ने यह खत मुझे लिखा है। वह जल्दी ही उनसे अपना पीछा छुड़ाना चाहता है। हम लोग खामखा जर्मनों के लिए उनको नहीं छोड़ जायेंगे। मेरी राय में उनको आग लगा देनी चाहिए, और फौरन, ताकि सबेरे तक यह काम खतम हो जाय। डर सिर्फ इस बात का है कि आग कहीं आस-पास के मकानों तक न फैल जाय। गरीब किसान शहर के एक छोर पर रहते हैं।"

स्त्रुजकोव अपनी कुर्सी में हिला। वह बहुत मजबूत, पुख्ता आदमी था और उसके चेहरे पर जंगल की तरह दाढ़ी उगी हुई थी, क्योंकि एक अर्से से उसने उस्तरे की शक्ल नहीं देखी थी।

"मगर राइफलों में आग क्यों लगाई जाय ? मेरी राय में तो उन्हें लोगों में बांट देना चाहिए।"

बुल्गाकोव तेजी से उसकी ओर मुड़ा :

"क्या कहा तुमने, बांट देना चाहिए ?"

एरमाचेंको ने बड़े उत्साह के साथ उस बात की तसदीक करते हुए कहा, "सचमुच बहुत अच्छा खयाल है। हमें उनको मजदूरों को दे देना चाहिए; और और भी जो लोग लेना चाहें उन सबको। जब जर्मन उनकी जिन्दगी दूभर कर देंगे उस वक्त उनके पास पलट कर हमला करने के लिए कुछ होगा तो। लाजिमी बात है कि वे लोगों को ज्यादा से ज्यादा सतायेंगे। और, जब यह चीज लोगों की बर्दाश्त से बाहर हो जायगी तो प्रतिकार के लिए उनके पास ये हथियार होंगे। स्त्रुजकोव ठीक कहता है; राइफिलें जरूर बांट देनी चाहिए। उनमें से कुछ को गांव में ले जाना भी बुरा नहीं होगा। किसान उन्हें छिपा कर रख सकेंगे और जब जर्मन सभी कुछ हथियाने लगेंगे, उस वक्त राइफिलें बहुत कारगर साबित होंगी।"

बुल्गाकोव मन ही मन मुस्कराया।

"बात तो तुम लोग ठीक कहते हो। मगर भूलो मत कि जर्मन जरूर यह हुक्म निकालेंगे कि सारे हथियार जमा कर दिए जायें और फिर सभी उनकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

एरमाचेंको ने आपति की : "सब ऐसा नहीं करेंगे। कुछ लोग करेंगे, और बहुत से लोग नहीं करेंगे।"

बुल्गोकोव ने मेज के इर्द-गिर्द बैठे लोगों को प्रश्न करती हुई आंखों से देखा।

"मैं राइफिलों को बांट देने के पक्ष में हूं," जवान मजदूर ने भी एरमाचेंको और स्त्रुजकोव की बात का समर्थन किया।

बुल्गाकोव मान गया। "अच्छा तो यह बात भी तय हो गई," अपनी कुर्सी से उठते हुए उसने कहा, "इस वक्त तो इतने ही सवाल थे। अब हम लोग सवेरे तक आराम कर सकते हैं। जुखराई आए तो उसे मेरे पास भेजना, मैं उससे बात करना चाहता हूं। एरमाचेंको, तुम जाकर जरा सन्तरियों की चौकियां देख लो।"

जब सब चले गए तो बुल्गाकोव बैठकखाने के बगल में अपने सोने के कमरे में गया, गद्दे पर उसने अपना बरानकोट फैलाया और लेट रहा।

दूसरे रोज सुबह पावेल बिजली घर से अपने घर लौट रहा था। वह पिछले एक साल से वहां फायरमैन के मददगार के रूप में काम कर रहा था।

उसे फौरन पता चल गया कि आज शहर में असाधारण खलबली है। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया उसे और-और लोग मिलते गए जो एक, दो

और कोई-कोई तो तीन-तीन राइफिलें लिए चले जा रहे थे। उसकी समझ में नहीं आया कि हो क्या रहा है। वह तेजी से अपने घर की ओर लपका। लेशचिन्स्की के बागीचे के सामने उसे कल के अपने परिचित लोग मिले। ये लोग अपने घोड़ों पर सवार हो रहे थे।

पावेल भाग कर घर के अन्दर गया, जल्दी-जल्दी मुंह-हाथ धोया और मां से यह मालूम करके कि आर्तेम अब तक घर नहीं लौटा है, फिर तेजी से बाहर निकल गया और जल्दी-जल्दी सर्गेई ब्रुजाक के घर की ओर चल दिया जो कि शहर के दूसरे छोर पर था।

सर्गेई का पिता इंजन ड्राइवर का सहायक था और उसका अपना एक छोटा सा मकान और थोड़ी सी जमीन थी।

सर्गेई घर में नहीं था और उसकी मां ने जो एक मोटी सी पीले चेहरे की स्त्री थी, पावेल को अरुचि की निगाहों से देखा।

"पता नहीं वह कहां है! सबेरे-सबेरे जो पहली चीज उसने की वह यही थी कि ऐसे भाग निकला जैसे भूत सवार हो। कहता था, कहीं पर राइफिलें बंट रही हैं। मेरा खयाल है वहीं गया होगा। तुम सब जो चपटी-चपटी नाक वाले योद्धा हो न, उनको जरूरत इस बात की है कि उनकी जरा अच्छी तरह कुन्दी की जाय—बिलकुल कहे में नहीं रहे अब तुम लोग। अभी दूध के दांत भी तो तुम्हारे टूटे नहीं और चले हैं राइफिलों के पीछे। तुम उस आवारे को बतला देना कि अगर घर में एक भी कारतूस लाया तो उसकी खाल उधेड़ लूंगी। कौन जाने वह क्या उठा लाए और फिर मुझको तो उसकी जवाबदेही करनी पड़ेगी! तू भी तो कहीं उसी जगह नहीं जा रहा, क्यों?"

अभी सर्गेई ब्रुजाक की बातूनी मां अपनी बात खतम भी न कर पाई थी कि पावेल उधर सड़क पर दौड़ता चला जा रहा था।

बड़ी सड़क पर उसे एक आदमी मिला जो दोनों कंधों पर एक-एक राइ-फिल लिये हुए था। पावेल भाग कर उस आदमी के पास पहुंचा।

"काका! काका! जरा मुझे भी बता दो कि ये कहां से मिली हैं?"

"वहां वेर्खोवीना में लोग बांट रहे हैं।"

पावेल जितनी तेजी से दौड़ सकता था, दौड़ चला। दो सड़कें पार करने पर वह एक दूसरे लड़के से टकरा गया जो एक भारी सी संगीन लगी राइ-फिल घसीटता आ रहा था। पावेल ने उसको टोका:

"तुम्हें यह बन्दूक कहां से मिली?"

"वहां स्कूल के सामने फौजवाले बांट रहे हैं। मगर अब तो एक भी नहीं बची। सब खतम। रात भर बांटते रहे और अब तो सिर्फ खाली बक्से रह गए हैं। यह मेरी दूसरी है।" लड़के ने गर्व के साथ बतलाया।

इस खबर से पावेल को गहरी निराशा हुई।

सोचते-सोचते उसका मन तीखेपन से भर उठा : "छिः, मैं भी कितना बेवकूफ हूं। मुझे सीधे वहीं जाना चाहिए था। मैं कैसे गफलत कर गया?"

एकाएक उसके मन में एक विचार आया। घूम कर उसने दो-तीन छलांगों में उस लड़के को जा पकड़ा और उसके हाथ से राइफिल छीन ली।

"तुम्हारे लिए एक काफी है। यह मेरी है।" उसने अधिकार के स्वर में कहा।

दिन दहाड़े इस डकैती से गुस्सा होकर वह लड़का पावेल पर टूट पड़ा। मगर पावेल कूद कर पीछे हट गया और अपने दुश्मन की ओर संगीन साधकर जोर से चिल्लाया :

"जरा सम्भल कर रहना नहीं तो चोट खा जाओगे।"

वह लड़का खीझ के मारे रोने लगा और बेबस गुस्से में बकता-झकता भाग गया। अपने से बेहद खुश पावेल ठाठ से घर आया, छलांग लगा कर बाड़ी को पार करते हुए भाग कर शेड में गया, ऊपर चढ़ कर अपनी यह दौलत छत की बल्लियों पर टिका कर रख दी और खुशी से सीटी बजाता हुआ घर के अन्दर दाखिल हुआ।

उक्रेन की गर्मी की शामें बड़ी प्यारी होती हैं। शेपेतोवका जैसे छोटे शहरों में, जो कि सच पूछिए तो मुफस्सिल के गांवों जैसे होते हैं, गर्मी की ये स्तब्ध रातें तमाम नौजवानों को जैसे अपने जादू से घर के बाहर आने पर मजबूर कर देती हैं। आप उनको टोलियों में और जोड़ों में देख सकते हैं—मकानों के सायवानों में, घर के सामने की छोटी सी बगिया में, या सड़क के किनारे पड़ी हुई इमारती लकड़ी के ढेरों पर आराम के साथ बैठे हुए। उनकी खुशी से उबलती हुई हंसी और गाने शाम की निस्तब्धता में गूंजते रहते हैं।

हवा फूलों की खुशबू से भारी है और कांप रही है। आसमान की गहराइयों में नन्हें-नन्हें तारे चमक रहे हैं और आवाजें हवा के पंखों पर दूर-दूर जा रही हैं...

पावेल को अपने अकार्डियन[1] से बहुत प्यार था। वह उस सुरीले बाजे को बहुत प्यार से अपने घुटनों पर लिटा लेता और उसके परदों की दोनों पंक्तियों पर बड़ी कोमलता से अपनी उंगलियों को ऊपर-नीचे दौड़ाने लगता। और कभी एक भारी आह और कभी उमंग और खुशी के संगीत का इन्द्रधनुषी झरना उससे...

---

१. एक तरह का बाजा।—अनु.

जब धौंकनी चल रही हो और अकार्डियन में से नर्म-नर्म संगीत, पागल कर देने वाले सुर निकल रहे हों, तब भला कोई चुप कैसे बैठ सकता है। इसके पहले कि आप जानें कि क्या हो रहा है, आपके पैर उस संगीत का आदेश मान कर नाचने लग जाते हैं। आह, जिन्दगी भी कितनी अच्छी चीज है, कितनी प्यारी, कितनी सुन्दर !

आज की शाम खास तौर से खुशी में डूबी हुई है। पावेल के मकान के सामने लकड़ी के मोटे-मोटे कुन्दों का जो ढेर है, उस पर नौजवानों और नवयुवतियों की एक भीड़ इकट्ठी है। और उनमें भी सबसे ज्यादा मस्ती में है गालोचका, पावेल के बगल के मकान वाले राजमिस्त्री की लड़की। गालोचका को लड़कों के संग नाचना-गाना बहुत ही अच्छा लगता है। उसकी अच्छी बुलन्द आवाज बहुत गहरी मखमली और मीठी है।

पावेल को उससे थोड़ा डर लगता है। वजह यह है कि गालोचका जबान की तेज है। वह पावेल के बगल में बैठ जाती है और हंसते हुए अपनी बांह उसके गले में डाल देती है।

कहती है : "कितने सजते हो तुम इस अकार्डियन के साथ ! सचमुच बड़े दुख की बात है कि तुम अभी जरा छोटे हो, वर्ना तुम से अच्छा आदमी मेरे लिए दूसरा न होता। मैं अकार्डियन बजाने वाले आदमियों पर जान देती हूं। उनके सामने मेरा यह नन्हा दिल जैसे पिघल जाता है।"

पावेल लाज के मारे लाल पड़ जाता है—गनीमत है कि बहुत अंधेरा है और कोई देख नहीं सकता। वह उस चंचल छोकरी से दूर खिसक जाता है, मगर वह उसका पीछा छोड़ने वाली नहीं।

वह हंसते हुए कहती है : "प्यारे अब क्या तुम मुझे छोड़ के भाग जाना चाहते हो, कैसे बेदर्दी हो ! तुम तो लड़कियों को भी मात करते हो।"

उसकी अच्छी कसी हुई छातियां पावेल के कंधे से छू जाती हैं और वह एक अजीब ढंग से अनायास अपने को आन्दोलित होता महसूस करता है, और टोली के दूसरे लोगों की जोरदार हंसी खामोशी को तोड़ती है, जो कि उस गली की हमेशा की साथिन है।

पावेल ने उसके कंधे को हल्का सा धक्का देते हुए कहा : "जरा सरक कर बैठो न, मुझे बजाने में दिक्कत होती है।"

इस पर हंसी का एक और कहकहा फूट पड़ता है, मजाकों के नये तीर छूटने लगते हैं।

मरुसिया पावेल की रक्षा करती है : "कोई दर्दीली चीज बजाओ पावेल, जो दिल के तारों को खींच कर झनझना दे।"

अकार्डियन की धौंकनी धीरे-धीरे फैलती है। पावेल की उंगलियां बड़ी

नरमी और बड़े प्यार से परदों को सहलाती हैं और एक बहुत जानी-पहचानी और सबकी प्यारी धुन हवा में भर उठती है। सबसे पहले गालीना गाना शुरू करती है, फिर मरुसिया और फिर बाकी सब :

एक जगह पर जमा हुए मल्लाह सभी मस्ताने
कितने अच्छे, कितने मीठे लगते दुख के गाने...

गाने वालों की गूंजती हुई जवान आवाजें हवा की लहरों पर दूर जंगलों तक पहुंच रही थीं।

"पावका"—यह आर्तेम की आवाज थी।

पावेल ने अपने अकार्डियन की धौंकनी दबा कर उसकी हवा निकाली और फीता लगा दिया।

"घर पर लोग मुझे बुला रहे हैं। मुझे जाना होगा।"

मरुसिया ने रुकने के लिए आग्रह करते हुए कहा : "उंह, जाना, मगर थोड़ी देर और बजाओ। ऐसी जल्दी तुम्हें किस बात की है?"

मगर पावेल जाने का निश्चय कर चुका था।

"नहीं; अब और नहीं रुक सकता। कल फिर और गाना-बजाना करेंगे, मगर अब तो मुझे जाना ही होगा। आर्तेम बुला रहा है।" यह कहते हुए वह दौड़ कर सड़क के उस पार अपने छोटे से मकान में घुस गया।

उसने दरवाजा खोला और कमरे में आर्तेम के अलावा और भी दो आदमियों को पाया जिनमें से एक आर्तेम का दोस्त रोमान था और दूसरे को पावेल नहीं जानता था। वे सब मेज के सामने बैठे थे।

पावेल ने पूछा : "तुमने मुझे बुलाया?"

आर्तेम ने सिर हिला कर हामी भरी और उस नये आदमी की तरफ मुड़ते हुए कहा :

"यही मेरा भाई है, जिसके बारे में अभी हम लोग बातें कर रहे थे।"

उस नये आदमी ने अपना गठीला हाथ पावेल की तरफ बढ़ाया।

आर्तेम ने भाई से कहा : "सुनो पावका, तुमने मुझे बतलाया था कि बिजली घर का एलेक्ट्रीशियन बीमार है। अब मैं चाहता हूं कि तुम कल पता लगाओ कि उन्हें उस आदमी की जगह क्या किसी दूसरे आदमी की जरूरत है। अगर हो तो तुम आकर मुझे बतलाना।"

उस नये आदमी ने आर्तेम को टोकते हुए कहा :

"नहीं, उसकी कोई जरूरत नहीं। ज्यादा अच्छा होगा कि मैं ही खुद इसके साथ चला जाऊं और बड़े साहब से बातें कर लूं।"

"यह भी कोई पूछने की बात है। जरूरत तो उन्हें होगी ही। आज बिजली घर सिर्फ इसलिए बन्द रहा कि स्टेंकोविच बीमार है। बड़े साहब दो बार आए—उन्हें बड़ी तलाश थी ऐसे आदमी की जो उसकी जगह ले सके। मगर कोई मिला नहीं। सिर्फ एक फायरमैन के भरोसे बिजली घर चालू करने में उन्हें डर मालूम हुआ। एलेक्ट्रीशियन को टाइफस[१] हुआ है।"

उस नये आदमी ने पावेल से कहा, "अच्छा तो बात तय हो गई। मैं कल तुम्हारे पास आऊंगा और फिर हम लोग साथ चलेंगे।"

"अच्छा।"

पावेल की आंखें उस नये आदमी की शान्त भूरी आंखों से मिलीं। वह गौर से पावेल को देख रहा था। उसकी दृढ़ अपलक दृष्टि से पावेल को उलझन सी महसूस हुई। आगन्तुक भूरे रंग का एक कोट पहने था जिसके बटन ऊपर से नीचे तक बन्द थे—जाहिर था, कोट उसके लिए जरूरत से ज्यादा चुस्त था क्योंकि उसकी मजबूत चौड़ी पीठ पर की सीवनें बहुत तनी हुई और उधड़ने के करीब थीं। उसके सिर और कंधों को जोड़ने वाली चीज थी उसकी बैल की जैसी, मोटी, कसी हुई गर्दन। उसके पूरे शरीर को देखकर किसी पुराने शाहबलूत के दरख्त की मजबूती का खयाल आता था।

आर्तेम ने दरवाजे तक उनको पहुंचाते हुए कहा, "अच्छा जुखराई, सलाम, खुदा तुम्हें कामयाब करे। कल तुम मेरे भाई के साथ जाना और वहां उस नौकरी को ठीक कर लेना।"

इस टुकड़ी के जाने के तीन दिन बाद जर्मन शहर में दाखिल हुए। उनके आने की घोषणा काफी दिनों से उजाड़ स्टेशन के एक इंजन की सीटी ने की।

कस्बे भर में खबर फैल गई कि जर्मन आ रहे हैं।

कस्बे में छेड़े गये दीमक के भिटे जैसी खलबली थी, क्योंकि गो शहर वाले कुछ दिनों से जानते थे कि जर्मन आने वाले हैं, तब भी उन्हें जैसे इस बात का यकीन न आता था। और अब वे ही भयानक जर्मन रास्ते में नहीं, बल्कि यहीं, इसी कस्बे में थे।

कस्बे वाले अपने बागीचों की बाड़ियों और छोटे-छोटे लकड़ी के फाटकों की हिफाजत में लगे हुए थे। उन्हें बाहर सड़क पर निकलने में डर लगता था।

बड़ी सड़क के दोनों तरफ एक-एक की कतार में मार्च करते हुए जर्मन आए। वे हलके जैतूनी रंग की वर्दी पहने हुए थे और अपनी राइफलें साधे

१. एक तरह का बुखार।—अनु.

चल रहे थे। उनकी राइफिलों में चौड़े छुरे जैसी संगीनें लगी हुई थीं। वे भारी-भारी लोहे के टोप लगाए थे और उनकी पीठ पर बड़े-बड़े फौजी थैले लटके थे। एक अनन्त प्रवाह के रूप में वे स्टेशन से कस्बे में आए। वे सतर्क होकर चल रहे थे और किसी भी हमले का जवाब देने के लिए बिलकुल मुस्तैद थे, गोकि उन पर हमला करने की बात किसी की कल्पना में भी न थी।

आगे-आगे माउजर[1] हाथ में लिए दो अफसर चल रहे थे। सड़क के बीचो-बीच दुभाषिया चल रहा था। यह दुभाषिया हेटमैन के नीचे काम करने वाला एक सार्जेन्ट-मेजर था जो नीले रंग का उक्रेनी कोट पहने था और ऊंची-सी फर की टोपी लगाए था।

शहर के बीचोबीच चौक में जर्मन कतार बांध कर खड़े हो गए। नगाड़े बज रहे थे। कस्बे के कुछ अधिक साहसी लोगों की एक छोटी-सी भीड़ इकट्ठा हो गई थी। उक्रेनी कोट पहने हुए हेटमैन का वह आदमी दवाइयों की दूकान के सायबान पर चढ़ गया और वहां से उसने कमांडैण्ट मेजर कार्फ का जारी किया हुआ हुक्मनामा जोर-जोर से पढ़ना शुरू किया :

(१) मैं हुक्म जारी करता हूं कि

शहर के सारे लोग चौबीस घंटे के अन्दर-अन्दर सारी बन्दूकें और दूसरे खतरनाक हथियार जो उनके पास हों, जमा कर दें। जो इस हुक्म को नहीं मानेगा उसे गोली मार दी जायगी।

(२) शहर में मार्शल-लॉ जारी किया जाता है और लोगों को मनाही की जाती है कि आठ बजे रात के बाद सड़कों पर न निकलें।

मेजर कार्फ, शहर कमांडैण्ट।

पहले जिस इमारत में म्युनिसिपैलिटी और क्रान्ति के बाद सोवियत शासन का केन्द्र था, उसी में जर्मन कमांडैण्ट ने अपना क्वार्टर कायम किया। इमारत के फाटक पर एक सन्तरी तैनात था जो सिर पर लोहे का टोप लगाए था। इस टोप पर जर्मनी का राज-चिह्न, एक बड़ा-सा गिद्ध बना हुआ था। उसी इमारत के पीछे वह मालगोदाम था जहां शहर वालों को अपने हथियार जमा करने थे।

गोली मारे जाने के डर के मारे सारे दिन शहर वालों ने अपने हथियार ला-लाकर जमा किये। अधेड़ उम्र वाले लोग तो आये नहीं; हथियार लाकर वापिस किये नौजवानों और बच्चों ने। जर्मनों ने किसी को पकड़ा नहीं।

जो लोग खुद नहीं आना चाहते थे, वे रात को अपने हथियार सड़क पर

---

१. एक तरह का पिस्तौल।—अनु.

फेंक गए। सबेरे जर्मन सिपाहियों ने उन्हें बटोर लिया, अपनी फौजी गाड़ी में लादा और कमांडैण्ट के दफ्तर ले गए।

एक बजे दोपहर, जब हथियार जमा करने की मियाद खत्म होती थी, जर्मन सिपाहियों ने बन्दूकों की गिनती शुरू की। चौदह हजार राइफिलें। इसका मतलब हुआ कि छः हजार नहीं जमा की गईं। उनके लिए उन्होंने बड़ी जबर्दस्त तलाशियां लीं। मगर कुछ खास माल बरामद नहीं हुआ।

दूसरे रोज सबेरे दो रेलवे मजदूरों को, जिनके घर में छिपाई हुई राइफिलें पाई गईं, शहर के बाहर पुराने यहूदी कब्रिस्तान के पास गोली मार दी गई।

कमांडैण्ट के हुक्म के बारे में सुनते ही आर्तेम बड़ी तेजी से घर की ओर चला। बाहर हाते में ही पावेल मिल गया। उसका कंधा पकड़ते हुए उसने धीरे से, मगर मजबूत आवाज में, पावेल से पूछा :

"तुम भी कोई हथियार घर लाए थे ?"

पावेल का इरादा राइफिल के बारे में किसी को कुछ बतलाने का नहीं था। मगर अपने भाई से ही कैसे झूठ बोलता। उसने साफ-साफ सब बात बतला दी।

दोनों साथ-साथ शेड में गए। आर्तेम ने बल्ली पर से, जहां वह छिपा कर रखी गई थी, राइफिल को उतारा, उसके बोल्ट और संगीन को अलग किया और बन्दूक की नली पकड़ कर अपनी पूरी ताकत से एक खम्भे पर उसको दे मारा। बन्दूक का कुन्दा चूर-चूर हो गया। और फिर उस राइफिल का अवशेष बागीचे के उस पार, दूर, घूरे में फेंक दिया गया। संगीन और बोल्ट को आर्तेम ने संडास में डाल दिया।

इस काम को खतम करके आर्तेम अपने भाई की तरफ मुड़ा।

"अब तुम बच्चे नहीं रहे पावका, और तुम्हें समझना चाहिए कि बन्दूकों के संग खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। तुम्हें घर के अन्दर ऐसी कोई चीज नहीं लानी चाहिए। यह बहुत ही खतरनाक बात है। आज-कल ऐसी चीज के लिए तुम्हें अपनी जान तक की कीमत अदा करनी पड़ सकती है। और देखो, कोई चालबाजी करने की भी कोशिश न करना, क्योंकि अगर ऐसी कोई चीज घर लाए और उनको पता चल गया तो सबसे पहले मुझको गोली मारी जायगी। तुम्हारे जैसे छोकरों को वे हाथ नहीं लगायेंगे। अच्छी तरह समझ लो। यह बहुत ही बुरा जमाना है, बहुत ही बुरा।"

पावेल ने वादा किया।

हाता पार करके जब दोनों भाई घर के अन्दर जा रहे थे, तब एक गाड़ी

लेशचिन्स्की के फाटक पर रुकी और उसमें से वह वकील और उसकी बीबी और दो बच्चे, नेली और विक्टर, बाहर निकले।

आर्तेम उनको देखकर गुस्से में बड़बड़ाया, "अच्छा तो यह नाजुक चिड़ियां अपने घोंसले पर वापस आ गईं। अब असल तमाशा शुरू होगा। खुदा गारत करे इन हरामजादों को !" कहते हुए वह अन्दर चला गया।

सारे दिन पावेल उस राइफिल के बारे में सोच-सोचकर दुखी होता रहा। इसी बीच उसका दोस्त सर्गेई, एक पुरानी बीरान शेड में, दीवाल के पास, जमीन में गड्ढा खोदने में जी-जान से लगा हुआ था। आखिर गड्ढा तैयार हो गया। उसके अन्दर सर्गेई ने तीन चमचमाती हुई नई राइफिलों को अच्छी तरह चीथड़ों में लपेट कर रख दिया। उसको भी ये राइफिलें उसी वक्त मिली थीं जब लाल सेना ने जनता को राइफिलें बांटी थीं। उसका इरादा उनको जर्मनों के हवाले करने का कतई नहीं था। रात भर उसने उनको हिफाजत के साथ छिपाने के लिए कड़ी मेहनत की थी।

उसने गड्ढे को पाट दिया, पैर से दाब-दाबकर मिट्टी को बराबर कर दिया और फिर उसके ऊपर बहुत से कूड़े-कचरे का ढेर लगा दिया। अपनी मेहनत के नतीजे को बहुत बारीकी से एक आलोचक की तरह उसने देखा। उसे सन्तोष हुआ। उसने टोपी उतारी और माथे का पसीना पोंछा।

"अब ढूंढ़ने दो उनको, देखें कैसे पाते हैं। मान लो पा भी जायें तो यह नहीं जान सकते कि किसने इनको यहां रखा। यह शेड तो लावारिस है।"

पावेल और उस गंभीर चेहरे वाले एलेक्ट्रीशियन में अनजान में ही धीरे-धीरे दोस्ती पैदा हो गई। बिजली के स्टेशन पर उस आदमी को काम करते अब एक महीना हो गया था।

जुखराई ने आग वाले के सहायक, पावेल को दिखलाया कि डाइनमो कैसे बनता और कैसे चलता है।

उस मल्लाह को इस तेज लड़के से प्यार हो गया। वह अक्सर खाली दिनों में आर्तेम के घर आता और बहुत धीरज के साथ मां के घरेलू झंझटों और परेशानियों की कहानी सुनता—खास करके तब, जब वह अपने छोटे लड़के की कारगुजारियों का जिक्र करती। जुखराई चिन्तनशील और गंभीर आदमी था और मारिया याकोवलेवना को उससे बात करके बहुत शान्ति और सांत्वना मिलती। जुखराई की संगत में वह अपनी परेशानियों को भूल जाती और बहुत खुश रहा करती।

एक दिन जब पावेल बिजली स्टेशन के हाते में जलाऊ लकड़ी के ऊंचे-ऊंचे ढेरों के बीच से गुजर रहा था तो जुखराई ने उसको रोका।

मुस्कराते हुए जुखराई ने कहा, "तुम्हारी मां ने मुझे बतलाया है कि तुम्हें मार-पीट बहुत पसन्द है। वह कहती हैं, 'इस मामले में तो वह लड़ने वाले मुर्गे से भी गया-गुजरा है।'" यह कह कर जुखराई सहमति सूचक ढंग से जैसे मन-ही-मन मुस्कराया और बोला, "सच बात यह है कि लड़ना बुरी बात नहीं है, यदि तुम्हें इस बात का पता हो कि किससे लड़ना है और क्यों लड़ना है।"

पावेल ठीक नहीं समझ सका कि जुखराई मजाक में यह बात कह रहा है या संजीदा तौर पर।

"मैं झूठ-मूठ नहीं लड़ता," उसने जवाब दिया, "मैं हमेशा ठीक बात के लिए और इन्साफ के लिए लड़ता हूं।"

"क्या तुम चाहोगे कि मैं तुम्हें ठीक से लड़ना सिखलाऊं ?" जुखराई ने अप्रत्याशित ढंग से पूछा।

पावेल ने उसकी ओर कुछ आश्चर्य से देखते हुए पूछा, "ठीक से लड़ने का क्या मतलब ?"

"तुम्हें आप मालूम हो जायगा।"

और तब उसने पावेल को घूंसेबाजी पर एक संक्षिप्त लेक्चर दिया।

इस कला में पावेल को दक्षता आसानी से नहीं मिली। कई बार जुखराई के घूंसे से उसके पैर उखड़ गए और उसने अपने को जमीन पर लोटते पाया। मगर जो भी हो, पावेल बहुत मेहनती और धीरज वाला शिष्य सिद्ध हुआ।

एक दिन, जब मौसम गर्म और खुशगवार था और वह क्लिम्का के घर से लौट कर आया था और अपने कमरे में इधर-उधर लुढ़कता फिर रहा था, क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे, तब पावेल ने निश्चय किया कि अपनी प्रिय जगह पर चढ़ेगा। घर के पिछवाड़े के बागीचे के कोने में खड़े हुए शेड की छत उसकी प्रिय जगह थी। पीछे का सहन पार करके वह बाग में आया। वह झोंपड़ी के पास पहुंचा और छत पर चढ़ गया। छप्पर के ऊपर लटकती हुई चेरी वृक्षों की घनी शाखों के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ वह छत के बीचोबीच पहुंच गया और धूप खाने के लिए वहीं लेट गया।

छप्पर का एक हिस्सा लेशचिन्स्की के बागीचे में बढ़ा हुआ था और छत के सिरे से वह सारा बागीचा और मकान का एक हिस्सा दिखाई देता था। वहां, उस किनारे से, अपना सिर बढ़ा कर पावेल ने हाते का एक हिस्सा देखा; एक गाड़ी वहां खड़ी हुई थी। लेशचिन्स्की के मकान में टिके जर्मन लेफ्टिनेण्ट का अर्दली अपने मालिक के कपड़ों पर ब्रुश कर रहा था।

पावेल ने अक्सर लेफ्टिनेण्ट को फाटक पर खड़े देखा था। वह चौड़ा-चकला, लाल मुंह का आदमी था। उसके चेहरे पर छोटी-छोटी कतरी हुई मूंछें थीं। वह नाक पर ठहरने वाला फैशनेबुल चश्मा लगाता था और एक ऐसी टोपी पहनता था जिसकी चोटी पर लाख का चमकदार काम था। पावेल को यह भी मालूम था कि वह उस बगल वाले कमरे में रहता है जिसकी खिड़की बाग में खुलती है और जो छप्पर की छत से दिखाई देता है।

लेफ्टिनेण्ट साहब इस वक्त मेज पर बैठे कुछ लिख रहे थे। फिर, उन्होंने जो कुछ लिखा था उसे उठाया और कमरे के बाहर चले गए। लिखा हुआ कागज उन्होंने अपने अर्दली को पकड़ाया और फाटक को जाने वाले कच्चे रास्ते पर चल दिये। बागीचे के लता-मण्डप में वह किसी से बात करने के लिए रुके। पल भर बाद, नेली लेशचिन्स्की बाहर आई। लेफ्टिनेण्ट साहब ने उसकी बांह पकड़ी और फिर दोनों फाटक के बाहर निकल गए।

पावेल अपनी जगह से यह सब कार्यवाही देख रहा था। इस वक्त उस पर आलस्य-सा छा रहा था और वह आंखें बन्द करने वाला ही था कि उसने अर्दली को लेफ्टिनेण्ट साहब के कमरे में घुसते देखा। अर्दली ने एक वर्दी खूंटी पर टांगी, बाग में खुलने वाली खिड़की को खोला और कमरे की सफाई की। इसके बाद कमरे को बन्द करता हुआ बाहर निकल गया। दूसरे ही पल पावेल ने उसको अस्तबल के पास खड़े पाया, जहां घोड़े बंधे थे।

खुली हुई खिड़की में से पावेल कमरे की हर चीज को अच्छी तरह देख सकता था। मेज पर एक फौजी कमरबन्द और कोई चमकदार चीज पड़ी थी।

प्रबल कुतूहल के मारे, जिस पर उसका कोई बस न था, पावेल धीरे से वहीं छत पर से चेरी के पेड़ पर चढ़ गया और वहां से फिसल कर लेशचिन्स्की के बाग में उतर गया। झुके-झुके दौड़ कर उसने बागीचे को पार किया और खिड़की से कमरे के अन्दर झांका। उसके सामने मेज पर एक कमरबन्द शोल्डर-स्ट्रैप समेत पड़ा हुआ था और रिवाल्वर रखने का चमड़े का केस, जिसमें एक लाजवाब, बारह गोलियों वाला मानलिकर रिवाल्वर रखा हुआ था।

पावेल की तो जैसे सांस रुक गई। कुछ सेकेंड तक उसके भीतर जबर्दस्त अन्तर्द्वन्द्व मचा रहा। मगर, आखीर में जीत साहसिकता की हुई और वह कमरे के अन्दर घुस गया। उसने रिवाल्वर का केस उठाया, उसमें से नीले-नीले लोहे का वह हथियार निकाला और खिड़की से नीचे कूद गया। अपने चारों तरफ तेजी से निगाहें दौड़ाते हुए उसने बहुत सावधानी से पिस्तौल अपनी जेब में डाली और तेजी से भाग कर बागीचे को पार करता हुआ चेरी के पेड़ के पास जा पहुंचा। बन्दर की-सी फुर्ती से वह छत पर चढ़ गया। वहां क्षण भर रुक

कर उसने पीछे को देखा। अर्दली अब भी आनन्दपूर्वक साईस से बात कर रहा था। बागीचा खामोश और वीरान था। पावेल फिसल कर दूसरी ओर उतरा और घर की तरफ भाग चला।

उसकी मां चौके में रात का खाना पकाने में तल्लीन थी। उसने पावेल की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

पावेल ने एक बड़े ट्रंक के पीछे से झटपट एक चीथड़ा उठाया और उसे जेब में डालते हुए फिर से कमरे के बाहर निकल गया, इतने चुपके से कि उसकी मां को भी उसकी आहट न मिली। वहां से उसने दौड़ कर सहन को पार किया, बाड़ी को छलांग लगाई और जंगल को जाने वाली सड़क पर आ निकला। भारी रिवाल्वर को हाथ से पकड़े हुए, ताकि वह जांघ से न टकराए, वह पास के ही ईंट के भट्ठे के वीरान खंडहर की तरफ अपनी पूरी ताकत से भाग चला।

उसके पैर जैसे जमीन पर पड़ ही नहीं रहे थे और कानों में हवा सनसना रही थी।

पुराने भट्ठे के पास नीरव शान्ति थी। वह दृश्य मन को उदास करने वाला था। लकड़ी की छत जहां-तहां गिरी हुई थी, एक ईंट गारे का पहाड़ खड़ा था और टूटी-फूटी भट्ठियां मुंह बाये थीं। उस जगह तमाम जंगली घास उगी हुई थी; वहां कोई कभी जाता न था, सिवा पावेल और उसके दो दोस्तों के जो कभी-कभी वहां खेलने पहुंच जाते थे। पावेल को ऐसी बहुत सी जगहें मालूम थीं जहां वह अपने इस चोरी के खजाने को छिपा सकता था।

एक भट्ठी में दरार थी। उसमें से वह ऊपर चढ़ा और आस-पास अपनी सतर्क आंखें दौड़ाईं। कोई दिखाई न दिया। केवल चीड़ के दरख्त हलकी-हलकी आहें भर रहे थे और धीमी-धीमी हवा सड़क पर धूल उड़ा रही थी। हवा चीड़ के गोंद की गंध से भारी थी।

पावेल ने चीथड़े में लिपटा हुआ रिवाल्वर भट्ठी के फर्श के कोने में रख दिया और उसे पुरानी ईंटों के एक छोटे से ढेर से ढंक दिया। बाहर आते समय उसने उस पुरानी भट्ठी के दरवाजे को ईंटों से चुन दिया, उस जगह की ठीक स्थिति दिमाग में बिठा ली और धीरे-धीरे घर की ओर चल दिया। उस वक्त उसे अपने घुटने कांपते मालूम हो रहे थे।

"इस सब का अन्त क्या होगा ?"—उसने सोचा और उसका हृदय आशंकाओं से भारी हो गया।

वह घर नहीं जाना चाहता था, इसलिए रोज से जल्दी ही बिजली घर के लिए चल दिया। उसने चौकीदार से चाभी ली और बिजली घर का विशाल दरवाजा खोला। और जब कि वह राख के गड्ढे की सफाई कर रहा था, पम्प

से ब्वायलर में पानी पहुंचा रहा था और आग सुलगा रहा था, उस तमाम वक्त उसका ध्यान इसी बात पर अटका हुआ था कि इस वक्त लेशचिन्स्की के यहां क्या हो रहा होगा !

उस वक्त करीब ग्यारह बजा था जब जुखराई आया और उसने पावेल को बाहर बुलाया ।

"आज तुम्हारे यहां तलाशी क्यों हुई थी ?" उसने धीमी आवाज में पूछा।

पावेल चौंक पड़ा ।

"तलाशी ?"

जुखराई ने जरा देर की चुप्पी के बाद फिर कहा, "मुझे आसार अच्छे नहीं नजर आते । तुम्हें तो कुछ नहीं मालूम कि किस चीज की तलाशी लेने वे लोग आए थे ?"

पावेल को अच्छी तरह मालूम था कि उन्हें किस चीज की तलाश थी, मगर वह रिवाल्वर की चोरी के बारे में जुखराई को कुछ नहीं बतलाना चाहता था । चिन्ता के मारे कांपते हुए उसने पूछा :

"उन्होंने आर्तेम को गिरफ्तार कर लिया क्या ?"

"नहीं, कोई नहीं पकड़ा गया । मगर, उन्होंने घर की हर चीज उलट-पुलट कर रख दी ।"

इससे पावेल के मन को कुछ ढाढ़स हुआ, मगर उसकी चिन्ता मिटी नहीं । कुछ देर वह और जुखराई दोनों अपने-अपने विचारों में डूबे खडे रहे । उनमें से एक को मालूम था कि तलाशी क्यों हुई थी और वह परेशान था कि इसका जाने क्या नतीजा हो; दूसरे को यह बात नहीं मालूम थी और इसलिए वह चौकन्ना था ।

जुखराई ने सोचा : "नास हो हरामजादों का ! लगता है उनको मेरा सुराग मिल गया । आर्तेम तो मेरे बारे में कुछ नहीं जानता, मगर फिर सबों ने उसके घर की तलाशी क्यों ली ? जरा और सावधानी बरतनी होगी ।"

दोनों बिना एक शब्द बोले एक-दूसरे से अलग हुए और अपने-अपने काम में जा लगे ।

लेशचिन्स्की के मकान पर आफत बरपा थी ।

लेफ्टिनेण्ट साहब ने रिवाल्वर को गायब पाकर अपने अर्दली को बुलाया । अर्दली ने बतलाया कि जरूर उसे कोई चुरा ले गया । इस पर अफसर साहब के स्वाभाविक संयम ने उनका साथ छोड़ दिया और उन्होंने पूरी ताकत से अर्दली के कान पर एक लप्पड़ रसीद किया । लप्पड़ खाकर अर्दली एक बार कांपा; मगर फिर अटेन्शन की मुद्रा में लकड़ी की तरह सीधा खड़ा हो गया

और आंखें मुलमुलाते हुए, भीगी बिल्ली बना आगे आने वाले नतीजों का इन्त-जार करने लगा।

वकील साहब को बुला कर उनसे जवाब तलब किया गया। उन्होंने चोरी के सम्बंध में अपने गुस्से का इजहार किया और लेफ्टिनेण्ट साहब से माफी मांगी क्योंकि यह चीज उनके घर से गुम हुई थी।

विक्टर लेशचिन्स्की ने अपने बाप को सुझाया कि बहुत मुमकिन है रिवाल्वर उनके पड़ोसियों ने चुराया हो और खास तौर पर उस बदमाश पावेल कोर्चागिन ने। बाप ने फौरन अपने बेटे की यह सूझ लेफ्टिनेण्ट साहब तक पहुंचा दी और उन्होंने फौरन तलाशी का हुक्म दे दिया।

तलाशी बेकार रही। रिवाल्वर की चोरी वाली घटना से पावेल को इस बात का विश्वास हो गया कि कभी-कभी ऐसी खतरनाक कोशिशें भी कामयाब हो जाती हैं।

तीन

तोनिया खुली हुई खिड़की के सामने खड़ी हो गई और अपने विचारों में डूबे-डूबे उसने अपने परिचित बागीचे को देखा जिसके किनारे-किनारे मजबूत, दैत्यों जैसे ऊंचे पोपलर के दरख्त लगे हुए थे जो इस वक्त धीमी-धीमी हवा में हौले-हौले डोल रहे थे। उसको इस बात का यकीन नहीं आता था कि यह जगह छोड़े, जहां उसका बचपन बीता था, पूरा एक साल हो गया था। उसको लगता था जैसे वह कल गई हो और आज ही सुबह की गाड़ी से लौट आई हो।

कुछ भी नहीं बदला था : रसभरी की झाड़ियों की कतारें हमेशा की तरह आज भी बहुत सफाई से छंटी हुई थीं और बागीचे के रास्ते अब भी वैसे ही ज्यामिति के अनुसार बाकायदा ठीक-ठीक बने हुए थे और उनके किनारे-किनारे पैन्सी की कतारें लगी हुई थीं जो कि उसकी मां का बहुत प्यारा फूल था। बागीचे की हर चीज बहुत साफ-सुथरी और बाकायदा थी। हर चीज पर हर जगह वृक्ष-विज्ञान-वेत्ता के शास्त्रीय हाथ की छाप दिखाई थी। इन साफ-सुथरे बाकायदा झाड़ू-लगे रास्तों को देख कर तोनिया को बड़ी ऊब मालूम होती थी।

उसने वह उपन्यास उठा लिया जिसे वह पढ़ रही थी, बरामदे में जाने

वाला दरवाजा खोला और सीढ़ियां उतर कर नीचे बागीचे में पहुंच गई। लकड़ी के छोटे से रंगे हुए गेट को उसने धक्का देकर खोला और स्टेशन के पम्प हाउस से लगे हुए तालाब की ओर धीरे-धीरे चली।

पुल पार करके वह सड़क पर आ गई जिसके दोनों ओर पेड़ों की कतारें थीं। उसके दाहिने हाथ पर था तालाब जिसके किनारे-किनारे विलो और ऐल्डर के दरख्त लगे हुए थे और बायें हाथ पर जंगल शुरू हो जाता था।

वह पुरानी पत्थर की खान के पास वाली तलैयों की ओर जा रही थी कि मछली पकड़ने की बंसी को पानी पर डूबते-उतराते देख कर रुक गई।

एक टेढ़े-मेढ़े विलो के तने के सहारे बाहर को झुकते हुए उसने सामने की शाखों को हाथ से अलग किया और अपने सामने धूप में तपे हुए रंग के नंगे पैर एक लड़के को देखा जिसने अपने पतलून की टांगें घुटनों तक मोड़ रखी थी। उसके पास ही एक जंग लगा टीन का डिब्बा रखा था जिसमें मछली का चारा था। यह लड़का अपने काम में इतना डूबा हुआ था कि इस लड़की की ओर उसका ध्यान नहीं गया।

"तुम समझते हो कि यहां मछली पकड़ सकते हो ?"

पावेल ने पीछे मुड़ कर गुस्से में देखा।

विलो को पकड़े, पानी पर झुकी हुई थी एक लड़की जिसे पावेल ने पहले कभी नहीं देखा था। वह मल्लाहों जैसा एक सफेद ब्लाउज पहने हुए थी जिसका कॉलर धारीदार नीला था और एक हलका भूरे रंग का छोटा सा स्कर्ट पहने थी। छोटे-छोटे मोजे, जो सिरों पर रंगीन थे, उसकी खूबसूरत, धूप में तपे हुए रंग की टांगों पर चिपके हुए थे। उसके सुनहरे बाल मोटी वेणी में गुंथे हुए थे।

बंसी को पकड़े हुए हाथ हलके से कांप गए। बंसी भी कांप गई और शान्त पानी की सतह पर गोल-गोल घेरे फैल गए।

"देखो-देखो, मछली ने चारा चुगा!" पावेल के पीछे उस आवाज ने आवेश के साथ कहा।

अब वह अपने मन का संतुलन बिलकुल खो बैठा और उसने इतने जोर से बंसी खींची कि चारा-लगा कांटा पानी में से उछल कर बाहर आ गया।

"जहन्नुम में जाय, कोई उम्मीद नहीं है मछली पाने की। यह लड़की यहां क्या करने आई है," पावेल ने खीझ के साथ सोचा और अपने फूहड़पन को ढंकने के लिए उसने बंसी के कांटे को और भी दूर फेंका। मगर वह गिरा ठीक वहां जहां उसे न गिरना चाहिए था, यानी सेवार की दो घनी झाड़ियों के बीच, जहां बंसी का फंस जाना लाजिमी था।

उसकी समझ में आ गया कि क्या बात हो गई है और बिना पीछे मुड़े हुए उसने वहां ऊपर बैठी हुई उस लड़की से गुस्से में दांत पीसते हुए कहा :

"तुमसे चुप नहीं बैठा जाता ? इस तरह तो तुम सब मछलियों को भगा दोगी ।"

ऊपर से उसकी व्यंगपूर्ण आवाज आई :

"तुम्हारी काली शकल देख कर तो मछलियां कब की भाग गई हैं ! इस तीसरे पहर भला कभी कोई अच्छे घर का आदमी मछली पकड़ने निकलता है !"

पावेल अब तक तो पूरी नम्रता बरतने की कोशिश कर रहा था, मगर यह चीज उसकी बरदाश्त के बाहर थी । वह उठा और उसने अपनी टोपी आंख के ऊपर तक खींच ली, जैसा कि वह हमेशा उत्तेजित होने पर किया करता था ।

"बहुत अच्छा हो देवी जी अगर आप यहां से अपना रास्ता नापें," वह दांत दबाये-दबाये बोला । स्पष्ट ही उसने अपनी शब्दावली के सभ्यतम शब्दों का इस्तेमाल किया था ।

तोनिया की आंखें जरा छोटी हो गईं और उनमें हंसी नाचने लगी ।

"मैं क्या सचमुच तुम्हारे काम में बाधा पहुंचा रही हूं ?"

चिढ़ाने का स्वर अब मैत्री और समझौते के स्वर में बदल गया और पावेल जो इन "देवी जी" के संग, जो न जाने कहां से टपक पड़ी थीं, सचमुच रुखाई से पेश आने की सोच रहा था, अब अपने को निरस्त्र होता महसूस कर रहा था ।

"तुम चाहो तो रहो और देखो । मेरे लिए सब बराबर है," उसने अनिच्छापूर्वक कहा और फिर अपनी बंसी में दत्तचित्त हो गया । बंसी सेवार में फंस गई थी और इसमें शक नहीं कि उसका कांटा सेवार की जड़ों में उलझ गया था । पावेल को बंसी खींचते डर लगता था । अगर कहीं और फंस गई तो छुड़ाना नामुमकिन हो जायगा । और फिर यह लड़की तो हंसेगी ही । उसकी इच्छा यही थी कि वह चली जाय ।

मगर तोनिया तो पानी में हलके-हलके लहराते हुए विलो के तने पर और भी आराम के साथ बैठ गई थी और अपनी किताब घुटनों पर रख कर इस धूप में तपे हुए रंग के, काली-काली आंख वाले उजड्डु-से किशोर को देख रही थी जिसने उसका ऐसा अजीब-सा रूखा स्वागत किया था और अब जान-बूझकर उसकी उपेक्षा कर रहा था ।

पावेल तालाब के दरपन जैसे स्वच्छ पानी में लड़की की छाया साफ-साफ देख रहा था और जब उसे लगा कि वह लड़की अपनी किताब में काफी

डूबी हुई है, तो उसने बहुत सावधानी से उलझी हुई बंसी को खींचा। बंसी डूब गई और उसकी डोरी और भी तन गई।

"फंस गई, हरामजादी !" बिजली की तरह यह बात उसके मन में आ कौंधी और तभी उसने कनखियों से उस लड़की के हंसते हुए चेहरे को देखा जो पानी के अन्दर से उसकी ओर ताक रही थी।

उसी वक्त दो लड़के, जो स्कूल में सातवीं जमात में पढ़ते थे, पुल पार करके पम्प हाउस आ रहे थे। उनमें से एक था रेलवे यार्ड के बड़े साहब, इंजीनियर सुखार्को, का सत्रह साल का लड़का। उसके बाल सुनहरे थे और उसकी शक्ल आवारों जैसी थी। उसके चेहरे पर तमाम भूरे-भूरे दाग थे जिनके कारण उसके स्कूल के साथियों ने उसे "चेचकरू शुर्का" का नाम दे रखा था। वह एक बड़ी खूबसूरत-सी बंसी लिये था और उसके मुंह के एक कोने में सिगरेट दबी हुई थी। उसके साथ था विक्टर लेशचिन्स्की, जो एक लम्बा सा जनानी-सी शक्ल का लड़का था।

अपने साथी की तरफ झुकते हुए सुखार्को बहुत मानीखेज अन्दाज में उसे आंख मार रहा था, "यह लड़की तो सचमुच पटाखा है। इसका यहां पर जवाब नहीं। मैं तुमसे कहता हूं कि इसके इश्कों की कोई इन्तहा नहीं। मेरी बात का यकीन करो। वह छठी जमात में पढ़ती है और किएफ के स्कूल में जाती है। आजकल वह गर्मियां बिताने अपने बाप के पास आई है—उसका बाप जंगलात का बड़ा हाकिम है। मेरी बहन लिजा इस लड़की को जानती है। एक बार मैंने उसे बहुत भावुक-सा पत्र भी लिखा था। तुम तो जानते ही हो, वही सब बातें, 'मुझे तुमसे बेहद प्यार हो गया है और मैं धड़कते हुए दिल से तुम्हारे जवाब का इन्तजार करूंगा।' इतना ही नहीं मैंने नेडसन की कुछ उपयुक्त कविताएं भी ढूंढ़ निकालीं।"

"सो तो ठीक, मगर नतीजा क्या निकला ?" विक्टर ने कूतूहल से पूछा।

सुखार्को ने झेंप-सी मिटाते हुए धीरे-धीरे बुदबुदाकर कहा, "अरे क्या पूछते हो, बहुत लगाती है अपने आपको ! मुझसे कहने लगी, क्यों खामखा चिट्ठी लिख कर कागज बरबाद करते हो, और भी इसी तरह की बातें। मगर वह तो होता ही है हमेशा शुरू-शुरू में। इस मामले में मैं पुराना घाघ हूं। और सच बात तो यह है कि मुझे यह सब आशिकी-माशूकी वाली बकवास पसन्द नहीं है—सदियों तक आहें भर रहे हैं, पागलों की तरह घूम रहे हैं। इससे कहीं आसान यह है कि किसी शाम को उठो और मरम्मत करने वालों के बारकों तक चले जाओ। वहां तीन रूबल में तुम्हें ऐसी हसीना मिल जायगी कि देख कर मुंह में पानी भर आयेगा। और न झंझट, न खिटखिट। मैं वालका

तिखोनोव के संग जाया करता था—तुम जानते हो वालका तिखोनोव को ? रेलवे में फोरमैन है।"

नफरत से विक्टर का मुंह बिगड़ गया।

उसने कहा, "सच शुरा, तुम ऐसी गन्दी जगहों में भी जाते हो ?"

शुरा सिगरेट चबाता रहा, फिर उसने थूका और मजाक उड़ाने के अन्दाज में जवाब दिया :

"देखो, इतने पाकसाफ न बनो। हमें भी मालूम है कि तुम कहां-कहां जाते हो !"

विक्टर ने उसकी बात काटते हुए कहा :

"तुम अपनी इस सुन्दरी से मेरा परिचय नहीं कराओगे ?"

"वाह, यह भी कोई पूछने की बात है। चलो जल्दी चलें, नहीं तो वह हमें बुत्ता देकर निकल जायगी। कल सबेरे वह अकेले ही मछली पकड़ने गई थी।"

दोनों दोस्त तोनिया के पास पहुंचे तो सुखार्को ने अपने मुंह से सिगरेट निकाल ली और बड़े बांके अन्दाज में झुक कर उसका अभिवादन किया।

"कहिए कुमारी तुमानोवा, कैसे मिजाज हैं ? आप भी मछली पकड़ने आई हैं क्या ?"

तोनिया ने जवाब दिया—"नहीं, मैं तो सिर्फ देख रही हूं।"

सुखार्को ने विक्टर की बांह पकड़ कर उसे आगे करते हुए जल्दी से कहा, "आपकी इनसे मुलाकात है ? मिलिए, ये हैं मेरे दोस्त विक्टर लेशचिन्स्की।"

विक्टर ने कुछ अचकचाते हुए तोनिया की तरफ हाथ बढ़ाया।

"क्यों आज आप क्यों नहीं मछली पकड़ रही हैं ?" सुखार्को ने बात-चीत जारी रखने के खयाल से कहा।

तोनिया ने जवाब दिया, "मैं अपनी बंसी लाना भूल गई।"

"तो मैं अभी आप के लिए दूसरी लिये आता हूं। तब तक के लिए आप यह मेरी बंसी ले लीजिए। मैं अभी एक मिनट में लौट आता हूं," सुखार्को ने कहा।

विक्टर से उसने वादा किया था कि उस लड़की से मिला देगा। अपना वादा उसने पूरा कर दिया था और अब दोनों को संग-संग अकेला छोड़ना चाहता था।

तोनिया ने कहा, "नहीं, कोई जरूरत नहीं, मैं नहीं चाहती। मैं खामखा दूसरे का काम बिगाड़ना नहीं चाहती। देखते नहीं, कोई यहां पहले से बैठा मछली पकड़ रहा है !"

सुखार्को ने पूछा, "कौन ? ओह, आपका मतलब उससे है।" पहली बार उसने पावेल को देखा जो एक झाड़ी तले बैठा था। उसको देखकर सुखार्को ने

कहा, "उंह, उसकी चिन्ता आप न करें, उसको तो मैंने जहां दो बार पकड़ कर हिलाया कि वह यहां से चलता बनेगा।"

इसके पहिले कि तोनिया उसको रोक सके या कुछ कह सके, वह तेजी से पावेल के पास पहुंचा जहां वह बंसी लगाये बैठा था।

सुखार्को ने आदेश के स्वर में पावेल से कहा, "देखो अपनी बंसी-वंसी समेटो और यहां से चलते बनो।"

पावेल पर कोई असर न होता देख कर, क्योंकि पावेल पूर्ववत् बैठा हुआ मछली पकड़ता रहा, सुखार्को ने दुबारा कहा, "जल्दी करो..."

पावेल ने आंख ऊपर उठाई और सुखार्को को गुस्से से देखा।

"चुप रहो ! क्या बकबक लगा रखी है !"

यह सुनकर सुखार्को फट पड़ा, "क्या ! तेरी यह मजाल कि जबान लड़ाता है, बदमाश आवारा कहीं का ! चलो भागो यहां से," यह कहते हुए उसने जोर से उस टीन के डिब्बे में लात मारी जिसमें मछली का चारा रखा हुआ था। डिब्बा हवा में चक्कर खाता हुआ जाकर तालाब में गिरा जिससे पानी उछल कर तोनिया के चेहरे पर आया।

वह चिल्लाई, "तुम्हें शर्म आनी चाहिए, सुखार्को !"

पावेल उछल कर खड़ा हो गया। उसे मालूम था कि जहां आर्तेम काम करता है, उसी रेलवे यार्ड के बड़े साहब का बेटा है सुखार्को और अगर पावेल ने उसके उस मोटे थुलथुल चूहे जैसे मुंह पर घूंसा मारा तो वह अपने बाप से जाकर शिकायत कर देगा और आर्तेम की मुसीबत होगी। इसी ख्याल ने उसको तुरत-फुरत वहीं मामला तय-तमाम कर डालने से रोका।

सुखार्को को यह अन्दाज हुआ कि अगले ही क्षण पावेल उस पर वार कर देगा। यह ख्याल करके वह तेजी से आगे बढ़ा और दोनों हाथों से उसने पावेल के सीने में धक्का दिया। पावेल तालाब के किनारे खड़ा था, करीब था कि वह पानी में गिर जाता मगर बड़ी मुश्किल से हाथ हिला कर अपने शरीर को संभालते हुए उसने जैसे-तैसे अपने को पानी में गिरने से रोका।

सुखार्को पावेल से दो साल बड़ा था और गुंडा मशहूर था।

पावेल के सीने में धक्का लगा तो उसकी आंखों में खून उतर आया।

"अच्छा तो तुम यों नहीं मानोगे ! लो फिर !" कहते हुए उसने हाथ घुमा कर एक जोर का घूंसा सुखार्को के मुंह पर मारा और इसके पहले कि सुखार्को अपने आपको संभाल सके, पावेल ने मजबूत हाथों से उसका वर्दी का ब्लाउज पकड़ा और खींचता हुआ उसे पानी में ले गया।

ताल में घुटनों तक पानी में वह खड़ा था और उसके पालिश किये हुए जूते और पतलून भीग कर भारी हो रहे थे। सुखार्को ने पावेल की मजबूत

पकड़ से अपने आपको छुड़ाने के लिए पूरी कोशिश की। अपने मन की बात कर चुकने पर पावेल कूद कर किनारे पर आ गया। गुस्से से लाल हो रहा सुखार्को उसके पीछे दौड़ा, ऐसा लगता था कि वह पावेल की बोटी-बोटी अलग कर देगा।

अपने दुश्मन का मुकाबला करने के लिए जब पावेल घूमा तो उसे याद आया :

"अपना सारा वजन बायें पैर पर दो और दायां पैर कड़ा रखो, दायें पैर का घुटना मुड़ा हो। अपने जिस्म का सारा वजन अपने घूंसे में डालो और ठुड्डी के सिरे पर ऐसा घूंसा मारो जो बिछलता हुआ ऊपर को निकल जाय।"

"कटाक!"

दांतों के आपस में टकराने की आवाज हुई। फिर उस भयानक दर्द से चिल्लाते हुए, जो उसकी ठुड्डी और दांतों के बीच दब गई जीभ में फैल गया था, सुखार्को हाथ फैलाये लड़खड़ाता हुआ वापिस उसी पानी में गिर गया और जोर का छपाका हुआ।

ऊपर वहां किनारे पर तोनिया हंसी के मारे दुहरी हुई जा रही थी।

ताली बजाती हुई चिल्लाई, "खूब खूब! खूब किया, हो बहादुर!"

पावेल ने अपनी फंसी हुई बंसी को इतने जोर से खींचा कि वह टूट गई और भीटे को चढ़ कर पार करते हुए वह सड़क पर आ गया।

जाते-जाते उसने विक्टर को तोनिया से कहते हुए सुना, "यही पावेल कोर्चागिन है, अव्वल नम्बर का बदमाश।"

स्टेशन पर परिस्थिति गंभीर होती जा रही थी। हवा में खबर गर्म थी कि रेलवे मजदूर हड़ताल करने जा रहे हैं। अगले बड़े स्टेशन के यार्ड के मजदूरों ने कोई बड़ी चीज शुरू कर दी थी। जर्मनों ने दो इंजन ड्राइवरों को पकड़ लिया था जिन पर उन्हें शक था कि वे कोई इश्तिहार लिये जा रहे हैं। और उन मजदूरों में भी, जिनका गांव से सम्बंध था, बड़ी खलबली थी, क्योंकि वसूली की जा रही थी और जागीरदारों को उनकी जागीरें वापिस दी जा रही थीं।

हेटमैन के सन्तरियों के कोड़ों से किसानों की पीठें लहूलुहान हो रही थीं। इस इलाके में छापेमार आन्दोलन बढ़ रहा था; बोल्शेविकों ने अब तक लगभग एक दर्जन छापेमार टुकड़ियां संगठित कर ली थीं।

इन दिनों जुखराई के लिए आराम नहीं था। इस शहर में रहते हुए इतने दिनों में उसने बहुत कुछ कर डाला था। उसने बहुत से रेलवे मजदूरों से परिचय किया था, नौजवानों की गोष्ठियों में गया था और रेलवे यार्ड के मैकेनिकों और लकड़ी काटने वाले मजदूरों के बीच एक बहुत मजबूत दल बना

लिया था। उसने यह पता लगाने की कोशिश की कि आर्तेम की ठीक स्थिति क्या है और इस सिलसिले में उसने एक बार आर्तेम से पूछा कि बोल्शेविक पार्टी और उसके लक्ष्य के बारे में उसका क्या ख्याल है।

उस तगड़े भारी-भरकम मैकेनिक ने जवाब दिया, "देखो फियोदोर, मैं यह सब पार्टी-वार्टी ज्यादा नहीं समझता। लेकिन हां, अगर तुम्हें मदद की जरूरत हो तो तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो।"

फियोदोर को इससे सन्तोष हो गया, क्योंकि वह जानता था कि आर्तेम सही धात का बना हुआ आदमी है और अपने कौल को पूरा करेगा। जहां तक पार्टी का ताल्लुक है, अभी वह इसके लिए तैयार न था। "मगर कोई बात नहीं," जुखराई ने सोचा, "यह जमाना ही ऐसा तूफानी है कि सारी बातें जल्द ही उसकी समझ में आ जायेंगी।"

फियोदोर बिजली घर छोड़कर रेलवे यार्ड में एक नौकरी पर लग गया। रेलवे यार्ड उसने इसलिए ज्यादा पसन्द किया कि वहां अपना काम करना ज्यादा आसान था। बिजली घर में वह रेलवे वालों से कट गया था।

रेलवे पर आमदरफ्त बहुत ही ज्यादा थी। जर्मन, लूट की हजारों गाड़ियां जौ, गेहूं, मवेशी वगैरह उक्रेन से जर्मनी भेज रहे थे...

एक दिन हेटमैन के सन्तरियों ने स्टेशन के तारघर के पोनोमारेंको को पकड़ लिया। यह बहुत अप्रत्याशित आघात था। उसे चौकी पर ले जाकर बहुत बेदर्दी से पीटा गया। जाहिर है कि उसी ने आर्तेम के मित्र और सहयोगी रोमान सिदोरेंको का नाम बतला दिया।

दो जर्मन और एक हेटमैन का सन्तरी, स्टेशन कमांडेण्ट का सहायक, काम के घंटों में रोमान को पकड़ने के लिए आये। बिना एक शब्द बोले सहायक कमांडेण्ट उस बेंच के पास गया जहां रोमान काम कर रहा था और उसने अपनी चाबुक से उसके चेहरे पर चोट की और चाबुक समूचे चेहरे पर एक लकीर बनाती निकल गई।

उसने कहा, "जरा हमारे साथ चलो, सुअर का बच्चा कहीं का! हमें तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।" चेहरे पर बड़ा क्रूर दुष्ट-भाव लिये उसने उस मैकेनिक की बांह पकड़ी और बड़े जोर से उसे मरोड़ा। "चलो हम जरा तुम्हें सिखलायें कि कैसे प्रचार किया जाता है, कैसे घूम-घूमकर लोगों को भड़काया जाता है।"

आर्तेम ने, जो रोमान के पास ही खड़ा काम कर रहा था, अपने हाथ की रेती वहीं डाल दी और सहायक कमांडेण्ट के पास आया। उस वक्त

उसका विशाल आकार बहुत भयानक दिखाई दे रहा था, जैसे वह कुछ भी कर डालने पर आमादा हो।

आर्तेम ने अपने चढ़ते हुए गुस्से को भरसक संयत करते हुए अपनी सारी फटी हुई आवाज में कहा, "अबे ऐ दोगले के बच्चे ! अपनी खैरियत चाहता हो तो अब उस पर हाथ न चलाना।"

सहायक कमांडैण्ट पीछे हटा और हटते हुए वह अपना रिवाल्वर रखने का केस खोलने लगा। एक चौड़े-चकले गठीले बदन के जर्मन ने अपने कंधे पर से वह चौड़ी संगीन लगी भारी राइफिल उतार ली और झट से उसका बोल्ट चढ़ाया और चीखा :

"हाल्ट !" जाहिर था कि दूसरे आदमी के हिलते ही वह गोली मार देगा।

उस जरा से सिपाही के आगे वह ऊंचा, तगड़ा मैकेनिक असहाय खड़ा था और कुछ नहीं कर सकता था।

रोमान और आर्तेम दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। आर्तेम को घंटे भर बाद छोड़ दिया गया, मगर रोमान को वहीं एक मालगोदाम में बन्द कर दिया गया।

गिरफ्तारी के दस मिनट बाद एक भी आदमी काम पर नहीं रह गया था। डिपो के मजदूर स्टेशन के पार्क में इकट्ठे हुए और वहीं पर स्विचमैन और सप्लाई गोदाम में काम करने वाले लोग उनसे आ मिले। लोगों में बड़ा आवेश था और किसी ने रोमान और पोनोमारेंको की रिहाई के लिए एक लिखित मांग का मसविदा तैयार किया।

मजदूरों में गुस्सा और भी बढ़ा जब सहायक कमांडैण्ट सन्तरियों की एक टुकड़ी लेकर, रिवाल्वर चमकाता हुआ पार्क में आया और चिल्लाया :

"सब लोग काम पर वापस जाओ, नहीं तो हम यहीं एक-एक को गिरफ्तार कर लेंगे ! और तुम में से कुछ को गोली मार देंगे।"

गुस्से में भरे हुए मजदूरों ने एक जबर्दस्त हुंकार से उसका जवाब दिया जिसे सुनकर वह स्टेशन की ओर भागा। मगर इसी बीच स्टेशन कमांडैण्ट ने शहर से जर्मन सिपाही बुला लिये थे और उनके ट्रक-के-ट्रक स्टेशन की सड़क पर तेजी से चले आ रहे थे।

मजदूर तितर-बितर हो गये और अपने-अपने घरों की ओर तेजी से चल दिये और एक भी आदमी काम पर नहीं रहा, यहां तक कि स्टेशन मास्टर भी नहीं। जुखराई का काम अब अपना असर दिखला रहा था। यह पहला मौका था जब स्टेशन के मजदूरों ने कोई सामूहिक कदम उठाया था।

जर्मनों ने प्लेटफार्म पर एक भारी मशीनगन खड़ी कर दी, वैसे ही जैसे

शिकार का पता लगा कर शिकारी कुत्ता खड़ा हो जाता है। मशीनगन के पास ही एक जर्मन कार्पोरल राइफिल के घोड़े पर हाथ रखे बैठ गया।

स्टेशन वीरान हो गया।

रात को गिरफ्तारियां शुरू हुईं। पकड़े जाने वालों में आर्तेम भी था। जुखराई बच गया क्योंकि रात को वह घर नहीं गया था।

सभी गिरफ्तार आदमियों को भेड़-बकरियों की तरह मालगोदाम के एक विशाल शेड के नीचे इकट्ठा किया गया और उनसे कहा गया कि या तो काम पर वापस जाओ या कोर्ट-मॉर्शल का सामना करो।

सारी लाइन के लगभग सभी रेलवे मजदूर हड़ताल पर थे। एक दिन और एक रात, एक भी गाडी नहीं गुजरी और यह भी पता चला कि वहां से करीब अस्सी मील की दूरी पर एक बड़ी छापेमार टुकड़ी से लड़ाई चल रही थी जिसने रेलवे लाइन काट दी थी और पुलों को उड़ा दिया था।

रात को जर्मन सिपाहियों की एक गाड़ी स्टेशन पर आई मगर और आगे नहीं जा सकी क्योंकि इंजन ड्राइवर, उसके मददगार और फायरमैन तीनों इंजन छोड़ कर गायब हो गये थे। दो और गाड़ियां आगे जाने के इन्तजार में स्टेशन की साइडिंग पर खड़ी थीं।

मालगोदाम के शेड का भारी दरवाजा खुला और स्टेशन कमांडैण्ट, एक जर्मन लैफ्टिनैण्ट, उसका सहायक और कुछ और जर्मनों की एक टोली अन्दर दाखिल हुई।

"कोर्चागिन, पोलेनताव्स्की, ब्रुजाक," कमांडैण्ट के सहायक ने नाम पढ़ कर सुनाते हुए कहा, "तुम्हें आदेश दिया जाता है कि तुम इंजन चलाने वालों का काम करोगे और फौरन एक गाड़ी लेकर चले जाओगे। तुम इनकार नहीं कर सकते, इनकार करने पर तुम्हें यहीं गोली मार दी जायगी। बोलो, तुम्हें क्या कहना है?"

तीनों मजदूरों ने गुस्से से अन्दर ही अन्दर घुटते हुए सिर हिला कर अपनी स्वीकृति दी। उन्हें सन्तरियों के पहरे में इजन तक ले जाया गया और कमांडैण्ट का सहायक अगली गाड़ी के लिए ड्राइवर, उसके मददगार और फायरमैन का नाम पढ़ने लगा।

इंजन ने गुस्से से फुफकार छोड़ी और चिनगारियों का एक फव्वारा-सा ऊपर उठा। भारी-भारी सांस लेता हुआ इंजन रात की गहराइयों में रेलवे लाइन को रौंदता हुआ अंधेरे में आगे बढ़ चला। आर्तेम ने फायर-बाक्स में अभी-अभी कोयला झोंका था। कोयला डाल कर उसने उसके दरवाजे को बन्द किया, औजारों के बक्स पर रखे हुए चपटी टोंटी के टी-पॉट से एक घूंट पानी पिया और बुड्ढे इंजन ड्राइवर पोलेनताव्स्की की ओर मुड़ा।

"तो क्यों काका, अब हम लोग इसे ले ही जायेंगे क्या ?"

पोलेनताव्स्की ने अपनी घनी पलकों के नीचे अपनी आंखें कुछ खीझ और चिड़चिड़ेपन से मुलमुलाईं।

"और करोगे क्या जब पीठ में संगीन चुभी हो !"

ब्रुजाक ने इंजन से लगे हुए कोयले के डिब्बे पर बैठे हुए जर्मन सिपाही को कनखियों से देखते हुए सुझाव दिया, "हम क्यों न सब कुछ ऐसे ही छोड़कर भाग चलें ?"

आर्तेम बुदबुदाया, "मैं भी ऐसा ही सोचता हूं, मगर मुझे डर बस उस पीठ में लगी संगीन का है।"

"वह तो है," ब्रुजाक ने खिड़की में से सिर निकालते हुए अनिश्चयपूर्ण ढंग से कहा।

पोलेनताव्स्की आर्तेम के और पास आ गया और फुसफुसाकर बोला, "गाड़ी लेकर हम नहीं जा सकते, समझते हो न ? वहां आगे लड़ाई हो रही है। हमारे आदमियों ने रेलवे लाइन उड़ा दी है। और हमको देखो, हम इन सुअर के बच्चों को लेकर जा रहे हैं ताकि वे हमारे आदमियों को गोली से भून दें—नहीं, यह नहीं हो सकता। सच कहता हूं बेटा, जार के दिनों में भी मैंने हड़ताल के वक्त इंजन नहीं चलाया था और अब भी नहीं चलाऊंगा, यह मेरा निश्चय है। अगर हम अपने ही लोगों की तबाही का कारण बनें, तो यह एक ऐसा कलंक का टीका होगा जो सारी जिन्दगी नहीं छूटेगा। इंजन चलाने वाले दूसरे लोग भाग गये कि नहीं ? जान का खतरा उनको भी था, मगर तब भी उन्होंने ऐसा किया। हम हरगिज गाड़ी लेकर आगे नहीं जायेंगे। क्यों तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"बात तो तुम ठीक कहते हो काका, मगर उस आदमी का क्या करोगे ?" कहते हुए उसने आंख से उस सिपाही की ओर इशारा किया।

इंजन ड्राइवर का चेहरा चिन्ता से स्याह और भारी हो गया। उसने मुट्ठी भर रद्दी कपड़ा लेकर अपने माथे का पसीना पोंछा और लाल-लाल आंखों से प्रेशर-गेज को घूरा जैसे वहीं उसको उस सवाल का जवाब मिल जायगा जो उसे तंग कर रहा था। फिर गुस्से और मायूसी की हालत में वह कुछ बकने लगा।

आर्तेम ने दुबारा टी-पॉट से पानी पिया। दोनों आदमी एक ही चीज के बारे में सोच रहे थे। मगर कोई उस कठिन चुप्पी को तोड़ने का साहस अपने में नहीं पा रहा था। आर्तेम को जुखराई की बात का ख्याल आया : क्यों भाई, बोल्शेविक पार्टी और कम्युनिस्ट विचार-धारा के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ? और फिर उसे अपने जवाब का ख्याल आया : "मैं हमेशा मदद के लिए तैयार हूं, तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो..."

उसने सोचा, "क्या खूब मदद...अपने ही लोगों को दबाने के लिए जर्मनों की फौज को ड्राइव करके ले जा रहे हैं..."

पोलेनताव्स्की आर्तेम के करीब रखे हुए औजारों के बक्स के ऊपर इस वक्त झुका हुआ था। उसने भारी आवाज में कहा :

"उस आदमी को देखते हो न, उसका तो काम तमाम करना ही होगा, समझे ?"

आर्तेम चौंक गया। पोलेनताव्स्की ने दांत पर दांत जमाये इतना और कहा :

"दूसरा कोई रास्ता नहीं है। यह तो हमें करना ही होगा। हम उसके सिर पर भरपूर वार करके उसको लिटा देंगे और चोक और लिवर को उठा कर फायर-बाक्स में झोंक देंगे और भाग निकलेंगे।"

आर्तेम को ऐसा लगा कि जैसे उसके कंधे से बोझ हट गया हो और वह हल्का हो गया हो। उसने कहा :

"ठीक।"

ब्रुजाक की ओर झुकते हुए आर्तेम ने उसे यह निश्चय बतलाया।

ब्रुजाक ने फौरन जवाब नहीं दिया। ये सभी लोग भारी खतरा उठा रहे हैं। सबके अपने-अपने परिवार थे जिनकी उन्हें चिन्ता करनी थी। पोलेनताव्स्की का कुनबा तो सबसे बड़ा था : उसके घर में नौ प्राणी थे जिनके लिए उसे आहार जुटाना पड़ता था। मगर इस सबके बाद भी उन तीनों को यह बात अच्छी तरह पता थी कि वे किसी सूरत से गाड़ी को अपनी मंजिल तक नहीं ले जा सकते।

ब्रुजाक ने कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ हूं। मगर उसका हम क्या करेंगे ? उसका कौन..." उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया मगर उसका मतलब आर्तेम के लिए बिल्कुल साफ था।

आर्तेम पोलेनताव्स्की की ओर मुड़ा जो इस समय चोक के साथ कुछ कर रहा था। आर्तेम ने उसको जैसे यह बताने के लिए कि ब्रुजाक भी उनसे सहमत है, अपना सिर हिलाया। मगर एक सवाल अब तक तय नहीं हो सका था और आर्तेम को बहुत परेशान कर रहा था। उसी के सम्बंध में जानने को वह उस बुड्ढे के और पास पहुंचा और पूछा :

"मगर कैसे ?"

पोलेनताव्स्की ने आर्तेम की ओर निहारा।

"तुम शुरू करो, तुम्हीं सबसे मजबूत हो। हम इस लोहे के डंडे से उसे ढेर कर देंगे और बस फिर काम तमाम समझो।" वह बुड्ढा बहुत उद्विग्न हो रहा था।

आर्तेम के माथे पर बल पड़ गये और वह किसी गहरे सोच में डूब गया।

"नहीं, नहीं मुझसे यह न होगा। जरा सोचो न, उस आदमी का भी भला क्या दोष है। उसे भी तो संगीन की नोक पर मजबूर किया गया है इस काम के लिए।"

पोलेनताव्स्की की आंखें अंगारों की तरह चमकने लगीं।

"तुम कहते हो कोई दोष नहीं? तब फिर हम जो यह काम करने जा रहे हैं, हमारा भी इसमें दोष नहीं। मगर एक चीज मत भूलो कि जिस फौजी टुकड़ी को हम लोग ले जा रहे हैं, वह सजा देने के लिए भेजी जा रही है। तुम्हारे ये भोले-भाले लोग छापेमारों को गोलियों से भूनेंगे। तब फिर दोष क्या इसमें छापेमारों का है? नहीं भाई नहीं, तुम्हारे शरीर में ताकत भले सांड की हो, लेकिन अकल जरा कम ही है..."

आर्तेम ने फटी हुई आवाज में कहा, "ठीक, ठीक।" उसने लोहे का डंडा उठा लिया मगर पोलेनताव्स्की ने उसके कान में धीरे से कहा:

"यह काम मैं करूंगा, ज्यादा ठीक रहेगा। तुम फावड़ा उठा लो और इंजन से लगी हुई गाड़ी में से कोयला नीचे देने के लिए उस पर चढ़ जाओ। जरूरी समझना तो उसी फावड़े से तुम भी एक हाथ लगा देना। मैं ऐसा दिखलाऊंगा कि जैसे कोयले के ढेर को हलका कर रहा हूं।"

ब्रुजाक ने इस बातचीत को सुना और सिर हिलाया। "बुढ़ऊ ठीक कहते हैं," उसने कहा और चोक के पास जाकर खड़ा हो गया।

वह जर्मन सिपाही अपनी टोपी लगाये, जिसके चारों तरफ लाल-लाल फीता लगा था, उस इंजन के पास वाले डब्बे के सिरे पर बैठा था। उसकी राइफिल उसके पैरों के बीच पड़ी हुई थी और वह सिगार पी रहा था। बीच-बीच में वह इन इंजन चलाने वालों पर निगाह डाल लेता था।

जब आर्तेम उस डिब्बे पर चढ़ा तो सन्तरी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। और जब पोलेनताव्स्की ने इस बहाने से कि वह डब्बे के उस सिरे पर रखे हुए कोयले के बड़े-बड़े ढोंकों के पास पहुंचना चाहता है, सिपाही को रास्ते से हटने के लिए इशारा किया तो सिपाही फौरन इंजन के डब्बे में जाने वाले दरवाजे की ओर हट गया।

लोहे के डंडे से उस जर्मन की खोपड़ी चूर होने की अचानक आवाज आई तो आर्तेम और ब्रुजाक ऐसे उछल गये जैसे किसी ने उन्हें लाल-लाल लोहे से दाग दिया हो। जर्मन सिपाही का शरीर बेजान होकर इंजन के केबिन और कोयले के डब्बे के बीच के रास्ते में पड़ा था।

खून तेजी से उसकी भूरे रंग की ऊनी टोपी में से होकर चूने लगा था और उसकी राइफिल डब्बे की दीवार से टकरा कर बज रही थी।

पोलेनताव्स्की ने लोहे का डंडा फेंकते हुए धीरे से कहा, "काम तमाम !" और फिर जोड़ा, "अब हमारे लिए लौटने की राह नहीं है।" उसके चेहरे की नसें तन गई थीं।

उसकी आवाज भर्रा गई। मगर फिर उस भारी निस्तब्धता को, जो उन तीनों आदमियों पर छा गई थी, चीरने के लिए एक बार फिर एक चीख के रूप में उठी।

वह चिल्लाया, "चोक का पेंच ढीला करो, जल्दी जल्दी !"

दस मिनट में सारा काम हो गया। इंजन के सारे कल-पुर्जे ढीले कर दिये गये थे, और उसकी रफ्तार धीमी होती जा रही थी।

इंजन के आस-पास रोशनी का जो घेरा था, उसमें रेलवे लाइन के किनारे खड़े हुए पेड़ों की काली-काली, कुछ सोचती हुई-सी आकृतियां जैसे आगे बढ़ आती थीं मगर फिर पीछे हटकर उस अभेद्य अंधकार में खो जाती थीं। इंजन की हेडलाइट अपने दस गज आगे भी रात की मोटी चादर चीर नहीं पाती थी और धीरे-धीरे उसका वह भारी-भारी सांस लेना कम होता जा रहा था, जैसे उसने अपनी ताकत का आखिरी अणु भी खर्च कर डाला हो।

"कूदो, बेटा !" आर्तेम ने पीछे से पोलेनताव्स्की की आवाज सुनी और हैंडिल छोड़ दिया। गाड़ी की उस तेज रफ्तार में उसका वह तगड़ा शरीर किसी पत्थर की तरह नीचे गिरने लगा, मगर उसके पैर तभी एक धक्के के साथ जमीन पर लगे। वह एक-दो कदम दौड़ा और फिर इतने जोर से गिरा कि गुलाट खा गया।

तभी इंजन के डिब्बे के दोनों तरफ से एक-एक छायाकृति कूदी।

ब्रुजाक के घर पर अंधेरा छा गया था। पिछले चार दिनों में सर्गेई की मां ऐन्तोनीना वासीलिएवना का चिन्ता के मारे बुरा हाल हो गया था। अपने पति का उसे कोई समाचार नहीं मिला था। उसे सिर्फ इतनी ही बात मालूम हो सकी थी कि जर्मनों ने उसे कोर्चागिन और पोलेनताव्स्की के साथ-साथ एक इंजन चलाने पर मजबूर किया था। और कल हेटमैन के तीन सन्तरी आये थे और उससे बहुत गाली-गुफ्ता करके उन्होंने बेहूदा सवाल किये थे।

उन्होंने जो कुछ कहा था उससे उसने अन्दाज लगाया कि कुछ गड़बड़ हो गई है और जैसे ही सिपाही चले गये उसने बहुत उद्विग्न होकर सिर पर रूमाल डाला और मारिया याकोवलेवना के पास चली गई, इस उम्मीद में कि शायद उसी से अपने पति के बारे में उसको कुछ खबर मिल जाय।

उसकी सबसे बड़ी लड़की वालिया ने, जो रसोईघर की सफाई कर रही थी, उसे घर से बाहर जाते देखा।

लड़की ने पूछा, "कहां जा रही हो मां ?"

ऐन्तोनीना वासीलिएवना ने सजल आंखों से अपनी बेटी को देखा और जवाब दिया, "कोर्चागिन के यहां। मुमकिन है उन्हें तुम्हारे पिता का कुछ हाल मालूम हो। अगर सर्गेई घर आये तो उससे कहना कि स्टेशन जाकर पोलेनताव्स्की के घर वालों से मिल लेगा।"

वालिया ने अपनी मां को बांहों में भर लिया और उसे दरवाजे तक पहुंचाती हुई बोली, "घबराओ नहीं, मेरी प्यारी मां।"

मारिया याकोवलेवना ने हमेशा की तरह जी खोल कर ऐन्तोनीना वासीलिएवना का स्वागत किया। दोनों स्त्रियों को एक-दूसरे से उम्मीद थी कि उन्हें कुछ खबर मिलेगी। मगर बातचीत के दौरान सारी उम्मीदें खत्म हो गईं।

कोर्चागिन के घर पर भी रात को तलाशी हुई। सिपाही आर्तेम की तलाश में थे और उन्होंने जाते समय मारिया याकोवलेवना से कहा था कि जैसे ही तुम्हारा लड़का घर आये, उससे कहना कि वह फौरन जाकर कमांडैण्ट के दफ्तर में खबर करे।

इन सिपाहियों के आने से कोर्चागिना के होश-हवास गुम हो गये। वह घर पर अकेली थी क्योंकि पावेल रोज की तरह आज भी बिजली घर में रात की पाली पर काम कर रहा था।

पावेल जब खूब सवेरे काम पर से घर लौटा और मां से तलाशी की खबर सुनी तो उसे अपने भाई की हिफाजत की गहरी चिन्ता सताने लगी। उसके और आर्तेम के स्वभाव में अन्तर था। आर्तेम ऊपर से बहुत शुष्क था, मगर इसके बावजूद दोनों भाई एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। दोनों के बीच एक अजीब कठोर सा प्यार था जिसमें दिखावे के लिए कोई जगह न थी, मगर पावेल जानता था कि अपने भाई के लिए कोई भी कुरबानी करने में वह नहीं हिचकेगा।

आराम के लिए बिना रुके पावेल जुखराई से मिलने के लिए भाग कर स्टेशन गया। जुखराई उसे नहीं मिला और जिन मजदूरों को वह जानता था, वे उसे फरार लोगों के बारे में कुछ नहीं बतला सके। इंजन ड्राइवर पोलेनताव्स्की के घर वाले भी बिल्कुल अंधकार में थे। पोलेनताव्स्की के सबसे छोटे लड़के बोरिस से, जो उसे बाहर हाते में मिला, उससे सिर्फ इतना मालूम हुआ कि कल रात उनके घर पर भी तलाशी हुई थी। सिपाही पोलेनताव्स्की को खोज रहे थे।

पावेल घर लौटा तो अपनी मां को देने के लिए उसके पास कोई खबर न थी। थक कर चूर, वह बिस्तर पर पड़ा रहा और फौरन उखड़ी-उखड़ी सी नींद में डूब गया।

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो वालिया ने आंख उठा कर देखा।

जंजीर खोलते हुए उसने पूछा, "कौन है ?"

दरवाजा खुला तो क्लिम्का मारचेंको का लाल-लाल बालों वाला सर दिखाई दिया जिसके बाल बिखरे हुए थे। स्पष्ट ही वह दौड़ता हुआ आया था, क्योंकि उसकी सांस फूली हुई थी और उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था।

उसने वालिया से पूछा, "तुम्हारी मां घर पर हैं ?"

"नहीं, वह बाहर गई हुई हैं।"

"कहां ?"

"मेरा ख्याल है, कोर्चागिन के यहां," यह कहते हुए वालिया ने तेजी से लौटते हुए क्लिम्का की आस्तीन पकड़ ली।

क्लिम्का ने संकोचपूर्वक लड़की को देखा, फिर बड़ी हिम्मत करके कहा :

"मुझे उनसे कुछ काम है।"

वालिया उसे जाने नहीं देना चाहती थी, बोली, "क्या है ? झट से बोलता क्यों नहीं, लाल सिर वाले भालू, बोल झट से बोल और अब मुझे और ससपंज में न रख," लड़की ने आदेश के स्वर में कहा।

क्लिम्का जुखराई की चेतावनी और उसके इस कठोर निर्देश को कि चिट्ठी एन्तोनीना वासीलिएवना के हाथ में ही देना, भूल गया, और उसने अपनी जेब से एक मैला-कुचैला सा कागज निकाला और उस लड़की को दे दिया। सर्गेई की इस खूबसूरत, सुनहरे बालों वाली बहन को वह किसी चीज के लिए इनकार नहीं कर सकता था, क्योंकि सच बात यह है कि उसे इस लड़की से प्यार था। यह बात अलग है कि वह इतना झेंपू था कि अपने आप से भी इस बात को नहीं मान पाता था कि उसे वालिया पसन्द है। उस लड़की ने झटपट उस कागज के टुकड़े को पढ़ डाला।

> "प्यारी तोनिया ! घबराओ मत। सब ठीक है। वे लोग हिफाजत से हैं। जल्दी ही तुम्हें और खबर मिलेगी। दूसरों को भी बता दो कि सब ठीक है। घबराने की कोई बात नहीं है। इस चिट्ठी को नष्ट कर डालना।
>
> *-जखार।"*

वालिया तेजी से क्लिम्का के पास गई।

"यह तुम्हें मिला कहां पागल राम ? किसने दिया तुमको ?" यह कहते हुए उसने क्लिम्का को इतने जोरों से झकझोरा कि उसकी तो जैसे अकल ही गुम हो गई और उसने अनजान में ही दूसरी बड़ी भूल कर डाली।

"जुखराई ने मुझे दिया, स्टेशन पर।" फिर उसे खयाल आया कि यह बात उसे नहीं कहनी चाहिए थी। तब उसने जोड़ा : "मगर उन्होंने मुझे ताकीद की थी कि मैं यह चिट्ठी तुम्हारी मां के सिवा और किसी को न दूं।"

वालिया ने हंसते हुए कहा, "ठीक है। मैं किसी से नहीं कहूंगी। और अब तुम, अच्छे नन्हें भालू की तरह, दौड़ते हुए पावेल के यहां जाओ और वहीं तुम्हें मां मिलेंगी।" यह कहते हुए उसने लड़के को धीरे से पीठ में धक्का दिया।

पल भर बाद क्लिम्का का लाल सर बागीचे के फाटक में से होकर गायब हो गया।

तीनों में से कोई रेलवे मजदूर घर नहीं लौटा। शाम को जुखराई कोर्चागिन के घर आया और उसने मारिया याकोवलेवना को ट्रेन वाली घटना बतलाई। उसने खौफजदा मां को शान्त करने की पूरी कोशिश की और उसे विश्वास दिलाया कि तीनों ब्रुजाक के चचा के यहां दूर के एक गांव में बहुत हिफाजत से हैं। यह ठीक है कि वे लोग अभी लौट कर घर नहीं आ सकते, मगर जर्मनों की हालत पतली है और परिस्थिति किसी भी दिन बदल सकती है।

इन तीनों आदमियों के गायब हो जाने से उनके परिवार एक-दूसरे के बहुत पास आ गये, जितना पहले कभी नहीं थे। उनकी चिट्ठियां जो कभी-कभार मिल जाती थीं, बड़े आनन्द से पढ़ी जाती थीं। मगर उनके बगैर घर सूना और वीरान मालूम होता था।

एक दिन जुखराई पोलेनताव्स्की की बीबी से मिलने के लिए आया, कुछ इस तरह से कि जैसे रास्ते में यह घर पड़ गया हो, और उसे कुछ रुपया दिया।

उसने कहा, "तुम्हारे पति ने तुमको यह भेजा है, तब तक इसी से घर का खर्च चलाओ। मगर हां, देखना, किसी से इसका जिक्र न करना।"

उस बुड्ढी स्त्री ने कृतज्ञतापूर्वक जुखराई का हाथ पकड़ लिया और बोली, "शुक्रिया ! हमें इसकी सख्त जरूरत थी। बच्चों को खिलाने के लिए भी मेरे पास कुछ नहीं था।"

सच बात यह है कि यह पैसा उस फंड में से आया था जो बुल्गाकोव छोड़ गया था।

वहां से स्टेशन को लौटते हुए जुखराई सोचने लगा, "अब देखो आगे क्या होता है। अगर गोली का डर दिखला कर हड़ताल तोड़ भी दी जाती है और मजदूर काम पर भी लौट आते हैं, तब भी यह समझ लो कि आग सुलग गई है और अब उसे कोई बुझा नहीं सकता। जहां तक उन तीनों का ताल्लुक है, वे मजदूर हैं, सच्चे प्रोलितारियन।" मन में यह कहते हुए वह उमंग से भर उठा।

वोरोबिओवा बाल्का नामक गांव के छोर पर एक पुराने, लोहे के कारखाने में पोलेनताव्स्की सुलगती हुई भट्ठी के आगे खड़ा था। कारखाने का अगवाड़ा सड़क पर पड़ता था और धुएं से काला हो रहा था। भट्ठी की चमक से उसकी आंखें छोटी हो गई थीं और वह एक बहुत लम्बे हैन्डिल की संडसी से लोहे के एक लाल-लाल टुकड़े को घुमा रहा था।

आर्तेम धरन से लटकती हुई धौंकनी चला रहा था।

"इन दिनों इन गांवों में कोई कुशल मजदूर भूखा नहीं मर सकता—जितना काम चाहे पा सकता है," इंजन ड्राइवर ने अपनी दाढ़ी के भीतर से मुस्कराते हुए कहा। "इसी तरह एक-दो हफ्ता और चला तो हम लोग अपने घर बहुत काफी आटा और रसद वगैरह भेज सकेंगे। बेटा, किसान लोहारों की बड़ी इज्जत करते हैं। तू देखना हम लोग धीरे-धीरे खा-पीकर पूंजीपतियों जैसे मोटे हो जायेंगे। जखार हम लोगों से कुछ दूसरी तरह का है—वह किसानों से चिपका हुआ है, अपने उस चाचा के जरिए उसकी जड़ें जमीन में हैं। मैं उसे दोष नहीं देता। तुम्हारे और मेरे पास आर्तेम, सिवा अपनी मजबूत पीठ और हाथों के क्या है; न हल, न गाड़ी, न और कुछ। हम लोग तो सदा-सदा के प्रोलितारियन हैं, सच्चे सर्वहारा, मगर बुड्ढा जखार जो है न, वह तो जैसे दो टुकड़ों में बंटा हुआ है। उसका एक पैर तो इंजन में है और दूसरा गांव में।" हंसते हुए उसने यह बात कही। फिर अपनी सड़सी से धातु के उस लाल-लाल टुकड़े को हिलाया-डुलाया और फिर कुछ गंभीर स्वर में बोला: "बेटा, जहां तक हमारी बात है, लक्षण बहुत अच्छे नहीं हैं। अगर जल्दी ही जर्मनों का सफाया नहीं किया जाता तो फिर जैसे भी हो हमें एकातेरीनोस्लाव या रोस्तोव पहुंचना पड़ेगा; नहीं तो हम लोग पकड़े जायेंगे और इसके पहले कि बात हमारी समझ में आये, लटका दिये जायेंगे।"

आर्तेम ने मुंह-ही-मुंह में कहा, "यह तो तुम ठीक कहते हो।"

"काश कि मुझे पता होता कि वहां पर हमारे लोगों का क्या हाल-चाल है। मैं तो नहीं समझता कि जर्मनों ने उन्हें वैसे ही छोड़ रखा होगा।"

"हां काका, हम लोग काफी मुसीबत में हैं और अच्छा हो कि हम लोग घर के बारे में सोचना बन्द कर दें।"

इंजन ड्राइवर ने भट्ठी में से चमकता हुआ गर्म धातु का नीला टुकड़ा निकाला और सधे हुए हाथों से निहाई पर रख दिया।

"बेटा, अब लगे इस पर!"

आर्तेम ने एक भारी-सा हथौड़ा उठाया, घुमाकर उसे अपने सर के ऊपर ले गया और निहाई पर पटक दिया। चिनगारियों का एक फव्वारा हिस् की आवाज के साथ फैल गया जिससे एक पल के लिए उस लोहारखाने के अंधेरे-से-अंधेरे कोने भी आलोकित हो गये।

पोलेनताव्स्की लोहे के उस गर्म लाल टुकड़े को घुमाता रहा, उस पर हथौड़े की जबर्दस्त चोटें पड़ती रहीं और वह गर्म मोम की तरह चपटा हो गया।

लोहारखाने के खुले दरवाजों से अंधेरी रात की गर्म सांस आ रही थी।

नीचे झील फैली हुई थी; अंधेरी, विशाल! उसके चारों ओर चीड़ के पेड़ खड़े अपने उन्नत शीश हिला रहे थे।

उनकी ओर देखते हुए तोनिया ने सोचा, "जैसे जान हो इनमें।" झील के चट्टानी किनारे पर वह घास से ढंकी हुई एक नीची जगह पर लेटी हुई थी। उसके गड्ढे के उस पार ऊपर जंगल का छोर था और नीचे थी झील। झील पर अपना वजन-सा डालती हुई पहाड़ियों की छाया से पानी की स्याही और भी स्याह हो गई थी।

स्टेशन के पास की यह पत्थर की खदान तोनिया की खास प्यारी जगह थी। जिन गहरी-गहरी खदानों से पत्थर निकाल कर अब छोड़ दिया गया था, उनमें पानी के सोते फूट गये थे, और अब वहां पर तीन तलैयां बनी हुई थीं। झील के किनारे छपाक् की आवाज हुई। आवाज सुन कर तोनिया ने सिर ऊपर उठाया। अपने सामने की शाखों को हाथ से अलग करते हुए उसने उस ओर देखा जिधर से आवाज आई थी। एक चुस्त, फुर्तीला, धूप से तपे हुए रंग का शरीर जोर-जोर से हाथ मारता हुआ किनारे से दूर तैरता चला जा रहा था। तोनिया ने तैराक की तांबे क रंग की पीठ और काला सिर देखा; वह ऊद-बिलाव की तरह मुंह पे हवा फेंक रहा था, और पानी के अन्दर तेजी से पैर चला रहा था। कभी उलट जाता था, कलैया खाता था और गोते लगाता था, फिर वह पीठ के बल होकर पानी पर लेट गया और बहने लगा। तेज सूरज की चमक से उसकी आंखें चौंधिया रही थीं, बांहें फैली हुई थीं और शरीर थोड़ा मुड़ा हुआ था।

तोनिया ने शाख छोड़ दी और वापस अपनी जगह पर आ गई।

"इस तरह से झांकना ठीक नहीं," कहते हुए वह अपने-आप मुस्कराई और फिर पढ़ने में लग गई।

लेशचिन्स्की ने उसे जो किताब दी थी, उसमें वह इतनी डूबी हुई थी कि उसने किसी को काले पत्थर की उस चट्टान पर चढ़ते नहीं देखा जो उसके खाले को चीड़ के जंगल से अलग करती थी। वह तो जब एक ढेला, जो इस आदमी ने अनजान में लुढ़काया था, आकर तोनिया की किताब पर गिरा तब उसने आंख ऊपर उठाई और पावेल कोर्चागिन को अपने सामने खड़ा पाया। पावेल भी इस मुलाकात से अचकचा गया और अपनी घबराहट में पलटने के लिए मुड़ा।

"वही आदमी होगा जिसे मैंने अभी पानी में देखा था," तोनिया ने उसके गीले बालों को देखते हुए अपने मन में कहा।

"तुम डर गईं क्या ? मुझे नहीं मालूम था कि तुम यहां पर हो," पावेल ने चट्टान के कगार पर हाथ रखते हुए कहा। उसने तोनिया को पहचान लिया था।

"नहीं, ऐसा क्यों कहते हो, तुम्हारे कारण मुझे कोई अड़चन नहीं है। तुम्हारा मन करे तो थोड़ी देर रुको, और फिर हम दोनों बातें करें।"

पावेल ने तोनिया को आश्चर्य से देखा।

"काहे के बारे में बातें करेंगे हम ?"

तोनिया मुस्कराई।

एक पत्थर की ओर उंगली से इशारा करते हुए उसने कहा, "मिसाल के लिए, सबसे पहले यही कि तुम यहां पर क्यों नहीं बैठते ? तुम्हारा नाम क्या है ?"

"पावका कोर्चागिन।"

"मेरा नाम तोनिया है। लो अब हम लोगों ने एक-दूसरे को अपना परिचय दे दिया।"

पावेल अपनी उलझन और परेशानी में अपनी टोपी उमेठ रहा था।

तोनिया ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा, "अच्छा तो तुम्हारा नाम पावका है। क्यों, पावका क्यों ? सुनने में बहुत अच्छा नहीं लगता। पावेल इससे कहीं अच्छा होगा। और मैं तो तुम्हें इसी नाम से पुकारूंगी—पावेल। तुम क्या यहां अक्सर आते हो..." इसके बाद वह कहना चाहती थी "तैरने" मगर चूंकि वह यह जाहिर नहीं होने देना चाहती थी कि उसने पावेल को पानी में देखा है, उसने बात बदल कर कहा, "घूमने ?"

पावेल ने जवाब दिया, "नहीं, बहुत नहीं। कभी-कभी जब फुरसत होती है।"

"अच्छा तो तुम कहीं काम करते हो ?" तोनिया ने उससे और आगे सवाल किया।

"बिजली के कारखाने में। मैं फायरमैन हूं।"

"बताओ, तुमने इतनी अच्छी तरह लड़ना कहां सीखा ?" तोनिया ने अप्रत्याशित ढंग से पूछा।

"मेरे लड़ने से तुमको क्या ?" न चाहते हुए भी पावेल के मुंह से निकल गया।

यह देख कर कि पावेल उसके सवाल से चिढ़ गया है, तोनिया ने जल्दी से कहा, "देखो नाराज न हो, कोर्चागिन। मैं सिर्फ जानना चाहती थी और क्या। क्या घूंसा था वह भी ! तुम्हें इतना बेरहम नहीं होना चाहिए," यह कहते हुए वह जोर से हंस पड़ी।

पावेल ने पूछा, "उसके लिए बड़ा दुःख होता है तुम्हें, क्यों ?"

"नहीं तो, जरा भी नहीं। उल्टे, मेरा तो यह ख्याल है कि सुखार्को इसी के काबिल था। जो हुआ ठीक हुआ। मुझे तो खूब ही मजा आया। मैं सुनती हूं कि तुम अक्सर किसी-न-किसी से लड़ते-झगड़ते रहते हो।"

पावेल के कान खड़े हुए, "कौन कहता है ?"

"क्यों, विक्टर लेशचिन्स्की का ही यह कहना है कि तुम पेशेवर लड़ाके हो।"

पावेल के चेहरे पर कालौंछ आ गई।

"विक्टर सुअर है और बिलकुल लौंडिया है। उसे अपनी किस्मत सराहनी चाहिए कि उस दिन उसकी भी कुन्दी नहीं हुई। मेरे बारे में उसने जो कुछ कहा था, मैंने सब सुना था। लेकिन मैं अपने हाथ गन्दे नहीं करना चाहता था।"

तोनिया ने उसको टोकते हुए कहा, "ऐसी जबान का इस्तेमाल मत करो, पावेल। अच्छा नहीं मालूम होता।"

पावेल को गुस्सा चढ़ने लगा।

उसने अपने मन में कहा, "मैं क्यों यहां खड़ा इस छोकरी से बातें कर रहा हूं, आखिर क्यों ? मुझे हुक्म दे रही है ! पहले आपको पावका नाम नहीं पसन्द आया और अब मेरी जबान में दोष निकाल रही है !"

तोनिया ने पूछा, "लेशचिन्स्की से तुम इतने चिढ़े हुए क्यों हो ?"

"कहा तो, वह लौंडिया है, अपनी अम्मा की बिटिया ! उसमें जरा सी भी हिम्मत नहीं; ऐसों को देखकर मेरी उंगली खुजलाने लगती है। ऐसा

दिखलाता है कि जैसे दूसरा कोई कुछ हो ही नहीं, सब के सिर पर पैर देकर चलने की कोशिश करता है, समझता है कि जो मन में आवे सो कर सकता है, सिर्फ इसलिए कि वह अमीर है। मगर मुझे खाक परवाह नहीं उसकी अमीरी की। ज़रा किसी रोज मुझे छू भर तो दे, फिर देखो मैं उसकी कैसी मरम्मत करता हूं। ऐसों की तो बस एक ही दवा है; कस कर एक घूंसा जबड़े पर," पावेल आवेश में बोलता गया।

तोनिया को अफसोस हो रहा था कि उसने क्यों खामखा लेशचिन्स्की का जिक्र किया। वह साफ देख रही थी कि इस लड़के की उस रंगे-चुंगे, साहबी शान वाले स्कूली छोकरे से पुरानी लड़ाई है। बातचीत का रुख अधिक शांत दिशा की ओर मोड़ने के ख्याल से उसने पावेल से उसके घर वालों और काम-काज के बारे में सवाल करना शुरू किया।

पावेल को इस बात का पता भी नहीं चला और यह भूल कर कि वह चला जाना चाहता था, उस लड़की के सवालों का जवाब बड़ी तफसील से देने लगा।

तोनिया ने पूछा, "तुमने पढ़ाई क्यों छोड़ दी ?"

"स्कूल से निकाल दिया गया।"

"क्यों ?"

पावेल को बताते लाज लगी।

"मैंने पादरी साहब के आटे में थोड़ी तम्बाकू डाल दी थी, इसीसे सबों ने निकाल दिया। अजी बड़ा हरामजादा था वह पादरी, सता-सताकर जान मार डालता था।" और पावेल ने उसको पूरी कहानी सुना दी।

तोनिया बहुत दिलचस्पी से सुनती रही। पावेल को आरम्भिक झेंप अब खतम हो गयी थी और अब वह उस लड़की से ऐसे बातें कर रहा था जैसे उसके संग उसकी बहुत पुरानी जान-पहचान हो। और बातों के साथ-साथ उसने उसको अपने भाई के गायब हो जाने की बात भी बतला दी। उस नशेब में बैठ कर दोस्ताना बातचीत में वे इस तरह खो गये थे कि उन दो में से किसी को पता ही न चला कि घंटों पर घंटे बीतते जा रहे थे। एकाएक पावेल उछल कर खड़ा हो गया।

"अब मेरे काम का वक्त है। इस वक्त मुझे ब्यॉयलर में आग डालनी चाहिए थी, न कि यहां बैठ कर बकबक करना। दानिलो आज जरूर झंझट करेगा।" कुछ बेचैनी सी महसूस करते हुए उसने एक बार फिर कहा, "अच्छा तो विदा ! अब मुझे भागते हुए शहर जाना पड़ेगा।"

तोनिया भी उछल कर खड़ी हो गई और अपना जाकेट चढ़ाने लगी।

"मुझे भी अब जाना चाहिए। चलो साथ ही चलेंगे।"

"न भाई, वह नहीं होगा । मुझे तो दौड़ना होगा।"

"वह भी सही । मैं भी तुम्हारे साथ दौड़ लगाऊंगी, देखें कौन वहां पहले पहुंचता है।"

पावेल ने उपेक्षा की दृष्टि से देखा !

"मुझसे पहले ? मुझसे पहले पहुंचना तुम्हारे लिए नामुमकिन है।'

"अभी तय हुआ जाता है। पहले यहां से तो निकलें हम लोग।"

पावेल ने पानी में निकले हुए उस चट्टानी टुकड़े को छलांगा, फिर तोनिया को अपना हाथ पकड़ाया और फिर दोनों धीरे-धीरे जंगल को पार करके उस चौड़ी समतल पगडंडी पर पहुंच गये जो स्टेशन को जाती थी।

तोनिया सड़क के बीचोबीच रुक गई।

"अच्छा तो आओ : एक, दो, तीन ! दौड़ो ! मुझे छूना तो जरा !"

वह आंधी की तरह सड़क पर भागती चली जा रही थी, उसके जूतों के तल्ले चमक रहे थे और उसकी नीली जाकेट का पिछला हिस्सा हवा में उड़ रहा था।

पावेल उसके पीछे भाग रहा था।

"दो छलांग में अभी मैं उसे पकड़े लेता हूं।" पावेल ने उसकी उड़ती हुई जाकेट के पीछे भागते हुए अपने मन में कहा। मगर गली के बिल्कुल आखीर में स्टेशन के काफी पास पहुंच कर ही वह उसे पकड़ पाया। एक आखिरी कोशिश करके वह उसके बराबर हो गया और उसने अपने मजबूत हाथों से उसके कंधों को पकड़ लिया।

"छू लिया ! मगर दौड़ती तुम तेज हो !" वह हांफते हुए खुशी से चिल्लाया।

"हटो ! तुम तो मेरा मलीदा बनाये डाल रहे हो !" तोनिया ने एतराज किया।

वे वहां पर हांफते खड़े थे, उनकी नाड़ी तेज चल रही थी। इस दौड़ से हांफते हुए तोनिया ने एक बार बहुत हलके से पावल का सहारा लिया और उस एक भागते हुए पल में पावेल को उसके स्पर्श से घनिष्ठता की ऐसी मीठी सुखद अनुभूति हुई जिसे वह जल्दी भूलने वाला नहीं था।

"तुम्हारे अलावा और कोई मुझे कभी नहीं छू सका," उसने पावेल से अलग होते हुए कहा।

इसके बाद वे अलग हो गये और विदा में अपनी टोपी हिलाते हुए पावेल शहर की ओर दौड़ा।

जब पावेल ने ब्यॉयलर रूम का दरवाजा धक्का देकर खोला, उस वक्त वह दूसरा आग वाला दानिलो ब्यॉयलर में आग डाल रहा था।

उसने गुर्राकर कहा, "इतनी जल्दी कैसे आ गये; कुछ और देर से आते ! चाहते हो कि तुम्हारा काम मैं करूं, क्यों ?"

पावेल ने अपने साथी को मनाने के अन्दाज से उसके कंधे को थपथपाया।

"हम लोग अभी पलक मारते आग लहका देंगे," उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा और ईंधन को ठीक करने लगा।

आधी रात को जब दानिलो लकड़ी के ढेर पर लेटा जोरों से खर्राटे भर रहा था, तब पावेल ने इंजन में तेल दिया, रद्दी कपड़े से अपना हाथ पोंछा और औजार रखने के बक्स में से **गिसेपी गैरिबाल्डी** नाम की किताब का बासठवां खंड निकाला और नेपुल्स के "लाल कुर्ती वालों" के महान नेता की वीरता और साहस के असंख्य कारनामों का मोहक वृतान्त पढ़ने में डूब गया।

"उसने अपनी खूबसूरत नीली आंखों से ड्यूक को निहारा..."

पावेल ने सोचा, "उसकी भी आंखें नीली हैं, मगर वह दूसरे तरह की हैं, वह अमीर लोगों की तरह जरा भी नहीं है। और दौड़ती कैसे है !"

तोनिया के संग अपनी दिन की मुलाकात की स्मृति में डूबा हुआ पावेल इंजन की तरफ से बिलकुल बेखबर था। बहुत ज्यादा भाप के दबाव के कारण इंजन सूं-सूं कर रहा था; उसका विशाल फ्लाई-व्हील तेजी से घूम रहा था और इंजन की सीमेंट की नींव भी कांपने लगी थी !

भाप का दबाव बतलाने वाले यन्त्र पर नजर जाते ही पावेल ने देखा कि उसकी सुई खतरा बतलाने वाली लाल रेखा से कई बिन्दु ऊपर है।

"गजब हो गया !" पावेल लपक कर सेफ्टी-वाल्व के पास गया, जल्दी-जल्दी उसे दो बार घुमाया और एकजास्ट पाइप से निकलती हुई भाप तेजी से आवाज करती हुई ब्यॉयलर रूम के बाहर निकली। पावेल ने लिवर खींचते हुए ड्राइव-बेल्ट को पम्प की पुली पर फेंका।

उसने दानिलो को एक नजर देखा, मगर वह गहरी नींद में था, उसका मुंह खुला हुआ था और उसकी नाक डरावनी आवाजें निकाल रही थी।

आधा मिनट बाद भाप का दबाव बतलाने वाले यंत्र की सुई औसत पर आ गई थी।

पावेल से अलग होकर तोनिया घर की ओर चली। उसका मन उस काली आंख वाले नौजवान के संग अपनी मुलाकात में डूबा हुआ था, गो उसे खुद इस बात का पता नहीं था कि वह पावेल के संग अपनी मुलाकात के कारण कितनी खुश थी।

"क्या जोश है उसमें, क्या हिम्मत ! और जरा भी वैसा बदमाश नहीं है जैसा मैंने सोचा था। और चाहे जो हो, वह उन गधे स्कूली छोकरों जैसा जरा भी नहीं है।"

पावेल दूसरे ही सांचे का आदमी था। वह एक ऐसे वातावरण से आया था जो तोनिया के लिए नया और अपरिचित था।

तोनिया ने सोचा, "मगर उसका जंगलीपन कम किया जा सकता है, उसे बस में किया जा सकता है, बड़ा दिलचस्प दोस्त होगा वह।"

घर पहुंच कर उसने लिजा सुखार्को, नेली और विक्टर लेशचिन्स्की को बागीचे में देखा। विक्टर कुछ पढ़ रहा था। वे स्पष्ट ही तोनिया का इन्तजार कर रहे थे।

उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया और फिर तोनिया एक बेंच पर बैठ गई। उस खोखली-खोखली पोच-सी बातचीत के दरम्यान विक्टर आकर उसके पास बैठ गया और उसने पूछा :

"तुमने वह उपन्यास पढ़ा जो मैंने तुमको दिया था ?"

"उपन्यास !" तोनिया ने आंख उठा कर ऊपर देखा। "ओह, मैं..."

उसने उसको लगभग बता ही दिया था कि किताब वह झील के किनारे भूल आई है।

"तुम्हें उसकी प्रेम-कहानी अच्छी लगी ?" विक्टर ने प्रश्न करती हुई आंखों से उसको देखा।

तोनिया एक पल के लिए अपने विचार में डूबी रही। फिर उसने बालू पर अपने जूते की नोक से उलझी-उलझी रेखाएं खींचते हुए सिर ऊपर उठाया और विक्टर को देखा।

"नहीं, अब मैंने उससे कहीं ज्यादा रोचक प्रेम कहानी शुरू कर दी है।"

विक्टर ने चिढ़ते हुए पूछा, "सच ! उसका लेखक कौन है ?"

तोनिया ने उसको अपनी चमकती, मुस्कराती हुई आंखों से देखा और कहा, "उसका कोई लेखक नहीं है..."

तभी बार्जे पर से तोनिया की मां ने पुकार कर कहा, "तोनिया, अपने मिलने वालों को अन्दर बुला लो। चाय तैयार है।"

दोनों लड़कियों की बांह पकड़कर तोनिया उन्हें अपने साथ घर में ले गई। उसके पीछे जाते-जाते विक्टर उसके शब्दों की पहेली को सुलझाने की कोशिश करता रहा, मगर उनका मतलब उसकी समझ में नहीं आता था।

•

इस नई अपरिचित अनुभूति ने, जिसने अनजान में ही पावेल को पा लिया था, उसके मन में खलबली पैदा कर दी—मगर कुछ इस तरह कि उसकी रेखाएं

मन में स्पष्ट न थीं; वह उसे समझ नहीं पाता था और उसका विद्रोही मन परेशान था।

तोनिया का बाप जंगलात का बड़ा हाकिम था जिसका मतलब पावेल के लिये यह था कि वह भी लेशचिन्स्की वकील के ही वर्ग का आदमी है।

पावेल गरीबी में पला था और शायद इसीलिए जिस किसी को भी वह अमीर आदमी समझता था, उसके प्रति पावेल के मन में दुश्मनी का भाव पैदा हो जाता था और इसीलिए तोनिया के प्रति उसके हृदय में जो भावना थी, उसमें शंका और सन्देह का भाव मिला हुआ था; तोनिया उन्हीं में से एक नहीं थी, वह वैसी सरल और आसानी से समझ में आ जाने वाली लड़की नहीं थी जैसी कि मिसाल के लिए राजगीर की लड़की गालीना थी। तोनिया के संग वह सदा सतर्क रहता कि उसकी तरफ से व्यंग्य और उपेक्षा का हल्का-सा आभास मिलते ही वह तत्काल उसका जवाब दे सके, क्योंकि उसको अपनी जगह यह डर सदा बना रहता था कि उस जैसी सुन्दर और सुसंस्कृत लड़की मुझ जैसे साधारण आग वाले के प्रति व्यंग्य और उपेक्षा नहीं तो और क्या दिखलायेगी।

पूरे एक हफ्ते से उसकी मुलाकात तोनिया से नहीं हुई थी। आज उसने झील किनारे जाने का निश्चय किया। उसने जान-बूझकर तोनिया के मकान के पास से गुजरने वाला रास्ता पकड़ा, इस उम्मीद से कि मुलाकात हो जायेगी। जब वह बाड़ी के पास से धीरे-धीरे टहलता हुआ चला जा रहा था, उसे बागीचे के उस दूर वाले सिरे पर अपना परिचित वह जहाजियों वाला ब्लाउज दिखलाई दिया! उसने सड़क पर पड़ा हुआ चीड़ का एक फल उठा लिया और उस सफेद ब्लाउज का निशाना लेकर फेंका।

तोनिया घूमी और दौड़ती हुई उसके पास आई और बड़ी मीठी घनिष्ठ मुस्कराहट के साथ अपना हाथ बाड़ी के बाहर निकाला।

"तुम आ गये आखिर," उसने कहा और उसकी आवाज में खुशी थी। "इतने तमाम रोज तुम रहे कहां? वह किताब जो मैं भूल आई थी, उसे लेने मैं झील किनारे गई थी। मैंने सोचा, शायद तुम भी मिल जाओ। क्यों, अन्दर नहीं आओगे?"

पावेल ने सिर हिलाया :

"नहीं।"

"क्यों?" और उसकी भवें कुछ आश्चर्य से खिच गईं।

"मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि तुम्हारे बाप को यह चीज पसन्द न आयेगी। मुझे ताज्जुब न होगा अगर वह मुझ जैसे आवारे को बागीचे में ले आने के कारण तुम्हें बुरा-भला कहें।"

तोनिया ने गुस्से से कहा, "कैसी बच्चों की-सी बातें करते हो, पावेल। फौरन अन्दर आ जाओ। मेरे पिताजी कभी वैसी कोई बात नहीं कहेंगे। तुम खुद देख लोगे। अब आ जाओ अन्दर।"

वह उसके लिए गेट खोलने को दौड़ी और पावेल हिचकते हुए उसके पीछे-पीछे आया।

"तुम्हें किताबें अच्छी लगती हैं ?" तोनिया ने पावेल से पूछा जब दोनों बागीचे में पड़ी हुई गोल मेज के गिर्द बैठ गये।

पावेल ने उत्साह से जवाब दिया, "बहुत।"

"कौन सी किताब तुमको सबसे अच्छी लगती है ?"

पावेल ने थोड़ी देर तक सवाल पर विचार किया, फिर बोला : "जीजेपी गैरिबाल्डी।"

तोनिया ने उसका उच्चारण शुद्ध करते हुए कहा, "गिसेपी गैरिबाल्डी। अच्छा तो वह किताब तुम्हें खास तौर पर अच्छी लगती है ?"

"हां, मैं उसके अड़सठों खंड पढ़ चुका हूं। हर बार जिस दिन तनखाह मिलती है, मैं जाकर पांच खंड ले आता हूं। गैरिबाल्डी, वह है एक सच्चा मर्द !" पावेल ने आवेश के स्वर में कहा, "असल वीर ! मैं तो भाई ऐसी चीज को असल माल कहता हूं। वाह, कैसी-कैसी लड़ाइयां उसे लड़नी पड़ीं और जीत सदा उसके हाथ रही। और फिर यह भी तो देखो, वह सारी दुनिया घूमा था। वह अगर आज जिन्दा होता तो मैं जरूर उसकी सेना में भरती हो गया होता, जरूर। वह नौजवान मजदूरों को अपने दल में लेता था और फिर सब मिल कर गरीबों के लिए लड़ते थे।"

"तुम हमारी लाइब्रेरी देखना चाहोगे ?" तोनिया ने कहा और उसकी बांह अपनी बांह में ले ली।

"अरे नहीं, मैं घर के अन्दर नहीं जाऊंगा," पावेल ने आपत्ति की।

"तुम इतने जिद्दी क्यों हो ? डरने की कौन-सी बात है ?"

पावेल ने अपने नंगे पांवों को देखा, जिन्हें बहुत साफ नहीं कहा जा सकता था और सिर खुजलाने लगा।

"तुम्हें यकीन है कि तुम्हारी मां या पिताजी मुझे घर से निकाल नहीं देंगे ?"

यह सुनकर तोनिया बिफर पड़ी, "अगर तुम ऐसी बातें करना बन्द नहीं करोगे तो मैं सचमुच तुम से नाराज हो जाऊंगी।"

"नाराज मत हो ! लेशचिन्स्की को ही ले लो, लेशचिन्स्की कभी हम जैसों को अपने घर के अन्दर नहीं घुसने देता। वह बावर्चीखाने में ही हमसे बातें करता है। एक बार मुझको किसी चीज के लिए उसके यहां जाना पड़ा

था और नेली ने मुझे कमरे के अन्दर जाने नहीं दिया—जरूर उसे यही डर होगा कि मैं उसकी कालीनें खराब कर दूंगा या इसी किस्म का और कोई बांगड़ूपन," पावेल ने तीखी हंसी के साथ कहा।

"चलो चलो," तोनिया ने आग्रह किया और उसका कंधा पकड़ते हुए उसे हल्का-सा धक्का देती हुई सायबान की ओर ले चली।

खाने के कमरे में से होकर वह उसे एक कमरे में ले गई जिसमें ओक की लकड़ी की बनी, किताब रखने की एक खुली हुई बड़ी-सी आलमारी रखी थी। और जब उसने दरवाजे खोले तो पावेल ने खूबसूरत पांतों में सजी हुई सैकड़ों किताबें देखीं। उसने अपनी जिन्दगी में ऐसा खजाना नहीं देखा था।

"अच्छा आओ, तुम्हारे लिए एक अच्छी-सी किताब ढूंढ़ी जाय। मगर देखो, तुम्हें वादा करना पड़ेगा कि और किताबों के लिए तुम बराबर आया करोगे। आओगे न?"

पावेल ने खुशी से सिर हिलाया।

उसने कहा, "मुझे किताबों से प्रेम है।"

उस दिन दोनों ने कुछ घंटे साथ-साथ बहुत अच्छे गुजारे। तोनिया ने उसका परिचय अपनी मां से कराया। और वह कोई ऐसी कठिन परीक्षा पावेल को न जान पड़ी। सच तो यह है कि तोनिया की मां उसे अच्छी लगी।

तोनिया पावेल को फिर अपने कमरे में ले गई और उसे अपनी किताबें दिखाने लगी।

सिंगार-मेज पर एक छोटा-सा आइना रखा हुआ था। तोनिया पावेल को उसके पास ले गई और जरा हंसते हुए बोली:

"तुम अपने बालों को ऐसे जंगल की तरह बढ़ने क्यों देते हो? तुम कभी उन्हें कटाते या उनमें कंघी नहीं करते क्या?"

पावेल ने सकुचाते हुए कहा, "बाल जब बहुत बढ़ जाते हैं तो मैं उनमें उस्तरा फिरवा देता हूं। और करूं भी क्या?"

तोनिया हंसी और सिंगार-मेज पर से एक कंघी उठाते हुए उसने कई बार तेजी से उसे पावेल के जंगली बालों में दौड़ाया।

कंघी कर चुकने पर उसने बहुत गौर से अपनी इस कारीगरी को देखा और बोली, "हां, अब कुछ ठीक हुआ। बालों को ठीक से कटाना चाहिए, यह क्या भूतों की तरह शकल बनाये घूमते रहते हो!"

उसने गौर से पावेल की रंग-उड़ी भूरी कमीज और भद्दी पतलून को देखा, मगर और कुछ कहा नहीं।

पावेल ने उसकी निगाह को भांपा और उसे अपने कपड़ों पर शर्म आई।

चलते समय तोनिया ने उसे फिर आने की दावत दी। उसने पावेल से वादा करा लिया कि वह दो दिन बाद आयेगा और उसके साथ मछली पकड़ने जायेगा।

पावेल को खिड़की से कूद कर घर के बाहर जाना ज्यादा आसान मालूम हुआ; वह सब कमरों में होकर नहीं जाना चाहता था और न तोनिया की मां से ही फिर मिलना चाहता था।

आर्तेम के चले जाने से कोर्चागिन परिवार की हालत काफी खराब हो गई। पावेल की मजदूरी से घर का खर्च पूरा नहीं पड़ता था।

मारिया याकोवलेवना ने पावेल से प्रस्ताव किया कि क्यों न मैं भी कोई काम कर लूं; और लेशचिन्स्की को एक रसोईदारिन की जरूरत भी है। मगर पावेल ने इस प्रस्ताव का विरोध किया :

"नहीं मां, मैं ही और कुछ काम कर लूंगा। उन्हें लकड़ी चीरने के कारखाने में शहतीरों को ठीक से जमा कर रखने के लिए आदमी की जरूरत है। आधा दिन मैं वहां काम कर लिया करूंगा और फिर उससे हमारा काम चल जायगा। तुम किसी भी हालत में काम पर मत जाना, नहीं तो आर्तेम मुझसे गुस्सा होगा कि मैंने क्यों तुम्हें ऐसा करने दिया और इसकी जरूरत ही क्यों पड़ी ?"

पावेल की मां ने आग्रह किया, मगर पावेल नहीं माना।

दूसरे दिन से वह लकड़ी चीरने के कारखाने में काम करने लगा, और यह काम था तत्काल कटे हुए लकड़ी के पटरों को सूखने के लिए फैलाना। वहां उसे बहुत से अपने जाने-पहचाने लड़के मिले—जैसे उसका एक पुराना सहपाठी मिशा लेवचुकोव और वालिया कुलेशोव। मिशा और वह मिल कर काम करने लगे और पीस-रेट के हिसाब से उनको खासे अच्छे पैसे मिल जाते थे। पावेल दिन में लकड़ी चीरने के कारखाने में काम करता था और शाम को बिजली घर में।

दसवें रोज शाम को पावेल ने अपनी मजदूरी के पैसे अपनी मां को दिये।

मां के हाथ में पैसे देते हुए उसने थोड़ी परेशानी से जरा इधर-उधर किया, थोड़ा लजाया और आखिरकार बोला :

"बात यह है मां कि मुझे साटन की एक कमीज खरीद दो, नीली-नीली, जैसी पिछले साल थी मेरे पास, याद है न ? इसमें करीब आधा पैसा लग जायगा, मगर तुम कोई चिन्ता न करो; मैं कुछ और कमा लूंगा। मेरी यह

कमीज काफी भद्दी है," उसने ऐसे कहा जैसे अपनी इस इच्छा के लिए माफी मांग रहा हो।

मां ने कहा, "जरूर-जरूर, यह भी कोई कहने की बात है बेटा, मैं जरूर खरीद दूंगी। मैं आज ही जाकर कपड़ा ले आऊंगी और कल उसे सी दूंगी। तुम्हें सचमुच नई कमीज की जरूरत है।" यह कह कर मां ने दुलार भरी आंखों से अपने बेटे को देखा।

पावेल हेयर-कटिंग सेलून के दरवाजे पर रुका और जेब में पड़े हुए रूबल को उंगली से टटोलते हुए दरवाजे में दाखिल हुआ।

हज्जाम बहुत साफ-सुथरा नौजवान आदमी था। उसने पावेल को दूकान में दाखिल होते देखा और सिर के इशारे से उससे खाली कुर्सी पर बैठने के लिए कहा।

"अब आप आइए साहब।"

उस गहरी नर्म गद्देदार कुर्सी में बैठते हुए पावेल ने अपने सामने के आइने में एक घबराया हुआ-सा चेहरा देखा।

हज्जाम ने पूछा, "छोटे कर दूं ?"

"हां, यानी नहीं—बात यह है कि मुझे बाल कटाने हैं। क्या कहते हो तुम लोग इस चीज को ?" पावेल ने गले का थूक निगलते हुए जैसे-तैसे अपनी बात कही और अपने आशय को स्पष्ट करने के लिए हाथ से इशारा किया।

"मैं समझ गया," हज्जाम ने मुस्करा कर कहा।

पन्द्रह मिनट बाद पावेल हज्जाम के यहां से निकला, पसीने में नहाया हुआ और इस कठिन परीक्षा से थक कर चूर, मगर बाल साफ-सुथरे कटे हुए और कंघी किये हुए। हज्जाम ने उन विद्रोही बालों को वश में करने के लिए बहुत संघर्ष किया और अन्त में पानी और कंघी की विजय हुई और पहले के खड़े हुए बाल अब कायदे से अपनी जगह पर जम गए थे।

सड़क पर आकर पावेल ने चैन की सांस ली और अपनी टोपी आंख तक खींची।

उसने अपने मन में कहा, "मां मुझे देखेगी तो क्या कहेगी !"

पावेल ने तोनिया के साथ मछली पकड़ने जाने का वादा किया था और जब उसने यह वादा पूरा नहीं किया तो तोनिया बहुत नाराज हुई और उसने अपने मन में कहा, "इस आग वाले छोकरे को किसी का कोई ख्याल नहीं;" मगर जब कुछ और रोज निकल गये और पावेल नहीं आया तो उसका मन पावेल के साथ के लिए तरसने लगा।

एक रोज जब वह टहलने के लिए निकलने ही वाली थी, उसकी मां ने आकर कमरे में झांका और कहा :

"तुमसे मिलने के लिए कोई आया है, तोनिया । अन्दर भेज दूं ?"

पावेल दरवाजे में दिखाई दिया, मगर वह इतना बदल गया था कि तोनिया एकाएक उसे पहचान नहीं सकी।

वह एकदम नई नीली साटन की कमीज और काला पतलून पहने हुए था। जूतों में डटकर पालिश हुई थी, इतनी कि वे चमाचम चमकने लगे थे और इसके अलावा तोनिया ने यह भी देखा कि उसके बाल भी छंटे हुए हैं ! धूल और धुएं से अटा हुआ वह नौजवान आग वाला अब बिलकुल बदल गया था।

तोनिया अपना आश्चर्य व्यक्त करने ही वाली थी, मगर रुक गई क्योंकि वह उस लड़के को, जो यों भी काफी परेशान था और भी परेशान करना नहीं चाहती थी। इसलिए उसने ऐसा बहाना किया कि जैसे उसके चेहरे-मोहरे की इस जबर्दस्त तब्दीली को उसने देखा ही न हो, और उसे डांटने लगी।

"तुम मछली पकड़ने के लिए मेरे साथ आने वाले थे, क्यों नहीं आये ? तुम्हें शर्म आनी चाहिए अपने-आप पर ! इसी तरह वादा पूरा किया जाता है ?"

"मैं आज-कल लकड़ी चीरने के कारखाने में काम करने लगा हूं और सच कहता हूं आने का वक्त ही नहीं मिला।"

उसने उसको यह नहीं बतलाया कि अपने लिए यह कमीज और पतलून खरीदने के वास्ते वह पिछले कई रोज से बैल की तरह काम करता रहा था।

बहरहाल, तोनिया ने खुद ही सच्चाई को भांप लिया और पावेल के प्रति उसकी नाराजगी गायब हो गई।

तोनिया ने प्रस्ताव किया, "चलो हम लोग तालाब पर घूमने चलें," और फिर दोनों बागीचे से निकल कर सड़क पर पहुंच गये।

थोड़ी ही देर में पावेल तोनिया को बतला रहा था कि उसने कैसे लेफ्टि-नेण्ट के यहां से रिवाल्वर चुराया। उसने अपनी सबसे बड़ी भेद की बात तोनिया को वैसे ही बता दी जैसे कोई अपने बहुत गहरे दोस्त को बतलाये और उससे यह भी वादा किया कि जल्दी ही किसी रोज वे दोनों घने जंगल में जायेंगे और रिवाल्वर चलायेंगे।

"मगर देखना, तुम मेरी यह बात किसी से कहना मत," पावेल ने एकाएक कहा।

तोनिया ने वचन दिया, "नहीं मैं कभी तुम्हारी बात किसी से नहीं कहूंगी।"

निर्मम और भयानक वर्ग-संघर्ष ने उक्रेन को जकड़ रखा था। हथियार उठाकर मैदान में उतरने वालों की संख्या रोज-ब-रोज बढ़ती जा रही थी और हर टक्कर से नये लड़ने वाले पैदा हो रहे थे।

भद्र नागरिकों के लिए शान्ति और सुव्यवस्था के दिन हवा हो चुके थे।

तोपों की तूफानी गरज से छोटे-छोटे कच्चे मकान कांप उठते थे और बेचारा भद्र नागरिक अपने तहखाने की दीवार का सहारा लेकर दुबक कर खड़ा हो जाता था या मकान के पिछवाड़े वाली खाई में आश्रय खोजता था।

पेतल्युरा के सब तरह के, सभी रंगों के, गिरोहों की उस कस्बे भर में बाढ़ सी आई हुई थी। सभी तरह के छोटे-बड़े सरदार इन गिरोहों के नेता थे, जमाने भर के गोलुब और आर्केन्जिल और एन्जिल और गार्डियस और बीसियों दूसरे लुटेरे!

जारशाही फौज के भूतपूर्व अफसर, उक्रेन के दक्षिण-पंथी और वाम-पंथी सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी—कहने का मतलब यह कि कोई भी दुस्साहसी आदमी जो थोड़े से खूनियों को जमा कर सकता था, अपने को ऐटमन घोषित कर देता था और फिर उन्हीं में से कोई-कोई पेतल्युरा का पीला-और-नीला झंडा फह-राने लगते थे और अपनी ताकत और मौके के हिसाब से जितने इलाके में मुमकिन हो, अपनी सत्ता कायम कर लेते थे।

इन्हीं छिट-पुट गिरोहों में से आदमियों को लेकर और उनमें कुलकों और ऐटमन कोनोवालेत्स की फौज में से गैलीशियन रेजिमेण्ट को शामिल करके प्रधान ऐटमन पेतल्युरा ने अपनी रेजिमेण्टें और डिवीजनें बनाई थीं। और जब बोल्शेविक छापेमार टुकड़ियों ने इस सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी और कुलक भम्भड़ पर हमला किया तो सैकड़ों-हजारों टापों और तोपों व मशीनगन खींचने वाली गाड़ियों के पहियों से धरती कांप गई।

उस तूफानी सन् १९१९ के अप्रैल महीने में भद्र नागरिक, डरा और बौख-लाया हुआ, सवेरे अपनी खिड़की खोलता था और नींद से भारी आंखें लिए चिन्ताकुल प्रश्न से अपने बगल वाले पड़ोसी का स्वागत करता था, "क्यों भाई आवतोनम पैत्रोविच, क्या तुमको मालूम है कि आज किसका राज है?"

और आवतोनम पैत्रोविच अपने पतलून की टांगें ऊपर उठाते हुए डरी निगाहों से इधर-उधर देखने लगता था।

"पता नहीं, अफानस किरीलोविच। रात को कोई शहर में दाखिल तो हुआ था। वह है कौन, यह अब जल्दी ही मालूम हो जायगा। यहूदियों की लूटपाट शुरू होती है तो हम समझ जायेंगे कि पेतल्युरा के आदमी हैं, औ

अगर वे 'कामरेड लोग' हुए तो भी झट पता लग जायगा—उनके बातचीत के तरीके से। मैं आंखें खोले हुए हूं ताकि ठीक समय पर मुझे पता हो जाय कि अब मुझे किसकी तसवीर टांगनी चाहिए। न बाबा, बगल वाले जेरासिम लियोनतियौविच की तरह आफत में जा फंसाना मुझे मंजूर नहीं। तुम्हें मालूम है न, उसने जरा सी असावधानी की और आफत में फंस गया। उसने लेनिन की तसवीर लाकर टांगी थी, तभी तीन आदमी दौड़े हुए घर के अन्दर आये। जैसा कि जल्दी ही पता चल गया, ये पेतल्युरा के आदमी थे। उन्होंने तसवीर पर एक निगाह डाली और जेरासिम पर कूद पड़े—कम से कम बीस कोड़े लगाये होंगे उन्होंने। चिल्लाकर बोले, 'अबे कम्युनिस्ट सुअर के बच्चे, हम जिन्दा ही तेरी चमड़ी उधेड़ लेंगे।' और फिर बेचारा बहुत चीखा-चिल्लाया, रोया-धोया, सफाई दी; मगर कुछ काम नहीं आया।

हथियारबन्द लोगों के दलों को सड़क पर आता देख कर भद्र नागरिक अपनी खिड़की बन्द कर लेता है और छिप जाता है। बच कर रहना अच्छा होगा!

जहां तक मजदूरों का ताल्लुक था, वे पेतल्युरा के लुटेरों के पीले और नीले झंडे को दबी नफरत से देखते थे। उक्रेन के पूंजीपतियों की इस साम्राज्यवादी लहर के आगे वे अपने-आपको कमजोर महसूस करते थे, और उनका हौसला तभी बढ़ा जब उधर से गुजरती हुई बोल्शेविक टुकड़ियां पीले और नीले झंडे वालों के खिलाफ भीषण लड़ाई लड़ते हुए उनकी पांतों को चीर कर शहर में दाखिल हुईं। एक-दो रोज तक मजदूरों का प्यारा लाल झंडा टाउन-हॉल पर फहराता रहा। मगर फिर टुकड़ी आगे बढ़ गयी और अंधेरा लौट आया।

इस वक्त शहर, ट्रान्सनीपर डिवीजन के "आशा और गौरव" कर्नल गोलुब के हाथ में था।

•अभी एक रोज पहले, दो हजार हत्यारों के उसके गिरोह ने जीत के बाद शहर में कदम रखा था। हुजूर कर्नल साहब सेना के आगे-आगे अपने शानदार काले घोड़े पर चल रहे थे। अप्रैल महीने की धूप के बावजूद उनकी साज-सज्जा में कोई कमी नहीं थी—काकेशस के लोगों का 'बुर्का', जापोरोजिए के कोसैकों वाली भेड़ की खाल की टोपी, जिसका ऊपरी हिस्सा रसभरी के रंग जैसा लाल था, 'चेरकेस्का', वह सभी कुछ पहने थे। और इस टीम-टाम के साथ के सब हथियार भी बाकायदा उनके शरीर पर सुसज्जित थे—कटार और तलवार, जिनकी मूंठें चांदी की थीं। उनके दांतों के बीच एक मुड़ा हुआ तम्बाकू पीने का पाइप दबा था।

हुजूर कर्नल गोलुब खूबसूरत आदमी थे, काली-काली भवें और पीला-सा रंग, जिसमें अविराम भोग-विलास के कारण कुछ हरापन भी मिला हुआ था।

क्रान्ति के पहले कर्नल गोलुब एक शहर के कारखाने से सम्बद्ध चुकन्दर के खेतों में कृषि-विशेषज्ञ थे। मगर ऐटमन के पद के मुकाबिले में वह एक बिल्कुल ही नीरस जिन्दगी थी। इसीलिए ऐसा हुआ कि जब सारे देश को अपनी लपेट में लेते हुए स्याह लहरें बहीं, तो उन लहरों के शिखर पर सवार होकर कृषि-विशेषज्ञ गोलुब "हुजूर कर्नल गोलुब" बन गये।

शहर के एकमात्र थिएटर में इन आगन्तुकों के सम्मान में मनोरंजन की तैयारियां खूब ठाठ-बाट से की गई थीं। पेतल्युरा के समर्थक बुद्धिजीवियों की सारी "विभूतियां" अपनी पूरी संख्या में वहां उपस्थित थीं : उक्रेनी अध्यापक, पादरी की दोनों लड़कियां, सुन्दरी आनिया और उसकी छोटी बहन दीना, कुछ उनसे नीचे स्तर की स्त्रियां, काउण्ट पोतोकी के घराने के कुछ पुराने लोग, मुट्ठी भर बड़े व्यापारी और उक्रेनी सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी पार्टी के कुछ गुंडे जो अपने आप को "आजाद कोसैक" कहते थे।

थिएटर का हॉल खचाखच भरा था। अध्यापकों के इर्द-गिर्द अफसर घूम रहे थे जो देखने-सुनने में ऐसे नजर आते थे जैसे जापोरोजिए के कैसेकों का पुरानी तसवीरों की हूबहू नकल हों। उनके अलावा पादरी की लड़कियां और बड़े व्यापारियों की स्त्रियां भी थीं जो चटख रंगों के काढ़े हुए फूलों और रंग-बिरंगे मनकों और फीतों से अलंकृत उक्रेनी जातीय परिधानों में सजी हुई घूम रही थीं।

रेजिमेण्ट का बैण्ड बज रहा था। स्टेज पर **नजर इस्तदोलिया** नामक नाटक की तैयारियां जोर-शोर से चल रही थीं। उस शाम यही नाटक खेला जाने वाला था।

मगर हॉल में बिजली नहीं थी, और इस बात की रिपोर्ट कर्नल साहब को उनके सहायक, सब-लैफ्टिनेण्ट पोलियान्त्सेव ने हेडक्वार्टर पर दी। पोलियान्त्सेव ने अब अपने नाम को उक्रेनी रूप देकर अपने-आपको खोरूंजी पालियानित्स्या कहना शुरू कर दिया था। कर्नल साहब ने, जो शाम के थिएटर को अपनी उपस्थिति से सुशोभित करने की सोच रहे थे, पालियानित्स्या की पूरी बात सुनी और बहुत इतमीनान के साथ, पर आदेश के स्वर में, कहा :

"रोशनी जरूर होनी चाहिए। एक एलेक्ट्रीशियन तलाश करो और जैसे भी हो बिजली घर को चालू करो।"

"बहुत अच्छा, हुजूर कर्नल साहब।"

खोरूंजी पालियानित्स्या को आसानी से ही एलेक्ट्रीशियन मिल गये। दो घंटे के भीतर ही भीतर पावेल, एक एलेक्ट्रीशियन और एक मैकेनिक को हथियारबन्द सन्तरियों के पहरे में बिजली घर ले जाया गया।

"अगर सात बजे तक लाइट ठीक नहीं हुई तो तुम तीनों को मैं फांसी पर लटका दूंगा," पालियानित्स्या ने ऊपर लोहे की एक धरन की ओर इशारा करते हुए उनको जतला दिया।

स्थिति को जिस लट्ठमार तरीके से खोलकर रखा गया था, उसका असर यह हुआ कि ठीक समय पर रोशनी आ गयी।

शाम का उत्सव पूरे रंग पर था जब हुज़ूर कर्नल साहब अपने साथ एक औरत को लिए हुए पधारे। जिसके घर में कर्नल साहब ठहरे हुए थे, उसी शराबखाने के मालिक की यह लड़की थी। इसका अच्छा गदराया हुआ जिस्म था और बाल पीले थे। लड़की का बाप पैसेवाला था, इसलिए उसकी पढ़ाई सूबे के सबसे बड़े शहर के स्कूल में हुई थी।

जब उन दोनों ने, सम्मानित अतिथि के रूप में, पहली कतार में आसन ग्रहण कर लिया तो कर्नल साहब ने संकेत किया और पर्दा इतनी जल्दी से उठा कि दर्शकों ने मंच से भागते मंच-निर्देशक की पीठ की झलक देखी।

नाटक के दौरान में अफसरों और उनके साथ की स्त्रियों ने अपना वक्त जलपान-गृह में गुजारा और घर पर खींची हुई कच्ची शराब से, जिसका इन्तजाम सर्वशक्तिमान पालियानित्स्या ने किया था, और वसूली से प्राप्त सुस्वादु खाद्यों से अपना पेट भरा। खेल का अन्त होते-होते उनके ऊपर नशा अच्छी तरह चढ़ गया था।

खेल खतम होने पर पर्दा जब आखिरी बार गिरा, तो पालियानित्स्या लपक कर मंच पर चढ़ गया। बड़े नाटकीय ढंग से बांह घुमाते हुए उसने ऐलान किया, "देवियो और सज्जनो, अब फौरन नाच शुरू होगा।"

सबने बहुत हर्ष से इस प्रस्ताव का स्वागत किया। दर्शक लोग बाहर निकल गये ताकि सम्मानित अतिथियों की सुरक्षा के लिए नियुक्त पेतल्युरा सैनिक कुर्सियों को बाहर करके नाच के फर्श को खाली कर दें।

आध घंटे बाद, थिएटर का हॉल मस्तियों का अखाड़ा बना हुआ था।

पेतल्युरा के अफसर, संयम और मर्यादा को ताक पर रख कर, स्थानीय सुन्दरियों के साथ बड़े जोशोखरोश से होपाक नृत्य कर रहे थे। इस श्रम की गर्मी से सुन्दरियों के चेहरे लाल हो रहे थे और भारी फौजी बूटों की रौंद से थियेटर की कच्ची दीवारें हिल रही थीं।

ठीक इसी दरम्यान हथियारबन्द घुड़सवारों का एक दस्ता आटे की चक्की की तरफ से शहर की ओर बढ़ रहा था। शहर की सीमा पर तैनात पेतल्युरा सैनिकों की चौकी वाले घबरा कर अपनी मशीनगनों के पास पहुंचे और रात के सन्नाटे में मशीनगनों में गोले भरने की खट-खट सुनाई दी। अंधेरे में तीखी आवाज सुनाई पड़ी :

"हाल्ट ! कौन जाता है ? कौन है ?"

अंधेरे में से दो काली आकृतियां बाहर निकलीं। उनमें से एक आगे बढ़ी और भारी आवाज में गरज कर बोली :

"ऐटमन पावल्युक, अपनी टुकड़ी के साथ। तुम कौन हो ? गोलुब के आदमी ?"

"जी हां," एक अफसर ने आगे बढ़ते हुए कहा।

पावल्युक ने पूछा, "मैं अपने सिपाहियों को कहां ठहराऊं ?"

"मैं अभी हेडक्वार्टर को फोन करता हूं," अफसर ने जवाब दिया और सड़क के किनारे की एक छोटी सी झोंपड़ी में अन्तर्ध्यान हो गया।

एक मिनट बाद वह फिर बाहर निकला और हुक्म देते हुए बोला :

"जवानो, मशीनगन को रास्ते से हटा लो ! हुजूर ऐटमन को गुजरने दो !"

पावल्युक ने अपना घोड़ा जगमगाते हुए थिएटर के सामने, जहां बहुत से लोग खुली हवा में घूम रहे थे, रोका।

"देखता हूं, बड़ी मस्तियां चल रही हैं वहां," उसने अपने बगल के एक घुड़सवार की ओर मुड़ते हुए कहा, "आओ गुकमाक, हम भी उतरें और इस नाच-गाने में शरीक हो जायें। हम लोग अपने लिए दो लड़कियां चुन लेंगे— मैं देखता हूं कि यहां लड़कियां भरी हुई हैं। अरे एस्तालेज्को," उसने चिल्लाते हुए कहा, "तुम हमारे जवानों को शहरवालों के यहां ठहरा दो। हम लोग यहां रुकेंगे। अर्दली, पीछे-पीछे आओ।" और वह घोड़े से उतर पड़ा।

थिएटर के दरवाजे पर पावल्युक को पेतल्युरा के दो सैनिकों ने रोका।

"टिकट ?"

पावल्युक ने उन्हें नफरत से देखा और एक को कंधे से धक्का देता हुआ हॉल में दाखिल हो गया। उसके साथ के एक दर्जन आदमी भी हाल में घुस गये। उन सबके घोड़े बाहर बाड़ी से बंधे खड़े थे।

सब की नजरें नवागन्तुकों की ओर उठीं, विशेष रूप से भीमकाय पावल्युक की ओर। वह एक अच्छे कपड़े का अफसरों का कोट, गार्ड्स वाली नीली बिर्जिस और खूब बालोंवाली फर की टोपी पहने था। कंधे से लटकते हुए फीते से एक माउजर पिस्तौल लटक रही थी और जेब से एक दस्ती बम झांक रहा था।

"यह कौन है ?"—यह फुसफुसाहट सारी भीड़ में फैल गई। गोलुब का नायब होश-हवास खोकर मस्ती में नाच रहा था।

पादरी की बड़ी लड़की उसकी साथिन थी। यह लड़की इतनी मस्त होकर चक्कर खा रही थी कि उसका साया खूब ऊंचे उड़ रहा था, इतने ऊंचे कि उल्लसित योद्धागण उसके रेशमी अंडरवियर को आंखें भर-भर देख रहे थे।

भीड़ को कुहनियों से अलग करते हुए पावल्युक सीधे नाच के फर्श पर जा पहुंचा।

उसने पादरी की लड़की की टांगों को आंखें फाड़ कर देखा, अपने खुश्क ओंठों पर जीभ फेरी, फिर नाच का फर्श पार करके ऑरकेस्ट्रा के प्लेटफार्म पर पहुंचा, रुका और अपनी चाबुक फटकारी।

"सुनो, होपाक की धुन बजाओ!"

कंडक्टर ने आदेश की ओर ध्यान नहीं दिया।

पावल्युक का हाथ तेजी से घूमा और चाबुक सटाक से कंडक्टर की पीठ पर पड़ी। कंडक्टर उछल पड़ा, मानो बिच्छू ने काट लिया हो। संगीत भंग हो गया। हॉल निस्तब्धता में डूब गया।

"देखते हो इसकी हिम्मत!" शराबखाने के मालिक की लड़की गुस्से से लाल हो रही थी। उसने अपने बगल में बैठे हुए गोलुब की कुहनी को पकड़ते हुए जोर से कहा, "तुम उससे कुछ कहते क्यों नहीं? तुम्हारी आंख के सामने जो जी चाहे कर रहा है और तुम कुछ बोलते नहीं?"

गोलुब अपना भारी शरीर लिए खड़ा हुआ, ठोकर मार कर एक कुर्सी रास्ते से अलग की, तीन कदम आगे बढ़ा और पावल्युक के सामने जाकर खड़ा हो गया। उसने फौरन इस नये आगन्तुक को पहचान लिया। उसे अपने इस पुराने प्रतिद्वन्दी से, जो स्थानीय तौर पर उसके हाथ से ताकत छीन लेना चाहता था, पुराने झगड़े सुलझाने थे। अभी केवल एक हफ्ता पहले पावल्युक ने हुजूर कर्नल साहब के साथ बड़ी कमीनी हरकत की थी। उस वक्त जब कि एक लाल टुकड़ी के साथ, जिसने अनेक बार गोलुब की टुकड़ी की अच्छी तरह गत बनाई थी, लड़ाई अपने शिखर पर थी, पावल्युक ने पीछे से बोल्शेविकों पर हमला करने के बजाय शहर के अन्दर दाखिल होकर और उन थोड़े से सिपाहियों को हरा कर जिन्हें बोल्शेविक छोड़ गये थे, अपनी हिफाजत के लिए कुछ सिपाहियों को तैनात कर दिया और फिर जी खोल कर उस जगह को लूटा। इसमें क्या शक कि सही माने में पेतल्युरा का आदमी होने के नाते उसने यहूदी आबादी को ही अपना खास शिकार बनाया। इस बीच बोल्शेविक गोलुब के दाहने पार्श्व को चीर कर घेरे के बाहर निकल गये थे।

और अब वह घमंडी, घुड़सवारों का कप्तान यहां घुस आया था। और इसकी हिम्मत तो देखो, हुजूर कर्नल के अपने खास बैण्ड-मास्टर को उनकी आंखों के सामने मार रहा था। नहीं यह तो हद से बाहर की बात हो गई थी। गोलुब समझ गया कि अगर वह इस घमंडी छुटभैये ऐटमन को ठीक नहीं करता तो रेजिमेण्ट में उसकी धाक खतम हो जायगी।

कई सेकेंड तक दोनों आदमी आमने-सामने, एक-दूसरे को घूरते हुए, खामोश खड़े रहे।

एक हाथ से अपनी तलवार की मूठ पकड़ते हुए और दूसरे से जेब में अपने रिवाल्वर को टटोलते हुए गोलुब ने डपट कर कहा :

"तेरी यह हिम्मत कैसे कि हमारे आदमियों पर हाथ छोड़े, हरामजादे !"

पावल्युक का हाथ धीरे-धीरे माउजर के हत्थे की तरफ बढ़ रहा था।

"जरा जबान संभाल कर बातें कीजिए गोलुब साहब, वर्ना मुंह के बल गिरिएगा। मुझसे उलझना नहीं। मैं गुस्से का तेज हूं।"

गोलुब भला यह कैसे बर्दाश्त कर सकता था।

उसने चिल्लाकर कहा, "इन सबों को बाहर निकाल दो और एक-एक को पच्चीस-पच्चीस कोड़े लगाओ !"

गोलुब के अफसर शिकारी कुत्तों की तरह पावल्युक और उसके आदमियों पर झपट पड़े।

एक गोली छूटी और ऐसी आवाज आई कि जैसे किसी ने बिजली का बल्ब फर्श पर पटक दिया हो और दोनों दलों के लोग शिकारी कुत्तों की तरह आपस में गुंथ गये। हॉल में तबाही मच गई। उस मार-धाड़ में सब एक-दूसरे पर तलवारें चला रहे थे, एक-दूसरे के बाल नोच रहे थे और गले दबोच रहे थे। औरतें डर के मारे चीखती हुई लड़ने वालों से छिटक कर दूर चली गई थीं।

कुछ मिनटों के अन्दर पावल्युक और उसके आदमियों के हथियार छीन लिए गए और उन्हें खूब मारा गया, फिर हॉल से घसीट कर वे लोग बाहर ले जाये गए और सड़क पर ले जाकर खड़े कर दिये गए।

इस लड़ाई मे खुद पावल्युक अपनी फर की टोपी से हाथ धो बैठा। उसका चेहरा घायल हो गया था और हथियार छीन लिये गए थे। गुस्से के मारे उसका बुरा हाल था। वह और उसके आदमी उछल कर अपने घोड़ों पर बैठे और तेजी से निकल गये।

वह शाम तो बर्बाद हो गई। जो कुछ हुआ था, उसके बाद किसी का मन खुशियां मनाने का नहीं हो रहा था। स्त्रियों ने नाचने से इनकार कर दिया, और हठ करने लगीं कि उन्हें घर पहुंचा दिया जाय। मगर गोलुब यह सब सुनने को तैयार न था।

उसने हुक्म दिया, "सन्तरी खड़े कर दो ! कोई हॉल के बाहर नहीं जायगा !"

पालियानित्स्या ने हुक्म पूरा करने में बहुत तेजी दिखलाई।

"देवियो और सज्जनो, नाच सवेरे तक चलेगा।" गोलुब ने तमाम

आपत्तियों-प्रतिवादों को दूर ठेलते हुए हठपूर्वक कहा, "पहला वॉल्ज मैं खुद नाचूंगा।"

ऑरकेस्ट्रा फिर बजने लगा। मगर इसके बावजूद, उस रात फिर खुशियां न मनाई जा सकीं।

कर्नल ने पादरी की लड़की के संग नाच के फर्श का अभी एक चक्कर भी पूरा न किया था कि सन्तरी दौड़ते हुए हॉल के अन्दर आये और चिल्ला कर बोले :

"पावल्युक थिएटर को घेर रहा है।"

उसी वक्त सड़क के सामने वाली एक खिड़की टूटी और उसके टूटे फ्रेम के अन्दर से एक मशीनगन की नली अन्दर घुसी। वह पागलों की तरह कभी इधर और कभी उधर घूम रही थी, मानो उन भागते हुए लोगों में से किन्हीं खास को चुन रही हो। लोग मशीनगन से घबराकर ऐसे तितर-बितर होकर भाग रहे थे, गोया वह शैतान हो।

पालियानित्स्या ने छत में लगे एक हजार कैण्डिल पावर के लैम्प पर गोली चलाई। वह बम की तरह फूटा। उड़े हुए शीशे के टुकड़े हॉल के अन्दर सभी लोगों पर बरस पड़े।

हॉल अंधेरे में डूब गया। कोई बाहर से चिल्लाया :

"सब लोग बाहर निकलो!" और इसके बाद गोलियों की बौछार।

औरतों का वह पागलों की तरह चिल्लाना, वे तमाम हुक्म जो गोलुब हॉल के अन्दर इधर-उधर भागता हुआ अपने घबराये हुए अफसरों को बटोरने की कोशिश में जारी कर रहा था, सहन में गोली चलने और चीखने-चिल्लाने का शोर—इन सबसे एक अजब जहन्नुमी मंजर पैदा हो गया था जिसे बयान करना मुश्किल है। इस हंगामे में किसी ने पालियानित्स्या को पीछे के दरवाजे से निकल कर एक वीरान गली में जाते नहीं देखा, जहां पहुंच कर वह जी-जान से गोलुब के हेडक्वार्टर की तरफ दौड़ा।

आध घंटे बाद शहर में बाकायदा लड़ाई का मोर्चा जमा हुआ था। अन-वरत राइफिलें चलने की आवाजें और उनके बीच-बीच मशीनगनों का भारी शोर रात की निस्तब्धता को चीर रहा था। शहर वाले बिल्कुल हैरान थे कि यह क्या हो रहा है। अपने गर्म-गर्म बिस्तरों से उठ कर वे अपनी खिड़कियों के शीशों में मुंह सटाये खड़े थे।

आखिरकार गोलियों का चलना कम हुआ। कहीं दूर, सिर्फ एक मशीनगन बीच-बीच में गोले छोड़ती रही—उसी तरह जैसे रात की तारीकी में कोई कुत्ता भौंक रहा हो।

उधर क्षितिज पर पौ फट रही थी और इधर लड़ाई खतम हुई...

शहर में अफवाह फैल गई कि यहूदियों का सफाया करने की तैयारी हो रही है। आखिरकार यह अफवाह यहूदियों की उन छोटी-छोटी, नीची छतवाली झोंपड़ियों तक भी पहुंची जिनकी खिड़कियां टेढ़ी-मेढ़ी थीं और जो किसी तरह अटकी हुई थीं। इन बुरी तरह गुंजान बस्तियों में, कच्ची खोलाबाड़ियों में, गरीब यहूदी रहते थे।

जिस प्रेस में एक साल से ऊपर से सर्गेई ब्रुजाक काम कर रहा था, उसके कम्पोजीटर और दूसरे मजदूर यहूदी थे। उनके और सर्गेई के दरम्यान दोस्ती के मजबूत रिश्ते पैदा हो गये थे। एक सुसम्बद्ध परिवार की तरह वे अपने मालिक, खुशहाल और अपने में मगन मोटे-ताजे मिस्टर ब्लुमस्टाइन, का मुकाबिला कर रहे थे। मालिक और प्रेस-मजदूरों में लगातार संघर्ष चल रहा था। ब्लुमस्टाइन सदा इसी कोशिश में रहता था कि ज्यादा से ज्यादा खुद हड़प ले और मजदूरों को कम से कम पैसा दे। प्रेस के मजदूरों ने कई बार हड़ताल की थी और प्रेस दो-तीन हफ्ते बन्द रहा था। कुल चौदह मजदूर थे। उनमें सबसे छोटा सर्गेई था, जो दिन में बारह घंटे एक हैंड-प्रेस का पहिया घुमाता रहता था।

आज सर्गेई ने मजदूरों में कुछ ऐसी बेचैनी देखी जिससे उसके मन में शंका हुई। पिछले कई गड़बड़ी के महीनों से प्रेस को "चीफ ऐटमन" की तरफ से जारी किये हुए ऐलानों को छापने के अलावा और कुछ काम नहीं था।

मेंडेल नाम का एक कम्पोजीटर, जो दिक का मरीज था, सर्गेई को बुला कर एक कोने में ले गया।

अपनी उदास आंखों से इस लड़के को देखते हुए उसने कहा, "तुमको मालूम है, हमारे कत्लेआम की तैयारी हो रही है?"

सर्गेई ने आश्चर्य से उसे देखा।

"मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम।"

मेण्डेल ने अपना पीला मुरझाया हुआ हाथ सर्गेई के कंधे पर रखा और बड़े-बूढ़ों की तरह, राज की बात बतलाने के स्वर में कहा:

"हां, कत्लेआम होने वाला है—यह बात सच है। यहूदियों को पीटा जायगा। मैं जानना यह चाहता हूं कि इस मुसीबत में तुम अपने साथियों का साथ दोगे या नहीं?"

"जरूर दूंगा, जहां तक मेरे बस में होगा। मगर मैं कर क्या सकता हूं, मेण्डेल?"

सारे कम्पोजीटर इस बात को सुन रहे थे।

"तुम बड़े अच्छे लड़के हो, सर्योजा। हमें तुम पर भरोसा है। तुम्हारा बाप भी तो आखिर हमारी ही तरह मजदूर है। हम चाहते हैं कि तुम दौड़ कर

अपने घर जाओ और अपने बाप से पूछो कि क्या वह कुछ बूढ़े-बुढ़ियों को अपने घर में छिपा लेगा। उसका जवाब मिलने पर हम लोग तय करेंगे कि किसको कहां रखा जाय। अपने घर में तुम यह भी पूछना कि क्या उनकी जानकारी में ऐसा और कोई मिल सकेगा जो यही काम करे। कम से कम रूसी लोग तो इस वक्त इन डाकुओं के हाथ से बचे ही रहेंगे। फौरन दौड़ जाओ सर्योजा, वक्त बहुत कम है।"

"मेण्डेल मुझ पर यकीन रखो। मैं फौरन जाकर पावका और क्लिम्का से मिलता हूं—उनके घरवाले जरूर कुछ लोगों को रख लेंगे।"

"जरा रुको," मेण्डेल ने सर्गेई को रोकते हुए चिन्ता के स्वर में पूछा, "यह पावका और क्लिम्का कौन है ? तुम उन्हें अच्छी तरह जानते हो ?"

सर्गेई ने विश्वास के साथ सिर हिलाया और कहा, "जरूर। वे मेरे लंगोटिया यार हैं। पावका कोर्चागिन का भाई मैकेनिक है।"

"अरे कोर्चागिन," मेण्डेल के मन की शंका दूर हो गई। बोला, "मैं उसको जानता हूं—हम लोग साथ-साथ एक ही घर में रहते थे। हां, तुम कोर्चागिन के घर वालों से जाकर बातचीत कर सकते हो। जाओ सर्योजा, और जल्द से जल्द जवाब लेकर लौटो।"

सर्गेई बन्दूक से छूटी गोली की तरह सड़क पर जा निकला।

पावल्युक और गोलुब की टुकड़ियों में जो जमकर लड़ाई हुई थी, उसके तीसरे रोज कत्लेआम शुरू हुआ।

शेपेतोवका से खदेड़े जाने पर पावल्युक ने उसके पास-पड़ोस तक की जगह छोड़ दी थी और करीब के एक कस्बे पर दखल कर लिया था। शेपेतोवका की उस रात की लड़ाई में [illegible]स आदमी मारे गये थे। गोलुब के भी इतने ही आदमी मारे गये थे

मुर्दों को गाड़ियों ने अप[illegible]लाद कर जल्दी से कब्रिस्तान ले जाया गया और बिना किसी समारोह[illegible] उसी दिन दफन कर दिया गया। समारोह होता भी तो किस बात का; [illegible] समूचे कांड में गर्व करने जैसी तो कोई चीज न थी। दो ऐटमनों ने सड़क के कुत्तों की तरह लड़ना शुरू कर दिया था और किसी भी तरह का कोई समारोह बेहूदा मालूम होता। पालियानित्स्या ने जरूर चाहा था कि इसको एक बड़ी शकल दी जाय और पावल्युक को बोल्शेविक लुटेरा घोषित किया जाय, मगर कमेटी ने, जिसके प्रधान पादरी वासिली थे, इस बात का विरोध किया।

इस झगड़े से गोलुब की रेजिमेंट के लोग और खासकर उसके अंगरक्षक भुनभुना रहे थे क्योंकि उन्हीं के सबसे ज्यादा आदमी मारे गये थे। इस असंतोष को खतम करने के लिए और उनके अंदर फिर से जोश भरने के लिए, पालिया-

निस्त्या ने कत्लेआम का प्रस्ताव किया और गोलुब से कहा, "अच्छा रहेगा, इससे सिपाहियों का दिल बहल जायगा।" उसने तर्क पेश किया कि सैनिकों में जो आक्रोश है, उसको देखते हुए यह चीज जरूरी है। और गो, कर्नल साहब शराबखाने वाले की लड़की से अपनी शादी के ठीक पहले शहर की शांति भंग नहीं करना चाहते थे, तो भी आखिरकार उन्होंने अपनी रजामंदी दे दी।

हुजूर कर्नल को इस काम में हिचक इसलिए भी थी कि कुछ ही दिन पहले वे सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी पार्टी में दाखिल हुए थे। ऐसा करने से मुमकिन है उनके दुश्मन फिर से उनको बदनाम करते और उन्हें कत्लेआम कराने वाला कहते। इसमें तो शक ही नहीं कि वे "चीफ ऐटमन" से खूब नमक-मिर्च मिलाकर उसकी बुराई करते। मगर यह भी सही है कि गोलुब अब तक "चीफ" पर कुछ खास निर्भर नहीं था क्योंकि अपना खर्च वह खुद उठाता था। इसके अलावा, "चीफ" को भी यह बात अच्छी तरह पता थी कि उसके नीचे कैसे-कैसे लुच्चे-लफंगे काम करते हैं और उसने खुद कई बार तथाकथित वसूली के पैसों में से डाइरेक्टरी के खर्च के लिए पैसे मांगे थे। जहां तक इस बात का सवाल था कि वह कत्लेआम कराने वाला मशहूर हो जायगा, इसमें भी कोई नई बात न थी; इस सम्बंध में गोलुब की पहले से बहुत ख्याति थी और बड़े-बड़े कारनामे थे। इस काम से उसमें अब नया कुछ जुड़ने वाला न था।

यहूदियों का कत्लेआम खूब सवेरे शुरू हुआ।

शहर अभी पौ फटने के ठीक पहले के धुंधलके में लिपटा हुआ था। यहूदी बस्ती के बेतरतीब बने हुए उन छोटे-छोटे घरों के इर्द-गिर्द गीले कपड़े की चिन्दियों की तरह लटकी हुई सूनी-सूनी सड़कें ... ?" ...ान थीं। चुस्त पर्दों में में बन्द खिड़कियां अपनी अंधी आंखों से घूर रही

बस्ती को बाहर से देखने से मालूम होता था ... वह सवेरे की गहरी नींद में हो। मगर, घरों के अन्दर कहीं नींद न थी, ...के परिवार पूरे-पूरे कपड़े पहने, आपस में सटे एक कमरे में बैठे हुए थे और ...ने वाली तबाही के लिए अपने आप को तैयार कर रहे थे। सिर्फ बच्चे, जो बहुत छोटे थे और नहीं समझ सकते थे कि यह सब क्या हो रहा है, अपनी मांओं की गोदों में चैन से सो रहे थे।

गोलुब की अंगरक्षक टुकड़ी का प्रधान, सलोमिगा, जिसका जिप्सियों जैसा स्याह रंग था और जिसके गाल पर तलवार के घाव का लाल दाग था, गोलुब के सहचर पालियानित्स्या को जगाने की बड़ी कोशिश कर रहा था और पालियानित्स्या उस दुःस्वप्न की पकड़ से अपने-आप को छुड़ा नहीं पा रहा था जिसने सारी रात उसको सताया था : वह अजीब तरह से मुंह बनाए, दांत

निकाले कूबड़वाला राक्षस अब भी उसकी गर्दन को अपने नाखूनी पंजों से दबोच रहा था। आखिरकार उसने आंखें खोलीं, अपना दर्द से फटता हुआ सिर उठाया और सलोमिगा को देखा।

सलोमिगा ने कंधा पकड़ कर उसको हिलाते हुए कहा, "उठ भी, अलाल ! काम का वक्त है और तुम पड़े सो रहे हो। लगता है रात को जरा ज्यादा चढ़ा गए थे।"

पालियानित्स्या अब अच्छी तरह जग गया था। वह उठ बैठा था और सीने में जलन होने से मुंह बना रहा था। अपने मुंह में इकट्ठा कड़वे थूक को उसने थूका।

सलोमिगा को खाली-खाली निगाहों से घूरते हुए उसने पूछा, "क्या काम है ?"

"इन यहूदी हरामजादों का सफाया जो करना है ! भूल गए क्या ?"

पालियानित्स्या को सारी बात याद हो आई। सचमुच, वह भूल गया था। फार्म पर शराब का दौर चला था, जहां हुजूर कर्नल अपनी प्रेयसी और कुछ लंगोटिया यारों को लेकर मौज उड़ाने चले गए थे, वहीं वह सचमुच बहुत चढ़ा गया था।

गोलुब को कत्लेआम के वक्त शहर छोड़ कर चले जाना सुविधाजनक मालूम हुआ क्योंकि तब अगर बाद में कोई बात उठती भी, तो वह कह सकता था कि उसकी अनुपस्थिति में किसी गलतफहमी के कारण यह चीज हो गई है और इस बीच पालियानित्स्या को इस काम में खुल कर खेलने का पूरा मौका था। इसमें शक नहीं कि "तबियत बहलाने" का प्रबंध करने में पालियानित्स्या माहिर था !

पालियानित्स्या ने अपने सिर पर एक बाल्टी पानी डाला जिससे उसके होश-हवास लौट आए। तरो-ताजा होकर हुक्म जारी करता हुआ वह हैडक्वार्टर में घूमने लगा।

अंगरक्षक टुकड़ी के सौ लोग अपने घोड़ों पर सवार हो चुके थे। किसी किस्म की कोई गड़बड़ी न हो, इसका विचार करके दूरदर्शी पालियानित्स्या ने खास शहर और मजदूरों की बस्ती और स्टेशन के बीच सन्तरी तैनात करने का हुक्म दे दिया था। सड़क के सामने लेशचिन्स्की के बागीचे में एक मशीनगन लगा दी गई थी ताकि अगर मजदूर कुछ गड़बड़ी करें तो उनकी चोटली की बौछार की जा सके।

सारी तैयारियां पूरी हो जाने पर पालियानित्स्या और भी ज्यादा अपने घोड़ों पर सवार हुए।

पालियानित्स्या ने चलते-चलते कहा, "रुको, मैं तो भूल ही गया था। गोलुब के लिए विवाह का उपहार लाने को हमें दो गाड़ियां भी तो ले लेनी चाहिएं। हा: हा: हा: ! हमेशा ही की तरह लूट का पहला माल कमांडर साहब के लिए और पहली लड़की...हा: हा: हा:...उनके अनुचर के लिए—यानी मेरे लिए। समझे कि नहीं बुद्धूराम ?"

यह अन्तिम बात सलोमिगा को सम्बोधित करके कही गई थी जो अपनी पीली-पीली आंखों से उसे घूर रहा था।

"घबराओ मत, लड़कियों की कोई कमी न होगी, सबके लिए इन्तजाम हो जायगा।"

उन्होंने अपने घोड़ों को एड़ लगाई और घुड़सवारों के बेतरतीब गिरोह को लेकर आगे बढ़े।

कुहरा साफ हो गया था जब पालियानित्स्या ने एक दुमंजिले मकान के सामने अपना घोड़ा रोका। मकान पर एक जंग-लगा साइन-बोर्ड लटक रहा था : "फुक्स, कपड़े वाला।"

उसकी पतली-पतली टांगों वाली, भूरे रंग की घोड़ी गली में लगे हुए पत्थरों पर पैर पटकने लगी।

पालियानित्स्या ने घोड़ी पर से नीचे कूदते हुए कहा, "अच्छा तो अब यहीं से हम शुरू करेंगे, खुदा हाफिज।"

अपने चारों तरफ घिरते हुए सिपाहियों की भीड़ को मुखातिब करते हुए उसने कहा, "अपने घोड़ों से उतरो, दोस्तो ! अब खेल शुरू हो रहा है। मैं पहले ही तुमको बतला देना चाहता हूं कि मैं नहीं चाहता कि अभी सिर-विर फोड़े जायें, उसका भी वक्त आयेगा। जहां तक लड़कियों की बात है, अगर मुमकिन हो तो शाम तक सब्र करो।"

एक आदमी ने अपने मजबूत दांत दिखलाते हुए आपत्ति की :

"और अगर हुजूर खोरूंजो, यह चीज दोनों की रजामन्दी से हो तब ?"

बड़े जोर का कहकहा पड़ा। पालियानित्स्या ने प्रशंसा और समर्थन की दृष्टि से उस आदमी को देखा जिसने यह बात कही थी।

"वह बात अलग है—रजामन्द हों तब फिर क्या बात है ? तब फिर कैसा रुकना-रुकाना ! इस चीज को कोई मना नहीं कर सकता है !"

पालियानित्स्या ने आगे बढ़कर दूकान के बन्द दरवाजे पर जोर से ठोकर लगाई। रंग था दरवाजे के मोटे-मोटे मजबूत ओक के पल्ले हिले तक नहीं।

सहचर पालि शुरू करने के लिए यह जगह ठीक न थी। पालियानित्स्या घूम कर ...नित्स्या घर के दरवाजे की ओर बढ़ा। आगे बढ़ते हुए उसने तलवार को अपने तुन्दी का सहारा दिया। सलोमिगा उसके पीछे-पीछे था।

घर के अन्दर के लोगों ने बाहर पक्की सड़क पर घोड़ों की टाप की आवाज सुनी थी और जब यह आवाज दूकान के सामने आकर रुकी और सिपाहियों की आवाजें दीवार को भेद कर अन्दर पहुंचीं, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके दिल की धड़कन रुक गई हो और उनका शरीर अकड़ कर रह गया हो।

अमीर फुक्स एक रोज पहले ही अपनी बीवी और लड़कियों को लेकर शहर के बाहर चला गया था। केवल अपनी नौकरानी रीवा को जायदाद की देखभाल के लिए वह पीछे छोड़ गया था। रीवा बहुत सीधी-सादी, उन्नीस साल की भीरु-सी लड़की थी। यह देख कर कि वह उस सूने मकान में अकेले रहने से डर रही है, फुक्स ने उससे कहा था कि जब तक वे लोग लौट न आवें, तब तक के लिए वह अपने बूढ़े बाप और मां को अपने साथ रहने के लिए बुला ले।

रीवा ने जब डरते-डरते इसका प्रतिवाद करने की कोशिश की तो उस चालाक व्यापारी ने उसके आश्वासन के लिए कहा था कि शायद बहुत करके मारकाट होगी ही नहीं, क्योंकि आखिरकार भिखमंगों से उन्हें मिलेगा क्या? और उसने रीवा से यह भी वादा किया कि लौटने पर वह उसकी पोशाक के लिए बहुत अच्छा कपड़ा देगा।

इस वक्त वे तीनों खड़े हुए डर के मारे कांप रहे थे। कोई आस न थी, मगर तब भी वे आस लगाये थे कि शायद घुड़सवार आगे निकल जायें; शायद समझने में उनसे भूल हुई थी, शायद यह उनका भ्रम था कि घोड़े उनके मकान के सामने रुके हैं। मगर दूकान के दरवाजे पर जो ठोकर लगी थी, उसकी भारी गूंज ने उनकी उम्मीदों को चूर कर दिया।

बूढ़ा, चांदी जैसे बालों वाला पेईसाख, दरवाजे के पास खड़ा था। उसकी नीली-नीली आंखें सहमे हुए बच्चे की तरह माथे पर जा लगी थीं। एक कट्टर आस्तिक की तरह पूरे भावावेश से वह सर्वशक्तिमान जेहोवा की बुदबुदा कर प्रार्थना कर रहा था। वह भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि इस घर को संकट से बचा लो और उसके पास खड़ी हुई उसकी बूढ़ी स्त्री ने थोड़ी देर को, पास आते हुए कदमों की आहट को नहीं सुना क्योंकि वह प्रार्थना के स्वर में खो गई थी।

रीवा भाग कर सबसे दूर वाले कमरे में चली गई थी और वहां ओक की लकड़ी के बड़े साइड-बोर्ड के पीछे छिप गई थी।

दरवाजे पर एक जबर्दस्त, दरवाजे को जैसे तोड़ देने वाली चोट पड़ी, जिससे बूढ़े-बुढ़िया कांप गये।

"दरवाजा खोलो!" और फिर दूसरी चोट, पहले से भी ज्यादा प्रबल, दरवाजे पर पड़ी और फिर गालियों की आवाजें सुनाई दीं।

मगर वे जो अन्दर थे, डर के मारे सुन्न पड़ गये थे और दरवाजे की कुंडी खोलने के लिए हाथ नहीं उठा सके।

बाहर, दरवाजे पर राइफिल के कुन्दे बरस रहे थे। आखिरकार दरवाजा टूट गया।

मकान हथियारों से लैस आदमियों से भर गया। ये लोग मकान के कोने-कोने को छानने लगे। राइफिल के कुन्दे की एक चोट से दूकान के भीतर खुलने वाला दरवाजा टूट गया और फिर बाहर के दरवाजे की कुंडियां भीतर से खोल दी गईं।

और फिर लूटपाट शुरू हुई।

जब गाड़ियां कपड़े की पेटियों, जूतों और लूट के दूसरे सामान से अच्छी तरह भर गईं, तो सलोमिगा इनको लेकर गोलुब के क्वार्टर की तरफ रवाना हो गया। वहां से लौटने पर उसने घर के अन्दर से एक डरी हुई चीख निकलती सुनी।

पालियानित्स्या ने अपने आदमियों को दूकान लूटने के लिए छोड़ दिया था और खुद मालिक-मकान के घर के भीतर घुस गया था। वहां पर उसने उन बूढ़े-बुढ़िया और उनकी लड़की को खड़े पाया। उनको अपनी हरी-हरी, बिल्ली जैसी आंखों से देखते हुए उसने बूढ़े दम्पति को डपट कर आदेश दिया :

"तुम लोग यहां से बाहर निकल जाओ!"

मां-बाप दोनों में से कोई भी न हिला।

पालियानित्स्या एक कदम आगे बढ़ा और धीरे-धीरे म्यान से अपनी तलवार निकाली।

"मां!" वह लड़की दिल को हिला देने वाली आवाज में चिल्लाई। सलोमिगा ने इसी चीख को सुना था।

पालियानित्स्या अपने आदमियों की तरफ मुड़ते हुए, जो इस चीख को सुन कर वहां इकट्ठा हो गए थे, उन दोनों बुड्ढ़ों की तरफ इशारा करके भौंक कर बोला :

"इन्हें बाहर फेंक दो!" जब यह काम पूरा हो गया तो उसने वहां उपस्थित सलोमिगा से कहा, "तुम यहां दरवाजे पर जरा निगरानी रखो तब तक मैं उस छोकरी से दो बातें कर लूं!"

लड़की दुबारा चिल्लाई। बूढ़ा पेइसाख कमरे के दरवाजे की तरफ लपका। मगर उसकी छाती पर एक जबर्दस्त चोट लगी और वह पीछे की दीवार से जा टकराया। दर्द से उसका दम घुट रहा था। बूढ़ी मां तोइबा, जो सदा इतनी शान्त और नम्र रहती थी, अब अपने बच्चे के लिए लड़ती हुई मादा भेड़िये की तरह सलोमिगा पर झपटी।

"मुझे अन्दर जाने दो ! तुम मेरी लड़की को क्या कर रहे हो ?"

वह दरवाजे के पास पहुंचने के लिए जोर लगा रही थी और सलोमिगा अपनी सारी कोशिश के बावजूद अपने कोट को उसकी बूढ़ी उंगलियों की गिरफ्त से छुड़ा नहीं पा रहा था।

पेइसाख, जो अपनी चोट और दर्द के बाद अब तक होश में आ गया था, तोइबा की मदद के लिए आया।

"हमें अन्दर जाने दो ! अन्दर जाने दो ! हाय, मेरी बेटी !"

बूढ़े दम्पति ने अपनी मिली-जुली कोशिश से सलोमिगा को किसी तरह दरवाजे से दूर ढकेल दिया था। सलोमिगा ने गुस्से में आकर झटके के साथ अपना रिवाल्वर कमरबन्द से निकाला और उसके लोहे के हत्थे से बूढ़े के सफेद सिर पर जोर से चोट की। पेइसाख वहीं फर्श पर ढेर हो गया।

कमरे के अन्दर रीवा चीख रही थी।

जब तोइबा घसीट कर घर के बाहर की गई, उसका दिमाग काबू से बाहर था और उसकी पागलों जैसी चीखों और मदद की पुकारों से सड़क गूंज रही थी।

घर के अन्दर पूर्ण शान्ति थी।

पालियानित्स्या कमरे के बाहर आया। सलोमिगा को बिना देखे, जिसका हाथ दरवाजे के हैण्डिल पर जा चुका था, पालियानित्स्या ने उसको अन्दर जाने से रोका।

"बेकार है—मैंने तकिये से उसका मुंह बन्द करने की कोशिश की तो उसका दम घुट गया।" पेइसाख के जिस्म पर पैर रखते हुए उसको किसी स्याह चिपचिपी चीज का एहसास हुआ। यह और कुछ नहीं, पेइसाख का खून था।

बाहर जाते हुए उसने बुदबुदा कर कहा, "बोहनी ठीक नहीं हुई।"

दूसरे भी बिना एक शब्द बोले उसके पीछे-पीछे बाहर निकले और फर्श और सीढ़ियों पर अपने खून में डूबे पैरों की छाप छोड़ते गए।

शहर में लूट-पाट पूरे जोर पर थी। उसी में कभी-कभी लुटेरे माल के बंटवारे को लेकर जंगली जानवरों की तरह आपस में लड़ पड़ते और यहां-वहां तलवारें चमक उठतीं। घूंसे तो सभी जगह धड़ल्ले से चल रहे थे। बियर के सेलून में से पच्चीस गैलन वाले पीपे बाहर लुढ़का कर सड़क की पटरी पर इकट्ठे किये जा रहे थे।

फिर लुटेरों ने यहूदियों के घरों में घुसना शुरू किया।

कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। वे तमाम कमरों में गये, जल्दी-जल्दी एक-एक कोने को उलटा-पल्टा और लूट का माल लाद कर चलते बने। अपने पीछे वे

कुछ छोड़ गये थे तो कपड़ों के बिखरे हुए ढेर और तलवार की नोक से चिरे हुए गद्दों और तकियों के अन्दर से निकले हुए चिड़ियों के पर। पहले रोज तो सिर्फ दो जानें गईं : रीवा की और उसके बाप की; मगर आनेवाली रात अपने साथ मौत का अनिवार्य आतंक लेकर आई।

शाम तक भिश्तियों और भंगियों की जमात नशे में धुत पड़ी थी। पेतल्युरा के पागल सिपाही रात का इन्तजार कर रहे थे।

अंधेरे ने उनके रहे-सहे बंधन भी खोल दिये। घुप्प अंधेरे में आदमी को खत्म करना आसान होता है; सियार भी अंधेरे के घंटों को ज्यादा पसन्द करते हैं।

शायद ही कोई कभी इन दो भयानक रातों और तीन दिनों को भूल सके। इस बीच न जाने कितनी जिन्दगियां पिसीं और लहू-लुहान हुईं, इन खूनी घड़ियों में न जाने कितने जवान सिरों के बाल सफेद हुए, न जाने तीखे दर्द के कितने आंसू बहे ! कहना मुश्किल है कि वे जो बच गये थे ज्यादा सौभाग्यशाली थे—वे जो जिन्दा तो बचे थे मगर जिनकी आत्मा लुट गई थी, वीरान हो गई थी, जिन्हें अपने अपमान और लुटी हुई इज्जत की शर्म की दारुण यंत्रणा खाये जा रही थी; जिन्हें अवर्णनीय दुःख कीड़े की तरह कुतर रहा था, दुःख अपने उन आत्मीयों और प्रियजनों के लिए जो अब कभी नहीं लौटेंगे। इस सबसे उदासीन, नौजवान लड़कियों के घायल, सताये हुए, टूटे हुए शरीर यंत्रणा की अनेकानेक मुद्राओं में बांहें पीछे की तरफ फेंके, संकरी गलियों में पड़े थे।

सिर्फ एक जगह, नदी के सामने वाले मकान में जहां नाउम लोहार रहता था, उन गीदड़ों को, जो उसकी नौजवान बीवी सारा पर झपटे थे, करारा जबाव मिला। वह लुहार चौबीस साल का मजबूत नौजवान था और उसकी लोहे जैसी मांस-पेशियां वैसी ही थीं जैसी कि अपनी जीविका के लिए भारी हथौड़ा चलाने वाले किसी आदमी की होनी चाहिएं। उस लोहार ने अपनी बीवी उनके हाथ नहीं पड़ने दी।

उस छोटी-सी झोंपड़ी में संघर्ष हुआ तो थोड़ी ही देर मगर बहुत भयानक। दो पेतल्युरा सिपाहियों का सिर सड़े हुए खरबूजों की तरह भुर्ता हो गया था। निराशा के भयानक क्रोध में वह लुहार दो जानों के लिए सिर पर कफन बांध कर लड़ रहा था। बड़ी देर तक नदी किनारे से राइफिलें चलने की आवाज आती रही। खतरे का आभास पाकर तमाम लुटेरे वहां आ गये थे। जब उस लोहार के पास सिर्फ एक गोली बच रही, तो उसने अपनी बीवी को गोली मार दी और सचमुच उस पर एहसान किया, फिर खुद संगीन हाथ में लेकर अपनी मौत का सामना करने बाहर निकल पड़ा। गोलियों की एक बौछार

आई और उसका मजबूत जिस्म अपने सामने वाले दरवाजे के बाहर धरती पर ढेर हो गया।

आसपास के गांवों के धनी समृद्ध किसान अपनी घोड़ा-गाड़ियों में, जिन्हें अच्छे तगड़े घोड़े खींच रहे थे, शहर के अन्दर आये। उन्होंने अपनी गाड़ियों में जो कुछ अच्छा लगा, लादा और गोलुब की सेना में काम करने वाले अपने बेटों और सम्बंधियों के पहरे में जल्दी-जल्दी घर चले ताकि एक-दो फेरे और कर सकें।

सर्योजा ब्रुजाक जिसने अपने बाप के साथ प्रेस के आधे साथियों को तहखाने में और ऊपर वाली कोठरी में छिपाया था, बागीचा पार करके घर आ रहा था जब उसने एक आदमी को लम्बा-सा, पैबन्द लगा कोट पहने, जोरों से बांहें हिलाते सड़क पर भागते देखा।

यह एक बूढ़ा यहूदी था और इस नंगे-सिर हांफते हुए आदमी के पीछे-पीछे, जिसके चेहरे को डर के मारे लकवा-सा मार गया था, एक पेतल्युरा सिपाही अपने भूरे रंग के घोड़े पर सवार सरपट चला आ रहा था। उनके बीच का फासला तेजी से कम होता जा रहा था, यहां तक कि घुड़सवार अपने शिकार को तलवार से काट देने के लिए अपनी काठी से आगे की ओर झुका। अपने पीछे घोड़े की टापें सुन कर बूढ़े ने जैसे चोट रोकने के लिए हाथ ऊपर को उठाया। उसी वक्त सर्योजा कूद कर सड़क पर आ गया और उस बूढ़े को बचाने के लिए उसने खुद को घोड़े के आगे डाल दिया।

"उसे छोड़ दे! कुत्ता, लुटेरा कहीं का!"

घुड़सवार ने नीचे गिरती हुई तलवार को रोकने की कोई कोशिश न की और तलवार उल्टी तरफ से लड़के के सुनहरे बालों वाले सिर पर गिरी।

पांच

बोल्शेविक फौजें "चीफ ऐटमन" पेतल्युरा की टुकड़ियों पर जबर्दस्त दबाव डाल रही थीं और इसलिए गोलुब की रेजिमेन्ट को मोर्चे पर बुला लिया गया। शहर में सिर्फ कुछ रियरगार्ड टुकड़ियां और कमांडैण्ट के कुछ खास अपने सिपाही रह गये।

लोगों में हरकत पैदा हुई। इस अस्थायी शान्ति का फायदा उठा कर यहूदी आबादी ने अपने मुर्दा लोगों को दफना दिया और यहूदी बस्ती की छोटी-छोटी झोंपड़ियों में जिन्दगी एक बार फिर लौट आई।

खामोश शामों को गोली-गोले चलने की अस्पष्ट आवाज दूर से सुनाई पड़ती थी; कहीं पास में ही लड़ाई चल रही थी।

स्टेशन पर रेलवे मजदूर अपनी नौकरियों को छोड़ कर काम की तलाश में गांवों की तरफ जा रहे थे।

हाई स्कूल बंद कर दिया गया था।

शहर में मार्शल-लॉ जारी कर दिया गया था।

यह एक काली बीभत्स डरावनी रात थी, ऐसी रात जब चाहे जितना जोर डालो आंखें अंधेरे को चीर नहीं पातीं, ऐसे में आदमी अंधेरे में राह टटोलता हुआ घूमता है और हर वक्त उसे डर बना रहता है कि वह किसी गड्ढे में जा गिरेगा और उसका काम तमाम हो जायगा।

भद्र लोग जानते हैं कि ऐसे समय अंधेरे में घर पर बैठने में ही खैरियत है! अगर उसका बस चले तो भद्र नागरिक घर में लैम्प भी न जलायें क्योंकि रोशनी से अनचाहे अतिथि खिंचकर आ सकते हैं। अंधेरा ही अच्छा है, हिफाजत तो रहती है। होने को ऐसे भी लोग होते हैं जो हमेशा अस्थिर रहते हैं—उनका जी चाहे तो वे बाहर निकलें, मगर भद्र नागरिक को इससे बहस नहीं। वह खुद बाहर जाने का खतरा नहीं उठायेगा—किसी कीमत पर नहीं।

यह ऐसी ही एक रात थी। मगर फिर भी, एक आदमी सड़क पर चला जा रहा था।

कोर्चागिन के मकान पर पहुंच कर उसने सावधानी से खिड़की पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं मिला। उसने दुबारा दस्तक दी—इस बार ज्यादा जोर से और कई बार।

पावेल सपना देख रहा था कि एक अजीब सा प्राणी, जो आदमी तो किसी तरह नहीं है, उसके ऊपर मशीनगन का निशाना साध रहा है; वह भाग जाना चाहता था, मगर भाग कर जाने के लिए कोई जगह न थी और मशीनगन बहुत भयानक स्वर में कड़कड़ा रही थी।

वह जागा तो उसने खिड़की को खड़खड़ाते सुना। कोई दस्तक दे रहा था।

पावेल कूद कर बिस्तर से उतरा और यह देखने के लिए कि कौन है, खिड़की के पास पहुंचा, मगर उसे वहां एक धुंधली, काली आकृति के अलावा और कुछ न दिखाई दिया।

वह घर में बिल्कुल अकेला था। उसकी मां उसकी सबसे बड़ी बहन के यहां चली गई थी, जिसका पति शकर के कारखाने में मैकेनिक था। आर्तेम

पास के गांव में लुहार का काम कर रहा था; अपनी जीविका के लिए हथौड़ा चला रहा था।

मगर फिर भी आर्तेम के अलावा दूसरा हो भी कौन सकता है।

पावेल ने खिड़की खोलने का निश्चय किया।

उसने अंधेरे में कहा, "कौन है ?"

खिड़की के बाहर कुछ गति हुई और एक रुंधी हुई आवाज ने जवाब दिया :

"मैं हूं जुखराई।"

खिड़की की देहली पर दो हाथ रखे हुए थे और फिर फियोदोर का सिर ऊपर उठा और पावेल के चेहरे की बराबरी में आ गया।

जुखराई ने फुसफुसा कर कहा, "मैं तुम्हारे साथ रात गुजारने आया हूं। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं, कामरेड ?"

पावेल ने आन्तरिक स्नेह से जबाव दिया, "कैसी बात करते हो! तुम जानते हो कि यहां पर सदा तुम्हारा स्वागत है। कूद कर अन्दर आ जाओ।"

फियोदोर ने थोड़ी सी खुली हुई खिड़की में से सुकड़ कर अपने विशाल शरीर को अन्दर किया।

उसने खिड़की तो वन्द कर दी, मगर तत्काल वहां से हटा नहीं। वह गौर से सुनता खड़ा रहा और जब चांद बादलों के पीछे से बाहर आया और सड़क दिखने लगी तो उसने बहुत ध्यान से सड़क को देखा। फिर वह पावेल की तरफ मुड़ा और बोला :

"तुम्हारी मां को हम लोग न जगायेंगे, है न ?"

पावेल ने उसे बतलाया कि घर में उसको छोड़ कर और कोई नहीं है। यह सुन कर मल्लाह को और इतमीनान हुआ और वह पहले से कुछ ऊंची आवाज में बोलने लगा।

"अब वे हत्यारे सचमुच जी-जान से मेरे पीछे लगे हैं, दोस्त! स्टेशन पर जो कुछ हुआ था, उसी के बाद से सब मेरे पीछे पड़े हैं। अगर कहीं हमारे लोगों ने जरा और हिम्मत दिखलाई होती तो हमने कत्लेआम के दौरान में उन भूरे कोट वालों को अच्छा मजा चखाया होता। मगर असल बात यह है कि लोग अभी आग में कूदने के लिए तैयार नहीं हैं। इसीलिए, इस सबका कोई नतीजा नहीं निकला। अब सब मेरी तलाश में हैं और मेरे लिए दो बार जाल डाल चुके हैं—आज तो मैं बाल-बाल बचा। पीछे के रास्ते से मैं घर जा रहा था और पीछे मुड़ कर देखने के लिए शेड पर रुका ही था कि एक पेड़ के पीछे से एक संगीन निकली हुई मुझे दिखाई दी। मैं लौट पड़ा

और सीधे तुम्हारे यहां आया। अगर तुम्हें कोई एतराज न हो तो कुछ दिन के लिए मैं यहीं लंगर डाल दूं। ठीक है न, दोस्त ? बहुत कच्छा।"

अभी भी जुखराई की सांस भारी चल रही थी। उसने अपने कीचड़ में सने जूते उतारने शुरू किए।

पावेल खुश था कि जुखराई आ गया है। पिछले कई दिनों से बिजली घर काम नहीं कर रहा था और पावेल को अपने वीरान घर में बहुत सूना-सूना लगता था।

दोनों सोने चले गये। पावेल तो फौरन सो गया, मगर फियोदोर बहुत देर तक बिस्तर में लेटा-लेटा सिगरेट पीता रहा। फिर वह उठा और नंगे पैर, पंजों के बल, खिड़की तक गया और बड़ी देर तक सड़क को देखता रहा। आखिरकार थकान से चूर होकर वह लेट गया और सो गया, मगर उसका हाथ अपने भारी "कोल्ट" पिस्तौल के हत्थे पर ही था जिसे उसने अपने तकिये के नीचे रख लिया था और जिसको उसके शरीर की गरमी मिल रही थी।

जुखराई का उस रात का अप्रत्याशित आगमन और फिर वे आठ दिन जो उसने जुखराई के संग बिताये थे, उन्होंने पावेल की सारी जिन्दगी की धारा पर असर डाला। उस मल्लाह ने उसे सबसे पहले उन अनेक चीजों की अन्तर्दृष्टि दी जो नई थी, गतिशील थी, महत्वपूर्ण थी।

जुखराई के लिए दो बार जो घातें लगाई गई थीं, उन्होंने जुखराई को घर में छिप कर बैठने के लिए मजबूर किया। उसने इस तरह मजबूर होकर बेकार बैठे रहने की स्थिति का सदुपयोग करते हुए, पीले-और-नीले झंडे वाले लुटेरों के खिलाफ, जो सारे इलाके का गला दबोचे हुए थे, अपना सारा गुस्सा और जलती हुई नफरत उत्सुक पावेल के मन में उंडेल दी।

जुखराई जो जबान बोलता था वह सीधी थी, साफ थी और आंखों के सामने चित्र खड़ा कर देती थी। उसके मन में कोई संशय नहीं थे, उसे अपनी राह अपने सामने साफ-साफ फैली दिखाई पड़ती थी और पावेल की समझ में यह बात आ गई कि यह सब जो बड़े-बड़े नामोंवाली बीसों राजनीतिक पार्टियां हैं—सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी, सोशल डेमोक्रैट, पोलिश सोशलिस्ट—सब असल में मजदूरों की जानी दुश्मन ही हैं और अमीरों के खिलाफ मजबूती से लड़ने वाली क्रान्तिकारी पार्टी केवल बोल्शेविक पार्टी है।

पहले पावेल का दिमाग इन सब चीजों के बारे में बुरी तरह उलझा हुआ था।

और इस तरह इस पक्के, मजबूत दिल वाले बाल्टिक सागर के मल्लाह ने,

जो समुन्दरी हवाओं पर पला था, जो पक्का बोल्शेविक और १९१५ से बोल्शेविक पार्टी का सदस्य था, पावेल को जीवन के कटु सत्य बतलाये और भट्ठी झोंकने वाला लड़का पावेल स्तब्ध होकर सब बातें सुनता रहा।

जुखराई ने कहा, "मैं जब तुम्हारी उम्र का था, दोस्त, तो मैं भी तुम्हारी ही तरह था। मेरी समझ में ही नहीं आता था कि मैं अपनी शक्ति का क्या करूं, मैं भी एक बेचैन नौजवान था, हर वक्त सरकशी के लिए तैयार। मैं गरीबी ही में पला और बढ़ा। कभी-कभी शहर के रईसों के लाड़ से बिगड़े हुए, मोटे-ताजे लड़कों को देख कर मेरी आंखों में खून उतर आता था। अक्सर मैं उनकी खूब अच्छी तरह मरम्मत करता। मगर इसका नतीजा कुछ और न निकलता सिवा इसके कि घर आने पर पिताजी कस कर मेरी मरम्मत करते। इस तरह से अकेले लड़ने से दुनिया थोड़े ही बदली जा सकती है। तुममें पावलूशा, मजदूर जमात के हक में लड़ने वाले सिपाही के तमाम गुण हैं, बस तुम अभी बहुत छोटे हो और वर्ग-संघर्ष के बारे में ज्यादा नहीं जानते। मगर दोस्त, मैं तुमको ठीक रास्ते पर लगा दूंगा क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम अच्छे लड़ाके निकलोगे। मेरी उन लोगों से नहीं बनती जो अपने तुच्छ सुख के पीछे पागल रहते हैं और बस आराम से दिन गुजार देना चाहते हैं। इस वक्त सारी दुनिया में आग लगी हुई है। अब तक के गुलामों ने सिर उठाया है और पुरानी जिन्दगी का बेड़ा गर्क करना ही होगा। मगर इसके लिए मजबूत इरादे के लोगों की जरूरत है, कमजोर लड़कियों-जैसों की नहीं जो लड़ाई शुरू होने पर झींगुरों की तरह अपने बिलों में घुस जायेंगे। हमें चाहिए मजबूत लोग जो निर्मम होकर लड़ सकें।"

उसकी बंधी हुई मुट्ठी जोर से मेज पर गिरी।

वह उठ खड़ा हुआ। उसकी त्योरियों में बल पड़ गये और वह जेब में खूब अन्दर तक हाथ डाले कमरे में चहलकदमी करने लगा।

अपनी बेकारी उसे खल रही थी। उसे इस बात का बड़ा अफसोस था कि वह शहर में रुक गया था। उसे यकीन हो गया था कि शहर में अब और रुकने में कोई तुक नहीं है और उसने पक्का इरादा कर लिया था कि लाल टुकड़ियों से जा मिलने के लिए वह लड़ाई के मोर्चे को पार करेगा।

तय पाया गया था कि नौ पार्टी मेम्बरों का दल काम को जारी रखने के लिए शहर में रहेगा।

"मेरे बगैर उनका काम चल जायगा। मैं अब और बेकार नहीं बैठ सकता। यों ही मैं दस महीने बर्बाद कर चुका हूं," जुखराई ने खीझते हुए सोचा।

"सच बतलाओ फियोदोर, तुम क्या हो?" पावेल ने एक बार उससे पूछा।

जुखराई उठ खड़ा हुआ और हाथ जेब के अन्दर डाल लिये। इस सवाल का मतलब एकाएक उसकी समझ में नहीं आया।

"तुम नहीं जानते ?"

पावेल ने मद्धिम आवाज में कहा, "मेरे खयाल से तुम बोल्शेविक या कम्युनिस्ट हो।"

जुखराई ठठाकर हंस पड़ा और चुस्त, धारीदार जर्सी से ढंकी अपनी खूब चौड़ी छाती पर हाथ मारा।

"तुमने ठीक कहा, दोस्त! यह बात उतनी ही ठीक है जितनी यह कि बोल्शेविक और कम्युनिस्ट एक ही होते हैं।" फिर वह एकाएक गंभीर हो गया। "लेकिन तुमने जब यह बात समझ ली है तो इसे अपने ही तक रखना। अगर तुम यह नहीं चाहते कि मैं पकड़ा जाऊं तो इसे किसी से या किसी जगह मत कहना। समझे ?"

पावेल ने दृढ़ता से जबाव दिया, "हां, मैं समझ गया।"

बाहर सहन में आवाजें सुनाई दीं और किसी ने बिना पहले दस्तक दिये धक्का देकर दरवाजे को खोला। जुखराई का हाथ झट उसकी जेब में चला गया, मगर फिर बाहर आ गया जब उसने कमजोर और पीले सर्गेई ब्रुजाक को सिर में पट्टी बांधे कमरे में दाखिल होते देखा। ब्रुजाक के पीछे-पीछे वालिया और क्लिम्का थे।

सर्गेई ने पावेल से हाथ मिलाते हुए मुस्करा कर कहा, "कहो प्यारे, क्या हाल-चाल हैं ? हम तीनों ने तय किया कि चलें, तुमसे मिल आयें। वालिया मुझे अकेले बाहर निकलने देने के लिए तैयार न थी और क्लिम्का को वालिया के अकेले निकलने से डर लगता है। क्लिम्का का सिर भले लाल हो, मगर वह जानता है कि उसे क्या करना चाहिए!"

वालिया ने खिलण्डरेपन से सर्गेई के मुंह पर हाथ रख दिया और हंसते हुए बोली, "किस कदर बातूनी है! आज इसने क्लिम्का को जरा चैन नहीं लेने दिया।"

क्लिम्का भी खुश होकर मुस्कराया और उसके सफेद दांतों की पांत दिखाई दी।

"बीमार आदमी के साथ और किया ही क्या जा सकता है ? देखते हो न, दिमाग में जरा खलल है!"

सब हंसने लगे।

सर्गेई, जो तलवार की चोट के असर से अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ था, पावेल के बिस्तर पर बैठ गया और फिर सब नौजवान दिलचस्प बातचीत

में डूब गये। सर्गेई, जो आम तौर पर बड़ा खुशदिल और हंसोड़ था, आज चुप और बुझा-बुझा सा बैठा था। उसने पेतल्युरा सिपाही से अपनी मुठभेड़ की बात जुखराई को बतलाई।

जुखराई इन तीनों नौजवानों को जानता था क्योंकि वह कई बार ब्रुजाक के घर जा चुका था। उसे ये लड़के बहुत पसन्द थे; संघर्ष के भंवर में अभी उन्हें अपनी जगह नहीं मालूम थी, मगर अपने वर्ग की आकांक्षाएं उनमें अच्छी तरह व्यक्त थीं! उसने बहुत दिलचस्पी से उनके बयानों को सुना कि उन्होंने किस तरह यहूदी परिवारों को मार-काट से बचाने के लिए उन्हें शरण देने में मदद पहुंचाई। उस शाम को जुखराई ने उन लड़कों को बोल्शेविकों और लेनिन के बारे में बहुत कुछ बतलाया और इस तरह होने वाली घटनाओं को समझने में उन्हें मदद पहुंचाई।

पावेल के अतिथि काफी वक्त गये विदा हुए।

जुखराई हर शाम बाहर निकल जाता था और बहुत रात गये लौटता था। शहर छोड़ने के पहले उसे अपने उन साथियों के साथ बहुत सी बातों का फैसला करना था जो शहर में रुकने वाले थे, यानी यह कि क्या काम करना होगा और कैसे करना होगा।

इस खास रात को जुखराई वापस नहीं आया। पावेल जब सबेरे उठा तो उसने एक झलक में ही देख लिया कि मल्लाह के बिस्तर पर रात में कोई सोया नहीं था।

पावेल के मन में अस्पष्ट-सी आशंका जगी। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और घर के बाहर निकल गया। दरवाजे में ताला लगाकर और चाभी को हमेशा की जगह रख कर वह क्लिम्का के घर गया। उसे उम्मीद थी कि क्लिम्का को फियोदोर की कुछ-न-कुछ खबर जरूर होगी। क्लिम्का की मां, जो एक मोटी-सी स्त्री थी और जिसके चौड़े चेहरे पर चेचक के गहरे-गहरे दाग थे, कपड़े धो रही थी। पावेल ने उससे पूछा: क्या उसे मालूम है कि फियोदोर कहां है?

क्लिम्का की मां ने चिड़चिड़ाकर जवाब दिया, "मुझे क्या और कोई काम ही नहीं है कि बस तुम्हारे फियोदोर पर निगाह रखा करूं! यह सब उसी के कारण है—नाश हो उसका—उस जोजलिखा ने घर को उलट-पुलट कर रख दिया। उससे तुम्हें क्या काम है? अजीब ही आदमी है, अगर मेरी राय पूछो तो क्लिम्का और तुम और बाकी सब, तुम सभी एक से हो..." वह गुस्से के साथ फिर कपड़े धोने में लग गई।

क्लिम्का की मां बदमिजाज औरत थी जो काट खाने दौड़ती थी...

विलम्का के घर से पावेल सर्गेई के यहां गया। वहां भी उसने अपने मन के डर को सामने रखा।

वालिया बोली, "तुम इतने परेशान क्यों हो? हो सकता है वह किसी दोस्त के यहां रुक गये हों।" मगर उसके शब्दों में स्वयं ही विश्वास की कमी थी।

पावेल बहुत उद्विग्न हो रहा था और ब्रुजाक के घर ज्यादा देर तक ठहरना उसके लिए मुमकिन न था। वे लोग उसे रोकते ही रहे कि खाना खाकर जाओ, मगर वह चला गया।

वहां से वह सीधे घर लौटा, इस उम्मीद में कि यहां जुखराई मिल जायगा।

दरवाजे में ताला बन्द था। पावेल कुछ देर बाहर खड़ा रहा। उसका दिल भारी था। उस सूने वीरान घर में जाने के खयाल से ही उसे तकलीफ होती थी।

कुछ मिनट तक वह गहरे सोच में डूबा हुआ हाते में खड़ा रहा। फिर एकाएक आवेग से प्रेरित होकर शेड के अन्दर चला गया। वह छप्पर पर चढ़ा और उसके नीचे से मकड़ी के जालों को अलग करते हुए उस गुप्त जगह से चीथड़ों में लिपटा हुआ भारी "मानलिकर" रिवाल्वर निकाला।

वह शेड से बाहर आया और स्टेशन की तरफ चला। जेब में रखे हुए रिवाल्वर के स्पर्श से उसे एक अजीब सा आनन्द मिल रहा था।

मगर स्टेशन पर जुखराई की कोई खबर न मिली। लौटते हुए जंगलों के हाकिम के बागीचे के पास पहुंच कर, जो कि अब उसका बहुत परिचित था, उसके कदम धीमे हो गये। न जाने किस उम्मीद से उसने आंख उठा कर घर की खिड़कियों को देखा, मगर यह घर भी बागीचे की ही तरह बेजान था। बागीचा पार कर चुकने पर उसने पीछे मुड़ कर उसके रास्तों पर निगाह डाली। रास्ते पिछले साल की झड़ी हुई पत्तियों से ढंके हुए थे। वह जगह उजड़ी हुई और उपेक्षित दिखलाई देती थी—किसी परिश्रमी हाथ की कोई छाप यहां पर न थी। उस बड़े से पुराने मकान की मृतवत नीरवता ने पावेल को और भी उदास बना दिया।

तोनिया से उसका आखिरी झगड़ा सबसे तेज रहा था। करीब एक महीने पहले यों ही अप्रत्याशित रूप से सब कुछ हो गया था।

शहर की तरफ धीरे-धीरे लौटते हुए उसने अपने हाथ जेब में डाल लिये। और उस वक्त पावेल को झगड़े की तमाम बातें याद आने लगीं।

सड़क पर अचानक उनकी मुलाकात हो गई थी और तोनिया ने उसे अपने घर आने की दावत दी थी।

"पिताजी और मां बोलशान्स्की के यहां एक सालगिरह की पार्टी में जा रहे हैं और मैं अकेली रहूंगी। तुम क्यों नहीं आ जाते, पावलूशा ? मेरे पास एक बहुत रोचक किताब है जिसे हम लोग साथ-साथ पढ़ेंगे — लिओनिद आन्द्रीएव की **साश्का जिगुलिओव**। मैं उसे खतम कर चुकी हूं, मगर तुम्हारे संग बैठ कर दुबारा पढ़ना चाहती हूं। बड़ी अच्छी शाम रहेगी। आओगे ?"

सुनहरे बालों पर पहनी हुई सफेद टोपी के नीचे से उसकी बड़ी-बड़ी पूरी खुली आंखें आतुरता से उसकी ओर देख रही थीं।

"मैं आऊंगा।"

इसके बाद वे अलग हो गये।

पावेल भाग कर अपनी मशीनों के पास गया और इस खयाल से ही कि उसकी एक पूरी शाम तोनिया के संग गुजरेगी, आतिशदान की लपटें और तेजी से जलने लगीं और जलती हुई लकड़ी के कुन्दे हमेशा से ज्यादा मस्ती से चिटखने लगे।

उस समय जब पावेल ने तोनिया के मकान के दरवाजे पर दस्तक दी और तोनिया ने दरवाजा खोला, तो पावेल ने उसे कुछ हैरान और परेशान पाया।

तोनिया ने कहा, "मेरे यहां आज मिलने वाले आये हुए हैं। मुझे उनकी उम्मीद नहीं थी, पावलूशा। मगर तुम तो आओ ही।"

पावेल लौट जाना चाहता था और दरवाजे की तरफ मुड़ा।

तोनिया ने उसकी बांह पकड़ते हुए कहा, "चलो न अन्दर। तुमको जानना उनके लिए अच्छा ही साबित होगा। और पावेल की कमर में बांह डाल कर तोनिया उसको खाने के कमरे से होकर अपने कमरे में ले गई।

कमरे में दाखिल होते हुए वह वहां पर बैठे लोगों की तरफ मुड़ी और मुस्कराई।

"मैं आप लोगों को अपने दोस्त पावेल कोर्चागिन से मिलाना चाहती हूं।"

कमरे के बीचोबीच उस छोटी सी मेज के इर्द-गिर्द तीन लोग बैठे थे: लिजा सुखार्को, एक खूबसूरत, मद्धिम रंग की हाई-स्कूल की छात्रा जिसका मुंह छोटा सा था और ओंठ खूबसूरत अन्दाज में जरा बाहर को निकले हुए थे, बाल खूबसूरती से संवारे हुए; और एक दुबला पतला नौजवान जो अच्छा सिला हुआ काले रंग का कोट पहने था, उसके बाल तेल से चमक रहे थे और उसकी भूरी आंखों में एक अजीब खालीपन का भाव था; और इन दोनों के बीच स्कूली यूनिफार्म की छैलों जैसी जाकेट पहने विक्टर लेशचिन्स्की बैठा था। तोनिया ने दरवाजा खोला तो पावेल ने सबसे पहले इसी को देखा था।

लेशचिन्स्की ने भी कोर्चागिन को फौरन पहचान लिया और उसकी खूबसूरत कमानीदार भवें कुछ अचरज के साथ उठीं।

कुछ देर तक पावेल दरवाजे पर खामोश खड़ा विक्टर को शत्रुता के भाव से देखता रहा और उसे छिपाने की भी उसने कोई कोशिश नहीं की। तोनिया ने इस भद्दी खामोशी को तोड़ने के खयाल से फौरन पावेल को अन्दर आने के लिए कहा और परिचय कराने के लिए लिजा की तरफ मुड़ी।

लिजा सुखार्को, जो आगन्तुक को बहुत दिलचस्पी से देख रही थी, अपनी कुर्सी से उठी।

मगर पावेल तेजी से घूम पड़ा और अंधेरे-अंधेरे से खाने के कमरे में होता हुआ सामने के दरवाजे की तरफ चल दिया। वह बरसाती तक पहुंचा था कि तोनिया ने जाकर उसका कंधा पकड़ लिया।

"तुम भागे क्यों जा रहे हो ? मैं खास तौर पर उनको तुमसे मिलाना चाहती थी।"

पावेल ने अपने कंधों पर से उसके हाथ अलग कर दिये और तेज स्वर में बोला :

"मैं नहीं चाहता कि उस काठ के पुतले के आगे मेरी नुमाइश की जाय। मैं उनमें से नहीं हूं—तुम्हें भले ही वे अच्छे लगते हों, मुझे तो उनसे नफरत है। अगर मुझे मालूम होता कि ये लोग तुम्हारे दोस्त हैं, तो मैं आता ही नहीं।"

तोनिया ने अपने उठते हुए गुस्से को दबाते हुए उसको टोका :

"इस तरह मुझसे बातें करने का तुम्हें क्या हक है ? मैं तो तुमसे नहीं पूछती कि तुम्हारे दोस्त कौन हैं और कौन तुमसे मिलने आता है, और कौन नहीं आता ?"

"मुझे इससे कोई बहस नहीं कि तुम किससे मिलती हो। मैं तो बस यह कह रहा हूं कि मैं अब यहां कभी नहीं आऊंगा," पावेल ने सामने की सीढ़ियों पर उतरते हुए तड़ाक से जवाब दिया। और दौड़ कर वह बागीचे के फाटक पर पहुंच गया।

तभी से तोनिया से उसकी मुलाकात नहीं हुई थी। मार-काट के दिनों में जब एलेक्ट्रीशियन के साथ मिलकर उसने बिजली के कारखाने में यहूदी परिवारों को शरण दी थी, तो उस बीच वह अपने झगड़े की बात भूल गया था और आज उससे मिलना चाहता था।

जुखराई के गायब हो जाने से और इस विचार से कि घर पर कोई नहीं है, पावेल का मन खिन्न और उदास हो गया था। उसके सामने सड़क का पूरा विस्तार फैला हुआ था। बसन्त के दिनों का कीचड़ अभी सूखा नहीं था और

सड़क पर तमाम गड्ढे-ही-गड्ढे हो गये थे जिनमें बादामी रंग का कीचड़ भरा था। सामने एक घर था जिसकी दीवारों का पलस्तर झड़ रहा था जिससे वह बहुत खस्ताहाल नजर आता था। वह घर सड़क के पक्के फुटपाथ के सिरे तक आगे को निकला हुआ था। वहीं से सड़क की शाख फूटती थी।

विक्टर लेशचिन्स्की एक टूटी-फूटी दूकान के सामने सड़क के चौराहे पर लिजा से विदा ले रहा था। दूकान के दरवाजे चूर-चूर हो रहे थे और उस पर लेमनेड सोडा का एक साइन-बोर्ड लटक रहा था।

विक्टर ने लिजा का हाथ अपने हाथ में पकड़े हुए और अपनी याचना-भरी आंखों से उसकी आंखों में देखते हुए कहा :

"तुम आओगी न ? धोखा तो नहीं दोगी ?"

लिजा ने नखरे के साथ कहा, "जरूर आऊंगी। मेरा इन्तजार करना।"

और उससे विदा होते हुए लिजा अपनी धुंधली-धुंधली सुर्खी-मायल बादामी आंखों में वादा भर कर मुस्कराई।

सड़क पर कुछ गज आगे लिजा ने दो आदमियों को एक मोड़ के पीछे से सड़क पर आते देखा। आगे वाला आदमी खूब तगड़ा था, उसका चौड़ा-सा सीना था और वह मजदूरों के कपड़े पहने हुए था, उसकी खुली हुई जाकेट के नीचे धारीदार जर्सी दिखलाई दे रही थी, एक काली टोपी उसके माथे तक नीचे को खिंची हुई थी और उसके पैरों में ब्राउन रंग के जूते थे। उसकी आंख के नीचे एक स्याह दाग था।

वह आदमी मजबूत कदमों से, मगर कुछ लुढ़कता हुआ सा, चल रहा था।

उससे तीन कदम पीछे भूरे रंग का कोट पहने और अपनी पेटी में कारतूस रखने के दो जेब लगाये एक पेतल्युरा सिपाही चला आ रहा था। उसकी संगीन आगे वाले आदमी की पीठ को लगभग छू रही थी। सिपाही भेड़ के ऊन की खूब बालों वाली टोपी पहने था और टोपी के नीचे उसकी दो छोटी-छोटी सतर्क आंखें अपने कैदी के सिर के पिछले हिस्से को देख रही थीं। उसके चेहरे पर पीली-पीली मूंछें थीं जिन पर तम्बाकू के धब्बे थे।

लिजा ने अपनी चाल कुछ धीमी कर दी और सड़क पार करके दूसरी तरफ चली गई। ठीक उसी वक्त उसके पीछे से पावेल निकल कर बड़ी सड़क पर आ गया।

जैसे ही वह उस पुराने घर के पास से गुजरा और वहां से दाहिने को मुड़ा, उसने भी उन दोनों आदमियों को अपनी तरफ आते देखा।

पावेल चौंककर रुक गया और ऐसे खड़ा रहा जैसे किसी ने उसे जमीन में गाड़ दिया हो। गिरफ्तार आदमी और कोई नहीं जुखराई था।

'अच्छा, इसीलिए वह घर नहीं लौटा!"

जुखराई अधिकाधिक निकट आता जा रहा था। पावेल का दिल ऐसे धड़कने लगा जैसे अभी फट जायगा। उसका दिमाग-स्थिति को समझने की नाकामयाब कोशिश कर रहा था और इस कोशिश में उसके बिचार पागलों की तरह बेतहाशा भाग रहे थे। सोचने के लिए वक्त नहीं था। सिर्फ एक बात साफ थी: जुखराई गया।

स्तब्ध और चकित होकर पावेल ने उन दोनों आदमियों को अपने करीब आते देखा। अब क्या किया जाय?

आखिरी लमहे में उसे अपनी जेब में पड़े पिस्तौल की याद आई। जब वे लोग उसके पास से गुजरेंगे तो वह राइफिल वाले आदमी की पीठ पर गोली मार देगा और फियोदोर आजाद हो जायगा। तत्काल इस निश्चय पर पहुंच जाने से उसके दिमाग की धुन्ध साफ हो गई। आखिर कल ही तो फियोदोर ने उससे कहा था, "इसके लिए हमें मजबूत आदमी चाहिएं..."

पावेल ने जल्दी से पीछे मुड़ कर देखा। शहर को जाने वाली सड़क सुनसान थी; चिड़िया का पूत भी वहां नहीं था। सामने एक औरत हल्का-सा कोट पहने तेजी से सड़क पार कर रही थी। वह कोई गड़बड़ नहीं करेगी। दोराहे की दूसरी सड़क को वह नहीं देख पा रहा था। दूर, स्टेशनवाली सड़क पर जरूर कुछ आदमी दिखाई दे रहे थे।

पावेल आगे बढ़ कर सड़क के किनारे पर आ गया। जुखराई ने जब उसे देखा तब दोनों के दरम्यान सिर्फ कुछ कदमों का फासला था।

जुखराई ने उसे अपनी कनखियों से देखा और उसकी घनी भवें कांपी। इस अप्रत्याशित मुलाकात के कारण उसकी चाल धीमी हो गई। संगीन उसकी पीठ में चूभी।

"जरा तेजी से, वर्ना मैं इस कुन्दे से तुम्हें खदेड़ूंगा!" सिपाही ने अपनी फटी हुई तेज आवाज में कहा।

जुखराई ने कदम तेज कर दिए। वह पावेल से बात करना चाहता था, मगर रुक गया; उसने सिर्फ अपना हाथ हिलाया, जैसे अभिवादन कर रहा हो।

इस डर से कि कहीं उस पीली मूंछ वाले सिपाही का ध्यान उस पर न पड़ जाय, पावेल जुखराई के पास से गुजरने पर अलग हट गया जैसे उसे इस सब से कोई वहस न हो।

मगर उसके दिमाग में यही चिन्ता चक्कर लगा रही थी: "अगर कहीं मेरा निशाना चूक गया और गोली जुखराई के लगी..."

वह पेतल्युरा सिपाही अब एकदम उसके पास आ गया था और सोचने के लिए समय नहीं था।

जैसे ही वह पीली मूंछ वाला सिपाही उसके बराबर आया, पावेल झपटकर उस पर कूद पड़ा और राइफिल पकड़ कर उसकी नली झटके से नीचे कर दी।

संगीन एक पत्थर से टकराई और रगड़ लगने की आवाज पैदा हुई।

यह हमला एकदम अनचिते में हुआ था जिससे थोड़ी देर को तो सिपाही सकते में आ गया। फिर उसने जोर से राइफिल अपनी तरफ खींची। राइफिल पर अपना पूरा वजन डालते हुए पावेल ने उस पर अपनी जकड़ कायम रखी। धांय से एक गोली छूटी और एक पत्थर से टकराई और छिछलती हुई सूं की आवाज के साथ गड्ढे में जा गिरी।

गोली की आवाज सुन कर जुखराई कूद कर अलग हो गया और घूमा। सिपाही पावेल के हाथ से राइफिल को छुड़ाने के लिए पूरी ताकत लगा रहा था। पावेल की बांहें बुरी तरह ऐंठ गई थीं, मगर राइफिल पर अपनी पकड़ उसने नहीं छोड़ी थी। गुस्से से पागल पेतल्युरा सिपाही पावेल पर तेजी से झपटा और उसने उसे जमीन पर गिरा दिया, मगर तब भी राइफिल को वह उसके हाथ से नहीं छुड़ा सका। पावेल गिर पड़ा, मगर वह सिपाही भी उसके संग गिरा और इस नाजुक वक्त में दुनिया की कोई ताकत उसके हाथ से राइफिल नहीं छुड़ा सकती थी।

दो डगों में जुखराई इन एक-दूसरे से गुंथे हुओं के पास पहुंच गया। उसकी फौलादी मुट्ठी उठी और सिपाही के सिरे पर जाकर गिरी। एक सेकेंड में जुखराई ने उस पेतल्युरा सिपाही को खींच कर पावेल से अलग कर दिया और जब दो सीसे की तरह भारी घूंसे उसके चेहरे पर पड़े तो उसका बेजान शरीर वहीं ढेर हो गया और सड़क के पास के गड्ढे में जा गिरा।

जिन मजबूत हाथों ने वे घूंसे रसीद किये थे उन्होंने पावेल को जमीन से उठाया और उसे अपने पैरों पर खड़ा किया।

विक्टर अभी उस दोराहे से करीब सौ कदम गया था। वह एक फ्रांसीसी गाने की धुन सीटी में बजाता चला जा रहा था। लिजा के संग अपनी इस मुलाकात से और उसके इस वादे से कि वह कल उस वीरान फैक्टरी में उससे मिलेगी, विक्टर का दिल जोश में था।

स्कूल के छंटे हुए बदमाशों में यह अफवाह गर्म थी कि इश्क के मामलों में लिजा सुखार्को काफी दिलेर है। ढीठ और घमंडी सेमियन जालीवानोव ने तो एक बार यह कहा भी था कि लिजा अपने-आपको उसे समर्पित कर चुकी

है और गोकि विक्टर को सेमियन की बात पर यकीन नहीं आता था, तो भी इसमें शक नहीं कि लिजा उसे काफी भेद-भरी मालूम होती थी। कल वह इस बात का पता लगा लेगा कि जालीवानोव की बात सच है या नहीं।

"अगर वह आती है तो मैं व्यर्थ संकोच न करूंगा। और जो हो, इतना तो जरूर है कि वह अपने आपको चूमने तो देती है। और अगर सेमियन सच बोलता है तो..." यहां उसके विचार रुक गये जब वह दो पेतल्युरा सिपाहियों को रास्ता देने के लिए एक तरफ को हटा। उनमें से एक दुमकटे घोड़े पर सवार था और एक जीन की बाल्टी उसके हाथ में लटक रही थी—स्पष्ट ही वह घोड़े को पानी पिलाने ले जा रहा था। दूसरा सिपाही जो एक छोटा-सा कोट और नीले रंग का ढीला-ढाला पतलून पहने था, उसके संग-संग पैदल चल रहा था। उसका हाथ घुड़सवार के घुटने पर था और वह कोई मजेदार कहानी सुना रहा था।

विक्टर ने उन्हें गुजर जाने दिया और वह फिर अपने रास्ते पर बढ़ने ही वाला था कि बड़ी सड़क पर राइफिल दगने की एक आवाज हुई और वह वहीं खड़ा हो गया। वह घूमा और उसने घुड़सवार को गोली की आवाज की दिशा में अपने घोड़े को एड़ लगाते देखा। दूसरा सिपाही अपनी तलवार को हाथ का सहारा दिये उसके पीछे-पीछे दौड़ा।

विक्टर भी उनके पीछे-पीछे भागा। वह बड़ी सड़क पर लगभग पहुंच गया था जब दूसरी गोली छूटने की आवाज आई और वह घुड़सवार बेतहाशा सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। वह घोड़े को अपनी एड़ी से और जीन वाली बाल्टी से एड़ लगा रहा था और पहले ही फाटक पर पहुंच कर घोड़े से कूदा और चिल्ला कर हाते के अन्दर के लोगों से बोला :

"दौड़ो उन्होंने हमारे एक आदमी को मार डाला है!"

मिनट भर बाद कई आदमी अपनी राइफिलों में गोली डाल कर बोल्ट चढ़ाते और दौड़ते हुए हाते से बाहर आये।

विक्टर पकड़ लिया गया।

अब तक बहुत से लोग सड़क पर जमा हो गये थे जिन्हें शहादत देने के लिए रोक लिया गया था। उनमें विक्टर और लिजा भी थे।

लिजा डर के मारे अपनी जगह पर जम सी गई थी, इसलिए उसने भागते हुए जुखराई और कोर्चागिन को अच्छी तरह देखा था। और उसे इस बात से बहुत अचम्भा हो रहा था कि जिस लड़के ने सिपाही पर हमला किया था, वह वही था जिससे तोनिया उसे मिलाना चाहती थी।

पावेल और जुखराई बाड़ी फांदकर एक बागीचे में पहुंचे ही थे कि वह घुड़सवार उधर से सड़क पर सरपट आता दिखाई दिया। उसने जुखराई को

हाथ में राइफिल लिए भागते और उस होश-हवास-गुम सिपाही को खड़े होने की कोशिश करते देखा। घुड़सवार ने बाड़ी की तरफ जाने के लिए घोड़े को एड़ लगाई।

जुखराई घूमा। उसने राइफिल उठाई और अपना पीछा करने वाले पर गोली दाग दी। पीछा करने वाला घुड़सवार घूमा और भाग खड़ा हुआ।

वह सिपाही किसी तरह, अपने कटे-फटे लहू-लुहान ओंठों के कारण बहुत मुश्किल से बतला रहा था कि क्या हुआ था।

"अबे गधे, तेरी नाक के नीचे से कैदी भाग गया! क्या मतलब है इसका? तेरे चूतड़ पर पच्चीस कोड़े पड़ेंगे।"

उस सिपाही ने गुस्से से जवाब दिया, "बड़े होशियार बन रहे हो! मेरी नाक के नीचे से, हुंः! मुझे क्या पता था कि वह दूसरा हरामी का पिल्ला पागल की तरह मुझ पर कूद पड़ेगा?"

लिजा से भी पूछ-ताछ की गई। उसने भी वही कहानी बताई जो उस सिपाही ने बताई थी, मगर उसने यह नहीं बताया कि वह हमला करने वाले को जानती थी। बहरसूरत, उन सबको कमांडैण्ट के दफ्तर ले जाया गया और शाम तक ही कहीं उनको वहां से छुट्टी मिली।

कमांडैण्ट साहब ने खुद ही लिजा को घर तक पहुंचाने का प्रस्ताव किया, मगर उसने इन्कार कर दिया। उनके मुंह से वोदका की बू आ रही थी और यह प्रस्ताव खतरे से खाली नहीं था।

विक्टर ने लिजा को घर पहुचाया।

अभी स्टेशन काफी दूर था और लिजा की बांह में बांह डाले चलते हुए विक्टर इस घटना का भला मना रहा था जिसने उसे यह सुयोग दिया।

अपने घर के काफी पास पहुंचने पर लिजा ने पूछा, "तुम्हें कुछ मालूम है कि उस कैदी को किसने छुड़ाया?"

"नहीं तो। मैं क्या जानूं? जान भी कैसे सकता हूं?"

"तुम्हें याद है उस शाम तोनिया एक लड़के का हमसे परिचय कराना चाहती थी?"

विक्टर रुक गया।

आश्चर्य से उसने पूछा, "पावेल कोर्चागिन?"

"हां, मेरा खयाल है, उसका नाम कोर्चागिन ही था। याद है, कैसे अजीब तरीके से वह बाहर निकल गया था? वही लड़का था।"

विक्टर ठगा-सा खड़ा था।

उसने लिजा से पूछा, "पक्की तरह कह सकती हो?"

"हां, मुझे उसका चेहरा अच्छी तरह याद है।"

"तुमने यह बात कमांडैण्ट को क्यों नहीं बतलाई ?"

यह सुनकर लिजा को क्रोध आ गया।

"तुम सोचते हो कि मैं ऐसी कमीनी हरकत कर सकती हूं ?" उसने कहा :

"कमीनी ? सिपाही पर किसने हमला किया, यह बतलाने को तुम कमीनी हरकत कहती हो ?"

"और नहीं तो क्या, यह कोई अच्छा काम है ? तुम शायद भूल गये हो कि उन्होंने क्या-क्या किया है ? तुम्हें कुछ पता है कि स्कूल में कितने यहूदी लड़के हैं जिनके मां-बाप मार डाले गए हैं और तब भी तुम चाहते हो कि मैं कोर्चागिन के बारे में बतला देती ? मुझे दुःख है, मैं तुमको ऐसा नहीं समझती थी।"

लेशचिन्स्की को लिजा के जवाब से बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन चूंकि उसके संग झगड़ा करना उसकी योजना के अनुकूल नहीं था, इसलिए उसने बात का विषय बदल दिया।

"नाराज न हो लिजा, मैं तो सिर्फ मजाक कर रहा था। मुझे नहीं मालूम था कि तुम इस कदर खरी और सच्ची हो।"

"मजाक बहुत भद्दा था," लिजा ने खुश्की से जवाब दिया।

उससे विदा होते समय विक्टर ने पूछा, "तो तुम आओगी न लिजा ?"

लिजा ने अस्पष्ट-सा उत्तर दिया, "कह नहीं सकती।"

शहर वापिस आते हुए विक्टर इस मामले पर गौर करने लगा।

"कुमारी जी, आप भले ही इसे कमीनी हरकत समझें, मगर मेरा तो खयाल कुछ और ही है। यों जहां तक मेरा ताल्लुक है, किसने किसको छुड़ाया, मेरे लिए सब बराबर है।"

एक पुराने पोलिश परिवार की सन्तान होने के नाते, बहैसियत एक लेशचिन्स्की के, उसको दोनों पक्षों से एकसी नफरत थी। एकमात्र सरकार जिसे वह मान्यता दे सकता था, पोलिश थैलीशाहों की सरकार थी और वह जल्द ही पोलिश फौजों के साथ आने वाली थी। वह तो खैर जब होगा तब होगा, मगर उस हरामजादे कोर्चागिन से पिंड छुड़ाने का यह अच्छा मौका था। इसमें क्या शक कि उसकी गर्दन तो मरोड़ ही दी जायगी।

विक्टर अपने परिवार का अकेला सदस्य था जो शहर में रुक गया था। वह अपनी एक चची के साथ रह रहा था जो शकर के कारखाने के सहायक संचालक की पत्नी थी। उसके परिवार के लोग कुछ दिनों से वारसा में रह रहे थे जहां उसके पिता—सिगिसमण्ड लेशचिन्स्की, एक ऊंचे पद पर थे।

विक्टर कमांडेंट के दफ्तर तक गया और दरवाजे से अन्दर घुस गया।

थोड़ी देर बाद वह चार पेतल्युरा सिपाहियों के संग कोर्चागिन के मकान की तरफ चला जा रहा था।

उसने एक खिड़की की तरफ, जिससे रोशनी आ रही थी, इशारा करते हुए धीरे से कहा, "वही जगह है। अब मैं जाऊं?" उसने अपने बगल में खड़े खोरूंजी से पूछा।

"हां, अब तुम जा सकते हो, बाकी बातें सब मैं देख लूंगा। यह खबर देने के लिए तुम्हारा शुक्रिया।"

विक्टर पैदल पटरी पर होकर तेजी से घर की ओर चला।

पावेल की पीठ पर आखिरी प्रहार हुआ जिसने पावेल को ढकेल कर उस अंधेरे कमरे में डाल दिया जहां पर वे लोग उसे ले गये थे और उसकी फैली हुए बांहें सामने की दीवार से जा टकराईं। अपने आस-पास टटोलते हुए उसको ओठे जैसी कोई चीज मिली और वह बैठ गया। उसका शरीर और उसका मन दोनों घायल थे और दर्द कर रहे थे।

उसकी गिरफ्तारी बिल्कुल अप्रत्याशित थी। आखिर उन पेतल्युरा सिपाहियों को उसका पता कैसे चला? यह बात पक्की है कि किसी ने उसे देखा नहीं था। अब इसके बाद क्या होगा और जुखराई कहां है?

उसने जुखराई को क्लिम्का के घर पर छोड़ा था और फिर वहां से सर्गेई के यहां चला गया था जबकि जुखराई वहां पर ठहर कर शाम होने का इन्तजार कर रहा था ताकि चुपके से शहर से बाहर निकल जाय।

पावेल ने सोचा, "अच्छा हुआ, मैंने रिवाल्वर कौए के घोंसले में छिपा दिया था। अगर कहीं वह चीज उन्हें मिल जाती तो मेरा काम तमाम था। मगर, आखिर उन्हें मेरा पता चला कैसे?" यह सवाल उसे तंग कर रहा था और इसका कोई जवाब उसके पास नहीं था।

पेतल्युरा सिपाहियों ने कोर्चागिन के मकान के कोने-कोने की तलाशी ली थी मगर उन्हें कुछ खास मिला नहीं। आर्तेम अपना सबसे बढ़िया सूट और अकार्डियन बाजा गांव ले गया था और उसकी मां अपने साथ एक ट्रंक ले गयी थी। लिहाजा, घर में कोई खास चीज बची न थी जिसे सिपाही ले जाते।

बहरहाल, कोतवाली तक का सफर एक ऐसी चीज थी जिसे पावेल कभी नहीं भूलेगा। रात काजल की तरह काली थी, आसमान पर बादल छाये हुए थे और वह चारों तरफ से बेरहम ठोकरें खाता हुआ अंधे और नीम-पागल आदमी की भांति किसी तरह लुढ़कता चल रहा था।

अगले कमरे में, जिसमें कमांडैण्ट के सन्तरी रहते थे, दरवाजे के पीछे उसे आवाजें सुनाई दीं। दरवाजे के नीचे से प्रकाश की पतली रेखा दिखाई दे रही थी। पावेल उठ खड़ा हुआ और दीवार के सहारे-सहारे रास्ता पहचानता हुआ कमरे का चक्कर लगा आया। ओठे के सामने उसे एक खिड़की मिली

जिसमें ठोस लोहे के नुकीले डंडे लगे हुए थे। उसने उनको अपने हाथ से परखा—वे अपनी जगह पर बहुत मजबूती से मढ़े हुए थे। जाहिर है, यह जगह पहले माल-असबाब रखने के काम आती होगी।

वह दरवाजे तक पहुंचा और वहां खड़ा होकर पल भर कान लगाये सुनता रहा। फिर उसने हलके से दरवाजे के हैंडिल को दबाया। दरवाजा चूं से बोला, जो पावेल को बहुत नागवार मालूम हुआ, और उसने दबी जबान में उसको हजार गालियां दीं।

दरवाजे की उस जरा सी सन्ध में से उसे दो रुखड़े पैर जिनके अंगूठे टेढ़े थे, चबूतरे से नीचे झूलते हुए दिखाई दिये। उसने एक बार और हलके से हैंडिल को दबाया, पर दरवाजे ने और भी जोरों से प्रतिवाद किया। तभी एक बिखरे बालों वाली आकृति, जिसका चेहरा नींद के कारण सूजा हुआ था, अपने चबूतरे पर से उठी और अपने गंदे जूं भरे सिर को पांचों उंगलियों से खबर-खबर खुजलाती हुई उसको बेतहाशा गालियां सुनाने लगी। गालियों का यह वीभत्स प्रवाह बन्द होने पर उस आदमी ने अपने ओठे के सिरे पर रखी हुई राइफिल की तरफ हाथ बढ़ाया और गुस्से से बोला :

"दरवाजा बन्द कर दो और अगर दुबारा फिर मैंने तुम्हें बाहर झांकते देखा तो मैं तुम्हारा..."

पावेल ने दरवाजा बन्द कर दिया। बगल के कमरे से हंसी का कहकहा सुनाई दिया।

उस रात वह बहुत कुछ सोचता रहा। लड़ाई में हिस्सा लेने की उसकी पहली कोशिश का नतीजा उसके लिए बुरा ही हुआ था। पहले कदम में ही वह पकड़ा गया था और अब चूहेदानी में फंसे हुए चूहे की तरह वहां पड़ा था।

तब भी वह उठ कर बैठ गया और धीरे-धीरे बेचैन अर्द्ध-निद्रा की हालत में पहुंच गया और उसकी आंखों के आगे उसकी मां का हड्डियां निकला हुआ झुर्रीदार चेहरा और आंखें आईं जिन्हें वह प्यार करता था। उसने सोचा, "अच्छा ही है कि वह यहां नहीं है—दर्द कम होगा।"

खिड़की में से रोशनी आ रही थी और फर्श पर एक भूरे रंग का धुंधला चौकोन बना रही थी।

अंधेरा धीरे-धीरे हट रहा था। पौ फट रही थी।

उस पुरानी हवेली की सिर्फ एक खिड़की में रोशनी चमक रही थी; परदे खिंचे हुए थे। बाहर ट्रेसोर, जिसे रात भर के लिए जंजीर लगा दी गई थी, अचानक अपनी भारी गूंजती हुई आवाज में भूंका।

नींद के कुहासे में तोनिया ने अपनी मां को मद्धिम आवाज में बोलते हुए सुना।

"नहीं, अभी वह सोई नहीं है। अन्दर आओ, लिजा।"

उसकी सहेली के हलके-हलके कदमों ने और फिर उसके आवेगपूर्ण गर्म आलिंगन ने उसकी नींद भगा दी।

तोनिया के चेहरे पर जर्द मुस्कराहट थी।

"मुझे बड़ी खुशी हुई कि तुम आईं, लिजा। पापा का संकट कल टल गया और आज वह पूरे दिन गहरी नींद में सोते रहे। कई रात जागने के बाद आज मां को और मुझे भी कुछ आराम करने का मौका मिला। मुझे सारी खबरें बतलाओ।" तोनिया ने अपनी सहेली को खींच कर पास ही कौच पर बिठा लिया।

"ओह, तमाम खबरें ही खबरें हैं, मगर उनमें से कुछ ऐसी हैं जो सिर्फ तुम्हारे कानों के लिए हैं।" लिजा एकातेरीना मिखाइलोवना को चंचल मानी-खेज नजरों से देखती हुई मुस्कराई।

तोनिया की मां भी मुस्कराई। वह छत्तीस साल की प्रौढ़ स्त्री थी, मगर उसकी चाल-ढाल में जवान लड़की का सा फुर्तीलापन था। उसकी भूरी-भूरी समझदार आंखें थीं और उसका चेहरा खूबसूरत तो नहीं, मगर देखने में भला जरूर मालूम होता था।

"मैं दो-चार मिनट में ही बहुत खुशी से तुम लोगों को आपस में बात करने के लिए अकेला छोड़ दूंगी, मगर पहले मैं वे खबरें सुनना चाहती हूं जो सबके कानों के लिए हैं," उसने दीवान के पास अपनी कुर्सी खींचते हुए मजाक के स्वर में कहा।

"अच्छा, तो पहली बात तो यह है कि हमारी स्कूल की पढ़ाई खतम। बोर्ड ने सातवीं जमात वालों को ग्रेजुएशन सर्टिफिकेट देने का फैसला किया है। मैं तो सचमुच खुश हूं। इस अलजेबरा-ज्योमेट्री के मारे तो नाक में दम हो गया था! भला बताओ, इससे किसी का क्या फायदा? लड़के मुमकिन है, आगे भी अपनी पढ़ाई जारी रखें, गोकि उन्हें खुद पता नहीं कि चारों तरफ के इस लड़ाई-झगड़े के चलते वे कहां और कैसे आगे बढ़ सकेंगे। सचमुच बड़ी भयानक

बात है...जहां तक हमारी बात है, हमारी शादी हो जायगी और बीवियों को अलजेबरा की जरूरत नहीं पड़ती," कह कर लिजा हंसने लगी।

थोड़ी देर लड़कियों के संग बैठ कर एकातेरीना मिखाइलोवना अपने कमरे में चली गई।

अब लिजा तोनिया के और पास आ गई और उसे अपनी बांहों में लेकर धीमे-धीमे फुसफुसा कर उसे चौराहे पर की वारदात सुनाई।

"तोनेच्का, तुम मेरे आश्चर्य की कल्पना कर सकती हो जब मैंने देखा कि वह लड़का जो भागा जा रहा था...बूझो कौन था ?"

तोनिया ने, जो बड़े ध्यान से सुन रही थी, कंधे उचका कर अपनी असमर्थता बतलाई।

"कोर्चागिन !" लिजा ने अधीर होकर उगल दिया।

तोनिया चौंक गई और उसे झुरझुरी-सी मालूम हुई।

"कोर्चागिन ?"

तोनिया पर उसकी बात का जो असर हुआ था, उसे देख कर लिजा बहुत खुश हुई और विक्टर के संग अपने झगड़े की बात बतलाने लगी।

अपने किस्से की रौ में लिजा ने यह नहीं देखा कि तोनिया का चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी उंगलियां रह-रह कर बेचैनी से अपने नीले ब्लाउज को पकड़ लेती थीं। लिजा को क्या पता कि कैसे तोनिया का दिल चिन्ता के मारे घुटा जा रहा था और न वह यही समझ सकी कि तोनिया की खूबसूरत आंखों की लम्बी बरोनियां क्यों रह-रह कर कांप जाती थीं।

लिजा ने नशे में चूर खोरूंजी का जो किस्सा सुनाया, उसकी तरफ तोनिया ने कोई ध्यान नहीं दिया। सिर्फ एक विचार उसके दिमाग में जैसे कील-सी ठोंक रहा था, "अच्छा, तो विक्टर लेशचिन्स्की को मालूम है कि उस सिपाही पर किसने हमला किया ! ओह लिजा, तूने विक्टर को क्यों बतलाया ?" और न चाहते हुए भी यह बात उसके मुंह से निकल ही पड़ी।

"क्या कहा तुमने ?" लिजा एकाएक उसका मतलब नहीं समझ सकी।

"तुमने लेशचिन्स्की को पावलूशा...यानी कोर्चागिन के बारे में क्यों बतलाया ? वह जरूर उसके साथ दगा करेगा..."

"अरे नहीं !" लिजा ने प्रतिवाद किया, "मैं नहीं समझती कि वह ऐसा नीच काम करेगा। और क्यों करेगा ? उसका फायदा ?"

तोनिया उठ कर बैठ गई और अपने घुटनों को इतने जोर से दबाया कि उनमें दर्द होने लगा।

"तुम नहीं समझती लिजा ! उसमें और कोर्चागिन में दुश्मनी है, और

इसके अलावा कुछ और भी है...तुमने विक्टर को पावलूशा के बारे में बतला कर बहुत बड़ी भूल की।"

अब तोनिया की उद्विग्नता की तरफ लिजा का ध्यान गया और जिस तरह तोनिया अनजाने में ही कोर्चागिन को पावलूशा कह रही थी, उससे लिजा की आंखें एक ऐसी चीज के बारे में खुलीं जिसके सम्बंध में वह अब तक सिर्फ अटकल लगाया करती थी।

उसने अपने आपको मन ही मन अपराधी महसूस किया और चुप्पी में डूब गई।

उसने सोचा, "अच्छा तो यह बात सही है। मगर कैसी अजीब बात है कि तोनिया......एक मामूली मजदूर से प्रेम करे।" लिजा इस चीज के बारे में बहुत बात करना चाहती थी, मगर अपनी सहेली का खयाल करके रुक गई। किसी तरह अपने अपराध का मार्जन करने के खयाल से उसने तोनिया के हाथ पकड़ लिये और बोली :

"तुम क्या बहुत चिंतित हो गई तोनिया ?"

तोनिया ने खोये-खोये ढंग से जवाब दिया, "नहीं, हो सकता है मेरा खयाल गलत हो और विक्टर मेरे अनुमान से ज्यादा शरीफ निकले।"

इसके बाद एक भद्दी सी, दम घोटनेवाली खामोशी छा गई जो उनके एक सहपाठी के आने से टूटी। इस सहपाठी का नाम था देमियानोव। यह एक बहुत झेंपू, हौलू-सा लड़का था

अपने दोस्तों को विदा करके तोनिया बहुत देर तक फाटक से टिकी शहर को जाने वाली सड़क की काली-काली मिट्टी को देखती रही। वह सदा-सदा की घुमक्कड़ हवा, नम और वसन्त की गीली धरती की सीली हुई बू से लदी हुई, उसके चेहरे में लग रही थी। शहर के मकानों की खिड़कियों से मद्धिम लाल-लाल रोशनी झांक रही थी। वही था शहर जिसकी जिन्दगी उसकी अपनी जिन्दगी से अलग थी और वहीं पर, उन्हीं में से किसी एक छत के नीचे था अपने ऊपर आने वाले खतरे से बेखबर उसका अक्खड़ और तेजमिजाज दोस्त पावेल। शायद वह उसके बारे में भूल भी गया हो—उस आखिरी मुलाकात के बाद न जाने कितने दिन गुजर गए थे। इस बार वही गलती पर था, मगर वे सब बातें तो आई-गई हो गईं। कल वह उससे जाकर मिलेगी और उनकी दोस्ती फिर से वापस आ जायगी, ऐसी दोस्ती जिसमें प्राण है, गति है, जो दिल को गरमाती है। वह दोस्ती वापस आयेगी, इसमें तोनिया को जरा भी शक न था—बशर्ते यह रात दगा न करे, यह रात जो तमाम बुराइयों का घर है, जो पावेल की ताक में बैठी हुई जान पड़ती है...ठंडक बहुत बढ़ गई थी और सड़क पर आखिरी बार निगाह डालती हुई तोनिया अन्दर चली गई।

"बशर्ते रात दगा न करे," यही खयाल उसके दिमाग पर उस समय भी छाया हुआ था जब वह कम्बल में लिपटी-लिपटी नींद में डूब गई।

तोनिया खूब सबेरे उठी और जल्दी-जल्दी कपड़े पहने। तब तक और कोई नहीं उठा था। वह चुपके से घर से निकल गई ताकि घर में और कोई न जागे, बड़े-बड़े झबरे बालोंवाले ट्रेसोर की जंजीर खोली और उसे साथ लेकर शहर की ओर चल पड़ी। कोर्चागिन के घर पहुंच कर वह पल भर को उसके दरवाजे पर ठिठकी, मगर फिर उसने ठेल कर दरवाजा खोल दिया और भीतर सहन में चली गई। ट्रेसोर दुम हिलाता हुआ तेजी से आगे निकल गया...।

आर्तेम उसी सुबह गांव से लौटा था। जिस लोहार के यहां वह काम करता था, वही अपनी गाड़ी पर बिठाल कर उसे शहर तक लाया था। घर पहुंच कर उसने अपनी कमाई का आटे का बोरा कंधे पर लादा और अन्दर सहन में चला गया। उसके पीछे-पीछे उसकी बाकी चीजें लिए वह लुहार था। खुले हुए दरवाजे के आगे आर्तेम ने बोरा जमीन पर रख दिया और पुकारा :

"पावका !"

कोई जवाब नहीं मिला।

"क्यों क्या अड़चन है ? सीधे अन्दर क्यों नहीं चले जाते," लुहार ने उसके बराबर आकर कहा।

अपनी चीजें रसोईघर में रख कर आर्तेम बगलवाले कमरे में गया। वहां उसने जो दृश्य देखा, उससे वह बिल्कुल स्तब्ध हो गया; वह सारी जगह उलट-पुलट दी गई थी और पुराने कपड़े फर्श पर बिखरे पड़े थे।

आर्तेम की समझ में कुछ नहीं आया। वह मुंह ही मुंह में बोला, "यह मामला क्या है ?"

"कुछ घोटाला जरूर है", लुहार ने उसकी तसदीक करते हुए कहा।

आर्तेम को अब गुस्सा आ रहा था, बोला : "मगर यह छोकरा गया कहां ?" लेकिन वह जगह वीरान थी और कोई जवाब देने वाला न था।

लुहार ने सलाम किया और चला गया।

आर्तेम बाहर हाते में गया और इधर-उधर देखने लगा।

"कुछ मेरी समझ में नहीं आ रहा है ! सारे दरवाजे खुले हैं और पावका का कहीं पता नहीं।"

तभी उसने पीछे से कदमों की आहट सुनी। घूम कर उसने देखा, एक बड़ा-सा कुत्ता जिसके कान खड़े थे, उसके सामने खड़ा है। एक लड़की दरवाजे में से घर की तरफ आ रही थी।

उसने आर्तेम को गौर से देखते हुए धीमे स्वर में कहा, "पावेल कोर्चागिन से मुझे एक जरूरी काम के लिए मिलना है।"

"मिलना तो मुझे भी है। मगर वह गया कहां, यह किसे मालूम। मैं यहां आया तो घर एकदम खुला हुआ था और पावका का कहीं पता न था। अच्छा तो तुम भी उसी की तलाश में हो ?" उसने लड़की से पूछा।

लड़की ने एक और सवाल से जवाब दिया :

"आप कोर्चागिन के भाई आर्तेम हैं ?"

"हां। क्यों ?"

जवाब देने के बजाय वह लड़की भयभीत और त्रस्त होकर खुले हुए दरवाजे को देखती रही। उसने सोचा, "मैं कल रात ही क्यों नहीं आई ? यह नहीं हो सकता...यह नहीं हो सकता..." और उसका दिल और भी भारी हो गया।

"आपने दरवाजे को खुला पाया और पावेल नहीं था ?" अपनी ओर आश्चर्य से देखते हुए आर्तेम से उसने पूछा।

"और क्या ? मैं जान सकता हूं कि पावेल से तुम्हें क्या काम है ?"

तोनिया आर्तेम के और पास आ गई और आसपास निगाह दौड़ाते हुए उसने रुक-रुक कर कहा :

"मैं ठीक नहीं कह सकती। मगर मेरा ख्याल है कि अगर पावेल घर पर नहीं है तो वह जरूर पकड़ा गया।"

आर्तेम चौंक पड़ा। "पकड़ गया ? किस बात के लिए ?"

"चलिए, हम लोग अन्दर चलें," तोनिया ने कहा।

तोनिया को जो कुछ मालूम था, उसने सब बतला दिया और आर्तेम खामोश सुनता रहा। उसकी कहानी खतम होते-होते आर्तेम बहुत खिन्न और परेशान हो गया था।

उसने निराशा के स्वर में धीमे से बुदबुदा कर कहा, "क्या मुसीबत है ! जैसे यों ही कम परेशानी थी ! अब समझ में आया कि यह जगह क्यों उलटी-पलटी पड़ी है। इस छोकरे को क्या पड़ी थी कि इस सब बखेड़े में जा कूदा... वह इस वक्त होगा कहां ? और तुम कौन हो ?"

"मैं जंगल के वार्डेन तुमानोव की लड़की हूं। मैं पावेल की दोस्त हूं।"

"अच्छा," आर्तेम ने बिना कुछ ज्यादा समझे, स्वर को खींच कर कहा। "कहां तो मैं इस लड़के को खिलाने के लिए यह आटा लेकर आया और अब यह देखो..."

तोनिया और आर्तेम एक-दूसरे को खामोशी से देखते रहे।

"अब मुझे चलना चाहिए," तोनिया ने जाने के लिए प्रस्तुत होते हुए धीमे से कहा। "मुमकिन है, वह आपको मिल जाय। मैं शाम को फिर पता लेने आऊंगी।"

आर्तेम ने बिना कुछ बोले सिर हिला कर हामी भरी।

अपनी जाड़े की नींद से अभी-अभी जागी हुई एक नन्हीं सी मक्खी खिड़की के कोने में भुन-भुन कर रही थी। एक पुराने खस्ताहाल कोच के सिरे पर एक नौजवान किसान औरत बैठी हुई थी। उसकी कुहनियां घुटनों पर टिकी थीं और उसकी सूनी आंखें गन्दे फर्श पर जमी थीं।

कमांडैण्ट मुंह के एक कोने में अटकी हुई सिगरेट को चबा रहा था। उसने अभी एक कागज पर बड़े बांकपन के साथ कुछ लिखकर खतम किया था। और जाहिर था कि वह अपने आप से बहुत खुश था। उसने "शेपेतोवका नगर-कमांडैण्ट, खोरूंजी" के नाम से बहुत बना-बना कर दस्तखत किया था। दरवाजे पर अटेंशन की हालत में बूटों के बजने की आवाज आई। कमांडैण्ट ने आंखें उठा कर देखा।

उसके सामने बांह में पट्टी बांधे सलोमिगा खड़ा था।

"क्यों जी, कौन सी हवा तुमको उड़ा लाई?" कमांडैण्ट ने उसका स्वागत करते हुए कहा।

"अच्छी हवा नहीं है वह। एक बोगुनेस्त[1] ने मेरा हाथ चाक कर दिया।"

उस स्त्री की उपस्थिति का कुछ ख्याल न करते हुए सलोमिगा बुरी-बुरी गाली बकने लगा।

"तो फिर तुम यहां क्या कर रहे हो? सेहत बनाने आये हो?"

"सेहत बनाने का मौका हमें उस दुनिया में मिलेगा! यहां तो उन्होंने मोर्चे पर हमारी नाक में दम कर रखा है।"

कमांडैण्ट ने उसकी बात में बाधा दी और उस औरत को देख कर सिर हिलाया।

"उसके बारे में हम लोग बाद में बातें करेंगे।"

सलोमिगा धप्प से स्टूल पर बैठ गया और उसने अपनी टोपी उतारी जिसके माथे पर इनामल का बना एक त्रिशूल टंका हुआ था जो कि उक्रेनी राष्ट्रीय प्रजातंत्र का निशान था।

उसने अपनी मद्धिम आवाज में कहना शुरू किया, "गोलुब ने मुझे भेजा है। रेगुलर सैनिकों का एक डिवीजन जल्दी ही यहां आने वाला है। यहां नगर में उसके लिए करने को बहुत कुछ रहेगा और उसके सारे इन्तजाम को ठीक-

---

१. लाल फौज की बोगुन रेजीमेन्ट के आदमी। १७वीं शताब्दी में उक्रेनी जनता के स्वाधीनता-संघर्ष के नेता बोगुन के नाम पर इस रेजीमेन्ट का नाम बोगुन रेजीमेंट पड़ा था।

ठाक करने का जिम्मा मुझे दिया गया है। हो सकता है कि 'चीफ' साहब खुद किसी बड़े विदेशी आदमी के साथ यहां पर आयें। इसलिए मेरे 'दिल-बहलाव' की बात मुंह पर भी नहीं लानी होगी। क्या लिख रहे हो ?"

कमांडैण्ट ने सिगरेट मुंह के एक कोने से निकाल कर दूसरे कोने में लगा ली।

"यहां एक बहुत बदमाश लड़का है। शैतान की आंत ही समझो उसको। तुम्हें उस जुखराई की याद है न ? उसी ने रेलवे मजदूरों को हम लोगों के खिलाफ भड़काया था। हां, तो वह स्टेशन पर पकड़ लिया गया।"

"पकड़ा गया ? बड़ी बात ! हां, तो फिर क्या हुआ ?" सलोमिगा ने बात में बहुत गहरी दिलचस्पी लेते हुए अपना स्टूल और पास सरका लिया।

"उसके बाद हुआ यह कि उस स्टेशन कमांडैण्ट उल्लू के पट्ठे ओमेल-चेन्को ने एक कौसेक के पहरे में उसको रवाना कर दिया और रास्ते में इस लड़के ने, जो हमारे यहां बन्द है, दिन दहाड़े उस कैदी को छुड़ा लिया। उस कौसेक सिपाही के हथियार छीन लिये गए और दांत तोड़ दिये गए, और कैदी नौ दो ग्यारह हो गया। जुखराई तो भाग गया, मगर इस छोकरे को हमने पकड़ लिया। देखो न, इस कागज में सब कुछ लिखा हुआ है," कहते हुए उसने कई कागज सलोमिगा की तरफ बढ़ाये।

सलोमिगा बांयें हाथ से कागज के पन्नों को पलटता हुआ पूरी रिपोर्ट देख गया।

रिपोर्ट खतम करके उसने कमांडैन्ट की तरफ देखा।

"गरज उस लड़के से तुम कुछ मालूम नहीं कर सके ?"

कमांडैन्ट परेशानी से अपनी टोपी के सिरे को खींचने लगा।

"मैं पांच दिन से उसके पीछे लगा हूं, मगर वह इसके सिवा कुछ नहीं कहता कि 'मैं कुछ नहीं जानता और मैंने उसे नहीं छुड़ाया।' बड़ा मर्दूद लड़का है साहब ! उस सिपाही ने, जिस पर यह सब गुजरी थी, उसको पहचान लिया—और लड़के को देखते ही वह तो गुस्से से पागल हो गया और उसका बस चलता तो उसने वहीं उसका गला घोंट दिया होता। वह तो बड़ी मुश्किल से मैं उस कौसेक को अलग कर पाया। और भई सच पूछो तो गुस्से के लिए उसके पास कारण भी था, क्योंकि ओमेलचेंको ने स्टेशन पर, हाथ से कैदी निकल जाने देने के जुर्म में, अपनी राइफिल साफ करने की छड़ी से पच्चीस छड़ियां भी तो उसके लगाईं। अब उसको यहां और बन्द रखने में कोई तुक नहीं है, इसलिए मैं ये कागजात हेडक्वार्टर भेजकर इजाजत मंगा रहा हूं ताकि इस हरामजादे को खतम कर दिया जाय।"

सलोमिगा ने नफरत से थूक दिया।

"कहीं मेरे हाथ में होता यह लड़का तो तुम देखते, मैं उससे कबुलवा कर छोड़ता। यह सब पूछ-ताछ वगैरह करने के मामले में तुम कुछ यों ही से हो। और भला कभी किसी ने यह भी सुना है कि धर्मशास्त्र का विद्यार्थी कमांडेन्ट बन जाय! डंडे का इस्तेमाल किया तुमने?"

कमांडेन्ट को गुस्सा आ गया।

"देखो तुम हद से गुजरे जा रहे हो। अपना मजाक अपने ही पास रखो। यहां पर मैं कमांडेन्ट हूं और तुम्हारा कोई हस्तक्षेप नहीं चाहता।"

सलोमिगा ने तैश में आये हुए कमांडेन्ट को देखा और जोर से ठहाका मार कर हंस पड़ा।

"हा हा हा...देखो तुम पादरी के बेटे हो, इतना मत फूलो नहीं तो पेट फट जायगा। जहन्नुम में जाओ तुम और तुम्हारे मसले। जरा मुझे यह बतलाओ कि समोगन (शराब) की दो बोतलें कहां से मिल सकती हैं?"

कमांडेन्ट खिसियानी सी हंसी हंसा और बोला:

"इन्तजाम हो सकता है।"

"जहां तक इस चीज का ताल्लुक है," सलोमिगा ने कागजात पर अपनी उंगली गड़ाते हुए कहा, "अगर तुम वाकई उसका काम तमाम करना चाहते हो तो सोलह की जगह उसकी उम्र अठारह दिखलाओ। छः को आठ बना दो, नहीं तो मुमकिन है वे लोग पास न करें।"

उस मालगोदाम वाली कोठरी में तीन लोग थे। एक दढ़ियल बुड्ढा तार-तार कोट पहने ओठे पर करवट लेटा हुआ था। उसकी लकड़ी जैसी टांगें लिनेन के चौड़े-चौड़े पतलूनों से ढंकी थीं जिन्हें उसने ऊपर समेट लिया था। उसे इसलिए गिरफ्तार किया गया था कि उसके यहां जिन पेतल्युरा सिपाहियों को टिकाया गया था, उनका घोड़ा उसके शेड से गुम हो गया था। एक अधेड़ औरत जिसकी छोटी-छोटी चपल आंखें थीं और नुकीली-सी ठुड्डी थी, फर्श पर बैठी हुई थी। वह समोगन बेच कर अपनी जीविका चलाती थी और उसको इस अभियोग में यहां ला पटका गया था कि उसने एक घड़ी और कुछ दूसरी बेशकीमत चीजें चुराई हैं। कोर्चागिन नीमबेहोशी की हालत में खिड़की के नीचे एक कोने में अपनी कुचली हुई टोपी का तकिया लगाये लेटा था।

एक नौजवान स्त्री उसी मालगोदाम में लायी गयी। वह सिर में एक रंगीन रूमाल बांधे थी और दहशत के मारे उसकी आंखें निकली पड़ रही थीं।

वह एक-दो पल खड़ी रही और फिर शराब बेचनेवाली औरत के बगल में बैठ गयी।

शराब बेचनेवाली ने आगन्तुक स्त्री को कुतूहलपूर्ण आंखों से देखा और जल्दी-जल्दी कहा, "पकड़ी गई क्यों ?"

कोई जवाब नहीं मिला। मगर शराब बेचनेवाली स्त्री इतनी जल्दी छोड़ने वाली न थी।

"तुमको क्यों पकड़ा ? समोगन के मामले में तो नहीं ?"

किसान लड़की उठ खड़ी हुई और उसने इस हठीली बुढ़िया को देखा।

उसने धीमे से जबाव दिया, "नहीं, मुझे तो मेरे भाई के कारण पकड़ा है।"

"और तुम्हारा भाई कौन है ?" उस बुड्ढी स्त्री ने पूछा। वह तो जैसे उसके पीछे ही पड़ गयी थी।

अब बुड्ढा बोल उठा।

"तुम क्यों खामख्वा उसे तंग कर रही हो। वह यों ही कुछ कम परेशान नहीं है। उस पर भी तुम बकवक लगाये हुए हो।"

वह स्त्री तेजी से ओठे की तरफ मुड़ी।

"तुम कौन होते हो मुझको बताने वाले कि मैं क्या करू, क्या न करू ? मैं तुमसे तो बात कर नहीं रही हूं।"

बुड्ढे ने थूका।

"उसे परेशान मत करो, मैं तुमसे कहता हूं।"

कोठरी में फिर खामोशी छा गयी। उस किसान लड़की ने एक बड़ा-सा शॉल बिछाया और अपने हाथ का तकिया लगाकर उस पर लेट गयी।

शराब बेचनेवाली ने खाना खाना शुरू किया। बूढ़ा उठकर बैठ गया, फर्श पर पैर रख लिए, धीरे-धीरे अपने लिए एक सिगरेट बनाई और उसे सुलगा लिया। तीखे धुएं के बादल फैल गये।

"इस बदबू में तो कोई शांति से खा भी नहीं सकता।" औरत बड़बड़ाई, गोकि उसके जबड़े बदस्तूर काम कर रहे थे। "तुमने तो इस सारी जगह को धुएं से भर दिया है।"

बूढ़े ने चिढ़ कर मजाक बनाते हुए जवाब दिया :

"क्यों, वजन घटने का डर है क्या ? तुम्हारा यही हाल रहा तो जल्दी ही दरवाजे में से निकलना मुश्किल हो जायगा। तुम इस लड़के को कुछ खाने को क्यों नहीं देतीं ? सब का सब अपने ही पेट में ठूंसे जा रही हो !"

उस औरत ने क्रोध का भाव दिखलाया।

"मैंने कोशिश की मगर उसे कुछ चाहिए ही नहीं। मगर तुम्हें इससे क्या

बहस ? तुम अपना मुंह क्यों नहीं बंद रखते—मैं तुम्हारा खाना तो खा नहीं रही हूं।"

लड़की उस बूढ़ी स्त्री की तरफ मुड़ी और अपने सिर से कोर्चागिन की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा :

"तुम्हें मालूम है कि इसे यहां पर क्यों लाया गया है ?"

बूढ़ी स्त्री इस बात से खुश हो गयी कि उसको सम्बोधित किया गया। उसने झट जवाब दिया :

"यहीं का लड़का है—कोर्चागिन का छोटा लड़का। उसकी मां रसोई-दारिन है।"

फिर लड़की की तरफ झुकते हुए उसने उसके कान में कहा :

"उसने एक बोल्शेविक को छुड़ाया था—एक मल्लाह को, जो यहीं मेरे पड़ोसी जोजलिखा के यहां रहता था।"

उस नौजवान स्त्री को वे शब्द याद आये जो उसने बाहर चोरी से सुन लिए थे, "मैं इन कागजात को हेडक्वार्टर भेज रहा हूं ताकि इसका काम तमाम करने की इजाजत मुझे मिल जाय।"

एक के बाद दूसरी फौजी गाड़ी जंक्शन पर आ रही थी और उनमें से रेगुरल सैनिकों की बटालियन पर बटालियन निकल कर भीड़ की तरह फैल रही थीं। **जपोरोजेत्स** नाम की बख्तरबंद गाड़ी बगल की एक रेलवे लाइन पर धीरे-धीरे रेंग रही थी। इस गाड़ी में चार डब्बे थे और उसकी लोहे की दीवारों में तमाम रिबिट लगे हुए थे। खुले हुए डब्बों में से तोपें उतारी गईं और माल के बंद डब्बों में से घोड़े बाहर निकाले गये। घोड़ों पर वहीं जीन कसी गयी और घुड़सवार, पैदल दस्तों की उस भीड़ में से अपना रास्ता बनाते हुए, स्टेशन के यार्ड में पहुंचे जहां घुड़सवारों की टुकड़ी कतार बना रही थी।

अफसरान अपनी टुकड़ियों के नम्बर पुकारते हुए इधर-उधर दौड़ रहे थे।

स्टेशन में बर्र के छत्ते की सी भनभनाहट गूंज रही थी। धीरे-धीरे उस शोर मचाती और भंवर में पड़ी चक्कर सी खाती बेतरतीब भीड़ को ठोंक-पीट कर उसमें से बाकायदा प्लैटून बनाए गये और थोड़ी ही देर में हथियारबंद सिपाहियों का एक रेला नगर की ओर बढ़ चला। काफी रात तक गाड़ियों की चूं-चरर-मरर सुनाई देती रही और राइफिल डिवीजन के पीछे-पीछे चलने वाले लोग सड़क पर चलते रहे।

फुर्ती से मार्च करती हुई हेडक्वार्टर्स कम्पनी के साथ जुलूस खतम हुआ। कम्पनी मार्च करते हुए अपने एक सौ बीस कंठों से गाती जा रही थी :

कैसा है यह हो-हल्ला और कैसी सारी बकझक है
पेतल्युरा और उसके चेले हैं, इसमें क्या शक है...

पावेल कोर्चागिन खिड़की से बाहर झांकने के लिए उठा। भोर के धुंधलके में उसने सड़क पर गाड़ियों के खड़खड़ाने और बहुत से पैरों के मार्च करने की आवाज सुनी और सुना बहुत से कंठों को गाना गाते।

उसके पीछे से किसी की नर्म मद्धिम-सी आवाज आई :

"शहर में फौज आई है।"

कोर्चागिन घूमा।

बोलनेवाली वही लड़की थी जो एक रोज पहले वहां लाई गई थी।

कोर्चागिन उसकी कहानी सुन चुका था—उस शराब बेचनेवाली औरत ने खोद-खोद कर सारी बातें उससे मालूम कर ली थीं। वह शहर से करीब पांच मील दूर एक गांव में रहती थी जहां उसका बड़ा भाई ग्रित्स्को, जो अब लाल छापेमार था, गरीब किसानों की एक कमिटी का प्रधान रह चुका था।

जब बोल्शेविक वहां से चले तो ग्रित्स्को ने भी मशीनगन की पेटी अपनी कमर में बांधी और उनके संग चल दिया। अब मौजूदा अधिकारी उसके घरवालों के पीछे हाथ धोकर पड़े थे। ग्रित्स्को के घर में जो एक अकेला घोड़ा था, वह भी छीन लिया गया था। उसका बाप कुछ दिन जेल में भी रहा और वहां उसे बहुत-बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ा। गांव का चौधरी—जो उन लोगों में से था जिन पर ग्रित्स्को ने सख्ती से रोक लगाई थी—अब महज उन्हें सताने के लिए हमेशा उनके घर पर अजनबियों को लादता रहता था। परिवार अब बिल्कुल तबाह हो गया था। और अभी एक रोज पहले जब कमांडैण्ट एक तलाशी के सिलसिले में उस गांव आया था, तो चौधरी उसे लेकर उस लड़की के घर पहुंच गया। लड़की कमांडैण्ट साहब की आंख पर चढ़ गई और दूसरे रोज सबेरे वह उसको "पूछताछ के लिए" अपने संग शहर ले आया।

कोर्चागिन सो नहीं सका। किसी करवट उसे चैन नहीं आ रहा था। उसके दिमाग में एक ही सवाल चक्कर काट रहा था जिसको वह दिमाग से हटा नहीं पा रहा था और वह सवाल था : "अब इसके बाद क्या होगा ?"

उसका घायल जिस्म बुरी तरह दर्द कर रहा था। उस कौसेक सिपाही ने उसे बड़ी बेदर्दी से मारा था।

उसके दिमाग में तमाम बुरे-बुरे विचार भीड़ लगा रहे थे। उनसे बचने के लिए पावेल दोनों स्त्रियों की फुसफुसाहट सुनने लगा।

बहुत ही धीमी आवाज में, इतनी कि वह मुश्किल ही से सुनाई देती थी, लड़की बतला रही थी कि कैसे कमांडैण्ट ने उसे डराया-धमकाया, फुसलाया-

बहलाया और जब इतने पर भी उसने कमांडैण्ट को घुड़क दिया तो वह गुस्से से लाल-पीला होता हुआ बोला : "मैं तुम्हें एक तहखाने में बन्द कर दूंगा जहां तुम मुझसे नहीं बच सकोगी।"

कोठरी के कोनों-अंतरों में अंधकार छुपा बैठा था। और एक रात सामने थी—बेचैन दम घोंटनेवाली रात। कैद में यह पावेल की सातवीं रात थी। मगर उसको लगता था कि जैसे यहां उसे महीनों हो गये हैं। फर्श बहुत सख्त था और उसके शरीर के जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा था। अब उस पुराने मालगोदाम में तीन लोग थे। उस शराबवाली औरत को खोरूंजी साहब ने छोड़ दिया था ताकि वह जाकर कहीं से वोदका ले आये। बूढ़े दादा अपने ओठे पर पड़े इतने इतमीनान से खर्राटे भर रहे थे जैसे वह अपने घर की गर्म अंगीठी के ऊपर सो रहे हों; वह अपने दुर्भाग्य को बहुत धीरज और शान्ति के साथ सह रहे थे और रात भर गहरी नींद में सोते थे। ख्रिस्तिना और पावेल लगभग अगल-बगल फ़र्श पर लेटे हुए थे। कल पावेल ने खिड़की में से सर्गेई को देखा था जो बड़ी देर तक सड़क पर खड़ा उदास आंखों से मकानों की खिड़कियों को देखता रहा था।

पावेल ने सोचा था, "उसे पता है कि मैं यहां हूं।"

लगातार तीन दिन तक कोई उसके लिए खट्टीवाली काली रोटी लाया था—मगर कौन, यह पहरेदार न बतलाते थे। और दो दिन तक कमांडैण्ट ने बार-बार उससे सवाल पूछे थे।

इस सबका क्या मतलब है ?

पूछताछ के दौरान में उसने एक भी बात नहीं बतलाई; उलटे, हर चीज से उसने इनकार किया था। उसे खुद नहीं मालूम था कि वह क्यों चुप रहा। वह उन लोगों की तरह साहसी और मजबूत बनना चाहता था जिनके बारे में उसने किताबों में पढ़ा था। मगर उस रात जब वह जेल ले जाया जा रहा था और उसको कैद करने वालों में से एक ने कहा था, "हुजूर खोरूंजी, इसको फिजूल अपने साथ घसीटे ले चलने से क्या हासिल होगा ? इसका तो बस एक ही इलाज है : पीठ में एक गोली मारिए और खत्म कीजिए झंझट को," तो उसे डर लगा था। सचमुच, सोलह साल की उम्र में मरने का खयाल बड़ा भयानक था ! मरने का मतलब होगा कि वह फिर जिन्दा नहीं रहेगा।

ख्रिस्तिना भी सोच रही थी। उसे इस लड़के से ज्यादा बातें मालूम थीं। बहुत मुमकिन है कि इसे अभी मालूम ही न हो कि आगे इस पर क्या गुजरने वाली है...वही बात जो उसने चुपके से सुन ली थी।

वह रात को बिस्तर में पड़ा बेचैन करवटें बदलता रहा और सो नहीं सका। ख्रिस्तिना को उस पर दया आ रही थी। उसका मन पावेल के लिए

करुणा से भरा हुआ था, गो उसकी अपनी स्थिति भी उसकी छाती पर बोझ बनी हुई थी—कमांडैण्ट के इन शब्दों के भयावने अर्थ को भूलना नामुमकिन था : "कल मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा, अगर तुम मेरे संग नहीं आतीं तो मैं तुम्हें थाने में बन्द करवा दूंगा और फिर वहां के कौसेक पहरेदार तुम्हें छोड़ने से रहे। लिहाजा तुम्हारे ही ऊपर है यह चीज, जिसे चाहो चुन लो।"

ओह ! कितनी कठिन बात है यह ! किसी तरफ से रहम की कोई उम्मीद नहीं ! इसमें उसकी क्या गलती थी कि ग्रित्स्को बोल्शेविकों से जा मिला ? जिन्दगी भी कितनी बेदर्द चीज है !

एक भोंथा दर्द उसका गला घोंट रहा था और असहाय निराशा और भय की यंत्रणा में वह बड़े जोर-जोर से, मगर निःशब्द, सिसकियां ले रही थी जिससे उसका सारा शरीर कांप-कांप जाता था।

दीवार के पास कोने में एक छाया हिल रही थी।

"तुम क्यों रो रही हो ?"

भरे हुए दिल से ख्रिस्तिना ने दबे स्वर में अपने खामोश साथी को अपने दुःख की कहानी सुनाई। वह कुछ बोला नहीं, बस उसने अपना हाथ हल्के से उसके हाथ पर रख दिया।

अपने आंसुओं को पीते हुए डरे हुए स्वर में फुसफुसा कर लड़की ने कहा, "वे लोग मुझे सता सताकर मार डालेंगे। मुझे कोई चीज नहीं बचा सकती !"

पावेल इस लड़की से आखिर क्या कहता ? कहने के लिए कुछ भी नहीं था। जिन्दगी दोनों को अपने फौलादी शिकंजे में लेकर पीसे डाल रही थी।

एक चीज यह हो सकती है कि कल जब वे लोग इसको लेने के लिए आयें, तो वह डट कर उनका मुकाबिला करे। मगर उससे होगा क्या ? वे लोग मार-मारकर उसका भुर्ता बना देंगे या सिर पर तलवार का एक वार होगा जो काम तमाम कर देगा। मगर इस दुखी लड़की को, चाहे जैसे हो, वह आराम पहुंचाना चाहता था और शायद इसीलिए बड़े प्यार से उसके हाथ को थपथपा रहा था। लड़की का सिसकना बन्द हो गया। बीच-बीच में फाटक पर के सन्तरी का उधर से गुजरने वाले आदमी से घुड़क कर पूछना सुनाई दे जाता, "कौन जा रहा है ?" और फिर खामोशी छा जाती। बूढ़े दादा गहरी नींद में सो रहे थे। नातमाम मिनट धीरे-धीरे रेंग रहे थे। फिर पावेल ने उस लड़की की बांहों को अपने इर्द-गिर्द लिपटता महसूस किया और महसूस किया कि वह लड़की उसे अपनी तरफ खींच रही है। पावेल को बड़ा ताज्जुब हुआ।

"सुनो," उसके गर्म ओंठ धीरे-धीरे कह रहे थे, "मेरे लिए कोई बचत नहीं है। अगर यह अफसर नहीं तो थाने पर के वे पहरेदार, कोई-न-कोई मुझे

जरूर खराब करेगा। मैं तुमसे विनती करती हूं मेरे प्यारे, कि तुम मुझे ले लो ताकि वह कुत्ता मेरे शरीर को लेने वाला पहला व्यक्ति न हो।"

"यह तुम क्या कह रही हो, ख्रिस्तिना !"

मगर उन मजबूत बांहों ने उसे छोड़ा नहीं। उसके भरे-भरे गदराये हुए जलते हुए ओंठ उसके ओठों से जा लगे—उनसे बचना मुश्किल था। लड़की के शब्द सरल थे, कोमल थे, प्यार में डूबे हुए थे और पावेल को पता था कि वह क्यों ऐसे शब्द बोल रही है।

फिर उसके लिए उसके परिवेश का अस्तित्व मिट गया। दरवाजे पर का ताला, लाल बालों वाला कौसेक, कमांडैण्ट, वह बेरहम मार-पीट, वे सात दम घोंटनेवाली बेचैन निद्रा-विहीन रातें—सब कुछ भूल गईं और क्षण भर के लिए केवल वे जलते हुए ओंठ और वह आंसुओं से भीगा हुआ चेहरा रह गया।

तभी एकाएक उसे तोनिया की याद आई।

"उसको मैं कैसे भूल गया ? उसकी वे प्यारी-प्यारी आंखें जिनका कहीं कोई जवाब नहीं।"

उसने अपनी इच्छाशक्ति का सारा जोर लगाया और अपने को ख्रिस्तिना के आलिंगन से छुड़ा लिया। शराब पिये हुए आदमी की तरह वह लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा हुआ और जाकर सींखचे को पकड़ लिया। ख्रिस्तिना के हाथों ने वहां भी उसे पा लिया।

"क्यों, क्या बात है ?"

उसके मन का सारा आवेग इस सवाल में भरा हुआ था ! पावेल उसकी ओर झुका और उसके हाथों को दबाते हुए बोला :

"नहीं ख्रिस्तिना, मैं नहीं ... तुम इतनी ... अच्छी हो।" उसे खुद नहीं पता कि इसके अलावा उसने और क्या-क्या कहा।

इस असह्य शान्ति को तोड़ने के लिए वह फिर तनकर खड़ा हुआ और अपने ओठे पर चला गया। उसके सिरे पर बैठते हुए उसने बुड्ढे को जगा दिया।

"दादा, एक सिगरेट दो मुझे।"

वह लड़की अपने शॉल में लिपटी हुई कोने में बैठी रोती रही।

दूसरे रोज कमांडैण्ट कुछ कौसेक सिपाहियों के साथ आया और ख्रिस्तिना को पकड़ ले गया। जाते-जाते उसकी आंखों ने पावेल की आंखों को खोजा और पावेल ने पाया कि उन आंखों में शिकायत है। और जब वह चली गई और दरवाजा बन्द हो गया तो उसकी आत्मा पहले से कहीं ज्यादा उदास और सूनी हो गई।

सारे दिन बूढ़े दादा पावेल के मुंह से एक शब्द नहीं निकलवा सके। सन्तरी और कमांडैण्ट के गार्ड दोनों बदल गये थे। शाम होते-होते एक नया

कैदी लाया गया। पावेल ने उसे पहचान लिया। वह दोलिनिक था, शकर के कारखाने का एक बढ़ई। वह बहुत ठोस, मजबूत, चौड़ा-चकला आदमी था। एक पुराने तार-तार हो रहे कोट के नीचे वह उड़े-उड़े से पीले रंग की कमीज पहने हुए था। उसने गौर से कोठरी का मुआइना किया।

पावेल ने १९१७ के फरवरी महीने में उसे देखा था, जब क्रांति की थरथरी उनके शहर में पहुंची थी। उन दिनों जो शोर-गुल से भरे प्रदर्शन हुए थे, उनमें उसने सिर्फ एक बोल्शेविक को बोलते सुना था; और वह बोल्शेविक था यही दोलिनिक। वह सड़क से लगी हुई एक बाड़ी पर चढ़ गया था और वहां से उसने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए भाषण दिया था। पावेल को अब भी उसके अन्तिम शब्द याद थे :

"फौजी भाइयो, बोल्शेविकों के पीछे-पीछे चलो, वे तुम्हारे साथ दगा नहीं करेंगे!"

तब से उसने उस बढ़ई को नहीं देखा था।

बूढ़े दादा बड़े खुश थे कि उन्हें इस कोठरी में नया साथी मिला, क्योंकि जाहिर है कि दिन भर चुप-चाप बैठे रहना उन पर बहुत भारी गुजरता था। दोलिनिक ओठे के किनारे पर उनकी बगल में बैठ गया, उनके संग एक सिगरेट पी और सभी चीजों के बारे में उनसे पूछ डाला।

इसके बाद आगन्तुक कोर्चागिन के पास आया और उसने पूछा, "कहो मेरे नन्हें दोस्त, तुम यहां कैसे आए?"

पावेल ने एक-एक शब्द में जवाब दिया और दोलिनिक ने देखा कि पावेल के मन का सन्देह ही इसका कारण है। दोलिनिक को जब पावेल पर लगाये गये अभियोग की बात मालूम हुई, तो उसकी तीक्ष्ण आंखें आश्चर्य से फैल गईं और वह उस लड़के की बगल में जाकर बैठ गया।

"तो तुम्हारा कहना है कि तुमने जुखराई को छुड़ाया? बड़ी दिलचस्प बात है। मुझे नहीं मालूम था कि उन्होंने तुमको पकड़ लिया है।"

पावेल को दोलिनिक की बात से अचरज हुआ और वह अपनी कोहनी के सहारे उठ बैठा।

"मैं किसी जुखराई को नहीं जानता। इन लोगों को क्या, ये जिसको चाहें जो नाम लगा दें।"

दोलिनिक मुस्कराता हुआ उसके और पास आ गया।

"ठीक है, ठीक है, दोस्त। मगर मेरे संग इतना चौकन्ना होने की जरूरत नहीं। मुझे तुमसे ज्यादा बातें मालूम हैं।"

बहुत धीरे से ताकि वह बूढ़ा उनकी बात न सुन सके, दोलिनिक ने कहा :

"मैंने खुद जुखराई को विदा किया है, गालिबन वह अपनी मंजिल पर

पहुंच भी गया होगा। फियोदोर ने मुझे उस घटना के बारे में सब कुछ बतला दिया है।"

क्षण भर चुप-चाप विचार करने के बाद दोलिनिक ने अपनी बात में इतना और जोड़ा :

"मैं देखता हूं कि तुम ठीक धात के बने हो, दोस्त। गोकि यह बहुत बुरा हुआ कि उन्होंने तुमको पकड़ लिया और तुम्हारे बारे में उन्हें सब कुछ मालूम है। यह बुरा हुआ, बहुत बुरा, मैं तो यही कहूंगा।"

उसने अपना कोट उतारा और उसे जमीन पर बिछा कर उस पर दीवाल के सहारे टिक कर बैठ गया और अपने लिए एक और सिगरेट बनाने लगा।

दोलिनिक की आखिरी बात से पावेल के आगे पूरी स्थिति स्पष्ट हो गई। इसमें कोई शक नहीं कि दोलिनिक ठीक बात कह रहा है। उसने जुखराई को विदा किया था और इसका मतलब है...!

उस शाम को उसे पता चला कि दोलिनिक को पेतल्युरा के कौसेकों के बीच प्रचार करने के जुर्म में पकड़ा गया है। इतना ही नहीं, उसे सूबाई इंक-लाबी कमिटी की तरफ से जारी की हुई एक अपील बांटते पकड़ा गया था जिसमें सैनिकों से कहा गया था कि हथियार डाल दें और बोल्शेविकों से मिल जायें।

दोलिनिक ने सावधानी के ख्याल से पावेल को ज्यादा बातें नहीं बतलाईं।

उसने अपने मन में कहा, "कौन जाने ? सबों ने अगर कहीं इसे डंडे लगाये तो न जाने क्या हो ? आखिर लड़का ही तो है अभी।"

बहुत रात गए जब वे लोग सोने की तैयारी कर रहे थे, तो उसने अपने मन की आशंका इस प्रकार संक्षेप में व्यक्त की :

"तो कोर्चागिन, हम लोग खासे बुरे फंसे हैं, देखें कहां जाकर हमारा पानी मरता है।"

दूसरे रोज एक और नया कैदी लाया गया—बड़े-बड़े कानों और दुबली-पतली मरियल सी गर्दन वाला हज्जाम श्ल्योमा जेल्टसर जिसे शहर में हर कोई जानता था।

वह दोलिनिक को बहुत आवेश और भाव-भंगिमा के साथ बतला रहा था, "फुक्स, ब्लूवस्टाइन और ट्रेक्टेनबर्ग नमक-रोटी से उसका स्वागत करने जा रहे थे। मैंने उनसे कहा कि अगर तुम्हारा जी हो तो करो, मगर बाकी यहूदी लोग तुम्हारा साथ देंगे क्या ? नहीं देंगे, मैं तुमसे कहता हूं। उनको अपना भी तो नफा-नुकसान देखना है। फुक्स के पास अपनी दूकान है और ट्रेक्टेनबर्ग के पास आटे की चक्की है। मगर मेरे पास क्या है ? और बाकी भूखे लोगों के पास क्या है ? कुछ नहीं—भिखमंगे हैं हम सब और क्या ? तुम तो जानते ही हो कि मुझे अपनी जबान पर काबू नहीं, और आज जब मैं एक अफसर की दाढ़ी बना रहा

था—और कौन, वही जो नये आये हैं उनमें से एक—तो मैंने कहा : आपका क्या खयाल है, ऐटमन पेतल्युरा को इस सब मारकाट के बारे में पता है या नहीं ? क्या वे डेपुटेशन से मिलेंगे ?' अरे बाप रे बाप, कितनी बार मैं अपनी इस निगोड़ी जबान के कारण मुसीबत में न फंसा होऊंगा ! तो जब मैं बहुत करीने से उस अफसर की दाढ़ी बना चुका और ढंग से चेहरे पर पाउडर-साउडर लगा दिया तो जानते हो उस अफसर ने क्या किया ? वह उठा और मुझे पैसा देना तो दूर रहा, अधिकारियों के खिलाफ प्रचार करने के जुर्म में मुझे गिरफ्तार कर लिया।" जेल्टसर ने अपनी छाती ठोंकी और बोला, "अब तुम्हीं बताओ कि यह भी भला कोई प्रचार था ? आखिर मैंने क्या कह दिया ? मैंने उस आदमी से सिर्फ एक बात ही तो पूछी और...इसके लिए उन्होंने मुझे यहां लाकर बन्द कर दिया, वाह रे ..!"

अपने आवेश में जेल्टसर दोलिनिक की कमीज के एक बटन को मरोड़ने लगा और उसका हाथ पकड़ कर खींचने लगा।

दोलिनिक को बेसाख्ता मुस्कराहट आ गई जब उसने गुस्से में भरे श्ल्योमा की बात सुनी ।

हज्जाम की बात खतम होने पर दोलिनिक ने बड़ी गंभीरता से कहा, "हां श्ल्योमा तुम जैसे होशियार आदमी से ऐसी बेवकूफी की उम्मीद नहीं थी। तुमने बड़े बेमौके अपनी जबान की लगाम ढीली कर दी। मैं कभी तुम्हें यहां आने की सलाह न देता !"

जेल्टसर ने बात को समझने के अन्दाज में सिर हिलाया और हाथ से निराशा की मुद्रा व्यक्त की। तभी दरवाजा खुला और वह शराबवाली अन्दर ढकेली गई। वह लड़खड़ाती और अपने पहरेदार कौसेक सिपाही पर गालियों की बौछार करती हुई कोठरी में घुसी।

"तुमको और तुम्हारे कमांडैण्ट को तो धीमी आंच पर कवाब की तरह भूने ! उम्मीद तो करती हूं कि मेरी उस शराब को पीकर वह टें हो जायगा !"

सन्तरी ने जोर से फाटक बन्द किया। अन्दर के लोगों ने उसको बाहर ताला बन्द करते सुना।

वह औरत ओठे के सिरे पर बैठ गई तो उस बूढ़े ने खुश-खुश उससे कहा :

"अच्छा तो तुम फिर हमारे संग आ गई, अपनी बकबक की झड़ी लगाने को। बैठ जाओ आराम से।"

उस शराबवाली ने बूढ़े को गुस्से से तरेरा और अपनी पोटली उठा कर दोलिनिक के बगल में फर्श पर बैठ गई।

मालूम यह हुआ कि उसको सिर्फ इतनी देर के लिए छोड़ा गया था कि वह अपने कैद करने वालों के लिए समोगन शराब की कुछ बोतलें ले आये।

एकाएक बगलवाले सन्तरियों के कमरे से चीख-पुकार और भागते हुए पैरों की आवाज सुनाई दी। कोई कुत्ते की तरह भूंक-भूंककर हुक्म दे रहा था। कैदियों ने उस आवाज को ठीक से सुनने के लिए अपनी बात बन्द कर दी।

पुराने घंटाघर वाले उस बदसूरत गिर्जे के सामने फैले मैदान में कुछ अजीब कार्रवाइयां हो रही थीं। चौक के तीन तरफ फौजें आयताकार खड़ी थीं। ये रेगुलर पैदल फौज के डिवीजन की टुकड़ियां थीं, जो अपने लड़ाई के पूरे साज-सामान के साथ इकट्ठा की गई थीं।

गिर्जाघर के फाटक के सामने पैदल फौजों की तीन रेजिमेण्टें शतरंज के मोहरों की तरह वर्गाकार खड़ी थीं। उनके पीछे स्कूल की चहारदीवारी थी।

पेतल्युरा सैनिकों का यह भूरा-भूरा, गन्दा-सा समूह आराम की मुद्रा में राइफिलें लिए खड़ा था। ये सैनिक सिर पर लोहे के अजीब बेहूदा-से टोप औंधाये हुए थे जो देखने में ऐसे लगते थे कि मानो कुम्हड़े के दो बराबर-बराबर हिस्से हों। सैनिक अपनी कारतूस की पेटियों से बुरी तरह लदे हुए थे। डाइरेक्टरी के पास सबसे अच्छी डिवीजन यही थी।

ये लोग अच्छी वर्दियां पहने थे और पुरानी जारशाही सेना के साज-सामान से लैस थे। इनमें खास तौर पर धनी किसान थे जो हर बात को अच्छी तरह समझ-बूझकर सोवियत सत्ता के खिलाफ लड़ रहे थे। फौजी दृष्टि से इस अत्यंत महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन की रक्षा के लिए यह डिवीजन यहां लाई गई थी। शेपेतोवका से पांच दिशाओं में रेलवे लाइनें फूटती थीं जो देखने में लोहे के चमकदार फीते जैसी जान पड़ती थीं। पेतल्युरा के लिए इस जंक्शन के हाथ से निकल जाने का मतलब था, सब कुछ हाथ से निकल जाना। यों भी स्थिति यह थी कि "डाइरेक्टरी" के हाथ में अब बहुत थोड़ा सा इलाका बचा था और विनित्सा नाम का कस्बा ही अब पेतल्युरा की राजधानी थी।

"चीफ ऐटमन" साहब ने खुद फौजों का मुआइना करने का फैसला किया था और इस वक्त हर चीज उनके आने के इन्तजार में तैयार खड़ी थी।

पीछे दूर पर एक कोने में, जहां उन पर निगाह पड़ने की सबसे कम उम्मीद थी, नये रंगरूटों की एक रेजिमेण्ट खड़ी थी। ये नंगे पैर नौजवान तरह-तरह के बेमेल और भद्दे कपड़े पहने हुए थे। ये सब किसानों के लड़के थे जिन्हें भरती करने वाले दस्तों ने आधी रात को उनके बिस्तरों से उठा कर भरती कर लिया था या जिन्हें राह चलते पकड़ लिया था। उनमें से किसी का भी लड़ने का कोई इरादा नहीं था।

वे लोग आपस में कहते, "हमारा सिर नहीं फिर गया है।"

पेतल्युरा के अफसर ज्यादा से ज्यादा यही कर सकते थे कि इन रंगरूटों को फौजी पहरे में शहर लायें, उनकी कम्पनियां और बटालियनें बनाएं और उनको हथियार दें। इससे ज्यादा तो वे कुछ नहीं कर सकते थे। मगर होता यह था कि दूसरे ही रोज इनमें से एक-तिहाई रंगरूट, जो भेड़-बकरियों की तरह इकट्ठा किये गए थे, अचानक गायब हो जाते थे और इस तरह उनकी तादाद रोज-ब-रोज कम होती जाती थी।

ऐसी हालत में उन्हें बूट देना तो नासमझी की बात होती और खास तौर पर ऐसी हालत में जब कि बूटों का स्टाक कम ही था। तो भी हुक्म जारी किया गया कि भर्ती किये हुए सब लोग बूटों के लिए अपने-आपको रिपोर्ट करें। फलस्वप धागों और तारों से बांधे गये फटे-पुराने जूतों की एक अजीबो-गरीब बारात लग गई।

उन्हें परेड के लिए नंगे पांव बाहर निकाला गया।

पैदल सिपाहियों के पीछे गोलुब की घुड़सवार रेजिमेन्ट खड़ी थी।

शहर के तमाम लोग मारे कुतूहल के परेड देखने आये थे। उनकी भीड़ को घुड़सवार रोकें हुए थें।

आखिरकार खुद "चीफ ऐटमन" साहब तशरीफ लाने वाले थे, कोई ऐसी-वैसी बात थोड़े ही थी। इस तरह की घटनाएं शहर में बहुत कम ही होती थीं। इसलिए कोई भी आदमी इस फोकट के मनोरंजन को हाथ से नहीं जाने देना चाहता था।

गिर्जाघर की सीढ़ियों पर तमाम कर्नल और कप्तान, पादरी की दोनों लड़कियां, मुट्ठी भर उक्रेनी स्कूल मास्टर, थोड़े से "आजाद कौसेक" और मेयर साहब जिनकी कूबड़ निकली हुई थी--कहने का मतलब यह कि शहर के सभी धनी-मानी लोग जनता के रूप में वहां खड़े थे और उन्हीं में थे पैदल सेना के इन्स्पेक्टर जनरल, जो काकेशस वालों की पोशाक चेरकेस्का पहने हुए थे। वही परेड के आला अफसर थे।

गिर्जे के अन्दर पादरी वासिली साहब अपने ईस्टर के कपड़े पहन रहे थे।

पेतल्युरा का स्वागत करने की बड़ी धूम-धाम के साथ तैयारियां हो रही थीं। नये भरती रंगरूटों को स्वामिभक्ति की शपथ लेनी थी और इसके लिए एक पीला और नीला झण्डा बाहर लाया गया था।

डिवीजन कमांडर एक पुरानी जर्जर फोर्ड मोटर में बैठ कर पेतल्युरा से मिलने के लिए स्टेशन चले।

उनके चले जाने पर पैदल सेना के इन्स्पेक्टर ने कर्नल चेर्नायिक को बुलाया। यह एक लम्बा-तगड़ा अफ़सर था और बहुत बांकपन से उसने मूंछें ऐंठ रखी थीं।

"किसी को अपने साथ ले लो और जाकर देखो कि कमांडैण्ट का दफ्तर और हज्जाम-अर्दली वगैरह सब ठीक हैं या नहीं। अगर तुम्हें वहां कुछ कैदी मिलें तो उन्हें देख लेना और उनमें जो एकदम बेकार हों उनसे छुट्टी पा लेना।"

चेर्नायक ने अटेन्शन की मुद्रा में खड़े होते हुए सलाम किया, ठक्क से उसके बूटों की एड़ियां बोलीं। सबसे पहले जिस कौसेक कप्तान पर उसकी निगाह पड़ी, उसी को लेकर चेर्नायक सरपट घोड़े पर निकल गया।

इन्स्पेक्टर साहब बड़े तकल्लुफ से पादरी की बड़ी लड़की की ओर मुड़े।

"दावत की सब तैयारी ठीक है न ?"

"जरूर, जरूर। कमांडैण्ट साहब जान लड़ाये दे रहे हैं," लड़की ने खूबसूरत इन्स्पेक्टर को उत्सुकता से एकटक देखते हुए जवाब दिया।

एकाएक भीड़ में खलबली मच गई। एक घुड़सवार, अपने घोड़े की गर्दन पर झुका हुआ, सरपट भागा चला आ रहा था। हाथ हिलाते हुए चिल्लाकर उसने कहा :

"वे लोग आ रहे हैं !"

"फॉल इन !" इन्स्पेक्टर चिल्लाया।

सब अफसर अपनी-अपनी जगह के लिए दौड़ पड़े।

फोर्ड मोटर घड़र-घड़र करके गिर्जाघर तक पहुंची ही थी कि बैण्ड ने धुन बजानी शुरू कर दी : **"उक्रेन सदा जिन्दा रहेगा।"**

डिवीजन कमांडर के बाद "चीफ ऐटमन" बड़ी मशक्कत से गाड़ी से बाहर निकले। पेतल्युरा मझोले कद का आदमी था। उसका नुकीला सिर बहुत मजबूती से जमा कर उसकी लाल, सांड़ जैसी गर्दन पर रखा हुआ था। वह बहुत अच्छे ऊनी कपड़े की नीली ट्यूनिक पहने था जिस पर एक पीली पेटी लगी हुई थी। एक छोटा सा ब्राउनिंग रिवाल्वर साबड़ के केस में रखा इस पेटी में लगा हुआ था। उसके सिर पर खाकी रंग की छज्जेदार टोपी थी जिसके ऊपर इनेमल का त्रिशूल बना हुआ था।

साइमन पेतल्युरा की आकृति में कोई खास फौजी बात न थी। सच बात तो यह है कि वह फौजी आदमी मालूम ही नहीं होता था।

उसने इन्सपेक्टर की पूरी रिपोर्ट सुनी। उस वक्त उसके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो वह चीज उसे बहुत अप्रिय लग रही हो। उसके बाद मेयर ने उसके स्वागत में भाषण दिया।

पेतल्युरा ने उड़े-उड़े ढंग से उसको सुना और मेयर के सिर के पीछे से, सामने खड़ी रेजिमेंटों को देखता रहा।

उसने इन्सपेक्टर को इशारा किया, "अब हमें शुरू करना चाहिए।"

झंडे के पास के छोटे-से मंच पर खड़े होकर अपने सिपाहियों के सामने पेतल्युरा ने दस मिनट की एक तकरीर की।

इस तकरीर से किसी पर कोई असर नहीं पड़ा। सफर की थकान के कारण पेतल्युरा के बोलने में कोई जोश न था। तकरीर खतम होने पर सिपाहियों ने **"स्लावा ! स्लावा !"** के नारे लगाये और पेतल्युरा रूमाल से माथे का पसीना पोंछता हुआ मंच से उतरा। फिर, इन्सपेक्टर और डिवीजन कमांडर को साथ लेकर उसने फौजी दस्तों का मुआइना किया।

नये-नये भर्ती रंगरूटों की सफों के पास से गुजरने पर उसके माथे पर बल पड़ गए और उसकी आंखों में उपेक्षा और घृणा का भाव दिखाई दिया। चिढ़ के मारे वह अपने होंठ चबाने लगा।

जब मुआइना खतम होने आ रहा था और नये रंगरूटों की एक के बाद दूसरी प्लैटून झंडे तक मार्च करके—जहां पादरी वासिली बाइबिल हाथ में लिये खड़े थे—पहले बाइबिल को और बाद में झंडे को चूम रही थी, एक अप्रत्याशित घटना घटी।

किसी को नहीं मालूम कि ये लोग किस तरह चौक तक पहुंचे जहां परेड हो रही थी। मगर सबने देखा कि कुछ लोगों का एक प्रतिनिधि-मंडल पेतल्युरा के पास पहुंचा। इस दल के आगे-आगे लकड़ी का धनी व्यापारी ब्लुवस्टाइन था जो रस्मिया तौर पर रोटी और नमक हाथ में लिये हुए था। उसके पीछे और चार लोग थे जिनमें कपड़े का व्यापारी फुक्स भी था।

गुलामों की तरह झुक कर सलाम बजाते हुए ब्लुवस्टाइन ने तश्तरी पेतल्युरा की तरफ बढ़ाई। पेतल्युरा के संग खड़े एक अफसर ने तश्तरी ले ली।

"राज्याधीश, यहां की यहूदी आबादी आपके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करती है। कृपया इस अभिनन्दन-पत्र को स्वीकार करें।"

तेजी से उस कागज पर निगाह दौड़ाते हुए पेतल्युरा ने धीमे से कहा, "अच्छा।"

फुक्स आगे बढ़ा।

"हम आपसे विनती करते हैं कि आप हमें अपना कारबार चालू करने दें। हम आपसे विनती करते हैं कि आप मारकाट से हमारी रक्षा करें।" "मारकाट" शब्द पर फुक्स थोड़ा लड़खड़ाया।

गुस्से में पेतल्युरा की त्योरियों में बल पड़ गए।

"मेरी फौज मारकाट नहीं करती, यह बात तुम्हें याद रखनी चाहिए।"

फुक्स ने यों बांहें फैला दीं जैसे कह रहा हो कि आप जो कहते हैं वही ठीक है।

पेतल्युरा के कंधे हिले। इस प्रतिनिधि-मंडल के असमय आगमन से उसे

चिढ़ मालूम हो रही थी। वह गोलुब की ओर मुड़ा जो पीछे खड़ा अपनी काली मूंछें चबा रहा था।

"कर्नल साहब, यह आपके कौसेकों के खिलाफ शिकायत है," पेतल्युरा ने कहा। "इस मामले की छानबीन कीजिए और माकूल कार्रवाई कीजिए।" फिर इन्स्पेक्टर की तरफ मुड़ते हुए उसने खुश्क ढंग से कहा:

"अब तुम परेड शुरू कर दो।"

इस अभागे प्रतिनिधि-मंडल को सपने में भी गुमान नहीं था कि उन्हें गोलुब का सामना करना पड़ेगा। लिहाजा अब उन्होंने पीछे हटने की जल्दी दिखाई।

दर्शकों का सारा ध्यान अब मार्च-पास्ट की तैयारियों पर केन्द्रित था। सैनिकों को तेज स्वर में दिये गए आदेश गूंज रहे थे।

गोलुब का चेहरा ऊपर से बहुत शान्त दिख रहा था। वह ब्लुवस्टाइन की ओर बढ़ा और फुसफुसा कर ही, मगर काफी जोर से, कहा:

"काफिरो, यहां से भाग जाओ नहीं तो अभी तुम्हारा कीमा बना दूंगा।"

बैंड बजने लगे और पहली टुकड़ियां स्क्वायर में मार्च करने लगीं। पेतल्युरा के पास पहुंचने पर सैनिकों ने बेजान मशीनों की तरह "स्लावा" का नारा लगाया और बड़ी सड़क पर आगे बढ़ते हुए गलियों में गुम हो गए। कम्पनियों के आगे-आगे नई खाकी वर्दी पहने अफसर इस तरह चल रहे थे मानो हवाखोरी के लिए निकले हों। उनके हाथ की छड़ियां भी इसी तरह हिल रही थीं। सैनिकों के क्लीनिंग-रॉड की ही तरह अफसरों की इन छड़ियों का भी चलन अभी हाल में शुरू हुआ था।

नये रंगरूट परेड में सबसे पीछे-पीछे आ रहे थे। वे एक अनुशासनहीन भीड़ के समान थे। उनके कदम नहीं मिल रहे थे और वे एक-दूसरे को धक्का देते हुए चल रहे थे।

इन रंगरूटों को अफसर लोग बहुत कोंच रहे थे कि कुछ तो अनुशासन उनके अन्दर दिखाई दे, मगर बेसूद। ये रंगरूट जब गुजरे तो उनके नंगे पैरों की धीमी सरसराहट सुनाई दी। जिस वक्त दूसरी कम्पनी गुजर रही थी, सूती कमीज पहने एक किसान लड़का सलामी लेने के चबूतरे के पास ऐसे आश्चर्य से आंख फाड़कर "चीफ" ऐटमन को देखने लगा कि उसका एक पैर सड़क के एक गड्ढे में घुस गया और वह मुंह के बल गिर पड़ा। उसकी राइफिल जोर से आवाज करके सड़क के पत्थर पर लुढ़क गयी। उसने उठने की कोशिश की, मगर पीछे से सिपाहियों के धक्के से वह फिर गिर पड़ा।

दर्शकों में से कुछ खिलखिला कर हंस पड़े। कम्पनी की कतारें टूट गयीं

और वह बिल्कुल बदमली की हालत में स्क्वायर में से गुजरी। उस बदकिस्मत लड़के ने अपनी राइफिल उठाई और दूसरों के पीछे-पीछे दौड़ा।

पेतल्युरा ने इस भद्दे दृश्य से आंखें फेर लीं और परेड के खातमे का इन्तजार किये वगैर अपनी मोटर की तरफ चल दिया। इन्स्पेक्टर ने, जो ऐटमन के पीछे-पीछे चला आ रहा था, कुछ सहमे हुए स्वर में पूछा :

"क्या हुजूर ऐटमन साहब डिनर तक नहीं रुकेंगे ?"

"नहीं," पेतल्युरा ने तमाचा-सा मारते हुए जवाब दिया।

सर्गेई ब्रुजाक, वालिया और क्लिम्का, दर्शकों की भीड़ में, गिर्जे की चहारदीवारी से लगे हुए परेड देख रहे थे। सर्गेई छड़ पकड़े हुए, आंखों में नफरत भरे, नीचे खड़े लोगों के चेहरे देख रहा था।

"चलो चलें वालिया, ये लोग अब अपनी दूकान उठा रहे हैं," उसने जान-बूझकर तेज और उद्दंड स्वर में कहा और चलने के लिए मुड़ा। लोग हैरत से उसकी तरफ देखने लगे।

किसी की कुछ परवाह न करते हुए वह फाटक की ओर चल दिया। उसके पीछे-पीछे उसकी बहन और क्लिम्का भी चले गये।

कर्नल चेर्नायिक और कप्तान साहब घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए कमांडेंट के दफ्तर तक आये और अपने घोड़ों से उतर पड़े। अपने घोड़ों को फौज की डाक ले जाने वाले सवार को पकड़ा कर वे तेजी से संतरियों के कमरे में चले गये।

चेर्नायिक ने तेज आवाज में डाक ले जाने वाले सवार से पूछा : "कमांडेंट साहब कहां हैं।"

उस आदमी ने हकलाते हुए कहा, "पता नहीं। कहीं चले गये हैं।"

चेर्नायिक ने उस गन्दे कमरे में इधर-उधर नजर दौड़ाई और उन बिस्तरों को देखा जो अभी उठाये नहीं गये थे और जिन पर कमांडेंट के अंगरक्षक कौसेक सैनिक इतमीनान के साथ लेटे हुए पड़े थे। अफसरों के कमरे में दाखिल होने पर भी उन्होंने उठने की कोई कोशिश न की।

चेर्नायिक ने गरजकर कहा, "यह क्या सुअरों का सा बाड़ा बना रखा है ? और तुमको किसने इस तरह लेटने की इजाजत दी है ?" उसने चित लेटे हुए उन सिपाहियों को कस कर डांट बताई।

एक कौसेक उठ बैठा, डकार ली और गुर्राता हुआ बोला :

"क्यों टर्र-टर्र कर रहे हो ? इस काम के लिए हमारा अपना आदमी है जो काफी टर्रा लेता है !"

"क्या कहा !" चेर्नायक लपक कर उस आदमी की तरफ बढ़ा, "अबे हरामी के बच्चे, जानता है किससे बातें कर रहा है ? मैं कर्नल चेर्नायक हूं। सुना, सुअर कहीं के। फौरन उठ कर बैठो तुम सब लोग, वर्ना अभी मैं तुम सबों को कोड़े लगवाता हूं !" तैश खाया हुआ कर्नल सन्तरियों के कमरे में इधर-उधर तेजी से टहलने लगा। मैं तुमको एक मिनट देता हूं, यहां की सारी गलाजत साफ करो, बिस्तरों को ठीक करो और अपने इन सुअर जैसे चेहरों को भी जरा ठीक करो। तुम कौसेक सिपाही थोड़े ही मालूम होते हो। बिल्कुल लुटेरे मालूम होते हो, लुटेरे !"

गुस्से के मारे कर्नल साहब पागल हो रहे थे और उन्होंने रास्ते में पड़ी हुई गन्दे पानी की एक बाल्टी को जोर से एक ठोकर लगाई।

कप्तान साहब भी कुछ कम जोश में न थे और वह अपने गाली-गुफ्ते को अपना तीन तस्मे वाला चाबुक घुमा-घुमाकर और प्रभावशाली बना रहे थे। इस तरह उन्होंने सिपाहियों को अपनी जगहों पर से उठा दिया।

"चीफ ऐटमन साहब परेड का मुलाहिजा कर रहे हैं। किसी भी मिनट वह यहां आ सकते हैं। जल्दी ! जल्दी करो, जल्दी !"

यह देखकर कि मामला संगीन होता जा रहा है और कहीं ऐसा न हो कि उनके वाकई कोड़े पड़ने लगें—चेर्नायक की शोहरत उन्हें अच्छी तरह मालूम थी—कौसेक सिपाही दौड़-दौड़कर काम करने लगे।

पलक मारते ही काम पूरे जोर-शोर से होने लगा।

कप्तान ने सुझाव दिया, "हमें जरा एक नजर कैदियों पर भी डालनी चाहिए। पता नहीं किस-किस को यहां बन्द कर रखा हो। कहीं चीफ एटमन ने आकर देखा तो हमारी आफत आ जायगी।"

"चाभी किसके पास है ?" चेर्नायक ने संतरी से पूछा। "फौरन दरवाजा खोलो !"

एक सार्जेन्ट कूद कर खड़ा हुआ और फौरन उसने जाकर ताला खोला।

"कमांडैंट कहां है ? तुम समझते हो कि मैं कयामत के रोज तक उसका इन्तजार करता रहूंगा ? फौरन उसका पता लगाओ और यहां भेजो।" चेर्नायक ने हुक्म दिया, "तमाम संतरियों को बाहर चौक में जमा करो ! राइफिलों में संगीनें क्यों नहीं लगी हैं ?"

"अभी कल ही तो हम लोग आये हैं," सार्जेन्ट ने सफाई देने की कोशिश की और तेजी से कमांडैंट की तलाश में चला गया।

कप्तान ने पैर की ठोकर से मालगोदाम का दरवाजा खोला। अन्दर के कई लोग फर्श से उठ कर खड़े हो गये। पर बाकी लोगों में कोई हरकत नहीं हुई।

चेर्नायक ने हुक्म दिया, "दरवाजों को और अच्छी तरह खोल दो। यहां तो काफी रोशनी भी नहीं है।"

उसने कैदियों के चेहरों को गौर से देखा।

"क्यों जी, तुम यहां पर क्यों बन्द हो?" उसने ओठे के सिरे पर बैठे बुड्ढे आदमी से तड़ाक से पूछा।

बुड्ढा आधा उठा और अपने पतलून को ऊपर चढ़ाते हुए इस तेजी से पूछे गये सवाल से डर कर धीरे से बुदबुदाया:

"मुझे खुद नहीं मालूम। उन्होंने मुझे यहां बन्द कर दिया और तब से बन्द हूं। हाते में न जाने कैसे एक घोड़ा गायब हो गया था। मेरा उसमें कोई कसूर नहीं।"

"किसका घोड़ा?" कप्तान ने उसकी बात को बीच में काटा।

"फौज का घोड़ा, और किसका! मेरे यहां जो सिपाही टिकाये गये थे, उन्होंने उसको बेच कर सारी रकम पी डाली और अब मुझे दोष लगाते हैं।"

चेर्नायक ने तेजी से उस बुड्ढे पर निगाह दौड़ाई और अधीरता प्रकट करते हुए कंधे को उचका कर जोर से चीखा: "उठाओ अपनी चीजें और यहां से नौ दो ग्यारह हो जाओ!" फिर वह शराबवाली औरत की तरफ घूमा।

बुड्ढे को अपने कानों पर यकीन नहीं आया। अपनी आंखें, जो दूर की चीजें नहीं देख सकती थीं, मुलमुलाते हुए वह कप्तान की तरफ मुड़ा और बोला:

"क्या सचमुच चला जाऊं मैं?"

कौसिक सिपाही ने सिर हिला कर बतलाया कि वह जितनी जल्दी जा सके, अच्छा है।

जल्दी-जल्दी बुड्ढे ने ओठे के सिरे से झूलती हुई अपनी पोटली उठाई और तेजी से दरवाजे से बाहर हो गया।

"और तुम यहां क्यों बन्द हो?" चेर्नायक शराबवाली औरत से पूछ रहा था।

मिठाई के गस्से को निगलते हुए, जिसे वह कुछ देर से चभुला रही थी, औरत ने अपना पहले से ही तैयार जवाब झटपट पेश कर दिया:

"हुजूर, बड़ी बेइन्साफी की बात है जो मुझे यहां बन्द कर रखा है। जरा सोचिए तो, एक गरीब बेवा की शराब भी पी गये और उसे खामखा यहां बन्द भी कर दिया।"

चेर्नायक ने पूछा, "तुम्हीं तो नहीं हो वह शराब बेचने वाली?"

"बेचने वाली? आप भी कैसी बात करते हैं," उस औरत ने आहत

अभिमान के स्वर में कहा, "कमांडेंट साहब आये, चार बोतलें लीं और एक धेला भी नहीं दिया। यह तो हाल है; आपकी शराब पी जायें और पैसा भी न दें। यह भला बेचना कहलाता है ?"

"अच्छा-अच्छा, बहुत हो गया। अब दफा हो यहां से !"

उस औरत ने हुक्म के दोहराये जाने का भी इन्तजार नहीं किया। अपनी टोकरी उठाई और बड़ी कृतज्ञता से झुक कर सलाम करती हुई पीछे हटते-हटते दरवाजे से बाहर हो गयी।

"खुदा आपको सलामत रखे, हुजूर !"

दोलिनिक आंखें फाड़े उस मजाक को देख रहा था। किसी कैदी की समझ में न आ रहा था कि आखिर यह माजरा क्या है। बस, एक बात साफ थी, यानी यह कि ये लोग जो आये हैं, कोई बड़े अफसर हैं और उनकी किस्मत का वारा-न्यारा कर सकते हैं।

"और तुम ?" चेर्नायिक ने दोलिनिक से पूछा।

"जब हुजूर कर्नल बात करें तो खड़े हो जाया करो !" कप्तान ने कुत्ते की तरह भूंक कर कहा।

दोलिनिक धीरे-धीरे फर्श पर से उठ कर खड़ा हो गया।

"तुम यहां पर क्यों बन्द हो ?" चेर्नायिक ने अपना सवाल दोहराया।

कुछ क्षण तक दोलिनिक की आंखें कर्नल की बांकी अदा से ऐंठी मूंछों पर और उनके अच्छी तरह हजामत किये साफ चेहरे पर, फिर उनकी नई टोपी के छज्जे पर जिसमें इनेमल का बिल्ला लगा हुआ था, ठहरी रहीं। और तभी यह पागल विचार उसके दिमाग में कौंध गया : कौन जाने यह तरीका कारगर हो जाय।

"मुझे आठ बजे के बाद सड़क पर पाये जाने के जुर्म में पकड़ा गया था," पहली बात जो उसके मन में आई उसने कह दी।

जवाब के इन्तजार में उसका दिल जोर से धड़क रहा था।

"रात को तुम बाहर कर क्या रहे थे ?"

"रात कहां थी, बस करीब ग्यारह बजे थे।"

बोलते-बोलते ही उसको जैसे यह विश्वास न रह गया कि अंधेरे में छोड़ा हुआ उसका यह तीर कारगर होगा।

उसके घुटने कांप गए जब उसने यह संक्षिप्त सा आदेश सुना :

"बाहर निकल जाओ !"

दोलिनिक जल्दी-जल्दी दरवाजे में से बाहर निकल गया। हड़बड़ी में वह अपना कोट लेना भी भूल गया। कप्तान अब दूसरे कैदी से बात कर रहा था।

कोर्चागिन से सबसे बाद में पूछा गया। वह फर्श पर बैठा इस सारी कार-

वाई को स्तब्ध होकर देख रहा था। पहले उसे यकीन ही नहीं हुआ कि दोलिनिक को रिहा कर दिया गया है। वे लोग सबको इस तरह से छोड़ क्यों रहे हैं ? मगर दोलिनिक...दोलिनिक तो कहता था कि उसे करफ्यू तोड़ने के जुर्म में पकड़ा गया है...। तब यकायक उसे भी कोई बात सूझी।

कर्नल ने दुबले-पतले जेल्टसर से अपना वही हर बार का सवाल दुहराया, "तुम यहां पर क्यों बन्द हो ?"

हज्जाम, जो घबराहट के मारे पीला पड़ गया था, बोल पड़ा :

"वे लोग कहते हैं कि मैं आंदोलन कर रहा था, लेकिन मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि मैं काहे का आंदोलन कर रहा था।"

चेर्नायिक के कान खड़े हो गये।

"क्या कहा ? आंदोलन ? तुम किस चीज का आंदोलन कर रहे थे ?"

जेल्टसर ने अपनी हैरानी बतलाने के लिए बांहें फैला दीं। बोला, "मैं खुद नहीं जानता। मैंने सिर्फ यह कहा था कि चीफ ऐटमन साहब के पास भेजने के लिए लोग एक अर्जी पर यहूदियों से दस्तखत ले रहे थे।"

"किस तरह की अर्जी ?" चेर्नायिक और कप्तान दोनों बहुत डरावने तरीके से जेल्टसर की तरफ बढ़े।

"अर्जी यही थी कि मार-काट पर रोक लग जाय। आपको तो मालूम ही है कि पिछले दिनों हमारे यहां बहुत भयानक मारकाट हुई। सारे लोग डरे हुए हैं।

चेर्नायिक ने उसकी बात को बीच में काटते हुए कहा, "बस, बस ! इतना काफी है ! अबे गलीज यहूदी, हम लोग अभी तेरी सारी अर्जी निकाले देते हैं !" फिर कप्तान की तरफ घूम कर उसने तेज आवाज में कहा, "इसको ले जाकर ठीक से बन्द कर दो। इसको हेडक्वार्टर पर ले जाने का बन्दोबस्त करो, वहीं पर मैं इससे खुद बातें करूंगा : देखेंगे इस अर्जी वाले मामले के पीछे कौन लोग हैं।"

जेल्टसर ने प्रतिवाद करने की कोशिश की, मगर कप्तान ने अपनी चाबुक से उसकी पीठ पर जोर का वार किया।

"चुप, हरामजादे !"

दर्द से उसका चेहरा ऐंठ गया और वह लड़खड़ाता हुआ एक कोने में पहुंच गया। जेल्टसर के ओंठ फड़क रहे थे और वह अपने अन्दर से उठती हुई सिसकियों को बड़ी मुश्किल से दबा पा रहा था। सिसकियों से उसका गला रुंधा हुआ था।

अभी यह सब हो ही रहा था कि पावेल उठ कर खड़ा हो गया। अब मालगोदाम में जेल्टसर के अलावा वही अकेला कैदी बचा था।

चेर्नायक लड़के के सामने खड़ा था और अपनी तेज काली आंखों से गौर से उसके चेहरे को देख रहा था।

"और तुम यहां क्या कर रहे हो?"

कर्नल को सवाल का तुर्त-फुर्त जवाब मिला :

"मैंने घोड़े की जीन से थोड़ा-सा चमड़ा अपने जूते के तल्ले के लिए काट लिया था।"

"किसके घोड़े की जीन थी वह?" कर्नल ने पूछा।

"हमारे यहां दो कौसेक सिपाही ठहराये गए थे। मैंने उन्हीं की एक पुरानी जीन से कुछ चमड़ा अपने जूतों के तल्ले के लिए काटा था। इसीलिए कौसेक मुझे यहां पकड़ लाए।" शायद मैं रिहा हो सकता हूं, यह पागल आशा उसमें जागी। उसने इतना और जोड़ दिया, "मुझे मालूम नहीं था कि इसकी मनाही है...।"

कर्नल ने पावेल को चिढ़ कर देखा।

"इस कमांडेंट को क्या-क्या सूझता है, बड़ा मरदूद है! देखो तो कैसे-कैसे लोगों को उसने कैद कर रखा है!" दरवाजे की ओर मुड़ते हुए उसने चिल्ला कर कहा, "तुम घर जा सकते हो, मगर अपने बाप से कहना कि वह जरा तुम्हारी कुंदी कर दे। निकलो बाहर!"

अब भी पावेल को अपने कानों पर यकीन नहीं आ रहा था। उसका दिल ऐसे धड़क रहा था जैसे अभी फट जायगा। पावेल ने जल्दी से फर्श पर से दोलिनिक का कोट उठाया और दरवाजे की ओर भागा। भाग कर संतरियों के कमरे में से होता हुआ वह कर्नल की पीठ-पीछे हाते की खुली हवा में निकल गया। पलक मारते पावेल छोटे फाटक से होकर सड़क पर पहुंच गया था।

बदनसीब जेल्टसर मालगोदाम में अकेला रह गया। उसने परेशान आंखों से अपने इर्द-गिर्द देखा, अनायास दरवाजे की तरफ कुछ कदम बढ़ाये, मगर तभी एक संतरी आ गया। उसने दरवाजा बन्द कर दिया, ताला लगा दिया और दरवाजे के पास ही एक स्टूल पर बैठ गया।

बाहर बरसाती में अपने आपसे बहुत मगन चेर्नायक ने कप्तान से कहा :

"बड़ा अच्छा हुआ कि हमने इन लोगों को एक नजर देख लिया। जरा सोचो तो कि इस कमांडेंट ने कैसा-कैसा कूड़ा-करकट भर रखा था यहां— लगता है इसको दो-एक हफ्तों के लिए हमें बन्द करना पड़ेगा। अच्छा चलो, अब हम लोगों को यहां से चलना चाहिए।"

सार्जेन्ट ने अपने सिपाहियों को हाते में जमा कर लिया था। उसने कर्नल को देखा तो दौड़ कर आया और रिपोर्ट दी :

"सब कुछ ठीक है, हुजूर कर्नल साहब।"

चेर्नायक ने रकाब में एक बूट डाला और बड़ी सफाई से कूद कर घोड़े पर जा बैठा। कप्तान को उसका बददिमाग घोड़ा कुछ तंग कर रहा था। अपने घोड़े की रास खींचते हुए कर्नल ने सार्जेन्ट से कहा :

"कमांडेंट से बतला देना कि उसने जो तमाम कूड़ा-करकट यहां भर रखा था, मैंने उस सबको हटा दिया है। और यह भी बतला देना कि यहां का काम जिस बेहूदगी से उसने चलाया है, उसके लिए मैं उसे दो हफ्ते गार्ड हाउस में बन्द रखूंगा। और वह आदमी जो अन्दर है, उसे फौरन हेडक्वार्टर भेजो। पहरेदारों से कहना, होशियार रहें।"

"बहुत अच्छा, हुजूर कर्नल साहब," सार्जेन्ट ने सलाम किया।

अपने घोड़ों को एड़ लगाते हुए कर्नल और कप्तान सरपट उस स्क्वायर में पहुंचे जहां अब परेड खत्म होने आ रही थी।

पावेल ने कूद कर सातवीं बाड़ी पार की और थक कर खड़ा हो गया। अब उससे और नहीं चला जाता था। उस दमघोंटू मालगोदाम में बगैर खाये बन्द-बन्द उसकी सारी ताकत खतम हो गई थी।

अब कहां जाऊं? घर जाने का सवाल नहीं उठता। ब्रुजाक के यहां जाने पर अगर किसी ने वहां मुझे देख लिया, तो सारे घर वालों के सिर पर विपत्ति फट पड़ेगी।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह फिर अंधों की तरह दौड़ने लगा। शहर के छोर पर के साग-भाजी के खेत और मकानों के पिछवाड़े के बागीचे सब पीछे छूट गये। यकायक वह एक बाड़ी से जोर से जा टकराया, और तब जैसे उसे सहसा होश आया और उसने अपने आस-पास हैरान निगाहों से देखा—उस ऊंची बाड़ी के पीछे जंगलात के वार्डन का बागीचा था। अच्छा तो मेरी थकी हुई टांगें मुझे यहां ले आई हैं! वह कसम खाकर कह सकता था कि उसका कोई इरादा इधर आने का नहीं था। तब फिर वह इधर आ कैसे गया? इस सवाल का उसके पास कोई जवाब नहीं था।

मगर फिर भी कुछ देर उसे आराम तो करना ही है; सारी परिस्थिति पर उसे गौर करना था और अपने अगले कदम के बारे में तय करना था। उसे याद आया कि बाग के छोर पर एक ग्रीष्म-कुंज है। वहां पर उसे कोई नहीं देख सकेगा।

जोर लगाकर वह वाड़ी पर चढ़ा और दूसरी तरफ नीचे बाग में कूद गया। मकान पर उड़ती-उड़ती सी निगाह डालते हुए, जो पेड़ों के बीच से मुश्किल से दिखाई दे रहा था, वह ग्रीष्म-कुंज की तरफ बढ़ चला। उसे यह

देख कर बड़ी परेशानी हुई कि वह जगह लगभग सभी तरफ से एकदम खुली हुई थी। जंगली अंगूर की बेल, जो गरमी के दिनों में घनी होकर उस पर छा जाती थी, सूख कर झड़ चुकी थी और अब वह जगह एकदम नंगी थी।

वह वापस जाने के लिए मुड़ा, मगर इसके लिए अब बहुत देर हो गई थी। उसके पीछे से कुत्ते के जोर-जोर से भूंकने की आवाज आ रही थी। वह घूमा और उसने घर से इधर को आने वाले पत्तियों से ढंके रास्ते में एक बड़े से कुत्ते को देखा जो उसी पर झपटा आ रहा था। उसकी भीषण गुर्राहट बाग की निस्तब्धता को चीर रही थी।

पावेल ने अपने को बचाने की तैयारी की। कुत्ते के पहले हमले को उसने एक जोर की ठोकर से बेकार कर दिया। मगर वह जानवर उस पर दुबारा झपटने की तैयारी कर रहा था। कहा नहीं जा सकता कि इस लड़ाई का क्या अन्त होता, अगर उसी वक्त एक परिचित कंठ ने पुकार कर यह न कहा होता, "इधर आओ ट्रेसोर ! इधर आओ !"

तोनिया भागती चली आ रही थी। उसने ट्रेसोर के गले का पट्टा पकड़ कर उसे पीछे खींचा और बाड़ी के पास खड़े नौजवान से कुछ कहने के लिए उसकी तरफ मुड़ी।

"तुम यहां क्या कर रहे हो ? इस कुत्ते ने अभी तुम्हें बुरी तरह जख्मी कर दिया होता। वह तो कहो मैं..."

वह बीच ही में रुक गई। अचम्भे से उसकी आंखें फटी की फटी रह गई। यह अजनबी, जो उसके बागीचे में चला आया था, कोर्चागिन से कितना ज्यादा मिलता था !

बाड़ी के पास खड़ी हुई वह आकृति हिली।

"तोनिया !" उस नौजवान ने धीमे से कहा, "क्या तुम मुझे पहचानती नहीं ?"

"पावेल, तुम ?" तोनिया चीख पड़ी और आवेग से उसकी तरफ बढ़ी।

ट्रेसोर ने तोनिया के चिल्लाने को अपने लिए हमले का सिगनल समझा और तेजी से आगे लपका।

"ट्रेसोर, ट्रेसोर चुप रहो !" तोनिया ने उसे दो-चार थप्पड़ लगाये और वह आहत अभिमान की मुद्रा में, जैसे उसके साथ बड़ा अन्याय किया गया हो, अपनी दुम टांगों के बीच दबाये, सिर नीचा किये, धीरे-धीरे मकान की तरफ लौट गया।

पावेल के हाथों को बहुत प्यार से पकड़े हुए तोनिया ने कहा, "अच्छा, तो तुम छूट गये?"

"तो तुम्हें सब पता था?"

"मुझे सब पता है," तोनिया ने सांस रोके-रोके कहा, "लिजा ने मुझको वतलाया था। मगर तुम यहां आये कैसे? क्या उन लोगों ने तुम्हें रिहा कर दिया?"

"हां, मगर गलती से," पावेल ने थके हुए अन्दाज में जवाब दिया, "मैं भाग आया। मेरा खयाल है, अब वे मुझे ढूंढ़ रहे होंगे। मुझे खुद नहीं मालूम कि मैं यहां कैसे आ गया। मैंने सोचा कि मैं तुम्हारे ग्रीष्म-कुंज में कुछ देर आराम करूंगा। मैं बेहद थका हुआ हूं," उसने माफी मांगने के अन्दाज में कहा।

तोनिया ने दो-एक पल उसकी ओर एकटक देखा और उसका मन पावेल के प्रति करुणा और प्यार तथा चिन्ता और खुशी से भर उठा, जैसे एक लहर सी आई और उसके ऊपर होकर बह गई।

"पावेल, मेरे प्यारे पावेल," पावेल के हाथों को मजबूती से अपने हाथों में थामे-थामे तोनिया ने कहा, "मैं तुम्हें प्यार करती हूं...सुना तुमने? मेरे हठीले दोस्त, तुम उस बार चले क्यों गये थे? अब तुम हमारे हो, मेरे हो। मैं तुम्हें किसी तरह जाने न दूंगी। हमारा घर अच्छा है और शान्त है और तुम जितने दिन चाहो हमारे पास रह सकते हो।"

पावेल ने सिर हिलाया।

"अगर उन लोगों ने मुझे यहां ढूंढ़ निकाला तो? नहीं, मैं तुम्हारे घर नहीं ठहर सकता।"

तोनिया के हाथ उसकी उंगलियों को दबा रहे थे, तोनिया की पलकें फड़क रही थीं और उसकी आंखों में चमक थी।

"अगर तुमने इनकार किया तो मैं तुमसे कभी नहीं बोलूंगी। आर्तेम यहां नहीं है, पुलिस के पहरे में उसे इंजन चलाने के लिए ले जाया गया है। सारे रेलवे मजदूर बटोरे जा रहे हैं। तुम जाओगे कहां?"

पावेल को भी यही चिन्ता थी। मगर यह डर कि वह उस लड़की को जिसे वह इतना प्यार करने लगा था, खतरे में डाल देगा, उसको वहां ठहरने से रोक रहा था। लेकिन आखिर उसने तोनिया की बात मान ली, क्योंकि अपने भयानक तजुर्बों के कारण वह बहुत थक गया था और भूखा था।

जिस वक्त वह तोनिया के कमरे में सोफे पर बैठा हुआ था, उस वक्त मां-बेटी के दरम्यान बावर्चीखाने में यह बातचीत चल रही थी:

"सुनो मां, कोर्चागिन मेरे कमरे में है। तुम्हें याद है न, मैं उसे पढ़ाती थी। मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाना चाहती। उसने एक बोल्शेविक मल्लाह को भाग निकलने में मदद दी थी और इसीलिए उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। अब वह कैद से भाग आया है। मगर उसके पास कहीं जाने को

जगह नहीं है।" तोनिया की आवाज कांप रही थी। "मेरी प्यारी मां, उसे कुछ समय तक यहां ठहर जाने दो।"

मां ने अपनी बेटी की याचना भरी आंखों को गौर से देखा जैसे उनमें कुछ पढ़ना चाहती हो।

"बहुत अच्छा, मुझे कोई एतराज नहीं है। मगर तुम उसे ठहराओगी कहां?"

तोनिया लाज के मारे लाल हो गई, "वह मेरे ही कमरे में सोफे पर सो सकता है," उसने बहुत घबराये-से स्वर में कहा, "फिलहाल हम पापा को कुछ भी नहीं बतलाएंगे।"

मां ने उसकी आंखों में आंखें डाल कर देखा।

"क्या इसी के लिए तुम इधर इतनी परेशान थीं?" उसने पूछा।

"हां।"

"मगर अभी तो वह बिल्कुल छोकरा है।"

"मैं जानती हूं।" तोनिया ने घबराहट में अपने ब्लाउज की आस्तीन पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया। "लेकिन अगर वह भाग न आया होता, तो उसे जरूर गोली मार दी गई होती।"

एकातेरीना मिखाइलोवा को स्पष्ट ही अपने घर में कोर्चागिन के रहने से डर मालूम हो रहा था। उसकी गिरफ्तारी और फिर अपनी बेटी का एक ऐसे लड़के से स्पष्ट ही इतना प्यार जिसे वह ठीक से जानती भी नहीं, दोनों ही बातों से उसका मन अस्थिर हो रहा था।

मगर तोनिया, मसले को तय समझ कर, अब यह सोच रही थी कि मेहमान के आराम के लिए क्या करना चाहिए।

"मां, पहले तो उसे नहाना जरूरी है। मैं अभी इसका इन्तजाम करती हूं। बहुत गंदा हो रहा है वह—जैसे चिमनी साफ करने वाला हो। उसको नहाये जमाना बीत गया होगा।"

यह कह कर वह नहाने के घर में पानी गरम करने और पावेल के पहनने के लिये साफ कपड़े निकालने चली गई। जब सब कुछ ठीक हो गया तो वह तेजी से कमरे में आई, पावेल की बांह पकड़ी और कुछ समझाने-बुझाने में वक्त बरबाद किये बिना तेजी से उसे गुसलखाने में ले गई।

"तुम्हें अपने कपड़े बिल्कुल बदल डालने चाहिएं। तुम्हारे पहनने के लिये यह एक सूट रखा है। तुम्हारे कपड़ों को धोना होगा, तब तक तुम इसको पहन सकते हो," कह कर उसने कुर्सी की तरफ इशारा किया जिस पर एक नीले रंग का सफेद धारी वाला जहाजी ब्लाउज और पतलून रखा हुआ था।

पावेल ने अचम्भे से देखा। तोनिया मुस्कराई।

बात को साफ करते हुए उसने कहा, "मैंने उसे एक बार एक फैन्सी-ड्रेस नाच में पहना था। तुम्हारे लिए बिल्कुल ठीक रहेगी वह चीज, कोई बुराई नहीं। अच्छा अब जल्दी करो। जब तक तुम नहाते हो, मैं तुम्हारे लिए खाने को कुछ ले आती हूं।"

वह बाहर चली गई और दरवाजे को बन्द कर दिया। अब पावेल के लिए इसके सिवा कोई चारा न था कि कपड़े उतारे और टब में जा बैठे।

घंटे भर बाद मां, बेटी और पावेल, तीनों रसोई में खाना खा रहे थे।

पावेल को बुरी तरह भूख लगी थी और इसके पहले कि उसे इस बात का ख्याल भी आये, वह तीन बार रकाबी में से खाना ले-लेकर खा चुका था। पहले उसे एकातेरीना मिखाइलोवना के सामने कुछ झिझक मालूम हो रही थी, मगर जब उसने उनके बर्ताव में भी सगापन पाया तो पिघल गया और उसकी झिझक दूर हो गई।

खाना खाने के बाद वे तीनों तोनिया के कमरे में आये और एकातेरीना मिखाइलोवना के कहने पर पावेल ने अपनी कहानी सुनाई।

"अब तुम्हारा क्या करने का इरादा है?" पावेल की कहानी खत्म होने पर एकातेरीना मिखाइलोवना ने पूछा।

पावेल ने थोड़ी देर तक सवाल पर विचार किया, फिर बोला, "सबसे पहले मैं आर्तेम से मिलना चाहता हूं और फिर मुझे यहां से चले जाना होगा।"

"मगर तुम जाओगे कहां?"

"मेरा ख्याल है, मैं उमान या हो सकता है कीव पहुंच सकता हूं। मुझे खुद कुछ ठीक नहीं मालूम। मगर इतना जानता हूं कि यहां से मुझे जल्द से जल्द चले जाना चाहिए।"

पावेल को यकीन नहीं आ रहा था कि इतनी जल्दी सब कुछ बदल सकता है। अभी सुबह वह गन्दी गोठरी में था और अब यहां साफ-साफ कपड़े पहने तोनिया के पास बैठा था। सबसे बड़ी बात यह कि वह आजाद था।

उसने सोचा, जिन्दगी क्या-क्या अजीब मोड़ लेती है। क्षण भर पहले आसमान रात की तरह अंधेरा नजर आता है और फिर तभी दूसरे ही क्षण सूरज चमकने लग जाता है। अगर उसे फिर पकड़े जाने का डर न होता, तो इस वक्त वह दुनिया का सबसे खुश आदमी होता।

मगर वह जानता था कि इस वक्त भी, जब वह इस बड़े और शान्त घर में बैठा हुआ है, उसके फिर पकड़ लिये जाने का अन्देशा है। उसे यहां नहीं रहना चाहिए, यहां से चले जाना चाहिए—चाहे जहां। फिर भी, वहां से चले जाने का ख्याल उसे जरा भी अच्छा नहीं मालूम हो रहा था। बहादुर गैरिबाल्डी के बारे में पढ़ने में कितना रोमांच मालूम होता था। मन ही मन

वह उससे कितनी ईर्षा करता था। मगर जरा गौर करो तो मालूम होता है कि गैरिबाल्डी की जिन्दगी कितनी कठिन थी, हर समय यहां से वहां भागते रहना। उसे, पावेल को, सिर्फ सात दिन मुसीबत और तकलीफ में गुजारने पड़े थे। मगर ऐसा मालूम होता था कि साल भर हो गया।

नहीं-नहीं, वीरों की बात कुछ और ही होती है, उस जैसे नहीं होते वे।

"क्या सोच रहे हो तुम ?" तोनिया ने उसकी तरफ झुकते हुए पूछा। उसकी नीली आंखों की गहराई पावेल को असीम मालूम हुई।

"तोनिया, तुम्हें खिस्तिना के बारे में बतलाऊं ?"

"हां हां, जरूर," तोनिया ने आग्रह करते हुये कहा।

उसने तोनिया को अपने साथ की कैदी की दर्दनाक कहानी सुनाई।

पावेल ने जब अपनी कहानी खतम की, तो निस्तब्धता में दीवाल पर की घड़ी की टिक्-टिक् और जोर से सुनाई देने लगी। पावेल के शब्द बड़ी मुश्किल से निकल रहे थे, "...हमारी उससे वही आखिरी मुलाकात थी। उसके बाद फिर हमने उसे नहीं देखा।" तोनिया का सिर एक ओर को झूल गया और उसने अपने गले को रूंधने वाले आंसुओं को रोकने के लिए अपने ओंठ को कस कर दबाया।

पावेल ने उसको देखा और अन्तिम निश्चय के स्वर में कहा, "मुझे आज रात चले ही जाना होगा।"

"नहीं, नहीं, आज रात मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूंगी।"

वह उसके रूखे कड़े बालों को अपनी नाजुक, गरम उंगलियों से बड़े प्यार से सहला रही थी...।

"तोनिया, तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। किसी को स्टेशन जाना चाहिए और पता लगाना चाहिए कि आर्तेम का क्या हुआ। और सर्योजा के पास एक चिट्ठी भी ले जानी है। एक कौए के घोंसले में मैंने एक रिवाल्वर छिपाकर रखा है। मैं उसे जाकर लाने की हिम्मत नहीं कर सकता, मगर सर्योजा उसे लाकर मुझे दे सकता है। मेरा इतना काम कर सकोगी ?"

तोनिया उठ खड़ी हुई।

"मैं अभी, इसी वक्त, लिजा सुखार्को के पास जाऊंगी। हम दोनों साथ स्टेशन चले जायेंगे। तुम चिट्ठी लिख डालो, मैं उसे सर्योजा के पास ले जाऊंगी। कहां रहता है वह ? मान लो वह तुमसे मिलना चाहे, तो क्या मैं उसे बतला दूंगी कि तुम कहां हो ?"

पावेल ने जवाब देने के पहले क्षण भर विचार किया। "उससे कहना कि आज शाम को तुम्हारे बागीचे में ले आये।"

तोनिया को लौटने में बहुत देर हो गई। पावेल गहरी नींद में सो रहा

था। उसके हाथ के स्पर्श से वह जाग गया और उसने आंखें खोलीं तो तोनिया को खुशी से मुस्कराते हुए अपने पास खड़ा पाया।

"आर्तेम जल्दी ही यहां आयेगा। वह अभी-अभी लौट कर आया है। लिजा के बाप ने उसका जामिन होना कबूल कर लिया है और वे लोग आर्तेम को घंटे भर के लिए छोड़ रहे हैं। इंजन स्टेशन पर खड़ा है। मैं उसे यह तो बतला नहीं सकती थी कि तुम यहां हो। मैंने बस इतना कहा कि उससे मुझे कोई बहुत जरूरी बात कहनी है। लो, वह आ भी गया!"

तोनिया दरवाजा खोलने के लिए लपकी। आर्तेम जैसे अपनी आंखों का यकीन न करते हुए, स्तब्ध और मूक, दरवाजे पर खड़ा था। उसके अन्दर आ जाने पर तोनिया ने दरवाजा बन्द कर दिया ताकि उसके पिता, जो कि अपने पढ़ाई के कमरे में टाइफस से बीमार पड़े थे, उन लोगों की बातचीत न सुन सकें।

एक क्षण और गुजरा कि आर्तेम पावेल को अपनी बांहों में भर कर कस कर छाती से लगाए हुए था और जोर-जोर से कह रहा था, "पावेल! मेरे नन्हें पावेल! मेरे छोटे भाई!" भारी-भरकम आर्तेम के उस भालू-जैसे आलिंगन पाश में पावेल की तो हड्डियां चरमरा रही थीं।

तो यह बात तय हो गई; पावेल को अगले रोज ही वहां से चले जाना था। आर्तेम ब्रुजाक से कह देगा कि वह कजातिन जाने वाली एक गाड़ी में उसको अपने साथ लेता जाय।

आर्तेम, जो अमूमन बड़ा गम्भीर और खामोश आदमी था, अपने भाई के लिए इतने दिनों तक चिन्तित और परेशान रहने के बाद इस वक्त उसको पाकर खुशी से पागल हो रहा था।

"अच्छा, तो यह बात तय हो गई। कल सवेरे पांच बजे तुम मालगोदाम के पास रहना। जिस वक्त वे लोग ईंधन लाद रहे हों, तुम चुपचाप घुस जाना। मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं रुकूं और तुमसे बातचीत करूं। मगर मुझे लौटना है, जरूरी काम है। मैं कल जाते समय तुमसे मिलूंगा। वे लोग रेलवे मजदूरों की एक बटालियन बना रहे हैं। हम लोग सशस्त्र पहरे में लाये और ले जाये जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे जर्मनों के दिनों में।"

आर्तेम ने अपने भाई से छुट्टी ली और चला गया।

सांझ तेजी से घिरती आ रही थी। सर्गेई थोड़ी देर में पिस्तौल लेकर आता होगा। उसका इन्तजार करते हुए पावेल अंधेरे कमरे में बेचैनी से टहल रहा था। तोनिया और उसकी मां जंगलों के वार्डन के साथ थीं।

पावेल बाड़ी के पास अंधेरे में सर्गेई से मिला और दोनों दोस्तों ने कस कर एक-दूसरे से हाथ मिलाया। सर्गेई अपने साथ वालिया को भी लाया था। वे लोग धीमे-धीमे बात कर रहे थे।

सर्गेई ने कहा, "मैं अपने साथ रिवाल्वर नहीं लाया। तुम्हारे पिछवाड़े वाले हाते में पेतल्युरा के तमाम सिपाही भरे हुए हैं। सब जगह गाड़ियां खड़ी हैं और उन्होंने बड़ी-सी आग-वाग भी जला रखी है। इसलिए मैं रिवाल्वर उतारने के लिए पेड़ पर नहीं चढ़ सका। बड़ी शर्म की बात है।" सर्गेई बहुत उदास था।

पावेल ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, "कोई बात नहीं, शायद अच्छा ही हुआ कि तुम उसे नहीं लाये। अगर मैं रिवाल्वर के साथ कहीं रास्ते में पकड़ा जाता तो और भी बुरा होता। मगर तुम उसे ले जरूर आना।"

वालिया पावेल के और पास आ गई।

"तुम कब जा रहे हो?"

"कल, भोर होते ही!"

"तुम छूट कैसे आये, यह तो बताओ?"

जल्दी-जल्दी, मगर उसी मद्धिम आवाज में, पावेल ने उनको अपनी कहानी सुनाई। उसके बाद उसने अपने साथियों से छुट्टी ली। सर्गेई का असाधारण रूप से गम्भीर चेहरा उसके मन की हलचल का पता दे रहा था।

"खुदा हाफिज पावेल, हम लोगों को भूलना मत," वालिया ने रुंधी हुई आवाज में कहा।

और इसके बाद वे लोग चले गये। पलक मारते अंधेरा उन्हें निगल गया।

घर के अन्दर पूर्ण शांति थी। उस निस्तब्धता में सिर्फ घड़ी की नियमित टिक्-टिक् सुनाई दे रही थी।

उस घर के दो रहने वालों के लिए उस रात नींद का कोई जिक्र न था। वे सो भी कैसे सकते थे जब कि छः घंटों में उन्हें एक-दूसरे से अलग हो जाना था—और कौन जाने फिर कभी मुलाकात ही न हो। उस थोड़े से वक्त में उनके मन के भीतर जो असंख्य भावनाएं हलचल मचा रही थीं, उसको वाणी भी कोई कैसे देता?

यौवन, उदात्त यौवन, जब मन की वासना का पता भी ठीक से नहीं होता और खून की धड़कन में ही उसका धुंधला-सा आभास मिलता है; जब तुम्हारा हाथ प्रेयसी की छाती से अकस्मात् छू जाने पर कांप जाता है, जैसे सहम गया हो, और जब तुम्हारे यौवन की पवित्र मैत्री ही तुम्हें आखिरी कदम उठाने से रोक लेती है! जब उसकी बांहें तुम्हारे गले में हों और उसका जलता हुआ चुम्बन तुम्हारे ओठों पर—इससे मीठा भला और क्या हो सकता है।

अपनी तमाम दोस्ती के दौरान में इन दोनों ने दूसरी बार एक-दूसरे को

चूमा था। इसके पहले पावेल का दिल बहुत बार धड़का था, मगर अपनी मां को छोड़ कर और किसी के आलिंगन का स्पर्श उसे नहीं मिला था। और जब यह चीज मिली, तो जैसे उसे अन्दर-बाहर से समूचा झकझोर गई। अब तक उसे जीवन ने अपना कठोर निर्मम पहलू ही दिखलाया था और उसे नहीं मालूम था कि जीवन इतना रंगीन, इतना मधुर, इतना प्राणदायी भी हो सकता है। अब इस लड़की ने उसे सिखलाया कि सुख किसे कहते हैं।

पावेल ने उसके बालों की सुगंधि सांस के साथ खींची और उसे लगा कि वह उस अंधेरे में भी उसकी आंखों को देख रहा है।

"मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं, तोनिया! तोनिया मैं तुमसे बतला नहीं सकता कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूं—बतला नहीं सकता, क्योंकि जानता नहीं कि कैसे बतलाऊं।"

उसका दिमाग चक्कर खा रहा था। उसका वह लचीला शरीर जो बीन के कसे हुए तार की तरह उसके हलके से स्पर्श से बज सकता था...। मगर जवानी की दोस्ती बड़े पवित्र विश्वास की चीज होती है।

"तोनिया, जब यह तूफान खतम होगा, जब ये उलझनें सुलझ जायेंगी, तो जरूर मुझे मेकैनिक का काम मिलेगा। और अगर तुम्हें सचमुच मेरी जरूरत है, अगर तुम सचमुच मुझे चाहती हो और सिर्फ मेरे संग खेल नहीं कर रही हो, तो मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति बन सकूंगा। मैं कसम खाता हूं कि मैं कभी तुम्हें नहीं मारूंगा और न कभी कोई ऐसी बात करूंगा जिससे तुम्हारे दिल को चोट लगे।"

कहीं दोनों एक-दूसरे की बांहों में पड़े-पड़े सो न जायें, कहीं तोनिया की मां उन्हें देख न ले और उनके बारे में कुछ बुरा खयाल दिल में लाए, इस डर से दोनों अलग हो गए।

पौ फटने ही वाली थी जब उन्होंने एक-दूसरे से वादा किया कि वे कभी एक-दूसरे को न भूलेंगे और फिर वे सो गये।

एकातेरीना मिखाइलोवना ने पावेल को जल्दी ही जगा दिया। वह बिस्तर छोड़ कर उछल कर खड़ा हो गया। जब वह गुसलखाने में अपने कपड़े और बूट पहन रहा था और अपने कपड़ों पर दोलिनिक का कोट चढ़ा रहा था, तभी एकातेरीना मिखाइलोवना ने तोनिया को जगाया।

सवेरे के भूरे-भूरे से कुहासे में वे लोग जल्दी-जल्दी स्टेशन की ओर चले। जब वे पिछवाड़े के रास्ते से उस जगह पहुंचे जहां लकड़ियां रखी हुई थीं, उन्होंने आर्तेम को लदे हुए टेंडर के पास बेचैनी से अपना इंतजार करते पाया।

एक बहुत भारी और मजबूत इंजन भाप के बादल में घिरा हुआ सी-सी करता हुआ धीरे-धीरे पास आया। इंजन में से ब्रुजाक ने सिर निकाल कर देखा।

पावेल ने जल्दी से तोनिया और आर्तेम से विदा ली, लोहे का खंभा पकड़ा और कूद कर इंजन में चढ़ गया। पीछे मुड़ कर उसने क्रासिंग पर दो परिचित आकृतियों को देखा—आर्तेम की लम्बी आकृति और उसके बगल में तोनिया की छोटी-सी सुकुमार आकृति। हवा जैसे गुस्से में उसके ब्लाउज के कॉलर को फाड़े डाल रही थी और उसके सुनहले बाल उड़ रहे थे। तोनिया ने हाथ हिला कर उसको इशारा किया।

आर्तेम ने अपनी आंख की कोर से तोनिया को देखा और यह देख कर कि वह रोने ही वाली है, उसने लम्बी सांस ली।

उसने अपने मन में कहा, "मुझे पचास कोड़े मारो, अगर इन दोनों के बीच कोई मामला न हो। और मैं सोचता था कि पावेल अभी बच्चा ही है!"

आगे मोड़ पर पहुंच कर जब गाड़ी आंखों से ओझल हो गई तो आर्तेम तोनिया की तरफ मुड़ा और बोला: "क्यों, मुझसे दोस्ती करोगी?" और तोनिया का नन्हा-सा हाथ उसके बड़े-बड़े हाथों में खो गया।

दूर, गाड़ी के तेज रफ्तार पकड़ने की आवाज सुनाई दे रही थी।

सात

पूरे एक हफ्ते तक शहर, खाइयों से घिरा और कंटीले तारों में उलझा हुआ, तोपों की गड़गड़ाहट और राइफिलों की तड़तड़ की आवाज में ही रात को सोता था और उन्हीं की आवाज में सबेरे जागता था। सिर्फ बहुत भोर ही, बल्कि यूं कहिए कि जब रात खतम होने को होती थी, तभी यह शोर जरा कम होता था। मगर फिर भी, बीच-बीच में जब चौकियां एक-दूसरे का पता लगाने की गरज से गोले छोड़तीं तो वह निस्तब्धता भंग हो जाती थी। सबेरे-सबेरे लोग रेलवे स्टेशन के पास वाली बैटरी में व्यस्त हो जाते थे। तोप का लम्बा स्याह थूथन भयावने तरीके से आग उगलता था और फिर लोग जल्दी-जल्दी उसमें दुबारा लोहा और बारूद भर देते थे। हर बार जब तोपची तोप के पीछे वाली रस्सी को खींचता, तो पैरों के नीचे की धरती कांप जाती। शहर से दो मील दूर एक गांव पर, जो बोल्शेविकों के कब्जे में था, तोप के गोले डरावनी आवाज करते हुए बरसते रहते थे। उनकी आवाज में दूसरी सारी आवाजें डूब जाती थीं और गोले जहां गिरते, वहां धरती में से मिट्टी के फव्वारे फूट निकलते थे।

बोल्शेविकों की तोपें गांव के बीचोबीच एक ऊंची पहाड़ी पर जमी हुई थीं जहां पहले एक पोलिश मठ था।

इस तोपची टुकड़ी के फौजी कमिसार कामरेड जमोस्तिन उचक कर खड़े हो गए। वह एक तोप से अपना सिर टिकाये सो रहे थे। अब उन्होंने अपनी पेटी को कसते हुए, जिससे एक भारी माउजर पिस्तौल झूल रही थी, उड़ते हुए गोले की सांय-सांय को सुना और धड़ाके का इन्तजार करने लगे। और हाता उनकी भारी आवाज से गूंज उठा :

"साथियो, हम लोग कल अपनी नींद पूरी कर लेंगे। अब उठने का वक्त हो गया है।"

तोपची, जो अपनी-अपनी तोपों के पास सो रहे थे, कमिसार की तरह ही जल्दी से उछल कर खड़े हो गये। सिर्फ सिदोरचुक ने अनमने ढंग से सिर उठाया और नींद से भारी आंखों से इधर-उधर देखा।

"सुअर कहीं के—अभी रोशनी भी नहीं हुई और हरामजादों ने गोलाबारी फिर शुरू कर दी। बदमाश चिढ़ाने के लिए ऐसा करते हैं!"

जमोस्तिन हंसा।

"ये सब समाज-विरोधी लोग हैं सिदोरचुक, और नहीं तो क्या! इनको इतना भी खयाल नहीं रहता कि कोई सोना चाहता है।"

सिदोरचुक बड़बड़ाता हुआ उठा।

कुछ मिनट बाद मठ के हाते की तोपें भी अपना काम करने लगीं। शहर पर गोले बरसने लगे।

शकर के कारखाने की ऊंची चिमनी पर लकड़ी के पटरों का एक चबूतरा बनाया गया था और उस पर पेतल्युरा का एक अफसर और एक टेलीफोन वाला बिठाला गया था। चिमनी के भीतर-भीतर लोहे वाली सीढ़ी से वे लोग ऊपर चढ़े थे।

इस जगह से, जहां से उनको सारा शहर अच्छी तरह दिखाई देता था, वे तोप चलाने वालों को आदेश दे रहे थे। अपनी दूरबीनों से वे बोल्शेविक सिपाहियों की सारी गति-विधि को देख सकते थे। बोल्शेविक शहर का घेरा डाले हुए थे। आज वे विशेष रूप से सक्रिय थे। एक बख्तरबंद गाड़ी धीरे-धीरे पोडोल्स्क स्टेशन में दाखिल हो रही थी। वह बराबर गोली बरसा रही थी। उसके उस पार पैदल दस्ते दिखाई दे रहे थे। कई बार बोल्शेविक फौजों ने शहर पर कब्जा करने की कोशिश की। मगर पेतल्युरा के सिपाही शहर जाने वाले रास्तों पर मजबूती से जमे हुए थे। खाइयां आग उगल रही थीं, जिसके कारण हवा में बेपनाह शोर था और यही शोर हमलों के वक्त अनवरत गरजन का रूप ले लेता था। गोलियों के इस तूफान के आगे बोल्शेविक पांतें न

ठहर सकीं और मैदान में निर्जीव शरीरों को छोड़ कर पीछे हटने पर मजबूर हुई। उस तूफान को झेलना इंसान की ताकत के बाहर की चीज थी।

आज शहर पर पहले से ज्यादा और लगातार हमले किये जा रहे थे। हवा गोला-बारी की गूंज से कांप रही थी। चिमनी की उस ऊंचाई से बोल्शेविकों की पांतें बराबर आगे बढ़ती हुई देखी जा सकती थीं। लोग जमीन पर लेट जाते थे, फिर उठते थे और फिर पूरी ताकत से आगे बढ़ने लगते थे। अब उन्होंने स्टेशन को करीब-करीब ले ही लिया था। पेतल्युरा डिवीजन के पास जो रिजर्व टुकड़िया थीं, उन्हें मैदान में भेजा गया। मगर वे भी उस दरार को न भर सकीं जो बोल्शेविकों ने पैदा कर दी थी। बोल्शेविक सैनिक अब उस संकल्प से काम कर रहे थे जिसमें आगा-पीछा सोचने की गुंजाइश नहीं होती। उनके हमलावर दस्ते स्टेशन के पास वाली सड़कों पर बाढ़ के पानी की तरह भर उठे थे। स्टेशन की रक्षा करने वाली पेतल्युरा की डिवीजन की तीसरी रेजिमेन्ट शहर के छोर पर के उद्यानों और फलों के बागीचों की अपनी आखिरी जगह से निकाली जा कर शहर भर में बिखर गई थी। यह आखिरी लड़ाई, जिसने उनको वहां से निकाल बाहर किया था, बहुत छोटी मगर अत्यंत भयानक थी। इसके पहले कि वे लोग दुबारा अपने पैर जमा सकें, लाल सेना के सैनिक बड़ी तादाद में सड़कों पर भर उठे और उन्होंने अपनी संगीनों की मार से पेतल्युरा के उन सिपाहियों का सफाया कर दिया जिन्हें उनकी पीछे हटती सेना इसलिए छोड़ गई थी कि वह निर्विघ्न पीछे हट सके।

सर्गेई ब्रुजाक को उस तहखाने में रोक रखना नामुमकिन था जिसमें उसके घर वालों और करीब के पड़ोसियों ने पनाह ली थी। सर्गेई की मां उससे चिरौरी-विनती करती ही रही, मगर वह उस सर्द तहखाने में से कूदकर बाहर आ गया। एक बख्तरबन्द गाड़ी जिस पर **सगयदाचनी** लिखा हुआ था, अंधाधुंध गोलियां बरसाती हुई उसके घर के पास से गुजरी। उसके पीछे-पीछे डरे और घबराये हुए पेतल्युरा सिपाही सिर पर पैर रखकर भाग रहे थे। उनमें किसी तरह की कोई श्रृंखला बाकी नहीं बची थी। उनमें से एक सर्गेई के हाते में घुस आया। उसने जल्दी-जल्दी अपनी कारतूस की पेटी, अपने सिर पर का हेलमेट और राइफिल नीचे फेंकी और बाड़ी फांद कर गायब हो गया। सर्गेई ने सड़क पर निगाह दौड़ाई। पेतल्युरा के सिपाही दक्खिन-पश्चिमी स्टेशन वाली सड़क पर भागे आ रहे थे और एक बख्तरबन्द गाड़ी पीछे से उनकी हिफाजत कर रही थी। शहर को आने वाली बड़ी सड़क वीरान थी। तभी एक लाल सेना का आदमी दिखाई दिया। वह फुर्ती से जमीन पर लेट गया और सड़क पर गोली चलाने लगा। उसके पीछे एक के बाद एक लाल सेना के दो-एक और सिपाही दिखाई दिये...। सर्गेई ने उनको आते, लेटते, और फिर

उठ कर भागते हुए गोली छोड़ते देखा। एक कांसे के रंग का चीनी, जिसकी आंखें लाल-लाल थीं और जो सिर्फ एक बनियान पहने हुए था और जिसकी कमर में मशीनगन की पेटी लगी हुई थी, दोनों हाथों में एक-एक दस्ती बम लिये सीधा दौड़ रहा था। और उन सबके आगे एक लाल सेना का आदमी था जिसके हाथ में एक हल्की मशीनगन थी। आदमी भी उसे कैसे कहें, लड़का ही था। शहर में दाखिल होने वाले इन पहले लाल सैनिकों को देख कर सर्गेई का दिल खुशी से भर उठा। वह लपक कर सड़क पर पहुंचा और अपनी पूरी ताकत से चिल्ला कर बोला :

"जिन्दाबाद साथियो !"

इतने अप्रत्याशित रूप से वह भाग कर सड़क पर पहुंचा था कि उस चीनी से टकरा कर गिरते-गिरते बचा। उस लाल सैनिक की पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि झपट कर उस लड़के का काम तमाम कर दे। मगर लड़के के चेहरे पर खुशी का जो भाव था, उसे देख कर वह रुक गया।

"पेतल्युरा कहां है ?" उस चीनी ने जोर से हांफते हुए चिल्ला कर उससे पूछा।

मगर सर्गेई ने उसकी बात नहीं सुनी। वह दौड़ कर फिर अपने हाते में गया, पेतल्युरा सैनिक द्वारा फेंकी गई कारतूसों की पेटी और राइफिल उठाई और लाल सेना के सैनिकों के पीछे-पीछे दौड़ चला। दक्खिन-पश्चिमी स्टेशन पर कब्जा कर लेने के बाद ही उन्होंने इस लड़के को देखा। यहां, हथियारों और दूसरे रसद के सामानों की कई गाड़ियों को रोक कर और दुश्मन को जंगल में ठेल कर लाल सेना के सिपाही थोड़ा आराम करने और अपनी टुकड़ियों को ठीक करने के लिए रुके। वह नौजवान तोपची सर्गेई के पास आया और अचरज से पूछा :

"कामरेड, तुम कहां के रहने वाले हो ?"

"मैं इसी शहर का हूं। मैं तुम लोगों के आने का इन्तजार कर रहा था।"

देखते-देखते लाल सेना के तमाम सिपाही सर्गेई को घेर कर खड़े हो गये।

"मैं इसे जानता हूं," उस चीनी ने टूटी-फूटी रूसी में कहा, "इसने 'जिन्दाबाद साथियो' का नारा लगाया था। यह बोल्शेविक है, अच्छा आदमी है, हम लोगों के साथ है !" यह कहते हुए वह मुस्कराया और अपना सद्भाव दिखलाते हुए सर्गेई के कंधों को थपथपाया।

सर्गेई का दिल खुशी से बल्लियों उछल रहा था। उसको उन लोगों ने तत्काल अपने में शरीक कर लिया और वह भी संगीनों के उस हमले में उनके साथ था जिसके बाद स्टेशन पर कब्जा हुआ।

शहर में बड़ी हलचल थी। शहर के लोग, जो अब तक की अपनी

मुसीबतों से थक चुके थे, अपनी कोठरियों और तहखानों से निकले और अपने फाटकों पर खड़े होकर शहर में दाखिल होती हुई लाल फौज की टुकड़ियों को देखने लगे। तभी सर्गेई की मां और बहन वालिया ने सर्गेई को लाल सेना के सिपाहियों के साथ मार्च करते देखा। उसके सिर पर टोप नहीं था, मगर कमर में कारतूसों की पेटी बंधी थी और एक राइफिल कंधे से लटक रही थी।

एन्तोनीना वासीलिएवना को बहुत गुस्सा आ रहा था।

अच्छा ! तो उसका सर्योजा जाकर इस सब लड़ाई-दंगे में फंस गया ! चुकानी पड़ेगी इसकी कीमत। जरा इसका कलेजा तो देखो, सारे शहर के सामने राइफिल लेकर परेड कर रहा है ! जरूर आगे चल कर मुसीबत होगी। एन्तोनीना वासीलिएवना अपने को और काबू में न रख सकी और चिल्लाई :

"सर्योजा ! चल, इसी वक्त घर चल। आवारा कहीं का ! मैं अभी तुझे बतलाती हूं। अभी तेरी सारी लड़ाई निकाले देती हूं !" और वह इस पक्के इरादे से सड़क पर पहुंची कि लड़के को लौटा लायेगी।

मगर इस वार सर्गेई—उसका सर्योजा जिसे कई बार उसने थप्पड़ लगाये थे—दूसरा ही आदमी था। उसने कठोर आंखों से मां को देखा और अन्दर ही अन्दर शर्म और जिल्लत से जलते हुए पलट कर मां को जवाब दिया :

"चीखो मत ! मैं जहां हूं वहीं रहूंगा।" और बिना रुके आगे बढ़ गया।

गुस्से के मारे एन्तोनीना वासीलिएवना का बुरा हाल था।

"इसी तरह तुमको अपनी मां से बोलना चाहिए, क्यों ? अच्छा ! मगर अब घर आने की हिम्मत मत करना !"

सर्गेई बिना पीछे मुड़े चिल्ला कर बोला, "नहीं आऊंगा।"

एन्तोनीना वासीलिएवना परेशानी की हालत में सड़क पर खड़ी रह गई। उसके पास से मौसम की मार खाये हुए, गर्द से ढंके हुए सैनिकों की कतारें गुजरती रहीं।

"रो मत मां ! हम तुम्हारे बेटे को कमिसार बनाएंगे," एक तगड़े, हंसोड़ गले से निकली हुई आवाज सुनाई दी। प्लैटून के तमाम सिपाहियों में हंसी की एक लहर-सी दौड़ गई। कम्पनी के आगे-आगे चलने वाले लोगों ने कोरस गाना शुरू किया।

सुनो साथियो बिगुल बज उठा, अब अपनी बन्दूक सम्हालो
आजादी के देश बढ़ चलो, मिल कर अपनी राह निकालो !

सिपाही बड़ी बुलन्द आवाज से यह समवेत गान गा रहे थे और सर्गेई की गूंजती हुई आवाज भी संगीत की इस लहर में मिली हुई थी। उसे एक नया परिवार मिल गया था। इनमें एक संगीन लड़की भी थी, सर्गेई की।

लेशचिन्स्की के मकान के फाटक पर एक छोटी सी सफेद तख्ती लटक रही थी, जिस पर सिर्फ इतना लिखा था : "रेवकोम ।"[1] उसके बगल में एक बड़ा आकर्षक पोस्टर था जिसमें से एक लाल सैनिक तुम्हें अपनी ओर देखता नजर आता था और तुम्हारी ओर उंगली से इशारा करता हुआ कह रहा था : "बोलो, तुम लाल सेना में भरती हुए हो या नहीं ?"

राजनीतिक विभाग के लोग तमाम शहर में यह पोस्टर लगाने के सिलसिले में रात भर काम करते रहे थे । वहीं पास में शेपेतोवका की मेहनतकश जनता के नाम इन्कलाबी कमिटी का पहला घोषणापत्र भी टंगा हुआ था ।

> "साथियो ! सर्वहारा फौजों ने इस शहर पर कब्जा कर लिया है । सोवियत सत्ता फिर से कायम हो गई है । हम आपसे अनुशासन की मांग करते हैं । जनता को चूसने वाले खूनियों को निकाल बाहर किया गया है । लेकिन, अगर आप चाहते हैं कि वे फिर कभी न आयें, अगर आप उन्हें हमेशा के लिए खतम करना चाहते हैं, तो लाल सेना में भरती होइये । मेहनतकशों की राजसत्ता को अधिक से अधिक ताकत पहुंचाइए । इस शहर की फौजी व्यवस्था गैरिसन के प्रधान के हाथ में है । गैर-फौजी शहरी मामलों का प्रबंध इन्कलाबी कमिटी करेगी ।
>
> "द. : **दोलिनिक**
>
> "अध्यक्ष, इन्कलावी कमिटी ।"

लेशचिन्स्की के मकान में अब एक नई तरह के लोग दिखाई देने लगे । एक शब्द "कामरेड"—जिसके लिए कल तक लोगों को अपनी जान की कीमत अदा करनी पड़ती थी—आज चारों तरफ सुनाई दे रहा था; अनोखा, मर्मस्पर्शी शब्द, "कामरेड !"

दोलिनिक के लिए इन दिनों न नींद थी, न आराम । वह बढ़ई इन्कलाबी सरकार कायम करने में लगा हुआ था ।

एक छोटे से कमरे में कामरेड इग्नातियेवा बैठी हुई थीं । इस कमरे के दरवाजे पर कागज का एक छोटा सा टुकड़ा लगा था, जिस पर पेंसिल से लिखा हुआ था : "पार्टी कमिटी" । वह हमेशा की तरह शांत और अनुद्विग्न थीं । राजनीतिक विभाग ने उनको और दोलिनिक को सोवियत सत्ता कायम करने का भार सौंपा था ।

एक दिन और गुजरा और आफिस में काम करने वाले अपनी-अपनी मेजों पर बैठ गये और टाइपराइटर जोर-जोर से खटकने लगा । रसद पहुंचाने की

१. रेवोल्यूशनरी कमिटी, अर्थात् इन्कलाबी कमिटी ।

एक कमिसारियट, जोशीले, मगर कुछ बौखलाये हुए से, पिजीकी के नेतृत्व में कायम की गयी। पिजीकी पहले शहर की चीनी मिल में मेकैनिक का सहायक था। मगर अब उसने चीनी के कारखाने के मालिकों के खिलाफ जी-जान से कार्रवाई शुरू कर दी। कारखाने के ये मालिक बोल्शेविकों से बेइन्तहा नफरत करते थे और इस वक्त सिर झुकाये आनेवाले समय का इन्तजार कर रहे थे।

कारखाने के मजदूरों की एक सभा में पिजीकी ने कठोर और निर्मम शब्दों में स्थिति पर प्रकाश डाला।

पोलिश जबान में बोलते हुए, अपने शब्दों को अच्छी तरह लोगों के दिमाग में बिठलाने के लिए मेज पर जोर-जोर से मुट्ठी पटकते हुए, उसने कहा : "पुराना जमाना बीत गया और अब कभी लौट कर नहीं आयेगा। हमारे बाप-दादों ने और हमने सारी जिन्दगी पोटोकियों की गुलामी की है। मगर अब और नहीं! हमने उनके लिए महल बनाये और बदले में राजाधिराज काउंट महोदय ने हमें सिर्फ इतना दिया कि हम भूख से न मरें।

"कितने बरसों तक पोटोकी के काउंटों और सानगुजको के राजकुमारों ने हमारी पीठ पर सवारी की? न जाने कितने पोलिश मजदूर होंगे जिन्हें पोटोकी ने उसी तरह रौंदा जिस तरह उसने रूसियों और उक्रेनियों को रौंदा। कोई उनकी तादाद बतला सकता है? मगर फिर भी उनकी ढिठाई तो देखो, काउंट के दलाल मजदूरों के बीच यह अफवाह फैला रहे हैं कि सोवियत शासन उन सबको अपने फौलादी हाथों से दबा कर रखेगा।

"यह एक सफेद झूठ है, साथियो! आज से पहले अलग-अलग जातियों के मेहनतकशों को कभी ऐसी आजादी नहीं मिली थी। सारे मजदूर, सभी सर्वहारा भाई-भाई हैं। जहां तक इन अमीरों की बात है, आप यकीन रखिये हम उन्हें सिर नहीं उठाने देंगे।" पिजीकी का हाथ एक बार फिर जोर से घूम कर मेज पर गिरा। "कौन है वह जिसने भाई-भाई को लड़ा कर उन्हें एक-दूसरे का खून बहाने पर मजबूर किया? सदियों तक राजों और नवाबों ने पोलिश किसानों को तुर्कों के खिलाफ लड़ने के लिए भेजा। उन्होंने हमेशा एक जाति को दूसरी जाति के खिलाफ उकसाया है। जरा सोचिए, कितना खून बहा है और कितनी तबाही बरपा हुई है! और इस सबसे फायदा किसका हुआ? मगर अब और नहीं! अब यह चीज जल्द ही खत्म हो जायगी। उन घिनौने कीड़ों का अन्त आ गया है। बोल्शेविकों ने एक ऐसा नारा दिया है जिससे पूंजीशाहों के दिल डर के मारे थर-थर कांप रहे हैं। वह नारा है : 'दुनिया के मजदूरो, एक हो!' इसी में हमारी मुक्ति है, इसी में हमारे सुन्दर भविष्य की आशा है—उस दिन की आशा जब दुनिया के सारे मेहनतकश भाई-भाई होंगे। साथियो, कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो जाओ!

'एक न एक दिन पोलैंड में भी जनतंत्र कायम होगा। मगर वह जनतंत्र होगा सोवियत जनतंत्र, जिसमें पोटोकी और उस जैसे दूसरे पूंजीशाह न होंगे। उनकी जड़ें उखाड़ कर फेंक दी जायेंगी और सोवियत पोलैंड के मालिक हम लोग होंगे। ब्रोनिक पताशिन्स्की को आप सभी लोग जानते हैं। जानते हैं न ? इन्कलाबी कमिटी ने उन्हें हमारे कारखाने का कमिसार बनाया है। 'पहले हम कुछ नहीं थे, अब हम ही सब कुछ होंगे।' और यह सचमुच खुशी मनाने की बात है। है न साथियो ! बस एक बात का ध्यान रखो। उन छिपे हुए सांपों की जहरीली फुफकारों पर कान मत दो ! आओ, हम सब मेहनतकशों के अंतिम लक्ष्य में अपना विश्वास रखें और इसमें संदेह नहीं कि हम दुनिया भर की जनता में भाईचारा कायम कर लेंगे !"

ये बातें उस सीधे-सादे मजदूर के दिल की गहराइयों से निकल रही थीं, इसलिए उनके शब्द-शब्द में सच्चाई थी, ईमानदारी थी, जोश था। श्रोताओं में जो ज्यादा नौजवान थे, उनके बुलंद नारों के बीच पिजीकी प्लेटफार्म से उतरा। जो जरा अधेड़ उम्र के मजदूर थे, वे कुछ बोलने में हिचक रहे थे। कौन जाने कल फिर बोल्शेविकों को शहर छोड़ना पड़े और तब तो भाई हम लोग जो पीछे छूट जायेंगे, उन्हें एक-एक लफ्ज की कीमत अदा करनी पड़ेगी। इसलिए जरा संभल कर बोलना चाहिए। उस वक्त फांसी से चाहे बच भी जाओ, मगर नौकरी तो हाथ से गयी ही समझो।

शिक्षा का कमिसार, छरहरे कसे बदन का चेर्नोपिस्की उस इलाके का अकेला स्कूल मास्टर था जिसने अब तक बोल्शेविकों का साथ दिया था।

इन्कलाबी कमिटी जिस इमारत में थी, उसके ठीक सामने स्पेशल ड्यूटी कम्पनी थी; उसके आदमी इन्कलाबी कमिटी में ड्यूटी दे रहे थे। रात को एक मैक्सिम तोप इन्कलाबी कमिटी के हेडक्वार्टर के फाटक पर, वहीं बागीचे में तैयार खड़ी रहती थी। उसके पिछले हिस्से में कारतूसों की मजबूत पेटी लटकी रहती थी। उसके पास ही दो संतरी राइफिल लिए खड़े ड्यूटी देते रहते थे।

कामरेड इग्नातियेवा ने हेडक्वार्टर की ओर जाते हुए उन दो संतरियों में से एक से, जो नौजवान लाल सैनिक था, पूछा :

"तुम्हारी कितनी उम्र है, कामरेड ?"

"सत्रहवां चल रहा है।"

"तुम यहीं रहते हो ?"

लाल सैनिक मुस्कराया और बोला, "हां, मैं परसों ही लड़ाई के दौरान फौज में दाखिल हुआ हूं।"

इग्नातियेवा ने गौर से उसके चेहरे का अध्ययन किया और पूछा :

"तुम्हारे पिता क्या करते हैं ?"

"इंजन ड्राइवर के असिस्टेंट हैं।"

उसी वक्त दोलिनिक वर्दी पहने एक आदमी के साथ वहां आया।

इग्नातियेवा ने दोलिनिक की तरफ मुड़ते हुए कहा, "अच्छा हुआ तुम आ गये। मुझे कोमसोमोल की जिला कमिटी का चार्ज देने के लिए ठीक वह लड़का मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी। यहीं का रहने वाला है।"

दोलिनिक ने तेजी से सर्गेई पर नजर डाली—सर्गेई ही था यह।

"हां, बहुत अच्छा है। तुम जखार के लड़के हो न? बहुत अच्छा! डट कर काम करो और नौजवानों में, अपने बराबर वालों में, आन्दोलन करो।"

सर्गेई ने आश्चर्य से उन लोगों की ओर देखा और पूछा, "मगर कम्पनी का क्या होगा?"

"वह सब ठीक है, उसकी तुम फिक्र न करो," दोलिनिक ने सीढ़ियां चढ़ते हुए मुड़ कर जवाब दिया।

दो दिन बाद शाम होते-होते उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग की नगर कमिटी बन गयी थी।

सर्गेई इस नई जिन्दगी के भंवर में जी-जान से कूद पड़ा—उस नई जिन्दगी के भंवर में जो शहर में एकाएक और इतनी तेजी से शुरू हो गई थी। इस काम में सर्गेई ऐसा डूबा कि अपने घर वालों को भूल ही गया, गोकि वे लोग इतने पास थे।

हां! वह, सर्गेई ब्रुजाक, अब एक बोल्शेविक था। सौवीं बार उसने अपनी जेब से वह कागज निकाला जो उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की कमिटी ने उसे दिया था। यह कागज इस बात का सर्टिफिकेट था कि वह, सर्गेई, कोमसोमोल है और कोमसोमोल कमिटी का मंत्री है। और अगर इसमें किसी को कोई शक-शुबहा हो तो उसके पास उसके प्यारे दोस्त पावेल का उपहार वह शानदार मानलिकर पिस्तौल भी था जो जीन के केस में बन्द उसकी ट्यूनिक की पेटी से लटक रहा था। उससे ज्यादा अच्छा सर्टिफिकेट और क्या हो सकता है! कितने अफसोस की बात है कि पाव्लुश्का यहां नहीं है।

इन्कलाबी कमिटी जो काम उसे देती थी, उन्हीं में सर्गेई के दिन गुजर रहे थे। आज भी इग्नातियेवा उसका इन्तजार कर रही थी। वे लोग डिवीजन के राजनीतिक विभाग से इन्कलाबी कमिटी के लिए अखबार और किताबें लाने के लिए स्टेशन जाने वाले थे। सर्गेई तेजी से इमारत में से निकल कर सड़क पर आया जहां राजनीतिक विभाग का एक आदमी मोटर लिए उसका इन्तजार कर रहा था।

स्टेशन तक के अपने लम्बे सफर में, जहां पहली सोवियत उक्रेनी डिवीजन

का राजनीतिक विभाग और उसका हेडक्वार्टर रेल के डब्बों में कायम किया गया था, इग्नातियेवा ने सर्गेई से बहुत से सवाल पूछे।

"तुम्हारा काम कैसे चल रहा है? तुम्हारा संगठन बना कि नहीं? तुम्हें अपने दोस्तों से, दूसरे मजदूरों के लड़कों से कहना चाहिए कि कोमसोमोल में आयें। हमें जल्दी ही कम्युनिस्ट नौजवानों के एक दल की जरूरत होगी। कल हम लोग कोमसोमोलों के लिए एक पर्चा छापेंगे। उसके बाद थियेटर हॉल में नौजवानों की एक बड़ी-सी रैली करेंगे। राजनीतिक विभाग में पहुंच कर मैं उस्तिनोविच से तुम्हारा परिचय कराऊंगी। अगर मेरा खयाल गलत नहीं है, तो वह नौजवानों में ही काम कर रही है।"

उस्तिनोविच अठारह साल की एक लड़की निकली जिसके बाल काले-काले और बॉब किये हुए थे और जो एक नई-सी खाकी ट्यूनिक पहने थी जिसमें चमड़े की एक पतली सी पेटी लगी थी। इस लड़की ने सर्गेई को उसके काम के बारे में बहुत-सी बातें बतलाईं और उसके काम में मदद देने का वादा किया। वहां से चलने के पहले उसने सर्गेई को किताबों और अखबारों का एक बड़ा-सा बंडल दिया जिसमें एक खास अहमियत की चीज थी—कोमसोमोल के नियमों और उद्देश्यों के बारे में एक पुस्तिका।

उस रोज बहुत रात गये जब सर्गेई इन्कलाबी कमिटी के हेडक्वार्टर पर लौटा, तो उसने वहीं बाहर वालिया को अपना इन्तजार करते पाया।

उसको देखते ही वह चिल्ला पड़ी, "तुम्हें शर्म आनी चाहिए अपने ऊपर! इसका क्या मतलब कि इस तरह घर से अलग-अलग रहते हो? मां का रोते-रोते बुरा हाल है, और पिता जी तुमसे बहुत गुस्सा हैं। घर चलोगे तो देखोगे कैसा झगड़ा होता है।"

"नहीं, कुछ नहीं होगा," उसने वालिया को समझाते हुए कहा। "सच कहता हूं, मुझे घर जाने का वक्त ही नहीं मिलता। आज रात भी नहीं आऊंगा। लेकिन मुझे बड़ी खुशी है कि तुम आ गयीं। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है। चलो, अन्दर चलें।"

वालिया अपने भाई को पहचान ही न पा रही थी। वह बिल्कुल बदल गया था। उसके अन्दर जोश उबला पड़ता था।

वालिया के बैठते ही सर्गेई ने फौरन काम की बात शुरू कर दी।

"वालिया, स्थिति यह है: तुम्हें कोमसोमोल में दाखिल होना है। तुम नहीं जानती कि कोमसोमोल क्या है? नौजवान कम्युनिस्ट लीग। यहां पर मैं ही उसका काम चला रहा हूं। मेरी बात का यकीन नहीं आता तुम्हें? अच्छा तो, यह देखो।

वालिया ने उस कागज को पढ़ा और अपने भाई की तरफ हैरत भरी निगाहों से देखा।

"मैं कोमसोमोल में क्या करूंगी ?"

सर्गेई ने अपने हाथ फैलाते हुए कहा, "अरे पगली लड़की, करने को काम ही काम है! मुझी को देखो। मैं काम में इतना फंसा रहता हूं कि रात को सोने का वक्त भी नहीं मिलता। हमें प्रचार करना है। इग्नातियेवा कहती हैं कि जल्दी ही थियेटर हॉल में एक मीटिंग होगी और उसमें सोवियत सत्ता के बारे में बतलाया जायेगा। वे कहती हैं, मुझे भाषण देना होगा। मैं सोचता हूं, उनकी यह बात गलत है। क्योंकि मुझे भाषण देना आता नहीं और मैं सब घोटाला कर दूंगा। अच्छा, अब बताओ, कोमसोमोल में दाखिल होने के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है ?"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा, क्या कहूं। अगर मैंने ऐसा किया तो मां बहुत नाराज होंगी।"

सर्गेई ने जोर देते हुए कहा, "मां की चिन्ता मत करो, वालिया। वह समझती नहीं हैं। उनको बस एक बात की फिक्र है, उनके बच्चे उनके पास रहें। मगर सोवियत सत्ता के खिलाफ वह नहीं हैं। उल्टे वह पूरी तरह उसके साथ हैं। लेकिन वह चाहती हैं कि सारी लड़ाई-भिड़ाई दूसरों के लड़के लड़ें। अब तुम्हीं बताओ, क्या यह बात ठीक है ? याद है, जुखराई ने हमसे क्या कहा था ? और पावेल को देखो। वह अपनी मां के बारे में सोचने के लिए नहीं रुका। वक्त आ गया है कि हम सब नौजवान अपने हक के लिए लड़ें ताकि हमारी जिन्दगी बेहतर बने। मुझे पूरा यकीन है कि तुम इससे इन्कार नहीं करोगी, क्यों वालिया ? जरा सोचो, यह कितना अच्छा होगा। तुम लड़कियों में काम करना और मैं लड़कों में। हां, मुझे एक बात याद आ गयी। आज ही जाकर मैं उस लाल-लाल बालों वाले बदमाश क्लिम्का से बात करूंगा। हां तो वालिया, क्या कहती हो ? तुम हमारे साथ हो या नहीं ? यह देखो मेरे पास यह एक छोटी सी पुस्तिका है जिससे तुम्हें इस चीज के बारे में सारी बातें मालूम हो जायेंगी।"

कोमसोमोल के नियमों की वह पुस्तिका उसने अपनी जेब से निकाली और वालिया को पकड़ा दी।

"लेकिन अगर पेतल्युरा लौट आया ?" वालिया ने अपने भाई के चेहरे पर आंखें गड़ाये धीमी आवाज में पूछा।

इस चीज का खयाल अब तक सर्गेई को नहीं आया था और वह क्षण भर के लिए सोच में डूब गया।

"उस हालत में दूसरों के साथ मुझे भी चले जाना होगा, और क्या,"

उसने कहा, "मगर, तुम्हारा क्या होगा ? हां, इसमें तो शक नहीं कि इससे मां को बड़ा दुःख होगा ।" और वह खामोशी में डूब गया ।

"सर्योजा, क्या तुम मुझे इस तरह मेम्बर नहीं बना सकते कि मां को या किसी और को कुछ पता न चले ? बस, तुमको और मुझको यह बात मालूम हो ? मदद तो मैं तब भी उतनी ही कर सकूंगी । वही सबसे अच्छा तरीका होगा ।"

"तुम शायद ठीक कहती हो, वालिया ।"

उसी वक्त इग्नातियेवा कमरे के अन्दर दाखिल हुई ।

"कामरेड इग्नातियेवा, यह मेरी छोटी बहन वालिया है । अभी मैं इससे कोमसोमोल में दाखिल होने की बात कह रहा था । यह बड़ी योग्य सदस्य होगी । लेकिन देखिए, बात यह है कि मुमकिन है, हमारी मां अड़चन डालें । क्या ऐसा हो सकता है कि हम वालिया को दाखिल तो कर लें, मगर किसी को कुछ पता न चले ? बात यह है कि हो सकता है हमें फिर शहर छोड़ना पड़े । तो उस हालत में मैं तो फौज के साथ चला ही जाऊंगा, मगर वालिया डरती है कि अगर वह भी चली गयी तो मां की जिन्दगी पहाड़ हो जायगी ।"

इग्नातियेवा एक कुर्सी के सिरे पर बैठी बड़े गौर से सर्गेई की बात सुन रही थी ।

उसने अपनी सहमति देते हुए कहा, "हां, वही सबसे अच्छा तरीका होगा ।"

शहर भर में जो तमाम इश्तहार चिपके हुए थे, उनको देख कर शहर के नौजवान थिएटर हॉल में भर उठे थे और एक-दूसरे से बड़े जोश में बातें कर रहे थे । हॉल उनकी बातचीत से गूंज रहा था । शकर के कारखाने के मजदूरों का एक बैण्ड बज रहा था । श्रोताओं में ज्यादातर शहर के हाई स्कूल और कालेज के विद्यार्थी थे और उन्हें मीटिंग से ज्यादा दिलचस्पी उस संगीत-नृत्य में थी जो मीटिंग के बाद होने वाला था ।

आखिरकार, परदा उठा और उएज्द कमिटी के मंत्री कामरेड राजिन, जो अभी-अभी शहर में आये थे, मंच पर दिखाई दिये ।

सब की आंखें इस नाटे से, दुबले-पतले और छोटी-सी नुकीली नाक वाले आदमी की ओर मुड़ गयीं । सबने उनके भाषण को बड़े ध्यान से सुना । उन्होंने लोगों को उस संघर्ष के बारे में बतलाया जो सारे देश में तूफान की तरह चल रहा था और तमाम नौजवानों को कम्युनिस्ट पार्टी में आने के लिए कहा । वह एक मंजे हुए वक्ता की तरह बोल रहे थे, मगर "कट्टर मार्क्सवादी", "अंध राष्ट्रवादी", और इसी तरह के दूसरे कुछ फिकरे इस्तेमाल कर रहे थे जिन्हें श्रोता नहीं समझ रहे थे । तब भी उनका भाषण जब खतम हुआ, तो

सबने बड़े जोर से तालियां बजाईं। अपना भाषण खतम करने पर उन्होंने अगले वक्ता यानी सर्गेई का परिचय दिया और हट गये।

वही हुआ जिसका सर्गेई को डर था! अब वह श्रोताओं के सामने खड़ा था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह कुछ देर तक शब्दों के लिए अटका। मगर तभी इग्नातियेवा उसकी मदद को आ गयीं। उसने सभानेत्री की अपनी कुर्सी से धीमे से फुसफुसा कर सर्गेई से कहा—"इन्हें सेल के बारे में बतलाओ।"

सर्गेई ने बिना किसी भूमिका के फौरन ही काम की बात शुरू कर दी।

"हां तो साथियो, जो सारी बातें कहने की थीं, आपने सुन ली हैं। अब करने की बात यह है कि हमें पार्टी का एक ऐसा केन्द्र संगठित करना है जिसके इर्द-गिर्द तमाम लोगों को बटोरा जा सके। कौन लोग इससे सहमत हैं?"

उपस्थित लोगों में सन्नाटा छा गया। जो खाई बन गयी थी, उसको उस्तिनोविच ने भरा। वह उठ खड़ी हुई और उसने लोगों को बतलाया कि किस तरह मास्को में नौजवानों का संगठन हो रहा है। इस बीच सर्गेई बौखलाया हुआ सा अलग खड़ा रहा।

अन्दर ही अन्दर वह तैश खा रहा था कि सेल के संगठन के सवाल पर मीटिंग की प्रतिक्रिया कितनी खराब है। उसे श्रोताओं पर मन ही मन बड़ा गुस्सा आ रहा था। लोग उस्तिनोविच को सुन भी नहीं रहे थे। सर्गेई ने जालीवानोव को उस्तिनोविच की ओर घृणा से देखते हुए लिजा सुखार्को के कान में कुछ कहते देखा। सामने की कतार में कालेज की बड़ी लड़कियां बैठी थीं। उनके चेहरे पाउडर से पुते थे और वे बड़ी अदा से अपने इर्द-गिर्द देख रही थीं और आपस में फुसफुसा रही थीं। वहां उस कोने में दरवाजे के पास नौजवान लाल सैनिकों की एक टोली बैठी हुई थी। उनमें सर्गेई ने अपने परिचित नौजवान तोपची को देखा। वह स्टेज के सिरे पर बैठा बेचैनी से अपने शरीर को तोड़-मरोड़ रहा था और खुली नफरत से, भड़कीले कपड़ों में सजी लिजा सुखार्को और ऐना ऐदमोवस्काया को देख रहा था। मगर उनको किसी बात की कोई शर्म नहीं थी और वे अपने नौजवान दोस्त लड़कों से बड़ी चुहल के साथ बातचीत कर रही थीं।

यह देख कर कि कोई उसकी बात नहीं सुन रहा है, उस्तिनोविच ने जल्दी से अपनी तकरीर खतम की और बैठ गई। उसके बाद इग्नातियेवा बोलने के लिए उठीं और उनके शांत, गंभीर अंदाज ने अस्थिर श्रोताओं को अपने वश में कर लिया।

उन्होंने कहा, "साथियो, मैं आप से कहना चाहती हूं कि आज रात यहां जो कुछ कहा गया है, उस पर आप गौर करें। मुझे इस बात का पक्का

यकीन है कि आप में से कुछ लोग क्रांति में सक्रिय भाग लेनेवाले बन जायेंगे—केवल दर्शक ही नहीं बने रहेंगे। आपके लिए दरवाजे खुले हुए हैं, बाकी बातों का निश्चय आपको करना है। मैं चाहूंगी कि आप लोग अपनी राय दें। जो कोई भी कुछ कहना चाहे, मैं उसको दावत देती हूं कि यहां आकर कहे।"

एक बार फिर हॉल में सन्नाटा छा गया। फिर पीछे से एक आवाज सुनाई दी :

"मैं बोलना चाहता हूं।"

मिशा लेव्चुकोव, जो भेंगेपन के कारण आंख से जरा तिरछा देखता था और भालू की तरह भारी-भरकम था, मंच की ओर बढ़ा।

"जो मौजूदा हालत है," उसने कहा, "उसमें हमें बोल्शेविकों की मदद करनी ही होगी। मैं इसके हक में हूं। सर्योजका मुझको जानता है। मैं कोम-सोमोल में दाखिल हो रहा हूं।"

सर्गेई का चेहरा खुशी से चमकने लगा। वह लपक कर मंच के बीचोबीच पहुंचा और चिल्ला कर बोला, "देखा साथियो! मैं हमेशा कहता था कि मिशा हमीं में से एक है। इसका पिता स्विचमैन था और मोटर से कुचल कर मर गया था और इसीलिए मिशा की पढ़ाई नहीं हो सकी। मगर आज जैसे वक्त में किस चीज की जरूरत है, यह जानने के लिए उसे किसी कालेज में जाने की जरूरत नहीं पड़ी।"

हॉल में बडा शोर मचा। एक नौजवान ने, जिसके बाल बड़े करीने से कढ़े हुए थे, बोलने की इजाजत मांगी। यह ओकूनेव था। वह कालेज में पढ़ता था और नगर के दवाफरोश का लड़का था। अपनी ट्यूनिक को तानते हुए उसने कहना शुरू किया :

"आप लोग मुझे माफ करेंगे, साथियो। मेरी समझ में नहीं आता कि हमसे क्या चाहा जा रहा है? क्या हमसे यह उम्मीद की जाती है कि हम राजनीति में हिस्सा लें? अगर ऐसी बात है, तो मैं पूछता हूं, हम लोग पढ़ेंगे कब? हमें कालेज की पढ़ाई खतम करनी ही है। अगर यह कोई खेल-कूद की सोसायटी या ऐसे क्लब के संगठन की बात होती जहां हम लोग इकट्ठा हो सकते और पढ़ सकते तो बात दूसरी थी। मगर राजनीति में हिस्सा लेने का तो मतलब है आगे चल कर फांसी पर टंगने के खतरे को भी उठाना। न भाई, मैं नहीं समझता कि कोई इस बात से सहमत होगा।"

हॉल में लोग हंस रहे थे। ओकूनेव मंच से कूद कर अपनी जगह पर जा बैठा। उसके बाद वह नौजवान तोपची बोलने के लिए खड़ा हुआ। उसने क्रुद्ध

भंगिमा से अपनी टोपी माथे पर और नीची खींच ली और श्रोताओं को तीखी नजरों से देखता हुआ गरज कर बोला :

"तुम लोग हंस किस चीज पर रहे हो कीड़ो !"

उसकी आंखें दो जलते हुए अंगारे थे और वह गुस्से से कांप रहा था। एक गहरी सांस खींच कर उसने कहना शुरू किया :

"मेरा नाम इवान जार्की है। मैं यतीम हूं। मैंने कभी अपने मां-बाप को नहीं देखा और न उनके बारे में मुझे कुछ मालूम है। न कभी मेरा कोई अपना घर रहा। मैं सड़कों पर पला और बढ़ा हूं। मैं रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए भीख मांगता था और अक्सर मुझे भूखे पेट सो जाना पड़ता था। मैं तुम्हें बतला सकता हूं कि मैं एक कुत्ते की जिंदगी बिता रहा था। तुम सब, जो अपनी मांओं के लाड़ले यहां इकट्ठा हुए हो, तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता न होगा। तब सोवियत सत्ता आई और लाल सेना के लोगों ने मुझे सड़क पर से उठाया और मेरी देख-भाल की। उनकी एक पूरी प्लैटून ने मुझे गोद लिया। उन्होंने मुझे कपड़े दिये। उन्होंने मुझे लिखना-पढ़ना सिखलाया। मगर इन सबसे बड़ी चीज यह कि उन्होंने मुझको सिखाया कि इसान बनना किसे कहते हैं। उन्हीं के कारण मैं बोल्शेविक बना और अपनी आखिरी सांस तक बोल्शेविक रहूंगा। मैं खूब अच्छी तरह जानता हूं कि हम लोग किस चीज के लिए लड़ रहे हैं। हम लोग लड़ रहे हैं अपने ही जैसे गरीबों के लिए। हम लोग मजदूरों की हुकूमत के लिए लड़ रहे हैं। तुम लोग यहां पर बैठे चबर-चबर बातें कर रहे हो। मगर, तुम्हें नहीं मालूम कि इसी शहर के लिए लड़ते हुए हमारे दो सौ साथी मारे गये हैं। उन्होंने अपने जीवन को बलिदान कर दिया..." जार्की की आवाज खिंचे हुए तार की तरह गूंज रही थी। "उन्होंने हमारे लिए, हमारे सुख के लिए, हमारी खुशी के लिए हंसते-हंसते अपनी जान दे दी...। देश भर में, तमाम मोर्चों पर, लोग मर रहे हैं और तुम लोग यहां बैठे गाल बजा रहे हो !" "साथियो," सभापति मंडली की ओर तेजी से मुड़ते हुए उसने कहा, "आप लोग खामखा इन लोगों से बात करने में अपना वक्त जाया कर रहे हैं," और फिर हॉल की तरफ उंगली से इशारा करते हुए बोला, "आप समझते हैं कि ये लोग आप की बात समझेंगे ? नहीं ! भरा पेट कभी खाली पेट का साथी नहीं होता। इनमें से सिर्फ एक आदमी आगे आया और वह इसलिए आगे आया कि वह भी गरीब है, यतीम है। मगर कोई बात नहीं," उसने उपस्थित लोगों पर गुस्से से गरजते हुए कहा, "हम लोग तुम्हारे बिना भी अपना काम काम चला लेंगे। हम लोग तुमसे भीख नहीं मांगेंगे कि आइये और हममें शरीक होइए। जहन्नुम में जाओ तुम लोग ! तुम लोगों से बात करने का अकेला

तरीका मशीनगन है !" और इसके बाद वह मंच पर से उतरा और बिना दांयें-बांयें देखे सीधे दरवाजे की तरफ बढ़ा।

मीटिंग की सदारत जिन लोगों ने की थी उनमें से कोई भी संगीत-नृत्य के लिए नहीं रुका।

इंकलाबी कमिटी के हेडक्वार्टर को लौटते हुए रास्ते में सर्गेई ने आक्रोश से कहा, "कैसी मुसीबत है ! कैसे अजीब लोग हैं ! जार्की बिल्कुल ठीक कहता है। यह कालेज की भीड़ किसी काम की नहीं। उनके बारे में सोच कर दिमाग गरम हो जाता है।"

इग्नातियेवा ने उसको बीच में टोकते हुए कहा, "इसमें अचरज की कोई बात नहीं है। ये तमाम लोग जो इकट्ठा हुए थे, शायद ही इनमें मजदूर जमात का कोई नौजवान रहा हो। इनमें ज्यादातर या तो निचले मध्यम वर्ग के लड़के थे या नगर के बुद्धिजीवियों के। गरज सब लोग ऐसे थे जो अपने स्वार्थ से आगे नहीं देख पाते। तुम्हें लकड़ी और चीनी के कारखाने के मजदूरों के बीच काम करना होगा। मगर तुम यह न समझना कि मीटिंग एकदम बेकार थी। आगे चल कर तुम देखोगे कि इन्हीं विद्यार्थियों में से कुछ बड़े अच्छे साथी निकलेंगे।"

उस्तिनोविच ने इग्नातियेवा की बात का समर्थन किया।

वह बोली, "सर्योजा, हमारा काम अपने विचारों को, अपने नारों को, सब लोगों तक पहुंचाना है। पार्टी हर नई घटना पर सभी मेहनतकशों का ध्यान केन्द्रित करेगी। हम लोग बहुत-सी सभाएं, सम्मेलन, और कांग्रेसें करेंगे। राजनीतिक विभाग गर्मियों के दिनों के लिए स्टेशन पर एक नाटक-शाला खोल रहा है। कुछ ही दिनों में एक प्रचार-वैन आने वाली है और तब हमारा काम जोर-शोर से चलेगा। याद है, लेनिन ने क्या कहा था—जब तक हम लोग जनता को, करोड़ों मेहनतकशों को, अपनी लड़ाई में नहीं ले आते, तब तक हम कभी नहीं जीत सकते।"

उसी शाम, काफी देर हो जाने पर, सर्गेई उस्तिनोविच को पहुंचाने स्टेशन तक गया। उससे अलग होते समय उसने उस्तिनोविच के हाथों को मजबूती से अपने हाथों में लिया और जितनी देर एकदम जरूरी था, उससे ज्यादा देर तक उसके हाथों को अपने हाथों में लिये रहा। उस्तिनोविच के चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कराहट आई।

लौटते समय सर्गेई रास्ते में अपने घर वालों से मिलने के लिए चला गया। उसने खामोशी से अपनी मां की फटकार को सुन लिया। मगर, जब पिता ने शुरुआत की, तो सर्गेई ने जवाबी हमला किया और जखार वासीलिएविच की हालत खराब कर दी।

"बापू, आपने जर्मनों के कब्जे के दिनों में जब हड़ताल की थी और इंजन पर के उस संतरी को मार डाला था, उस 'वक्त आपको अपने घर वालों का खयाल आया था न ? जरूर आया था। मगर तब भी आपने उस काम को किया, क्योंकि यही आपके मजदूर के अन्तःकरण का आदेश था। मैंने भी अपने घर वालों के बारे में सोचा है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि अगर हमें पीछे हटना पड़ा तो मेरे कारण आप लोगों को सताया जायेगा। और फिर, मैं घर पर बैठ भी तो नहीं सकता था। आप तो खुद सब बातों को जानते हैं, बापू। तो फिर, यह फिजूल का हो-हल्ला क्यों ? मैं एक अच्छे लक्ष्य के लिए काम कर रहा हूं। आपको मुझे सहारा देना चाहिए, न कि इस तरह मेरी टांग घसीटना। आइये, हम लोग समझौता कर लें बापू, और तब मां भी मुझे डांटना बंद कर देंगी।" उसने अपने पिता को अपनी साफ, नीली-नीली आंखों से देखा और प्यार से मुस्कराया। उसे इस बात का विश्वास था कि वह ठीक बात कह रहा है।

जखार वासीलिएविच अपनी बेंच पर जरा बेचैनी से हिला और उसकी घनी कड़ी मूछों और छोटी-सी उलझी-पुलझी दाढ़ी के बीच से उसके पीले से दांत मुस्कराने पर दिखलाई दिये।

"वर्ग चेतना की बात ला रहे हो, क्यों ? बदमाश कहीं का ! तुम सोचते हो कि यह जो रिवाल्वर लिए घूम रहे हो, वह मुझको तुम्हारी मरम्मत करने से रोक लेगा ?"

मगर अब उसकी आवाज में गुस्सा नहीं था, उसका हल्का-सा आभास भी नहीं। और उसने अपने मन के आवेग को वश में करते हुए अपना सख्त, गठीला हाथ अपने बेटे की तरफ बढ़ाया। "ठीक है सर्योजा, करते चलो। एक बार जब तुमने शुरू कर दिया है तो मैं ब्रेक नहीं लगाऊंगा। मगर हां, हम लोगों को एकदम भूल मत जाना, बीच-बीच में आया जरूर करना।"

रात का वक्त था। जरा से खुले हुए दरवाजे में से रोशनी की किरण अन्दर आकर सीढ़ियों पर लेट गई थी। उस बड़े-से कमरे में, जिसमें ठाठदार फर्नीचर सजा हुआ था, वकील साहब की बड़ी-सी मेज के पीछे पांच आदमी बैठे हुए थे—दोलिनिक, इग्नातियेवा, खुफिया विभाग के अध्यक्ष तिमोशेंको, जो कौसेकों जैसी फर की टोपी के कारण किरगिज नजर आते थे, वह दैत्याकार रेलवे मजदूर शूदिक और रेलवे के हाते का चपटी नाक वाला ओस्तापचुक। इंकलाबी कमिटी की मीटिंग जारी थी।

दोलिनिक ने मेज पर झुकते हुए और इग्नातियेवा को कठोर आंखों से देखते हुए भर्राई हुई आवाज में कहा :

"मोर्चे पर रसद पहुंचाना जरूरी है। मजदूरों के लिए खाना जरूरी है। जैसे ही हम लोग आये, दूकानदारों और बाजार के मुनाफाखोरों ने दाम चढ़ा दिये। वे सोवियत मुद्रा लेने से इनकार करते हैं। यहां सिर्फ पुरानी जारशाही मुद्रा या करेंस्की के नोट चलते हैं। आज हम लोगों को बैठ कर चीजों के दाम तय कर देने चाहिएं। हम अच्छी तरह जानते हैं कि कोई भी मुनाफाखोर तय किए हुए दामों पर अपना माल नहीं बेचेगा। उनके पास जो कुछ है, उसे वे छिपा लेंगे। उस सूरत में हम लोग तलाशियां लेंगे और इन खून चूंसने वालों के माल को जब्त कर लेंगे। यह शराफत बरतने का वक्त नहीं है। हम मजदूरों को अब और भूखों नहीं मरने दे सकते। कामरेड इग्नातियेवा कहती हैं कि हमें सम्भल कर चलना चाहिए। अगर आप मुझसे पूछिए तो यह एक कातर बुद्धिजीवी की प्रतिक्रिया है। देखो जोया, बुरा न मानो, मैं जानता हूं क्या कह रहा हूं। और जो भी हो, यह छोटे-मोटे दूकानदारों का मामला नहीं है। आज मुझे खबर मिली है कि सराय के मालिक बोरिस जोन के घर में एक गुप्त तहखाना है। पेतल्युरा की फौजों के आने से पहले ही बड़े-बड़े दूकानदारों ने वहां अपने माल के बड़े-बड़े स्टॉक छिपा दिये हैं।" वह रुका और मखौल उड़ाती हुई शरीर आंखों से तिमोशेंको को देखा।

तिमोशेंको ने सकपकाकर पूछा, "तुम्हें इस चीज का पता कैसे चला?" उसे यह बात बुरी लगी कि एक ऐसी खबर जिसे हासिल करने का काम खुद उसका था, दोलिनिक को पहले ही मालूम हो गई।

दोलिनिक ने मगन होते हुए कहा, "मुझे सब बात मालूम रहती है, भाई। तहखाने के बारे में जानने के अलावा मुझे यह भी मालूम है कि कल तुमने और डिवीजन कमांडर के मोटर ड्राइवर ने मिल कर आधी बोतल समोगन उड़ाई थी।"

तिमोशेंको अपनी कुर्सी में अस्थिर हुआ और उसका पीला चेहरा शर्म से लाल हो गया।

"खूब!" उसने बेमन से प्रशंसा करते हुए कहा। मगर यह देख कर कि इग्नातियेवा की त्योरियां चढ़ती जा रही हैं, उसने और कुछ न कहा। इन्कलाबी कमिटी के अध्यक्ष दोलिनिक को देखते हुए उसने अपने मन में कहा, "देखते हो, इस बढ़ई के पास अपना निजी खुफिया विभाग है।"

दोलिनिक कह रहा था, "सर्गेई ब्रुजाक ने मुझे यह सब बतलाया। वह किसी को जानता है जो वहीं रेस्तोरां में काम करता था। वहीं रसोइयों से इस लड़के को मालूम हुआ कि जिस चीज की भी जरूरत होती थी और जितनी भी

जरूरत होती थी, जोन उसे सप्लाई किया करता था। कल सर्गेई ने तहखाने के बारे में पक्की तरह पता लगा लिया। बस अब मालूम यह करना है कि यह तहखाना ठीक है किस जगह पर। तिमोशेंको, फौरन अपने आदमियों को इस काम पर लगा दो ! सर्गेई को अपने साथ लेते जाओ। अगर हमारा मामला बैठ गया और हमने काम ठीक से किया, तो हम मजदूरों को और डिवीजन की चीजें दे सकेंगे।"

आधे घंटे बाद आठ सशस्त्र आदमी सराय के मालिक के घर में घुसे। दो बाहर फाटक पर पहरा देने के लिए रुक गये।

मालिक नाटा-सा, शराब के पीपे की तरह गोल-मटोल आदमी था। उसकी एक टांग लकड़ी की थी और चेहरे पर लाल-लाल बाल थे। उसने अतिरिक्त नम्रता से आगन्तुकों का स्वागत किया। अपनी मोटी भारी आवाज में उसने पूछा :

"क्या बात है, साथियो ! इतनी रात गये कैसे आये ?"

जोन के पीछे उसकी लड़कियां जल्दी में अपने ड्रेसिंग गाउन पहने, तिमोशेंको की टार्च की रोशनी में आंखें मुलमुलाती हुई खड़ी थीं। दूसरे कमरे से जोन की भरे बदन की सुन्दर पत्नी की आहों और कराहों की आवाज सुनाई दे रही थी। वह भी जल्दी-जल्दी कपड़े पहन रही थी।

"हम लोग मकान की तलाशी लेने आये हैं," तिमोशेंको ने संक्षेप में अपनी बात कह दी।

फर्श की एक-एक इंच जमीन का अच्छी तरह मुआइना किया गया। गल्ला भरने के बड़े से कोठे को, जिसमें कटी हुई लकड़ी का अम्बार लगा हुआ था, बहुत से भंडारघरों को, रसोई को और एक खूब बड़े से तहखाने को— सब को बहुत सावधानी से देखा गया, तलाशी ली गयी। मगर गुप्त तहखाने का कहीं पता न चला।

रसोई से हट कर एक छोटी सी कोठरी थी जिसमें नौकरानी सोई हुई थी। वह इतनी गहरी नींद में सो रही थी कि उसको इन लोगों के आने की आहट भी नहीं मिली। सर्गेई ने उसको बहुत हल्के से जगाया।

"तुम यहां काम करती हो ?" उसने पूछा। उस भौंचक लड़की ने, जिसकी आंखें नींद से भारी हो रही थीं, कम्बल को अपने कंधे तक खींच लिया और अपनी आंखों को रोशनी से बचाने के लिए आड़ की।

"हां," लड़की ने जवाब दिया। "तुम कौन हो ?"

सर्गेई ने उसको बतलाया कि वह कौन है और यह कह कर कि जल्दी से कपड़े पहन लो, वह कमरे से बाहर आ गया।

खाना खाने के बड़े से कमरे में तिमोशेंको सराय के मालिक से सवाल कर रहा था और मालिक बहुत परेशान होकर बड़बड़ा रहा था :

"आप मुझसे चाहते क्या हैं ? मेरे पास और कोई तहखाने नहीं हैं। मेरी बात का यकीन कीजिये, आप फिजूल अपना वक्त बरबाद कर रहे हैं। हां, यह सही है कि कभी मैं सराय का मालिक था। लेकिन, अब मैं एक गरीब आदमी हूं। पेतल्युरा के लोगों ने मेरे पास से सब कुछ झाड़ लिया और वह तो कहिए बच गया, नहीं तो उन्होंने मुझे मार ही डाला था। मुझे बड़ी खुशी है कि सोवियत राज कायम हो गया है। लेकिन मेरे पास जो कुछ है, वह तो आपके सामने है, आप देख सकते हैं," कहते हुए उसने अपने छोटे-छोटे मोटे-ताजे हाथ फैला दिये। पूरे वक्त उसकी लाल-लाल आंखें तिमोशेंको के चेहरे से सर्गेई के चेहरे पर और सर्गेई के चेहरे से कोने में और छत पर दौड़ती रहीं।

तिमोशेंको ने अपने ओठों को चबाते हुए कहा :

"तो तुम बतलाओगे नहीं ? आखिरी बार मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि तुम हमें अपना गुप्त तहखाना दिखलाओ।"

सराय के मालिक की बीवी ने रोते हुए कहा, "मगर कामरेड अफसर, हमारे पास खुद अपने खाने के लिए नहीं है। हमारे पास जो कुछ था, सब उन लोगों ने छीन लिया।" उसने रोने की कोशिश की, मगर बेसूद।

सर्गेई ने कहा, "तुम कहती हो कि तुम भूखों मर रही हो। फिर यह नौकरानी तुमने कैसे रखी है ?"

"वह नौकरानी नहीं है। एक गरीब लड़की है जो हमारे साथ रहती है, क्योंकि उसका और कहीं कोई ठिकाना नहीं है। खुद ख्रिस्तिना से पूछ कर देख सकते हो।"

अब तिमोशेंको के धीरज का अन्त हो गया और उसने चिल्ला कर कहा, "अगर यही तुम्हारी मर्जी है, तो हम भी अच्छी तरह अपना काम करेंगे !"

सुबह हुई, मगर तलाशी अब भी जारी थी। तेरह घंटे की बेकार कोशिश से तंग आकर तिमोशेंको ने अब तलाशी को खतम करने का फैसला कर लिया था जब कि सर्गेई ने, जो कि नौकरानी की कोठरी की जांच के बाद बाहर निकलने ही वाला था, अपने पीछे से उस लड़की की धीमी फुसफुसाहट सुनी : "रसोई घर में अंगीठी के पीछे देखो।"

दस मिनट बाद, उस अंगीठी के तोड़े जाने पर लोहे का एक चोर दरवाजा दिखाई दिया। और घंटे भर के अंदर दो टन माल ढोने वाली एक भारी ट्रक पीपे और बोरे लाद कर सराय से चली जहां बहुत से लोगों की भीड़ आश्चर्य से आंखें फाड़े, मुंह बाये खड़ी थी।

एक रोज जब बहुत गरमी पड़ रही थी, मारिया याकोवलेवना कोर्चागिना अपने सामान की एक छोटी-सी पोटली लिए घर आई। जब आर्तेम ने उसे पावेल के बारे में बतलाया, तो वह जार-जार रोने लगी। अब उसे अपनी जिंदगी खोखली और नीरस मालूम पड़ती थी। उसे अपने लिए काम की तलाश थी और कुछ दिन बाद उसने लाल सेना के लोगों के कपड़े धोना शुरू कर दिया जिसके बदले में, मजदूरी के तौर पर, उसे सैनिकों का राशन मिल जाता था।

एक शाम उसने खिड़की के बाहर आर्तेम के पैरों की आहट सुनी। आज आर्तेम और रोज से ज्यादा जल्दी-जल्दी आ रहा था। उसने धक्का देकर दरवाजा खोला और देहलीज पर से ही ऐलान किया, "मैं पावका की एक चिट्ठी लाया हूं।"

पावेल ने लिखा था :

"प्यारे भाई आर्तेम, यह मैं तुम्हें यह बतलाने के लिए लिख रहा हूं कि मैं जिंदा हूं, हालांकि मेरा हाल बहुत अच्छा नहीं है। मेरे कूल्हे में गोली लगी थी, लेकिन अब मैं अच्छा हो रहा हूं। डाक्टर का कहना है कि हड्डी में चोट नहीं लगी है। इसलिए मेरे बारे में परेशान मत होना, मैं ठीक हो जाऊंगा। अस्पताल से रिहा होने पर शायद मुझे छुट्टी मिल जायेगी, और मैं कुछ रोज के लिए घर आऊंगा। मैं मां के पास तक नहीं पहुंच सका। हुआ यह कि मैं कामरेड कोतोव्स्की की घुड़सवार ब्रिगेड में भरती हो गया। मैं समझता हूं, कामरेड कोतोव्स्की के बारे में तुमने जरूर सुना होगा क्योंकि वह अपनी बहादुरी के लिए बहुत मशहूर हैं। मैंने उनके जैसा आदमी पहले कभी नहीं देखा। अपने कमांडर के लिए मेरे मन में बहुत श्रद्धा है। क्या मां घर लौट आईं? अगर लौट आई हों तो उन्हें मेरा प्यार देना। मैंने तुम्हें जो भी तकलीफ दी हो, उसके लिए मुझे माफ करना। तुम्हारा भाई : पावेल।

"आर्तेम, जरा जंगल के वार्डन के यहां चले जाना और वहां लोगों को इस खत के बारे में बतला देना।"

पावेल की चिट्ठी सुन कर मारिया याकोवलेवना बहुत रोई। कैसा पागल लड़का है, उसने अपने अस्पताल का पता भी नहीं दिया।

सर्गेई अब स्टेशन की उस हरी रेलवे कोच में अक्सर आया-जाया करता था जिस पर लिखा था : "राजनीतिक विभाग का प्रचार दफ्तर।" इसी आंदोलन और प्रचार वाली गाड़ी के एक डब्बे में उस्तिनोविच और इग्नातियेवा का

दफ्तर था। सर्गेई को देख कर इग्नातियेवा, जिसके मुंह में सदा सिगरेट लगी रहती थी, इस अंदाज से मुस्कराती थी कि मुझे सब कुछ मालूम है।

कोमसोमोल जिला कमिटी का मंत्री सर्गेई इधर रिता उस्तिनोविच का बड़ा दोस्त हो गया था और जब वह वहां से लौटता, तो किताबों और अखबारों के बंडल के अलावा एक अव्यक्त सुख की अनुभूति भी सदा अपने साथ ले आता था।

हर रोज राजनीतिक विभाग के ओपन एयर थिएटर को देखने बहुत से मजदूर और लाल सैनिक आया करते थे। बारहवीं सेना की प्रचार-वैन रंग-बिरंगे पोस्टरों से ढंकी साइडिंग में खड़ी रहती थी और उसमें चौबीसों घंटे जोर-शोर से काम होता रहता था। उसके अन्दर एक छोटा-सा प्रेस भी लगा दिया गया था और अखबार, पर्चे, घोषणाएं बराबर छप कर वहां से निकलती रहती थीं। मोर्चा करीब ही था।

एक शाम संयोग से सर्गेई भी थियेटर में पहुंच गया और वहां उसने रिता को लाल सैनिकों की एक टोली के साथ पाया। उसी रात जब वह उसे पहुंचाने के लिए स्टेशन जा रहा था—वहीं राजनीतिक विभाग के कर्मचारियों को रहने के लिए जगह दी गई थी—तो उसने कह डाला : "कामरेड रिता, ऐसा क्यों है कि मुझे हमेशा तुमसे मिलने की चाह रहती है?" फिर बोला, "कितना अच्छा लगता है, तुम्हारे साथ रहना! तुमसे मिलने के बाद मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैं बिना थके काम करता रह सकता हूं।"

रिता रुक गयी। "देखो कामरेड ब्रुजाक," उसने कहा, "अभी इसी वक्त हमें यह बात तय कर लेनी चाहिए कि फिर कभी तुम ऐसी शायरी की बातें मुझसे न करोगे। मुझे यह पसंद नहीं है।"

सर्गेई शर्म के मारे उसी तरह लाल हो आया जैसे स्कूल का लड़का डांट खाने पर।

"मेरा कोई बुरा मतलब नहीं था," उसने कहा, "मैंने सोचा था कि हम लोग दोस्त तो हैं ही...मैंने कोई क्रांति-विरोधी बात तो नहीं कही थी! या कहीं थी? अच्छा कामरेड उस्तिनोविच, अब मैं एक भी शब्द और न कहूंगा!"

उसने जल्दी-जल्दी उससे हाथ मिलाया और लगभग दौड़ता हुआ शहर की ओर लौट गया।

सर्गेई कई दिन तक स्टेशन के पास भी नहीं फटका। इग्नातियेवा ने उससे वहां आने के लिए कहा, तो वह यह कह कर टाल गया कि काम बहुत है, फुरसत नहीं मिलती और सच बात तो यह थी कि उसे था भी बहुत काम।

एक रात जब शूदिक एक ऐसी सड़क से घर आ रहा था जिसमें ज्यादातर चीनी के कारखाने में मैनेजरी करने वाले पोल रहा करते थे, तो उस पर गोली चलाई गई। उसके बाद जो तलाशियां हुईं उनमें बहुत सी बन्दूकें और 'स्त्रेलेत्स' नामक एक पिलसुद्स्की संगठन के कागजात मिले।

इन्कलाबी कमिटी में एक सम्मेलन बुलाया गया। उस्तिनोविच, जो वहां मौजूद थी, सर्गेई को एक तरफ ले गई और शान्त गम्भीर स्वर में बोली, "लगता है तुम्हारे अहम् को ठेस लगी है, है न ? तुम्हारी इन व्यक्तिगत चीजों से काम को तो नुकसान नहीं पहुंच रहा है ? नहीं कामरेड, इस तरह से तो काम नहीं चलेगा।"

इसके बाद सर्गेई ने फिर से स्टेशन जाना शुरू कर दिया।

वह एक जिला सम्मेलन में शरीक हुआ और दो दिन तक जारी गरमा-गरम बहसों में उसने हिस्सा लिया। तीसरे रोज सम्मेलन के अन्य प्रतिनिधियों के साथ-साथ वह भी नदी पार के जंगल में गया और जारूदनी के डाकुओं से लड़ते एक दिन और एक रात बिताई। यह लुटेरों का सरदार जारूदनी पहले पेतल्युरा का एक अफसर था।

लौटने पर वह इग्नातियेवा से मिलने के लिए गया और उस्तिनोविच को भी वहां बैठे पाया। बाद में वह उसे घर पहुंचाने के लिए स्टेशन तक गया और विदा होते समय उसके हाथों को जोर से अपने हाथों में ले लिया। उस्तिनोविच ने गुस्से से अपना हाथ छुड़ा लिया। उसके बाद फिर कई रोज तक सर्गेई प्रचार की गाड़ी में नहीं गया और काम होने पर भी रिता से मुलाकात टालता रहा। और जब रिता उससे पूछती कि ऐसा क्यों है, तो वह बेरुखी से जवाब देता : "आपसे बात करने से फायदा ? आपसे कोई क्या कहे ? आप मुझ पर यही अभियोग लगायेंगी कि मैं व्यक्तिवादी हूं या मजदूर वर्ग के साथ विश्वासघात कर रहा हूं या इसी तरह की कोई और बात।"

काकेशस की लाल झण्डा डिवीजन को लेकर आई रेलगाड़ी स्टेशन पर रुकी। तीन स्याहफाम कमांडर इन्कलाबी कमिटी में आये। उनमें से एक लम्बा छरहरा आदमी था जो नक्काशी की हुई चांदी की पेटी लगाये हुए था। वह सीधे दोलिनिक के पास गया और ऐसे स्वर में अपनी मांग रखी कि जैसे वह इनकार की बात भी सुनने के लिए तैयार न हो। बोला, "बहस की जरूरत नहीं। मुझे फौरन सौ गाड़ी सूखी घास चाहिए। मेरे घोड़े मर रहे हैं।"

लिहाजा सर्गेई को दो लाल सैनिकों के साथ सूखी घास बरामद करने के लिए जाना पड़ा। एक गांव में कुलकों के एक गिरोह ने उन पर हमला किया।

लाल सेना के लोगों के हथियार छीन लिये गये और उन्हें बहुत बेरहमी से पीटा गया। छोटा होने के कारण सर्गेई पर मार कम पड़ी। गरीब किसानों की कमिटी ने उनको गाड़ी पर लाद कर शहर पहुंचाया।

फिर एक सशस्त्र टुकड़ी उसी गांव में भेजी गई और अगले रोज सूखी घास आ गई।

उसके घर वालों को कोई घबराहट या परेशानी न हो, इस ख्याल से सर्गेई अपनी चोट ठीक होने तक इग्नातियेवा के यहां ठहरा रहा। रिता उस्तिनोविच वहां उससे मिलने के लिए आई और पहली बार उसने ऐसे प्यार से सर्गेई का हाथ दबाया जिसकी वह हिम्मत भी नहीं कर सकता था।

एक दिन तीसरे पहर जब खासी गरमी पड़ रही थी, सर्गेई रिता से मिलने के लिए प्रचार की गाड़ी में गया। उसने रिता को पावेल का खत सुनाया और उसे अपने दोस्त के बारे में कुछ बातें बतलाईं। डब्बे में से बाहर आते हुए उसने गर्दन मोड़ कर कहा, "मैं जंगल में जाकर झील में नहाने की सोच रहा हूं।"

रिता ने अपने काम पर से आंख उठाते हुए कहा, "मेरे लिए रुको। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।"

झील दर्पण की तरह चिकनी और शान्त थी। उसके साफ नीले पानी में एक ऐसी ताजगी थी जो दावत सी देती जान पड़ती थी।

रिता ने उससे आदेश के स्वर में कहा, "वहां सड़क पर मेरा इन्तजार करो। अब मैं नहाऊंगी।"

सर्गेई पुल के पास एक बड़े पत्थर पर बैठ गया और सूरज की तरफ देखने लगा। उसको पीछे से पानी में छप-छप की आवाज सुनाई दे रही थी।

तभी उसने दरख्तों के बीच से तोनिया, तुमानोवा और चुजानिन को हाथ में हाथ डाले सड़क पर आते देखा! चुजानिन प्रचार की गाड़ी का फौजी कमिसार था। अपनी अच्छी सिली हुई अफसर की वर्दी में, जिसमें बड़ी खूबसूरत चमड़े की पेटी और न जाने कितने फीते लगे हुए थे, और चरमर करते हुए अपने क्रोम के जूतों में चुजानिन बड़ा बांका जवान मालूम हो रहा था। वह तोनिया के साथ बातचीत में डूबा हुआ था।

सर्गेई ने तोनिया को पहचान लिया। वही पावेल का खत उसके पास ले गयी थी। पास आने पर तोनिया ने भी सर्गेई को गौर से देखा। वह भी उसे पहचानने की कोशिश कर रही थी। वे दोनों बराबर पर आ गये तो सर्गेई

ने अपनी जेब में से पावेल का आखिरी खत निकाला और तोनिया की तरफ आगे बढ़ा।

"एक मिनट, कामरेड ! यह मेरे पास एक खत है जिसका कुछ सम्बंध आपसे भी है।"

अपना हाथ छुड़ाते हुए तोनिया ने वह खत लिया। उसे पढ़ते वक्त कागज का वह टुकड़ा उसके हाथ में थोड़ा सा कांपा।

सर्गेइ को खत वापिस देते हुए तोनिया ने पूछा, "तुम्हारे पास पावेल की और भी कोई खबर है ?"

सर्गेई ने कहा, "नहीं।"

उसी वक्त रिता के पैरों तले कंकड़ों के दबने की आवाज सुनाई दी और चुजानिन ने, जिसे रिता की उपस्थिति का कोई भान नहीं था, झुक कर धीरे से तोनिया के कान में कहा, "हम लोगों को यहां से चले जाना चाहिए।"

मगर रिता की मखौल उड़ाती हुई थोड़ी नफरत मिली आवाज ने उसको रोका :

"कामरेड चुजानिन ! आज सारे दिन लोग आपको गाड़ी में तलाश करते रह गये।"

चुजानिन ने चिढ़ कर उसे देखा और बदमिजाजी से जवाब दिया, "कोई बात नहीं, मेरे बिना भी वे लोग अपना काम चला लेंगे।"

रिता ने तोनिया और फौजी कमिसार को जाते हुए देखा।

खुश्की से उसने कहा, "जितनी जल्दी इस बेमसरफ आदमी को यहां से भगाया जाय उतना ही अच्छा !"

हवा ओक की डालों को हिला रही थी और जंगल में मरमर की आवाज गूंज रही थी। झील से हवा के पंखों पर चढ़ कर बड़ी प्यारी ताजगी आ रही थी। सर्गेई ने पानी में घुसने की सोची।

जब वह तैर कर लौटा तो उसने सड़क के पास एक पेड़ के तने पर रिता को बैठे पाया। वे दोनों बात करते हुए घने जंगल में घूमने चले गये। जंगल के बीच एक खुले मैदान में, जहां ऊंची-ऊंची घनी घास उगी थी, वे आराम करने के लिए रुके। जंगल में बड़ी शान्ति थी। ओक के दरख्त आपस में सरगोशियां कर रहे थे। रिता नर्म घास पर लेट गई और अपने हाथ बांध कर सिर के नीचे रख लिये। पुराने टांके-लगे जूतों में उसकी खूबसूरत टांगें ऊंची-ऊंची घास में छिपी हुई थीं।

सर्गेई की आंखें इत्तफाक से उसके पैरों पर पड़ीं। उसने उसके सफाई से मरम्मत किये हुए जूते को देखा और फिर अपने जूते को देखा जिसके सूराख में से उसका अंगूठा झांक रहा था। वह हंस पड़ा।

"क्यों, किस बात पर हंस रहे हो ?" रिता ने पूछा।

सर्गेई ने अपने जूते की तरफ इशारा किया और कहा, "ऐसे जूतों में भला हम कैसे लड़ेंगे ?"

रिता ने कोई जवाब नहीं दिया। वह दूब का एक छोटा सा टुकड़ा मुंह में डाले चबा रही थी और स्पष्ट ही उसके विचार कहीं और दौड़ रहे थे।

आखिरकार उसने कहा, "चुजानिन बहुत जलील पार्टी मेम्बर है, दो कौड़ी का। हमारे दूसरे राजनीतिक कार्यकर्ता तो चीथड़े पहने घूमते हैं, मगर इसको बस अपनी फिक्र रहती है। सही बात यह है कि पार्टी में उसके लिए जगह नहीं है...। जहां तक मोर्चे की बात है, वहां हालत सचमुच बहुत संगीन है। हमारे देश को अभी बहुत लम्बी और कठिन लड़ाई लडनी है।" वह रुकी और फिर बोली, "हमें शब्दों से लड़ना होगा और राइफिलों से भी, सर्गेई। तुमने केंद्रीय समिति के फैसले के बारे में सुना है कि कोमसोमोल के एक-चौथाई सदस्यों को फौज में भरती कर लिया जाय ? सर्गेई, अगर तुम मुझसे पूछो तो मेरा खयाल है कि अब हमें और ज्यादा दिन यहां नहीं रहना है।"

उसकी बात सुनते हुए सर्गेई ने कुछ आश्चर्य के साथ यह लक्ष्य किया कि रिता की आवाज में आज कोई नया ही सुर है। रिता की काली-काली, पानी की तरह साफ आखें उसको देख रही थीं और उसके मन में आया कि वह बेखटके उससे कह दे कि उसकी आंखें दर्पण की तरह हैं। मगर उसने अपने आपको रोक लिया।

रिता ने कोहनी के बल टिकते हुए कहा, "तुम्हारा पिस्तौल कहां है ?"

सर्गेई ने बड़े दुःख से अपनी पेटी पर उंगली दौड़ाई और कहा, "उन कुलकों ने छीन लिया।"

रिता ने अपनी ट्यूनिक की जेब में हाथ डाला और एक चमचमाता हुआ ऑटोमैटिक पिस्तौल निकाला।

"उस ओक को देख रहे हो, सर्गेई ?" कहते हुए उसने पिस्तौल की नली से एक बहुत पुराने पेड़ के तने की ओर इशारा किया जो कि वहां से लगभग पच्चीस कदम पर था। फिर आंख की सीध में पिस्तौल को ले आकर उसने बगैर निशाना साधे गोली दाग दी। गोली तने में लगी और छिलके जमीन पर बरस गये।

"देखा ?" अपने-आप पर बहुत मगन होते हुए उसने कहा। उसने दुबारा गोली दागी और फिर वही हुआ—पेड़ के छिलके घास पर बरस गये।

"यह लो," उसने व्यंगपूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए पिस्तौल सर्गेई को पकड़ाया और कहा, "अब तुम्हारा निशाना देखें।"

तीन निशानों में से सर्गेई का एक निशाना चूका। रिता शाबाशी देने के

अन्दाज में मुस्कराई और बोली, "मैं तो सोचती थी कि तुमसे इतना भी नहीं बनेगा।"

उसने पिस्तौल को नीचे रख दिया और फिर घास पर लेट गई। उसकी ट्यूनिक तनने से उसकी कसी हुई छाती का उभार दिखलाई दे रहा था।

"सर्गेई," उसने धीरे से कहा, "यहां आओ !"

सर्गेई और पास खिसक गया।

"आसमान को देखो। देखो, कैसा नीला है। तुम्हारी आंखें भी इसी रंग की हैं। और यह ठीक नहीं। उन्हें भूरा होना चाहिए, फौलाद की तरह। नीला रंग बहुत कोमल होता है।"

एकाएक उसने सर्गेई के घुंघराले बालों वाले सिर को अपनी बांहों में भर लिया और उसके ओंठों पर अपने ओंठ रख दिये।

दो महीने गुजर गये। पतझड़ के दिन आ गये।

पेड़ों को अपनी काली चादर में छिपाती हुई रात दबे पैरों से आई। डिवीजन हेडक्वार्टर्स का तार बाबू अपने टिक्-टिक् टिक्-टिक् करते हुए यंत्र पर झुका हुआ था और कागज के लम्बे पतले फीते सांप की तरह उसकी उंगलियों के इर्द-गिर्द लिपटते जा रहे थे और वह जल्दी-जल्दी उनके डाटों और डैशों को रूपांतरित करके शब्दों और वाक्यांशों में बदलता जा रहा था :

> "चीफ आफ स्टाफ, पहली डिवीजन। नकल शेपेतोवका इंकलाबी कमिटी के चेयरमैन को। इस तार को पाने के दस घंटे के अन्दर-अन्दर सारे सरकारी दफ्तर शहर से हटा दो। शहर में एक बटालियन न. रेजिमेंट के कमांडर के चार्ज में छोड़ दो। वही इस मोर्चे के कमांडर हैं। डिवीजन हेडक्वार्टर्स, राजनीतिक विभाग, सारी फौजी संस्थाएं बरांचेव स्टेशन में ले जाओ। डिवीजन कमांडर को रिपोर्ट करो कि हुक्म पूरा किया गया।
>
> (दस्तखत)"

दस मिनट बाद एक मोटर साइकिल शहर की सोती हुई सड़कों पर दौड़ती जा रही थी। उसकी हेडलाइट अंधेरे को चीर रही थी। मोटर साइकिल इंकलाबी कमिटी के फाटक के सामने रुकी। उसका सवार जल्दी से अंदर गया और उसने यह तार चेयरमैन दोलिनिक के हाथ में दिया। फौरन उस जगह हलचल शुरू हो गई। स्पेशल ड्यूटी कम्पनी को कतार में खड़ा किया गया। एक घंटे बाद इंकलाबी कमिटी के माल-असबाब से लदी हुई गाड़ियां शहर के बीच होकर पोडोल्स्क स्टेशन की ओर चल पड़ीं। वहां इस सारे माल-असबाब को रेल के डब्बों में लादा गया।

तार में लिखी बातों का सर्गेई को पता चला तो वह मोटर साइकिल वाले के पीछे भागा।

"कामरेड, तुम मुझे स्टेशन तक पहुंचा दोगे ?" उसने सवार से पूछा।

"कूद कर पीछे चढ़ जाओ, मगर जरा जोर से पकड़े रहना।"

प्रचार का डब्बा गाड़ी में लगाया जा चुका था। उससे दस-बारह कदम पर ही सर्गेई ने रिता को देखा। उसने रिता के कंधों को पकड़ लिया और इस बात को समझते हुए कि अभी जरा ही देर में वह चीज, जो उसके लिए इतनी अनमोल थी और जिसे वह इतना प्यार करने लगा था, बिछुड़ जायगी, उसने धीरे से कहा, "अलविदा रिता, मेरी प्यारी कामरेड! हम लोग फिर कभी मिलेंगे। मुझे भूलना मत।"

उसे इस बात से बड़ी घबराहट हुई कि आंसुओं से उसका गला रुंधा जा रहा है। उसे फौरन यहां से चले जाना चाहिए। उसे अपने पर भरोसा न था कि अगर बोला, तो न जाने क्या बक दे, इसलिए उसने रिता के हाथ को इतने जोर से दबाया कि रिता का हाथ दर्द करने लगा।

सवेरा हुआ तो शहर और स्टेशन वीरान और उजड़े हुए थे। आखिरी गाड़ी जैसे अपनी सीटी से अलविदा कहती हुई स्टेशन के बाहर जा चुकी थी और अब सिर्फ पीछे छोड़ दी गई बटालियन रेलवे लाइन के दोनों तरफ मुस्तैद खड़ी थी।

पेड़ों से पीली-पीली पत्तियां झड़ कर नीचे आ रही थीं और शाखें नंगी हो रही थीं। हवा गिरती हुई पत्तियों को पकड़ लेती थी और अपने साथ उड़ा ले जाती थी।

सर्गेई लाल सेना का बरानकोट पहने, कारतूसों की किरमिच की बनी पेटी कंधे पर लटकाये, लाल सेना के बारह सिपाहियों के साथ चीनी के कारखाने के सामने वाले चौराहे पर तैनात था। पोल लोग करीब थे।

आवतोनम पैत्रोविच ने अपने पड़ोसी जेरासिम लियोनतियोविच के दरवाजे पर दस्तक दी। जेरासिम ने अभी कपड़े नहीं पहने थे, लिहाजा उसने दरवाजे में से सिर निकाल कर पूछा :

"क्या बात है ?"

आवतोनम पैत्रोविच ने सड़क पर जाते हुए लाल सेना के लोगों की ओर इशारा किया और आंख मार कर कहा, "ये लोग भाग रहे हैं।"

जेरासिम लियोनतियोविच ने चिंतित मुद्रा से उसकी ओर देखा और बोला, "तुम्हें मालूम है पोलों का कैसा चिह्न है ?"

"मेरा खयाल है, उनका चिह्न वही एक सिर वाला ईगल है ।"

"कहां मिलेगा ?"

आवतोनम पैत्रोविच ने परेशानी से अपना सिर खुजलाया और दो-एक पल विचार करने के बाद कहा, "उनके लिए तो यह सब ठीक है, बस उठे और चल दिये । मगर मुसीबत तो हम लोगों की होती है जिन्हें नये मालिकान के के साथ मेल बैठाना पड़ता है ।"

एक मशीनगन की आवाज ने खामोशी को भंग कर दिया । अचानक स्टेशन से एक इंजन की सीटी सुनाई दी और उसके ठीक बाद वहीं से तोप दगने की आवाज आई । एक भारी बमगोला जोर से सूं करता हुआ हवा में उड़ा और कारखाने के उस पार सड़क पर गिरा जिससे सड़क के आस-पास की झाड़ियां नीले धुएं के बादल में ढंक गईं । पीछे हटते हुए लाल सैनिक एकदम चुपचाप और गम्भीर, किसी कठोर संकल्प की मूर्ति बने, सड़क पर मार्च करते चले जा रहे थे और रह-रह कर पीछे मुड़ कर देखते जाते थे ।

सर्गेई की आंख से गिरा आंसू बर्फ जैसी सर्द राह बनाता उसके गाल पर से लुढ़क कर नीचे आ रहा था । उसने जल्दी से उसे पोंछ डाला और चोरी-चोरी अपने साथियों की ओर देखा, कहीं किसी ने देख तो नहीं लिया । सर्गेई के बगल में लकड़ी के कारखाने का एक दुबला-पतला मजदूर आन्तेक क्लोपोतोव्स्की चल रहा था । उसकी उंगली अपनी राइफिल के घोड़े पर ठहरी हुई थी । आन्तेक उदास और अपने-आप में खोया हुआ था । उसकी आंखें सर्गेई की आंखों से मिलीं तो उसने उन विचारों को, जो उसे सता रहे थे, सर्गेई के साथ बांटा ।

"वे लोग हमारे घर वालों की बड़ी मुसीबत करेंगे, खास कर मेरे क्योंकि हम लोग पोल हैं । वे कहेंगे, तुम पोल होकर पोलिश लीजन का विरोध कर रहे हो ! मुझे तो इसमें जरा भी शक नहीं कि मेरे बुढ्ढे बाप को ठोकर मार कर वे लोग कारखाने से निकाल देंगे और कोड़े भी लगायेंगे । मैंने उनसे कहा कि चलिए, हमारे साथ चले चलिए, मगर घर वालों को छोड़ने को उनका जी न हुआ । ज़हन्नुम में जायें हरामजादे, मैं तो बेताब हो रहा हूं कि कितनी जल्दी उनको पाऊं !" कहते हुए आन्तेक ने अपने टोप को जो उसकी आंखों पर झुक आया था, गुस्से से पीछे सरकाया ।

...अलविदा मेरे प्यारे शहर, तुम जो अपनी सारी बदसूरती और गदगी के बावजूद, अपने बदसूरत छोटे-छोटे घरों और टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों के बाद भी हमें इतने प्यारे लगते हो । विदा, मेरे प्यारो विदा । विदा वालिया और मेरे

साथियो, जो गुप्त रूप से काम करने के लिए रुक रहे हो। बेरहम, क्रूर, विदेशी पोलिश ह्वाइट गार्ड दस्ते पास आ रहे हैं।

रेलवे मजदूरों ने, जो अपनी तेल के धब्बे लगी कमीजें पहने हुए थे, उदास आंखों से लाल फौज के सैनिकों को जाते हुए देखा।

सर्गेई ने दुखते हुए दिल से चिल्ला कर कहा, "हम लोग लौट कर आयेंगे, साथियो!"

आठ

भोर के धुंधलके में ढंकी हुई नदी की कान्ति दब गयी है और वह बहती चली जा रही है। किनारों के चिकने कंकड़ों से उसका पानी टकरा रहा है और मद्धिम सी, कोमल सी आवाज पैदा हो रही है। किनारों पर उथला पानी शान्त है, उसकी रुपहली सतह पर कहीं कोई लहर नहीं है, मगर वहां मंझदार में नदी का रंग स्याह है और पानी बेचैन। अपनी उसी बेचैनी में वह तेजी से बहता जा रहा है। किसी साम्राज्ञी का सा सौंदर्य है इस नदी का—जिसे गोगोल ने अमर बना दिया है! नदी की दाहिनी तरफ एकदम सीधी कगार है जो आकर सीधे पानी में गिरती है, मानो किसी आगे बढ़ते हुए पहाड़ को पानी की भीम धारा ने आकर रोक दिया हो। नीचे बाईं तरफ का किनारा सपाट है और वह जगह रेत के धुस्सों से घिरी हुई है। बसन्त के दिनों में बाढ़ आयी थी; उसका पानी जब लौटा तो रेत के ये छोटे-छोटे टीले छोड़ता गया।

चपटी सी थूथन वाली मैक्सिम तोप नदी के किनारे एक छोटी सी खाई में रखी हुई थी और पांच आदमी उसके पास लेटे हुए थे। यह सातवीं राइफिल डिवीजन की एक अगली चौकी थी। तोप के सबसे पास, नदी के ठीक सामने, सर्गेई ब्रुजाक लेटा हुआ था।

परसों लड़ाई से थक कर और पोलिश तोपों की तूफानी मार से पीछे ढकेले जाकर उन्होंने कीव छोड़ दिया था, वे पीछे हट कर नदी के बायें किनारे पर आ गये थे और वहीं उन्होंने अपने पैर जमा लिये थे।

पीछे हटना, जान का इतना नुकसान और फिर कीव का दुश्मन के हाथ में चले जाना, इन सारी चीजों से सैनिकों को बड़ा गहरा धक्का लगा था। सातवीं डिवीजन दुश्मन के घेरे में पड़ जाने पर भी बड़ी वीरता से लड़ती हुई

दुश्मन की पातों को चीर कर बाहर निकल आयी थी और मालिन स्टेशन की रेलवे लाइन पर पहुंच गयी थी। उसने बड़ा तेज हमला करके पोलिश फौजों को पीछे ढकेल दिया था और कीव का रास्ता साफ कर दिया था।

मगर उनको वह प्यारा शहर छोड़ना पड़ा था और इसका लाल सेना के सैनिकों को बड़ा दुख था।

लाल टुकड़ियों को दारनित्सा से बाहर खदेड़ कर पोल फौजें अब रेल के पुल के बगल में नदी के बायें किनारे पर एक छोटी-सी पुलिया पर मोर्चा जमा कर बैठ गयी थीं। मगर इधर के तेज जवाबी हमलों ने उस जगह से आगे बढ़ने की उनकी सारी कोशिशों को नाकाम कर दिया था।

नदी को बहते हुए देख कर कैसे मुमकिन था कि सर्गेई को अभी पिछले रोज की बात याद न आती।

कल दोपहर उसकी टुकड़ी ने सख्त जवाबी हमले से पोलों का सामना किया था; कल दुश्मन से पहली बार उसका गुत्थमगुत्था हुआ था। बिना दाढ़ी का एक पोलिश सिपाही अपनी राइफिल और उसमें लगी हुई लम्बी नुकीली तलवार जैसी फ्रेंच संगीन लगा कर सर्गेई के ऊपर झपटा था। वह जाने क्या चिल्लाता हुआ खरगोश की तरह सर्गेई पर लपका। क्षण भर को सर्गेई ने अपनी आंखों को बेपनाह गुस्से से फैलते देखा। दूसरे क्षण सर्गेई की संगीन उस पोल की संगीन से बजी और वह चमकती हुई फ्रेंच संगीन एक ओर को हट गयी। पोल गिर पड़ा...।

सर्गेई का हाथ नहीं कांपा। वह जानता था कि उसे मारते जाना होगा—उसे, सर्गेई को, जिसमें इतने गहरे प्यार का माद्दा था, इतनी पक्की दोस्ती का माद्दा था। वह स्वभाव से दुष्ट या क्रूर नहीं था। मगर वह जानता था कि उसे इन भटके हुए सिपाहियों से लड़ना ही होगा जिन्हें दुनिया भर की जोंकों ने उनके अन्दर हैवानी नफरत का जोश भर कर उसकी मातृभूमि पर हमला करने के लिए भेजा था। और वह, सर्गेई, कत्ल करेगा ताकि वह दिन करीब आये जब आदमी आदमी का कत्ल नहीं करेगा।

पारामनोव ने उसके कंधे को थपकी दी और कहा, "सर्गेई, तुमको अब यहां से चलना चाहिए, नहीं तो वे लोग देख लेंगे।"

पावेल कोर्चागिन को अपने देश भर में चक्कर लगाते अब एक साल हो गया था। कभी वह मशीनगन की गाड़ियों पर या तोप की गोला-बारूद की गाड़ियों पर सवार होता, तो कभी एक छोटी-सी घोड़ी पर जिसके कान पर एक निशान था। अब वह एक जवान आदमी था, जिसे तकलीफों और

परेशानियों ने अपनी आग में तपा कर सख्त और पक्का बना दिया था। कारतूस की भारी पेटी की वजह से उसकी मुलायम खाल कभी छिल गयी थी; पर उसका घाव कब का भर चुका था और राइफिल के पट्टे के नीचे उसके कंधे पर का चमड़ा सख्त हो गया था।

पावेल ने उस साल बहुत सी भयानक चीजें देखी थीं। अपने ही जैसे दूसरे हजारों सैनिकों के साथ, जो सब उसी की तरह रद्दी-सद्दी कपड़े पहने हुए थे, मगर जिन सबमें अपने वर्ग की सत्ता कायम करने के लिए लड़ने का अजेय संकल्प था, वह अपनी मातृभूमि पर उत्तर-दक्खिन-पूरब-पश्चिम सभी ओर गया था और इस दौरान वह सिर्फ दो बार तूफान के साथ नहीं रहा था —एक तो तब, जब उसके कूल्हे में चोट लगी थी और दूसरी बार तब जब सन १९२० की कड़कड़ाती सर्दी में फरवरी के महीने में वह टाइफस बुखार की चुभती गरमी से परेशान पड़ा था।

बारहवीं फौज की रेजिमेंटों और डिवीजनों का संहार पोलिश मशीनगनों से कहीं ज्यादा टाइफस ने किया। तब तक बारहवीं फौज बहुत बड़े इलाके में, लगभग पूरे उत्तरी उक्रेन में, काम करने लगी थी और पोलों को आगे बढ़ने से रोके हुए थी।

पावेल अपनी बीमारी से बिलकुल ठीक भी नहीं हुआ था कि वह अपनी टुकड़ी में लौट आया। उसकी टुकड़ी उस वक्त कजातिन-उमान ब्रांच लाइन के फ्रोन्तोवका स्टेशन में अपने पैर जमाये हुए थी। फ्रोन्तोवका जंगल में था। वहां सिर्फ एक छोटी-सी स्टेशन की इमारत थी और उसके आस-पास कुछ टूटी-फूटी और उजड़ी हुई झोपड़ियां थीं। तीन साल के अनवरत संग्राम के कारण इस इलाके में नागरिक जिन्दगी असम्भव हो गयी थी। कई बार फ्रोन्तोवका एक से दूसरे हाथ में आया और गया।

फिर से कुछ बड़ी घटनाओं की तैयारी हो रही थी। बारहवीं फौज के बहुत से आदमी मारे गये थे और वह कमोवेश असंगठित हो गयी थी। जिस वक्त वह पोलिश फौजों के दबाव के कारण पीछे हट कर कीव पहुंच रही थी, तभी मेहनतकशों की सरकार विजय के मद से चूर पोलिश फौजों पर करारा हमला करने के लिए अपनी सारी ताकत संचित कर रही थी।

पहली घुड़सवार फौज की लड़ाई की आग में तपी हुई डिवीजनें उत्तरी काकेशस से उक्रेन भेजी जा रही थीं और वह एक ऐसी लड़ाई थी जिसकी मिसाल फौजी इतिहास नहीं मिलती। एक के बाद एक चौथी, छठी, ग्यारहवी, और चौदहवीं घुड़सवार डिवीजनें उमान के इलाके में पहुंच रही थीं। वे मोर्चे की पिछली पातों पर अपना सारा जोर लगा रही थीं और निर्णायक लड़ाइयों के घटनास्थल के रास्ते में माखनो के लुटेरों का सफाया करती जा रही थीं।

साढ़े सोलह हजार तलवारें, साढ़े सोलह हजार सैनिक जिन्हें स्तेपी के जलते सूरज ने तपाया और पकाया था।

इस वक्त दक्खिन-पच्छिमी मोर्चे की कमान और लाल फौज की सर्वोच्च कमान को सबसे ज्यादा फिक्र इस बात की थी कि दुश्मन लाल फौज के इस निर्णायक हमले को रोकने के लिए कुछ न कर सके। ये सारी घुड़सवार फौजें कामयाबी के साथ एक जगह जमा हो जायें, इसीके लिए सब कुछ किया जा रहा था। उमान के इलाके में सक्रिय कार्रवाई रोक दी गयी थी। मास्को से खारकोव के मोर्चे के हेडक्वार्टर और वहां से चौदहवीं और बारहवीं फौजों के हेडक्वार्टर के बीच की सीधी तार की लाइनें अनवरत काम कर रही थीं। तार के आपरेटर फौजी कोड में दिये गये हुक्मनामे बराबर टपटपाते जा रहे थे : "पोलों का ध्यान घुड़सवार फौज इकट्ठा करने की हमारी कार्रवाई की तरफ से हटाओ।" दुश्मन से लड़ाई सिर्फ उसी वक्त की जाती जब यह खतरा होता कि पोलिश फौजों के आगे बढ़ने से बुद्योनी की घुड़सवार डिवीजनों के के लिए खतरा पैदा हो जायगा।

कैम्प फायर की आग की लाल-लाल लपटें निकल रही थीं। आग से धुएं के घुंघराले बादल उठते और भन-भन करते हुए बेचैन कीड़ों की भीड़ें छट जातीं। सैनिक आग के इर्द-गिर्द अर्द्ध-गोलाकार लेटे हुए थे और आग की तांबे जैसी छाया उनके चेहरों पर पड़ रही थी। हल्की नीली-भूरी राख पर रखे हुए मेसटिनों में पानी बुदबुदा रहा था।

एकाएक एक जलते हुए कुन्दे के नीचे से लपट की एक अकेली जीभ निकली और उसने किसी के बिखरे हुए बालों वाले सिर को छुआ। उस आदमी ने झट से अपना सिर हटा लिया और गुर्राया : "धत्तेरे की! क्या मुसीबत है!" और आग के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगों की टोली ने कहकहा लगाया।

एक अधेड़ आदमी, जिसकी मूंछें छंटी हुई थीं और जो सर्ज का ट्यूनिक पहने हुए था, आग की रोशनी में अपनी राइफिल की नली का मुआइना कर रहा था। वह बोला :

"इस लड़के के दिमाग में किताबी ज्ञान इतना भरा हुआ है कि इसे आग की गरमी नहीं मालूम होती।"

"कुछ हमें भी तो बतलाओ कि क्या पढ़ रहे हो, कोर्चागिन!" किसी ने कहा।

नौजवान लाल सैनिक ने अपने जले हुए बालों पर उंगली फेरी और मुस्कराया।

"सचमुच बहुत अच्छी किताब है, कामरेड अन्द्रोश्चुक। कोशिश करके भी इसे छोड़ नहीं पाता।"

"काहे के बारे में है?" कोर्चागिन के बगल में बैठे हुए एक चपटी नाक वाले लड़के ने पूछा जो जी-जान से अपने थैले के फीते की मरम्मत में लगा हुआ था। उसने दांत से वह मोटा तागा कुतरा, बाकी को सुई के इर्द-गिर्द लपेट दिया और फिर उसे अपने हेलमेट में खोंस लिया। "भाई अगर इश्क के बारे में हो, तो मुझे जरूर बताना।"

लड़के की इस बात पर जोर का कहकहा पड़ा। मातवेइचुक ने अपना छोटे-छोटे बालों वाला सिर उठाया और उस चपटी नाक वाले लड़के को शरारत से आंख मारी, "इश्क बड़ी अच्छी चीज होती है, सेरेदा," उसने कहा, "और तुम इतने खूबसूरत हो कि तुमको देखना गोया किसी तसवीर को देखना है। जहां कहीं हम लोग जाते हैं, तुम्हारे पीछे भागते-भागते लड़कियों के जूते घिस जाते हैं। कितनी बुरी बात है कि तुम्हारे जैसे खूबसूरत आदमी में सिर्फ एक नुक्स है कि नाक की जगह पांच कोपेक का सिक्का लटका हुआ है। मगर इसका इलाज आसान है। रात को नाक से एक दस पाउंड का नोविस्की हथगोला लटका दो। सबेरे सब ठीक हो जायगा।"

इस मजाक पर जो जोर का कहकहा पड़ा, तो मशीनगन की गाड़ियों में जुते हुए घोड़े डर कर हिनहिनाने लगे।

सेरेदा ने बोलने वाले की ओर लापरवाही से देखा और कहा, "अजी, चेहरे से कुछ नहीं आता जाता, असल चीज तो दिमाग का गूदा है;" कहते हुए उसने इशारतन अपने माथे को ठकठकाया और कहा, "जहां तक तुम्हारी बात है, तुम्हारी जबान तो बड़ी तीखी है, मगर किसी भी तरह तुम गधे से अच्छे नहीं हो और तुम्हारे कान ठण्डे हैं।"

इन दोनों को, जो एक दूसरे से गुथने ही वाले थे, डांटते हुए सेक्शन कमांडर तातारिनोव ने कहा, "अरे क्यों झगड़ रहे हो तुम लोग? इससे अच्छा यह है कि कोर्चागिन से कहो कि अगर सचमुच कुछ सुनने लायक चीज हो तो सुनाये।"

"बिलकुल ठीक है। शुरू करो, पावलुश्का।" सभी तरफ से लोगों ने आग्रह किया।

पावेल आग के कुछ और पास सरक आया और अपने घुटनों पर पड़ी हुई छोटी-सी मोटी किताब उसने खोल ली।

"इस किताब का नाम द गैड-फ्लाई है, साथियो। बटालियन कमिसार ने मुझे दी है। मुझे तो इस किताब ने बांध लिया है, साथियो। तुम लोग खामोशी से बैठो तो सुनाऊं।"

"शुरू भी करो ! और फिकर न करो, हम किसी प्रकार की गड़बड़ न होने देंगे।"

कुछ देर बाद रेजिमेंट के कमांडर कामरेड पुजीरेव्स्की चुपके से अपने घोड़े पर सवार कैम्प फायर के पास आये। उनके आने का किसी को कुछ पता ही न चला। उन्होंने देखा कि ग्यारह जोड़ा आंखें किताब पढ़ने वाले के चेहरे पर टिकी हुई हैं। उनके साथ कमिसार भी था। कमिसार की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा :

"ये देखो रेजिमेंट के आधे स्काउट हैं," और आग के गिर्द बैठे हुए उन लोगों की तरफ इशारा किया। "इनमें से चार नये-नये कोमसोमोल हैं, मगर सब के सब बहुत अच्छे सिपाही हैं। वह जो पढ़ रहा है उसका नाम कोर्चागिन है। और वह जो दूसरा है, जिसकी आंखें भेड़िये के बच्चे जैसी हैं, उसका नाम जार्की है। वे दोनों दोस्त हैं, मगर चुपके-चुपके उनमें आपस में होड़ लगी रहती है। पहले कोर्चागिन मेरा सबसे अच्छा स्काउट था। लेकिन अब उसका एक तगड़ा प्रतिद्वन्दी पैदा हो गया है। इस वक्त ये लोग जो काम कर रहे हैं, यह भी राजनीतिक काम है और बड़ा उपयोगी काम है। मैंने सुना है कि इन नौजवानों को 'यंग गार्ड' कहते हैं। मेरा ख्याल है कि यह बहुत मुनासिब नाम है।"

कमिसार ने पूछा, "जो किताब पढ़ रहा है, क्या वही राजनीतिक शिक्षक है ?"

"नहीं, राजनीतिक शिक्षक तो क्रेमर है।" पुजीरेव्स्की ने अपने घोड़े को एड़ लगाई।

बाहर ही से बोला, "मुबारकबाद साथियो !"

सब लोगों के सिर कमांडर की ओर मुड़े जब वह घोड़े से उतर रहा था। उतर कर वह सीधे टोली के पास गया।

"आग ताप रहे हो दोस्तो, क्यों ?" खूब मुस्कराते हुए उसने कहा। उस वक्त उसकी छोटी-छोटी, कुछ-कुछ मंगोलों जैसी आंखों वाले मजबूत चेहरे पर कठोरता नहीं थी। सिपाहियों ने दिल खोलकर अपने कमांडर का स्वागत किया, वैसे ही जैसे वे अपने किसी अच्छे दोस्त या साथी का करते। कमिसार अपने घोड़े से नहीं उतरा, क्योंकि वह और आगे जाना चाहता था।

अपने पिस्तौल को पीछे सरकाते हुए पुजीरेव्स्की कोर्चागिन के बगल में बैठ गया।

"सिगरेट पी जाय तो कैसा रहे ?" उसने कहा, "मेरे पास बहुत अच्छी तम्बाकू है।"

उसने एक सिगरेट बनाई, जलाई और कमिसार की ओर मुड़ कर बोला,

"तुम जाओ दोरोनिन, मैं यहां कुछ देर रुकूंगा। हेडक्वार्टर में अगर मेरी जरूरत हो तो मुझे खबर कर देना।"

दोरोनिन के चले जाने पर पुर्जीरेव्स्की ने कोर्चागिन से कहा, "पढ़ो पढ़ो, मैं भी सुनूंगा।"

पावेल ने अन्त तक पढ़ा, फिर किताब अपने घुटनों पर रख ली और आग की ओर देखते हुए किसी सोच में डूब गया। कुछ क्षणों तक कोई कुछ नहीं बोला। सभी लोग गैड-फ्लाई के दर्दनाक नसीब के बारे में मन ही मन सोच रहे थे। पुर्जीरेव्स्की बहस शुरू होने का इन्तजार करते हुए सिगरेट के कश खींचता रहा।

खामोशी को तोड़ते हुए सेरेदा ने कहा, "बड़ी भयानक और दिल हिला देने वाली कहानी है। इसका मतलब यह है कि दुनिया में इस तरह के लोग भी हैं। जो कुछ उसने बर्दाश्त किया उसे कम ही लोग बर्दाश्त कर सकते थे। लेकिन जब आदमी के पास कोई ऐसा विचार होता है जिसके लिए वह लड़े, तो उसमें सब कुछ सहने की ताकत आ जाती है।" स्पष्ट ही सेरेदा पर किताब का बहुत असर पड़ा था। उसके चेहरे से यह बात जाहिर थी।

"अगर मैं कहीं उस हरामजादे पादरी को पा जाऊं जिसने उसके गले के नीचे क्रास उतारने की कोशिश की थी," बेलाया सेरकोव के एक जूता बनाने वाले के अपरेंटिस आन्द्रीयूशा फोमीचेव ने बुलन्द आवाज में गुस्से से कहा, "तो वहीं उस सुअर को खतम कर दूं!"

अन्द्रोश्चुक ने एक छड़ी से एक मेसटिन को आग के और पास ठेलते हुए दृढ़ विश्वास के स्वर में कहा, "आदमी को मरना बुरा नहीं मालूम होता, अगर उसके पास ऐसी कोई चीज है जिसके लिए वह मरे। उसी से आदमी को बल मिलता है। तुम बिना किसी दुख के मर सकते हो अगर तुम्हें मालूम हो कि तुम न्याय पर हो। वीर इसी तरह पैदा होते हैं। बहुत दिन हुए एक लड़का था जिसे मैं जानता था, उसका नाम पोराइका था। ओदेसा में जब ह्वाइटों ने उसे घेर लिया तो उसने अकेले एक पूरी प्लैटून का मुकाबला किया और इसके पहले कि वे लोग संगीनों से उसका काम तमाम कर देते, उसने एक दस्ती बम से अपना और उन सबका काम तमाम कर दिया। और देखने-सुनने में वह वैसा कुछ खास न था। वैसा कुछ नहीं जैसे लोगों के बारे में तुम किताबों में पढ़ते हो, गो इसमें शक नहीं कि उसके बारे में लिखा जरूर जाना चाहिए। वह इस काबिल है। हमारे बीच इस तरह के बहुत से लड़के मिलते हैं।"

उसने एक चम्मच से मेसटिन की चीज को हिलाया, चखा और फिर बोला:

"कुछ लोग कुत्ते की मौत मरते हैं, जिल्लत की मौत। इजियास्लाव की लड़ाई की एक घटना मैं तुमको बतलाता हूं। इजियास्लाव, गोरिन नदी पर बसा एक पुराना शहर है जो राजों-राजकुमारों के वक्त बना था। वहां पर एक पुराना पोलिश गिरिजाघर था, बिल्कुल किले की तरह बना हुआ। हां, तो हम लोग उस शहर में दाखिल हुए और उसकी टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में एक-एक की कतार बनाये हुए आगे बढ़ने लगे। लेटों की एक कम्पनी हमारे दायें बाजू को बचा रही थी। हम लोग जब बड़ी सड़क पर पहुंचे, तो हमने तीन जीन कसे घोड़ों को एक मकान की बाड़ी से बंधे देखा। आहा, हमने सोचा यहां पर कुछ पोल हाथ लगेंगे। हममें से करीब दस हाते के अन्दर दौड़े। सबसे आगे उस लेट कम्पनी का कमांडर अपना माउजर लिये दौड़ा जा रहा था।

"सामने का दरवाजा खुला हुआ था। हम लोग दौड़ कर अन्दर पहुंचे। मगर, वहां पोलों के बदले हमें अपने ही आदमी मिले। वे घुड़सवार सैनिक थे। वे हमसे पहले ही वहां पहुंच गये थे। हम लोगों ने वहां जो कुछ देखा, वह बहुत अच्छा दृश्य न था। वे लोग एक औरत के साथ बुरा काम कर रहे थे। यह औरत उस पोलिश अफसर की बीवी थी जो उस मकान में रहता था। लेट ने वहां जो दृश्य देखा, तो अपनी ही भाषा में कुछ चिल्लाया। उसके आदमियों ने उन तीनों को जा पकड़ा और घसीटते हुए बाहर ले आये। उनमें सिर्फ हम दो ही रूसी थे, बाकी सब लेट थे। उनके कमांडर का नाम ब्रेडिस था। मैं उनकी जबान नहीं जानता, लेकिन इतना समझ गया कि उसने उन तीनों को खत्म करने का हुक्म दे दिया। बड़े तगड़े लोग होते हैं ये लेट, तरस खाना नहीं जानते। वे उन तीनों को घसीट कर अस्तबल में ले आगे। मेरे सामने उनका काम तमाम कर दिया गया। उनमें से एक, जो बड़ा ऊंचा, पूरा आदमी था और जिसका चेहरा देख कर उस पर ईंट मारने की इच्छा होती थी, बहुत हाथ-पैर फटकार रहा था। वह चिल्ला रहा था—'सिर्फ एक औरत के पीछे तुम मुझे गोली मार दोगे!' दूसरे भी रहम की भीख मांग रहे थे।

"मेरे शरीर से ठंडा पसीना छूटने लगा। मैं दौड़ कर ब्रेडिस के पास गया और बोला, 'कामरेड कम्पनी कमांडर, इन्हें फौजी अदालत के सुपुर्द कर दीजिए। आप क्यों खामखा इनके खून से अपने हाथ रंगते हैं? अभी शहर में लड़ाई चल ही रही है और हम इन कुत्तों के साथ अपना वक्त बर्बाद कर रहे हैं।' ब्रेडिस ने शेर की तरह चमकती हुई आंखों से मेरी तरफ घूरा। सच कहता हूं, उस वक्त मुझे लगा कि मैंने क्यों खामखा ऐसी बात कही। उसने अपनी बन्दूक मुझ पर तानी। मुझे लड़ते हुए साल साल हो गए, मगर यह मानने में शर्म नहीं कि उस वक्त मैं सचमुच बहुत डर गया था। मैंने देखा कि यह तो पहले गोली मारेगा और सवाल बाद में करेगा। उसने अपनी टूटी-

फूटी रूसी में चिल्ला कर कुछ कहा, जो अच्छी तरह मेरी समझ में नहीं आया। मगर शायद वह यही कहना चाहता था : 'हमारा झंडा हमारे ही खून से रंगा हुआ है। ये लोग सारी फौज को जलील करते हैं। लुटेरेपन की सजा मौत है।'

"मैं अब और इस चीज को बर्दाश्त न कर सका और जितनी तेजी से हो सकता था, हाते में से सड़क की ओर भागा और मैंने अपने पीछे गोली चलने की आवाज सुनी। मैं समझ गया कि उन तीनों का काम तमाम हो गया। जब तक हम लोग लौट कर बाकी लोगों से मिले, शहर हमारे कब्जे में आ चुका था।

"कुत्ते की मौत से मेरा मतलब उसी मौत से है जो उन तीनों को मिली। वे लोग उन्हीं में से थे जो मेलितोपोल में आकर हमसे मिले थे। एक जमाने में वे माखनो के साथ रह चुके थे। लुच्चे-लफंगे थे वे।"

अन्द्रोश्चुक ने अपना मेसटिन उठा कर अपनी बगल में रख लिया और रोटी की पोटली खोलने लगा।

"कभी-कभी ऐसे लोग हम लोगों को अपने बीच भी मिल जाते हैं। सबके बारे में तो पक्की तरह कोई बात कही नहीं जा सकती। देखने में सभी क्रान्ति के समर्थक मालूम होते हैं। और ऐसे ही लोगों से हमारी बदनामी होती है; मगर खैर जो भी हो, मैं कहता हूं कि वह बड़ी भयानक, बड़ी गन्दी चीज थी जो मैंने देखी। मैं उसे जल्दी भूल नहीं सकूंगा।" उसने चाय की चुस्की लेते हुए अपनी बात खतम की।

कैम्प के लोगों के सोते-सोते बहुत रात जा चुकी थी। खामोशी में सेरेदा की नाक बजने की आवाज सुनाई दे रही थी। पुजीरेव्स्की अपने घोड़े की जीन का तकिया लगाये सो रहा था। राजनीतिक शिक्षक क्रेमर बैठा हुआ अपनी नोटबुक में तेजी से कुछ लिख रहा था।

अगले रोज स्काउटिंग की एक गश्त से लौट कर पावेल ने अपना घोड़ा एक पेड़ से बांधा और क्रेमर के पास गया जिसने अभी-अभी अपनी चाय खत्म की थी।

'सुनो क्रेमर, कैसा रहे अगर मैं पहली घुड़सवार फौज में चला जाऊं? क्यों? देखने से लगता है कि वहां कुछ बड़ी-बड़ी चीजें होने वाली हैं। इतनी फौजों को जो इकट्ठा किया जा रहा है, बड़ी संख्या में, तो क्या यों ही मजाक के लिए? और यहां तो लगता है कि कुछ खास लड़ाई-वड़ाई देखने को मिलेगी नहीं।"

क्रेमर ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

"चला जाऊं से क्या मतलब? क्या तुम्हारा खयाल है कि सिनेमा की सीट की ही तरह अपनी फौज की टुकड़ी भी जब चाहे बदल सकते हो?"

"मगर इससे फर्क क्या पड़ता है, लड़ना यहां भी है वहां भी," पावेल ने कहा, "मैं भाग कर पीछे तो जा नहीं रहा हूं. मोर्चे को छोड़ कर ?"

मगर क्रेमर इस बात के बिल्कुल खिलाफ था। बोला :

"अनुशासन भी तो कोई चीज है ? कुल मिला कर तुम बुरे लड़के नहीं हो पावेल, मगर कुछ बातों में तुम थोड़े से अराजकतावादी हो। तुम्हारा खयाल है कि तुम मनमानी कर सकते हो, जब जो तुम्हारे जी में आये ? तुम भूल जाते हो मेरे दोस्त कि पार्टी और कोमसोमोल की आधार-शिला लौह अनुशासन है। पार्टी का हित सबसे पहले देखना होगा। और हममें से हर एक को वहां होना चाहिए जहां उसकी जरूरत है, वहां नहीं जहां वह रहना चाहता है। पुजीरेव्स्की ने तुम्हारी बदली की अर्जी रद्द कर दी कि नहीं ? बस, तो यही तुम्हारी बात का जवाब है।"

क्रेमर इतने आवेश में बोल रहा था कि उसे खांसी का दौरा पड़ गया। यह लम्बा दुबला-पतला आदमी प्रेस में काम करता था और सीसे की चूर उसके फेफड़ों पर जम गई थी और अक्सर उसके मोम जैसे फीके जर्द गालों पर बुखार की सी ललाई दिखाई देती थी।

क्रेमर के शान्त होने पर पावेल ने धीमी, मगर दृढ़ आवाज में कहा :

"तुम जो कहते हो वह ठीक है, मगर फिर भी मैं बुद्योनी की फौज में जा रहा हूं।"

उसके अगले रोज शाम को पावेल कैम्प फायर में नहीं था।

पास के एक गांव में बुद्योनी की घुड़सवार टुकड़ी के लोग स्कूल की इमारत के उस पार एक पहाड़ी पर बड़ा-सा घेरा बनाये बैठे थे। एक भीमकाय सिपाही, मशीनगन को खींचने वाली गाड़ी के पीछे बैठा हुआ था। उसने अपनी टोपी पीछे की ओर सरका दी थी और अकार्डियन बाजा बजा रहा था। वह बाजा उसकी अनाड़ी उंगलियों के निर्देश से बिना किसी ताल-सुर के शोर मचा रहा था जैसे उसे गहरी यातना मिल रही हो और वह रो रहा हो। उसके इस गलत-सलत बाजा बजाने से वह बांका घुड़सवार, जो खूब ही चौड़ी बिर्जिस पहने हुए घेरे के बीचोबीच बड़ी मस्ती से होपाक नाच रहा था, परेशानी में पड़ जाता था।

गांव के लड़के-लड़कियां अपनी उत्सुक आंखें लिये इन सिपाहियों की उछल-कूद को, जिनकी ब्रिगेड अभी-अभी गांव में दाखिल हुई थी, देखने के लिए तोप खींचने वाली गाड़ी और आसपास की बाड़ियों पर चढ़ गए थे।

"हां, तोप्तालो ! यह रही ! जमीन खोद कर रख दो ! हां भाई, यह

चीज है। अजी ओ, तुम जो अकार्डियन लिये खड़े हो, जरा जोर से बजाओ, क्या पीं पीं कर रहे हो !"

मगर बजाने वाले की मोटी-मोटी उंगलियां, जो निहायत आसानी से घोड़े की नाल को पकड़ कर मोड़ दे सकती थीं, परदे पर भद्दे तरीके से धप्प-धप्प कर रही थीं।

"कितना बुरा हुआ कि माखनो आफानासी कुल्याबका को ले बीता," कांसे के रंग के एक घुड़सवार ने दुख के साथ कहा, "वह लड़का बहुत अच्छा अकार्डियन बजाता था। अपने घोड़े पर सवार होकर वह हमारे दस्ते के दांयें चला करता था। बहुत बुरा हुआ कि वह मारा गया। वह सिपाही भी बहुत अच्छा था और हमारा सबसे अच्छा अकार्डियन बजाने वाला भी था !"

पावेल ने, जो उसी घेरे में खड़ा था, इस आखिरी बात को पीछे से सुन लिया था। वह लोगों को हटाता हुआ मशीनगन खींचने वाली गाड़ी के पास पहुंच गया और उसने अपना हाथ अकार्डियन की धौंकनी पर रख दिया। संगीत थम गया।

"क्यों क्या बात है ?" अकार्डियन बजाने वाले ने त्यौरी चढ़ाते हुए पूछा।

तोप्तालो रुक गया और भीड़ में से गुस्से की एक भुनभुनाहट उठी : "किस बात का झगड़ा है ?"

पावेल ने बाजे के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा, "जरा मुझे बजाने दो !"

बुद्यौनी के घुड़सवार ने इस बोल्शेविक पैदल सिपाही की ओर अविश्वास से देखा और फिर बेमन से अकार्डियन का पट्टा अपने कंधे पर से उतार दिया।

पावेल ने जानकार अंदाज से बाजे को अपने घुटने पर रख लिया, धौंकनी को पखे की तरह फैला दिया और अकार्डियन अपने पूरे जोशोखरोश से संगीत की खूब ही मस्त धुन निकालने लगा :

ओरी नन्हीं छबीली
किधर चली ? ओ री......
बांके सिपहिया से नैना लड़े तोरे
तू उसके ही प्रेम रली ! ओ री...

तोप्तालो ने इस परिचित धुन को उठा लिया और किसी बड़ी चिड़िया की तरह अपनी बांहों को झुलाता हुआ, झूमता हुआ घेरे के अन्दर जा पहुंचा और अपने जिस्म को अजीब-अजीब तरह से तोड़-मरोड़ कर और अपनी जांघों, घुटने, सिर, माथे, जूते के तल्लों और यहां तक कि अपने मुंह पर कस-कस के हाथ मारता हुआ संगीत की ताल देने लगा।

अकार्डियन की गति तेज से तेज होती जा रही थी और उससे एक बेहद

नशीली, पागल कर देने वाली, स्वर-लहरी निकल रही थी। तोप्तालो जोर-जोर से अपनी टांगों को फटकार कर पूरे घेरे में लट्टू की तरह नाच रहा था—यहां तक कि उसकी सांस फूल गयी।

५ जून, १९२० को बुद्योनी की पहली घुड़सवार फौज दो-चार छोटी, मगर भयानक, लड़ाइयों के बाद तीसरी और चौथी पोलिश फौजों के बीच के पोलिश मोर्चे को चीरने में कामयाब हुई। उसने जेनरल साविका की घुड़सवार ब्रिगेड को, जो उसके रास्ते में पड़ी, चकनाचूर कर दिया और सैलाब की तरह रुजीनी की तरफ बढ़ी।

पोलिश फौज की कमान ने जल्दी-जल्दी अपनी कुछ फौज जमा की और उससे अपने मोर्चे की दरार को भरने की कोशिश की। पोगरेबिश्चे स्टेशन से पांच टैंक झटपट लड़ाई के मुकाम पर भेजे गये। पोलिश फौज का इरादा जारुदनित्सी से हमला करने का था, मगर यह घुड़सवार फौज उसको बचाकर बगल से निकल गयी और पोलिश फौजों के पिछाये में जा पहुंची।

पहली घुड़सवार फौज का पीछा करने के लिए जेनरल कौनिकी की घुड़सवार डिवीजन भेजी गयी। पोलिश कमान को यकीन था कि बुद्योनी की घुड़सवार फौज कजातिन की तरफ बढ़ रही है। पोलिश फौजों के पिछाये में कजातिन एक सबसे अहम जंगी मुकाम था। लिहाजा जेनरल कौनिकी की घुड़सवार डिवीजन को बुद्योनी की फौज पर पीछे से हमला करने का आदेश दिया गया। मगर इस चाल से पोलों की हालत सुधरी नहीं। यह सही है कि उन्होंने उस दरार को पूर दिया और बुद्योनी की घुड़सवार फौज को पीछे से काट दिया, मगर यह चीज अपने आप में काफी परेशान करने वाली थी कि एक मजबूत घुड़सवार फौज उनकी पांतों के पीछे है और उससे उनके पिछाये के अड्डों को खतरा है। इतना ही नहीं, इस बात का भी खतरा था कि वह फौज पोलों की कीव-स्थित फौजी टुकड़ी पर टूट पड़ेगी। आगे बढ़ते हुए लाल घुड़सवार डिवीजनों ने पोलों के लौटने का रास्ता बंद करने के लिए छोटे-छोटे रेल के पुलों को उड़ा दिया और रेलवे लाइनों को उखाड़ फेंका।

कैदियों से यह बात मालूम होने पर कि पोलों का एक फौजी हेडक्वार्टर जिटोमीर में है (और सच बात तो यह थी कि पूरे मोर्चे का उनका हेडक्वार्टर वहीं था), पहली घुड़सवार फौज के कमांडर ने जिटोमीर और बर्दीचेव पर कब्जा करने का फैसला किया। ये दोनों महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन और शासन केन्द्र थे। ७ जून को सवेरे, भोर में, चौथी घुड़सवार डिवीजन पूरे वेग से जिटोमीर की तरफ बढ़ी जा रही थी।

अब कोर्चागिन एक दस्ते के बायें बाजू में अपने घोड़े पर सवार चल रहा था, उसी जगह जहां कुल्याबको चलता था—वह अकार्डियन बजानेवाला जिसके मारे जाने का सबको गम था। सभी सिपाहियों के सम्मिलित अनुरोध पर पावेल को उस दस्ते में रखा गया था। वे लोग इतने अच्छे अकार्डियन बजाने वाले से हाथ नहीं धोना चाहते थे।

उनके घोड़ों के मुंह से फेंचकुर छूट रहा था, मगर रुकने की ताब उनमें नहीं थी। जिटोमीर के पास पहुंच कर वे पंखे की तरह फैल गये और अपनी नंगी, धूप में चमकती तलवारें लिये उन्होंने शहर पर हमला बोल दिया।

घोड़े हांफ रहे थे, उनकी टापों से धरती कराह रही थी और घुड़सवार अपनी रकाबों में पैर दिये खड़े थे।

उनके पैरों के नीचे जमीन तेजी से उल्टी तरफ भागती चली जा रही थी और उनके सामने वह बागीचों और पार्कों वाला बड़ा शहर था जो तेजी से पास आता जा रहा था। घुड़सवारों का यह तूफान बागीचों के बगल से होता हुआ शहर के बीचोबीच जा पहुंचा। लड़ाई के खौफनाक नारे और आवाजें हवा को चीरने लगीं और एक ऐसा समां बंध गया जो मौत की तरह ही भयावना था।

पोल ऐसे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये थे कि वे कुछ भी मुकाबला न कर सके। उस शहर की उनकी फौज को कुचल दिया गया।

अपने घोड़े की गर्दन पर झुका हुआ कोर्चागिन तेजी से तोप्तालो के बगल में चला जा रहा था। तोप्तालो अपने काले घोड़े पर सवार था जिसकी टांगें पतली थीं। पावेल ने देखा कि कैसे अचूक निशाने से उस बांके घुड़सवार ने एक पोलिश सिपाही को, इसके पहले कि वह अपनी राइफिल उठा कर कंधे से लगा सके, चीर कर रख दिया।

घोड़ों की नालें सडक के पत्थरों पर बज रही थीं। तभी एक दुराहे पर उन्होंने अपने ठीक सामने सड़क के बीचोबीच एक मशीनगन को देखा। तीन पोलिश सिपाही अपनी नीली वर्दियां और आयताकार टोपियां लगाये मशीनगन पर झुके हुए थे। एक चौथा आदमी भी था जिसके कॉलर पर सुनहले गोटे का काम था और जो इन घुड़सवारों पर अपना माउजर ताने हुए था।

न तोप्तालो, न पावेल, दोनों में से कोई भी अपने घोड़े को नहीं रोक सका और वे सरपट मशीनगन की तरफ, सीधे मौत के जबड़ों में, भागते चले गए। उस अफसर ने कोर्चागिन पर गोली चलाई, मगर निशाना चूक गया। गोली पावेल के गाल के पास से सन्न से निकल गई और दूसरे ही क्षण उस लेफ्टिनेंट का सिर सड़क के पत्थर से जा टकराया। घोड़े की टाप ने उसके पैर उखाड़ दिए और उसका निर्जीव शरीर चित्त होकर सड़क पर बिछ गया।

उसी वक्त मशीनगन पाशविक डरावनी तेजी से कड़कड़ाई और गोले के एक दर्जन छर्रे आकर तोप्तालो और उसके काले घोड़े को लगे और दोनों वहीं जमीन पर ढेर हो गये।

पावेल का घोड़ा डर कर हिनहिनाता हुआ अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया और अपने सवार को लिये हुए, जमीन पर पड़ी लाशों को फांदता हुआ मशीनगन चलाने वालों पर जा कूदा। पावेल की तलवार हवा में एक अर्धवृत्त बनाती हुई चमकी और एक सिपाही की नीली टोपी को चीरती हुई अन्दर घुस गई।

दूसरे के सिर पर टूटने के लिए तलवार दुबारा चमकी, मगर बौखलाया हुआ घोड़ा दूसरी ओर बहक गया।

एक पहाड़ी तूफानी नदी की तरह हरहराता हुआ घुड़सवार दस्ता अब सड़क के दोराहे पर आ गया था और हवा में बीसों तलवारें चमक रही थीं।

जेल के तंग लम्बे गलियारों में आवाजें गूंज रही थीं।

जेलखाने की कोठरियों में एक अजीब परेशानी का आलम था। उनमें बंद मर्दों और औरतों के दुबले, सूखे, मुरझाये हुए, परेशान चेहरे कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि आगे क्या होने वाला है। उनको यह मालूम था कि शहर के अन्दर लड़ाई जारी है, लेकिन इस बात का यकीन उन्हें मुश्किल से आ रहा था कि इस चीज का मतलब उनकी आजादी होगी, कि ये हमला करने वाले, जो अचानक ही शहर पर टूट पड़े थे, उनके अपने आदमी हैं।

जेल के हाते में गोली चल रही थी। लोग गलियारों में भाग रहे थे। और फिर वे सदा-सदा के पहचाने, प्यारे, मर्मस्पर्शी शब्द : "अब तुम आजाद हो, साथियो!"

पावेल एक बंद कोठरी की तरफ दौड़ा जिसमें ताला लगा हुआ था। इस कोठरी की नन्हीं सी खिड़की में से दर्जनों आंखें बेताबी से झांक रही थीं, मानो किसी ने उन्हें वहां चिपका दिया हो। पावेल अपनी राइफिल के कुंदे से बार-बार ताले पर चोट मार रहा था।

मिरोनोव ने पावेल को एक तरफ हटाते हुए अपनी जेब से एक दस्ती बम निकाला और बोला, "रुको, मैं अभी इसे एक बम से तोड़े देता हूं।"

प्लैटून कमांडर जिगारचेंको ने लपक कर उसके हाथ से बम छीन लिया। "रुको भी, कैसे गधे हो, पागल हो गये हो क्या! अभी पलक मारते ताली आई जाती है। जो कुछ हम तोड़ नहीं सकेंगे, उसे ताली से खोलेंगे।"

जेल के संतरी पीछे से रिवाल्वर से ठेल ठेल कर ले जाये जा रहे थे। उसके बाद रास्ते भर में तमाम मर्द और औरतें भर उठे जो चीथड़े लगाये थे,

जिन्होंने न जाने कब से मुंह-हाथ भी नहीं धोया था, मगर जो खुशी से पागल हो रहे थे।

कोठरी के दरवाजे को धक्का देकर खोलते हुए पावेल अन्दर पहुंचा।

"साथियो, तुम लोग आजाद हो! हम लोग बुद्यौनी के आदमी हैं—हमारे डिवीजन ने शहर पर कब्जा कर लिया है!"

एक औरत, जिसकी आंखों में आंसू छलक रहे थे, दौड़ कर पावेल के पास पहुंची और उसे अपनी बांहों में भर कर सिसकने लगी जैसे उसे कोई अपना सगा मिल गया हो।

इन पांच हजार एकहत्तर बोल्शेविकों और लाल सेना के दो हजार राजनीतिक कर्मियों की—जिन्हें पोलिश क्रांति-विरोधियों ने इन पत्थर के तहखानों में गोली मारने या फांसी पर चढ़ाने के लिए बंद कर रखा था—आजादी ही इस डिवीजन के सैनिकों के लिये सबसे बड़ा पुरस्कार था, जीत से भी बड़ा पुरस्कार। उन सात हजार क्रांतिकारियों के लिए रात्रि का अभेद्य अंधकार दिन के सुनहले प्रकाश में बदल गया।

एक कैदी, जिसकी खाल नीबू की तरह पीली थी, खुशी से पागल होकर पावेल की ओर दौड़ा। यह था सैमुअल लेखर—शेपेतोवका के प्रेस का एक कम्पोजीटर।

सैमुअल के मुंह से अपने शहर की खून में डूबी हुई कहानी सुन कर पावेल का चेहरा मुरझा गया और सैमुअल के शब्द पिघले हुए सीसे की बूंदों की तरह उसके दिल को जला रहे थे।

"उन्होंने हम सबको एक साथ रात के वक्त पकड़ लिया। किसी हरामजादे ने हमारे साथ गद्दारी की और फौजी पुलिस को हमारे बारे में बतला दिया। एक बार हमें अपने पंजों में पाकर उन्होंने हमारे साथ फिर किसी तरह का रहम नहीं किया। हमें उन्होंने बहुत बुरी तरह मारा, पावेल। मुझे औरों से कम यातना सहनी पड़ी क्योंकि दो ही चार वारों के बाद मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। लेकिन, दूसरे मुझ से ज्यादा मजबूत थे।

"हमारे पास छिपाने को कुछ भी नहीं बचा था। उन सिपाहियों को हमसे ज्यादा अच्छी तरह हमारी बातें मालूम थीं। उनको पता था कि हमने कब-कब कौन से कदम उठाये। और यह कोई ताज्जुब की बात नहीं थी क्योंकि हमारे बीच एक गद्दार था! उन दिनों के बारे में मैं तुमको नहीं बतला सकता, पावेल। जो पकड़े गये, उनमें से तुम बहुतों को जानते हो। वालिया ब्रुजाक और रोजा ग्रित्समान, कैसी प्यारी लड़कियां थीं। अभी मुश्किल से सत्रह की हुई थीं और कैसा विश्वास झलकता था उनकी आंखों में, पावेल! साशा बुनशाफ्ट भी तो पकड़ा गया। उसे तो तुम जानते होगे, कम्पोजीटर था।

कैसा मस्त लड़का था ! हमेशा मालिक के कारटून बनाया करता था। उसे और कालेज के दो लड़कों, नोवोसेल्स्की और तुजित्स को वे पकड़ ले गये। इन लड़कों की भी तुम्हें याद होगी ही। बाकी लोग भी शहर के या जिले के ही थे। कुल मिलाकर उन्तीस लोग पकड़े गये थे, जिनमें छः औरतें थीं। उन सभी को एक से एक अमानुषिक यातनाएं दी गयीं। वालिया और रोजा के साथ पहले ही रोज बलात्कार किया गया। उन सुअरों ने क्या नहीं किया उन लड़कियों के साथ और फिर उन्हें लाकर कोठरी में डाल गये, जिन्दा से ज्यादा मुर्दा। उसके बाद रोजा पागलों की तरह बातें करने लगी और कुछ दिन बाद बिल्कुल ही पागल हो गयी।

"उनको यकीन न आता था कि वह पागल है। उनका कहना था कि वह बन रही है और हर बार जब वे उससे सवाल-जवाब करते, तो बड़ी बेरहमी से उसे मारते। कैसी हौलनाक शक्ल हो गयी थी उसकी जब उसे गोली से मारा गया ! उसका चेहरा जख्मों से स्याह हो रहा था, उसकी आंखों में दहशत थी और वह बिलकुल बूढ़ी नजर आती थी।

"वालिया ब्रुजाक ने अन्त तक बड़ी वीरता से काम लिया। वे सब सच्चे सैनिकों की तरह मरे। मैं नहीं जानता कि यह सब सहने की ताकत उनमें कहां से आ गयी थी। आह पावेल, उनकी मौत की कहानी मैं तुम्हें कैसे सुनाऊं ? बड़ी भयानक मौत थी वह।

"वालिया सबसे खतरनाक काम कर रही थी। वही पोलिश हेडक्वार्टर के वायरलेस आपरेटरों के साथ सम्पर्क बनाये थी और हमारे जिला केन्द्र के लोगों के सम्पर्क में भी थी। इसके अलावा उन्होंने जब उसके घर की तलाशी ली तो उन्हें दो बम और एक पिस्तौल भी मिला। वे बम उसे उसी खुफिया के आदमी ने दिये थे। सारी योजना इस तरह बनाई गयी थी जिससे कि उन लोगों पर यह इलजाम लगाया जा सके कि वे हेडक्वार्टर को बम से उड़ाने का इरादा रखते थे।

"पावेल, उन आखिरी दिनों के बारे में बात करने से बड़ा दर्द होता है। मगर तुम कहते हो तो मैं तुम्हें सब बतलाऊंगा। फौजी अदालत ने वालिया और दो लोगों को फांसी की और बाकी को गोली से उड़ाने की सजा दी। उन पोलिश सिपाहियों पर, जो हमारे संग काम कर रहे थे, दो दिन पहले ही मुकदमा चलाया जा चुका था। कारपोरल स्नेगुर्को पर, जो एक नौजवान वायरलेस आपरेटर था और लड़ाई के पहले लोड्ज में बिजली का काम करता था, राजद्रोह का जुर्म लगाया गया और कहा गया कि वह सिपाहियों के बीच कम्युनिस्ट प्रचार करता है। इस इलजाम में उसे गोली से उड़ाने की

सजा सुनाई गई। उसने अपील नहीं की और सजा सुनाये जाने के चौबीस घंटे बाद उसे गोली से उड़ा दिया गया।

"उसके मुकदमे में शहादत देने के लिए वालिया को बुलाया गया। उसने बाद में हमें बतलाया कि स्नेगुर्को ने इस बात का इकबाल कर लिया था कि उसने कम्युनिस्ट प्रचार किया है, मगर इस बात को मानने से इनकार कर दिया था कि उसने देशद्रोह किया है। उसने कहा, 'मेरी पितृभूमि पोलिश सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र है। हां, मैं पोलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हूं। मुझे मेरी इच्छा के खिलाफ फौज में भरती किया गया और जब मैं फौज में पहुंच ही गया तो मैंने अपनी ही तरह के उन दूसरे सिपाहियों की आंखें खोलने के लिए, जिन्हें जबरन मोर्चे पर भेजा गया था, भरसक प्रयत्न किया। आप इस जुर्म में चाहें तो मुझे फांसी पर लटका सकते हैं, मगर यह जुर्म आप मुझ पर नहीं लगा सकते कि मैंने अपनी पितृभूमि के साथ गद्दारी की है। क्योंकि अपनी पितृभूमि के साथ न तो मैंने कभी गद्दारी की है और न कभी करूंगा। आपकी पितृभूमि मेरी पितृभूमि नहीं है। आपकी पितृभूमि रईसों और नवाबों की पितृभूमि है, मेरी पितृभूमि मजदूरों और किसानों की पितृभूमि है। मेरी पितृभूमि में, जो कि अस्तित्व में आयेगी—जरूर आयेगी, इसका मुझे पक्का विश्वास है—कोई मुझे इसके लिए कभी देशद्रोही नहीं कहेगा।'

"मुकदमे के बाद हम सब लोगों को साथ रखा गया। मौत की सजा देने के ठीक पहले हमें जेल भेजा गया। जेल के ठीक सामने, अस्पताल के बगल में उन्होंने रात को फांसी की टिक्टियां खड़ी कीं। गोली मारने के लिए उन्होंने सड़क से थोड़ी ही दूर पर जंगल में एक बड़े से गढ़े के पास जगह चुनी। हम सब लोगों के लिए एक बड़ी सी कब्र खोदी गयी।

"हमारी सजा की बात शहर भर में इश्तहार की शकल में दीवारों पर चिपका दी गई ताकि सबको उसका पता हो जाय। पोलों ने हमको खुलेआम, पब्लिक के सामने, मौत की सजा देने का फैसला किया था ताकि शहरवाले डर जायें। बहुत सबेरे से उन्होंने शहरवालों को ठेल-ठेल कर उस जगह भेजना शुरू किया जहां हम मौत के घाट उतारे जाने वाले थे। बड़ी भयानक बात है, मगर यह सही है कि कुछ लोग कुतूहल के मारे भी आ गये थे। जरा ही देर में जेल की दीवार के बाहर बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गई थी। अपनी कोठरियों से हम आवाजों की भनभन सुन सकते थे। उन लोगों ने सड़क पर भीड़ के पीछे मशीनगनें खड़ी कर दी थीं और आस-पास के सारे इलाके से घुड़सवार और पैदल सिपाही बटोर लाये थे। उनकी एक पूरी की पूरी बटालियन सड़कों और उनके पार साग-भाजी के खेतों को घेरे हुए थी। जिन्हें फांसी दी जाने वाली थी उनके लिए टिक्टी के पास ही एक गढ़ा खोद रखा था।

"हम लोग खामोशी के साथ अपनी मौत का इन्तजार कर रहे थे। बीच-बीच में दो-एक शब्द आपस में बोल लेते थे। पिछली रात ही हमने तमाम बातें कर ली थीं और एक-दूसरे से विदा भी कह ली थी। सिर्फ कोठरी के एक कोने में रोजा अपने-आप कुछ बुदबुदा रही थी। तमाम मारपीट और जुल्मों को सहने के बाद, वालिया अब इतनी कमजोर हो गई थी कि हिल सकना भी उसके लिए मुमकिन नहीं था और वह ज्यादा वक्त बिना हिले-डुले निश्चेष्ट पड़ी रहती थी। शहर की ही दो कम्युनिस्ट लड़कियां, जो बहनें थीं, जब अन्तिम बार एक-दूसरे से गले मिलीं तो अपने आंसुओं को नहीं रोक सकीं। उन्हें रोता देख कर गांव के एक नौजवान स्तेपानोव ने, जो अच्छा गबरू जवान था और जिसने दो सिपाहियों को, जो उसको पकड़ने आये थे, ढेर कर दिया था, उन लड़कियों को मना करते हुए कहा, 'आंसू नहीं गिरना चाहिए, साथियो! यहां चाहे रो लो, लेकिन बाहर नहीं। हम उन हरामजादों को गाल बजाने का मौका नहीं देना चाहते। और रहम तो हम पर किसी भी हालत में किया जायगा नहीं। मरना हमें है ही तो क्यों न शान से मरें। हम अपने घुटनों के बल घिसटेंगे नहीं। याद रखो साथियो, हमें अच्छी तरह मरना है।'

"उसके बाद वे हम लोगों को लेने आये। आगे-आगे था ज्वारकोव्स्की, उनके खुफिया विभाग का सबसे बड़ा अफसर। दूसरे को तकलीफ में देख कर उसे खुशी होती थी और इस मामले में तो शायद कोई उससे आगे नहीं जा सकता था। जब वह खुद लड़कियों से बलात्कार नहीं करता, तो अपने सिपाहियों से करवाता था और देख-देख कर खुश होता। सड़क के दोनों ओर सिपाहियों की कतारें खड़ी थीं और उनके बीच से हम लोग फांसी के तख्ते की तरफ ले जाये गये। उन सिपाहियों की वर्दी के कंधे पर पीले रंग का झब्बा था, जिसके कारण हम लोगों ने उन्हें 'केनरी'[1] नाम दे रखा था। वे लोग अपनी नंगी तलवारें लिये खड़े थे।

"उन्होंने हमारी चार-चार की टोलियां बना दी थीं—दो आदमी आगे, दो आदमी पीछे। अपनी राइफिलों के कुन्दों से ठेल-ठेल कर वे हमें तेजी से जेल के हाते के बीच से ले चले। फिर, उन्होंने फाटक खोल दिये और सड़क पर लाकर फांसी के तख्ते के सामने हमें खड़ा कर दिया ताकि हम अपने साथियों को मरते देखें और खुद अपनी बारी का इन्तजार करें। मोटे-मोटे शहतीरों की खूब ऊंची-सी टिक्टियां खड़ी थीं। मोटी रस्सी के तीन फंदे उनमें लटक रहे थे और हर फन्दे के नीचे सीढ़ियों समेत एक तख्ता था जिसे ठोकर मारकर अलग किया जा सकता था। आदमियों का वह समुन्दर, जो मचलता और लहरें लेता

---

१. पीले रंग के परोंवाली एक चिड़िया।

खड़ा था, उसमें से हल्की मरमर ध्वनि की एक तरंग उठी। सब लोगों की आंखें हमारे ऊपर जमी हुई थीं। हमने उस भीड़ में से अपने कुछ लोगों को देखा और उन्हें पहचान गये।

"थोड़ी दूर पर कुछ पोलिश रईस और अफसर अपनी दूरबीन लिये खड़े थे। वे बोल्शेविकों को फांसी लगते देखने आये थे।

"हमारे पैरों के नीचे मुलायम बरफ थी। बरफ के ही कारण जंगल सफेद हो रहा था, पेड़ों पर रुई के गालों की तरह बरफ की मोटी-मोटी परतें जमी हुई थीं। बरफ धीरे-धीरे गिर रही थी और हमारे जलते हुए चेहरों पर आकर पिघल जाती थी। फांसी के तख्ते की सीढ़ियों पर भी बरफ की कालीन बिछी हुई थी। हम लोग बहुत थोड़े कपड़े पहने हुए थे, मगर किसी को सर्दी नहीं मालूम हो रही थी। स्तेपानोव को इस बात का भी ध्यान नहीं आया कि वह अपने मोजे पहने-पहने चल रहा था।

"टिक्टियों के पास फौज का सरकारी वकील और बड़े-बड़े अफसर खड़े थे। आखिरकार वालिया तथा दो और साथी जिन्हें फांसी दी जाने वाली थी, जेल से बाहर लाये गए। वे तीनों बांह में बांह डाले चल रहे थे, बीच में वालिया थी जिसे बाकी दोनों सहारा दिये हुए थे, क्योंकि खुद चलने की ताकत उसमें नहीं रह गई थी। मगर वह अच्छी तरह तनकर चलने की पूरी कोशिश कर रही थी। उसे स्तेपानोव के ये शब्द याद थे: 'हमें अच्छी तरह मरना है, साथियो!' वह एक ऊनी जाकट पहने थी, मगर उस पर कोट नहीं था।

"ज्वारकोव्स्की को स्पष्ट ही यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि वे लोग एक दूसरे की बांह में बांह डालकर चलें और वह उन्हें पीछे से धक्का दे रहा था। वालिया ने कुछ कहा और उसके मुंह से बात निकलते ही एक घुड़सवार सिपाही ने जोर से उसके मुंह पर अपनी चाबुक मारी। भीड़ की एक औरत के मुंह से भयानक चीख निकली और वह घेरे को तोड़कर कैदियों के पास पहुंचने के लिए पागलों की तरह जोर लगाने लगी। मगर उसे पकड़ लिया गया और घसीट कर पीछे कर दिया गया। जरूर वह वालिया की मां रही होगी। फांसी के तख्ते के पास पहुंच कर वालिया ने गाना शुरू किया। मैंने कभी ऐसी आवाज नहीं सुनी थी—जो आदमी मौत से गले मिलने जा रहा हो, वही इतनी मार्मिक अनुभूति से गा सकता है। वह वार्जावियान्का का गाना गा रही थी और बाकी दो ने भी उसके साथ गाना शुरू कर दिया। घुड़सवार सन्तरियों ने गुस्से से अंधे होकर उन पर चाबुक चलानी शुरू की, मगर उन तीनों को चोट का कोई एहसास नहीं होता था। मारते-मारते उन्हें वहीं ढेर कर दिया गया और फिर बोरों की तरह घसीट कर टिक्टी तक पहुंचाया गया। जल्दी-जल्दी उन्हें

सजा सुनाई गई और फांसी का फन्दा उनके गले में डाल दिया गया। उसी वक्त हम लोगों ने गाना शुरू किया :

उठो—जागो भूखे बन्दी...!

"सब ओर से सन्तरी हमारे ऊपर लपके और मुझे सिर्फ इतना मौका मिला कि मैं राइफिल के कुन्दों से फांसी के तख्ते को हटाये जाते और उन तीनों को फांसी के फन्दे में झटका खाते देखूं...

"हम में से बाकी लोग दीवाल के सहारे खड़े कर दिये गये थे, गोली खाने के लिए, जब कि यह मालूम हुआ कि हममें से दस लोगों की मौत की सजा घटा कर बीस साल की कैद की सजा कर दी गयी थी। बाकी सोलह को गोली मार दी गयी।"

सैमुअल अपनी कमीज के कॉलर को बार-बार खींच रहा था जैसे उसका गला घुटा जा रहा हो।

"तीन दिन तक लाशें अपने फन्दों में फंसी झूलती रहीं। दिन-रात टिक्टी पर पहरा रहता था। उसके बाद कैदियों का एक नया जत्था जेल लाया गया और उन्होंने हमें बतलाया कि जिस फन्दे में कामरेड तोबोल्दिन को, जो उन तीनों में सबसे भारी थे, लटकाया गया था, उसकी रस्सी टूट गयी। तब उन्होंने बाकी दो को भी उतारा और तीनों को दफन कर दिया।

"मगर टिक्टियां ज्यों-की-त्यों खड़ी रहने दी गईं। हम लोग जब इस जगह लाये गए तब भी वे खड़ी थीं। वे खड़ी हैं और उनके फन्दे अपने ताजे शिकारों का इन्तजार कर रहे हैं।"

सैमुअल चुप हो गया और आगे की ओर घूरता बैठा रहा, गो उसकी आंखें कुछ देख नहीं रही थीं। पावेल को इस बात का पता न चला कि कहानी खत्म हो गई है। उसकी आंखों के सामने वे ही तीनों शरीर झूल रहे थे जिनका सिर एक ओर को लटक गया था।

जब सिपाहियों को बाहर जमा करने के लिए बिगुल बजा, तभी यकायक पावेल होश में आया।

उसने बहुत धीमे से कहा, "आओ चलें सैमुअल।"

सड़क पर दोनों ओर घुड़सवार खड़े थे और उनके बीच से पोलिश कैदी ले जाये जा रहे थे। जेल के फाटक पर खड़ा रेजीमेंटल कमिसार अपने पैड पर कोई आदेश लिख रहा था।

कागज के उस टुकड़े को एक लम्बे-तगड़े, दस्ते के कमांडर को पकड़ाते हुए उसने कहा, "कामरेड एन्तिपोव, यह लो और इन तमाम कैदियों को घुड़सवारों के पहरे में नोवगोरोद-वोलिन्स्की ले जाओ। जो घायल हैं, उनकी

मरहमपट्टी और डाक्टरी जांच करवाने का ख़याल रखना। फिर उनको गाड़ियों में डाल कर शहर से पन्द्रह मील ले जाकर छोड़ देना। उनके साथ माथापच्ची करने का हमारे पास वक्त नहीं है। मगर हां, एक बात का ख़याल रखना कि कैदियों के साथ कोई वदसलूकी न हो।"

अपने घोड़े पर सवार होते हुए पावेल सैमुअल की ओर मुड़ा और बोला, "सुनते हो? वे तो हमारे आदमियों को फांसी पर लटकाएं और हम उन्हें हिफाजत के साथ ले जाकर खुद उनके आदमियों के बीच पहुंचा दें। और इतना ही नहीं—उनके संग सलूक भी अच्छा करें! कैसे हो सकता है हमसे यह?"

रेजीमेंटल कमांडर मुड़ा और बोलने वाले की तरफ कठोर आंखों से देखते हुए बोला, "निहत्थे कैदियों के साथ क्रूरता का वर्ताव करने वाले को मौत की सजा दी जायगी। हम लोग क्रान्ति-विरोधी ह्वाइट लोग नहीं हैं!" पावेल ने यह बात सुनी तो उसे लगा जैसे उसी को सुनाकर यह बात कही गयी हो।

वहां से जब पावेल चला तो उसे क्रान्तिकारी फौजी काउंसिल के हुक्मनामे के आखिरी शब्द याद आये जिन्हें रेजीमेंट को पढ़कर सुनाया गया था:

"मजदूरों और किसानों का देश अपनी लाल सेना को प्यार करता है। उसके ऊपर देश को गर्व है। और उस सेना के फरहरे पर एक भी धब्बा न रहे, यह हमारा व्रत है।"

पावेल के होंटों ने दुहराया, "एक भी धब्बा नहीं।"

जिस वक्त चौथी घुड़सवार डिवीजन ने जिटोमीर पर कब्जा किया, सातवीं राइफिल डिवीजन की बीसवीं ब्रिगेड, जो कामरेड गोलिकोव की सेना का ही अंग थी, ओकूनिनोवो गांव के इलाके में नीपर नदी पार कर रही थी।

कामरेड गोलिकोव की फौज में २५वीं राइफिल डिवीजन और एक बाश्कीर घुड़सवार ब्रिगेड थी। उसको आदेश था कि नीपर नदी पार करे और इरशा स्टेशन पर कीव-कोरोस्तेन रेलवे को अपनी जद में ले ले। इस कार्रवाई से कीव से पीछे हटने का पोलों का आखिरी रास्ता भी कट जायगा।

इस नदी को पार करने के समय शेपेतोवका के कोमसोमोल संगठन का सदस्य मिशा लेव्चुकोव मारा गया। वे लोग उस हिलते-डुलते पीपे के पुल पर भागे जा रहे थे कि उधर से ऊंचे कगार से एक गोला छूटा और आकर इन लोगों के पास पानी में गिरा और पानी के चिथड़े-चिथड़े कर दिये। उसी वक्त मिशा कहीं किसी पीपे के नीचे चला गया और गायब हो गया। नदी उसको

निगल गई और फिर उसने उसको लौटाया नहीं। याकिमेंको ने, जिसके बाल सुनहले और टोपी टूटी हुई थी, चिल्लाकर कहा: "मिश्का! अरे यह तो मिश्का था! बेचारा ऐसे डूबा जैसे पत्थर डूब जाय!" क्षण भर वह सिपाही डरी और घबराई हुई आंखों से उस स्याह पानी को देखता रहा, मगर उसके पीछे आते हुए आदमियों ने उसे आगे को धक्का देते हुए कहा, "क्या मुंह बाये खड़े हो, तुम्हारी मत मारी गयी है क्या! भागो-भागो, दौड़ो!" किसी के लिए शोक मनाने या चिन्ता करने का वक्त नहीं था। यह ब्रिगेड उन दूसरी ब्रिगेडों से पीछे रह गयी थी जिन्होंने अब तक नदी के दाहिने किनारे पर कब्जा कर लिया था।

चार रोज बाद ही कहीं सर्गेई को मिशा की मृत्यु का पता चला। तब तक ब्रिगेड ने बुचा स्टेशन पर कब्जा कर लिया था और घूम कर कीव का सामना करती हुई खड़ी हो गयी थी ताकि वह पोलों के जबर्दस्त हमले का मुकाबला कर सके। पोल फौजें घेरे को तोड़ कर कोरोस्तेन पहुंचने की कोशिश कर रही थीं।

गोली चलाने वालों की कतार में याकिमेंको सर्गेई के बगल में आकर पड़ गया। वह काफी देर से गोली चला रहा था जिससे उसकी राइफिल बहुत गरम हो गयी थी और उसे बोल्ट चढ़ाने में कठिनाई महसूस हो रही थी। दुश्मन की मार से बचने के लिए अपने सिर को सावधानी से झुकाये-झुकाये वह सर्गेई की तरफ मुड़ा और बोला, "इसको थोड़ा सुस्ताने का मौका देना होगा। एक दम अंगारा हो रही है।"

गोली-गोले छूटने के उस शोर में सर्गेई ने शायद ही उसकी बात सुनी।

जब शोर कुछ थमा तो याकिमेंको ने बात-बात में कहा, "तुम्हारा साथी नीपर में डूब गया। इसके पहले कि मैं कुछ कर सकूं—वह आंख से ओझल हो चुका था।" बस इतनी ही बात उसने कही। फिर उसने अपनी राइफिल का बोल्ट चढ़ाने की कोशिश की, और देखा कि हां, अब वैसा करना मुमकिन है, कारतूसों की नयी पेटी निकाली और अपनी राइफिल में उसे डालने लगा।

वर्डचिव लेने के लिए जो ग्यारहवीं डिवीजन भेजी गयी थी, उसे पोलों के जबर्दस्त मुकाबले का सामना करना पड़ा। शहर की सड़कों पर बहुत खूनी लड़ाई लड़ी गयी। मशीनगन के गोलों की बौछार में बोल्शेविकों की घुड़सवार फौज आगे बढ़ी। शहर पर कब्जा कर लिया गया और हारी हुई पोलिश फौजों के बाकी लोग भाग गए। रेलवे यार्ड में खड़ी हुई गाड़ियां बिलकुल ठीक हालत में कब्जे में आ गईं। मगर पोलिश फौजों के लिए सबसे

आफत की बात यह हुई कि उनके गोले-बारूद के एक बड़े से गोदाम में, जिससे सारे मोर्चे को सामान पहुंचता था, विस्फोट हो गया। लाखों गोले धड़ाके के साथ हवा में उड़े। उस धड़ाके से खिड़कियों के शीशे चूर-चूर हो गये और मकान ऐसे हिलने लगे जैसे वे दफ्ती के बने हों।

जिटोमीर और बर्डीचेव पर कब्जा हो जाने से लाल फौजें पोलिश फौजों की पांतों के पीछे जा पहुंचीं और पोलिश फौजों को मजबूर होकर उस लोहे के घेरे में से बाहर निकलने के लिए कीव से दो धाराओं में निकल कर अपनी जान की बाजी लगाकर लड़ना पड़ा।

लड़ाई के तूफानी भंवर में बहते हुए पावेल को इस बात का एहसास ही न रहा कि दिन कैसे आता है और कैसे बीत जाता है। उसका व्यक्तित्व समूह में खो गया और दूसरे सिपाहियों की ही तरह उसके लिए भी "मैं" शब्द बाकी नहीं बचा। उनके लिए बस एक शब्द था, "हम," हमारी रेजीमेंट, हमारा दस्ता, हमारी ब्रिगेड।

घटनाएं तूफानी वेग से घटित हो रही थीं। हर रोज कोई न कोई नई बात हुआ करती थी।

बुद्योनी की घुड़सवार फौज बरफ की चट्टान की तरह आगे बढ़ रही थी और हमलों पर हमले करती जा रही थी, यहां तक कि पोलिश फौजों की पिछली पांतें तहस-नहस हो गयी थीं। अपनी विजयों के उल्लास में चूर ये घुड़सवार डिवीजनें बेइन्तहा जोश और गुस्से से नोवोग्राद-वोलिन्स्की पर टूटीं। पोलिश फौजों के पिछाये में यही सबसे अहम जगह थी। जिस तरह समुन्दर की लहरें चट्टानी साहिल से आकर टकराती हैं, पीछे हटती हैं और फिर आकर टकराती हैं, उसी तरह यह फौजें आगे बढ़ती थीं, पोलिश फौजों से टकराती थीं और लौटकर फिर दूने वेग से आगे बढ़ती थीं। उनके लबों पर बस यही एक आवाज थी : "आगे बढ़ो, आगे बढ़ो!"

पोलों को कोई भी शक्ति बचा न सकी—न तो उनके कंटीले तारों के घेरे और न शहर में तैनात उनकी फौज का जान पर खेल कर मुकाबला करना। २७ जून को सबेरे बुद्योनी की घुड़सवार फौज ने बिना घोड़ों से उतरे स्लुच नदी को पार किया और नोवोग्राद-वोलिन्स्की में दाखिल हुई और पोलों को मार कर शहर के बाहर कोरेत्स की तरफ भगा दिया। उसी वक्त पैंतालीसवीं डिवीजन ने नोवी मिरोपोल में स्लुच को पार किया और कोताव्स्की की घुड़सवार ब्रिगेड ल्युबार की बस्ती पर टूटी।

पहली घुड़सवार फौज के रेडियो स्टेशन को मोर्चे के प्रधान सेनापति का आदेश मिला कि अपनी सारी घुड़सवार शक्ति को रोवनो पर कब्जा करने के

लिए जमा करो। लाल डिवीजनों के जबर्दस्त हमलों के आगे पोलिश फौजें टिक न सकीं और हिम्मत हार कर, आतंकित होकर छोटी-छोटी टोलियों में इधर-उधर बिखर गयीं।

इन्हीं तूफानी दिनों में पावेल कोर्चागिन की एक ऐसी मुलाकात हुई जिसकी उसे कोई आशा न थी। ब्रिगेड के कमांडर ने उसे स्टेशन भेजा था जहां एक बख्तरबन्द गाड़ी खड़ी हुई थी। दुलकी चाल से घोड़े को दौड़ाते हुए पावेल ने रेल के ढलुआ बांध को पार किया और इस्पात के रंग की भूरी गाड़ी के पास जाकर घोड़े की लगाम खींची और खड़ा हो गया। बख्तरबन्द गाड़ी के दोनों ओर तोपों के काले-काले थूथन निकले हुए थे जिनके कारण गाड़ी बड़ी भयानक दीख रही थी। तेल के धब्बे लगे कपड़े पहने कई लोग उसके बगल में खड़े उसके पहियों पर भारी लोहे का बख्तर खड़ा करने का काम कर रहे थे।

पावेल ने चमड़े की जाकट पहने हुए एक लाल सैनिक से, जो पानी की बाल्टी लेकर जा रहा था, पूछा, "इस गाड़ी के कमांडर कहां हैं?"

उस आदमी ने इंजन की तरफ इशारा करते हुए कहा, "वहां।"

पावेल अपने घोड़े पर सवार इंजन तक गया और वहां पहुंच कर बोला, "मैं कमांडर से मिलना चाहता हूं।" एक चेचकमुंह आदमी, जो सिर से पैर तक चमड़े के कपड़े पहने हुए था, उसकी तरफ मुड़ा और बोला, "मैं ही कमांडर हूं।"

पावेल ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला।

"यह लीजिए, यह ब्रिगेड कमांडर का हुक्मनामा है। लिफाफे पर दस्तखत कर दीजिए।"

कमांडर ने लिफाफे को अपने घुटने पर रखा और अपने दस्तखत घसीट दिये। उधर रेलवे लाइन पर एक आदमी तेल की कुप्पी लिए इंजन के बिचले पहिये पर काम कर रहा था। पावेल को सिर्फ उसकी चौड़ी पीठ और उसकी चमड़े की पतलून की जेब से बाहर को निकला हुआ पिस्तौल का हत्था दिखाई दे रहा था।

रेल के कमांडर ने लिफाफा पावेल को वापस दे दिया और पावेल अपने घोड़े की रास हाथ में लेकर चलने ही वाला था कि तेल की कुप्पी वाला आदमी उठकर सीधा खड़ा हुआ और पावेल की ओर मुड़ा। दूसरे ही क्षण पावेल घोड़े से कूद पड़ा, जैसे हवा के तेज झोंके ने उसे नीचे पटक दिया हो।

"आर्तेम!"

उस आदमी के हाथ से तेल की कुप्पी छूट पड़ी और उसने इस नौ-उम्र लाल सिपाही को अपनी बांहों में इस तरह भर लिया जैसे कोई बड़ा सा भालू किसी को अपनी बांहों में भर ले।

"पावका ! बदमाश ! तू है !" आर्तेम चिल्लाया, जैसे उसे अपनी आंखों पर यकीन ही न आ रहा हो।

बख्तरबन्द गाड़ी के कमांडर और कई तोपची वहीं पास ही खड़े उनको देख रहे थे और खूब प्रसन्न होकर मुस्करा रहे थे।

"जरा सोचो ! दो भाइयों की ऐसी अचानक मुलाकात ! क्या खूब !" वे कह रहे थे।

यह घटना ल्वोव के इलाके में हुई एक लड़ाई के दौरान में १९ अगस्त को घटी। लड़ाई के वक्त पावेल की टोपी गायब हो गई और उसने अपने घोड़े की रास खींची। अगले दस्ते पोलिश फौजों को काटते हुए उनकी पांतों में धंस चुके थे। उसी वक्त नदी की ओर जाने के अपने रास्ते में झाड़ियों के बीच से घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ देमीदोव आया। पावेल के बगल से हवा की तेजी से गुजरते हुए उसने चिल्लाकर कहा :

"डिवीजन कमांडर मारे गये !"

पावेल चौंक पड़ा। लेतुनोव, उसका बहादुर कमांडर, वह अनोखा वीर मारा गया ! पावेल गुस्से से पागल हो उठा।

अपनी तलवार की उल्टी तरफ से उसने अपने थके हुए घोड़े गनेदको को कोंचा। घोड़े के मुंह की लगाम से खून मिली झाग गिर रही थी। पावेल ने उसको एड़ लगायी और सबको चीरता हुआ उस जगह जा पहुंचा जहां लड़ाई सबसे गर्म थी।

"मार डालो इन घिनौने कीड़ों को, मार डालो ! इन पोलिश नवाबों को काटकर रख दो ! इन्होंने लेतुनोव को मार डाला है।" चिल्लाते हुए उसने हरी वर्दी पहने एक आदमी पर जोर से तलवार का वार किया। अपने डिवीजन कमांडर की मौत से गुस्से में आकर उन घुड़सवारों ने पोलिश सिपाहियों की एक पूरी प्लैटून का सफाया कर दिया।

दुश्मन का पीछा करते हुए वे लड़ाई के मैदान पर सरपट आगे भागे जा रहे थे, तभी एक पोलिश तोप आग उगलने लगी। उसके गोलों ने हवा को चीर दिया और चारों तरफ मौत की बरसात होने लगी।

एकाएक पावेल की आंखों के आगे कोई हरी सी चीज इतने जोर से चमकी कि उसने पावेल को अंधा कर दिया; उसके कानों में बिजली की कड़क का सा शोर हुआ और लाल-लाल लोहा उसकी खोपड़ी को चीरता हुआ अन्दर चला गया। धरती एक अजीब और भयानक तरीके से घूमने लगी और फिर उसे ऐसा लगा जैसे वह धीरे-धीरे नीचे से ऊपर हुई जा रही हो।

फूस के एक तिनके की तरह पावेल घोड़े की पीठ पर से नीचे आ गिरा गोले की मार से वह घोड़े के सिर के ऊपर से धरती पर बोरे की तरह भद् से गिर पड़ा।

तभी काली रात घिर आयी।

नौ

केंकड़े की आगे को निकली हुई झिल्ली के सिर के बराबर एक आंख है। यह चिकनी, लाल-लाल सी आंख बीच में हरी है और उसमें एक मद्धिम प्रकाश दम-दम कर रहा है। केंकड़ा छोटी-छोटी टांगों का एक घिनौना ढेर है। उसकी टांगें एक-दूसरे में उलझी हुई सांपों की तरह ऐंठती और बल खाती हैं और उस वक्त उनकी रूखी खाल से बड़ी डरावनी सरसराहट होती है। केंकड़ा हिलता है। वह उसे अपनी आंखों के ठीक बगल में पाता है। और अब वह उसकी टांगों को अपने शरीर पर रेंगता हुआ महसूस करता है। ये टांगें ठंडी हैं और कांटों की तरह उसके शरीर में चुभती हैं। केंकड़ा डंक मारता है और जोंक की तरह उसके सिर के भीतर धंसता है। ऐंठन और मरोड़ के साथ आगे बढ़ते हुए वह उसके खून को चूसने लगता है। उसे लगता है कि उसके शरीर का खून निकल-निकल कर केंकड़े के फूलते हुए शरीर में पहुंचता जा रहा है। केंकड़ा उसका खून पीता रहता है। उसकी पीड़ा असह्य है।

कहीं दूर, बहुत दूर से उसे आदमियों की आवाजें सुनाई देती हैं :

"अब इसकी नाड़ी कैसी है?"

और एक दूसरी आवाज, किसी औरत की आवाज, धीमे से जवाब देती है :

"इसकी नाड़ी की गति इस समय १३८ है। टेम्परेचर १०३·१ है। पूरे वक्त इसकी सरसाम की हालत है।"

केंकड़ा गायब हो गया, मगर दर्द जारी है। पावेल ने महसूस किया कि किसी ने उसकी कलाई छुई। उसने आंखें खोलने की कोशिश की। मगर पलकें इतनी भारी थीं कि उनको उठाने की ताकत उसमें नहीं थी। इतनी गरमी क्यों लग रही है? जरूर मां ने अंगीठी जलाई है। और फिर उसे वे आवाजें सुनाई देती हैं :

"अब इसकी नाड़ी की गति १२२ है।"

वह पलकें खोलने की कोशिश करता है। मगर उसके अन्दर एक आग सी जल रही है। उसका दम घुट रहा है।

उसे सख्त प्यास लगी है। उसे फौरन उठकर पानी पीना होगा। मगर वह उठता क्यों नहीं? वह उठने की कोशिश करता है, मगर उसके हाथ-पैर हिलने से इनकार कर देते हैं। उसका अपना शरीर उसके लिए अजनबी हो गया है। मां इसी वक्त उसके लिए पानी लायेगी। वह उससे कहेगा, "मैं पानी पीना चाहता हूं।" कोई चीज उसके बगल में हिलती है। कहीं यह वही केंकड़ा तो नहीं जो फिर से उस पर रेंगने की तैयारी कर रहा हो? वह देखो... वह आ रहा है! उसे उसकी लाल-लाल आंखें दिखायी देती हैं...

दूर से नर्म मद्धिम आवाज आती है:

"फ्रोसिया, थोड़ा पानी लाओ!"

"यह किसका नाम है?" मगर यह याद करने की शक्ति उसके अन्दर नहीं रह गई है और अंधेरा एक बार फिर उसे अपनी चादर में ढांक लेता है। फिर तत्काल अंधेरे से बाहर निकलने पर उसे याद आता है, "मैं प्यासा हूं?"

और आवाजें कहती सुनायी देती हैं:

"लगता है इसे होश आ रहा है।"

वह कोमल प्यारी आवाज उसे अब अपने पास और स्पष्ट सुनाई देती है:

"तुम पानी पीना चाहते हो, कामरेड?"

"क्या मुझसे यह बात कह रही है? क्या मैं बीमार हूं? अरे हां, मुझे टाइफस है। वही तो बात है।" और वह तीसरी बार अपनी पलकों को उठाने की कोशिश करता है। आखिरकार उसे सफलता मिलती है। अपनी जरा सी खुली हुई आंखों के संकीर्ण दृष्टिपथ से जो पहली चीज उसकी चेतना में पहुंचती है, वह उसके सिर पर टंगी हुई एक लाल-लाल गेंद है। मगर उस लाल गेंद को एक काली चीज पोंछ कर अलग कर देती है—वह काली चीज जो उसके ऊपर झुकी हुई है। और उसके ओंठ गिलास के कठोर स्पर्श को और पानी की तरी को, उस प्राणदायिनी तरी को, महसूस करते हैं। उसके अन्दर की आग ठंडी हो जाती है। सन्तुष्ट होकर वह धीरे से बुदबुदाता है, "अब कुछ अच्छा है।"

"तुम मुझे देख सकते हो, कामरेड?"

यह उसके पास खड़ी हुई आकृति है जो बोली है और बेहोशी की धुंध में डूबने के पहले वह किसी तरह इतना कह पाता है, "मैं देख नहीं सकता, सुन सकता हूं..."

"भला बताओ, कौन सोच सकता था कि यह बच जायगा ? मगर देखो कैसे इसकी जिन्दगी लौटी आ रही है ! बड़ी मजबूत काठी का आदमी है ! नीना व्लादीमिरोवना, यह तुम्हारे लिए गर्व की बात है। सचमुच तुमने इसकी जान बचा ली है।"

और उस औरत की आवाज, कुछ-कुछ कांपती हुई जवाब देती है :

"कितनी खुश हूं मैं आज !"

तेरह दिन की बेहोशी के बाद पावेल कोर्चागिन को होश आया। उसका नौजवान शरीर मरना नहीं चाहता था और धीरे-धीरे उसकी ताकत लौट आई। यह पुनर्जन्म से कम न था, जैसे वह दुबारा पैदा हुआ हो। हर चीज नई और विलक्षण जान पड़ती थी। सिर्फ उसका सिर निश्चेष्ट और प्लास्टर में बंधे होने के कारण, असह्य रूप से भारी हो रहा था। उसको हिलाने की ताकत उसके अन्दर नहीं थी। मगर बाकी शरीर में चेतना लौट आई और जल्दी ही वह अपनी उंगलियों को मोड़ने के योग्य हो गया।

फौजी अस्पताल की छोटी डाॅक्टर नीना व्लादीमिरोवना अपने कमरे में एक छोटी मेज के सामने बैठी हुई थी और अपनी मोटी, हल्के गुलाबी और पीले रंग की नोटबुक के पन्ने उलट रही थी। उसमें साफ-सुथरी तिरछी लिखावट में यह लिखा हुआ था :

२६ अगस्त, १९२०

आज ऐम्बुलेंस की गाड़ी कुछ संगीन केस लाई। उनमें से एक के सिर में बहुत बुरी चोट है। हमने उसे खिड़की के पास कोने में लिटा दिया। अभी वह केवल सत्रह साल का है। उन्होंने मुझे एक लिफाफा दिया जिसमें उसकी जेब में पाये गए कागजात और उसकी केस-हिस्ट्री है। उसका नाम पावेल आन्द्रिएविच कोर्चागिन है। उसके कागजात में उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग की सदस्यता का एक पुराना घिसा हुआ कार्ड (नम्बर ९६७), लाल फौज की एक फटी हुई शिनाख्त किताब और एक रेजीमेंटल आर्डर की नकल है जिसमें लिखा है कि लाल फौज के सैनिक कोर्चागिन को जांच-पड़ताल का काम बहुत अच्छी तरह पूरा करने के उपलक्ष्य में पदक देने की मांग की गई है। उसमें एक पुर्जा भी है, जो जाहिर है खुद इसी का लिखा हुआ है—"अगर मैं मर जाऊं तो कृपया मेरे सम्बंधियों को सूचना दे दीजिएगा : शेपेतोवका, रेलवे डिपो, मेकेनिक आर्तेम कोर्चागिन।"

१९ अगस्त को उसको गोले के छर्रे लगे थे। तब से वह बराबर बेहोश है। कल अनातोली स्तेपानोविच उसको देखेंगे।

२७ अगस्त

आज हमने कोर्चागिन के जख्म की जांच की। जख्म बहुत गहरा है, सिर की हड्डी टूट गई है और सिर के पूरे दाहिने हिस्से को लकवा मार गया है। दाहिनी आंख की एक रग फट गई है जिसके कारण आंख बुरी तरह सूजी हुई है।

अनातोली स्तेपानोविच आंख निकाल देना चाहते थे ताकि सूजन और न बढ़े। मगर मैंने उन्हें ऐसा करने से रोका, क्योंकि अब भी उम्मीद है कि सूजन कम हो जायगी। ऐसा करने में मुझे बस लड़के के चेहरे के बिगड़ने का खयाल था। लड़का ठीक हो सकता है, मगर बड़े दुख की बात होगी अगर उसका चेहरा बिगड़ गया।

पूरे वक्त उसकी सरसाम की हालत रहती है और वह बेहद बेचैन रहता है। हममें से कोई न कोई हर समय उसके बिस्तर के पास मौजूद रहता है। मैं अपना ज्यादा वक्त उसी के पास गुजारती हूं। अभी वह बहुत नौजवान है। यह उसकी मरने की उम्र नहीं है। मैंने संकल्प किया है कि उसकी नौजवान जिन्दगी को मौत के पंजों से छुड़ा लाऊंगी। मुझे सफल होना ही है।

कल अपनी ड्यूटी खतम होने के बाद मैं कई घंटे तक उसके वार्ड में रही। वहां जितने घायल आये हैं, उनमें सबसे खराब हालत उसी की है। मैं बैठी हुई उसके पागलों जैसे बकने-झकने को सुनती रही। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे कोई कहानी सुन रही हूं। और सचमुच, मुझे उसकी जिन्दगी की बहुत सी बातें मालूम हुईं। मगर बीच-बीच में वह बहुत बुरी-बुरी गाली बकता है, बड़ी गंदी जबान इस्तेमाल करता है। उसको इस तरह गाली बकते देखकर मुझे बड़ी चोट लगती है। अनातोली स्तेपानोविच को यकीन नहीं कि वह ठीक हो जायगा। वह बूढ़ा आदमी अपनी भारी आवाज में गुर्रा कर कहता है, "मेरी समझ में नहीं आता कि ये फौज वाले ऐसे-ऐसे बच्चों को अपने साथ क्यों ले लेते हैं। बड़े शर्म की बात है।"

३० अगस्त

कोर्चागिन अब भी बेहोश है। अब उसे उस वार्ड में भेज दिया गया है जहां ऐसे लोग रखे जाते हैं जिनके बचने की उम्मीद नहीं होती। नर्स फ्रोसिया प्रायः पूरे वक्त उसके पास रहती है। लगता है कि वह उसे जानती है। कभी दोनों ने साथ-साथ काम किया था। उसके साथ वह कितनी नरमी से पेश आती है। अब मुझे भी ऐसा लगने लगा है कि उसके बचने की उम्मीद नहीं है।

२ सितम्बर, ११ बजे रात

आज मेरे लिए यह बेहद खुशी का दिन था। मेरे मरीज कोर्चागिन को होश आ गया। खतरा टल गया है। पिछले दो रोज से मैं घर गई ही नहीं, अस्पताल में ही रही।

यह देख कर कि एक और जिन्दगी बच गई, मुझे कितनी खुशी हुई है। यह मैं बयान नहीं कर सकती। हमारे वार्ड में एक मौत कम। मेरे इस थका डालने वाले काम में सबसे राहतबख्श चीज है किसी मरीज का बच जाना। वे बिल्कुल बच्चों की तरह हो जाते हैं। उनका प्यार सच्चा और सीधा-सादा होता है और मुझे भी उनसे प्यार हो जाता है। इसीलिए जब वे यहां से जाते हैं तो मुझे अक्सर रोना आ जाता है। मैं जानती हूं कि रोना पागलपन है; मगर मैं क्या करू, मुझे अपने ऊपर बस ही नहीं रहता।

१० सितम्बर

आज मैंने कोर्चागिन का पहला खत उसके घरवालों के लिए लिखा। उसने लिखवाया है कि उसका जख्म संगीन नहीं है और वह जल्द ही ठीक हो जायेगा और घर आयेगा। उसके शरीर का बहुत सा खून निकल गया है और वह प्रेत की तरह पीला हो गया है और अब भी बहुत कमजोर है।

१४ सितम्बर

आज पहली बार कोर्चागिन मुस्कराया। उसकी मुस्कराहट बड़ी प्यारी है। अक्सर वह अपनी उम्र से कहीं ज्यादा गंभीर बना रहता है। उसके स्वास्थ में आश्चर्यजनक तेजी से सुधार हो रहा है। उसमें और फ्रोसिया में बड़ी दोस्ती है। मैं अक्सर फ्रोसिया को उसके सिरहाने देखती हूं। वह जरूर मेरे बारे में उससे बातें करती होगी और स्पष्ट ही मेरा गुणगान करती होगी, क्योंकि अब यह लड़का एक हल्की सी मुस्कराहट से मेरा स्वागत करता है। कल उसने पूछा :

"डाक्टर, तुम्हारी बांहों पर ये काले-काले निशान किस चीज के हैं ?"

मैंने उसे यह नहीं बतलाया कि सरसाम की हालत में जब वह कसकर मेरी बांहों को पकड़े हुए था, तो उसकी उंगलियों से ही वह जगह छिल गई थी, और ये निशान बन गए थे।

१७ सितम्बर

कोर्चागिन के माथे का घाव बहुत अच्छी तरह भर रहा है। जिस अनोखी हिम्मत से यह लड़का घाव की मरहम-पट्टी, धोने-धाने वगैरह की तकलीफ को बर्दाश्त करता है, उसको देखकर हम सभी डाक्टर हैरान हैं।

अक्सर ऐसे वक्त मरीज बहुत कराहता है और परेशान करता है। मगर यह लड़का चुपचाप लेटा रहता है और जब उसके जख्म को खोल कर उसमें आइडिन लगाई जाती है, तो वह अपने को इस कदर जब्त रखता है जैसे वायलिन के तार को खूब कस दिया गया हो। अक्सर वह बेहोश हो जाता है, मगर एक बार भी उसके मुंह से कराह निकलती नहीं सुनाई दी।

अब हम इस बात को जान गये हैं कि जब कोर्चागिन कराहता है तो इसका मतलब यह है कि वह होश में नहीं है। ताज्जुब है, उसमें इतनी ताकत, इतनी सहन-शक्ति, आती कहां से है?

२१ सितम्बर

आज पहली बार हम लोग कोर्चागिन को उस बड़े वाले बारजे पर ले गये थे। उसका चेहरा कैसा चमक उठा जब उसने बागीचे को देखा! कैसे भूखे की तरह वह ताजी हवा को जल्दी-जल्दी अपने फेफड़ों में भरने की कोशिश कर रहा था! उसका तमाम सिर पट्टियों से ढका हुआ है। सिर्फ एक आंख खुली है। और वह जानदार चमकती हुई आंख दुनिया को ऐसे देख रही थी जैसे पहली बार उसे देख रही हो।

२६ सितम्बर

आज दो युवतियां कोर्चागिन को पूछती हुई अस्पताल आईं। मैं उनसे बातें करने के लिए नीचे वेटिंग रूम में गई। उनमें से एक बहुत खूबसूरत थी। उन्होंने तोनिया तुमानोवा और तातियाना बुरानोव्स्काया के नाम से अपना परिचय दिया। मैंने तोनिया का नाम सुना था। सरसाम की हालत में कोर्चागिन ने तोनिया का नाम लिया था। मैंने उनको कोर्चागिन से मिलने की इजाजत दे दी।

८ अक्तूबर

कोर्चागिन अब अकेले बागीचे में टहलता है। वह अक्सर मुझसे पूछता रहता है कि अस्पताल से उसे कब छुट्टी मिलेगी। मैं उसको बतलाती हूं— जल्दी ही। वे दोनों लड़कियां हर मुलाकात के दिन उसको देखने आती हैं। अब मुझे मालूम हो गया कि वह क्यों कभी नहीं कराहता। मैंने उससे पूछा तो उसने जवाब दिया: "**द गैड-फ्लाई** पढ़ो, सारी बात मालूम हो जायगी।"

१४ अक्तूबर

आज कोर्चागिन को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। उसने बड़े स्नेही और आत्मीय व्यक्ति की तरह मुझसे विदा ली। उसकी आंख पर से पट्टी अलग कर

दी गई है और अब सिर्फ उसका सिर बंधा हुआ है। उस आंख में रोशनी नहीं है, मगर देखने में उसमें कोई गड़बड़ी नजर नहीं आती। ऐसे प्यारे नौजवान साथी से विदा होते समय बहुत दुख हुआ। मगर यही तो हमेशा होता है—ठीक होते ही वे लोग हमें छोड़ कर चल देते हैं और फिर शायद ही कभी मुलाकात होती है।

जाते जाते वह बोला : "कितने दुख की बात है कि चोट बांयीं आंख में नहीं लगी। अब मैं गोली कैसे चलाऊंगा ?"

वह अब भी मोर्चे के बारे में सोचता रहता है।

अस्पताल से निकलने पर पावेल कुछ रोज बुरानोव्स्की के यहां रहा जहां तोनिया ठहरी हुई थी।

पावेल ने फौरन तोनिया को कोमसोमोल के काम-काज में खींचने की कोशिश की। इसकी शुरुआत उसने तोनिया को शहर के कोमसोमोल की एक मीटिंग में आने के लिए दावत देकर की। तोनिया राजी हो गई। मगर जब वह उस कमरे से निकली जहां वह मीटिंग के लिए कपड़े पहन रही थी और शृंगार कर रही थी, तो पावेल ने उसे देख कर मारे क्षोभ के अपने ओंठ काट लिये। वह बहुत ही ठाट के कपड़े पहने हुए थी और उन कपड़ों की अपनी एक खास शान थी जो पावेल को कोमसोमोल की मीटिंग के लिए, वहां पर इकट्ठा हुए लोगों के खयाल से, बिलकुल नामुनासिब मालूम हुई।

यही उनके पहले झगड़े का कारण था। जब उसने तोनिया से पूछा कि उसने इस तरह के कपड़े क्यों पहने, तो तोनिया को बुरा लगा।

"मेरी समझ में नहीं आता कि मैं भी दूसरों ही की तरह क्यों लगूं। लेकिन अगर मेरे कपड़े तुम्हें नहीं भाते तो मैं नहीं जाऊंगी।"

क्लब में उन फटे-पुराने ट्यूनिकों और मैले-कुचैले ब्लाउजों के बीच तोनिया के अच्छे-अच्छे कपड़े इतने भिन्न दिखाई दे रहे थे कि पावेल को बड़ी उलझन मालूम हुई। वे नौजवान अपने बीच तोनिया को गैर समझ रहे थे। और तोनिया ने उन लोगों की असहमति देख कर ऐसा रुख अख्तियार कर लिया जैसे उसे किसी की परवाह ही न हो और ये सारे लोग उससे हीन हों।

जहाज पर माल लादने के घाटों का जो कोमसोमोल संगठन था, उसके मंत्री पांक्रातोव ने, जो मोटे मारकीन की कमीज पहने हुए चौड़े कंधों का एक जहाजी था, पावेल को अलग ले जाकर, आंख से तोनिया की ओर इशारा करके, नाराजगी के स्वर में कहा :

"इस गुड़िया को तुम्हीं यहां लाये हो ?"

"हां," पावेल ने छोटा-सा रूखा जवाब दिया।

पांक्रातोव ने कहा, "हूं...उसे देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि वह कभी भी यहां खप सकती है। उसके रंग-ढंग तो बहुत पैसेवालों जैसे हैं। वह यहां आई कैसे ?"

पावेल की कनपटियां फड़कने लगीं।

"वह मेरी दोस्त है। मैं उसे यहां लाया हूं। समझे ? वह हमारे खिलाफ नहीं है, जरा भी नहीं, भले उसने बहुत अच्छे कपड़े पहन रखे हों। किसी के कपड़े देख कर ही उसके बारे में फैसला नहीं दिया जा सकता। कामरेड, आप ही को नहीं, मुझको भी यह बात मालूम है कि किसे यहां लाना चाहिए और किसे नहीं। इसलिए आप इतने अफसरी अन्दाज में बात मत कीजिये।"

वह और भी तीखी और लगने वाली बात कहना चाहता था। मगर यह देख कर कि पांक्रातोव जो बात कह रहा है, उसमें बाकी सब लोगों की राय मिली हुई है, वह रुक गया और उसने अपना सारा गुस्सा तोनिया पर उतारा।

"मैंने कहा था न उससे कि यही बात होगी ! खुदा जाने ये रुखोलिवर उसे क्यों भाते हैं, यह तड़क-भड़क उसे क्यों अच्छी लगती है ?"

वह शाम उनकी दोस्ती के खातमे की शुरुआत की शाम थी। पावेल ने बहुत पीड़ा और मन की कड़ुवाहट से तोनिया के साथ अपने उस सम्बंध को टूटते देखा जो उसे इतना चिरस्थायी मालूम हो रहा था।

कुछ दिन और गुजरे। और फिर, हर मुलाकात, हर बातचीत के साथ वे दोनों एक-दूसरे से दूर होते चले गये। तोनिया की यह घटिया ढंग की खुदपरस्ती पावेल के लिए असह्य हो गई।

दोनों ने समझ लिया कि सम्बंध-विच्छेद अब अनिवार्य है।

आज वे कुपेचेस्की बाग में आखिरी बार एक-दूसरे से मिले थे। रास्ते मुरझाई हुई पत्तियों से ढंके थे। वे पहाड़ की चोटी पर जंगले से टिके खड़े थे और नीचे नीपर के मटमैले नीले पानी को देख रहे थे। उस ऊंचे बेडौल पुल के पीछे से दो बड़े-बड़े बजरे खींच कर लाये जाते दिखाई दिये। डूबते हुए सूरज ने त्रुखानोव टापू पर जैसे सुनहरी कूंची फेर दी थी और मकानों की खिड़कियों में आग लगा दी थी।

तोनिया ने सूरज की सुनहरी किरणों को देखा और गहरी व्यथा के स्वर में कहा :

"हमारी दोस्ती क्या इसी डूबते हुए सूरज की तरह डूब जायेगी ?"

पावेल जो तोनिया के चेहरे पर आंख गड़ाये उसकी रूप-सुधा का पान कर रहा था, कठोरता से भवें चढ़ा कर जवाब देते हुए धीमी आवाज में बोला :

"तोनिया, हम लोग पहले भी इस बारे में बात कर चुके हैं। तुम्हें मालूम है कि मैं तुमको प्यार करता था और अब भी मेरा प्यार लौट कर आ सकता है। मगर उसके लिए तुमको हमारे साथ आना होगा। मैं अब पहले का पावलुशा नहीं रहा हूं। और मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति भी नहीं हो सकूंगा अगर तुम मुझसे यह उम्मीद करती हो कि मैं तुमको पार्टी के ऊपर तरजीह दूंगा। वजह यह है कि मैं सबसे पहले पार्टी को देखूंगा और तुमको और उन दूसरे लोगों को, जिनसे मैं प्यार करता हूं, बाद में।"

तोनिया उदासी से नदी के गहरे नीले पानी को एकटक देख रही थी। उसकी आंखें डबडबाई हुई थीं।

पावेल ने तोनिया की उस पार्श्व छवि को देखा जिसे वह इतनी अच्छी तरह पहचानता था, उसने उसके घने सुनहले बालों को देखा और उसका मन उस लड़की के लिए दुख से कातर हो उठा जो कभी उसके इतने पास थी और उसे इतनी प्यारी थी।

उसने बड़ी कोमलता से उसके कंधे पर अपना हाथ रखा।

"तोनिया, तुम अपने पुराने वातावरण से नाता तोड़ कर हम लोगों के साथ आ जाओ। आओ, हम लोग साथ मिल कर इन पूंजीशाहों के खातमे के लिए काम करें। हमारे साथ बहुत सी अच्छी-अच्छी लड़कियां हैं जो इस कठिन लड़ाई का बोझ उठा रही हैं, जो सारी तकलीफों और मुसीबतों को सह रही हैं। हो सकता है, वे तुम्हारी तरह सुशिक्षित न हों। लेकिन बताओ, तुम क्यों हमारे साथ शरीक नहीं होना चाहती, आखिर क्यों? तुम कहती हो कि चुजानिन ने तुमको फुसलाने और खराब करने की कोशिश की। मगर वह तो पतित है ही। वह सैनिक थोड़े ही है। तुम कहती हो कि मेरे साथियों का बर्ताव तुम्हारे साथ दोस्ताना नहीं था। मगर तुम्हीं बताओ कि तुम वहां पर ऐसे कपड़े पहन कर क्यों गईं जैसे तुम अमीर लोगों के किसी नाच में जा रही हो? दोष तुम्हारे इस अहंकार का है: मैं वैसा ही गन्दा फटा-पुराना फौजी ट्यूनिक क्यों पहनूं जैसा सब लोग पहनते हैं, सिर्फ इसीलिए कि दूसरे लोग पहने हुए हैं? तुममें एक मजदूर से प्रेम करने का साहस था, मगर तुम एक विचारधारा से प्रेम नहीं कर सकतीं। मुझे तुमसे अलग होने का दुख है, और मैं तुम्हारी स्मृति को संजो कर रखना चाहूंगा।"

पावेल ने और कुछ नहीं कहा।

दूसरे रोज उसने एक हुक्मनामा सड़क पर चिपका हुआ देखा जिस पर प्रादेशिक चेका के चेयरमैन जुखराई का दस्तखत था। उसको देख कर पावेल का दिल बल्लियों उछल पड़ा। बड़ी मुश्किल से वह जुखराई के दफ्तर में घुसने की इजाजत पा सका। सन्तरी उसे अन्दर जाने नहीं देते थे। और उसने इतना

हंगामा खड़ा किया कि यह नौबत आ गयी कि उसे पकड़ लिया जाता। मगर अन्त में उसे कामयाबी मिली।

फियोदोर दिल खोल कर उससे मिला। उसकी एक बांह कटी हुई थी; तोप के एक गोले से वह उड़ गई थी।

बातचीत फौरन काम के ऊपर आ गई। जुखराई ने कहा, "जब तक तुम मोर्चे पर जाने के लिए फिर से ठीक नहीं हो जाते, तब तक तुम यहां घर क्रान्ति के दुश्मनों को कुचलने में मेरी मदद कर सकते हो। कल से ही काम शुरू कर दो।"

पोलिश क्रान्ति-विरोधियों के साथ लड़ाई खतम हो गई। लाल फौजें दुश्मन को वारसा की दीवारों तक खदेड़ ले गईं। मगर चूंकि उनकी शारीरिक और फौजी साज-सामान की ताकत बहुत खर्च हो चुकी थी और उनके रसद और कुमक के अड्डे बहुत पीछे छूट गये थे, इसलिए वे उस आखिरी किले को फतह नहीं कर सकीं और लौट लौट आईं। इस तरह वह बात हुई जिसे पोल "विश्चुला का चमत्कार" कहते हैं, यानी यह कि लाल फौजें वारसा से लौट आईं और पोलैंड के पूंजीपतियों और जागीरदारों को नई जिन्दगी मिली। पोलैंड में सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना का स्वप्न अभी नहीं पूरा होना था।

खून में भीगी हुई धरती कुछ विश्राम चाहती थी।

पावेल अपने घरवालों से नहीं मिल सका क्योंकि शेपेतोवका फिर पोलिश फौजों के हाथ में आ गया था और फिलहाल अस्थायी रूप से उनकी सरहदी चौकी बना हुआ था। सुलह की बातचीत चल रही थी।

पावेल काम के सिलसिले में दिन-रात चेका में रहता था। उसे यह जान कर बड़ी परेशानी हुई कि उसके शहर पर पोलों का कब्जा हो गया है।

"क्या इसका मतलब यह है कि अगर संधि-पत्र पर दस्तखत हो जाते हैं, तो मेरी मां सरहद के उस पार रहेगी?" उसने जुखराई से पूछा।

मगर फियोदोर ने उसे दिलासा दी।

"बहुत करके सीमा-रेखा नदी के साथ-साथ चल कर गोरिन के बीच से गुजरेगी जिसका मतलब यह है कि तुम्हारा शहर हमारी तरफ होगा। बहरहाल जो भी हो, जल्द ही हमें इस बात का पता चल जायगा," जुखराई ने कहा।

पोलिश मोर्चे से दक्खिन को डिवीजनें भेजी जा रही थीं। क्योंकि जिस वक्त जनतंत्र पोलिश मोर्चे पर अपनी सारी ताकत लगा रहा था, उसी वक्त रैंगेल परिस्थिति का फायदा उठा कर क्रीमिया की अपनी खोह से निकल

आया और नीपर नदी के किनारे-किनारे उत्तर की ओर बढ़ने लगा। उस वक्त उसकी निगाह येकातेरीनोस्लाव प्रदेश पर थी।

अब चूंकि पोलों के संग लड़ाई खतम हो गई थी, अत: जनतंत्र ने अपनी फौजों को क्रान्ति-विरोधियों के इस अन्तिम अड्डे को खतम करने के लिए क्रीमिया भेज दिया।

रेलगाड़ियां भर-भर कर सैनिक, गाड़ियां, मैदानी बावर्चीखाने और तोपें दक्खिन के रास्ते में कीव से होकर गुजर रही थीं। इस इलाके के ट्रान्सपोर्ट विभाग का चेका इन दिनों भूत की तरह काम कर रहा था क्योंकि उसे आमद-रफ्त की बाढ़ से पैदा होने वाली तमाम कठिनाइयों का हर वक्त सामना करना पड़ता था। स्टेशनों पर रेलगाड़ियां अटी पड़ी थीं और अक्सर आमद-रफ्त रोकनी पड़ती थी क्योंकि रेलवे लाइन खाली न मिलती थी। तार के ऑपरेटर अनगिनत परवाने टपटपा कर खबर देते कि किस डिवीजन के लिए लाइन खाली हो गई है। उनको डिवीजनों से आये हुए सन्देशों का भी भाष्य करना पड़ता, जो सब इस बात की मांग करते कि सबसे पहले उनकी जरूरत को पूरा किया जाय: "सबसे पहले हमें लाइन दीजिए...यह फौजी हुक्म है ...फौरन लाइन खाली कीजिए...।" और हर सन्देश के साथ यह चेतावनी रहती कि अगर हुक्म पूरा नहीं किया गया तो क्रान्तिकारी फौजी अदालत के सामने मामला पेश किया जायगा।

आमद-रफ्त को बगैर किसी रोक-टोक के चालू रखने की जिम्मेदारी शहर के यातायात के चेका की थी।

फौजी टुकड़ियों के कमांडर अपनी पिस्तौल चमकाते हुए चेका के हेडक्वार्टर में आते और मांग करते कि तार नम्बर फलां-फलां के अनुसार, जिस पर फौज के कमांडर के दस्तखत हैं, फौरन उनकी गाड़ी रवाना की जाय। कोई भी यह बात मानने के लिए तैयार न होता कि ऐसा करना मुमकिन नहीं है। "तुम्हारी जान पर बनेगी तो गाड़ी को रवाना करोगे।" और उसके बाद गाली-गुफ्ता शुरू हो जाता। खास तौर पर संगीन मामलों में जुखराई को फौरन बुलाया जाता और तब फिर वे आवेश से पागल आदमी, जो एक-दूसरे को गोली से उड़ा देने के लिए तैयार खड़े रहते, शान्त हो जाते। इस लोहे के आदमी को देख कर, जिसकी आवाज धीमी और ठंडी थी और जो किसी तरह के बहस-मुबाहसे को पसन्द नहीं करता था, पिस्तौलें वापिस अपनी जगह पहुंच जातीं।

कभी-कभी पावेल जब अपने दफ्तर से लड़खड़ाता हुआ निकल कर बाहर आता तो उसे अपने सिर में ऐसा दर्द मालूम होता जैसे उसे कोई छुरियां मार रहा हो। इन दिनों चेका में वह जो काम कर रहा था, उसका उसकी नसों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा था।

एक दिन उसने गोले-बारूद से लदे मालगाड़ी के खुले डब्बे पर सर्गेई ब्रुजाक को देखा। सर्गेई डब्बे से कूद कर पावेल की ओर आया, इतनी तेजी से कि पावेल के पैर उखड़ते-उखड़ते बचे, और अपने दोस्त को बांहों में भर लिया।

"पावका, बदमाश! देखते ही मैं पहचान गया कि तुम्हीं होगे।"

इन दोनों लड़कों के पास एक-दूसरे को बतलाने के लिए इतनी खबरें थीं कि उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि शुरू कहां से करें। उनकी आखिरी मुलाकात के वक्त से अब तक दोनों के संग बहुत सारी बातें गुजरी थीं। वे एक-दूसरे से सवाल पर सवाल किये जा रहे थे **और** जवाब का इन्तजार किये बिना बोलते चले जा रहे थे। अपनी बातचीत में वे इतने डूबे हुए थे कि उन्होंने इंजन की सीटी भी नहीं सुनी। जब गाड़ी स्टेशन से बाहर जाने लगी तब कहीं जाकर दोनों एक-दूसरे से अलग हुए।

अब भी उन्हें एक-दूसरे से बहुत सी बातें करनी थीं। मगर रेल की रफ्तार तेज होती जा रही थी और सर्गेई चिल्ला कर अपने दोस्त से कुछ कहता हुआ प्लेटफार्म पर दौड़ा और माल के एक डब्बे के खुले दरवाजे को पकड़ कर गाड़ी पर चढ़ गया। डब्बे के अन्दर के बहुत से हाथों ने उसे पकड़ कर अन्दर खींच लिया। पावेल ने उसको जाते देखा तो यकायक उसे ध्यान आया कि सर्गेई को वालिया की मृत्यु के बारे में कुछ भी मालूम नहीं क्योंकि शेपेतोवका छोड़ने के बाद फिर वह वहां नहीं गया था और यह मुलाकात ऐसी अचानक थी कि पावेल यह बात बताना भी भूल गया।

'अच्छा ही है कि उसे नहीं मालूम, दिमाग पर कोई बोझ न रहेगा," पावेल ने सोचा। उसे नहीं मालूम था कि अब वह फिर कभी अपने दोस्त को नहीं देख सकेगा। न ही सर्गेई को यह मालूम था कि वह अपनी मौत के पास जा रहा है। उस वक्त वह डब्बे की छत पर खड़ा हुआ था और पतझड़ की हवा आकर उसके खुले हुए सीने से टकरा रही थी।

"वहां से उतर आओ सर्योजा," दोरोशेंको ने कहा। दोरोशेंको लाल सेना का आदमी था और उसके कोट के पीछे एक सूराख था जो जलने से बन गया था।

"ठीक है, घबराने की कोई बात नहीं," सर्गेई ने हंसते हुए कहा, 'हवा की और मेरी बड़ी दोस्ती है।"

एक हफ्ते बाद अपनी पहली ही लड़ाई में उसको गोली लगी। वह लड़-खड़ाता हुआ आगे बढ़ा, उसके सीने में भयंकर दर्द हो रहा था जैसे अन्दर से उसे कोई चीरे डाल रहा हो। उसने हवा को पकड़ने की कोशिश की और अपने सीने को बांहों से कस कर दबाये, लड़खड़ाया और वहीं जमीन पर ढेर

हो गया। उसकी बुझी हुई नीली आंखें उक्रेन के स्तेपी के अनन्त विस्तार को एकटक देखती रह गईं।

चेका का काम पावेल को बहुत ही कमजोर करता जा रहा था। उसकी तन्दुरुस्ती पर इसका बहुत बुरा असर पड़ रहा था। उसके सिर में तेज दर्द अब ज्यादा बार होने लगा। मगर उसने जुखराई से इस चीज के बारे में तब तक कुछ नहीं कहा जब तक कि एक रोज दो विनिद्र रातों के बाद वह बेहोश नहीं हो गया।

"फियोदोर, तुम्हारे ख्याल से क्या यह अच्छा न होगा कि मैं कुछ और काम करूं? सबसे ज्यादा पसन्द तो मुझे कारखाने में अपने पुराने धंधे पर काम करना है। मुझे लगता है कि मेरे सिर में कुछ गड़बड़ी है। मेडिकल कमीशन के लोगों ने मुझे बतलाया था कि अब मैं फौजी सर्विस के अयोग्य हूं। मगर इस तरह का काम तो मोर्चे पर के काम से भी बुरा है। दो दिन जो हम लोग सुतिर के गिरोह के लोगों को पकड़ते रहे, उसने मेरा बिलकुल पटरा कर दिया है। मुझे इन लड़ाइयों से विश्राम लेना ही होगा। देखो न फियोदोर, अगर मैं ठीक से अपने पैरों पर खड़ा भी न हो सका, तो तुम्हारे किस काम का।"

जुखराई ने चिन्तित होकर पावेल के चेहरे को गौर से देखा।

"हां, तुम्हारा हाल अच्छा नहीं नजर आता। यह सब मेरी ही गलती है। मुझे बहुत पहले ही तुम्हें छुट्टी दे देनी चाहिए थी। मगर मैं काम में इस तरह डूबा रहा कि मुझे इस बात का ख्याल ही नहीं आया।"

इस बातचीत के बाद पावेल ने कोमसोमोल की प्रादेशिक कमिटी के सामने अपने-आपको इस सर्टिफिकेट के साथ पेश किया कि उसे कमिटी के काम के लिए भेजा जा रहा है। एक अफसरी ढंग के लड़के ने, जिसने बड़ी बांकी अदा से अपनी टोपी नीचे नाक तक खींच रखी थी, जल्दी-जल्दी उस कागज को देखा और पावेल को आंख मारते हुए बोला :

"चेका से आ रहे हो, क्यों? बड़ा मजेदार संगठन है वह भी। हम लोग अभी पलक मारते तुम्हारे लिए कोई काम ढूंढ़ निकालेंगे। हमें जितने लोग भी मिल सकें सबकी जरूरत है। कहां जाना चाहोगे तुम? कमिसारी विभाग में? नहीं? अच्छा। नीचे घाट पर का प्रचार विभाग कैसा रहेगा? नहीं। तब तो बहुत बुरा हुआ। काम तो अच्छा है, ज्यादा काम भी नहीं है और खास राशन भी मिलता है।"

पावेल ने उसको बीच में ही टोका।

उसने कहा, "मैं तो कारखाने में काम करना पसन्द करूंगा, लोको में।" लड़के ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा और कहा, "लोको में ? हूं... वहां तो शायद हमें किसी की जरूरत नहीं है। मगर तुम उस्तिनोविच के पास जाओ। वह किसी जगह तुम्हें काम पर लगा देगी।"

गन्दुमी रंग की उस्तिनोविच के साथ थोड़ी देर की मुलाकात के बाद यह फैसला किया गया कि पावेल को रेल के कारखाने में, जहां पर वह काम करने वाला था, कोमसोमोल के संगठन का मंत्री बनाया जाय।

इस बीच क्रान्ति-विरोधी फौजें क्रीमिया के प्रवेश-मार्ग की किलेबन्दी कर रही थीं और अब जमीन के इस छोटे से टुकड़े पर, जहां पहले कभी क्रीमिया के तातारों और जापोरोजिये के कौसेकों की बस्तियों की सरहदें मिलती थीं, पेरेकोप की आधुनिक किलेबन्दी की कतारें खड़ी थीं।

और यहां क्रीमिया में, पेरेकोप के पीछे, पुरानी दुनिया देश के कोने-कोने से खदेड़ी जाकर शराब के दौरों और नाच-रंग में मस्त थी। उसे आने वाले विनाश का कोई पता न था और नाच-रंग में वह अपने को बहुत महफूज समझ रही थी।

पतझड़ की एक बेहद सर्द, नम रात को हजारों मेहनतकशों के बेटे रात के अंधेरे में पार उतर कर किले में बन्द दुश्मन पर पीछे से हमला करने के लिए, सिवाश के बर्फानी पानी में खाड़ी पार करने के लिए उतरे। उन हजारों लोगों में इवान जार्की भी था जो अपनी मशीनगन को सिर पर उठाये हुए था ताकि वह भीगे नहीं।

और जब सबेरे किलेबन्दियों पर सामने से हमला हुआ और पेरेकोप में खलबली मची तो उसी वक्त उन पहले दस्तों ने, जो सिवाश नदी में उतरे थे, लितोव्स्की प्रायद्वीप पर नदी के पार उतर कर पीछे से दुश्मन पर हमला किया। और उस चट्टानी साहिल पर चढ़ने वाले पहले आदमियों में इवान जार्की भी था।

बड़ी खूंखार लड़ाई हुई। नदी से बाहर निकलते हुए लाल सैनिकों पर दुश्मन की घुड़सवार फौज ने जोरों से हमला किया। जार्की की मशीनगन मौत उगलने लगी, उसकी मौत की बरसात करने वाली कड़कड़ाहट पल भर को भी न थमती थी। उसकी गोलियों की बौछार से दुश्मन के सिपाही और घोड़े ढेर होते जा रहे थे। जार्की बला की तेजी से अपनी मशीनगन में कार-तूसों की नयी-नयी पेटियां लगाता जा रहा था।

पेरेकोप ने सैकड़ों तोपों की गरज से जवाब दिया। उस वक्त लगता था जैसे धरती रसातल को चली जा रही है और हजारों तोप के गोले कान को फाड़ने वाली चीखों से आसमान को चीर रहे थे। गोलों के कान के पर्दे फाड़ देने वाले धड़ाके हो रहे थे, उनके अनगिनत छर्रे दूर-दूर तक फैल रहे थे और लाशें गिर रही थीं। घायल और विदीर्ण धरती की छाती से काले-काले बादलों के फव्वारे छूट रहे थे जिन्होंने सूरज को भी ढंक लिया था।

दैत्य का सिर कुचल दिया गया था और पहली घुड़सवार फौज की लाल बाढ़ दुश्मन पर आखिरी हमला करने के लिए क्रीमिया में दाखिल हो गई। दहशत के मारे दुश्मन के सिपाही बन्दरगाहों से छूटते हुए जहाजों पर चढ़ने के लिए आपस में धक्कम-धक्का कर रहे थे।

जनतंत्र ने उन मैली-कुचैली ट्यूनिकों पर, जिनके नीचे भी कभी मर्दों के मजबूत दिल धड़कते थे, "आर्डर आफ द रेड बैनर" का सुनहला पदक लगा दिया और इन ट्यूनिकों में से एक कोमसोमोल के तोपची इवान जार्की की थी।

पोलों से संधि हुई, और जैसा कि जुखराई ने कहा था, शेपेतोवका सोवियत उक्रेन में रहा। शहर से लगभग तीस मील दूर की एक नदी विभाजन रेखा बनी।

दिसम्बर १९२० की एक कभी न भूलने वाली सुबह को पावेल अपने शहर में आया। वह बरफ से ढंके हुए प्लेटफार्म पर उतरा, स्टेशन का नाम पत्थर की पटिया पर पढ़ा, बांयी ओर मुड़ा और सीधे डिपो में जाकर आर्तेम का पता लगाया। लेकिन उसका भाई वहां नहीं था। अपने फौजी कोट को और भी कस कर बदन में लपेटता हुआ पावेल लम्बे-लम्बे कदमों से जंगल के बीच से होकर शहर को चला।

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो मारिया याकोवलेवना मुड़ी और बोली, "चले आओ।" बरफ से ढंकी एक आकृति घर के अन्दर दाखिल हुई और मां ने अपने प्यारे बेटे के चेहरे को देखा। उसका हाथ अपने सीने पर गया और उसके अन्दर जो खुशी का जोश उमड़ रहा था, उसने उसकी वाणी छीन ली।

वह अपने बेटे के सीने पर गिर पड़ी और उसके चेहरे को अपने चुम्बनों से नहला दिया। खुशी के आंसू उसके गालों पर बह रहे थे। पावेल ने उस दुबले-पतले छोटे से शरीर को कस कर अपने सीने से लगा लिया और खामोशी से अपनी मां के परेशान चेहरे को देखा जिस पर पीड़ा और चिन्ता की गहरी लकीरें थीं, और मां के शान्त होने का इन्तजार करने लगा।

एक बार फिर मां की आंखों में, जिसने इतनी मुसीबतें देखी थीं, खुशी की रोशनी चमकने लगी। मालूम होता था कि अपने बेटे को देखते रहने

से, जिसको दुबारा फिर कभी देखने की उसे उम्मीद नहीं थी, उसका जी ही नहीं भरेगा। उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा जब तीन दिन बाद बहुत रात गये आर्तेम भी अपना थैला कंधे पर डाले उस छोटी सी कोठरी में आ पहुंचा।

कोर्चागिन परिवार के लोग फिर मिल गये। दोनों भाई मौत के मुंह से बच कर निकल आये थे और एक से एक भयानक अग्नि-परीक्षाओं के बाद वे फिर मिल रहे थे।

"अब तुम लोग क्या करने जा रहे हो ?" मां ने अपने बेटों से पूछा।

आर्तेम ने खुश-खुश जवाब दिया, "मेरे लिए तो फिर वही रेल का कारखाना है, मां !"

जहां तक पावेल की बात थी, दो हफ्ते घर पर गुजार कर वह वापिस कीव लौट गया। उसका काम वहां उसकी राह देख रहा था।
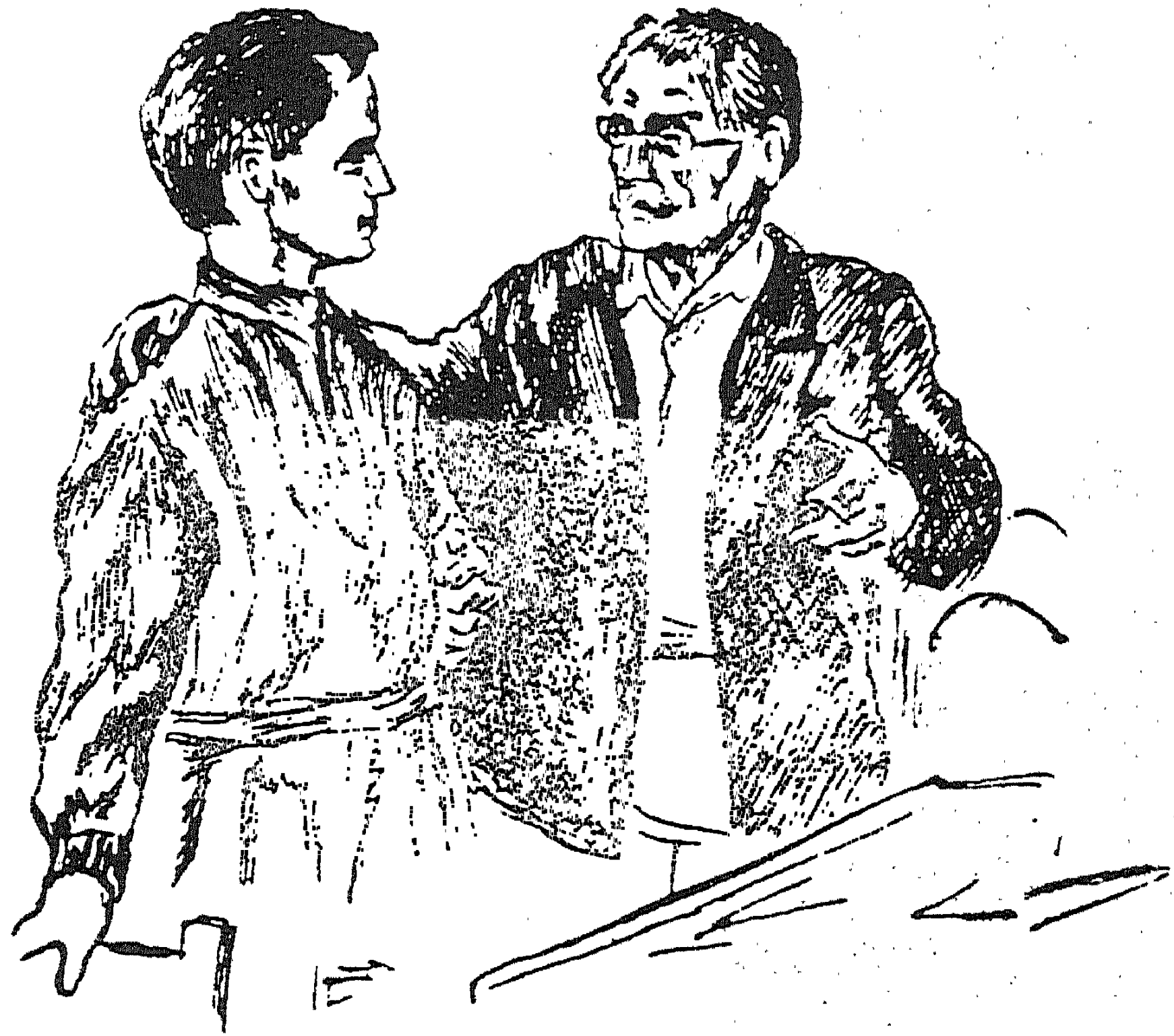
दूसरा भाग

११ दस

आधी रात । आखिरी ट्राम गाड़ी अपना थकान से चूर शरीर लिए डिपो में लौट आई है । चांद की ठंडी रोशनी खिड़की की चौखट पर पड़ रही है और चमकती हुई दूधिया चादर की तरह बिस्तर पर बिछी हुई है । बाकी कमरे में अंधेरा-सा है । कोने में मेज पर रिता एक मोटी कापी पर झुकी हुई है, जो कि उसकी डायरी है, और मेज पर की बत्ती की रोशनी कापी पर पड़ रही है । पेन्सिल की तेज नोक ये शब्द लिखती जा रही है :

"२४ मई

"मैं अपने इम्प्रेशन लिखने की एक बार फिर कोशिश करूंगी । बहुत दिनों से मैंने नहीं लिखा । पिछली बार जब मैंने डायरी में लिखा था, तब से अब तक छः हफ्ते गुजर गये हैं । मगर क्या किया जाय, मजबूरी है ।

"डायरी लिखने के लिए मुझे वक्त कहां से मिले ? आधी रात गुजर चुकी है और यह देखो मैं बैठी लिख रही हूं । नींद मुझे नहीं आती । कामरेड सेगल हम लोगों को छोड़ कर जा रहे हैं : उन्हें केन्द्रीय समिति में काम करना है । इस खबर से हम सबको बड़ा धक्का लगा । बड़े ही लाजवाब आदमी हैं हमारे लजार अलेक्जान्द्रोविच । अब तक मैंने इस बात को नहीं समझा था कि हमारे लिए उनकी दोस्ती की इतनी अहमियत है । उनके चले जाने पर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का क्लास नष्ट-भष्ट हो जायगा । कल बड़ी रात गये तक बैठे-बैठे

'शिष्यों' की प्रगति का लेखा-जोखा होता रहा। कोमसोमोल की सूबा कमिटी का मंत्री अकिम आया था, और बदशकल तुफ्ता भी। इन सर्वज्ञ महाशय से मुझे बड़ी चिढ़ है! सेगल बड़े ख़ुश हुए जब उनके शिष्य कोर्चागिन ने पार्टी इतिहास पर होने वाली बहस में तुफ्ता को परास्त कर दिया। हां, ये दो महीने बर्बाद नहीं हुए। मेहनत करना बुरा नहीं लगता जब उसका इतना अच्छा नतीजा दिखाइ देता हो। उड़ती खबर सुनी है कि जुखराई का तबादला फौजी इलाके के स्पेशल डिपार्टमेंट में किया जा रहा है। पता नहीं क्यों।

"लजार अलेक्जान्द्रोविच ने अपने शिष्य को मुझे सौंप दिया है। उन्होंने कहा, 'मैंने जो काम शुरू किया है उसको तुम्हें पूरा करना होगा। आधे रास्ते पर न रुक जाना। रिता, तुम और वह दोनों एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उस लड़के में संगठित ढंग से काम करने की अभी जरा कमी है। सरकश मिजाज का लड़का है और अक्सर भावनाओं के वहाव में वह जा सकता है। मेरा खयाल है कि तुम उसके लिए बहुत अच्छी मार्गदर्शिका बन सकोगी, रिता। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूं। मेरे मास्को पहुंचने पर मुझे चिट्ठी लिखना मत भूल जाना।'

"आज सोलोमेंस्की जिला कमिटी के लिए केन्द्रीय समिति ने एक नया मंत्री भेज दिया है। उसका नाम है जार्की। मैं उसे फौज में जानती थी!

"कल दिमित्री दुबावा कोर्चागिन को लायेगा। मैं दुबावा की हुलिया बताने की कोशिश करती हूं। मंझोला कद, हट्टा-कट्टा और गठीला बदन। १९१८ में कोमसोमोल में आया और १९२० से पार्टी मेम्बर है। वह उन तीन लोगों में से एक है जिन्हें 'मजदूरों के विरोधी दल' में शरीक होने के कारण कोमसोमोल की सूबा कमिटी से निकाला गया था। उसको सही रास्ते पर लाना आसान काम नहीं रहा है। हर रोज वह सवालों की झड़ी लगाकर हमें मुख्य विषय से दूर खींच ले जाता था और हमारे कार्यक्रम को उलट-पुलट देता था। उसमें और मेरी शिष्या ओल्गा यूरेनेवा में बिलकुल नहीं बनी। अपनी पहली ही मुलाकात में दुबावा ने उसको ऊपर से नीचे तक देखा और बोला, 'भाई तुम्हारी सज-धज जरा भी ठीक नहीं है। तुम्हें चमड़े की गद्दी वाले पैंट पहनना चाहिए, जूतों में कील लगानी चाहिए, बुद्यौनी के घुड़सवारों वाला हैट लगाना चाहिए और हाथ में तलवार लेनी चाहिए। इस तरह से कुछ बात ही न बनी, तुम चोंचों का मुरब्बा होकर रह गईं।'

"जाहिर है, ओल्गा को यह बात बहुत बुरी लगी और मुझे बीच-बचाव करना पड़ा। मेरा खयाल है दुबावा कोर्चागिन का दोस्त है। अच्छा आज रात, अब बस। सोने का वक्त हो गया।"

जलते हुए सूरज की तपन से धरती कुम्हलाई जा रही थी। रेलवे प्लेटफार्म के पुल की रेलिंग इतनी गर्म हो रही थी कि उसको छूते हाथ जलता था। गरमी से थके हुए लोग-बाग धीरे-धीरे पुल पर चढ़ रहे थे। उनमें से ज्यादातर मुसाफिर नहीं थे, बल्कि वहीं आस-पास के रहने वाले लोग थे जो शहर पहुंचने के लिए पुल पार करके जाया करते थे।

पुल से नीचे उतरने पर पावेल ने रिता को देखा। वह उससे पहले ही स्टेशन पहुंच गई थी और पुल पर से उतरते हुए लोगों को देख रही थी।

पावेल उससे लगभग तीन गज की दूरी पर रुक गया। रिता ने उसको नहीं देखा और पावेल एक नई ही दिलचस्पी से उसको देखता रहा। वह धारीदार ब्लाउज और किसी सस्ते कपड़े का छोटा सा नीला स्कर्ट पहने हुए थी। उसके कंधे पर एक मुलायम चमड़े का जाकट पड़ा हुआ था। उसका धूप से तपा हुआ चेहरा था और उस चेहरे को जैसे फ्रेम में जकड़े हुए उसके रूखे बाल उड़ रहे थे। वह अपने सिर को जरा पीछे फेंक कर खड़ी हुई थी और सूरज की चमक के कारण उसकी आंखें चौंधिया रही थीं। उसको वैसे खड़ा देख कर कोर्चागिन को पहली बार महसूस हुआ कि उसकी शिक्षक और मित्र रिता कोमसोमोल प्रादेशिक कमिटी के ब्यूरो की मेम्बर ही नहीं, बल्कि...। अपने मन में आये हुए उन 'पापपूर्ण' विचारों के कारण खीझ अनुभव करते हुए उसने रिता को आवाज दी।

"मैं पूरे एक घंटे से तुम्हें अपलक देख रहा हूं मगर तुमने मुझे देखा ही नहीं," वह हंसा, "चलो हमारी गाड़ी आ गई है।"

वे प्लेटफार्म के दरवाजे पर पहुंचे।

उसके एक रोज पहले प्रादेशिक कमिटी ने कोमसोमोल के एक जिला सम्मेलन के लिए रिता को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था और कोर्चागिन को उसके सहायक के रूप में जाना था। उनकी तात्कालिक समस्या थी गाड़ी पर चढ़ना, जिसे हल करना कोई आसान काम नहीं था। गाड़ियां कभी ही कभी छूटती थीं और जिन दिनों वे छूटती थीं, उन दिनों रेलवे स्टेशन पर पांच जनों की एक सर्वशक्तिमान कमिटी का कब्जा हो जाता था जिसके परमिट के बिना कोई प्लेटफार्म पर दाखिल नहीं हो सकता था। प्लेटफार्म के सारे दरवाजों और रास्तों पर कमिटी के आदमी पहरा दिया करते थे। पहले से ही बुरी तरह भरी हुई गाड़ियां उत्सुक मुसाफिरों की भीड़ के बहुत थोड़े से लोगों को ही अपने साथ ले जा पाती थीं। मगर कोई भी पीछे छूटना नहीं चाहता था, क्योंकि इसका मतलब होता था अगली गाड़ी के लिए कई-कई दिन तक इन्तजार करना, जो पता नहीं कब आये। इसलिए हजारों आदमी रेल के डब्बों तक पहुंचने के लिए प्लेटफार्म के दरवाजों पर आपस में लड़ा-भिड़ा करते थे। उन

दिनों स्टेशन की हालत बिलकुल घिरे हुए किले की सी रहती थी और कभी-कभी जमकर लड़ाई भी हो जाती थी।

प्लेटफार्म के दरवाजे पर जो जबर्दस्त भीड़ जमा थी, उसके बीच से निकलने की रिता और पावेल ने कोशिश की। लेकिन जब इसमें वे सफल नहीं हुए तो पावेल, जो स्टेशन के अन्दर जाने और स्टेशन से बाहर आने के सारे रास्ते जानता था, रिता को मालघर के अन्दर से ले गया। बड़ी मुश्किल से वे लोग चौथे नम्बर के डब्बे तक पहुंचे। डब्बे के दरवाजे पर गरमी के मारे पसीने से सराबोर चेका का एक आदमी खड़ा था जो भीड़ को रोकने की कोशिश कर रहा था और बार-बार एक ही बात दुहरा रहा था :

"डब्बा भरा हुआ है और बफर या गाड़ी की छत पर चढ़ना कायदे के खिलाफ है।"

तैश खाये हुए मुसाफिर उस सिपाही पर टूटे पड़ते थे और कमिटी से मिले हुए अपने टिकटों को उसकी नाक के नीचे घुसेड़-घुसेड़ कर दिखलाते थे। हर डब्बे के आगे गाली-गुफ्ते, शोर-शराबे, धक्कम-धक्के का बाजार गर्म था। पावेल ने समझ लिया कि कायदे से गाड़ी में चढ़ना नामुमकिन है। मगर चढ़ना उन्हें है ही, नहीं तो सम्मेलन स्थगित करना पड़ेगा।

रिता को अलग ले जाकर उसने तय किया कि हमें क्या करना चाहिए : पावेल धक्का देकर डब्बे के अन्दर घुस जायगा और खिड़की खोलकर उसमें से रिता को अन्दर खींच लेगा। दूसरा कोई रास्ता नहीं था।

"मुझे जरा अपना वह जाकेट दे दो। किसी भी परिचय-पत्र से ज्यादा अच्छा रहेगा वह।"

उसने जाकेट पहन लिया और अपना पिस्तौल इस तरह जेब में रखा कि उसका हत्था और उससे लगी हुई रस्सी दिखाई दे रही थी। सामान रिता के पास छोड़ कर वह डब्बे के पास पहुंचा और शोर मचाते हुए मुसाफिरों की भीड़ को कोहनियों से चीरता हुआ दरवाजे पर पहुंच कर उसने उसके डंडे को पकड़ लिया।

"ऐ कामरेड, कहां चढ़े जा रहे हो?"

पावेल ने पीछे मुड़कर बहुत लापरवाही से उस भारी-भरकम सिपाही को देखा।

"मैं एरिया स्पेशल डिपार्टमेंट का आदमी हूं। मैं देखना चाहता हूं कि इस डब्बे के तमाम मुसाफिरों के पास कमिटी के दिये हुए टिकट हैं या नहीं," उसने ऐसे स्वर में कहा कि किसी को उसके पद के बारे में संदेह नहीं हो सकता था।

चेका के सिपाही ने पावेल की जेब पर नजर डाली और आस्तीन से अपने माथे का पसीना पोंछते हुए थके स्वर में कहा :

"घुस सको तो घुस जाओ।"

अपने हाथों, कंधों और यहां-वहां अपने घूंसों का अच्छी तरह इस्तेमाल करते हुए, ऊपर वाली बर्थ को पकड़ कर और नीचे की फर्श पर अपना सामान फैलाकर उस पर बैठे हुए मुसाफिरों को लांघता हुआ, पावेल डब्बे के बीचोबीच जा पहुंचा। चारों तरफ से उस पर गालियों की बौछार हो रही थी, मगर इसकी उसे कोई परवाह नहीं थी।

नीचे फर्श पर उतरते समय कहीं गलती से उसका पैर एक मोटी-ताजी औरत के घुटने से छू गया। उसके घुटने का छूना था कि वह औरत जोर से चीखी, "अंधे हो, दिखाई नहीं देता, कहां जा रहे हो! मेरा पैर कुचल दिया!" किसी तरह अपना साढ़े तीन मन का शरीर लिये वह औरत एक सीट के सिरे पर संकस कर बैठी थी और अपने घुटनों के बीच में वनस्पति तेल का एक बड़ा सा पीपा रखे हुए थी। सामान रखने की सारी जगहें इसी तरह के डब्बों, पीपों, डलियों, पिटारों, बोरों से भरी हुई थीं। डब्बे में दम घुटता था।

गाली की कोई परवाह न कर पावेल ने पूछा: "आपका टिकट?"

"क्या मेरा!" उस औरत ने इस अनचाहे इन्स्पेक्टर को डपट कर जवाब दिया।

सबसे ऊपर वाली बर्थ से एक सिर निकला और एक भारी सी भद्दी आवाज सुनाई दी: "यास्का, यह हरामजादा यहां क्या करने आया है। उसे जरा बढ़कर जहन्नुम का टिकट तो दे दो!"

पावेल ने अपने सिर के ठीक ऊपर एक विशाल आकृति और घने बालों से ढंका हुआ सीना देखा और समझ गया कि यही वास्का है। एक जोड़ा लाल-लाल आंखें उसे घूर रही थीं।

"छोड़ दो, इस महिला को छोड़ दो। टिकट तुम्हें किस बात का चाहिए?"

बगल की एक ऊपर वाली बर्थ से चार जोड़ा टांगें झूल रही थीं और उनके मालिक एक दूसरे के कंधों में बांहें डाले कट्ट-कट्ट सूरजमुखी के बीज चबा रहे थे। उनके चेहरों पर नजर डालते ही पावेल जान गया कि वे कौन हैं। यह गल्ले की चोर-बाजारी करने वालों का एक गिरोह था। ये नम्बरी बदमाश थे जो घूम-घूम कर देश भर में गल्ला खरीदते थे और मनमाने दामों पर बेचते थे। पावेल के पास बर्बाद करने के लिए वक्त नहीं था। उसे किसी तरह रिता को अन्दर लाना था।

"यह किसका बक्स है?" उसने रेलवे की वर्दी पहने एक अधेड़ आदमी से खिड़की के नीचे रखे हुए लकड़ी के बड़े बक्स की ओर इशारा करते हुए पूछा।

उस आदमी ने जवाब दिया, "उनका," और भूरे रंग के मोजे पहने हुए दो मोटी-मोटी टांगों की तरफ इशारा किया।

खिड़की खोलना जरूरी था और वह बक्स रास्ते में अड़ा था। चूंकि उसे और कहीं रखने की जगह नहीं थी, इसलिए पावेल ने उसको उठाकर ऊपर की बर्थ पर बैठे हुए उसके मालिक को पकड़ाते हुए कहा :

"जरा इसको पकड़े रहिये, मुझे खिड़की खोलनी है।"

उसने बक्स उस चपटी नाक वाली औरत के घुटनों पर रखा तो वह चिल्लाई, "दूसरों के सामान को हाथ मत लगाओ !"

अपने बगल में बैठे हुए आदमी से वह बोली, "मोटका, यह छोकरा करना क्या चाहता है ?" मोटका ने जूता पहने-पहने पावेल की पीठ में एक ठोकर लगाई और डपट कर बोला :

"अबे सुनता है, यहां से नौ-दो-ग्यारह हो जा, वरना अभी तेरी अच्छी तरह कुन्दी हो जायगी !"

पावेल ने चुपचाप ठोकर बर्दाश्त कर ली। वह खिड़की खोलने में लगा हुआ था।

"जरा सरक तो जाइए," उसने रेलवे के आदमी से कहा।

एक और पीपे को रास्ते से हटाते हुए पावेल ने खिड़की के सामने की जगह साफ की। रिता वहां बाहर प्लेटफार्म पर खड़ी थी। जल्दी से उसने अपना बेग पावेल को पकड़ाया। बेग को वनस्पति तेल के पीपे वाली उस मोटीताजी औरत के घुटनों पर पटकते हुए पावेल ने बाहर को झुक कर रिता का हाथ पकड़ा और उसे अन्दर खींच लिया। इसके पहले कि सन्तरी नियम के उल्लंघन को देख पाता, रिता डब्बे के अन्दर आ गई थी और सन्तरी बाहर खड़ा गाली बक रहा था; लेकिन अब तो बहुत देर हो गई थी। अन्दर बैठे हुए मुनाफाखोरों के गिरोह ने रिता के आगमन का स्वागत इतने हल्ले से किया कि बेचारी ठिठक गई। चूंकि फर्श पर खड़े होने की भी जगह नहीं थी, इसलिए उसने किसी तरह अपने पांव नीचे की बर्थ के सिरे पर टिकाये और सहारे के लिए ऊपर की बर्थ को पकड़ कर खड़ी हो गई। चारों ओर गालियों का बाजार गर्म हो गया। ऊपर से वह मोटी भारी भद्दी आवाज फिर टर्राई :

"देखते हो इस सुअर को, पहले तो खुद घुस आया और फिर अपनी लौंडिया को भी अन्दर घसीट लिया।"

ऊपर से एक और आवाज सुनाई दी : "मोटका, जरा दे तो इसकी नाक पर एक घूंसा !"

वह औरत अपने लकड़ी के बक्स को पावेल के सिर पर टिकाने की कोशिश जी-जान से कर रही थी। इन दो आगन्तुकों के चारों ओर दुष्ट, घिनौने जानवरों जैसे चेहरे थे। पावेल को इस बात का बड़ा दुख था कि रिता को इन चीजों का सामना करना पड़ रहा था, मगर इनको बर्दाश्त करने के अलावा और चारा भी न था।

"महाशय, अपने बोरे सीटों के बीच के फर्श से हटा लीजिये ताकि इस कामरेड को खड़े होने के लिए जगह हो जाय," उसने मोटका के नाम से पुकारे जाने वाले आदमी से कहा। मगर उसके जवाब में उसको एक इतनी गन्दी गाली सुनने को मिली कि गुस्से से उसके दिमाग का पारा चढ़ गया। उसकी दाहिनी भौं के ऊपर की नाड़ी दर्द के साथ फड़कने लगी। "जरा रुक, बदमाश कहीं का, अभी मैं तुझे बताता हूं," उसने उस गुण्डे से कहा। मगर जवाब में उसे अपने सिर पर एक ठोकर मिली।

"बहुत अच्छा किया वास्का, एक और!" चारों ओर से समर्थन की आवाजें आने लगीं।

आखिरकार पावेल के धीरज का बांध टूट गया और जैसा कि हमेशा ऐसे मौकों पर होता था, उसने तेजी से और बिना किसी दुविधा के हिम्मत से अमल किया।

"मुनाफाखोर हरामजादो, तुम्हारा खयाल है कि तुम ऐसा करके निकल जाओगे?" वह जोर से चिल्लाया और फुर्ती से ऊपर वाले बर्थ पर चढ़ कर उसने कस कर एक घूंसा मोटका के उस घिनौने हंसते हुए चेहरे पर मारा। घूंसा उसने इतने जोर से मारा था कि वह हरामजादा सट्टेबाज लुढ़क कर दूसरे मुसाफिरों के सिर पर आ गिरा।

"सुअर के बच्चो, तुम सब यहां से निकलो वरना अभी मैं तुम सबको गोली मार दूंगा!" पावेल पागल की तरह चीखा और अपनी पिस्तौल उन चारों की नाक में अड़ा दी।

अब पांसा पलट गया था। रिता चौकन्नी होकर इस सारी कार्रवाई को देख रही थी और खुद भी गोली चलाने के लिए तैयार थी, अगर कोई कोर्चागिन पर हमला करे तो। ऊपर की बर्थ फौरन खाली हो गई। वे बदमाश जल्दी-जल्दी पास के कम्पार्टमेंट में चले गए।

ऊपर की खाली बर्थ पर चढ़ने में रिता की मदद करते हुए पावेल ने धीरे से कहा:

"तुम यहीं रहो, मैं उन बदमाशों को देखने जाता हूं।"

रिता ने उसको रोकने की कोशिश की, "तुम उनसे लड़ने तो नहीं जा रहे हो?"

"नहीं," पावेल ने रिता को आश्वस्त करते हुए कहा, "मैं जरा सी देर में लौट कर आता हूं।"

उसने फिर से खिड़की खोली और बाहर प्लेटफार्म पर कूद गया। चन्द मिनट बाद वह ट्रान्सपोर्ट चेका के बर्माइस्टर से, जो पहले उसका चीफ था, बातें कर रहा था। उस लेट ने पावेल की पूरी बात सुनी और फिर आदेश दिया कि सारे डिब्बे को खाली कराया जाय और मुसाफिरों के कागजात की जांच की जाय।

बर्माइस्टर ने अपनी भारी आवाज में गुर्राते हुए कहा, "मैंने यही बात कही थी। गाड़ियों के यहां आने के पहले से ही उसमें तमाम मुनाफाखोर और सट्टेबाज भरे रहते हैं।"

चेका के दस सिपाहियों की टोली ने गाड़ी को खाली करवाया। अपने पुराने काम को संभालते हुए पावेल ने मुसाफिरों के कागजात की जांच में मदद पहुंचाई। चेका के अपने पुराने साथियों से उसने अपने सम्बंध नहीं तोड़े थे और कोमसोमोल के मंत्री की हैसियत से उसने कोमसोमोल के अपने कुछ बेहतरीन सदस्यों को वहां काम करने के लिए भेजा था। छानबीन खत्म हो जाने पर पावेल रिता के पास लौटा। अब डब्बे में बिलकुल दूसरी तरह के मुसाफिर थे : लाल सेना के सैनिक और कारखानों और दफ्तरों में काम करने वाले लोग जो सब किसी न किसी जरूरी काम से सफर कर रहे थे।

डब्बे के एक कोने में सबसे ऊपर की बर्थ पर रिता और पावेल बैठे हुए थे। मगर वहां पर अखबारों के बंडलों ने इतनी जगह घेर रखी थी कि सिर्फ रिता के लेटने भर के लिए जगह थी।

रिता ने कहा, "कोई बात नहीं, हम लोग किसी तरह काम चला लेंगे।"

आखिरकार गाड़ी चली। जब वह धीरे-धीरे स्टेशन से बाहर होने लगी तो रिता और पावेल ने प्लेटफार्म पर बोरों के बंडल पर बैठी हुई उस मोटी औरत की जरा सी झलक पाई और उसे चिल्लाते सुना, "ए मांका, मेरा तेल वाला पीपा कहां है ?"

अपनी जगह में संकसकर बैठे हुए, जहां अखबारों के बंडल उनके और दूसरे मुसाफिरों के बीच पर्दे का काम कर रहे थे, पावेल और रिता रोटी और सेब खा रहे थे और हंसते हुए उस घटना की, जो ऐसी हंसने की चीज नहीं थी, याद कर रहे थे जिससे उनकी यात्रा शुरू हुई थी।

रेलगाड़ी रेंगती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। रेलवे लाइन में हर जोड़ पर रेलगाड़ी के पुराने, टूटे-फूटे और जरूरत से ज्यादा लदे हुए डब्बे चरमरा रहे थे, कराह रहे थे और बड़े जोर से हिल रहे थे। गहरी नीली गोधूलि

खिड़की में से अन्दर झांक रही थी। फिर रात आई और गाड़ी को उसने अंधेरे की चादर से ढंक दिया।

रिता थकी हुई थी और अपने बैग का तकिया लगाये ऊंघ रही थी। पावेल बर्थ के सिरे पर बैठा सिगरेट पी रहा था। वह भी थका हुआ था, मगर लेटने की जगह नहीं थी। रात की ताजी हवा खुली हुई खिड़की से अन्दर आ रही थी। अचानक हिचकोले से जागकर रिता ने अंधेरे में पावेल के सिगरेट की चमक देखी। यह हमेशा से उसकी आदत रही है कि बैठा-बैठा रात गुजार देता है, मगर रिता को किसी तरह की तकलीफ नहीं होने देता।

रिता ने धीमे स्वर से कहा, "कामरेड कोर्चागिन! उन बुर्जुआ तौर-तरीकों को छोड़ो और लेट जाओ।"

पावेल उसकी बात मान कर उसके बगल में लेट गया और उसने अपनी अकड़ी हुई टांगों को आराम के साथ फैला लिया।

"कल हमें बहुत सा काम करना है, इसलिए पागलराम जरा नींद ले लेने की कोशिश करो।" उसने बड़े विश्वास से पावेल के गले में अपनी बाहें डाल दी और पावेल ने अपने गालों पर उसके बालों का स्पर्श अनुभव किया।

पावेल के लिए रिता एक पवित्र चीज थी। वह उसकी दोस्त थी, कामरेड थी, राजनीतिक पथ-प्रदर्शिका थी। मगर इसके साथ ही साथ वह औरत भी थी। इसकी चेतना उसे सबसे पहले वहां पुल पर हुई थी और इसलिए अब उसके आलिंगन ने पावेल को इतना चंचल कर दिया। उसने रिता की गहरी सम-चाल से चलती हुई सांस को महसूस किया; उसके पास ही कहीं रिता के ओंठ थे। इस सामीप्य से उसके अन्दर उन ओंठों को पाने की लालसा जगी और मन का बहुत जोर लगाकर ही वह इस लालसा को दबा पाया।

जैसे पावेल के मन के भावों को ताड़ते हुए रिता अंधेरे में मुस्कराई। वह इस लालसा के सुख और वियोग की पीड़ा दोनों को जान चुकी थी। उसने दो बोल्शेविकों को अपना प्यार दिया था। ह्वाइट-गार्ड की गोलियों ने दोनों को उससे छीन लिया था। उसमें से एक बड़ा शानदार डील-डौल का आदमी था, जो ब्रिगेड कमांडर था; दूसरा साफ नीली आंखों वाला एक छोकरा था।

थोड़ी ही देर में पहियों की ताल ने थपकी दे-देकर पावेल को सुला दिया। सुबह में जब इंजन ने जोर से सीटी दी तभी जाकर उसकी आंख खुली।

रिता हर रोज बहुत रात गये तक काम में व्यस्त रहती थी और अपनी डायरी के लिखने के लिए उसके पास वक्त न बचता था। कुछ दिनों के बाद उसने फिर डायरी में थोड़ा कुछ लिखा:

"११ अगस्त

"प्रादेशिक सम्मेलन समाप्त हो गया। अकिम, मिखाइलो तथा कई दूसरे लोग अखिल उक्रेनी सम्मेलन के लिए खारकोव गये हैं और अपना सारा कागजी काम मेरे जिम्मे छोड़ गये हैं। दुबावा और पावेल को प्रादेशिक कमिटी में काम करने के लिए भेजा गया है। दिमित्री को जबसे पेचोर्स्क जिला कमिटी का मंत्री बनाया गया है, उसने क्लास में आना बन्द कर दिया है। गले तक वह काम में डूबा हुआ है। पावेल कुछ पढ़ने की कोशिश करता है, मगर कुछ खास नतीजा नहीं निकलता क्योंकि या तो मैं बहुत व्यस्त रहती हूं या उसे किसी काम के सिलसिले में बाहर भेज दिया जाता है। रेलवे में इस वक्त जो तनाव की हालत चल रही है, उसके कारण कोमसोमोलों को बराबर इस काम में खींचा जा रहा है। कल जार्की मुझसे मिलने आया था। वह शिकायत कर रहा था कि उसके लड़के उससे छीन लिये जाते हैं, जब कि खुद उसे उनकी सख्त जरूरत है।"

"२३ अगस्त

"आज मैं गलियारे में से गुजर रही थी तो मैंने मैनेजर के दफ्तर के सामने कोर्चागिन को पांक्रातोव और एक दूसरे आदमी के साथ खड़े देखा। मैं जब पास पहुंची तो मैंने पावेल को कहते सुना :

"वहां वे लोग जो बैठे हैं, उन्हें गोली मार देनी चाहिए। वह कहता है, 'तुम्हें हमारे हुक्म को काटने का कोई हक नहीं। रेल की ईंधन-कमिटी यहां पर मालिक है और तुम कोमसोमोलों को चुपचाप उसकी बात माननी चाहिएं, खामखा अपनी टांग नहीं अड़ानी चाहिए। तुमने उसका चेहरा देखा होता... और यह जगह इसी तरह के जोंकों से भरी हुई है!' इसके बाद उसने बड़ी गंदी जबान का इस्तेमाल किया। पांक्रातोव ने मुझे देख लिया और उसकी बगल में उंगली गड़ाई। पावेल घूमा और मुझे देखकर पीला पड़ गया और बिना मुझ से आंख मिलाये दूसरी तरफ को चला गया। लगता है अब वह काफी दिन मेरे पास नहीं आयेगा। वह जानता है कि मैं गंदी जबान पसन्द नहीं करती।"

"२७ अगस्त

"हमारी ब्यूरो की एक बन्द मीटिंग हुई थी। स्थिति काफी गंभीर होती जा रही है। मैं अभी इसके बारे में विस्तार के साथ नहीं लिख सकती। अकिम प्रादेशिक सम्मेलन से लौटा तो बहुत परेशान नजर आ रहा था। कल एक

और रसद की गाड़ी उलट दी गई। सोचती हूं कि अब मैं यह डायरी रखने की और कोशिश नहीं करूंगी। यों भी बहुत बेसिलसिला है यह। मैं कोर्चागिन का इन्तजार कर रही हूं। अभी उस रोज मेरी उससे मुलाकात हुई थी और उसने मुझे बतलाया कि वह और जार्की मिलकर पांच लोगों का एक कम्यून बना रहे हैं।"

एक रोज जब पावेल रेल के कारखाने में काम कर रहा था, तो उसे टेलीफोन पर बुलाया गया। यह रिता थी। उस शाम वह खाली थी और उसने प्रस्ताव किया कि पैरिस कम्यून की पराजय के कारणवाले अध्याय को खतम कर डाला जाय, जिसे वे दोनों मिलकर पढ़ रहे थे।

उस शाम को जब पावेल यूनिवर्सिटी स्ट्रीट पर रिता के मकान के पास पहुंचा तो उसने ऊपर नजर उठाई और खिड़की में रोशनी देखी। वह दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ा, हमेशा की तरह दरवाजे पर दस्तक दी और अन्दर चला गया।

वहां पलंग पर, जहां किसी नये साथी को क्षण भर बैठने की भी इजाजत नहीं थी, वर्दी पहने एक आदमी लेटा हुआ था। मेज पर एक रिवाल्वर, किटबैग और लाल तारे वाली टोपी रखी हुई थी। रिता उस अजनबी की बगल में उसे कसकर अपनी बांहों में भरे बैठी हुई थी। दोनों अपनी बातचीत में डूबे हुए थे और पावेल के अन्दर दाखिल होने पर रिता ने मुस्कराते हुए चेहरे से उसको देखा।

उस आदमी ने रिता के बाहुपाश से अपने को मुक्त किया और पलंग पर से उठा।

रिता ने पावेल से हाथ मिलाते हुए कहा, "पावेल, यह है..."

उस आदमी ने कसकर कोर्चागिन से हाथ मिलाते हुए रिता के वाक्य को पूरा किया, "डेविड उस्तिनोविच।"

"अचानक ही आ गया," रिता ने खुशी से हंसते हुए बतलाया।

पावेल ने बहुत सर्द तरीके से इस आगन्तुक से हाथ मिलाया और उसकी आंखों में क्षोभ की चमक दिखलाई दी। उसने उस आदमी की वर्दी की आस्तीन पर चार क्रास देखे जो कि एक कम्पनी के कमांडर की पहचान थी।

रिता कुछ कहने ही वाली थी कि पावेल बीच में बोल पड़ा, "मैं आपसे सिर्फ यह कहने आया था कि आज शाम को मैं घाट पर जहाज में लकड़ी लादने के काम में फंसा रहूंगा। और फिर आपके यह अतिथि भी आये हुए हैं। अच्छा तो अब मैं चलूंगा, लड़के नीचे खड़े मेरा इन्तजार कर रहे हैं।"

और वह वैसे ही एकाएक दरवाजे में से बाहर निकल गया जैसे अन्दर आया था। उन्होंने उसको तेजी से सीढ़ी पर से नीचे उतरते सुना। फिर बाहर का दरवाजा फटाक से बन्द हुआ और खामोशी छा गई।

"आज उसका हाल कुछ ठीक नहीं था। जरूर कोई बात है," रिता ने डेविड की सवाल करती हुई आंखों के जवाब में अटकते हुए कहा।

पुल के नीचे एक इंजन ने गहरी सांस ली और अपने जबर्दस्त फेफड़ों से सुनहली चिनगारियों की फुहार छोड़ी। चिनगारियां अजीब तरीके से नाचती हुई ऊपर को उठीं और धुएं में खो गईं।

पावेल रेलिंग से टिका खड़ा था और सिगनल की रंगीन रोशनियों का जलना और बुझना एकटक होकर देख रहा था। उसने अपनी आंखें सिकोड़ीं।

"कामरेड कोर्चागिन, यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि तुम्हें इस बात से इतनी चोट क्यों लगती है कि रिता का कोई पति है? क्या उसने तुमको कभी बतलाया कि उसका कोई पति नहीं है? और अगर उसने कभी ऐसा कहा भी हो तो क्या? तुमको यह चीज इतनी बुरी क्यों लगती है? तुमने सोचा था कामरेड कि यह सब खालिस रूहानी दोस्ती है और कुछ नहीं...। तुमने यह चीज कैसे होने दी?" उसने तीखे व्यंग्य के स्वर में अपने-आपसे सवाल किया, "और अगर वह उसका पति नहीं हो तो? डेविड उस्तिनोविच उसका भाई भी हो सकता है, चाचा भी हो सकता है...लेकिन अगर ऐसी बात हो तो तुमने अपने गदहेपन में उस बेचारे के साथ बड़ा अन्याय किया है। तुम किसी से कुछ अच्छे थोड़े ही हो। यह पता लगाना तो काफी आसान है कि वह उसका भाई है या नहीं। मान लो कि वह उसका भाई या चाचा निकला तो अपने आज के बेहूदा बर्ताव के बाद तुम फिर कैसे रिता से आंख मिला सकोगे? नहीं, अब तो तुम्हें उससे मिलना बन्द करना पड़ेगा!"

एक इंजन की सीटी ने उसके विचारों की धारा भंग की।

"बहुत देर हो रही है। घर चलने का वक्त हुआ। काफी फ़िज़ूलियात हो लीं।"

जिस इलाके में रेलवे मजदूर रहते थे, उसका नाम सोलोमेंका था। वहीं पांच नौजवानों ने एक छोटा सा कम्यून कायम किया। ये पांच थे—जार्की, पावेल, सुनहले बालों वाला खुश चेक नौजवान जिसका नाम क्लावीचेक था, रेलवे यार्ड के कोमसोमोल का मंत्री निकोलाई ओकुनेव और स्तेपान आर्त्युखिन जो ब्यॉयलर सुधारने का काम करता था और आजकल रेलवे चेका के लिए काम कर रहा था।

उन्होंने एक कमरा ढूंढ़ा और तीन दिन तक अपना सारा खाली वक्त उसको साफ करने, उसमें रंग-रोगन करने और उसकी दीवारों की सफेदी करने में लगाया। वे बाल्टियां लिये हुए तेजी से इतनी बार इधर-उधर आये और गये कि पड़ोसी लोग सोचने लगे कि घर में आग लग गई है। उन्होंने अपने लिए ओढ़े तैयार किये और पार्क से बटोरी हुई शहतूत की पत्तियां भर कर गद्दे तैयार किये। इस सब के बाद चौथे रोज वह कमरा, जिसकी दीवार पर पेत्रोव्स्की की एक तस्वीर और एक बड़ा सा नक्शा टंगा था, सफाई से चमक रहा था।

खिड़कियों के बीच में एक आलमारी थी जिसमें ऊपर तक किताबों का ढेर लगा हुआ था। दो बक्सों को दफ्ती से ढंक कर उनसे कुर्सी का काम लिया जा रहा था और एक ओर बड़ा बक्स बर्तनों की आलमारी का काम दे रहा था। कमरे के बीचोबीच एक बड़ी सी बिलियर्ड की मेज थी जिसमें बस यह कमी थी कि उसमें कपड़ा नहीं लगा था। इसको कमरे के निवासी मालगोदाम से अपने कंधों पर उठा कर लाये थे। दिन को उससे मेज का काम लिया जाता था और रात को उस पर क्लावीचेक सोता था। पांचों लड़के अपनी तमाम चीजें उठा लाए और व्यवहार कुशल क्लावीचेक ने कम्यून की जायदाद की फेहरिस्त बनाई। वह उस फेहरिस्त को दीवार पर टांगना चाहता था, मगर दूसरों ने आपत्ति की। कमरे की हर चीज सबकी मिली-जुली सम्पत्ति घोषित कर दी गई। कमाई, राशन और बीच-बीच में घर से आनेवाले पार्सल, सबका बराबर-बराबर बंटवारा हो जाता था; निजी सम्पत्ति की बस एक चीज थी—उनके अपने-अपने हथियार। सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि कम्यून का जो सदस्य साझे की सम्पत्ति के नियम का उल्लंघन करेगा या अपने साथियों के साथ विश्वासघात करेगा, उसे कम्यून से निकाल बाहर किया जायगा। ओकुनेव और क्लावीचेक ने आग्रह किया कि कम्यून से निकाले जाने के बाद अगली कार्रवाई यह होनी चाहिए कि उसे कमरे से निकाल बाहर किया जाय और यह प्रस्ताव पास हो गया।

जिले की कोमसोमोल के सभी सक्रिय सदस्य कम्यून के गृह प्रवेश की पार्टी में आये। बगल के पड़ोसी से एक विशाल समोवार उधार लिया गया। चाय पार्टी में कम्यून की सारी शकर खर्च हो गई। चाय के बाद उन्होंने कोरस गाना शुरू किया और उनकी जवानी की बुलन्द आवाजों से दीवार के पटरे हिल उठे :

सारी दुनिया भीज गई आंखों के जल से,
दुख से कड़वे कैसे ये दिन बीत रहे हैं
पर उगता है नव प्रभात नभ के अंचल से

तम्बाकू के कारखाने की लड़की तालिया लगुतिना गाने का नेतृत्व कर रही थी। उसके सिर पर का लाल रूमाल एक ओर को खिसक गया था और उसकी आंखें, जिनकी गहराई अब तक किसी ने नहीं पाई थी, शरारत से नाच रही थीं। तालिया की हंसी बहुत ही संक्रामक थी और वह अपने अठारह सालों की रौशन ऊंचाई से दुनिया को देखती थी। अब उसकी बांह लहर की तरह ऊपर को उठी और नक्कारों की आवाज की तरह गाने की धारा बह चली :

उमड़ो मेरे गीत विश्व पर छा जाओ;
विजय गर्व से उन्नत निज केतन लहराओ !
हृदय रक्त की अग्नि-शिखा में जलकर तपकर;
रहो प्रज्वलित जगती के उन्मुक्त गगन पर !

बहुत रात गये पार्टी खत्म हुई और उनकी बुलन्द जवान आवाजों की गूंज से खामोश सड़कें जाग पड़ीं।

टेलीफोन की घंटी बजी और जार्की ने रिसीवर की तरफ हाथ बढ़ाया।

"चुप रहो, मैं कुछ सुन नहीं पाता !" उसने शोर मचाते हुए कोमसोमोलों से, जो मंत्री के दफ्तर में भीड़ लगाये हुए थे, चिल्ला कर कहा।

हंगामा कुछ कम हो गया।

"हलो ! अच्छा तुम हो। हां, अभी अभी। एजेंडे पर क्या-क्या है ? ओ वही पुरानी चीज, घाट से ईंधन की लकड़ी घसीट कर लाना। क्या कहा, नहीं, उसे कहीं नहीं भेजा गया है। वह यहीं है। उससे बात करना चाहती हो ? एक मिनट रुको।"

जार्की ने पावेल को बुलाया।

"कामरेड उस्तिनोविच तुमसे बात करना चाहती हैं," उसने कहा और रिसीवर पावेल के हाथ में पकड़ा दिया।

पावेल ने रिता की आवाज को कहते सुना, "मैं सोचती थी तुम शहर में नहीं होगे। आज शाम मैं खाली हूं। तुम आ क्यों नहीं जाते ? मेरा भाई चला गया है। वह इस शहर से गुजर रहा था और मुझसे मिलने चला आया। हमने एक-दूसरे को दो साल से नहीं देखा था।"

उसका भाई !

पावेल ने और कुछ नहीं सुना। उसको उस बदनसीब शाम की याद आ रही थी और अपने उस निश्चय की याद आ रही थी जो उसने उसी रात को पुल के नीचे किया था। हां, उसे आज ही शाम को रिता के पास जाना

चाहिए और इस मामले को खत्म कर देना चाहिए। प्रेम के संग पीड़ाएं और दुश्चिन्ताएं भी बहुत सी लगी रहती हैं। यह क्या ऐसी चीजों का वक्त है ?

उस आवाज ने पावेल के कान में कहा, "तुम मुझे सुन नहीं पा रहे हो क्या ?"

"हां, हां मैं सुन रहा हूं। बहुत अच्छा। मैं ब्यूरो की मीटिंग के बाद आऊंगा," कहते हुए पावेल ने रिसीवर रख दिया।

उसने रिता की आंखों में आंखें डाल कर देखा और ओक की लकड़ी की बनी मजबूत मेज के सिरे को पकड़ते हुए बोला, "मैं अब शायद तुमसे मिलने न आ सकूंगा।"

पावेल ने रिता की घनी बरौनियों को उसकी बात सुन कर ऊपर खिंचते देखा। कागज पर उसकी पेन्सिल, जो दौड़ रही थी, रुक गई और खुले हुए पैड पर निश्चेष्ट खड़ी रही।

"क्यों ?"

"वक्त नहीं निकल पाता। तुम्हें तो खुद मालूम है कि हम काफी मुश्किलों से गुजर रहे हैं। मुझे अफसोस है, मगर शायद यह चीज हमें बन्द करनी ही पड़ेगी...।"

पावेल को लग रहा था कि उसके आखिरी शब्द कुछ बहुत दृढ़ न लगे होंगे।

"यह द्रविड़ प्राणायाम तुम क्यों कर रहे हो ?" वह भीतर ही भीतर तैश खा रहा था। "सीधे-सीधे हमला करने की हिम्मत तुममें नहीं है।"

प्रकट उसने कहा : "इसके अलावा मैं कई दिन से तुमसे यह कहना चाह रहा था कि तुम बात को जिस तरह से समझाती हो, उसे समझने में मुझे कठिनाई होती है। जब हम लोग सेगल के संग पढ़ते थे, उस वक्त हमने जो कुछ सीखा था, वह न जाने कैसे मेरे सिर में टिक गया। मगर तुमसे जो कुछ सीखा, उसके बारे में मैं यह बात नहीं कह सकता। मुझे हर बार सबक के बाद तोकारेव के पास जाना पड़ा है, चीज को दुबारा ठीक से समझने के लिए। मैं जानता हूं कि यह मेरी ही गलती है—मेरे सिर में बात घुसती ही नहीं। तुम्हें दूसरा कोई शिष्य ढूंढ़ना पड़ेगा, जिसमें कुछ ज्यादा बुद्धि हो।"

उसने रिता की तेज निगाहों से अपनी निगाहें फेर लीं और फिर समझ-बूझ कर, साहस बटोर कर उसने कह ही डाला : "इसलिए मैं तो समझता हूं कि हमारा इस चीज को जारी रखना वक्त की बरबादी ही है।"

फिर वह उठा, संभाल कर पैर से कुर्सी सरकाई और रिता के झुके हुए सिर और चेहरे को देखा जो लैम्प की रोशनी में पीला नजर आ रहा था। उसने अपनी टोपी सिर पर लगा ली।

"अच्छा, चलूं कामरेड रिता। मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारा इतना वक्त बर्बाद किया। मुझे बहुत पहले ही तुमको यह बात बतला देनी चाहिए थी। मुझसे यही गलती हुई।"

रिता ने यंत्रवत अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिया, मगर उसके इस अचानक रूखेपन से वह इतनी स्तब्ध हो गई थी कि दो-एक शब्द से ज्यादा नहीं बोल सकी।

"मैं तुम्हें दोष नहीं देती, पावेल। अगर मैं चीजों को तुम्हें ठीक से समझाने का कोई ढंग नहीं निकाल सकी, तो दरअसल मुझे यही पुरस्कार मिलना चाहिए था।"

पावेल भारी कदमों से दरवाजे की तरफ चला। बाहर निकल कर उसने धीरे से दरवाजा बन्द किया। सीढ़ी से नीचे उतर कर वह पल भर को रुका और सोचने लगा—अभी भी देर नहीं हुई है, जाकर बात की सफाई की जा सकती है...। मगर फायदा ? ऐसा करने से क्या हासिल ? उसका उपेक्षापूर्ण जवाब पाकर फिर बाहर चले आने के लिए ? नहीं।

साइडिंगों पर बेकार इंजनों और रेल के टूटे-फूटे डिब्बों का कब्रिस्तान बढ़ चला। लकड़ी के वीरान कारखाने में हवा लकड़ी के सूखे बुरादे को इधर-उधर बिखेर रही थी।

और शहर के चारों ओर जंगल की झाड़ियां और गहरे-गहरे नालों में ओर्लिक के गिरोह के लोग छिपे हुए थे। दिन को वे लोग आस-पास के गांवों और जंगली इलाकों में चुपचाप पड़े रहते थे, मगर रात को धीरे से रेल की लाइनों पर निकल आते थे, बेदर्दी से उन्हें उखाड़कर फेंक देते थे और अपना यह दुष्ट काम करके वापस अपनी मांद में पहुंच जाते थे।

रेल की लाइनें उखड़ जाने से न जाने कितने इंजन, लोहे के घोड़े, रेलवे के बांध पर से लुढ़कते हुए नीचे पहुंच जाते थे। और नतीजा यह होता था कि डिब्बे टूटकर चकनाचूर हो जाते, निन्दा से लोग मलवे के नीचे पिस जाते और बेशकीमती अनाज खून और मलवे में लिथड़ जाता।

यह गिरोह अचानक किसी छोटे से कस्बे पर टूट पड़ता और डरी हुई मुर्गियां कुड़कुड़ करती हुई सब तरफ भागने लगतीं। यों ही कुछ गोलियां इधर-उधर चला दी जातीं। वोलोस्त सोवियत की इमारत के सामने राइफलें थोड़ी देर कड़कड़ातीं और ऐसी आवाज होती जैसे सूसी झाड़ी के पैर के नीचे दबने से होती है और वे डाकू अपने मोटे-ताजे घोड़ों पर सवार गांव में यहां से वहां दौड़ लगाते और जो भी रास्ते में पड़ जाता उसे काट कर रख देते। वे अपने

शिकारों को इतने इतमीनान से तलवार चलाकर काटते जैसे लकड़ी को चीर रहे हों। गोलियां वे लोग कम ही चलाते थे क्योंकि गोलियों की कमी थी।

जिस तूफानी तेजी से ये डाकू आते उसी तेजी से लौट भी जाते। डाकुओं के इस गिरोह की आंखें और कान सब जगह थे। वे आंखें उस छोटे से सफेद मकान की दीवारों को भेदकर, जिसमें वोलोस्त सोवियत था, अन्दर देख लेती थीं क्योंकि पादरी के मकान और कुलकों के घरों से जंगल की झाड़ियों तक अदृश्य सूत्र मौजूद थे। गोले-बारूद के डिब्बे, सुअरों के ताजे गोश्त के ढेर, नीले रंग की कच्ची शराब की बोतलें—सब उसी रास्ते जंगल पहुंच जाती थीं। उसी सूत्र से खबरें भी पहुंच जाती थीं, जो पहले छोटे ऐटमनों के कान में फुसफुसाकर कही जातीं और फिर नाना मार्गों से होकर खुद ओर्लिक के पास पहुंच जातीं।

इस गिरोह में दो-तीन सौ खूनियों से ज्यादा न रहे होंगे, मगर अब तक उन्हें पकड़ा न जा सका था। वे छोटी-छोटी कई टुकड़ियों में बंट जाते और फिर एक साथ दो-तीन इलाकों में अपनी कार्रवाई करते। उन सबको पकड़ना असंभव था। पिछली रात का डाकू अगले दिन बहुत शान्तिप्रिय किसान की शकल में दिखाई देता। वह अपने बागीचे में काम करता होता या अपने घोड़े को रातिब देता होता या अपने दरवाजे पर खड़ा इतमीनान से पाइप पी रहा होता और एकदम शून्य आंखों से घुड़सवार दस्तों को अपने पास से गुजरते हुए देखता। उस वक्त उसे देखकर कौन कह सकता था कि कल रात यही आदमी डाकू का काम कर रहा था।

अपनी रेजीमेंट लेकर अलेक्जेंडर पुजीरेव्स्की जान लगाकर इन डाकुओं के पीछे लगा हुआ था और तीनों जिलों में उन्हें यहां से वहां खदेड़ता फिर रहा था। कभी-कभी उसे डाकुओं का सुराग भी मिल जाता। एक महीने बाद ओर्लिक को मजबूर होकर अपने बदमाशों को दो जिलों से हटाना पड़ा और अब वह बहुत छोटे से इलाके में घिर गया था।

कस्बे की जिन्दगी बदस्तूर गति से धीमे-धीमे चली जा रही थी। शोर करती हुई भीड़ें वहां के पांच बाजारों में भरी रहती थीं। उनके मन में बस दो भाव थे—कैसे ज्यादा से ज्यादा लूटें और कम से कम दें। यह वातावरण ऐसा था जिसमें तमाम तरह के ठगों और लुटेरों को अपनी योग्यता दिखलाने का अनन्त अवसर मिलता था। भीड़ में सैकड़ों ऐसे लोग घूमते रहते थे जिनकी आंखों में ईमानदारी छोड़कर बाकी सब कुछ था। जैसे मक्खियां गन्दगी के ढेर पर जमा हो जाती हैं, उसी तरह शहर के बुरे से बुरे आदमी यहां इकट्ठा हो गये थे और उनका एक ही उद्देश्य था : नादान लोगों को ठगना। एक-दो रेल-

गाड़ियां जो उधर आतीं, उनमें से तमाम लोग बोरे लादे हुए उतरते और सीधे बाजार की ओर चल देते ।

रात को बाजार उजाड़ हो जाता और जहां बैठकर दूकानदार अपनी चीजें बेचते थे, उन दूकानों की कतारें अंधेरे में डरावनी नजर आतीं ।

बहुत हिम्मती आदमी ही अंधेरा हो जाने पर इस उजड़े हुए बाजार से गुजर सकता था क्योंकि एक-एक दूकान के पीछे से खतरा झांकता रहता था । अक्सर रात को गोली छूटने की आवाज सुनाई देती जैसे लोहे पर किसी ने हथौड़ा दे मारा हो, और फिर कोई आदमी अपने ही खून में लथपथ वहीं ढेर हो जाता । और जब तक कि सबसे करीब की चौकी से मुट्ठी भर सिपाही उस जगह पहुंचें-पहुंचें (उनको अकेले जाने का साहस न होता), तब तक वहां कुछ बाकी न रह जाता । उन्हें सिर्फ ऐंठी हुई लाश मिलती । खूनी भाग गये होते और उस हंगामे में बाजार के चौक के कुछ निशाचर यों गायब हो जाते, जैसे हवा का झोंका उन्हें उड़ा ले गया हो ।

बाजार के ठीक सामने "ओरियन" सिनेमा था । उसके सामने की सड़क और फुटपाथ बिजली की रोशनी से जगमग करता रहता था और फाटक पर लोगों की भीड़ लगी रहती थी । हॉल में प्रेम के अति-नाटकीय दृश्य पर्दे पर दिखलाये जा रहे होते; बीच-बीच में जब फिल्म कट जाती और ऑपरेटर प्रोजेक्टर को रोक देता, तो जनता में असन्तोष-सूचक शोर मच जाता ।

शहर के अन्दर और आसपास जिन्दगी हस्बेमामूल चलती नजर आती थी । पार्टी की प्रादेशिक कमिटी में भी, जो कि क्रान्तिकारी सत्ता का केन्द्र थी, पूर्ण शान्ति थी । मगर यह शान्ति सिर्फ ऊपरी थी ।

शहर के अन्दर एक तूफान पक रहा था । उनमें से बहुतेरे, जो तमाम दिशाओं से आये थे और जिनके लम्बे लबादों के नीचे से उनकी फौजी राइफलें झांकती होतीं, समझ रहे थे कि यह तूफान आ रहा है । वे लोग भी इस बात को समझ रहे थे जो गल्ले के मुनाफाखोरों के भेष में रेलगाड़ियों की छतों पर बैठकर आते थे, मगर अपने बोरे सीधे बाजार में न ले जाकर अच्छी तरह से याद किये हुए पतों पर ले जाते थे ।

इनको पता था । मगर मजदूरों की बस्तियों को और यहां तक कि बोल्शेविकों को भी इस आनेवाले तूफान का कुछ पता न था ।

शहर के सिर्फ पांच बोल्शेविक साजिश का हाल जानते थे ।

पेतल्युरा के गिरोहों को लाल फौज ने श्वेत पोलैंड में खदेड़ दिया था । उन्हीं के अवशेष वारसा के विदेशी मिशनों के साथ मिलकर इस विद्रोह में हिस्सा लेने की तैयारी कर रहे थे । पेतल्युरा की रेजीमेंटों के बचे-खुचे लोगों को इकट्ठा कर एक हमलावर दस्ता तैयार किया जा रहा था ।

विद्रोहियों की केन्द्रीय कमिटी का एक संगठन शेपेतोवका में भी था। उसमें सैंतालीस सदस्य थे जिनमें से ज्यादातर पुराने सक्रिय क्रान्ति-विरोधी लोग थे। उन्हें नगर की चेका ने उनका विश्वास करके छोड़ दिया था।

फादर वासिली, एन्साइन विनिक और पेतल्युरा अफसर कुजमेंको इस संगठन के नेता थे। पादरी की लड़कियां, विनिक के बाप और भाई तथा समोतिन्या नाम का एक आदमी, जो तिकड़म से कार्यकारिणी के दफ्तर में घुस गया था, जासूसी किया करते थे।

योजना यह थी कि रात को दस्ती बमों से सरहद पर के स्पेशल डिपार्टमेंट पर हमला किया जाय, कैदियों को छुड़ा लिया जाय और अगर मुमकिन हो तो रेलवे स्टेशन पर कब्जा कर लिया जाय।

इसी बीच अफसर गुप्त रूप से शहर में जमा किये जा रहे थे क्योंकि वही विद्रोह का केन्द्र था और लुटेरों के गिरोहों को आसपास के जंगलों में भेजा जा रहा था। यहां से विश्वसनीय दलालों के जरिए रूमानिया और खुद पेतल्युरा से सम्पर्क रखा जाता था।

फियोदोर जुखराई स्पेशल डिपार्टमेंट के अपने दफ्तर में छः रात से सोया नहीं था। वह उन पांच बोल्शेविकों में से था जिन्हें दुश्मनों की इस साजिश के बारे में मालूम था। उस पुराने मल्लाह जुखराई को उस शिकारी की सी अनुभूति हो रही थी जिसने अपने शिकार को घेर लिया हो और अब उस जानवर के उछलकर हमला करने का इन्तजार कर रहा हो।

शोर मचाने और दूसरे लोगों को इस खतरे की बात बताने की भी उसे हिम्मत न होती थी। खून के प्यासे इस राक्षस को मारना ही होगा। तभी, केवल तभी, शान्ति के साथ काम करना मुमकिन हो सकेगा और हर वक्त डर-डरकर हर झाड़ी के पीछे नहीं देखना होगा। मगर ऐसा नहीं करना चाहिए कि जानवर चौकन्ना होकर भाग जाय। जीवन-मरण के ऐसे संघर्षों में अन्त में सहन-शक्ति और दृढ़ता की ही जीत होती है।

कदम उठाने की अब घड़ी आ गयी। शहर में षडयंत्रकारियों के तमाम गुप्त अड्डों में ही कहीं पर बगावत की घड़ी भी तय हो गयी थी : कल की रात।

मगर जिन पांच बोल्शेविकों को इस चीज का पता था उन्होंने पहले ही हमला करने का फैसला किया। उन्होंने कहा : नहीं, हमें तो **आज ही रात** कदम उठाना है।

उसी शाम एक बख्तरबन्द गाड़ी चुपके से रेलवे यार्ड से बाहर निकली। उसके बाहर निकलते ही बड़ा सा फाटक उतने ही चुपके से बन्द हो गया।

कोड की भाषा में दिये गये तार उड़ चले और उनकी मांग के जवाब में उन मुस्तैद और चौकन्ने आदमियों ने, जिनके हाथों में जनतंत्र की सुरक्षा सौंपी गयी थी, षडयंत्रकारियों के अड्डों का सफाया करने के लिए फौरन कदम उठाये।

अकिम ने जार्की को टेलीफोन किया।

"सेल मीटिंग ठीक चल रही है ? बहुत अच्छा। यहां पर एक कान्फ्रेंस हो रही है, उसके लिए फौरन यहां चले आओ और पार्टी की जिला कमिटी के मंत्री को भी अपने साथ लेते आओ। ईंधन की समस्या, हमने जितनी सोची थी, उससे भी ज्यादा गंभीर है। तुम्हारे यहां आ जाने पर हम लोग विस्तार से बातें करेंगे।" अकिम दृढ़ आवाज में जल्दी-जल्दी बोल रहा था।

जार्की ने गुर्रा कर रिसीवर के अन्दर कहा. "यह ईंधन की समस्या तो हम सबको पागल कर देगी।"

लित्के बेतहाशा तेजी से दोनों मंत्रियों को हेडक्वार्टर में ड्राइव कर ले गया। दूसरी मंजिल की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए उन्होंने फौरन इस बात को भाप लिया कि उन्हें ईंधन की समस्या के बारे में बात करने के लिए नहीं बुलाया गया है।

दफ्तर के मैनेजर की मेज पर एक हल्की मशीनगन रखी हुई थी और उसके बगल में स्पेशल टास्क फोर्स के तोपची काम कर रहे थे। नगर की पार्टी और कोमसोमोल संगठनों से आये खामोश सन्तरियों से गलियारे भरे हुए थे। मंत्री के दफ्तर में पार्टी की प्रादेशिक कमिटी के ब्यूरो की खास जरूरी मीटिंग खत्म होने वाली थी।

दरवाजे के ऊपर खिड़की में से दो तार निकले हुए थे जो मैदानी टेलीफोनों से जुड़े हुए थे। कमरे में बातचीत की धीमी भुनभुनाहट थी। वहां अकिम, रिता और मिखाइलो मौजूद थे। रिता लाल सेना के लोगों की हेलमेट लगाये हुए थी, खाकी स्कर्ट और चमड़े की जाकेट पहने थी जिसकी पेटी से एक भारी माउजर पिस्तौल झूल रहा था—यह वही वर्दी थी जो वह मोर्चे पर पहना करती थी जब वह कम्पनी की राजनीतिक शिक्षक थी।

"यह सब क्या हो रहा है ?" जार्की ने आश्चर्य से पूछा।

"अलर्ट ड्रिल, वानिया। हम लोग अभी तुम्हारे इलाके में जा रहे हैं। पांचवें इन्फैंट्री स्कूल में प्रैक्टिस रैली है। कोमसोमोल अपनी सेल मीटिंगों से सीधे वहां पहुंचेंगे। खास बात यह है कि हम लोग वहां पहुंच तो जायें, मगर किसी का ध्यान हमारी ओर आकर्षित न हो।"

पुराने फौजी स्कूल का मैदान जिसमें ओक के पुराने विशाल पेड़ खड़े थे और जिसके ठहरे हुए पानी की तलैया में सेवार ही सेवार उगी हुई थी और जिसके चौड़े-चौड़े रास्तों की सफाई नहीं हुई थी—सब खामोशी में डूबे थे।

मैदान के बीचोबीच एक ऊंची सी सफेद दीवार के पीछे स्कूल की इमारत थी जिसमें अब लाल फौज के कमांडरों के लिए पांचवां इन्फैंट्री स्कूल था। बहुत रात बीत चुकी थी। इमारत की ऊपरी मंजिल पर अंधेरा था। बाहर से सब कुछ खामोश था और उधर से गुजरने वाला आदमी यही सोचता कि स्कूल के सारे लोग सो रहे हैं। मगर लोहे के फाटक खुले क्यों थे और वे दो अंधेरी आकृतियां बड़े-बड़े मेढ़कों की तरह वहां फाटक पर खड़ी क्या कर रही थीं? रेलवे इलाके के तमाम हिस्सों के लोग, जो यहां इकट्ठे हुए थे, अच्छी तरह जानते थे कि रात का अलर्ट हो जाने पर स्कूल के लोग सो नहीं सकते। उन्होंने अपनी कोमसोमोल और पार्टी सेल की मीटिंगें उस छोटे से ऐलान के बाद फौरन छोड़ दी थीं। वे खामोशी से चले आ रहे थे, कभी अकेले, कभी दो, मगर कभी तीन से ज्यादा नहीं और उनमें से हर एक के पास कम्युनिस्ट पार्टी या कोमसोमोल की सदस्यता का कार्ड था। उसके बिना कोई भी लोहे के फाटक में नहीं घुस सकता था।

सभा भवन, जिसमें काफी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी, रोशनी से जगमग कर रहा था। खिड़कियों पर तम्बू बनाने में इस्तेमाल होने वाले किरमिच के मोटे-मोटे पर्दे टांग दिये गये थे। बोल्शेविक, जो यहां बुलाये गये थे, घर की बनी सिगरेटें खामोशी से पी रहे थे और आपस में दिल्लगी कर रहे थे कि देखो ड्रिल के लिए भी कितनी एहतियात बरती जा रही है। कोई भी यह नहीं महसूस कर रहा था कि यह सचमुच का अलर्ट है। लोग समझते थे कि स्पेशल ड्यूटी की टुकड़ियों में अनुशासन कायम रखने के लिए यह चीज की जा रही है। मगर तपा हुआ सिपाही स्कूल के कम्पाउंड में दाखिल होते ही सच्चे अलर्ट के लक्षणों को पहचान लेता था। बहुत ही ज्यादा सावधानी बरती जा रही थी। विद्यार्थियों के कानों में आदेश कहे जा रहे थे और उनकी प्लैटूनें बाहर कतार बनाती जा रही थीं। मशीनगनें कम्पाउंड के भीतर खामोशी से लाई जा रही थीं और इमारत की किसी भी खिड़की से रोशनी की एक हलकी सी किरण भी बाहर झांकती नहीं दिखाई देती थी।

"मितियाई, मामला कुछ संगीन मालूम होता है?" पावेल कोर्चागिन ने दुबावा से पूछा जो एक खिड़की की चौखट पर एक लड़की के बगल में बैठा था और जिसे दो दिन पहले पावेल ने जार्की के घर पर देखा था।

दुबावा ने खुशदिली से पावेल के कंधे पर हाथ मारा।

"डर रहे हो, क्यों? मगर कोई बात नहीं, हम तुम लोगों को लड़ना सिखा देंगे। तुम दोनों एक-दूसरे को नहीं जानते। या जानते हो?" कहते हुए उसने उस लड़की की ओर इशारा किया। "इसका नाम 'आना' है, नाम का दूसरा हिस्सा मुझे नहीं मालूम, मगर इसका पद मैं जानता हूं, यह आन्दोलन और प्रचार केन्द्र की इन्चार्ज है।"

वह लड़की, जिसका दुबावा ने ऐसे मजाक के ढंग से परिचय दिया था, कोर्चागिन को दिलचस्पी से देख रही थी और अपने बालों के एक गुच्छे को पीछे फेर रही थी जो उसके चमकीले गुलाबी रंग के रूमाल के नीचे से खिसककर बाहर आ गया था। कोर्चागिन की आंखें उसकी आंखों से मिलीं और दो-एक क्षण के लिए दोनों में एक मूक प्रतियोगिता सी जारी रही। बड़ी-बड़ी पलकों के नीचे से उसकी चमकती हुई काली-काली आंखें पावेल की आंखों को चुनौती दे रही थीं। पावेल ने उधर से दृष्टि हटाई और दुबावा को देखने लगा। यह महसूस करके कि शर्म के मारे उसका मुंह लाल हुआ जा रहा है, उसे कुछ चिढ़ सी आई और मुंह कुछ बन गया।

जबरिया मुस्कराते हुए उसने पूछा, "तुम में से कौन प्रचार-आन्दोलन का काम करता है?"

उसी क्षण हॉल में हलचल हुई। एक कम्पनी कमांडर कुर्सी पर चढ़ गया और चिल्लाया: "पहली कम्पनी के लोगो, इधर आकर खड़े हो जाओ! जल्दी करो साथियो, जल्दी।

प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष और अकिम के साथ जुखराई अन्दर दाखिल हुआ। वे लोग अभी-अभी आये थे। हॉल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोगों की कतारें खड़ी थीं।

प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष एक ट्रेनिंग मशीनगन पर चढ़ गये और उन्होंने अपना हाथ उठाया।

उन्होंने कहा: "साथियो, आपको एक बहुत ही जरूरी और संगीन मसले के लिए यहां बुलाया गया है। इस वक्त मैं आपको जो कुछ बतलाने जा रहा हूं, वह कल तक सुरक्षा के खयाल से नहीं बतलाया जा सकता था। कल रात को यहां पर और उक्रेन के दूसरे शहरों में एक क्रान्ति-विरोधी विद्रोह शुरू होने वाला है। शहर में ह्वाइट-गार्ड अफसर भरे हुए हैं। लुटेरों की टुकडियां शहर के चारों तरफ जमा कर दी गयी हैं। इन षड्यंत्रकारियों में से कुछ लोग बख्तरबन्द गाड़ियों की टुकड़ी में घुस गये हैं और वहां पर ड्राइवरों का काम कर रहे हैं। मगर चेका ने समय रहते इस साजिश का पता पा लिया है। हम सभी पार्टी और कोमसोमोल संगठनों को हथियार दे रहे हैं। पहली और दूसरी कम्युनिस्ट बटालियनें फौजी स्कूल की टुकड़ियों और चेका के साथ मिलकर

काम करेंगी। फौजी स्कूल की यूनिटों ने मोर्चा लेना शुरू भी कर दिया है। अब तुम्हारी बारी है, साथियो! अपने हथियार लेकर पन्द्रह मिनट के अन्दर-अन्दर मोर्चे पर जाने के लिए तैयार हो जाओ! कामरेड जुखराई इस फौजी कार्रवाई का नेतृत्व करेंगे। यूनिट कमांडर उनसे आदेश लेंगे। परिस्थिति कितनी गंभीर है, इसके बारे में ज्यादा जोर देना मेरे लिए जरूरी नहीं है। कल की बगावत को आज ही कुचल देना होगा।"

पन्द्रह मिनट बाद हथियारों से लैस बटालियन स्कूल के अहाते में कतार बांधे खड़ी थी।

जुखराई ने निश्चल खड़े सैनिकों की कतारों पर निगाह दौड़ाई। उनके सामने तीन कदम पर दो आदमी चमड़े की पेटी कमर में बांधे खड़े थे। एक था बटालियन कमांडर मिनिआइलो जो लोहे के कारखाने का एक मजदूर था। वह यूराल का रहनेवाला और बहुत हट्टा-कट्टा आदमी था। और उसके बगल में खड़ा था कमिसार अकिम। उसके बायीं तरफ पहली कम्पनी की प्लैटूनें थीं और उनके आगे दो कदम पर कम्पनी के कमांडर और राजनीतिक शिक्षक खड़े थे। उनके पीछे कम्युनिस्ट बटालियन की खामोश कतारें खड़ी थीं। इस बटालियन में तीन सौ आदमी थे।

फियोदोर ने सिगनल दिया, "कार्रवाई शुरू करने का वक्त हो गया।"

वे तीन सौ आदमी उजड़े हुए वीरान सड़कों पर मार्च करने लगे।

शहर सो रहा था।

दिकाया के सामने, लवोव्स्काया सड़क पर बटालियन ने कतार तोड़ी। यहीं पर उसे अपनी कार्रवाई शुरू करनी थी।

खामोशी से, बिना कोई भी आवाज किये उन्होंने इमारतों को घेर लिया। एक दूकान की सीढ़ी पर हेडक्वार्टर कायम किया गया।

शहर के चौक की तरफ से एक मोटर लवोव्स्काया सड़क पर तेजी से इधर आ रही थी और उसकी हेडलाइटों से सामने का रास्ता चमक रहा था। बटालियन की कमांड चौकी के सामने पहुंच कर वह झटके से रुक गई।

इस बार ह्यूगो लित्के अपने पिता को साथ लाया था। कमांडेंट कूद कर गाड़ी से बाहर आया और उसने गर्दन मोड़कर अपनी लेटिश भाषा में कुछ छोटे-छोटे जुमले अपने लड़के से कहे। मोटर तेजी से आगे बढ़ी और पलक मारते-मारते सड़क के मोड़ पर जाकर आंख से ओझल हो गई। लित्के भूत की तरह गाड़ी चला रहा था। उसकी आंखें सड़क पर चिपकी हुई थीं और उसके हाथ इस तरह कस कर इस्टियरिंग ह्वील को पकड़े थे जैसे वह उसका ही एक अंग हो।

हां, आज रात लित्के के तूफानी रफ्तार से गाड़ी चलाने की जरूरत थी। इस वक्त तेज भगाने के लिए उसको हरगिज गार्ड हाउस में दो रात बन्द रहने की सजा न मिलेगी !

और ह्यूगो उल्का की तरह सड़क पर तेजी से भागा जा रहा था।

जुखराई को, जिसे नौजवान लित्के पलक मारते शहर के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुंचा रहा था, लित्के की प्रशंसा करनी ही पड़ी, "आज रात अगर तुमने किसी को कुचला नहीं, तो कल तुम्हें सोने की एक घड़ी इनाम में मिलेगी।"

ह्यूगो बड़ा खुश था और बोला, "मैं तो सोचता था कि उस मोड़ पर इतनी तेजी से गाड़ी मोड़ने के लिए मुझे दस दिन जेल में रहना पड़ेगा...।"

पहले वार षडयंत्रकारियों के हेडक्वार्टर पर किये गये। थोड़ी ही देर में कैदियों की बड़ी-बड़ी टोलियां और कागजात के गट्ठर स्पेशल डिपार्टमेंट के हवाले किये जा रहे थे।

दिकाया सड़क पर मकान नम्बर ११ में जुर्बर्ट नाम का एक आदमी रहता था जिसने चेका को मिली हुई सूचना के अनुसार, इस ह्वाइट गार्ड विद्रोह में बहुत आगे बढ़कर हिस्सा लिया था। उन अफसर यूनिटों की, जो पोडोल के इलाके में काम करने वाली थीं, फ़िहरिस्तें जुर्बर्ट के पास थीं।

लित्के का पिता खुद गिरफ्तारी करने के लिए दिकाया सड़क पर पहुंचा। जुर्बर्ट के मकान की खिड़कियां एक बागीचे में खुलती थीं, और इस बागीचे और पहले के एक स्त्रियों के मठ के बीच सिर्फ एक ऊंची दीवार थी। जुर्बर्ट मकान पर नहीं था। उसके पड़ोसियों ने बतलाया कि सारे दिन किसी ने उसे नहीं देखा था। तलाशी ली गई और नाम तथा पतों की फ़िहरिस्तें और उनके साथ-साथ दस्ती बमों का एक बक्सा भी मिला। लित्के ने जुर्बर्ट को पकड़ने के लिए अपने आदमियों को गुप्त जगहों पर बिठलाने का हुक्म दे दिया और उसके बाद उन कागजात का मुआइना करने के लिए कमरे में थोड़ी देर ठहरा रहा।

फौजी स्कूल का वह नौजवान विद्यार्थी जिसे नीचे बागीचे में पहरे पर खड़ा किया गया था, बागीचे के उस कोने से जहां वह था, खिड़की की रोशनी को देख सकता था। वहां उसे अंधेरे में अकेले रहना अच्छा नहीं लग रहा था। कुछ डर भी लग रहा था। उसे दीवार पर निगाह रखने के लिए कहा गया था। मन को ढाढस देनेवाली वह रोशनी उसकी जगह से बहुत दूर मालूम होती थी। और उससे भी बुरी बात यह हुई कि कमबख्त चांद बादलों के पीछे छिप जाता था। रात के अंधेरे में उन झाड़ियों में जैसे अपनी एक अलग डरावनी जिन्दगी आ जाती हो। वह नौजवान सिपाही अपनी संगीन अपने चारों ओर के अंधेरे को भोंक रहा था। कुछ नहीं, कहीं कुछ नहीं।

"इन लोगों ने यहां मुझे क्यों खड़ा किया ? दीवार बहुत ऊंची है, उस पर कोई चढ़ तो सकता नहीं । मैं सोचता हूं कि खिड़की के पास जाकर अन्दर झांकूं ।" दीवार पर दुबारा निगाह दौड़ाते हुए वह अपने उस नम और अंधेरे और सड़ी-गली घास और काई की बदबू से भरे हुए कोने से बाहर आया। खिड़की के पास पहुंच कर उसने देखा कि उसी वक्त लित्के ने मेज पर से कागजात उठाये । उसी क्षण दीवार के उपर एक छायाकृति आयी । उस दीवार पर से खिड़की के पास का सन्तरी और कमरे में अन्दर का आदमी दोनों साफ दिखाई देते थे । बिल्ली जैसी फुर्ती से वह छायाकृति पेड़ की एक शाख पकड़कर झूली और नीचे जमीन पर कूद पड़ी । वह चुपके-चुपके पैर दबाकर अपने शिकार तक आई । एक वार हुआ और सन्तरी जमीन पर ढेर हो गया। जहाजियों वाली छुरी सन्तरी की गर्दन में पूरी मूठ तक भुंकी हुई थी ।

बागीचे में एक गोली की आवाज हुई जिससे इमारत के चारों ओर खड़े हुए लोगों में हरकत आ गयी । उनमें से छः लोग मकान की तरफ दौड़े । रात की निस्तब्धता में उनके पैरों की आवाज जोर से सुनाई दे रही थी । लित्के मुंह के बल मेज पर गिरा पड़ा था और उसके सिर के घाव से खून बह रहा था । वह मर चुका था । खिड़की के शीशे चकनाचूर हो गये थे । मगर कातिल को कागजात हथियाने का वक्त नहीं मिला था ।

मठ की दीवार की तरफ और कई गोलियों की आवाजें सुनाई दीं । खूनी सड़क की ओर की दीवार पर चढ़ गया था और अब लुकियानोव मैदान के रास्ते से भाग जाने की कोशिश कर रहा था । वह भागते-भागते गोली चलाता जा रहा था । मगर एक गोली ने आकर उसका काम तमाम कर दिया ।

रात भर तलाशियां चलती रहीं । सैकड़ों लोग जिनके नाम मकान कमिटियों की किताबों में दर्ज नहीं थे और जिनके पास संदिग्ध कागजात और हथियार पाये गये थे, उन्हें चेका में भेज दिया गया । वहां एक कमीशन संदिग्ध लोगों की छानबीन कर रहा था ।

यहां-वहां षडयंत्रकारियों ने मुकाबला करने की कोशिश की । जिलियान्स्काया स्ट्रीट के एक मकान की तलाशी लेते वक्त एन्टन लेबेदेव दो कदम नजदीक से छोड़ी गयी एक गोली से मारा गया ।

उस रात सोलोमेंका बटालियन के पांच आदमी मारे गये और चेका ने उस पक्के बोल्शेविक और जनतंत्र के वफादार पहरुए जान लित्के से हाथ धोया ।

मगर क्रान्ति-विरोधी ह्वाइट गार्ड विद्रोह को उभरने के पहले ही कुचल दिया गया ।

उसी रात फादर वासिली, उसकी लड़कियों और उनके गिरोह के दूसरे लोगों को शेपेतोवका में गिरफ्तार कर लिया गया ।

तनाव कम हो गया। मगर जल्द ही एक नया दुश्मन शहर के लिए खतरा बन गया। वह खतरा था रेलवे का बेकार हो जाना—मानो उसे लकवा मार गया हो। इसका मतलब यह था कि लोग भूख से और आनेवाले जाड़े में सर्दी से मरते।

अब सब कुछ गल्ले और ईंधन पर निर्भर था।

११ ग्यारह

फियोदोर ने मुंह से अपना छोटी डंडीवाला पाइप निकाला और कुछ सोचते हुए सतर्कता पूर्वक उंगली से उसकी राख को दबाया। पाइप बुझ चुका था।

एक दर्जन सिगरेटों से निकले हुए भूरे धुंए का एक घना बादल छत के नीचे और उस कुर्सी के ऊपर मंडरा रहा था, जिस पर प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष बैठे हुए थे। कमरे के कोनों में मेज के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगों के चेहरे, धुएं के उस कुहासे में धुंधले नजर आ रहे थे।

अध्यक्ष के बगल में तोकारेव आगे को झुका हुआ बैठा था। वह खीझा हुआ-सा अपनी छोटी दाढ़ी को बार-बार नोच रहा था और जब-तब आंख के कोने से उस नाटे गंजे आदमी को देख लेता था जो अपनी बुलन्द आवाज में बराबर बोलता चला जा रहा था जैसे उसकी बात का कोई अन्त ही न हो। मगर उसकी बात खाली अंडे की तरह बेमतलब और खोखली थी।

अकिम ने उस बूढ़े मजदूर की आंख के भाव को भांपा और उसे गांव में अपने बचपन के दिनों में देखे हुए उस मुरगे की याद हो आयी जिसकी आंखों में भी अपने दुश्मन पर हमला करने के पहले यही भाव होता था।

पार्टी की प्रादेशिक कमिटी की बैठक को एक घंटे से ज्यादा हो गया था। वह गंजा आदमी रेलवे की ईंधन कमिटी का अध्यक्ष था।

अपने सामने पड़े हुए कागजात के ढेर में अपनी सुबुक उंगलियां दौड़ाता हुआ गंजा आदमी बोलता चला जा रहा था :

"...ऐसी हालतों में प्रादेशिक कमिटी और रेलवे की प्रबंध समिति के फैसले को पूरा करना, साफ ही बिलकुल नामुमकिन है। मैं फिर अपनी बात को दुहराता हूं कि अब से एक महीने बाद भी हम चार सौ क्यूबिक मीटर से ज्यादा ईंधन नहीं दे सकेंगे। जहां तक दस लाख अस्सी हजार क्यूबिक मीटर

की मांग की बात है, वह तो सरासर..." वक्ता ठीक शब्द के लिए अटका, "सरासर...खयाली पुलाव है।" उसने अपनी बात खत्म की और उसका छोटा-सा मुंह कुछ इस भाव से लटक गया मानो उसे चोट लगी हो।

बड़ी देर तक खामोशी रही।

फियोदोर ने नाखून से अपने पाइप को खोदा और उसकी राख को गिरा दिया। आखिरकार तोकारेव ने खामोशी तोड़ी।

"फिजूल बकवास करने से कोई फायदा नहीं," उसने अपनी गूंजती हुई भारी आवाज में शुरू किया, "रेलवे की ईंधन कमिटी के पास ईंधन नहीं है, कभी नहीं था और आगे भी होने की उसे उम्मीद नहीं...ठीक?"

गंजे आदमी ने अपना कंधा उचकाया।

"माफ कीजिए कामरेड, हमने काफी ईंधन इकट्ठा किया था लेकिन यातायात के साधनों की कमी के कारण..." उसने अपना थूक निगला और अपनी चमकती हुई खोपड़ी को एक चारखाने रूमाल से पोंछा। उसने अपने रूमाल को जेब में डालने की कई बार बेकार कोशिश की और आखिरकार परेशान होकर और घबराकर उसे अपने पोर्टफोलियो के नीचे घुसा दिया।

"आखिर आपने ईंधन की सप्लाई के सिलसिले में क्या किया? उन बड़े-बड़े विशेषज्ञों को जिनका षड़यंत्र में कुछ हाथ था, गिरफ्तार हुए भी तो कई रोज हो गये," देनेको ने कोने की अपनी जगह से कहा।

वह गंजा आदमी उसकी ओर मुड़ा और बोला, "मैंने रेलवे के प्रबंधकर्ताओं को तीन बार लिखा कि जब तक हमें यातायात की उचित सुविधाएं नहीं मिलतीं, कुछ भी करना असंभव...।"

तोकारेव ने उसको बीच में ही टोका, "हम इस बात को कई बार सुन चुके हैं," उसने खुश्क आवाज में कहा और उस गंजे आदमी को शत्रुता की आंखों से देखा। "आप क्या हम लोगों को बिलकुल बेवकूफ समझते हैं?"

इन शब्दों को सुनकर तो जैसे गंजे आदमी की रीढ़ की हड्डी में एक सुरसुरी दौड़ गयी।

उसने धीमी आवाज में जवाब दिया, "क्रान्ति के दुश्मनों की हरकतों के लिए मैं जवाबदेही नहीं ले सकता।"

"मगर आपको पता था या नहीं कि लकड़ी रेलवे लाइन से बहुत दूर काटकर गिरायी जा रही है?"

"मैंने इस चीज के बारे में सुना था, मगर मैं अपने बड़े अफसरों का ध्यान ऐसी गड़बड़ियों की तरफ नहीं दिला सकता था, क्योंकि वे मेरे क्षेत्र से बाहर हो रही थीं।"

"इस काम के लिए तुम्हारे पास कितने आदमी हैं ?" ट्रेड यूनियन काउंसिल के अध्यक्ष ने पूछा।

"करीब दो सौ," गंजे आदमी ने जवाब दिया।

"इसका मतलब है, हर हरामखोर के पीछे एक साल में एक क्यूबिक मीटर !" तोकारेव ने सांप की तरह फुफकारते हुए कहा।

"रेलवे की ईंधन कमिटी को खास राशन दिया जाता है। उन्हें वह खाना दिया जाता है जो मजदूरों को मिलना चाहिए और जरा देखिए कि आप काम क्या कर रहे हैं ? वह दो गाड़ी आटा जो आपको मजदूरों के लिए मिला था, क्या हुआ उसका ?" ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

इसी तरह के तेज-तीखे सवाल हर तरफ से उस गंजे आदमी पर बरस रहे थे और वह उनका जवाब उसी घबराये हुए अन्दाज में दे रहा था, जिस अन्दाज में कि कर्ज में डूबा हुआ कोई आदमी तंग करने वाले लेनदारों से अपना पीछा छुड़ाने की कोशिश करता है। सीधा-सीदा जवाब देने से बचने के लिए वह अपने आपको बहुत तोड़-मरोड़ रहा था, मगर उसकी घबराई हुई आंखें इधर-उधर दौड़ रही थीं। [उसे खतरा दिखाई दे रहा था और उसकी कायर आत्मा में सिर्फ एक चीज की चाह थी : कैसे जल्द से जल्द यहां से भाग जाय और जाकर अपने आरामदेह घोंसले में मुंह छुपा ले और इतमीनान से खाना खाये और अपनी बीवी से, जो अब भी जवान थी और जो शायद इस वक्त पोल दी काक का उपन्यास लिए उसमें रम रही होगी, अपना जी बहलाये।

उस गंजे आदमी के जवाबों को ध्यान से सुनते हुए फियोदोर ने अपनी नोटबुक में जल्दी-जल्दी लिखा : "मैं समझता हूं कि इस आदमी की ठीक से जांच होनी चाहिए। यह सिर्फ अयोग्यता की बात नहीं है, बल्कि उससे कुछ ज्यादा गहरा मामला है। मुझे इसके बारे में एक दो बातें मालूम हैं...बहस को बन्द करो और इस आदमी को जाने दो ताकि हम लोग काम की बातें कर सकें।"

अध्यक्ष ने नोट पढ़ा और फियोदोर को देखकर सिर हिलाया।

जुखराई उठा और किसी से टेलीफोन पर बात करने के लिए गलियारे में निकल गया। वह लौटकर आया तो अध्यक्ष प्रस्ताव पढ़ रहे थे :

"...हम प्रस्ताव करते हैं कि रेलवे ईंधन कमिटी की प्रबंध समिति को, काम को जान-बूझ कर बिगाड़ने के जुर्म में, तोड़ दिया जाय और ईंधन के इस सारे मामले की छानबीन के लिए अधिकारियों के हाथ में दे दिया जाय।"

उस गंजे आदमी को इससे भी बड़ी सजा पाने का डर था। यह सही है कि तोड़-फोड़ के जुर्म में पद से अलग किये जाने का मतलब होगा कि समग्र रूप से उसकी विश्वसनीयता के बारे में भी सवाल उठेगा। मगर वह छोटी बात है। जहां तक उस बोयार्का वाले मामले की बात है, उसकी उसे कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि वह उसका कोई इलाका नहीं था। उसने अपने मन में कहा, "मगर बहुत बाल-बाल बचे ! मैंने तो समझा था कि उन्होंने सचमुच मेरे बारे में कोई बात खोद निकाली...।"

अब प्राय: आश्वस्त होकर उसने अपने कागजात को पोर्टफोलियो में रखते हुए कहा, "स्पष्ट ही मैं एक गैर-पार्टी विशेषज्ञ हूं और आप जितना चाहें मेरा अविश्वास कर सकते हैं। मगर मेरा अन्तःकरण साफ है। अगर मैं वह सब काम नहीं कर सका जो मुझे करना चाहिए था, तो इसकी वजह यही थी कि ऐसा करना नामुमकिन था।"

किसी ने कोई टिप्पणी नहीं की। वह गंजा आदमी कमरे से बाहर निकल गया, जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से नीचे उतरा और चैन की सांस लेते हुए उसने बाहर सड़क पर खुलनेवाला दरवाजा खोला।

"आपका शुभनाम, महाशय जी ?" फौजी कोट पहने एक आदमी ने उससे पूछा।

डूबते हुए दिल से उस गंजे आदमी ने हकलाते हुए जवाब दिया, "चेर...विन्स्की...।"

इस बाहरी आदमी के हटते ही ऊपर तेरह लोग बड़ी सी कान्फ्रेंस टेबिल पर एक-दूसरे के और करीब सरक आये।

जुखराई ने खुले हुए नक्शे पर उंगली गड़ाते हुए कहा, "देखो, यह बोयार्का स्टेशन है। यहां से पांच मील पर पेड़ गिराये जा रहे हैं। इस जगह पर बीस लाख दस हजार क्यूबिक मीटर लकड़ी का ढेर लगा है। एक पूरी फौज ने इस लकड़ी को जमा करने के लिए आठ महीने तक दिन-रात काम किया। और इस सबका नतीजा ? गद्दारी। रेलवे के लिए और शहर के लिए ईंधन नहीं है। इस तमाम लकड़ी को पांच मील दूर स्टेशन तक ढोने के लिए पांच हजार गाड़ियां लगेंगी और एक महीना लगेगा—वह भी तब जब वे दिन में दो बार खेपा लगायें। वहां से सबसे पास जो गांव है वह दस मील दूर है। और इतना ही नहीं, ओर्लिक और उसके गिरोह के लोग इसी इलाके में घूम रहे हैं। तुम समझते हो इसका क्या मतलब है ? देखो, योजना के अनुसार पेड़ गिराने की शुरुआत ठीक उस जगह से होनी चाहिए थी और वहां से फिर स्टेशन की तरफ बढ़ना चाहिए था और उन बदमाशों ने किया यह कि उलटी तरफ बढ़ते हुए वे लोग घने जंगल में उसे ले गये। ऐसा करने में उनका उद्देश्य

यही था कि हम लोग किसी तरह इस ईंधन को रेलवे लाइन तक ढोकर न ला सकें। और उनका खयाल कुछ गलत नहीं था। हमें इस काम के लिए एक सौ गाड़ियां भी न मिल सकीं। यह बड़ा कमीना वार उन्होंने हमारे ऊपर किया है। उनकी बगावत भी इससे ज्यादा खतरनाक नहीं थी।"

जुखराई की बन्द मुट्ठी जोर से नक्शे के ट्रेसिंग पेपर पर गिरी। उन तेरहों लोगों ने परिस्थिति के उन और भी भयानक पहलुओं को समझ लिया जिनका उल्लेख जुखराई ने नहीं किया था। जाड़ा आ रहा था। उन्होंने अपनी मन की आंखों से अस्पतालों, स्कूलों, दफ्तरों और लाखों लोगों को जाड़े-पाले की सर्द गिरफ्त में पड़ते हुए देखा। उनकी आंखों के आगे नाच गया कि कैसे रेलवे स्टेशनों पर भीड़ लगी है और इस तमाम भीड़ को ले जाने के लिए हफ्ते में सिर्फ एक गाड़ी है।

हर आदमी इस गंभीर परिस्थिति पर विचार कर रहा था और कमरे में गहरी खामोशी थी।

आखिरकार फियोदोर ने अपनी मुट्ठी ढीली की और कहा :

"साथियो, बचत की अब सिर्फ एक राह है। हमें तीन महीने के अन्दर-अन्दर स्टेशन से जंगल तक, जहां लकड़ी कटी पड़ी है, पांच मील लम्बी छोटी रेलवे लाइन बनानी है। जहां वह इलाका शुरू होता है, वहां तक पहुंचने के लिए रेलवे लाइन का पहला हिस्सा छ: हफ्ते के अन्दर तैयार हो जाना चाहिए। मैं पिछले एक हफ्ते से इस चीज के बारे में सोच रहा हूं और ताल-मेल बैठा रहा हूं।" जुखराई का गला सूख रहा था और उसकी आवाज भर्रा रही थी, "इसके लिए हमें तीन सौ पचास मजदूरों और दो इंजीनियरों की जरूरत होगी। पुश्चावोदित्सा में काफी पटरियां और सात इंजन हैं। कोमसोमोलों ने मालगोदामों में से उन्हें ढूंढ़ निकाला है। लड़ाई से पहले पुश्चावोदित्सा से शहर तक छोटी रेलवे लाइन बिछाने की योजना थी। मुश्किल यह है कि बोयार्का में मजदूरों के रहने के लिए जगह नहीं है, वह जगह बिलकुल खंडहर हो रही है। हमें हर बार पन्द्रह-पन्द्रह दिन के लिए छोटी-छोटी टोलियों में लोगों को भेजना होगा। उससे ज्यादा वे लोग वहां नहीं टिक सकेंगे। कोमसोमोलों को वहां भेजना ठीक होगा क्या, अकिम?" और जवाब का इंतजार किये बगैर उसने अपनी बात जारी रखी, "कोमसोमोल संगठन अपने ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को उस जगह पहुंचायेगा। शुरुआत सोलोमेंका के संगठन से होगी। और कुछ लोग शहर के भी रहेंगे। काम मुश्किल है, बहुत मुश्किल; लेकिन मैं समझता हूं कि अगर इन लड़कों को यह बतला दिया जाय कि दांव पर क्या चीज लगी हुई है और हालत कितनी संगीन है, तो यकीनी वे लोग इस काम को पूरा करेंगे।"

रेलवे के चीफ ने सन्देह से अपना सिर हिलाया।

"मैं समझता हूं यह कोशिश बेकार है। ऐसी हालत में जब कि पतझड़ की बारिश शुरू होनेवाली है और पाले के दिन आ रहे हैं, जंगल में पांच मील लम्बी रेलवे लाइन बिछाना..." उसने थके हुए स्वर में कहना शुरू किया। मगर ज़ुखराई ने उसकी बात बीच में ही काट दी।

"आन्द्रेई वासीलिएविच, आपको ईंधन के मसले पर और ज्यादा ध्यान देना चाहिए था। वह लाइन तो बनानी ही है, और हम लोग उसे बना कर रहेंगे। यह तो होगा नहीं कि हम लोग हाथ समेटे बैठे रहें और ठिठुर कर मर जायें। आप क्या यह चाहते हैं?"

रेलगाड़ी पर औजारों के आखिरी बक्से लाद दिये गये। रेलगाड़ी चलाने वाले अपनी-अपनी जगहों पर पहुंच गये। हल्की-सी बूंदाबांदी हो रही थी। पानी की छोटी-छोटी पारदर्शक बूंदे रिता के चमकते हुए चमड़े के जाकट पर फिसल रही थीं।

रिता ने बड़ी आजिजी से तोकारेव से हाथ मिलाया और धीमे से कहा, "हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।"

उस बुड्ढे ने अपनी घनी-घनी सफेद बरौनियों के नीचे से रिता को प्यार से देखा।

"हां, अच्छी-खासी मुसीबत में डाल दिया उन्होंने हमें, खुदा गारत करे उन लोगों को," उसने अपने ही विचारों का जवाब देते हुए भारी आवाज में कहा, "तुम लोग जो यहां पर हो, जरा खयाल रखना ताकि वहां पर अगर कोई अड़चन हो तो तुम लोग जहां जरूरत हो, दबाव डाल सको। यहां पर ये सब जो नकारे इकट्ठा हैं, बगैर नौकरशाही के कुछ कर-धर नहीं सकते। अच्छा बेटी, अब मैं चलूं।"

उस बुड्ढे आदमी ने अपनी जाकट के बटन लगाये। ठीक चलते वक्त उससे रिता ने यों ही पूछा, "कोर्चागिन नहीं जा रहा है क्या? मैंने इन लड़कों में उसको देखा नहीं।"

"नहीं, वह और जॉब-सुपरिटेंडेंट कल ही ट्राली से वहां चले गये, हम लोगों के आने की तैयारी करने के लिए।"

उसी वक्त जार्की, दुबावा और अपने कंधों पर लापरवाही से अपनी जाकट डाले और अपनी पतली-पतली उंगलियों में एक सिगरेट दबाये आना बोर्हार्ट प्लेटफार्म पर जल्दी-जल्दी उनकी तरफ आये।

औरों के आने से पहले रिता को तोकारेव से बस एक और सवाल करने का वक्त मिला।

"कोर्चागिन के साथ आपकी पढ़ाई कैसी चल रही है।"

बूढ़े ने आश्चर्य से रिता की ओर देखा।

"कैसी पढ़ाई ? वह लड़का तो तुम्हारी निगरानी में है न ? उसने मुझे तुम्हारे बारे में बहुत-सी बातें बतलाई हैं। तुमको तो वह न जाने क्या समझता है, तुम्हारी तारीफ के पुल बांधा करता है।"

रिता के चेहरे से सन्देह झलक रहा था, "कामरेड तोकारेव, क्या आप ठीक कह रहे हैं ? क्या वह मेरे साथ सबक लेने के बाद चीज को और सफाई से समझने के लिए आपके पास हमेशा नहीं जाया करता था ?"

बुड्ढा जोर से हंस पड़ा और बोला, "मेरे पास ? मुझसे समझने के लिए तो कभी उसकी परछांई भी नहीं आई।"

इंजन ने सीटी दी। क्लावीचेक एक डब्बे में से चिल्लाया :

"ओ कामरेड उर्स्तिनोविच, हमारे बुढ़ऊ को हमें वापस दे दो। उनके बिना हम लोग क्या करेंगे ?"

वह चेक नौजवान और भी कुछ कहनेवाला था। मगर बाद में आनेवाले उन तीन लोगों को देख कर रुक गया। क्षण भर को उसने आना की आंखों के चिन्तित भाव को देखा, फिर दिल मसोसकर दुबावा से अलग होते समय आना के चेहरे पर छायी मुस्कान को देखा और तेजी से खिड़की पर से हट गया।

पतझड़ की बारिश मुंह पर तमाचा-सा मार रही थी। सीसे के रंग के और नमी से भारी, झुके हुए बादल धीरे-धीरे उड़ते चले जा रहे थे। यह पत-झड़ का अन्त था और चांदी के रंग की पत्तियां तमाम झड़ गई थीं। और पुराने पेड़ ठठरियों की तरह और सिर झुकाये खड़े थे और उनके झुर्रीदार तने बादामी रंग की काई से ढंके हुए थे। निर्मम पतझड़ ने उनके भव्य परिधान लूट लिये थे और वे नंगे और दयनीय खड़े थे।

जंगल के बीचोबीच स्टेशन की छोटी-सी इमारत अकेली खड़ी थी। ताजी खोदी हुई मिट्टी की एक पट्टी माल लादने के प्लेटफार्म से जंगल तक चली गई थी। इस पट्टी के चारों तरफ चींटियों की तरह आदमियों के झुंड खड़े थे।

पैर के नीचे दबने पर मिट्टी का वह कीचड़ बहुत बुरा मालूम होता था। बांध के पास, जहां आदमी बेतहाशा मिट्टी खोदे जा रहे थे, फावड़ों और कुदालों की आवाज सुनाई दे रही थी।

बारिश जैसे किसी बड़ी बारीक चलनी में से होकर गिर रही थी और पानी की ठंडी बर्फीली बूंदें लोगों के कपड़ों में घुस रही थीं। इस बात का डर था कि बारिश उनकी मेहनत के सारे फलों को, उनके काम को बहा ले जायेगी, क्योंकि बांध पर की मिट्टी पानी में भीग कर धसकती जा रही थी।

काम करनेवाले ऊपर से नीचे तक पानी में भीगे हुए थे। उनके कपड़े इतने ठंडे थे कि सर्दी मालूम होती थी और इसी तरह वे लोग अंधेरा हो जाने के भी बहुत बाद तक काम करते रहते थे।

और इस तरह हर रोज खुदी हुई जमीन की यह पट्टी जंगल की तरफ बराबर बढ़ती जा रही थी।

स्टेशन के पास ही एक डरावना-सा कंकाल खड़ा था जो कभी ईंट की एक इमारत थी। हर चीज जो हटाई जा सकती थी, उखाड़ी जा सकती थी या गोले से उड़ाई जा सकती थी, उसे लुटेरे कभी के ले जा चुके थे। खिड़कियों और दरवाजों की जगह बड़े-बड़े सूराख थे और जहां कभी अंगीठी के दरवाजे थे, वहां अब काले दाग थे। टूटे-फूटे छप्पर के सूराखों के बीच से छप्पर में लगी हुई शहतीरें कंकाल की पसलियां जैसी नजर आती थीं।

सिर्फ चार बड़े कमरों का सीमेंट का फर्श अभी तक साबुत था। रात को चार सौ आदमी अपने गीले और कीचड़ में लिथड़े हुए कपड़े पहने इसी फर्श पर सोते थे। अपने कपड़ों को जब वे दरवाजे पर गारते तो उसमें से कीचड़ मिला पानी निकलता। और वे लोग बारिश और दलदली मिट्टी पर हजार लानतें भेजते। वे लोग सीमेंट की फर्श पर, जिस पर पुआल की एक पतली सी चादर भर बिछी हुई थी, एक-दूसरे से सटे हुए कई कतारों में सोते थे, सटे हुए ताकि उन्हें उतनी ठंड न मालूम हो। उनके कपड़ों से भाप उठती थी मगर कपड़े सूखते न थे। खिड़की के नंगे चौखटों पर बोरे कील से जड़ दिये गये थे। उन बोरों में से होकर बारिश का पानी अन्दर आता था और फर्श पर टपकता था। छप्पर में लोहे के जो बचे-खुचे टुकड़े थे, उन पर बारिश का पानी गिरता था तो जोरों से तड़तड़ की आवाज होती थी और दरवाजे की बड़ी-बड़ी दरारों में से अन्दर आती हुई हवा सांय-सांय करती थी।

सबेरे उन्होंने उस खंडहर बारक में, जो रसोईघर का काम देती थी, चाय पी और काम पर चले गये। रात के खाने में रोज-रोज वही उबली हुई मसूर खाते-खाते उनकी तबीयत उकता गई थी। उसके अलावा उन्हें कोयले की तरह काली तीन पाव रोटियां भी मिलती थीं।

इससे ज्यादा देने की सामर्थ्य शहर में न थी।

जॉब-सुपरिटेंडेंट वालेरियन निकोदिमोविच पतोश्किन, जो एक लम्बा, दुबला-पतला बूढ़ा आदमी था और जिसके मुंह पर दो गहरी रेखाएं थीं, और

टेकनीशियन वाकुलेंको, जो एक दोहरे बदन का, गंवार से चेहरे का और भद्दी मोटी नाक का आदमी था—ये दोनों स्टेशन मास्टर के घर पर रहते थे।

तोकारेव स्टेशन के चेका में काम करनेवाले खोलिआवा की कोठरी में रहता था। खोलिआवा नाटा सा तेज-मिजाज आदमी था।

ये लोग बड़ी हिम्मत, सब्र और धीरज से तमाम कठिनाइयां झेल रहे थे और रेल का बांध हर रोज जंगल की तरफ बढ़ता जा रहा था।

यह सच है कि कुछ लोग भाग भी गये थे : पहले नौ लोग और उसके कुछ रोज बाद और पांच लोग।

पहली बड़ी दुर्घटना काम शुरू होने के एक हफ्ते बाद हुई जब कि रात की गाड़ी से रोटी की सप्लाई नहीं आई।

दुबावा ने तोकारेव को जगाया और उसे यह खबर दी। पार्टी ग्रुप के मंत्री ने बिस्तर पर बैठे-बैठे अपनी घने बालों वाली टांगें झुलाईं और बगल को जोर-जोर से खुजलाने लगा।

"तमाशा अब शुरू हो रहा है!" उसने भारी आवाज में कहा और जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा।

खोलिआवा अपनी छोटी-छोटी टांगें लिए लुढ़कता हुआ अन्दर आया।

"जरा टेलीफोन पर जाकर स्पेशल डिपार्टमेंट को तो बुला लो," तोकारेव ने उसको आदेश दिया और दुबावा की तरफ मुड़ते हुए उससे कहा, "और देखो किसी से इस चीज के बारे में एक लफ्ज मत कहना।"

रेलवे के टेलीफोन ऑपरेटरों के साथ पूरा एक घंटा झगड़ा करने के बाद कहीं जाकर अदम्य खोलिआवा को स्पेशल डिपार्टमेंट का उप-प्रधान जुखराई फोन पर मिला और इस बीच पूरे वक्त तोकारेव पास ही खड़ा बेचैनी से छटपटाता रहा।

"क्या कहा! रोटी नहीं पहुंची? मैं अभी पता लगाता हूं कि उसके लिए कौन जिम्मेदार है!" जुखराई की आवाज टेलीफोन पर सुनाई दी और उस आवाज में एक गंभीर गूंज थी।

"हम अपने आदमियों को कल खाने को क्या देंगे?" तोकारेव ने गुस्से से चिल्लाकर कहा।

इसके बाद बड़ी देर तक खामोशी रही। स्पष्ट ही जुखराई कोई तदबीर सोच रहा था।

आखिरकार उसने कहा, "तुम्हें आज रात को ही रोटी मिलेगी। मैं लित्के को गाड़ी के साथ भेजूंगा। उसे रास्ता मालूम है। सबेरे तक तुम्हें रोटी जरूर मिल जायगी।"

बड़े सबेरे कीचड़ में सनी हुई एक मोटर रोटी के बोरों से लदी हुई स्टेशन पर आई। लित्के थका हुआ मोटर में से बाहर निकला। रात भर मोटर चलाने के कारण नींद और थकान से लित्के का चेहरा खड़िये जैसा हो रहा था।

रेलवे लाइन पर काम करना, बराबर बढ़ती जा रही कठिनाइयों के खिलाफ एक अविराम संघर्ष था। रेलवे के प्रबंधकों ने कहा कि उनके पास रेल के स्लीपर नहीं हैं। शहर के अधिकारियों के पास कोई जरिया नहीं था कि वे रेल की पटरियों और इंजनों को वहां पर ले जा सकते, जहां पर काम लगा हुआ था। और बाद को मालूम हुआ कि खुद इंजनों को भी काफी मरम्मत की जरूरत है। पहली टोली की जगह लेने के लिए नये मजदूर नहीं आ रहे थे और पहली टोली ने अपने हिस्से का काम कर लिया था और अब वे इतनी बुरी तरह थक चुके थे कि उनको और रोक रखने का सवाल ही पैदा नहीं होता था।

इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए पार्टी के पुराने और आगे बढ़े हुए मेम्बर उस खंडहर शेड में मिले, जिसमें बस तेल की ढिबरी का मद्धिम प्रकाश था।

उसके अगले दिन सवेरे तोकारेव, दुबावा और क्लावीचेक शहर गये। इंजनों की मरम्मत और रेल की पटरियां लाने के काम को तेज करने की गरज से वे छः आदमियों को अपने साथ लेते गये। क्लावीचेक को, यों जिसका पेशा केक-बिस्कुट बनाना था, इंस्पेक्टर बनाकर सप्लाई विभाग में भेजा गया और बाकी लोग पुश्चावोदित्सा चले गये।

उधर उस जगह, जहां काम लगा हुआ था, बारिश थमने का नाम ही न लेती थी।

पावेल कोर्चागिन ने जोर लगाकर चिपचिपे कीचड़ में से अपना पैर खींच कर निकाला। उसे अपने पैरों में जोर से सर्दी मालूम हुई जिससे उसने समझा कि उसके जूते का घिसा हुआ तल्ला आखिरकार अलग हो ही गया। जबसे पावेल यहां काम पर आया था, उसे अपने फटे जूतों के कारण सख्त तकलीफ होती थी। वे कभी सूखे न रहते और उनमें कीचड़ भर जाती और वह चलता तो कीचड़ पिच्च-पिच्च करती। अब एक तला बिलकुल चला गया था और बर्फ की तरह ठंडा कीचड़ उसके नंगे पैरों को जैसे छुरी से काटता जान पड़ता। पावेल ने तल्ले को कीचड़ में से निकाला और बहुत मायूसी से उसको देखा और अपनी कसम को भूलकर उसने मुंह से उसके लिए गाली भी निकाली। अब उसका एक पैर बिलकुल नंगा था और इस तरह वह कैसे काम कर सकता

था। लिहाजा वह भचकता हुआ बारक में आया, रसोईघर के पास बैठ गया, पैर में लिपटा हुआ कीचड़ से सना कपड़ा अलग किया और सर्दी से सुन्न अपने पैरों को सेंकने के लिए आग की तरफ बढ़ाया।

लाइनमैन की बीवी, जो रसोइये के सहायक के रूप में काम करती थी और जिसका नाम ओदार्का था, रसोईघर की मेज पर चुकन्दर काटने में मशगूल थी। यह अच्छे डीलडौल की औरत थी। अभी जवानी उससे रुखसत नहीं हुई थी। उसके कंधे बहुत चौड़े, करीब-करीब मर्दों जैसे थे, वक्ष भरा-पूरा था, और नितम्ब चौड़े और भारी थे। वह बड़े जोश से छुरी चला रही थी और उसकी फुर्तीली उंगलियों तले कटी हुई सब्जियों का एक पहाड़ तेजी से ऊंचा होता जा रहा था।

ओदार्का ने लापरवाही से पावेल को देखा और डपट कर बोली :

"अगर खाने की तलाश में तुम यहां मंडरा रहे हो, तो मैं तुम्हें बतला दूं कि अभी देर है। समझे ? काम छोड़कर इस तरह भागे चले आ रहे हो, तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए ! अंगीठी से अपने पैर हटा लो। यह रसोईघर है, कोई नहानघर तो है नहीं !"

उसी वक्त रसोइया अन्दर आया।

"मेरा यह जूता चिथड़े-चिथड़े हो गया है," पावेल ने रसोईघर में अपनी उस असमय उपस्थिति की सफाई देते हुए कहा।

अधेड़ रसोइये ने पावेल के टूटे हुए जूते को देखा और ओदार्का की तरफ सिर हिलाकर इशारा करते हुए बोला, "इसका आदमी, मुमकिन है, तुम्हारे जूतों की मरम्मत कर सके, उसे मोची का काम थोड़ा-बहुत आता है। इसका इन्तजाम करो वरना परेशानी में पड़ोगे—जूतों के बगैर तुम्हारा काम चलने से रहा।"

ओदार्का ने यह सुना तो दुबारा पावेल को देखा और तब उसने महसूस किया कि पावेल के बारे में फैसला करने में उसने जल्दबाजी की थी।

उसने अपनी गलती मानते हुए कहा, "मैंने तुम्हें कोई आवारा समझा था।"

पावेल मुस्कराया, जैसे यह कह रहा हो कि कोई बात नहीं, मुझे बुरा नहीं लगा। ओदार्का ने विशेषज्ञ की आंखों से जूते का मुआइना किया और फिर बोली, "इसमें थेगड़े लगाने की कोशिश बेकार है। मगर मैं एक बात कर सकती हूं। हमारे यहां घर पर एक पुराना बरसाती बूट पड़ा हुआ है, मैं उसे लाकर तुम्हें दे सकती हूं और तुम उसे अपने जूतों के ऊपर से पहन लेना। तुम्हारे पैर तो कम से कम बचे रहेंगे। इस तरह तुम थोड़े ही घूम सकते

हो, मर जाओगे ! अब पाला पड़ना शुरू होने ही वाला है, जिस दिन भी शुरू हो जाय !"

और ओदार्का ने, जिसके मन में पावेल के लिए अब सहानुभूति ही सहानुभूति थी, अपनी छुरी रख दी और तेजी से बाहर निकल गई और थोड़ी ही देर बाद एक बड़ा सा बरसाती बूट और मजबूत कपड़े की एक पट्टी लेकर लौट आई ।

पावेल के पैर अब सूखे हुए और गर्म थे। उसने उस मोटे कपड़े को अपने पांवों में लपेटते और पांवों को बरसाती बूट में डालते हुए ओदार्का को कृतज्ञ भाव से देखा।

तोकारेव गुस्से से उबलता हुआ शहर से लौटा। उसने आगे बढ़े हुए कम्युनिस्टों की एक मीटिंग खोलिआवा की कोठरी में बुलाई और उन्हें यह बुरी खबर सुनाई। वह बोला :

"यहां से वहां तक अड़चनें ही अड़चनें हैं। जहां भी जाओ, पहिये घूमते तो नजर आते हैं मगर पहुंचते कहीं नहीं। तमाम क्रान्ति के दुश्मन ह्वाइट लोग ही यहां से वहां तक भरे हुए हैं और लगता है कि हमारी जिन्दगी में तो उनका खातमा होगा नहीं। मैं तुमको बतलाता हूं लड़को कि लक्षण अच्छे नहीं हैं। अभी तक हमारी जगह लेने वाले लोग कहीं नजर नहीं आते और यह भी पता नहीं कि आयेंगे भी तो कितने आयेंगे। पाला गिरना शुरू होने ही वाला है और उसके पहले चाहे जैसे हो, हमें दलदल के पार हो जाना है क्योंकि जमीन जब बर्फ से जम जायगी तो फिर कुछ करते-धरते न बनेगा। लिहाजा जब तक कि वे लोग वहां गड़बड़ पैदा करने वालों की अक्ल ठीक कर रहे हैं, तब तक हमको यहां अपने काम की रफ्तार दुगनी कर देनी चाहिए। वह लाइन हमें बनानी ही है और उसे हम बनाकर रहेंगे चाहे हम मर ही क्यों न जायें। अगर हम ऐसा नहीं कर सकते तो हम बोल्शेविक नहीं, मिट्टी के लोंदे होंगे।" तोकारेव की फटी हुई भारी आवाज में इस्पात की सी गूंज थी और उसकी घनी बरौनियों के नीचे उसकी आंखें पक्के निश्चय से चमक रही थीं।

"आज हम लोग एक बन्द मीटिंग करेंगे और यह खबर अपने पार्टी मेम्बरों को दे देंगे और कल से हम सब काम पर जुट जायेंगे। सवेरे हम लोग गैर-पार्टी लोगों को छुट्टी दे देंगे। वे लोग चले जायेंगे और हम लोग रह जायेंगे। यह देखो प्रादेशिक कमिटी का फैसला है," कहते हुए तोकारेव ने चार परत किया हुआ एक कागज पांक्रातोव के हाथ में दिया। कंधे के ऊपर से उस कागज को देखते हुए पावेल कोर्चागिन ने पढ़ा :

"परिस्थिति की गंभीरता को देखते हुए कोमसोमोल के सारे सदस्य अपने काम पर जमे रहेंगे और उन्हें तब तक छुट्टी नहीं मिलेगी जब तक कि ईंधन का पहला चलान आ नहीं जाता। दस्तखत : रिता उस्तिनोविच, प्रादेशिक कमिटी के मंत्री की ओर से।"

रसोई की बारक में भीड़ लगी हुई थी। उस छोटी सी तंग जगह में एक सौ बीस आदमी संकसे हुए खड़े थे। उनमें से कुछ दीवार का सहारा लिए हुए खड़े थे, कुछ मेजों पर चढ़ कर बैठ गये थे और कुछ तो रसोई के ऊपर तक जाकर बैठ गये थे।

पांक्रातोव ने मीटिंग की कार्रवाई शुरू की। तब तोकारेव ने एक छोटी सी तकरीर की और इस ऐलान के साथ अपनी बात खतम की, जिसका असर सुनने वालों पर बम के गिरने जैसा हुआ :

"कम्युनिस्ट और कोमसोमोल कल काम नहीं छोड़ेंगे।"

बूढ़े ने अपनी बात के साथ-साथ मुख की एक ऐसी भंगिमा भी बनाई जिसका मतलब था कि यह फैसला अन्तिम है और इसमें कोई रद्दोबदल मुमकिन नहीं है। इस चीज ने शहर लौटने की उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिय—शहर लौटने की, अपने घर जाने की, इस मनहूस जगह से भाग जाने की।

क्रुद्ध आवाजों का एक शोर उठा जिसमें थोड़ी देर के लिए सभी कुछ डूब गया। लोगों के हिलते हुए शरीर से ढिबरी की बत्ती कांप-कांप जाती थी। उस अर्द्ध-अंधकार में शोर-गुल बढ़ता जा रहा था। वे लोग अपने घर लौटना चाहते थे। वे बहुत क्षोभ के साथ कह रहे थे कि अब हमको यहां पर रोकने की बात क्यों की जा रही है, हम जितना कर सकते थे, हमने किया। कुछ ने खामोशी से इस खबर को सुन लिया। और सिर्फ एक आदमी ने काम छोड़ कर भाग जाने की बात कही।

मुंह से गालियां निकालते हुए एक आदमी अपने कोने में से जोर से चिल्लाया, "जहन्नुम में जाय यह काम! मैं तो अब यहां एक दिन भी नहीं ठहर सकता। हां कोई जुर्म किया हो तो आप कड़ी मशक्कत की सजा दीजिए। मगर हमने कौन सा जुर्म किया है? अब और ठहरना बेवकूफी होगी। हमने दो हफ्ते तक काम किया और वह काफी है। अब उन लोगों से कहिए जिन्होंने यह फैसला किया है कि वे अपने कमरों से निकल कर खुद यहां आयें और काम करें। हो सकता है कि कुछ लोगों को इस गन्दगी और इस कीचड़ में ही मजा आता हो। मगर भाई मेरे पास तो जीने के लिए सिर्फ एक जिन्दगी है, मैं कल जा रहा हूं।"

ओकुनेव के पीछे से आवाज आ रही थी और उसने यह देखने के लिए कि वह कौन है, दियासलाई जलाई। दियासलाई की रोशनी ने एक क्षण के लिए बोलने वाले के गुस्से से विकृत चेहरे और खुले हुए मुंह को चमका दिया। मगर उस एक क्षण में ही ओकुनेव ने प्रादेशिक खाद्य कमिसारियट के एक क्लर्क के उस बेटे को पहचान लिया।

वह बनैले सुअर की तरह बिफरते हुए बोला, "पता लगा रहे हो कि कौन है, क्यों? उंह, मुझे कोई डर नहीं, मैंने क्या कोई चोरी की है।"

दियासलाई बुझ गई। पांक्रातोव उठा और अच्छी तरह तनते हुए बोला :

"यह किस किस्म की बात है? कौन है जो पार्टी के काम की तुलना जेल की कड़ी मशक्कत से कर रहा है?" उसने गरजते हुए और सामने की कतार में बैठे लोगों पर अपनी कठोर दृष्टि डालते हुए कहा, "नहीं साथियो, हम शहर नहीं जा सकते, हमारी जगह यहीं है। अगर हम लोग दुम दबा कर यहां से चले जाते हैं, तो हमारे भाई ठिठुर कर मर जायेंगे। जितनी ही जल्दी हम अपना काम खतम कर लें उतनी ही जल्दी हम अपने घर पहुंच सकते हैं। वहां वह पीछे बैठा हुआ झींखने वाला जिस तरह भाग जाने की बात कर रहा है, वह चीज हमारे विचारों या हमारे अनुशासन से कतई मेल नहीं खाती।"

पांक्रातोव जहाज पर काम करने वाला आदमी था। उसे लम्बी-लम्बी तकरीर करना अच्छा नहीं लगता था। मगर उसकी इस छोटी सी तकरीर को भी उसी तैश खाई हुई आवाज ने बीच में टोका।

"गैर-पार्टी लोग तो जा रहे हैं न?"

"हां।"

छोटा सा ओवरकोट पहने एक लड़का कुहनियों से रास्ता बनाता हुआ सामने आया। कोमसोमोल की सदस्यता का एक कार्ड चमगादड़ की तरह उड़ता हुआ जाकर पांक्रातोव के सीने से टकराया, मेज पर गिरा और सीधा खड़ा हो गया।

"यह रहा, अपना कार्ड रख लीजिए। मैं दफ्ती के इस टुकड़े के लिए अपनी तन्दुरुस्ती खतरे में नहीं डाल सकता!"

उसके आखरी शब्द क्रुद्ध स्वरों के गर्जन में डूब गये :

"कुछ खबर है क्या चीज तुम फेंक रहे हो!"

"गद्दार, दोगला!"

"कोमसोमोल में यह समझ कर आया था कि यहां पेड़े बंटते हैं।"

"उठा के फेंक दो बाहर साले को!"

"जरा मुझे तो पहुंचने दो इस गीदड़ के पास!"

वह भगोड़ा, सिर झुकाये, दरवाजे की तरफ बढ़ा। उन्होंने उसे निकल जाने दिया और जैसे उससे अपना दामन बचा रहे हों, गोया वह कोढ़ी हो। उसके बाहर निकलने पर दरवाजा चूं करके बन्द हो गया।

पांक्रातोव ने फेंके हुए मेम्बरी के कार्ड को उठाया और ढिबरी की बत्ती से लगा दिया।

दफ्तरी ने आग पकड़ ली और ऐंठ-ऐंठ कर जलने लगी।

जंगल में एक गोली की गूंज सुनाई दी। एक घुड़सवार उस खंडहर बारक से मुड़ा और जंगल के अंधेरे में घुस गया। क्षण भर बाद लोग बारक और स्कूल की इमारत में से दौड़ते हुए बाहर आये। किसी ने दरवाजे की कीवाड़ पर टंगा हुआ प्लाइवुड का एक टुकड़ा देखा। एक दियासलाई जली और उसकी कांपती हुई लौ को हवा से बचाते हुए उन्होंने घसीट कर लिखी हुई उस इबारत को पढ़ा : "यहां से चले जाओ और जहां से आये हो वहीं लौट जाओ। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो हम तुम्हारे एक-एक आदमी को गोली से उड़ा देंगे। भागने के लिए मैं तुम्हें कल रात तक का वक्त देता हूं। एटमन चेस्नोक।"

चेस्नोक ओर्लिक के गिरोह का आदमी था।

रिता के कमरे में मेज पर एक खुली हुई डायरी पड़ी थी।

"२ दिसम्बर

"आज सवेरे यहां पर पहली बार बर्फ गिरी। पाला बहुत तेजी से गिर रहा है। सीढ़ी पर मेरी मुलाकात व्याचेस्लाव ओलशिन्स्की से हुई और फिर हम लोग साथ-साथ सड़क पर घूमे।

"ओलशिन्स्की ने कहा, 'पहली बार जब बर्फ गिरती है तो मुझे हमेशा बहुत अच्छा मालूम होता है, खास कर जब ऐसा पाला भी पड़ रहा हो।'

"मगर मैं बोयार्का की बात सोच रही थी और मैंने उससे कहा कि बर्फ और पाले से मुझे रत्ती भर खुशी नहीं होती, बल्कि उल्टे मेरी तो तबियत और भी बुझ जाती है। और मैंने इसका कारण भी उसे बतलाया।

"उसने कहा कि 'यह तो एक निरी वैयक्तिक प्रतिक्रिया है। अगर इसको तर्क का आधार बनाकर चला जायगा, तब तो लड़ाई के जमाने में हर तरह के आमोद-प्रमोद या खुशी की किसी भी अभिव्यक्ति को रोक देना पड़ेगा। मगर जिन्दगी का तो यह नियम नहीं है। विषाद तो मोर्चे की उस पट्टी तक सीमित है जहां पर लड़ाई लड़ी जा रही है। वहां जिन्दगी पर मौत की

निकटता की छाया रहती है। मगर वहां के लोग भी हंसते हैं। और मोर्चे से अलग तो जिन्दगी हस्बे-मामूल चलती रहती है : लोग हंसते हैं, रोते हैं, तकलीफ उठाते हैं, खुशी मनाते हैं, प्यार करते हैं और मनोरंजन और हलचल की खोज में रहते हैं।'

"ओलशिन्स्का के शब्दों में व्यंग्य की कोई छाया न थी। ओलशिन्स्की जन-कमिसारियट के वैदेशिक विभाग का प्रतिनिधि है। वह १९१७ से पार्टी में है। वह अच्छे कपड़े पहनता है। उसकी दाढ़ी हमेशा साफ-चिकनी बनी रहती है और एक हलकी सी खुशबू भी उसके इर्द-गिर्द लिपटी रहती है। वह सेगल वाले हिस्से में हमारे ही घर में रहता है। कभी-कभी वह मुझसे मिलने के लिए शाम को चला आता है। उससे बात करना बड़ा अच्छा मालूम होता है। उसे योरप के बारे में बहुत बातें मालूम हैं, वह कई साल पैरिस में रहा है। मगर मुझे सन्देह है कि कभी उसकी और मेरी बहुत अच्छी दोस्ती हो सकती है। और वह इसलिए कि उसके लिए सबसे पहले मैं एक नारी हूं। मैं उसकी पार्टी कामरेड हूं, यह चीज उसके लिए गौण है। यह सही है कि इस मामले में वह अपने विचारों और भावनाओं को छिपाने की कोई कोशिश नहीं करता। उसमें खुल कर अपनी बात कहने का साहस है और मेरे साथ उसके बर्ताव में कोई भद्दी बात नहीं है। यह ठीक है कि वह मेरे प्रति प्रेम दिखाता है, मगर उस चीज को भी वह एक खूबसूरती से भर देता है। मगर तब भी मैं उसको पसन्द नहीं करती।

"जुखराई की सादगी और रूखापन मुझे ओलशिन्स्की के तमाम मंजे और निखरे योरोपियन तौर-तरीकों से ज्यादा भाता है।

"बोयार्का से खबर छोटी-छोटी रिपोर्टों की शक्ल में मिलती है, इस शक्ल में कि आज हमने कितनी पटरियां बिछाईं। वे जमी हुई धरती पर, स्लीपरों के लिए क्यारियां खोद-खोद कर उन्हीं में स्लीपरों को बिछाते जा रहे हैं। इस काम पर सिर्फ ढाई सौ आदमी हैं। पहले के काम करने वालों की जगह लेने के लिए जितने लोग गये, उनमें से आधे लोग भाग गये। वहां की हालत सचमुच बहुत ही भयानक है। मैं समझ नहीं पाती कि कैसे इस पाले में वे लोग अपना काम जारी रखते हैं। दुबावा को गये एक हफ्ता हो गया। वे पुश्चावोदित्सा के आठ इंजनों में से कुल पांच की ही मरम्मत कर पाये। बाकी के लिए उनके पास पार्ट नहीं थे।

"ट्रामकार के अधिकारियों ने दिमित्री के खिलाफ बहुत से अभियोग लगाये हैं। उसने और उसकी ब्रिगेड के लोगों ने ट्राम के खुले हुए मालगाड़ी के डब्बों को, जो पुश्चावोदित्सा से शहर आते हैं, बीच में रोक लिया, मुसा-फिरों को उतार दिया और उन डब्बों में बोयार्का के लिए रेल की पटरियां

लाद दीं। ट्राम गाड़ियों पर वे उन्नीस गाड़ी रेल की पटरियां लाद कर शहर के स्टेशन में ले आये। ट्राम चलाने वालों ने बड़ी खुशी से उनकी मदद की।

"सोलोमेंका के कोमसोमोलों ने, जो अब भी शहर में हैं, रात भर रेल की पटरियों को डब्बों में लादने का काम किया और दमित्री तथा उसकी ब्रिगेड के लोग उनको लेकर बोयार्का चले गये।

"अकिम ने दुबावा के काम को कोमसोमोल ब्यूरो के सामने आने देने से इनकार किया। दिमित्री ने हमको बतलाया कि ट्रामकार की व्यवस्था में नौकर-शाहियत और फिजूल का लाल फीता बहुत बुरी तरह घुसा हुआ है। उन्होंने इस काम के लिए दो डब्बे से ज्यादा देने से साफ इनकार कर दिया है।

"मगर तो भी तुफ्ता ने दुबावा को अलग ले जाकर उसे डांटा। उसने कहा, 'इन पुराने छापेमारों के हथकंडों को अब छोड़ दो नहीं तो देखते-देखते जेल पहुंच जाओगे। हथियारों का सहारा लिए बिना भी तो तुम किसी समझौते पर पहुंच सकते थे?'

"मैंने इसके पहले कभी दुबावा को ऐसे क्रोध में नहीं देखा था।

"उसने बिफर कर चिल्लाते हुए कहा, 'तुम खुद उससे बात करने की कोशिश क्यों नहीं करते, या बस रिपोर्ट लिखने के लिए हो? यहां बैठे-बैठे कुर्सी तोड़ते रहते हो और केवल जबान हिलाना जानते हो। मैं भला कैसे बिना उन पटरियों को लिए बोयार्का जा सकता था? तुम यहीं पर बने रहते हो और सबको हैरान करते रहते हो। चाहिए तो यह कि तुमको भी वहां भेज दिया जाय ताकि तुम भी कुछ उपयोगी काम करो। तोकारेव तुम्हारी अक्ल ठीक कर देंगे।' दिमित्री इतने जोर-जोर से बोल रहा था कि घर भर में उसकी आवाज गूंज रही थी।

"तुफ्ता ने दुबावा के खिलाफ एक शिकायत लिखी। मगर अकिम ने मुझसे कहा कि मैं कमरे के बाहर चली जाऊं और उसने करीब दस मिनट अकेले में उससे बात की। मगर उसके बाद तुफ्ता गुस्से से लाल होता हुआ कमरे से बाहर आ गया।"

"३ दिसम्बर

"सूबा कमिटी को एक और शिकायत मिली है, इस बार ट्रांसपोर्ट चेका की ओर से। उससे मालूम हुआ कि पांक्रातोव, ओकुनेव और दूसरे कई साथी मोतोविलोव्का स्टेशन गये और वहां की खाली इमारतों के सारे दरवाजे और खिड़कियां निकाल लीं। जब वे इन सब चीजों को मालगाड़ी पर लाद रहे थे, तो स्टेशन पर के चेका के आदमी ने उन्हें पकड़ने की कोशिश की। उन्होंने उस आदमी का हथियार छीन लिया, उसकी रिवाल्वर खाली कर दी और

गाड़ी जब चलने लगी तभी उसका रिवाल्वर उसे वापस किया। खिड़कियों और दरवाजे लेकर वे चले ही गये।

"तोकारेव पर रेलवे के सप्लाई विभाग ने अभियोग लगाया है कि उसने बोयार्का के रेलवे स्टाक से नौ मन कीलें ले ली हैं। यह कीलें उसने किसानों को स्लीपर की शहतीरें ढोकर लाने की मेहनत के एवज में दे दी हैं।

"इन सब शिकायतों के बारे में मैंने कामरेड जुखराई से बात की। मगर वे तो बस हंस दिये। उन्होंने कहा, 'करेंगे', हम इसकी भी फिक्र करेंगे।"

"रेलवे के इस काम की हालत वाकई बहुत संगीन है और अब तो हर दिन अनमोल है। हमें छोटी-से-छोटी चीजों के लिए यहां पर जोर लगाना पड़ता है। जब देखो तब हमें काम में बाधा डालनेवालों को सूबा कमिटी के सामने खड़ा करना पड़ता है और वहां जो लड़के काम कर रहे हैं, वे बराबर नियम-कानूनों को ज्यादा से ज्यादा तोड़ते चले जा रहे हैं।

"ओलशिन्स्की ने मुझे बिजली की एक अंगीठी ला कर दी है। ओल्गा यूरेनेवा और मैं उस पर हाथ सेंकती हूं, मगर कमरा उससे कुछ खास गरम नहीं होता। मैं हैरान होकर सोचती हूं कि जंगल में इस भयानक ठंडी रात का सामना वे लोग कैसे करते होंगे? ओल्गा मुझको बतलाती है कि अस्पताल में इतनी ठंडक रहती है कि मरीज अपने कम्बलों में लिपटे-लिपटे कांपते रहते हैं, उस जगह को दो दिन में सिर्फ एक बार गर्माया जाता है।

"नहीं कामरेड ओलशिन्स्की, मोर्चे पर के लोगों का दर्द मोर्चे से दूर बैठे हुए लोगों का दर्द भी होता है!"

"४ दिसम्बर

"रात भर बर्फ गिरती रही। बोयार्का से वे लिखते हैं कि हर चीज बर्फ से एकदम ढंक गई है और रेल की पटरियों पर से बर्फ हटाने के लिए उन्होंने फिलहाल अपना काम रोक दिया है। आज सूबा कमिटी ने यह फैसला किया है कि रेलवे का पहला हिस्सा, यानी उस जगह तक जहां लड़ाई का काम शुरू हुआ है, जैसे भी हो पहली जनवरी १९२२ के पहले तक तैयार हो ही जाना है। जब यह फैसला बोयार्का पहुंचा तो शायद तोकारेव ने कहा: 'हम लोग इस काम को पूरा करेंगे, बस शर्त यह है कि तब तक कहीं हमारा दम न निकल जाय।'

"कोर्चागिन के बारे में मुझे कोई खबर नहीं मिलती। मुझे थोड़ा आश्चर्य ही है कि पांक्रातोव जैसे 'किसी मामले' में वह भी कैसे नहीं फंसा! मैं अब भी नहीं समझ पाती कि वह मुझसे क्यों कतराता है।"

"५ दिसम्बर

"जहां पर काम चल रहा है और पटरी बिछाई जा रही है, वहां कल डाकुओं ने हमला किया था।"

घोड़े थके हुए, धीरे-धीरे, नर्म बर्फ पर चले जा रहे थे और उनकी टापें बर्फ के अन्दर घुस-घुस जाती थीं। जब-तब बर्फ के नीचे पड़ी हुई कोई टहनी किसी घोड़े की टाप से टूट जाती और घोड़ा हिनहिनाता और अड़ जाता। मगर तभी उसके कानों पर तेजी से एक चाबुक पड़ता और चाबुक खाकर वह भी दूसरे घोड़ों के पीछे सरपट भाग चलता।

करीब एक दर्जन घुड़सवारों ने उस पहाड़ी टीले को पार किया जिसके उस पार काली मिट्टी का मैदान था और जिस पर अभी बर्फ की चादर नहीं पड़ी थी। यहां पहुंच कर घुड़सवारों ने अपने घोड़े रोके। रकाब से रकाब मिली तो धीमी-सी आवाज हुई। सरदार के घोड़े ने जोर से हिनहिना कर अपने जिस्म को हिलाया। इस लम्बी दौड़ के बाद पसीने से उसका जिस्म चमक रहा था।

आगे-आगे चलने वाले घुड़सवार ने उक्रेनी जबान में कहा, "बहुत बड़ी जमात में हैं ये बदमाश यहां। मगर कोई बात नहीं, अभी हम ऐसा कर देंगे कि डर के मारे उनकी बोटी-बोटी कांपने लगेगी। एटमन का आदेश है कि कल तक इन हरामजादों को यहां से खदेड़ ही देना है। ईंधन के बहुत करीब पहुंचे जा रहे हैं ये लोग। ऐसे नहीं चलेगा।"

वे स्टेशन तक छोटी लाइन की पटरी पकड़े-पकड़े घोड़े पर सवार एक के पीछे एक चले जा रहे थे। पुरानी स्कूल की इमारत के पास के मैदान को देख कर उन्होंने अपनी रफ्तार बहुत धीमी कर दी और पेड़ों के पीछे पहुंच कर रुक गये। आगे खुले मैदान में जाने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ी।

गोली की एक बौछार ने रात की निस्तब्धता को चीर दिया। चांदनी में चांदी की तरह चमकते हुए बर्च के एक पेड़ की साख से बर्फ के गाले गिलहरी की तरह गिर रहे थे। पेड़ों के बीच गोलियां चलने की रोशनी हो रही थी और गोलियां टूटते पलस्तर को चीरकर अन्दर चली जाती थीं। पांक्रातोव की खिड़कियों के शीशे चूर-चूर होकर जमीन पर गिरते थे, तो झन्न-झन्न की आवाज होती थी।

कंकरीट की फर्श पर सोये हुए लोग गोली की आवाज सुनकर हड़बड़ा उठे। लेकिन जब गोलियां कमरे भर में उड़ने लगीं तो वे झट एक-दूसरे पर गिर पड़े।

दुबावा ने पावेल के कोट के पिछले दामन को पकड़ते हुए कहा, "कहां जा रहे हो ?"

"बाहर।"

दिमित्री ने दांत पीसते हुए सांप की तरह फुफकार कर कहा, "लेट जाओ गधे कहीं के ! तुम्हारा सिर बाहर निकला नहीं कि काम तमाम समझो।"

वे दोनों दरवाजे के अगल-बगल लेटे हुए थे। दुबावा फर्श पर चिपका हुआ लेटा था और उसके रिवाल्वर का मुंह दरवाजे की तरफ था। पावेल उकडूं बैठा बेचैनी से अपने रिवाल्वर की नली पर उंगलियां दौड़ा रहा था। उसमें पांच गोलियां थीं, एक घर खाली था। उसने सिलिंडर को एक बार और घुमाया।

गोली चलना एकाएक बन्द हो गया। उसके बाद जो निस्तब्धता आई, तो उसमें तनाव का बोझ था।

दुबावा ने फटी हुई आवाज में धीमे से कहा, "वे सब जिनके पास हथियार हों, इधर आयें।"

पावेल ने बहुत सावधानी से दरवाजा खोला। मैदान खाली था। बर्फ के गाले धीरे-धीरे गिर रहे थे।

जंगल में दस घुड़सवार अपने घोड़ों को सरपट भगाने के लिए उनको चाबुक लगा रहे थे।

दूसरे रोज एक रेलगाड़ी शहर से आई। उसमें से जुखराई और अकिम उतरे और तोकारेव और खोलियावा ने उनका स्वागत किया। एक मैक्सिम तोप, दो दर्जन राइफिलें और मशीनगन की पेटियों के कई डब्बे गाड़ी में से उतार कर प्लेटफार्म पर रखे गये।

जल्दी-जल्दी वे लोग काम की जगह पर पहुंचे। फियोदोर के लम्बे बरानकोट का पिछला दामन जमीन पर लसरता चल रहा था जिससे बर्फ पर आड़ी-तिरछी रेखाएं बनती जा रही थीं। वह अब भी जहाज पर काम करने वाले आदमी की तरह अपने खास लुढ़कते-पुढ़कते से भद्दे अन्दाज में चल रहा था मानो किसी डेस्ट्रॉयर की डेक पर चहलकदमी कर रहा हो। लम्बी टांगों वाला अकिम फियोदोर के कदम-ब-कदम चल रहा था मगर तोकारेव को उनके साथ चलने के लिए बीच-बीच में दौड़ना पड़ जाता था।

"डाकुओं का यह हमला हमारी सबसे बड़ी मुसीबत नहीं है। हमारी लाइन के ठीक रास्ते में एक जगह पर जमीन बहुत बेहूदा ढंग से उठी हुई है, जिसका मतलब है कि हमें और भी खुदाई करनी पड़ेगी, बहुत खुदाई। किस्मत ही खराब है और क्या कहें।"

वह बूढ़ा आदमी रुका, हवा की ओर पीठ करके खड़ा हुआ और सिगरेट जलाई। सिगरेट के दो-चार कश लेकर वह अपने साथियों को पकड़ने के लिए तेजी से चला। अकिम उसके लिए रुक गया था, मगर जुखराई आगे बढ़ता चला गया।

अकिम ने तोकारेव से पूछा, "तुम्हारा क्या खयाल है, तुम वक्त से काम खतम कर लोगे ?"

तोकारेव ने जरा थम कर जवाब दिया।

"देखो बेटा, बात यह है कि यों तो यह काम नहीं किया जा सकता। मगर करना ही है, जैसे भी हो। बस इतनी सी बात है।"

उन दोनों ने फियोदोर को जा पकड़ा और संग-संग चलने लगे।

तोकारेव ने गंभीर स्वर में कहना शुरू किया, "परिस्थिति यह है कि यहां पर सिर्फ पतोश्किन और मैं, सिर्फ हम दो ही यह जानते हैं कि इन हालतों में, इतने कम सामान और कम काम करने वालों को लेकर, वक्त पर इस काम को पूरा नहीं किया जा सकता। मगर बाकी सारे लोगों को, एक-एक आदमी को, बस इतना मालूम है कि चाहे जैसे भी हो, लाइन तैयार करनी ही है। इसीलिए मैंने कहा था कि अगर हम लोग बर्फ में जम कर मर नहीं जाते तो यह काम पूरा होगा। तुम लोग खुद ही सोचो, हम यहां पर एक महीने से ज्यादा दिन से खुदाई कर रहे हैं, काम करने वालों की चौथी टुकड़ी को अब आराम के लिए छुट्टी देने का वक्त आ गया। मगर जो खास काम करने वाले हैं, वे तो पूरे वक्त काम करते रहेंगे। उनकी जवानी ही है जो उन्हें चला रही है। मगर उनमें से आधे लोग सर्दी से बुरी तरह जकड़े हुए हैं। उनको देख कर दिल खून के आंसू रोता है। ये बहुत अच्छे लड़के हैं, इनसे अच्छा कोई नहीं। मगर यह जगह दोजख से कम नहीं और यह जरूर कुछ-न-कुछ लोगों की जान लेगी।"

तैयार रेलवे लाइन स्टेशन से करीब एक मील की दूरी पर आकर खतम हो गई। उसके उस पार करीब डेढ़ मील तक समतल रास्ते पर लकड़ी की एक बाड़ सी लगी हुई थी; ये स्लीपर थे जो अपनी जगह पर मजबूती से जमा कर रखे हुए थे। और उसके भी पार उठान तक रास्ता बिलकुल समतल था।

पांक्रातोव की पहली टोली इस हिस्से में काम कर रही थी। चालीस लोग स्लीपरें बिछा रहे थे और गाजर की सी दाढ़ी वाला एक किसान, जो मूंज के बने नये जूते पहने था, धीरे-धीरे लकड़ी के कुन्दे क्यारियों में गिराता जा रहा था। दूर पर इसी तरह और भी कई गाड़ियां अपना माल उतार रही

थीं। लोहे के दो लम्बे-लम्बे डण्डे जमीन पर पड़े हुए थे—स्लीपरों को बराबर करने के लिए इनसे काम लिया जाता। कुल्हाड़ियां, फावड़े, कुदाल—सबका इस्तेमाल कंकरीट को दबाने के लिए किया जाता था।

रेल की पटरी बिछाना एक बहुत धीमा और मशक्कत का काम है। स्लीपरों को जमीन में अच्छी तरह जम जाना चाहिए ताकि पटरियां बराबरी से उसके ऊपर बैठ सकें।

इस टोली में सिर्फ एक आदमी था जिसे स्लीपरें बिछाने का काम आता था। वह तालिया का बाप लाइन फोरमैन लगुतिन था। चौवन साल का आदमी, दाढ़ी कोयले की तरह काली और बीच से अलग की हुई और सिर में एक भी पका बाल नहीं। उसने शुरू से बोर्याका में काम किया था और वे सभी मुसीबतें उठाई थीं जो नौजवानों ने उठायी थीं। और इसीलिए टुकड़ी के सब लोग उसे बहुत आदर की दृष्टि से देखते थे। गोकि वह पार्टी मेम्बर नहीं था, तब भी सभी पार्टी मीटिंगों में लगुतिन को बड़ी इज्जत की जगह दी जाती थी। उसे इस चीज का बड़ा फख्र था और उसने कौल किया था कि जब तक काम खतम न हो जायगा, वह वहां से नहीं हटेगा।

"मैं कैसे तुम लोगों को यहां अकेला छोड़ कर चला जाऊं? जब तक कोई तजुर्बेकार आदमी देखभाल करने के लिए न हो, तब तक जरूर कुछ-न-कुछ गड़बड़ हो जायगा। जहां तक तजुर्बे की बात है, मैंने जिन्दगी में इतने स्लीपर बिछाये हैं, यहां-वहां देश भर में, कि मुझे उनकी याद नहीं," जब भी जगह लेने वाले दूसरे मजदूरों का सवाल पैदा होता तो वह बड़ी खुशदिली से यह बात कहता। और इस तरह वह रहता आया।

पतोश्किन ने देखा कि लगुतिन अपना काम जानता है और अपने हिस्से की देख-भाल के लिए कम ही जाता है। जिस वक्त तोकारेव अकिम और जुखराई के साथ वहां आया, जहां वे लोग काम कर रहे थे, उस वक्त पांक्रातोव थकान के पसीने से सराबोर और चेहरा लाल किये स्लीपर के लिए गढ़ा खोद रहा था। अकिम बड़ी मुश्किल से उस नौजवान जहाजी मजदूर को पहचान पाया। पांक्रातोव का वजन बहुत घट गया था और उसके गाल की चौड़ी-चौड़ी हड्डियां उसके धूल से भरे हुए चेहरे पर नुकीली होकर निकली हुई थीं और उसका चेहरा भी पीला और गढ़े में धंसा हुआ नजर आता था।

उसने अकिम के हाथ में अपना गर्म और पसीजा हुआ हाथ देते हुए कहा, "अच्छा-अच्छा, बड़े चीफ लोग आये हैं।"

फावड़ों की आवाज थम गई। अकिम ने अपने चारों तरफ के लोगों के पीले और फटे हुए चेहरे देखे। उनके कोट और उनकी जाकटें लापरवाही से बर्फ पर पड़ी हुई थीं।

लगुतिन से थोड़ी देर बात करने के बाद तोकारेव शहर से आये हुए इन लोगों को लेकर खुदाई की जगह गया और पांक्रातोव को भी उसने अपने संग आने की दावत दी। वह जहाजी मजदूर जुखराई के बगल में चल रहा था।

जुखराई ने उस चुप्पे जहाजी मजदूर से सख्ती से पूछा, "पांक्रातोव, मुझे बतलाओ कि मोतोविलोव्का में हुआ क्या? क्या तुम ऐसा नहीं सोचते कि उस चेका के आदमी का हथियार छीन कर तुमने बहुत ज्यादती की?"

पांक्रातोव खिसियाई हुई सी हंसी हंसा।

अपनी सफाई देते हुए उसने कहा, "यह सब आपस की रजामंदी से हुआ। उसी ने हम लोगों से कहा कि मेरा हथियार छीन लो। वह अच्छा लड़का है। जब हम लोगों ने उसको पूरी बात समझाई तो उसने कहा: 'मैं तुम्हारी मुश्किल समझता हूं दोस्तो, मगर मुझे इस बात का हक नहीं है कि मैं तुम्हें खिड़कियां और दरवाजे ले जाने दूं। कामरेड जेरजिन्स्की से हमको आदेश मिला है कि हम रेलवे के माल-जायदाद की लूटपाट पर रोक लगायें। यहां का स्टेशन मास्टर अलग मेरी मुश्किल किये रहता है। वह हरामजादा चोरी करने का आदी है और मैं उसके रास्ते में रुकावट बनता हूं। अगर मैं तुम लोगों को यह सब ले जाने दूं और कुछ न बोलूं, तो वह जरूर रिपोर्ट कर देगा और फिर मेरा मामला इन्कलाबी अदालत के सामने पेश हो जायगा। लेकिन हां, अगर तुम मेरा हथियार छीन लो तो जरूर सब कुछ लेकर चम्पत हो सकते हो और अगर स्टेशन मास्टर इस मामले की रिपोर्ट नहीं करता तो मामला यहीं पर खतम हो जायगा।' इसलिए हम लोगों ने वैसा किया। आखिर हम लोग दरवाजे और खिड़कियां अपने मतलब के लिए तो ले नहीं गये, या मैं झूठ कहता हूं?"

जुखराई की आंख में जो चमक आई, उसे देख कर उसने अपना कहना जारी रखा, "कामरेड जुखराई, अगर आप चाहें तो हमको इस चीज की सजा दे सकते हैं, मगर उस लड़के के साथ कोई सख्ती न कीजिएगा।"

"वह बात तो अब आई-गई हो गई। मगर देखो फिर कभी ऐसी बात न हो! अनुशासन के खयाल से यह चीज बहुत बुरी है। हम लोग अगर संगठित रूप से काम करें तो नौकरशाही की कमर तोड़ने के लिए हम काफी ताकतवर हैं। अच्छा आओ, अब कुछ और जरूरी चीजों के बारे में बात करें।" और फियोदोर डाकुओं के हमले का पूरा खुलासा उससे पूछने लगा।

बोयार्का स्टेशन से करीब चार मील पर कुछ लोगों की एक टोली रेलवे लाइन के रास्ते में पड़ने वाले एक टीले को जी-जान से खोदे जा रही थी। सात आदमी अपनी टुकड़ी के तमाम हथियारों से लैस होकर पहरा दे रहे थे। हथियारों में उनके पास खोलियावा की राइफिल और कोर्चागिन, पांक्रातोव, दुबावा और खोमुतोव की रिवाल्वरें थीं।

पतोश्किन उस टीले पर चढ़ा हुआ अपनी नोट-बुक में कुछ लिख रहा था। इस काम पर वह अकेला इंजीनियर था। टेकनीशियन बाकुलेंको उसी सुबह भाग गया था। उसे भगोड़ेपन के जुर्म में अपने ऊपर मुकदमा चलाया जाना मंजूर था, पर डाकुओं के हाथों मरना नहीं।

"इस टीले को रास्ते से हटाने में दो हफ्ता लगेगा। जमीन जम कर एकदम पत्थर हो गई है," पतोश्किन ने अपने बगल में खड़े उदास खोमुतोव से धीमी आवाज में कहा।

"हमें लाइन पर का पूरा काम करने के लिए पच्चीस रोज मिला है और उसमें से पन्द्रह रोज तुम इसी के लिए लगा रहे हो," खोमुतोव ने अपनी मूंछ चबाते हुए गुर्राकर कहा।

"मैं तो समझता हूं कि हो नहीं सकता। हां, यह जरूर है कि इसके पहले ऐसी हालतों में और ऐसे काम करने वालों के साथ मैंने कभी कोई चीज नहीं बनाई है। इसलिए हो सकता है कि मैं गलती कर रहा होऊं। और सच बात तो यह है कि इसके पहले दो बार मैं गलती कर चुका हूं।"

उसी वक्त जुखराई, अकिम और पांक्रातोव ढलवान के करीब आते दिखलाई दिये।

"वह देखो कौन है नीचे ?" रेलवे वर्कशाप के नौजवान मेकेनिक ने, जो पुरानी और कुहनियों पर फटी हुई स्वेटर पहने था, चिल्लाकर कहा। उसने कोर्चागिन को उंगली गड़ाई और आने वालों की तरफ इशारा किया। दूसरे ही क्षण कोर्चागिन हाथ में फावड़ा लिए पहाड़ी के नीचे बेहताशा दौड़ा जा रहा था। उसके सिर पर हेलमेट था और हेलमेट के नीचे उसकी आंखें मुस्करा कर प्यार से फियोदोर का स्वागत कर रही थीं और फियोदोर ने भी उससे हाथ मिलाया तो बड़ी देर तक उसके हाथों को पकड़े ही रहा।

"अरे तुम हो पावेल ! इस पोशाक में तो तुम्हें पहचान ही न सका।"

पांक्रातोव सूखी सी हंसी हंसा और बोला, "इसको पोशाक कहना ठीक न होगा। बहरसूरत हवा की आमद के लिए इसमें तमाम छेद ही छेद हैं। भगोड़ों ने उसका ओवरकोट चुरा लिया, यह जाकेट जो यह पहने हुए है, ओकुनेव ने उसको दी है—इन लोगों का अपना एक कम्यून है। मगर पावेल बिलकुल ठीक है, उसकी रगों में गर्म खून है। कंकरीट के फर्श पर—उस पर बिछी हुई

पुआल से कुछ खास फर्क नहीं पड़ता—वह एक-दो हफ्ते और अपने को गरमा लेगा और उसके बाद चीड़ की*लड़की के एक अच्छे से तावूत में लिटाये जाने के लिए तैयार हो जायगा," उस जहाजी मजदूर ने अपने रूखे और गंभीर मजाक के साथ अपनी बात खत्म की।

काली-काली भवों और चपटी सी नाक वाले ओकुनेव ने अपनी शरारत भरी आंखें और छोटी कर लीं और आपत्ति करते हुए कहा : "कोई बात नहीं, पावलुश्का का इन्तजाम् हम लोग कर देंगे। हम सब मिल कर उसे रसोईघर में ओदार्का की मदद करने का काम दिला देंगे। और अगर वह एकदम गधा नहीं बने, तो खाने के लिए भी कुछ ज्यादा पा जाया करेगा। जहां तक शरीर को गरमाने की बात है, तो अंगीठी से या खुद ओदार्का से सटकर बैठ जाया करेगा।"

इस बात पर एक जोर का कहकहा पड़ा। उस दिन यह पहली मरतबा वे लोग हंसे थे।

फियोदोर ने उस पहाड़ी का मुआइना किया और फिर तोकारेव और पतोश्किन के संग स्लेज में बैठ कर वहां चला गया जहां लकड़ी चीरने का काम चल रहा था। वह लौट कर आया, तब भी वे लोग जी-जान से पहाड़ी को काटने के काम में लगे हुए थे। फियोदोर ने उनके फावड़ों का तेजी से चलना देखा और उस मशक्कत के बोझ से काम करने वालों की झुकी हुई पीठों को देखा। अकिम की ओर मुड़ते हुए उसने मद्धिम स्वर में कहा :

"मीटिंग की कोई जरूरत नहीं। यहां किसी आन्दोलन की दरकार नहीं है। तुम ठीक कहते हो तोकारेव कि ये लड़के सोने से तौले जाने के काबिल हैं। ऐसी ही हालतों में लोहा आग में तप कर फौलाद बनता है।

जुखराई ने पहाड़ी खोदने वालों को प्रशंसा और कठोर-कोमल गर्व की आंखों से देखा। अभी कुछ ही समय पहले उनमें से कुछ लोग उसके सामने अपनी चमकती हुई संगीनों को लिए खड़े थे। यह षड्यंत्रकारियों के विद्रोह के एक रोज पहले वाली रात की बात थी। और अब एक ही आवेग से संचालित वे लोग इस परिश्रम में लगे हुए थे ताकि रेलवे की फौलादी रगें गरमी और जिन्दगी के अनमोल स्रोत तक पहुंच सकें।

पतोश्किन ने नम्रता मगर दृढ़ता से फियोदोर को यह बात बतला दी कि दो हफ्ते से कम में इस पहाड़ी को नहीं काटा जा सकता। फियोदोर अपने किसी खयाल में डूबा हुआ उसकी दलीलों को सुनता रहा। उसका दिमाग स्पष्ट ही अपनी किसी दूसरी समस्या में उलझा हुआ था।

"पहाड़ी काटने का काम बन्द कर दो और पहाड़ी के उस पार पटरियां बिछाने का काम शुरू कर दो। इस पहाड़ी का हम दूसरा ही कुछ इलाज करेंगे।" उसने आखिरकार अपनी बात कही।

स्टेशन पर उसका बहुत सा वक्त टेलीफोन पर बीतता था। खोलियावा जो बाहर दरवाजे पर खड़ा पहरा देता था, अन्दर से आती फियोदोर की फटी हुई भारी आवाज को सुनता था।

"मिलिटरी एरिया के चीफ आफ स्टाफ को फोन करो और मेरा नाम लेकर उनसे कहो कि पुजीरेव्स्की की रेजिमेंट को फौरन यहां के लिए बदली करें। इस इलाके से जल्द-से-जल्द लुटेरों का सफाया करना है। उनसे यह भी कहो कि एक बख्तरबंद गाड़ी यहां भेजें और उसके साथ पहाड़ी को डाइनामाइट से उड़ाने के लिए आदमी भी भेजें। बाकी सारा इन्तजाम मैं कर लूंगा। मुझे लौटने में देर होगी। लित्के से कहो कि आधी रात के आस-पास मोटर लेकर स्टेशन पर रहे।"

बारक में, अकिम की छोटी सी तकरीर के बाद जुखराई ने बोलना शुरू किया और एक घंटा, साथियों की आपस की बहस में, पलक मारते उड़ गया। फियोदोर ने उन लोगों को बतलाया कि काम को खतम करने के लिए पहली जनवरी जो आखिरी तारीख मुकर्रर की गई है, उसको और आगे बढ़ाने का सवाल नहीं पैदा होता।

जुखराई ने कहा, "अब से हम इस काम को फौजी बुनियाद पर खड़ा कर रहे हैं। पार्टी मेम्बरों की एक स्पेशल टास्क कम्पनी होगी जिसके कमांडर कामरेड दुबावा होंगे। छः टीमों को खास-खास काम दिया जायगा। जो काम बाकी बच जायगा, उसे छः बराबर हिस्सों में बांट कर एक-एक टीम को दे दिया जायगा। पहली जनवरी तक काम खतम होना ही है। जो टीम अपना काम पहले खतम कर लेगी उसे शहर वापिस जाने की इजाजत मिल जायगी। इसके अलावा सूबे की कार्यकारिणी का सभापति-मंडल सरकार से दरख्वास्त कर रहा है कि सबसे पहले काम खतम करने वाली टीम के सबसे अच्छे मजदूर को 'ऑर्डर आफ द रेड बैनर' दिया जाय।"

अलग-अलग टीमों के ये लीडर मुकर्रर किये गए: नं. १. कामरेड पांक्रातोव; नं. २. कामरेड दुबावा; नं. ३. कामरेड खोमुतोव; नं. ४. कामरेड लॅगुतिन; नं. ५. कामरेड कोर्चागिन; नं. ६. कामरेड ओकुनेव।

"इस तामीरी काम के प्रधान, इसके राजनीतिक और व्यवस्था-सम्बंधी नेता पूर्ववत एंटन निकिफोरोविच तोकारेव रहेंगे," जुखराई ने अपनी बात खतम करते हुए कहा।

चिड़ियों के गोल के अचानक उड़ने की तरह तालियां बजने लगीं और कठोर चेहरों पर मुस्कराहट और शांति फैल गई। जिस झक्की मगर आत्मीय ढंग से भाषण समाप्त हुआ था, उससे मीटिंग का तनाव खुशी के कहकहे में डूब गया।

अकिम और फियोदोर को विदा करने के लिए करीब बीस लोग स्टेशन पर आये।

कोर्चागिन से हाथ मिलाते हुए फियोदोर ने पावेल के वर्फ से भरे हुए बरसाती बूटों को देखा।

उसने धीमे से कहा, "मैं तुम्हें एक जोड़ा जूते भेज दूंगा। उम्मीद करता हूं कि कम से कम अभी तो तुम्हारे पैर सलामत होंगे, जम तो नहीं गये?"

"कुछ कुछ सूजने लगे हैं," पावेल ने जवाब दिया। फिर एक चीज की याद करके जो उसने बहुत पहले मांगी थी, पावेल ने फियोदोर की बांह पकड़ ली और कहा, "मेरे रिवाल्वर के लिए आप कुछ कारतूस दे सकेंगे? मेरा खयाल है कि मेरे पास अब सिर्फ तीन अच्छी कारतूसें बची हैं।"

जुखराई ने निषेध सूचक सिर हिलाया, मगर पावेल की निराश मुद्रा को देख कर अपनी माउजर का फीता जल्दी से खोल दिया।

"यह लो, तुम्हारे लिए यह एक तोहफा है।"

पावेल को एकाएक यकीन नहीं आया कि उसे सचमुच वह चीज मिल रही है जिसके लिए वह इतने दिनों से लालायित था, मगर जुखराई ने अपनी माउजर का फीता उसके कंधे पर डालते हुए कहा:

"ले लो, ले लो! मैं जानता हूं कि बहुत दिनों से तुम्हारी निगाह इस पर है। मगर देखना, कहीं अपने ही किसी आदमी पर इसका इस्तेमाल न कर बैठना। इसके साथ ये तीन सेट कारतूस हैं।"

पावेल ने अपने ऊपर गड़ी हुई दूसरों की ललचाई आंखों को महसूस किया।

कोई चिल्लाया, "ए पावका, अदला-बदली करते हो? इसके बदले में मुझ से एक जोड़ा जूते ले लो और एक कोट भी। है सौदा मंजूर?"

पांक्रातोव ने पीछे से पावेल की पीठ को कोंचा और कहा, "चलो, मैं इसके बदले में तुम्हें एक जोड़ा फेल्ट के जूते दूं। मुझसे सौदा कर लो। क्योंकि अगर यही हाल रहा तो क्रिसमस के पहले तो तुम अपने इन बरसाती बूटों में यों भी मर चुके रहोगे।"

रेलगाड़ी के फुटबोर्ड पर एक पैर रख कर उसके सहारे जुखराई ने रिवाल्वर के लिए एक परमिट लिख दिया।

दूसरे दिन बड़े तड़के एक बख्तरबन्द गाड़ी आकर स्टेशन पर रुकी। इंजन बगुले के पर जैसी सफेद भाप छोड़ रहा था जो उस साफ-शफ्फाफ बर्फानी हवा में खो जाती थी। चमड़े के कपड़े पहने हुए लोग लोहे के डब्बे में से निकले। कुछ घंटे बाद तीन लोग, जो पुल-पहाड़ी वगैरह उड़ाने का काम करते थे और गाड़ी में आये थे, उन्होंने पहाड़ी की जड़ में दो बड़ी-बड़ी, काली-काली, कुम्हड़े जैसी चीजें गाड़ दी थीं। उन चीजों में से लम्बे-लम्बे पलीते निकले हुए थे। लोगों को सावधान करने के लिए उन्होंने कुछ गोलियां हवा में छोड़ीं और लोग अब इस घातक पहाड़ी से दूर-दूर चारों तरफ बिखर गये। पलीते के सिरे में आग लगा दी गई। पलीता नीली-नीली लौ देने लगा।

कुछ देर तक लोग सांस रोके खड़े रहे। उद्विग्न प्रतीक्षा के दो-एक क्षण, और फिर धरती कांप उठी और एक भयंकर ताकत ने उस पहाड़ी को उड़ा दिया और मिट्टी के बड़े-बड़े ढोंके आसमान की तरफ उड़े। दूसरा धड़ाका पहले से भी ज्यादा जबर्दस्त था। उसकी गरज चारों ओर के जंगल में गूंज गई और आवाजों का एक हंगामा सा छा गया।

जब धुआं और धूल साफ हुई तो दिखाई दिया कि जहां अभी वह पहाड़ी खड़ी थी, वहां पर अब एक गहरा सा गढ़ा था और आस-पास की शकर जैसी सफेद बर्फ में मिट्टी मिल गई थी।

धड़ाके से पैदा होने वाले इस गढ़े की तरफ लोग अपने फावड़े और कुदाल लेकर दौड़े।

जुखराई के चले जाने के बाद काम करने वालों में इस बात की जबर्दस्त होड़ लगी कि कौन सबसे पहले अपना काम खत्म करता है।

भोर के बहुत पहले कोर्चागिन चुपके से उठा ताकि दूसरे लोग न जगें और अपने ठिठुरे हुए पैरों को दबा-दबा कर उस बर्फ जैसे ठंडे फर्श पर चलता हुआ रसोईघर तक पहुंचा। वहां उसने चाय का पानी गरम किया और फिर अपनी टीम के लोगों को जगाने के लिए गया।

दूसरे लोगों के जागते-जागते दिन अच्छी तरह निकल आया था।

उसी सुबह पांक्रातोव गुंजान बारक में कुहनियों से अपना रास्ता बनाता हुआ वहां पहुंचा जहां दुबावा और उसके दल के लोग नाश्ता कर रहे थे।

उसने आवेश में कहा, "सुनते हो मितियाई! पावका ने अपने लड़कों को दिन निकलने के पहले ही जगा दिया और काम पर निकल गया। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अब तक उन्होंने बीस गज पटरियां बिछा ली होंगी। सब कहते हैं कि उसने अपने रेलवे वर्कशाप के लड़कों को जोश दिला-दिला

कर अपने हिस्से का काम पच्चीस तारीख तक खतम करने के लिए तैयार कर लिया है। इस तरह तो हम कहीं के न रहेंगे, वह हमको पटरा कर देगा। मगर मैं कहता हूं यह नहीं होने का !"

दुबावा उदास ढंग से मुस्कराया। वह समझ सकता था कि नदी के किनारे वाले शहर के कोमसोमोल-मंत्री को रेलवे वर्कशाप के लोगों का ऐसे आगे बढ़कर काम करना क्यों इतना बुरा लग रहा है। सच बात तो यह थी कि उसके दोस्त पावेल ने दुबावा को भी पीछे छोड़ दिया था। बिना किसी से एक शब्द कहे उसने सारी कम्पनी को चुनौती दे दी थी।

पाक्रांतोव ने कहा, "दोस्त होने न होने से कुछ फर्क नहीं पड़ता। जीतेगा वही जो सबसे अच्छा काम करेगा।"

दोपहर को जब कोर्चागिन की टीम जोर-शोर से काम कर रही थी, तब एक अप्रत्याशित बाधा उपस्थित हुई। वह सन्तरी जो राइफलों पर पहरा दे रहा था, उसने दरख्तों के बीच से कुछ घुड़सवारों के एक दल को करीब आते देखा और चेतावनी देने के लिए एक गोली छोड़ी।

"दोस्तो, हथियार उठा लो ! लुटेरे !" पावेल चिल्लाया। उसने अपना फावड़ा फेंक दिया और पेड़ की तरफ दौड़ा जहां उसकी माउजर लटक रही थी।

झटपट अपनी राइफिलें उठाकर दूसरे भी लाइन के किनारे के पास ही बर्फ पर लेट गये। आगे-आगे चलने वाले घुड़सवारों ने अपनी टोपियां हिलाईं।

उनमें से एक चिल्लाया, "साथियो, रुको रुको, गोली मत चलाओ !"

बुद्यौनी की फौज की टोपियां लगाये करीब पचास घुड़सवार रास्ते पर चले आ रहे थे। उनकी टोपियों पर लाल तारे चमक रहे थे।

पुजीरेव्स्की की रेजीमेंट की एक टुकड़ी देख-भाल के लिए आई थी। पावेल ने देखा कि कमांडर जिस पर सवार था, वह एक खूबसूरत भूरे रंग की घोड़ी थी। उसके माथे पर एक सफेद दाग था और उसके एक कान का थोड़ा-सा हिस्सा गायब था। वह बेचैनी से जस्त कर रही थी और जब पावेल ने तेजी से आगे बढ़ कर उसकी रास को पकड़ा तो वह उछल पड़ी।

"अरे क्यों, लिश्का, मेरी प्यारी लिश्का, मैंने कब सोचा था कि फिर कभी हमारी मुलाकात होगी ! अच्छा गोलियां तो तुझे छू नहीं पाईं !"

पावेल ने उसकी पतली गर्दन को प्यार से गले लगाया और उसके फड़कते हुए नथने को थपथपाया।

कमांडर क्षण भर के लिए एकटक पावेल को देखता रहा, फिर आश्चर्य से चीख पड़ा : "अरे, कहीं यह कोर्चागिन तो नहीं ! मगर तुम भी कैसे हो,

तुमने अपनी घोड़ी को तो पहचान लिया मगर अपने पुराने दोस्त सेरेदा को नहीं देख रहे हो। सलाम दोस्त !"

इस बीच शहर में सभी तरफ इस बात के लिए जोर लगाया जा रहा था कि रेलवे लाइन बिछाने के काम को और तेज किया जाय और जहां काम चल रहा था, वहां इस चीज का असर फौरन दिखाई देता था। जार्की ने कोमसोमोल की जिला कमिटी के एक-एक आदमी को बीन-बीन कर बोयार्का भेज दिया था। सोलोमेंका में अब सिर्फ लड़कियां बची थीं। उसने जोर लगा कर रेलवे स्कूल को विद्यार्थियों की एक और टोली भेजने के लिए तैयार किया।

अपने काम के नतीजों की रिपोर्ट अकिम को देते हुए उसने मजाक में कहा, "मेरे पास अब सिर्फ प्रोलितारियत औरतें बच गई हैं। मैं सोचता हूं कि अपनी जगह पर तालिया लगुतिना को रख कर दरवाजे पर 'महिला विभाग' का साइनबोर्ड लगा दूं और खुद भी बोयार्का चला जाऊं। मुझे बड़ा अटपटा लगता है यहां, इतनी तमाम औरतों के बीच मैं अकेला आदमी हूं। तुम जरा देखते कि किस नफरत से ये लड़कियां मुझको देखती हैं। जरूर वह कहती होंगी 'देखो, यह कैसा चंट आदमी है, इसने औरों को तो रवाना कर दिया, मगर खुद यहीं जमा हुआ है।' या मुमकिन है इससे भी कोई बुरी बात कहती हों। तुम्हें मुझको यहां से जाने देना ही होगा।"

मगर अकिम केवल हंसा।

बोयार्का में नये काम करने वाले बराबर आते रहे। उनमें रेलवे स्कूल के साठ विद्यार्थी भी थे।

जुखराई ने रेलवे अधिकारियों को इस बात के लिए भी राजी किया कि नये पहुंचने वालों के रहने के लिए वे चार डब्बे बोयार्का भेज दें।

दुबावा की टीम को काम से छुट्टी देकर उन्हें पुश्चावोदित्सा से इंजन और छोटी लाइन के मालगाड़ी के खुले हुए पैंसठ डब्बे लाने के लिए भेजा गया। इस काम को उनके दूसरे काम का एक हिस्सा माना गया।

जाने के पहले दुबावा ने तोकारेव को सलाह दी कि क्लावीचेक को शहर से बुला कर उसे बोयार्का में उन नई संगठित टीमों में से एक का चार्ज दे दिया जाय। तोकारेव ने ऐसा नहीं किया। उसे यह नहीं मालूम था कि दुबावा के इस अनुरोध के पीछे असली कारण क्या है। इसका असली कारण था आना की एक चिट्ठी जो सोलोमेंका से आने वाले लोग अपने साथ लाये थे।

आना ने लिखा था :

"दिमित्री ! क्लावीचेक और मैंने मिल कर तुम्हारे लिए किताबों का एक गट्ठर तैयार किया है। हम तुमको और बोयार्का के दूसरे काम करने वालों को अपना हार्दिक अभिवादन भेजते हैं। तुम सब बहुत गजब के हो ! हम तुम्हारे लिए शक्ति और उत्साह की कामना करते हैं। कल लकड़ी का शेष स्टाक बांट दिया गया, अब कुछ नहीं बचा। क्लावीचेक तुमको अपना नमस्कार भेज रहा है। वह बहुत अच्छा काम करने वाला है। बोयार्का के लिए सारी रोटियां वह खुद ही सेंकता है, आटा भी खुद ही सानता है और उसे गूंधता भी खुद ही है। बेकरी के दूसरे किसी आदमी पर उसे भरोसा नहीं है। उसने कहीं से बहुत अच्छा आटा पा लिया है। और उसकी रोटी अच्छी होती है, कम-से-कम उस रोटी से कहीं अच्छी होती है, जो मुझे मिलती है। शाम को हमारे सब दोस्त मेरे घर पर इकट्ठा होते हैं—लगुतिना, आर्त्युखिन, क्लावीचेक और कभी-कभी जार्की। हम लोग कभी-कभी साथ-साथ कुछ-कुछ पढ़ते भी हैं। मगर अक्सर हम लोग बातें ही करते हैं, दुनिया के हर आदमी और हर चीज के बारे में और खास कर बोयार्का में काम करते हुए तुम लोगों के बारे में। यहां की लड़कियां तोकारेव से बेहद नाराज हैं क्योंकि उन्होंने लड़कियों को इस काम पर लगाने से इनकार कर दिया। वे कहती हैं कि कठिनाइयां झेलने में वे किसी से कम थोड़े ही हैं। तालिया ने ऐलान किया है कि वह अपने बाप के कपड़े पहन कर अकेले बोयार्का चली जायगी। 'देखूं वह कैसे मुझे वहां से बाहर करते हैं,' वह कहती है।

"मुझे कोई ताज्जुब न होगा अगर वह सचमुच अपनी बात पूरी कर डाले। मेरा नमस्कार काली-काली आंखों वाले अपने दोस्त से कह देना।—आना"

बर्फ का तूफान अचानक ही उन पर टूट पड़ा। झुके हुए भूरे बादल आसमान भर में फैल गये और ढेर-ढेर सी बर्फ गिरने लगी। रात आई तो हवा चिमनियों में हरहरा रही थी और पेड़ों में सिसक रही थी। उड़ते हुए बर्फ के गालों को उसने खदेड़ कर भगा दिया और जंगल की गूंजों को अपनी तेज-तीखी आवाज से जगा दिया।

सारी रात तूफान तेजी से चलता रहा और गोकि रात भर अंगीठियां सुलगी रहीं, तब भी लोग कांपते रहे। स्टेशन की वह टूटी हुई इमारत अन्दर की गरमी को संजो कर नहीं रख पाती थी।

सबेरे उन्हें गहरी बर्फ के बीच जैसे हल चला कर अपने-अपने हिस्सों पर पहुंचना पड़ा। मगर दरख्तों के बहुत ऊपर सूरज नीले आसमान में चमक रहा था और कहीं पर एक भी बादल का टुकड़ा नहीं था।

कोर्चागिन और उसके साथी अपने हिस्से में गिरी हुई बर्फ की सफाई करने के लिए गये। तभी पावेल को इस बात का एहसास हुआ कि सर्दी कितनी तकलीफदेह चीज हो सकती है। ओकुनेव की जाकट एकदम तार-तार हो गई थी और उससे किसी किस्म का बचाव नहीं होता था। उसके रबड़ के बड़े जूतों में बराबर बर्फ भरी रहती थी। जब देखो तब वह बरफ में फंस कर निकल जाते थे। और अब उसके दूसरे जूते के तल्ले निकलने की भी बारी आ गई थी। उसकी गर्दन में दो बड़े-बड़े फोड़े निकल आये थे। ठंडे फर्श पर सोने के कारण ऐसा हुआ था। गुलेबन्द की जगह लगाने के लिए तोकारेव ने उसको अपना तौलिया दे दिया था।

पावेल का चेहरा मस्ख और उसकी आंखें लाल हो रही थीं और वह भूत की तरह बर्फ में अपना बेलचा चला रहा था। तभी एक मुसाफिर गाड़ी भक-भक करती हुई धीरे-धीरे स्टेशन में दाखिल हुई। उसके इंजन की जान अब-तब हो रही थी और वह बड़ी मुश्किल से गाड़ी को इस जगह तक खींच कर ला सका था। लकड़ी का एक भी कुन्दा इंजन के पास वाले कोयले के डब्बे में नहीं बचा था। और फायर बाक्स में आखिरी अंगारे बुझने की तैयारी में थे।

इंजन ड्राइवर ने चिल्लाकर स्टेशन मास्टर से कहा, "हमें ईंधन दो तो हम और आगे जायं, वरना अभी जब तक इंजन में दम है, हमें गाड़ी को शण्ट करके साईडिंग में ले जाकर डाल देने दो, नहीं तो और मुसीबत होगी।"

रेलगाड़ी को साईडिंग में ले जाकर डाल दिया गया। गाड़ी को रोक देने की वजह नाराज मुसाफिरों को समझाई गई और डब्बों से शिकायतों और गालियों का एक तूफान सा उठा।

"जाओ, उस बुड्ढे आदमी से बात करो," स्टेशन मास्टर ने तोकारेव की तरफ इशारा करते हुए, जो प्लेटफार्म पर चला आ रहा था, रेलगाड़ी के गार्डों से कहा। "यहां पर जो तामीरी काम चल रहा है, उसके प्रधान वही हैं। हो सकता है वह स्लेज में रख कर कुछ लकड़ी इंजन के लिए पहुंचा सकें। वे लोग स्लीपरों के लिए लकड़ी के कुन्दे इस्तेमाल कर रहे हैं।"

जब कंडक्टरों ने तोकारेव के सामने अपनी मांग रक्खी तो उसने कहा, "मैं तुम्हें लकड़ी दूंगा, मगर इसके लिए तुम्हें दाम देना पड़ेगा। आखिर यह हमारे तामीरी काम का मसाला है। इस वक्त बर्फ के कारण हमारा काम रुका हुआ है। तुम्हारी गाड़ी में करीब छ-सात सौ मुसाफिर जरूर होंगे।

औरतें और बच्चे गाड़ी में रह जायं। और मर्द बाहर आकर शाम तक बर्फ की सफाई में हमारी मदद करें, यही हमारा कहना है। यह दाम चुकाने के लिए अगर तैयार हों तो मैं तुम्हें जलाने के लिए लकड़ी दे सकता हूं। अगर यह बात उन लोगों को मंजूर न हो तो ठीक है, नये साल के पहले दिन तक वे आराम से उसी जगह पर पड़े रह सकते हैं।"

"जरा इस भीड़ को तो देखो जो इधर आ रही है। अरे, इनमें तो औरतें भी हैं!" कोर्चागिन ने अपनी पीठ पीछे किसी की आश्चर्य से कही गई यह बात सुनी। वह पीछे मुड़ा। तोकारेव वहां पहुंचा।

उसने कहा, "ये लो मैं तुम्हारे लिए एक सौ मददगार लाया हूं। इन सबको काम दो और देखना कोई कामचोरी न करने पाये।"

कोर्चागिन ने इन नये आने वालों को काम पर लगा दिया। रेलवे की ठाटदार साफ-सुथरी वर्दी पहने एक लम्बे आदमी ने, जिसकी वर्दी में फर का कालर लगा हुआ था और जिसके सर पर ऊनी कराकुल टोपी लगी हुई थी, नाराजगी से फावड़े को घुमाया और एक नौजवान औरत की तरफ मुड़ा जो उसकी साथिन थी। यह औरत सील मछली के चमड़े का हैट लगाये थी जिसके सिरे पर एक भारी सा फुदना लगा हुआ था।

"मैं इस तरह फावड़ा भर-भर कर बर्फ नहीं फेंकूंगा और किसी की मजाल नहीं कि मुझे इस काम के लिए मजबूर करे। रेलवे इंजीनियर की हैसियत से मैं इस काम का चार्ज ले सकता था अगर मुझे कहा जाता। लेकिन इसकी कोई जरूरत नहीं कि तुम या मैं, यहां इस तरह हाथ में फावड़ा लेकर बर्फ की सफाई करें। यह कायदे के खिलाफ बात है। यह बुड्ढा आदमी कानून तोड़ रहा है। मैं चाहूं तो उसका चालान करवा सकता हूं। तुम्हारा फ़ोरमैन कहां है?" उसने अपने पास खड़े हुए एक मजदूर से आदेश के स्वर में पूछा।

कोर्चागिन वहां आ गया।

"आप काम क्यों नहीं कर रहे हैं, महाशय?"

उस आदमी ने उपेक्षा के साथ पावेल को ऊपर से नीचे तक देखा।

"मगर आप कौन हैं?"

"मैं एक मजदूर हूं।"

"तब मुझे आपसे कुछ नहीं कहना है। मेरे पास अपने फोरमैन को या जिस भी नाम से आप उसे पुकारते हों भेज दीजिए...।"

कोर्चागिन के माथे में बल पड़ गये।

"अगर आप काम नहीं करना चाहते, तो मत करिए। मगर आप वापिस अपनी गाड़ी में नहीं पहुंच सकते जब तक कि आपके टिकट पर हमारे दस्तखत न हों। यह हमारे प्रधान का आदेश है।"

"और आप ?" पावेल ने उस औरत की तरफ मुड़ते हुए कहा। और उस ओर नजर पड़ते ही उसे तो जैसे काठ-सा मार गया। उसके सामने तोनिया तुमानोवा खड़ी थी।

तोनिया को यकीन नहीं आ रहा था कि यह आवारा सा आदमी, जो फटे-पुराने कपड़े और सड़े-गले जूते पहने खड़ा था, जिसके गले में एक गंदी-सी तौलिया बंधी थी और जिसने शायद कई दिन से मुंह भी नहीं धोया था, वही कोर्चागिन था जिसे वह कभी जानती थी। सिर्फ उसकी आंखें अब भी अंगारों की तरह चमक रही थीं, जैसी कि तब चमकती थीं। उसे पावेल की आंखों की याद थी। उसे देख कर वह शर्म से गड़ गई कि अभी कुछ ही साल पहले उसने इस आवारा शक्ल आदमी को अपनी मुहब्बत दी थी। हर चीज कैसी बदल गई थी।

उसने हाल में शादी की थी और वह अपने पति के साथ शहर जा रही थी, जहां वह रेलवे विभाग में ऊंचे पद पर था। भला किसने सोचा था कि अपने कैशोर्य का प्रेमपात्र उसे यहां इस रूप में मिल जायगा! उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाने में भी उसे झिझक हुई। वासिली क्या सोचेगा ? कितनी बुरी बात है कि कोर्चागिन का ऐसा पतन हो गया है। जाहिर है कि इस फायरमैन को मजदूर की हैसियत से ऊपर उठने का मौका नहीं मिला।

वह हिचकिचाती हुई खड़ी रही। उसके गाल जल रहे थे। इसी बीच रेलवे इंजीनियर ने, जो इस आवारे की ढिठाई पर तैश खाता खड़ा था क्योंकि वह उसकी बीवी को घूर रहा था, अपने हाथ का बेलचा फेंक दिया और अपनी बीवी के बगल में जाकर खड़ा हो गया।

"चलो तोनिया चलें, मैं इस लात्सरोनी[१] की सूरत अब और नहीं बर्दाश्त कर सकता।"

कोर्चागिन ने जिसेपी गैरवाल्डी पढ़ा था और उसे इस शब्द का मतलब मालूम था।

"मैं भले लात्सरोनी होऊं, मगर तुम तो एक गलीज बुर्जुआ हो," उसने फटी हुई आवाज में कहा और तोनिया की तरफ मुड़ते हुए रूखे अन्दाज में

---

१. नेपुल्स शहर का रहने वाला आवारागर्द लड़का जो छोटे-मोटे काम करके और भीख मांग कर जीवन निर्वाह करता है।

कहा, "कामरेड तुमानोवा, बेलचा ले लो और काम शुरू कर दो। इस बैल के उदाहरण पर मत चलो...माफ करना अगर तुम्हारा इससे किसी तरह का सम्बंध हो।"

पावेल ने तोनिया के फर के जूतों पर निगाह डाली और मुस्कराते हुए कहा :

"मैं तुम्हें यहां रुकने की सलाह न दूंगा। कल रात लुटेरों ने हम पर हमला किया था।"

यह कह कर वह घूमा और चल पड़ा, उसके रबड़ के बड़े जूते फटाफट बज रहे थे।

उसके आखिरी शब्दों का रेलवे इंजीनियर पर असर हुआ और तोनिया ने उसे रुकने और काम करने के लिए राजी कर लिया।

उसी शाम को, दिन का काम खत्म हो जाने पर, काम करने वालों की भीड़ स्टेशन वापस आई। तोनिया का पति बड़ी जल्दी कर रहा था ताकि सबसे आगे पहुंच जाय और रेलगाड़ी में उसे अच्छी सीट मिल जाय। तोनिया ने, जो मजदूरों की एक टोली को रास्ता देने के लिए रुक गई थी, पावेल को दूसरे सब काम करने वालों के पीछे-पीछे थके हुए कदमों से, अपने बेलचे का सहारा लेकर धीरे-धीरे चलते देखा।

"हलो पावलुशा," उसने कहा और उसके साथ हो ली और उसके बगल-बगल चलने लगी। "मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं तुमको यहां ऐसी हालत में पाऊंगी। अधिकारियों को इतना तो मालूम होगा ही कि तुम्हारी योग्यता इससे ज्यादा है कि तुम बस एक मजदूर बना कर छोड़ दिये जाओ? मैंने तो सोचा था कि तुम कबके कमिसार या ऐसे ही किसी दूसरे पद पर पहुंच गये होगे। बड़े अफसोस की बात है कि जिन्दगी ने तुम्हारे साथ ऐसी बेरहमी की।"

पावेल रुका और उसने कुछ आश्चर्य से तोनिया को देखा।

"और न मैंने कभी समझा था कि तुम्हारा नजरिया इतना तंग होगा," उसने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए सभ्य से सभ्य शब्द तलाश करते हुए कहा।

तोनिया के कान की लवें जल रही थीं।

"तुम अब भी हमेशा ही की तरह बदजबान हो!"

कोर्चागिन ने अपना बेलचा उठा कर कंधे पर रख लिया और आगे बढ़ता रहा। कुछ कदम जाकर वह रुका।

"कामरेड तुमानोवा" उसने कहा, "मेरी बदजबानी तुम्हारी सभ्यता से कहीं अच्छी है। और जहां तक मेरी जिन्दगी का ताल्लुक है, उसकी फिक्र न करो। उसमें कोई गड़बड़ी नहीं है। गड़बड़ी तुम्हारी जिन्दगी में है, जैसा मैंने

सोचा था उससे कहीं ज्यादा। दो साल पहले तुम बेहतर थीं, तब तुम्हें एक मजदूर से हाथ मिलाने में कम से कम शर्म तो नहीं मालूम होती थी। मगर अब तुमसे कपूर की गोलियों की बदबू आती है। सच बात यह है कि तुम्हारे और मेरे बीच अब कोई मिलने की जगह बाकी नहीं रही और हमारा एक-दूसरे से कुछ भी कहना बेसूद है।"

पावेल को आर्तेम की एक चिट्ठी मिली थी जिसमें लिखा था कि वह शादी करने जा रहा है और पावेल से जोर देकर उसने कहा था कि हर हालत में वह शादी में शरीक हो।

हवा का एक झोंका पावेल के हाथ से कागज के उस टुकड़े को उड़ा ले गया। यह सब शादी-बारात उसके लिए नहीं है। इस वक्त भला वह कैसे जा सकता है? अभी कल ही वह भालू पांक्रातोव उसकी टीम से आगे बढ़ गया था और इतनी तेजी से काम कर रहा था कि सबको देख कर हैरत होती थी। वह जहाजी मजदूर प्रतियोगिता में पहला स्थान पाने के लिए जान लगा कर कोशिश कर रहा था। यों वह लापरवाह सा आदमी था और इन बातों की उसे फिक्र नहीं रहती थी। मगर अब उस लापरवाही की उसके यहां कोई जगह न थी और वह जैसे चाबुक मार-मार कर अपने साथी जहाजियों को बेहद तेज रफ्तार से आगे लिये चला जा रहा था।

पतोश्किन उस खामोश तेजी को देख रहा था जिससे कि सब लोग काम कर रहे थे और वह परेशान होकर सिर खुजलाते हुए मन ही मन आश्चर्य से सोचता था, "ये आदमी हैं या देवता? ऐसी असंभव शक्ति इनके अन्दर कहां से आती है? अगर सिर्फ आठ दिन तक मौसम साफ रहा तो हम कटी हुई लकड़ियों तक पहुंच जायंगे! ठीक है, देखो, अभी तुम्हें जिन्दगी में बहुत कुछ देखना और सीखना है! ये लोग सारे रेकार्ड और सारे अन्दाजे तोड़ कर रख दे रहे हैं।"

क्लावीचेक अपनी तैयार की हुई आखिरी रोटियां लेकर शहर से आया। उसने तोकारेव से बात की और फिर कोर्चागिन की तलाश में निकल गया। दोनों आदमियों ने बड़ी मुहब्बत से एक-दूसरे से हाथ मिलाया। क्लावीचेक ने खुल कर मुस्कराते हुए थैले में हाथ डाला और स्वीडन की बनी हुई चमड़े की एक बड़ी खूबसूरत जाकट निकाली जिसमें फर का स्तर लगा हुआ था।

"यह तुम्हारे लिये है!" उस नर्म चमड़े को थपथपाते हुए उसने कहा। "बूझो तो किसने भेजा है? क्या, तुम्हें नहीं मालूम? हो यार तुम सचमुच बड़े बुद्धू! कामरेड उस्तिनोविच ने भेजा है इसे, ताकि तुम्हें सर्दी न लग

जाय। उसको यह चीज ओलशिन्स्की से मिली थी। उससे लेकर उस्तिनोविच ने सीधे मेरे हाथ में पकड़ा दिया ताकि मैं तुम्हें लाकर दे दूं। अकिम ने उसको बताया था कि तुम्हारे पास बस एक पतली सी जाकट है जिसे पहन कर तुम जाड़े-पाले में घूमते रहते हो। ओलशिन्स्की बड़ा खफीफ हुआ। उसने कहा, 'मैं इस साथी को एक फौजी कोट भेज दूंगा।' मगर रिता इसको सुन कर हंस पड़ी और बोली, 'फिक्र न करो, इस जाकट में वह ज्यादा अच्छा काम करेगा।'

आश्चर्यान्वित पावेल ने उस शानदार जाकट को लिया और फिर कुछ हिचकिचाते हुए उसे अपने सर्दी से जकड़े हुए बदन पर चढ़ा लिया। पहनने के साथ ही उनको उन नर्म-नर्म बालों से, जो उसके सीने और कंधों पर फैले हुए थे, अपने जिस्म के अन्दर गर्मी मालूम हुई।

रिता ने अपनी डायरी में लिखा :

"२० दिसम्बर

"आंधी और तूफान का रेला चल रहा है। बर्फ और तेज हवा। वहां बोयार्का में वे लोग अपनी मंजिल पर पहुंच ही गये थे कि पाले और तूफान ने आकर उनको रोक दिया। वहां उनके गर्दन तक बर्फ जमी हुई है और जमी हुई धरती को खोदना आसान काम नहीं है। अब मुश्किल से उनका आधा मील का काम बाकी है, मगर यही सबसे कठिन मंजिल है।

"तोकारेव ने रिपोर्ट भेजी है कि वहां टाइफाइड जोर से फैला है। तीन आदमियों ने बिस्तर पकड़ लिया है।"

"२२ दिसम्बर

"कोमसोमोल की सूबा कमिटी का एक पूरा इजलास हुआ था। मगर बोयार्का से उसमें कोई नहीं शरीक हुआ। बोयार्का से चौदह मील पर लुटेरों ने अनाज की एक गाड़ी उलट दी है और गल्ले की कमिसारियट के प्रतिनिधि ने आदेश दिया है कि सारे काम करने वालों को उस जगह पर भेज दिया जाय।"

"२३ दिसम्बर

"बोयार्का से टाइफाइड के और सात मरीज शहर लाये गए हैं। उनमें ओकुनोव भी है। मैं स्टेशन गई थी और मैंने उन लोगों की ठंडी, सर्दी से अकड़ी हुई लाशों को उतारे जाते देखा जो खारकोव की एक गाड़ी के बफर पर चढ़ कर आ रहे थे। अस्पताल ठंडे पड़े हैं, उनको गरम करने का इंतजाम नहीं है। यह मनहूस बर्फ का तूफान पता नहीं कब खतम होगा ?"

"२४ दिसम्बर

"अभी जुखराई से मिल कर आ रही हूं। उन्होंने उस उड़ती हुई खबर की तसदीक की कि ओर्लिक और उसके पूरे गिरोह ने कल रात बोयार्का पर हमला किया था। दो घंटे तक लड़ाई चली। तार-वार सब काट डाले गये थे और कहीं आज सवेरे जाकर जुखराई को ठीक-ठीक रिपोर्ट मिली। गिरोह को मार कर भगा दिया गया मगर तोकारेव भी घायल हो गया है, एक गोली उसके सीने से पार हो गई है। वह आज शहर लाया जायगा। फ्रेंज क्लावीचेक, जो उस रात सन्तरियों के चार्ज में था, मारा गया। लुटेरों पर सबसे पहले उसी की निगाह गई थी और उसी ने शोर मचा कर अपने साथियों को होशियार किया था। उसने हमलावरों पर गोली चलानी शुरू की। मगर इसके पहले कि वह स्कूल की इमारत तक पहुंच सके, लुटेरे उसके ऊपर चढ़ आये थे। तलवार के एक वार ने उसको काट कर रख दिया। ग्यारह मजदूर घायल हुए। अब वहां पर दो घुड़सवार दस्ते और बख्तरबन्द गाड़ी पहुंच गई है।

"तामीरी काम का चार्ज अब पांक्रातोव ने ले लिया है। आज पुजीरेव्स्की ने गिरोह के बचे-खुचे लोगों को ग्लुबोकी गांव में जा पकड़ा और उनका सफाया कर दिया। कुछ गैर-पार्टी मजदूर रेलगाड़ी का इंतजार किये बिना पैदल ही शहर के लिए चल पड़े, वे पटरी के किनारे-किनारे चले आ रहे हैं।"

"२५ दिसम्बर

"तोकारेव और दूसरे घायल लोग आये और उन्हें अस्पताल में रख दिया गया। डाक्टरों ने वचन दिया है कि वे बूढ़े तोकारेव को बचा लेंगे। वह अब भी बेहोश है। दूसरों की जान खतरे में नहीं है।

"हम लोगों और सूबे की पार्टी कमिटी के नाम बोयार्का से एक तार आया है जिसमें लिखा है: 'लुटेरों के हमले के जवाब में रेलवे लाइन के हम तामीरी मजदूर, जो 'सोवियत शक्ति के लिए' नामक बख्तरबन्द गाड़ी के चालकों और लाल सेना की घुड़सवार रेजिमेंट के साथ इस मीटिंग में जमा हुए हैं, आपके सम्मुख शपथ लेते हैं कि चाहे जो भी अड़चनें हमारे रास्ते में आयें, पहली जनवरी को हम जलाने की लकड़ी शहर को जरूर ही देंगे। अपनी सारी ताकत लगा कर हम लोग काम कर रहे हैं। जिसने हमको यहां भेजा, वह कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद। मीटिंग का सभापति, कोर्चागिन। मंत्री, बेर्जिन।'

"क्लावीचेक को सोलोमेंका में फौजी कायदे से दफना दिया गया।"

मंजिल अब दिखाई दे रही थी, मगर उसकी तरफ बढ़ने की रफ्तार इतनी धीमी थी कि तकलीफ होती थी। हर रोज टाइफाइड दर्जनों काम करनेवालों को छीन लेता था।

एक रोज कोर्चागिन, काम पर से स्टेशन लौटते हुए, शराबी की तरह लड़खड़ाता चला आ रहा था। उसकी टांगें टूटी जा रही थीं। कई रोज से उसे हरारत रहती थी, मगर आज बुखार की तेजी बहुत बढ़ गई थी।

टाइफाइड बुखार काम करने वालों की संख्या बराबर घटाता जा रहा था और अब उसे यह एक नया शिकार मिला। मगर पावेल के तगड़े जिस्म ने रोग का बहुत मुकाबला किया और लगातार पांच रोज तक उसके अन्दर इतनी ताकत रही कि वह कंकरीट के फर्श पर बिछे हुए अपने पुआल के बिस्तरे से उठा और दूसरे काम करने वालों के संग-संग काम में शरीक हुआ। मगर अब बुखार ने उसके ऊपर काबू पा लिया था। और अब न तो गरम जाकट, न फियोदोर के उपहार के फ़ेल्ट जूते, जिन्हें वह पाले के मारे हुए पैरों में पहने था, कुछ भी काम आये।

हर कदम के साथ उसके सीने में बड़ा तेज दर्द होता था। उसके दांत बज रहे थे। और उसकी आंखों के आगे धुंधलका-सा छाया हुआ था जिससे तमाम पेड़ उसे घूमते नजर आते थे।

बड़ी मुश्किल से वह किसी-किसी तरह अपने पैरों को घसीटता हुआ स्टेशन पहुंचा। वहां पर उसे असाधारण हलचल दिखाई दी जिससे कि वह रुक गया और अपनी बुखार से भारी आंखों पर जोर देते हुए उसने देखा कि माल के खुले हुए डब्बों की एक लम्बी गाड़ी यहां से वहां तक प्लेटफार्म पर खड़ी है। गाड़ी में जो लोग आये थे, वे उन डब्बों से छोटी लाइन के इंजन, रेल की पटरियां और स्लीपर उतार रहे थे। पावेल लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ा और भहरा कर गिर पड़ा। उसका सिर जमीन से जा टकराया और उसे भयानक दर्द महसूस हुआ और उसके जलते हुए गालों को बर्फ की ठंडक मिली जो उसे अच्छी मालूम हुई।

कई घंटे बाद लोगों ने उसे वहां पड़े देखा और उठा कर बारक में ले आये। उसकी सांस भारी चल रही थी और उसे अपने आसपास की चीजों का कोई होश न था। बख्तरबन्द गाड़ी में से एक कम्पाउंडर को बुलाया गया और उसने बतलाया कि पावेल को निमोनिया और टाइफाइड है। उसे एक सौ छः डिग्री बुखार था। कम्पाउंडर ने उसके जोड़ों की सूजन और गर्दन पर के उसके जख्मों को भी देखा, मगर उसने कहा कि निमोनिया और टाइफाइट के मुकाबले में वे कुछ भी नहीं हैं। मरीज की जान लेने के लिए यह निमोनिया और टाइफाइड काफी हैं।

पांक्रातोव और दुबावा ने, जो शहर से आ गये थे, पावेल को बचाने के लिए कोई भी कोशिश उठा न रखी।

अल्योशा कोखान्स्की को, जो पावेल के ही शहर का आदमी था, यह भार सौंपा गया कि वह पावेल को उसके घर वालों के पास ले जाय।

कोर्चागिन की टीम के तमाम काम करने वालों की मदद से और खास तौर से खोलियावा की मदद से पांक्रातोव और दुबावा ने किसी तरह अल्योशा और बेहोश कोर्चागिन को भरे हुए रेलगाड़ी के डब्बे में घुसाया। मुसाफिरों को शक हो गया कि टाइफस का मामला है और उन्होंने इस बात के लिए बहुत जोर लगाया कि उन लोगों को अन्दर न आने दें। और यह भी धमकी दी कि वे रास्ते में ही मरीज को उठा कर रेलगाड़ी से बाहर फेंक देंगे।

खोलियावा ने अपनी बन्दूक उनकी नाक से अड़ा दी और गरज कर बोला: "इसकी बीमारी छुतही नहीं है! और यह इस गाड़ी पर जायगा ही, चाहे इसके लिए तुम लोगों को इसमें से उठा कर बाहर फेंक देना पड़े! और याद रखना जानवरो, अगर तुममें से किसी ने इसको हाथ भी लगाया तो मैं लाइन को खबर भेज दूंगा और तुम सबको गाड़ी से उतार कर जेल में डाल दिया जायगा। लो, अल्योशा, पावका की यह माउजर लो और जो भी आदमी कुछ गड़बड़ करे, उसे गोली से उड़ा दो," खोलियावा ने जोर देते हुए अपनी बात खतम की।

रेलगाड़ी भक-भक भाप छोड़ती हुई स्टेशन से रवाना हुई। पांक्रातोव दुबावा के पास गया जो वीरान प्लेटफार्म पर खड़ा था।

"तुम्हारा क्या खयाल है, यह बच जायगा?"

सवाल का कोई जवाब नहीं मिला।

"चलो मितियाई, इसका कोई इलाज नहीं है। अब हमीं को हर चीज की जवाबदेही करनी पड़ेगी। हमें रात भर में इन इंजनों को उतार लेना है और सवेरे हम उनको गरमाने की कोशिश करेंगे।"

खोलियावा ने लाइन पर के अपने तमाम चेका के दोस्तों को टेलीफोन किया और उनसे जोर देकर यह कहा कि वे इस बात का खयाल रखें कि बीमार कोर्चागिन को कहीं पर कोई गाड़ी से उतार न सके। उसे जब इस बात का पूरा आश्वासन मिल गया तभी वह सोने के लिए गया।

लाइन पर और आगे चल कर एक रेलवे जंकशन पर सुनहले बालों वाले एक अपरिचित नौजवान का शरीर स्टेशन से गुजरती हुई एक मुसाफिर गाड़ी के डब्बे से उतार कर प्लेटफार्म पर रख दिया गया। वह कौन था और काहे से मरा, यह किसी को मालूम न था। स्टेशन के चेका के लोग खोलियावा

के अनुरोध को याद कर भागे हुए डब्बे के पास गये, मगर जब उन्होंने देखा कि वह नौजवान मर चुका है, तो उन्होंने कहा कि लाश को मुर्दाघर पहुंचाया जाय और फौरन खोलियावा को बोयार्का टेलीफोन किया कि उसके उस दोस्त की मौत हो गई, जिसकी जान बचाने के लिए वह इतना चिन्तित था।

बोयार्का से कोमसोमोल की सूबा कमिटी के पास एक छोटा-सा तार कोर्चागिन की मौत की खबर देते हुए लिखा गया।

मगर इसी बीच अल्योशा कोखान्स्की ने बीमार कोर्चागिन को उसके घर वालों के हवाले किया और खुद बुखार का शिकार हो गया।

"९ जनवरी

"मेरे दिल में इतना दर्द क्यों होता है ? लिखने के लिए बैठने के पहले मैं जार-जार रोई। कौन इस बात का यकीन करेगा कि रिता रो भी सकती है और इतनी असह्य व्यथा से ? मगर क्या आंसू सदा कमजोरी की निशानी होते हैं। आज मेरे आंसू दिल को झुलसा देने वाले दर्द के हैं। आज इस विजय के दिन यह शोक क्यों आया—जब कि जाड़े-पाले की भयानक मुसीबतों पर जीत हासिल कर ली गई है, जब कि रेलवे स्टेशन उस अनमोल चीज, जलाने की लकड़ी, से अटे हुए हैं, जब कि मैं अभी-अभी इस विजय के उत्सव से लौटी हूं, शहर की सोवियत की बड़ी मीटिंग से जिसमें इस तामीरी काम के वीरों का सम्मान किया गया। यह विजय तो है, मगर इसके लिए दो आदमियों ने अपनी जानें दी हैं—क्लावीचेक और कोर्चागिन ने।

"पावेल की मौत ने मेरी आंखें खोल दी हैं और मैं इस सचाई को देख रही हूं कि वह मेरा इतना प्रिय था जितना कि मैंने कभी नहीं सोचा था।

"और अब मैं इस डायरी को बन्द करती हूं। मुझे शक है कि मैं फिर शायद कभी शुरू न कर सकूंगी। आज खारकोव एक चिट्ठी भेज रही हूं, जिसमें मैं उक्रेन के कोमसोमोल की केन्द्रीय कमिटी वाले काम के लिए अपनी स्वीकृति लिख दूंगी।"

बारह

मगर जवानी की जीत हुई। टाइफाइड पावेल का काम तमाम नहीं कर सका। चौथी बार उसने मौत की सरहद पार की और जिन्दगी को लौट आया। मगर अपने बिस्तर से उठने में उसे पूरा एक महीना लग गया। वह बिल्कुल पीला और कंकाल की तरह हड्डी-हड्डी हो गया था और कांपती

हुई टांगों से, बेहद कमजोरी से लड़खड़ाता कमरे को पार करता था और सहारे के लिए दीवार पकड़ लेता था। अपनी मां की मदद से वह खिड़की के पास पहुंचा और बड़ी देर तक वहां पर खड़ा-खड़ा सड़क को देखता रहा जहां पिघली हुई बर्फ के गाले शुरुआती वसन्त की धूप में चमक रहे थे। बर्फ का पिघलना अभी शुरू हो ही रहा था।

खिड़की के ठीक सामने पूरे पेट की एक गोरैया चेरी के पेड़ की एक शाख पर बैठी हुई अपने पंख फुला रही थी और पावेल को घबराई हुई आंखों से जल्दी-जल्दी और चुपके-चुपके देख लेती थी।

"अच्छा तो तुम और मैं आखिर जाड़े को पार कर ही आये ?" पावेल ने कहा और खिड़की के शीशे पर धीरे से उंगली मारी।

उसकी मां ने चौंक कर निगाह उठाई।

"वहां बाहर कौन है जिससे तुम बातें कर रहे हो ?"

"एक गोरैया...और लो अब वह उड़ भी गयी, शैतान कहीं की।" और थकी सी मुस्कराहट पावेल के चेहरे पर खेल गयी।

वसन्त के उभार पर आते-आते पावेल शहर वापिस जाने की बात सोचने लगा। अब उसमें चलने-फिरने लायक ताकत आ गयी थी, मगर कोई अज्ञात बीमारी उसको घुन की तरह खाये जा रही थी। एक रोज जब वह बागीचे में घूम रहा था, तो उसकी रीढ़ की हड्डी में ऐसा भयानक दर्द उठा कि उसके लिए खड़ा रहना मुश्किल हो गया। बड़ी मुश्किल से वह किसी तरह अपने पांव घसीट कर कमरे में वापिस पहुंचा। दूसरे रोज उसकी पूरी डाक्टरी जांच हुई। पावेल की पीठ की जांच करने पर डाक्टर को उसकी रीढ़ में एक गहरा गड्ढा मिला जिसे देख कर आश्चर्य से उसने कहा :

"यह घाव तुम्हें कहां लगा ?"

"रोवनी की लड़ाई में। हमारे पीछे की बड़ी सड़क को एक तीन इंची तोप ने फोड़ कर रख दिया था और तभी एक पत्थर आकर मेरी पीठ पर लगा था।"

"मगर तुम चलते-फिरते कैसे थे ? क्या इससे कभी तुम्हें कोई परेशानी नहीं हुई ?"

"नहीं। चोट लगने के एक-दो घंटे तक तो मैं नहीं उठ सका, मगर फिर सब ठीक हो गया और मैं अपने घोड़े पर सवार हो गया और मजे में मेरा काम चलता रहा। तब से यह पहली मर्तबा मुझे तकलीफ हुई है।"

उस गड्ढे की जांच करते वक्त डाक्टर का चेहरा बहुत गंभीर हो गया था।

"न भाई, यह बहुत बुरी चीज है। रीढ़ को इस तरह झकझोरा जाना उसे पसन्द नहीं। अच्छा हो कि यह कोई गड़बड़ी न करे और मामला खैरियत से गुजर जाय।"

डाक्टर ने अपने मरीज को कपड़ा पहनते समय हमदर्दी से और पीड़ा से देखा, पीड़ा जिसे छिपाना उसके बस में न था।

आर्तेम अपनी बीवी के घरवालों के यहां रहता था। उसकी बीवी स्त्योशा मामूली रूप-रंग की एक गरीब परिवार की किसान औरत थी। एक रोज पावेल अपने भाई से मिलने के लिए गया। एक धूल में लिथड़ा हुआ तिरपट आंख का लड़का उस छोटे-से गन्दे हाते में खेल रहा था। उसने पावेल को बड़ी देर तक घूरा और फिर नाक पोंछते हुए जवाब-तलब करने के स्वर में बोला :

"क्या चाहिए ? कौन जाने तुम चोर होओ ! फौरन यहां से चलते बनो नहीं तो मां तुम्हारी अच्छी तरह खबर लेगी !"

उस गन्दी सी पुरानी झोपड़ी की एक छोटी खिड़की खुली और आर्तेम ने बाहर झांका।

उसने पुकार कर कहा, "अन्दर चले आओ पावेल !"

एक बुड्ढी स्त्री जिसका चेहरा बहुत पुराने कागज की तरह पीला-पीला था, अंगीठी के पास काम कर रही थी। पावेल उसके पास से गुजरा तो उसने पावेल को ऐसी निगाहों से देखा जिसमें दोस्ती नहीं थी और वह अपने बर्तनों की खटर-पटर में फिर लग गयी।

दो लड़कियां, जिनकी रस्सी-जैसी चोटियां थीं, अंगीठी पर चढ़ गयीं और वहां से हब्शियों की तरह कुतूहल से मुंह फाड़ कर इस आगन्तुक को देखने लगीं।

आर्तेम मेज से लगी कुर्सी पर बैठा था और उसके चेहरे से जाहिर था कि उसे कुछ-कुछ परेशानी महसूस हो रही है। उसे यह बात मालूम थी कि न तो उसकी मां को यह शादी पसन्द थी और न उसके भाई को। उन लोगों की समझ में नहीं आता था कि क्यों आर्तेम, जिसका परिवार कई पीढ़ियों से मजदूरों का परिवार था, राजगीर की उस खूबसूरत लड़की गालिया से, जो दर्जीगीरी करती थी और जिससे तीन साल तक उसका इश्क चला था, सम्बंध तोड़ कर स्त्योशा जैसी एक कुन्दजहन, नासमझ औरत के साथ रहने लगा और क्यों उसने पांच जनों के कुनबे का रोटी कमाने वाला बनना मंजूर किया। अब उसकी हालत यह थी कि दिन भर रेलवे के कारखाने में खटने

के बाद उसे उजड़े हुए खेत में फिर से जान डालने के लिए हल लेकर जुटना पड़ता था।

आर्तेम को पता था कि पावेल, इस तरह मजदूरों की जमात छोड़ कर उसके शब्दों में 'मध्यवर्गी' लोगों के साथ आर्तेम के जा मिलने से असहमत था और इस वक्त वह गौर से देख रहा था कैसे उसका भाई उसके वातावरण और परिवेश का जायजा ले रहा है।

कुछ देर तक वे बैठे वैसी ही बेमानी-सी बातें करते रहे, जो अचानक मिल जाने वाले दो लोगों में यों ही हुआ करती हैं। थोड़ी ही देर बाद पावेल जाने के लिए उठा। मगर आर्तेम ने उसे रोक लिया।

"थोड़ी देर रुको, हमारे साथ खाना खाना। स्त्योशा जरा देर में दूध लेकर आयेगी। अच्छा तो तुम कल फिर चले जा रहे हो? अच्छा पावका, यह तो बताओ, क्या तुम्हें इस बात का पूरा यकीन है कि तुम्हारे अन्दर काफी ताकत आ गयी है?"

स्त्योशा अन्दर आई। उसने पावेल का अभिवादन किया। और आर्तेम से कहा कि उसके साथ खलिहान तक चले और वहां से कोई चीज उठा कर लाने में उसकी मदद करे। अब पावेल उस कमरे में उस चिड़चिड़ी बुढ़िया के साथ अकेला रह गया। खिड़की में से गिर्जाघर की घंटियों की आवाज आ रही थी। बुढ़िया ने अपने हाथ की संडसी रख दी और चिड़चिड़े स्वर में बड़बड़ाने लगी:

"हे भगवान, आग लगे इस घर के खटराग को, भगवान के स्मरण के लिए भी दो छन नहीं मिले!" उसने अपना शाल उतार लिया और इस आगन्तुक को उड़ती निगाहों से देखती हुई उस कोने में गई जहां देवी-देवताओं के चित्र वगैरह टंगे हुए थे, जिन पर वक्त ने कालिख पोत दी थी और जिन पर एक अजीव मुर्दनी सी छायी हुई थी। अपनी लकड़ी जैसी तीन उंगलियों से उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया।

अपने मुर्झाये हुए होठों से बुदबुदा कर कहा, "ऐ हमारे बाप, तू जो आसमान पर है, तेरा नाम पाक माना जाय!"

वह आवारा छोकरा बाहर हाते में एक काले, लटके हुए कान वाले सुअर पर सवार उचक रहा था। अपनी छोटी-छोटी नंगी एड़ियां उसने चुस्ती से सुअर के बगल में गड़ा रखी थीं और उसके खड़े हुए बालों से चिपटा हुआ चीख-चीख कर उस दौड़ते और हांफते हुए जानवर से कह रहा था: "हां पट्ठे, बढ़ा चल, बढ़ा चल!"

वह सुअर पागल की तरह हाते में दौड़ रहा था और जी-तोड़ कोशिश कर रहा था कि किसी तरह उस लड़के को गिरा दे। मगर वह तिरपट छोकरा मजबूती से उस पर सवार था।

बुढ़िया ने अपनी प्रार्थना बन्द की और खिड़की में से सिर निकाला।

"अरे चांडाल, उतर उस सुअर पर से, नहीं तो मैं मारते-मारते तेरी चमड़ी उधेड़ लूंगी! तेरी ठठरी बंधे नासपीटे!"

आखिरकार सुअर को कामयाबी मिली और उसने लड़के को, जिसने उसकी नाक में दम कर दिया था, अपनी पीठ पर से गिरा दिया और तब बुढ़िया सन्तुष्ट होकर अपनी मूर्तियों के पास लौटी और अपने चेहरे पर पवित्र धार्मिक भाव लाते हुए कहने लगी:

"तेरी बादशाहत जमीन पर हो...।"

उसी वक्त लड़का दरवाजे की देहलीज पर दिखाई दिया। आंसुओं से उसका चेहरा गंदा हो रहा था। आस्तीन से अपनी बराबर बढ़ती हुई नाक को पोंछते हुए और दर्द के मारे सिसकते हुए उसने रोने के स्वर में कहा:

"नानी, मिठा-आ-आ-ई!"

बुढ़िया गुस्से से लाल होकर उसकी तरफ मुड़ी।

"अरे हरामजादे, तिरछी आंख के भूत, देखता नहीं कि मैं प्रार्थना कर रही हूं? अभी देती हूं मैं तुझे मिठाई, शैतान की औलाद...!" कहते हुए उसने बेंच पर से कोड़ा उठाया। मगर देखते-देखते लड़का नौ-दो-ग्यारह हो गया। अंगीठी पर बैठी हुई दोनों नन्हीं-नन्हीं लड़कियां गुपचुप हंसने लगीं।

और बुढ़िया ने तीसरी बार प्रार्थना में अपना मन लगाया।

पावेल उठ खड़ा हुआ और बिना अपने भाई का इन्तजार किये बाहर निकल गया। बाहर का फाटक बन्द करते हुए उसने देखा कि बुढ़िया मकान की आखिरी खिड़की में से बड़ी शक की निगाहों से उसे देख रही है।

"पता नहीं आर्तेम के सिर पर कौन भूत सवार था जो उसे यहां घसीट लाया? अब जिन्दगी भर के लिए वह यहीं बंध गया। स्त्योशा के हर साल एक बच्चा होगा और आर्तेम यहां पर वैसे ही चिपका रहेगा जैसे घूर पर गोबरैला चिपका रहता है। यह भी मुमकिन है कि वह रेल के कारखाने का काम छोड़ दे।" उस छोटे से कस्बे की उजड़ी हुई सड़कों पर चलते हुए पावेल के मन में यही उदास विचार आ रहे थे। "और मुझे देखो कि मैं अपनी जगह पर यह उम्मीद लिए बैठा था कि सियासी काम में उसकी दिलचस्पी पैदा करूंगा।"

पावेल को इस खयाल से बड़ी खुशी हो रही थी कि कल वह इस जगह को छोड़ कर बड़े शहर में चला जायगा जहां उसके तमाम वे दोस्त और साथी

मिलेंगे जिन्हें वह इतना प्यार करता है। बड़े शहर की जिन्दगी की हलचल, आदमियों का अन्तहीन तांता, उसकी ट्रामों और मोटर गाड़ियों की आवाजें, अपनी इन सब चीजों समेत शहर उसे चुम्बक की तरह अपनी तरफ खींचता था। मगर सबसे ज्यादा चाह उसके दिल में कारखाने की उन बड़ी-बड़ी ईंट की इमारतों की थी—कालिख से भरी हुई वर्कशाप, मशीनें, ट्रांसमिशन बेल्टों की धीमी गूंज। उसके मन में दैत्याकार फ्लाई व्हीलों को बेतहाशा घूमते देखने की, मशीन के तेल की गंध सूंघने की, तीव्र लालसा थी। ये सारी चीजें उसके व्यक्तित्व का अंश बन चुकी थीं। इसलिए स्वभावतः उसे उन चीजों की तलाश होती थी। यह छोटा सा, खामोश सा कस्बा, जिसकी सड़कों पर वह इस वक्त घूम रहा था, उसके मन को एक अजीब तरीके से उदास कर देता था। उसे अब इस बात पर हैरत नहीं होती थी कि अब वह इस जगह पर अजनबी सा महसूस करता है। यहां तक कि दिन के वक्त भी इस कस्बे में घूमना उसे एक मुसीबत सी मालूम होती थी। अपने मकान के सामने के चबूतरों पर बैठ कर गपशप करती हुई गृहणियों के पास से गुजरने पर यह मुमकिन नहीं था कि उनकी बेमतलब बातचीत के कुछ टुकड़े उसके कान में भी न पड़ते।

"यह कौन है, ठठरी-ठठरी निकल आई है ?"

"लगता है कि इसे तपेदिक हो गई थी। तपेदिक समझती हो, फेफड़े की बीमारी होती है।"

"जाकट इसने बड़ी बांकी पहन रखी है। कहीं से चुरा कर लाया है, चाहे शर्त बद लो।"

इसी तरह की और भी बहुत सी बातें वह सुनता। इन तमाम चीजों से पावेल का मन बुरी तरह घबरा गया था। ऐसी बातों को सुन कर उसे बड़ी नफरत मालूम होती थी।

बहुत जमाना हुआ जब से उसने इन चीजों से अपना सम्बंध एकदम जड़ से तोड़ लिया था। अब उसे कस्बे के मुकाबले में बड़े शहर से कहीं ज्यादा अपनापन महसूस होता था क्योंकि कुछ बड़े मजबूत और एक-दूसरे को ताकत देने वाले सम्बंध उसे बड़े शहर से जोड़े हुए थे—ये सम्बंध मेहनत और साथियों की दोस्ती और मिल कर लड़ने-मरने के थे।

अपने विचारों में डूबा-डूबा बेखबर-सा वह चौड़ के जंगलों में पहुंच गया और दोराहे पर थोड़ी देर के लिए खड़ा हो गया। उसके दाहिने हाथ पर वह पुराना जेलखाना था जिसे एक ऊंची सी, लोहे के नुकीले डण्डे निकली हुई चहारदीवारी जंगल से अलग करती थी। जेलखाने के और आगे अस्पताल की सफेद इमारतें थीं।

यही वह जगह थी जहां जल्लाद के फंदे ने वालिया और उसके साथियों की जिन्दगी का गला घोंट दिया था। पावेल उस जगह पर खामोश खड़ा रहा, जहां पर फांसी की टिकटी रह चुकी थी। फिर धीरे-धीरे चढ़ाई तक गया और चढ़ाई पार कर नीचे उतरा और उस छोटे से कब्रिस्तान पर पहुंच गया जहां क्रांति के दुश्मनों के आतंक राज के शिकार अपनी सामूहिक समाधियों में पड़े हुए थे।

प्यार भरे हाथों ने कब्रों पर सनोवर की शाखें बिछा रखी थीं और कब्रिस्तान के चारों तरफ एक साफ-सुथरी हरी सी बाड़ी बना दी थी। चढ़ाई की चोटी पर खड़े हुए चीड़ के दरख्त सीधे और छरहरे थे और नये-नये घास ने ढलवान पर एक हरी सी रेशमी कालीन बिछा रखी थी।

शहर के सिरे पर की बस्तियों में जैसे एक उदास और डरी हुई सी शान्ति थी। पेड़ एक-दूसरे से मानो कानाफूसियों में बातें करते थे और नई जिन्दगी पाई हुई धरती में से वसन्त की ताजी महक उठ रही थी...। इसी जगह पर पावेल के साथियों ने बहादुरी के साथ मौत का सामना किया था ताकि गरीबी में पैदा हुए लोगों की जिन्दगी खूबसूरत हो सके, उन लोगों की जिन्दगी जिनकी गुलामी पैदाइश के रोज से ही शुरू होती थी।

पावेल ने धीरे-धीरे अपना हाथ उठाया और टोपी उतार ली और एक गहरी उदासी उसके भीतर-बाहर व्याप गयी।

आदमी की सबसे बड़ी दौलत उसकी जिन्दगी होती है, और जीने के लिए आदमी को बस एक ही जिन्दगी मिलती है। उसे इस तरह अपनी जिन्दगी जीनी चाहिए ताकि उसे मन-ही-मन इस दुख की यंत्रणा को न सहना पड़े कि उसने अपनी जिन्दगी के साल यों ही गुजार दिये हैं, ताकि उसे इस जिल्लत की आग में न जलना पड़े कि उसका बीता हुआ जमाना नीचे गिरा और ओछा था। उसे इस तरह जीना चाहिए ताकि मरते वक्त वह यह कह सके कि मैंने अपनी सारी जिन्दगी, अपनी सारी शक्ति संसार के पवित्रतम कार्य में लगाई है—मानव जाति की आजादी की लड़ाई में लगाई है। और आदमी को अपनी जिन्दगी के एक-एक क्षण का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि कौन जाने कब कोई अचानक बीमारी या करुण दुर्घटना बीच ही में उसकी जिन्दगी के सूत को काट दे।

यही बातें सोचता-सोचता कोर्चागिन मड़ कर कब्रिस्तान से चल दिया।

घर पर उसकी मां दुखी मन से अपने बेटे के जाने की तैयारी कर रही थी। पावेल ने देखा कि वह उससे अपने आंसू छिपाने की कोशिश कर रही है।

आखिरकार उसने बड़ी हिम्मत करके कहा, "पावलुशा, फिर सोच देखो, शायद तुम यहां रुक सको ? मैं बुड्ढी हुई, इस तरह से अकेले रहना मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। देखो न, चाहे कितने बच्चे किसी के हों, वे सब बड़े होकर छोड़ कर चले जाते हैं। भला बताओ तुम्हें शहर भागने की क्या जरूरत है ? यहां पर भी तो तुम रह सकते हो या कहीं ऐसा तो नहीं है कि शहर की किसी छोकरी से तुम्हारा मन लग गया हो ? तुम सब कभी अपनी बुड्ढी मां को कुछ नहीं बताते। तमाम लड़कों का यही हाल होता है। आर्तेम ने कभी मुझ से एक शब्द नहीं कहा और जाकर शादी करके बैठ रहा। तुम तो उससे भी गये गुजरे हो। मैं तो तुम्हें तभी देखती हूं जब तुम बीमार या घायल होते हो," उसकी मां ने एक साफ-सुथरे झोले में उसका थोड़ा-सा सामान रखते हुए धीमे से शिकायत के लहजे में कहा।

पावेल ने मां के कंधे पकड़ कर उसे अपनी तरफ खींचा और कहा :

"मां, मेरे लिए किसी छोकरी से मन लगाने का सवाल नहीं पैदा होता ! क्या तुम नहीं जानती कि चिड़िया अपनी जाति का ही साथी ढूंढ़ती है ? और क्या तुम कहोगी कि मैं उस तरह का लड़का रहा हूं जो तितलियों के पीछे भागता है ?"

उसकी मां बरबस मुस्करा पड़ी।

"नहीं मां, मैंने वचन दिया है कि जब तक दुनिया के तमाम थैलीशाहों का नाश नहीं हो जाता, मैं लड़कियों से दूर ही रहूंगा। शायद तुम कहोगी कि यह तो जरा लम्बी प्रतीक्षा है। मगर नहीं मां, अब इन थैलीशाहों के दिन गिने हुए हैं। जल्दी ही जनता का राज कायम हो जायगा और तब तुम्हारे जैसे बुड्ढे लोग, जिन्होंने जिन्दगी भर मेहनत-मजदूरी की है, इटली जा सकेंगे। तुम जानती हो इटली कहां है ? इटली समुद्र किनारे एक खूबसूरत गरम देश है। वहां पर जाड़ा नहीं पड़ता, मां। हम तुमको अमीरों के महलों में रखेंगे और तुम लोग आराम से धूप खाना और अपनी बूढ़ी हड्डियों को विश्राम देना और हम लोग इस बीच जाकर अमरीका के थैलीशाहों का सफाया करेंगे।"

"बेटा, यह एक अच्छी परियों की कहानी है, मगर मैं शायद वह दिन देखने के लिए जिन्दा नहीं रहूंगी।...तुम बिलकुल अपने दादा की तरह हो। वह जहाज पर काम करते थे और उनके भी दिमाग में हमेशा तरह-तरह के खयालात भरे रहते थे। बिलकुल आवारा आदमी थे वह, खुदा उनकी रूह को सलामत रखे ! उनकी कहानी सेवास्तोपोल की लड़ाई से खतम हुई और वह एक हाथ और एक टांग गंवा कर घर लौटे। उन्होंने उनके सीने पर दो क्रॉस लटका दिये, और दो चांदी के तमगे। उन्होंने बहुत अच्छी उम्र पाई और खूब

बूढ़े होकर मरे, मगर मरे भयानक गरीबी में। मिजाज के भी बहुत तेज थे, अपनी बैसाखी से उन्होंने किसी अफ़सर के सिर पर वार कर दिया और फिर इस जुर्म में एक साल तक जेल की हवा खाई। तब उनके फोजी क्रॉस भी किसी काम न आये। सच कहती हूं कि तू बिलकुल अपने दादा पर पड़ा है, हू-ब-हू।''

''वह सब तो ठीक है मां, मगर क्या हम लोग ऐसे उदास ढंग से विदा होंगे एक-दूसरे से ? मुझे मेरा अकार्डियन तो दे। मैंने बहुत दिनों से उसे नहीं छुआ।''

पावेल ने बाजे के सीप के बने पर्दे पर सिर झुका लिया और बजाने लगा। उसकी मां सुनती रही और हैरान होकर उसके संगीत के अन्दर पैदा होने वाले उस नये गुण के बारे में सोचती रही, वह गुण जो पहले नहीं था और अब पता नहीं उसमें कहां से आ गया था। पहले वह इस तरह कभी नहीं बजाता था। पहले उसकी धुनों में बेहद मस्ती रहती थी, एक तरह का मतवालापन, एक नशा सा जिसके लिए पावेल कस्बे भर में मशहूर था। वह चीज अब चली गयी थी। उसकी उंगलियों में अब भी वही ताकत और वही सफाई थी, मगर वह जो संगीत निकालती थी, वह कहीं ज्यादा गहरा और भावों के ऐश्वर्य से भरपूर होता था।

पावेल अकेला ही स्टेशन गया।

उसने अपनी मां को घर पर ही रुकने के लिए राजी कर लिया क्योंकि वह जानता था कि स्टेशन पर की विदाई उसके लिए असह्य हो जायगी।

गाड़ी का इन्तजार करती हुई भीड़ बेतहाशा गाड़ी के अन्दर घुसी और एक रेलपेल सी मच गयी। पावेल चढ़ कर एक सबसे ऊंची बर्थ पर बैठ गया और वहां से नीचे के मुसाफिरों का चीखना-चिल्लाना और बेहद आवेश में बहस-मुबाहसा करना और हाथों से इशारा करना देखता रहा।

हस्बेमामूल आज भी गठरी-मोटरी के अम्बार लगे हुए थे, मगर जल्दी-जल्दी उन्हें सीटों के नीचे सरका कर नजर की ओट कर दिया गया।

रेलगाड़ी ने जब कुछ रफ्तार पकड़ी तो शोरगुल थोड़ा थमा और मुसाफिरों ने दत्तचित होकर पेट-पूजा शुरू की।

पावेल थोड़ी देर में सो गया।

कीव पहुंच कर पावेल फौरन शहर के बीचोबीच क्रेश्चातिक स्ट्रीट की तरफ चल दिया। धीरे-धीरे उसने पुल को पार किया। सब कुछ पहले ही जैसा था, कुछ भी नहीं बदला था। चिकनी-चिकनी रेलिंगों को हाथ लगाते

हुए उसने पुल को पार किया। पुल से नीचे उतरने के पहले वह जरा देर तक थमा। पुल पर चिड़िया का पूत भी नहीं था। रात का असीम विस्तार उसकी मुग्ध आंखों के सामने बड़ा शानदार दृश्य उपस्थित कर रहा था। क्षितिज अंधेरे के मखमली पर्दों में लिपटा हुआ था और तारे जलते-बुझते जलते-बुझते चमक रहे थे। और नीचे, जहां धरती किसी अदृश्य विन्दु पर आकाश से मिलती थी, शहर की लाखों रोशनियां अंधेरे में चमक रही थीं।...

बहस के दौरान में लोगों की आवाजें चढ़ जाती थीं जिससे रात की निस्तब्धता भंग होती थी और पावेल का ध्यान टूट जाता था। कोई इधर आ रहा था। पावेल ने बलात अपनी आंखें शहर की रोशनियों से हटाई और सीढ़ियां उतरने लगा।

एरिया स्पेशल डिपार्टमेंट में ड्यूटी पर तैनात आदमी ने पावेल को बताया कि जुखराई को शहर छोड़े बहुत दिन हो गये।

उस आदमी ने इस बात का निश्चय करने के लिए कि यह नौजवान वाकई जुखराई का दोस्त है, पावेल से बहुत खोद-खोद कर सवाल किये और अन्त में उसे बतलाया कि फियोदोर को तुर्किस्तान के मोर्चे पर काम करने के लिए ताशकन्द भेजा गया है। इस खबर से पावेल को इतनी उलझन हुई कि वह और भी तफसील की बातें पूछे बगैर फौरन मुड़ा और चल दिया। उसके ऊपर थकान का एक दौरा सा पड़ा जिसने उसे ड्योढ़ी पर बैठ कर सुस्ताने के लिए मजबूर कर दिया।

एक ट्राम घड़घड़ाती हुई गुजर गई और सड़क उसकी आवाज से गूंज उठी। न जाने कितने लोग उसके पास से गुजरे। पावेल ने औरतों की मस्त हंसी के कहकहे सुने, तरह-तरह की आवाजें सुनीं—गूंजती हुई भारी आवाज, किसी नौजवान की तेज पतली आवाज और किसी बुड्ढे की घरघराती हुई आवाज। तेजी से भागती हुई भीड़ का यह ज्वार थमने में नहीं आता था। तेज रोशनी से चमकती हुई ट्रामें, आंख को चौंधिया देने वाली मोटरों की हेडलाइट की तेज रोशनियां, पास के किसी सिनेमा के फाटक पर तेजी से चमकती हुई बिजली की रोशनियां...और सब जगह लोग ही लोग जिनकी बातचीत की अनवरत गूंज से सड़क भरी हुई थी। यह था एक बड़ा शहर रात के वक्त!

फियोदोर के चले जाने की खबर से उसने अपने दिल में जो दर्द महसूस किया था, वह सड़क के इस शोरशराबे में हलका पड़ गया। अब वह कहां जाय? सोलोमेंका में उसके दोस्त रहते थे, मगर सोलोमेंका बहुत दूर था। यहां से पास ही यूनिवर्सिटी स्ट्रीट पर के उस मकान की एक झलक उसे मिली थी। वह क्यों न वहीं चला जाय? जरूर, यही ठीक होगा। आखिरकार

फियोदार के बाद जिस कामरेड को देखने की उसके दिल में सबसे ज्यादा चाह थी, वह रिता थी। और शायद अकिम के यहां रात गुजारने का भी कोई बन्दोबस्त हो जाय।

उसने दूर से ही मकान के सिरे वाली खिड़की में रोशनी देखी। अपने आवेग को दबाते हुए उसने मकान का भारी ओक की लकड़ी का बना दरवाजा खोला। कुछ पल वह वहीं ड्योढ़ी पर खड़ा रहा। रिता के कमरे से आवाजें आ रहीं थीं और कोई गिटार बजा रहा था।

"ओ हो, तो अब वह गिटार की इजाजत देती है, इसका मतलब है कि अब उतनी सख्ती नहीं है," उसने अपने मन में कहा। फिर धीमे से दरवाजे पर दस्तक दी और अपने मन के आवेग को दबाने के लिए होंठ काटने लगा।

घुंघराली लटों वाली एक नौजवान औरत ने दरवाजा खोला। उसने सवाल करती हुई आंखों से कोर्चागिन को देखा।

"आप किसको चाहते हैं?"

वह दरवाजा खोले खड़ी रही और कमरे के अन्दर की एक झलक पावेल को मिली जिससे उसको लगा कि आना बेकार हुआ।

"क्या मैं उस्तिनोविच से मिल सकता हूं?"

"वह यहां नहीं हैं। पिछली जनवरी में वह खारकोव चली गई और सुनती हूं कि अब वह मास्को में हैं।"

"कामरेड अकिम यहां रहते हैं या वह भी चले गये?"

"कामरेड अकिम भी अब यहां नहीं हैं। अब वह ओडेसा के कोमसोमोल के मंत्री हैं।"

अब पावेल के पास इसके सिवा कोई चारा न था कि लौट पड़े। शहर लौटने का उसका सारा उत्साह और खुशी अब ठंडी पड़ गई थी।

अब फौरी सवाल यह था कि रात कहां गुजारी जाय।

"चाहो तो ऐसे दोस्तों की तलाश में, जो अब यहां नहीं हैं, तुम अपनी टांगों को थका-थका कर चूर कर डालो," उसने अपनी निराशा की घूंट पीते हुए बड़बड़ा कर अपने मन में कहा। फिर भी उसने एक बार और अपनी किस्मत अजमाने का फैसला किया। देखूं, पांक्रातोव अब यहां रहता है या नहीं! वह जहाजी मजदूर घाट के पास रहता था जो कम से कम सोलोमेंका से तो ज्यादा पास पड़ता था।

पांक्रातोव के घर पहुंचते-पहुंचते वह थक कर चूर हो गया था। पावेल ने उस दरवाजे पर, जिस पर कभी पीला रोगन पोता गया था, दस्तक देते हुए अपने मन में इस बात का पक्का निश्चय किया, "अगर वह भी यहां नहीं

हो, तो फिर मैं और किसी की तलाश नहीं करूंगा। मैं किसी किश्ती के नीचे घुस कर वहीं रात गुजार दूंगा।"

दरवाजा एक बूढ़ी औरत ने खोला जिसने ठुड्डी के नीचे अपने सिर की रूमाल की गांठ लगा रखी थी। यह पांक्रातोव की मां थी।

"इग्नात घर पर है मां ?"

"अभी-अभी आया है।"

उसने पावेल को नहीं पहचाना और पीछे मुड़ कर आवाज दी, "इग्नात, तुमसे कोई मिलने आया है।"

पावेल उसके पीछे-पीछे कमरे में गया और अपने सामान का थैला फर्श पर रख दिया। पांक्रातोव ने जो मेज पर बैठा खाना खा रहा था, जल्दी से गर्दन मोड़ कर आने वाले को देखा।

उसने कहा, "अगर तुम्हें मुझसे काम है, तो कुछ देर बैठो। तब तक मैं कुछ पेट-पूजा कर लूं। सबेरे से मैंने कुछ नहीं खाया है," कहते हुए उसने लकड़ी का एक बड़ा चमचा उठाया।

पावेल एक तरफ एक टूटी कुर्सी पर बैठ गया। उसने अपनी टोपी उतार ली और अपनी पुरानी आदत के अनुसार उसी टोपी से माथा पोंछा।

"क्या सचमुच मैं इतना बदल गया हूं कि इग्नात भी मुझे नहीं पहचान पाता ?" उसने अपने आपसे सवाल किया।

पांक्रातोव ने एक-दो चमचा खाना मुंह में डाला मगर चूंकि आगन्तुक कुछ बोला नहीं, उसने गर्दन मोड़ कर उसको देखा।

"कहो-कहो किस परेशानी में हो ?"

उसके हाथ में रोटी का टुकड़ा था और उसको पकड़े-पकड़े उसका हाथ हवा में टंगा रह गया। उसने अपने मिलने वाले को अचरज से आंखें मुल-मुलाते हुए घूरा।

"अरे...यह क्या ?...जरा सोचो तो आज यह कौन...!"

पांक्रातोव के सुर्ख चेहरे पर उस घबराहट और हैरत को देख कर पावेल से न रहा गया और वह जोर से हंस पड़ा।

पांक्रातोव जोर से चीखा, "पावका ! मगर हम तो सोचते थे कि तुम्हारा टिकट कट गया। एक मिनट रुको तो, जरा फिर से अपना नाम बतलाना ?"

पांक्रातोव की चीखों को सुन कर उसकी बड़ी बहन और मां बगल के कमरे से दौड़ी हुई आईं। उन तीनों ने पावेल के ऊपर सवालों की तब तक झड़ी लगा दी, जब तक कि उन्हें पूरी तरह इस बात का सन्तोष नहीं हो गया कि यह और कोई नहीं, पावेल कोर्चागिन ही है।

घर के सब लोगों के सो जाने के बहुत बाद तक पांक्रातोव पिछले चार महीने की घटनाओं खुलासा पावेल को देता रहा।

"जार्की और मितियाई पिछले जाड़े में खारकोव चले गये। और जानते हो कहां गये दोनों? कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी में। हां-हां कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी में! उसके तैयारी कोर्स में उनको जगह मिली। पहले हम लोग पन्द्रह जन थे। तुम्हारे इस खादिम ने भी दाखिले के लिए एक अर्जी दे दी थी। मैंने सोचा कि अच्छा रहेगा, दिमाग में पड़ा हुआ कुछ भूसा खारिज होगा। और क्या तुम इस बात का यक़ीन करोगे कि परीक्षा बोर्ड ने मुझे फेल कर दिया!"

इस चीज की याद करके पांक्रातोव ने गुस्से से उंह किया और अपनी बात जारी रखी:

"पहले तो सब कुछ बड़े मजे में चलता रहा। मेरी सभी बातें ठीक थीं: मेरे पास पार्टी कार्ड था, काफी दिन मैं कोमसोमोल में रह चुका था, मेरे पिछले जमाने के रेकार्ड में कोई बुरी वात न थी। मगर जब सियासी जानकारी की बात आई तो मैं मुसीबत में पड़ गया।

"मेरे और परीक्षा बोर्ड के एक दूसरे कामरेड के बीच बहस छिड़ गई। जरा सोचो तो उसने यह कैसा छोटा-सा बेहूदा सवाल मुझ से कर दिया: 'बतलाओ कामरेड पांक्रातोव, दर्शन-शास्त्र के बारे में तुम क्या जानते हो?' भाई सच बात तो यही थी कि मुझे दर्शन के बारे में खाक-बला कुछ भी नहीं मालूम था। लेकिन हमारे साथ घाट पर एक लड़का काम किया करता था। वह व्याकरण के स्कूल का विद्यार्थी था और आगे चल कर आवारा हो गया था और यों ही मजे के लिए उसने घाट पर मजदूरी करनी शुरू कर दी थी। हां, तो उसने मुझे ग्रीस के कुछ अक्लमन्द लोगों की जो बात बतलाई थी मुझे याद थी। उसने मुझे बतलाया था कि वे लोग हर चीज का जवाब जानते थे और उन्हें दार्शनिक कहा जाता था। कोई एक आदमी था जिसका नाम ठीक से याद नहीं, डियोजिनीज या ऐसा ही कुछ नाम था, सारी जिन्दगी वह एक पीपे में रहता आया...उनमें सबसे तेज आदमी था वह जो चालीस बार बात को साबित कर सकता था कि काला सफेद होता है और सफेद काला। जमाने के ठग थे सब, घाघ, समझे न? हां तो मुझे उस विद्यार्थी की बात याद थी और मैंने अपने मन में कहा: 'अच्छा तो यह मुझे लंगी लगाने की कोशिश कर रहा है।' मैंने परीक्षक को चमकती हुई आंखों से अपनी तरफ देखता पाया और मैंने उसको अच्छी डांट पिलाई। मैंने कहा, 'दर्शनशास्त्र बिलकुल धोखाधड़ी है और मैं उसके साथ बिलकुल समझौता करने के लिए तैयार नहीं हूं। हां पार्टी का इतिहास हो तो उसकी बात और है, उसमें जरूर मुझे बहुत दिलचस्पी होगी।' मेरा कहना था कि उन्होंने मुझको

वो-वो लगाई कि मैं क्या बताऊं। उन्होंने मुझसे पूछा कि दर्शनशास्त्र के बारे में सब बेसिरपैर की बातें किसने मेरे दिमाग में घुसेड़ दी। तब मैंने उनको उस विद्यार्थी की बात बतलाई और कुछ बातें जो उसने मुझसे कही थी, मैंने उगल दीं। फिर तो भाई कमीशन के सारे लोगों के पेट में हंसते-हंसते बल पड़ गये। वे लोग मुझ पर ही तो हंस रहे थे। लिहाजा मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ। मैंने कहा, 'तुम मुझे बेवकूफ समझते हो क्या?' और कमरे के बाहर निकल गया।

"बाद में उस परीक्षक ने सूबा कमिटी में जाकर मुझे पकड़ा और पूरे तीन घंटे तक मुझे लेक्चर पिलाया। गरज मालूम यह हुआ कि उस विद्यार्थी के दिमाग में तमाम बातें उल्टी-पुल्टी भरी थीं। अब मुझे ऐसा लगता है कि दर्शनशास्त्र बिलकुल ठीक चीज है और बहुत जरूरी है।

"दुबावा और जार्की इम्तहान में पास हो गये। मितियाई पढ़ाई में हमेशा बहुत अच्छा था मगर जार्की मुझसे कुछ ज्यादा अच्छा नहीं है। जरूर उसके वीरता के पदक ने उसका बेड़ा पार कर दिया होगा। बहरहाल, मैं तो यहीं का यहीं रह गया। उन लोगों के चले जाने के बाद मुझे यहीं घाट पर प्रबंध का काम दे दिया गया—मुझे माल के घाटों का सहायक प्रधान बना दिया गया। मैं हमेशा मजदूर जवानों की तरफ से मैनेजरों से झगड़ा किया करता था और अब मैं खुद मैनेजर हूं।

"अब अगर मुझे कोई आलसी या सनकी आदमी मिलता है, तो मैं मैनेजर और कोमसोमोल के मंत्री दोनों की हैसियत से उसकी मुसीबत कर देता हूं। मेरी आंख में वह धूल नहीं झोंक सकता। अच्छा अपने बारे में तो अब मैं बस करता हूं। तुम्हें बतलाने को और अब रहा ही क्या? अकिम के बारे में तुम्हें मालूम ही है, पुराने लोगों में अब सिर्फ तुफ्ता ही सूबा कमिटी में बाकी बचा है। अब भी वह अपना वही पुराना काम कर रहा है। तोकारेव सोलोमेंका की पार्टी की जिला कमिटी का मंत्री है। तुम्हारा कम्यून का साथी ओकुनेव कोमसोमोल की जिला कमिटी में है। तालिया राजनीतिक शिक्षा विभाग में काम करती है। स्वेतायेव कारखाने में तुम्हारा वाला काम करता है। मैं उसे बहुत अच्छी तरह नहीं जानता। बस सूबा कमिटी में जब-तब हमारी मुलाकात हो जाती है। वह काफी दिमाग वाला आदमी मालूम होता है। मगर सबसे जरा अलग-थलग रहता है। आना बोहार्ट की याद तुम्हें है? वह भी सोलोमेंका में है। वह पार्टी की जिला कमिटी की महिला विभाग की प्रधान है। बाकी लोगों के बारे में मैंने तुम्हें बतला दिया है। हां पावलुशा, पार्टी ने बहुत से लोगों को पढ़ने के लिए भेजा है। सारे पुराने काम

करने वाले सूबे के सोवियत और पार्टी स्कूल में पढ़ने जाते हैं। मुझको उन्होंने अगले साल भेजने का वादा किया है।"

आधी रात कब की बीत चुकी थी जब वे सोने गये। दूसरे रोज पावेल के उठने के पहले पांक्रातोव घाट पर चला गया था। उसकी बहिन दुसिया ने, जो बड़ी खूबसूरत लड़की थी और अपने भाई से बहुत मिलती-जुलती थी, पावेल को चाय दी और उसका जी बहलाने के लिए पूरे वक्त बात करती रही। पांक्रातोव का बाप, जो जहाज का इंजीनियर था, घर पर नहीं था।

पावेल ने बाहर निकलने का इरादा किया तो दुसिया ने उसे याद दिलाया : "भूलना मत, रात के खाने पर हम लोग तुम्हारा इन्तजार करेंगे।"

पार्टी की सूबा कमिटी में हमेशा की तरह खूब हलचल थी। सामने का दरवाजा पूरे वक्त खुलता और बन्द होता रहता। गलियारों और दफ्तरों में भीड़ लगी हुई थी और प्रबंध विभाग के दरवाजे के भीतर से टाइपराइटरों के खटखटाने की मद्धिम आवाज आ रही थी।

पावेल किसी पहचानी हुई शक्ल की तलाश में गलियारे में कुछ देर यों ही घूमता रहा। मगर जब उसे कोई भी अपना परिचित न मिला, तो वह सीधे मंत्री से मिलने के लिए चला गया। मंत्री नीली सी रूसी कमीज पहने एक बड़ी सी मेज के पीछे बैठा हुआ था। पावेल के अन्दर दाखिल होने पर उसने एक बार नजर उठाकर देखा और फिर से लिखने लगा।

पावेल उसके सामने एक कुर्सी पर बैठ गया और अकिम के उत्तराधिकारी की रूप-रेखा को परखने लगा।

"मुझसे क्या काम है ?" मंत्री ने, जो ऊंचे गले की कमीज पहने हुए था, अपना लिखना खतम करके उससे पूछा।

पावेल ने उसको अपनी कहानी सुनाई।

"कामरेड, करना अब यह है कि सदस्यता की सूची में मुझे एक बार फिर से जिन्दा करना है। और फिर मुझे रेलवे के कारखाने में भेज दिया जाय," उसने अपनी बात खतम करते हुए कहा, "उचित आदेश आप दे दीजिए।"

मंत्री अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुका।

उसने कुछ हिचकिचाते हुए जवाब दिया, "हम तुमको सदस्यों की सूची में फिर से रख तो लेंगे, इसमें तो कोई कहने की बात ही नहीं। मगर तुम्हें कारखाने में भेजने में जरा दिक्कत होगी। वहां पर स्वेतायेव है। वह सूबा कमिटी का मेम्बर है। तुम्हारे लिए हमको कुछ और काम ढूंढ़ना होगा।"

कोर्चागिन ने अपनी आंखें छोटी करते हुए कहा :

"मैं स्वेतायेव के काम में कोई दखलन्दाजी नहीं करना चाहता। मैं अपने पेशे का काम करना चाहता हूं, कोई पार्टी मंत्री का काम तो चाहता नहीं। और चूंकि मेरी सेहत अब भी जरा खराब है, इसलिए मैं आप से दरखास्त करूंगा कि मुझे और कोई काम न दें।"

मंत्री ने उसकी बात मान ली। कागज के एक टुकड़े पर उसने कुछ शब्द घसीट कर लिखे।

"इसे कामरेड तुफ्ता को दे देना, वह सारा बन्दोबस्त कर देंगे।"

कार्यकर्ता विभाग में पावेल ने तुफ्ता को अपने सहायक को डांटते पाया। पावेल एक-दो मिनट तक उन दोनों की गरमा-गरम बातचीत सुनता खड़ा रहा। मगर जब उसने देखा कि उसके जल्दी खत्म होने के कोई आसार नहीं हैं, तो उसने बीच ही में उसकी वक्तृता को काट दिया।

"अपनी बहस फिर खतम कर लेना तुफ्ता। मेरे कागजात ठीक करने के लिए यह देखो तुम्हारे लिए एक पत्र है।"

तुफ्ता बात को न समझते हुए कभी उस कागज को देखता और कभी कोर्चागिन को। आखिरकार बात उसकी समझ में आई।

"ओह जरा रुकना तो! तो तुम मरे नहीं? वाह रे, मगर बताओ किया क्या जाय? सदस्यों की सूची में से तुम्हारा नाम काट दिया गया। मैंने खुद तुम्हारा कार्ड केन्द्रीय कमिटी को लौटा दिया। इतना ही नहीं, पार्टी की मर्दुमशुमारी में से भी तुम बाहर रहे हो और कोमसोमोल की केन्द्रीय कमिटी के सरकुलर के अनुसार वे लोग जो मर्दुमशुमारी में नहीं आये, उन्हें कोमसोमोल के बाहर समझ लिया गया। इसलिए अब अकेली सूरत यह है कि तुम फिर नये सिरे से बाकायदा सदस्यता के लिए अर्जी दो।" तुफ्ता ने ऐसे लहजे में बात कही जैसे वह किसी की बात सुनने के लिए तैयार न हो।

पावेल की त्योरी चढ़ गई।

"अब भी तुम्हारे वही पुराने ढंग हैं? तुम हो तो नौजवान आदमी, मगर बूढ़े से बूढ़े, खूसट से खूसट कानूनी चूहे से भी गये-गुजरे हो। वोलोदका, कब तुम्हें समझ आयेगी।"

तुफ्ता ऐसे उछल पड़ा जैसे किसी पिस्सू ने उसे काट लिया हो।

"बराय मेहरबानी मुझे लेक्चर न दीजिए। यहां का चार्ज मेरे जिम्मे है। सरकुलर में जो आदेश दिये जाते हैं, वह उनका पालन करने के लिए है, उल्लंघन करने के लिए नहीं। और तुम चूहा कह कर मेरा अपमान कर रहे हो, इसका मजा मैं तुम्हें चखाऊंगा।"

तुफ्ता ने बहुत धमकी के लहजे में अपनी बात कही थी, जैसे वह अभी कुछ कर गुजरेगा। अपनी बात कह कर उसने ऐसा इशारा किया कि जैसे

मुलाकात अब खतम हो गई और फिर सामने की बन्द डाक के ढेर को अपनी तरफ खींचा।

पावेल धीरे-धीरे दरवाजे की तरफ बढ़ा, मगर फिर कुछ याद करके वापिस लौटा और तुफ्ता के सामने पड़े हुए मंत्री के पत्र को उठा लिया। तुफ्ता ने उसे गौर से देखा। कार्यकर्ता विभाग के इस क्लर्क में अजीब कोई बात थी जो उतनी ही नाखुशगवार थी जितनी कि बेवकूफी से भरी हुई। वह बूढ़े आदमी की तरह बदमिजाज और छोटी-छोटी बातों को लेकर अड़ने वाला था। उसके बड़े-बड़े कान जैसे हरदम खड़े रहते थे कि कब कोई बात हो और वह उलझ पड़े।

पावेल ने शान्त मगर मजाक उड़ाती हुई आवाज में कहा, "अच्छा तुम मुझको इसके लिए दोष दे सकते हो कि मैंने मेम्बरी के तुम्हारे तमाम आंकड़े उलट-पुलट दिये हैं। मगर जरा मुझको बतलाओ कि तुम ऐसे लोगों को कैसे डांट सकते हो जो पहले से बिना बाकायदा नोटिस दिये मर गये हों? आखिर को कोई आदमी चाहे तो बीमार पड़ सकता है, या मर सकता है, अगर उसके जी में आये। और मैं तो शर्त बद सकता हूं कि तुम्हारे सरकुलर में इसके बारे में कुछ भी नहीं लिखा होगा।"

तुफ्ता का सहायक अपनी तटस्थता को अब और कायम नहीं रख सका और हो-हो-हो करके जोर से हंस पड़ा।

तुफ्ता की पेन्सिल की नोक टूट गई और उसने उसे उठाकर फर्श पर फेंक दिया। मगर इसके पहले कि वह अपने प्रतिपक्षी को कोई जवाब दे सके, बहुत से लोग बातें करते और हंसते हुए कमरे में घुस आये। उनमें ओकुनेव भी था। लोगों ने जब पावेल को पहचाना, तो सब में बड़ी खलबली मची और फिर पावेल से सवाल पर सवाल होने लगे। चन्द मिनट बाद नौजवानों की एक दूसरी टोली आई। उनमें ओल्गा यूरेनेवा भी थी। पावेल को फिर से देखने का उसे ऐसा झटका लगा और इतनी खुशी हुई कि वह जैसे बेसुध होकर बड़ी देर तक उसके हाथ को पकड़े खड़ी रही।

और पावेल को दुबारा अपनी कहानी नये सिरे से सुनानी पड़ी। अपने साथियों की सच्ची खुशी, उनकी खुली हुई दोस्ती और सहानुभूति, आजिजी से उनका हाथ मिलाना और दोस्ताना अन्दाज में उसकी पीठ को थपथपाना—इस सबसे पावेल थोड़ी देर के लिए तुफ्ता को भूल गया।

मगर जब उसने अपनी कहानी खतम की और तुफ्ता के साथ हुई बातचीत का हाल साथियों को बतलाया तो सब बहुत बिगड़ उठे। ओल्गा प्रलयंकर आंखों से तुफ्ता को देखती हुई मंत्री के दफ्तर में चली गई।

"चलो हम लोग नेज्दानोव के यहां चलें," ओकुनेव ने जोर से कहा,

"वह इसकी अकल ठिकाने लगा देगा।" और यह कहते हुए उसने पावेल का कन्धा पकड़ा और इन नौजवान दोस्तों की पूरी टोली ओल्गा के पीछे-पीछे मंत्री के दफ्तर में जा पहुंची।

"इस तुफ्ता को यहां के काम पर से हटा कर वहां घाट पर पांक्रातोव के नीचे कुली का काम देना चाहिए, साल भर के लिए। वड़ा जलील नौकरशाह है!" ओल्गा ने विफरते हुए कहा।

सूबा कमिटी का मंत्री मुस्कराता हुआ ओकुनेव, ओल्गा और दूसरों की इस बात को सुनता रहा कि तुफ्ता को कार्यकर्ता विभाग से अलग कर देना चाहिए।

उसने ओल्गा को आश्वासन दिया, "इसमें तो कोई बहस ही नहीं कि कोर्चागिन को फिर से सूची में शामिल कर लिया जायगा। अभी इस वक्त उसे एक नया कार्ड दे दिया जायगा। मैं तुम से सहमत हूं कि तुफ्ता कानून की लकीर का फकीर है। वही उसकी खास कमजोरी है। मगर यह मानना होगा कि उसने अपना काम बुरा नहीं किया है। जहां-जहां मैंने काम किया है, मैंने देखा है कि कोमसोमोल के कार्यकर्ताओं के काम के आंकड़े भयंकर गड़बड़ी में रहे हैं, वे कतई ऐसे नहीं रहे हैं कि उनकी किसी भी एक संख्या पर भरोसा किया जा सके। हमारे कार्यकर्ता विभाग में आंकड़े काफी अच्छी तरह रखे गये हैं। तुम लोग खुद जानते हो कि तुफ्ता अक्सर बैठा रात की रात काम करता रहता है। मैं इस सवाल को ऐसे देखता हूं: तुफ्ता को अलग करना आसान है लेकिन अगर उसकी जगह कोई मस्त लापरवाह आदमी ले लेता है, जिसे आंकड़े-वाकड़े रखने का हाल कुछ भी नहीं मालूम, तो नौकरशाहियत से तो हमें छुटकारा मिल जायगा, मगर फिर कोई नियम या व्यवस्था भी नहीं रहेगी। उसे अपनी जगह पर रहने दो। मैं उसे अच्छी तरह डांट दूंगा। फिलहाल इससे काम चल जायगा और आगे चल कर देखा जायगा।"

ओकुनेव ने बात मानते हुए कहा, "अच्छा, ठीक कहते हो, उसको रहने ही दो। चलो पावलुशा, हम लोग सोलोमेंका चलें। वहां पर आज रात क्लब में पार्टी की मीटिंग है। किसी को अभी यह नहीं मालूम कि तुम लौट आए हो। सोचो, सबको कितनी हैरानी होगी जब हम ऐलान करेंगे—अब कोर्चागिन तकरीर करेगा। सचमुच पावलुशा, तुम बड़े गजब के आदमी हो जो नहीं मरे। भला बताओ, तुम मर गये होते तो मजदूर वर्ग के किस काम के होते।" कहते हुए ओकुनेव ने अपने दोस्त को अपनी बांह में भर लिया और गलियारे में उसे ले चला।

"तुम चलोगी ओल्गा?"

"जरूर, जरूर।"

कोर्चागिन पांक्रातोव के यहां रात के खाने पर नहीं लौटा। सच बात तो यह है कि सारे दिन वह वहां नहीं गया। ओकुनेव सोवियत की इमारत में अपने कमरे में उसे ले गया। अच्छा से अच्छा खाना जो वह इकट्ठा कर सकता था, उसने पावेल को दिया और फिर अखबारों का एक ढेर और जिला कोमसोमोल ब्यूरो की मीटिंगों की कार्यवाही की रिपोर्ट की दो मोटी-मोटी फाइलें उसके सामने रखते हुए बोला :

"ये सब देख जाओ। तुम जब टाइफस लिए पड़े थे और अपना वक्त खराब कर रहे थे, उस बीच बहुत-सी बातें हो गई हैं। मैं शाम को लौटूंगा और तब हम लोग साथ-साथ क्लब चलेंगे। अगर थक जाओ तो लेट जाना और थोड़ा सो लेना।"

अपनी जेबों में तमाम कागजात और जरूरी दस्तावेज भरते हुए (ओकुनेव को सिद्धान्ततः पोर्टफोलियो के इस्तेमाल से नफरत थी और वह उसके बिस्तर के नीचे उपेक्षित पड़ा था) जिला कमिटी के मंत्री ने उससे विदा ली और बाहर निकल गया।

जब वह शाम को लौटा तो कमरे के फर्श पर तमाम अखबार बिखरे हुए थे और ढेर भर किताबें बिस्तर के नीचे से बाहर निकाल कर रखी हुई थीं। पावेल बिस्तर पर बैठा हुआ केन्द्रीय कमिटी की आखिरी चिट्ठियों को पढ़ रहा था। ये चिट्ठियां उसे अपने दोस्त की तकिया के नीचे मिली थीं।

ओकुनेव ने बनावटी गुस्से से चिल्लाते हुए कहा, "क्या हालत कर रखी है तुमने मेरे कमरे की! ऐ कामरेड! जरा रुको तो! यह तुम क्या कर रहे हो! ये गुप्त कागजात हैं जो तुम पढ़ रहे हो! यही होता है, मैंने खामखाह तुम जैसे लम्बी नाक वाले आदमी को अपने कमरे में घुसने दिया।"

पावेल ने मुस्कराते हुए खत उठा कर अलग रख दिया और बोला, "यह खत गुप्त नहीं था मगर वह वाला जिसे तुम लैम्प के ऊपर लगाये हुए हो, उस पर जरूर 'गोपनीय' लिखा हुआ है। यह देखो, सिरे के आस-पास वह तमाम जल गया है।"

ओकुनेव ने कागज के जले हुए टुकड़े को लैम्प पर से निकाला, उसके शीर्षक को देखा और माथा ठोंक लिया।

"तीन दिन से मैं इस कम्बख्त के पीछे हैरान हो रहा हूं। समझ ही में नहीं आता था कि कहां चला गया। अब मुझे याद आया। वोलिन्तसेव ने इसी कागज से अभी उस रोज लैम्प का शेड बनाया था और फिर खुद ही तमाम जगह उसको तलाश करता फिरा था।" ओकुनेव ने बहुत सावधानी से उस कागज को मोड़ा और गद्दे के नीचे ठूंस दिया और पावेल को जैसे विश्वास दिलाते हुए कहा, "थोड़ी देर बाद हम सब ठीक-ठाक कर लेंगे, अभी चलो

जल्दी-जल्दी कुछ खा लें और भाग कर क्लब चलें। अपनी कुरसी मेज के और पास खींच लो पावेल।"

एक जेब में से उसने अखबार में से लिपटी हुई एक लम्बी-सी सूखी मछली निकाली और दूसरी जेब से डबलरोटी के दो टुकड़े। अखबार उसने मेज पर बिछा दिया, मछली का सिर पकड़ा और मेज के सिरे पर उसे अच्छी तरह ठोंका।

मेज पर बैठ कर, अपने जबड़ों का इस्तेमाल बहुत जोश के साथ करते हुए, खुशमिजाज ओकुनेव ने पावेल को तमाम खबरें सुनाईं। वह बीच-बीच में मजाक भी करता जाता था।

क्लब में ओकुनेव कोर्चागिन को पिछले दरवाजे से स्टेज पर ले गया। उस बड़े हॉल के एक कोने में, स्टेज के दाहिनी तरफ पियानो के पास, तालिया लगुतिना और आना बोर्हार्ट रेलवे बस्ती के कुछ कोमसोमोलों के साथ बैठी हुई थीं। रेलवे कारखाने का कोमसोमोल मंत्री वोलिन्तसेव आना के सामने बैठा हुआ था। उसका चेहरा अगस्त महीने के सेब की तरह सुर्ख था और उसके बाल और भवें पके हुए धान के रंग की थीं। उसकी बहुत ही फटी-पुरानी चमड़े की जाकट किसी जमाने में काली थी।

उसकी बगल में पियानो के ढक्कन पर लापरवाही से कुहनी टिकाए हुए स्वेतायेव बैठा था। वह एक खूबसूरत नौजवान था जिसके बादामी रंग के बाल और बहुत ही खूबसूरत तराशे हुए ओंठ थे। उसकी कमीज गले पर खुली हुई थी।

उस टोली के पास पहुंचते हुए ओकुनेव ने आना को कहते सुना :

"कुछ लोग हैं जो इस बात के लिए अपना एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं कि नये मेम्बरों का दाखिला मुश्किल से मुश्किल होता जाय। उन्हीं लोगों में स्वेतायेव भी है।"

"कोमसोमोल कोई सैर-सपाटे का मैदान नहीं है, वह कोई पिकनिक की जगह नहीं है," स्वेतायेव ने किसी की कुछ परवाह न करते हुए कहा।

"वह देखो निकोलाई!" ओकुनेव को देख कर तालिया चिल्लाई, "आज रात वह कैसा चमक रहा है जैसे पालिश किया हुआ समोवार!"

ओकुनेव को सबों ने खींच कर अपने घेरे में ले लिया और उस पर सवालों के गोले दागने लगे।

"तुम कहां रहे?"

"अब मीटिंग की कार्रवाई शुरू करनी चाहिए।"

ओकुनेव ने सबको खामोश करने के लिए हाथ उठाया ।

"और कुछ देर इन्तजार करो दोस्तो। तोकारेव के आते ही हम लोग मीटिंग शुरू कर देंगे ।"

"वह लो, वे भी आ गये," आना ने कहा ।

पार्टी की जिला कमिटी के मंत्री तोकारेव चले आ रहे थे। उनसे मिलने के लिए ओकुनेव दौड़कर उनकी तरफ बढ़ा : "आओ काका, चल कर स्टेज के पीछे मेरे एक दोस्त से मिलो। मगर एक झटके के लिए अपने को तैयार कर लो !"

"क्या मामला है ?" बुड्ढे ने अपने सिगरेट का कश लेते हुए अपनी भारी आवाज में गुर्रा कर कहा, मगर ओकुनेव तो आस्तीन पकड़ कर उन्हें खींचे लिये जा ही रहा था ।

...ओकुनेव ने चेयरमैन की घंटी इतने जोर से बजाई कि मीटिंग में आये हुए सबसे बातूनी लोग भी चुप हो गये ।

तोकारेव के पीछे, सदाबहार लताओं के फ्रेम में से **कम्युनिस्ट घोषणापत्र** की रचना करने वाली महान प्रतिभा मार्क्स का शेर बबर जैसा सिर सभा को देख रहा था । ओकुनेव मीटिंग की कार्यवाही शुरू कर रहा था । और इस बीच तोकारेव की आंखें बराबर कोर्चागिन पर लगी हुई थीं जो बगल में खड़ा हुआ अपने बुलाये जाने का इन्तजार कर रहा था ।

"साथियो ! इसके पहले कि हम एजेंडे पर के संगठनात्मक सवालों पर बहस करें, यहां पर एक साथी ने बोलने की इजाजत मांगी है। मेरा और तोकारेव का प्रस्ताव है कि उस साथी को बोलने का मौका दिया जाय ।"

हॉल में से श्रोताओं की सहमति का स्वर उठा और तब ओकुनेव ने कहा :

"मैं पावका कोर्चागिन को तकरीर करने के लिए बुलाता हूं !"

हॉल के सौ लोगों में से कम से कम अस्सी लोग कोर्चागिन को जानते थे और जब उसकी वह परिचित आकृति फुटलाइट के सामने आकर खड़ी हुई और उस लम्बे पीले नौजवान ने बोलना शुरू किया, तो श्रोताओं ने बेइन्तहा खुशी से आवाजें करनी और जोर-जोर से तालियां बजानी शुरू की ।

'प्यारे साथियो !"

कोर्चागिन की आवाज सधी हुई थी, मगर वह अपने भावावेश को छिपा नहीं पा रहा था ।

"अच्छा तो दोस्तो, मैं तुम लोगों की कतार में अपनी जगह लेने के लिए फिर लौट आया हूं । मुझे बड़ी खुशी है कि मैं एक बार फिर तुम्हारे बीच आ सका । मैं यहां अपने बहुत से दोस्तों को देख रहा हूं। मेरा खयाल है कि सोलोमेंका की कोमसोमोल में अब पहले से तीस फीसदी ज्यादा लोग हैं । अब

वर्कशापों और यार्डों में सिगरेट लाइटर बनना बन्द हो गया है और रेलवे की कब्रिस्तान में से मशीनों की बड़ी-बड़ी लाशें मरम्मत के लिए आने लगी हैं। इसका मतलब है कि हमारे देश की नई जिन्दगी शुरू हो रही है और वह अपनी सारी ताकत को इकट्ठा कर रहा है। यह सचमुच एक ऐसी चीज है जिसके लिए जीने में भी मजा है ! ऐसे वक्त भला मैं कैसे मर सकता था !" खुशी की मुस्कराहट से कोर्चागिन की आंखें चमकने लगीं।

लोगों की तालियों और प्यार के बोलों के तूफान के बीच पावेल मंच से उतरा और आना व तालिया के पास चला गया। अपनी तरफ बढ़े हुए हाथों से उसने हाथ मिलाया और फिर तमाम दोस्तों ने सरक कर अपने बीच उसके लिए जगह बना ली। तालिया ने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया और कस कर दबाया। आना की आंखें अब भी हैरत से फैली हुई थीं, उसकी बरौनियां धीमे-धीमे फड़क रही थीं और जिन आंखों से वह पावेल को देख रही थी, उनमें हार्दिक स्वागत का भाव था।

तेजी से दिन बीतते जा रहे थे। मगर उनके बीतने में कोई एकरसता न थी क्योंकि हर दिन अपने साथ कोई नई चीज लाता था और सवेरे अपने दिन के काम की योजना बनाते वक्त पावेल कुछ क्षोभ से इस बात को लक्ष्य करता था कि सचमुच दिन बहुत छोटा होता है और बहुत कुछ जो करने का उसने इरादा किया था, उसे वह नहीं कर सका।

पावेल ओकुनेव के साथ रहने चला गया था। वह रेलवे के कारखाने में असिस्टेंट इलेक्ट्रिक फिटर का काम कर रहा था।

पावेल कोमसोमोल के नेतृत्व से कुछ दिन के लिए हटना चाहता था और इस सवाल को लेकर ओकुनेव से उसकी बड़ी बहस हुई और उस लम्बी बहस के बाद ही ओकुनेव इस चीज के लिए राजी हुआ।

ओकुनेव ने आपत्ति की थी, "हमारे पास यों भी बहुत कम आदमी हैं और तुम वर्कशाप में जाकर पड़े रहने की बात करते हो। मुझे यह न बतलाओ कि तुम बीमार हो। टाइफस के बाद मैं खुद एक महीने तक छड़ी लेकर लंगड़ाता घूमा था। पावका, तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं, जरूर इसमें कोई बात है। बताओ क्या बात है, झट बोल दो," ओकुनेव ने आग्रह करते हुए कहा।

"तुम ठीक कहते हो कोलिया, है, और भी कोई बात। मैं पढ़ना चाहता हूं।"

ओकुनेव आवेश में आकर चिल्लाया, "मैंने कहा था न ! मैं समझ गया

था कि जरूर कोई बात है ! तुम क्या यह सोचते हो कि मेरे दिल में पढ़ने की ख्वाहिश नहीं है। मगर यह सरासर तुम्हारा स्वार्थीपन होगा। तुम चाहते हो कि हम लोग तो पहिए को अपना कंधा लगाएं और तुम बैठ कर पढ़ो ! न भाई यह नहीं होगा, कल से तुम्हें संगठन-कर्ता का काम शुरू करना होगा।"

मगर खैर एक लम्बी बहस के बाद ओकुनेव मान गया।

"ठीक है, मैं दो महीने तुमसे कुछ नहीं बोलूंगा। मगर मेरी भलमनसाहत, मेरी फरागदिली की दाद तुम्हें देनी होगी। मगर मेरा खयाल है कि स्वेतायेव से तुम्हारी नहीं बनेगी, वह जरा ज्यादा घमंडी है।"

पावेल के वर्कशाप में आ जाने से स्वेतायेव चौकन्ना हो गया था। उसे इस बात का पूरा यकीन था कि कोर्चागिन के आते ही नेतृत्व के लिए संघर्ष शुरू हो जायगा। उसके अहंकार को चोट लगी और उसने डट कर पावेल का मुकाबला करने का फैसला किया। मगर जल्दी ही उसने यह बात देख ली कि पावेल के बारे में ऐसा सोचना उसकी गलती थी। जब कोर्चागिन को मालूम हुआ कि उसको कोमसोमोल ब्यूरो का सदस्य बनाने की योजना है, तो वह सीधे कोमसोमोल के मंत्री के दफ्तर में गया और उसको इस बात के लिए राजी कर लिया कि इस सवाल को एजेंडे पर से हटा दे। ओकुनेव से उसकी जो बात हुई थी, उसी को उसने कारण के रूप में पेश किया। वर्कशाप के कोमसोमोल की सेल में पावेल राजनीतिक अध्ययन का एक क्लास लेता था। मगर ब्यूरो में काम करने की उसने कोई ख्वाहिश नहीं दिखलाई। सरकारी काम के बाकायदा नेतृत्व में चाहे उसका हिस्सा रहा हो या न रहा हो, लेकिन पावेल का असर सभी कामों में दिखाई दे रहा था। कई मौकों पर उसने अपने दोस्ताना, साथियों जैसे, सीधे-सरल ढंग से स्वेतायेव को मुसीबतों में से निकाला भी था।

एक रोज कारखाने में आकर स्वेतायेव को यह देख कर बहुत हैरत हुई कि कोमसोमोल सेल के तमाम मेम्बर और कोई तीन दर्जन गैर-पार्टी लड़के खिड़कियों को धोने में लगे हैं और मशीनों पर बरसों से जमी गन्दगी को साफ कर रहे हैं और गाड़ी भर-भर के कूड़ा-करकट बाहर यार्ड में फेंक रहे हैं। पावेल के हाथ में एक बड़ा-सा कूंचा था और उससे वह बेतहाशा सीमेंट के फर्श की सफाई किये जा रहा था जिस पर तमाम मशीन के तेल और ग्रीस के धब्बे थे।

स्वेतायेव ने पावेल से पूछा, "कहो, यह कैसी सफाई हो रही है ? यह कौन सा मौका है ?"

कोर्चागिन ने संक्षेप में जवाब दिया, "हम इस तमाम गन्दगी से हैरान आ गये हैं। बीस बरस से इस जगह की सफाई नहीं हुई, अब हम लोग हफ्ते भर में इसे चमका कर एकदम नया कर देंगे।"

स्वेतायेव ने अपने कंधे उचकाये और चला गया।

अपने वर्कशाप की सफाई से एलेक्ट्रीशियनों का जी नहीं भरा, तो उन्होंने कारखाने के हाते की भी सफाई में हाथ लगाया। वरसों से उस लम्बे-चौड़े हाते का इस्तेमाल कूड़े के ढेर की शक्ल में हो रहा था जहां पर तमाम इस्ते-माल से खारिज सामान फेंक दिया जाया करता था। गाड़ी के सैकड़ों पहिये और ऐक्सेल, जंग लगे लोहे के पहाड़, रेल की पटरियां, ऐक्सेल बॉक्स—हजारों टन लोहा वहां खुले आसमान के नीचे पड़ा जंग खा रहा था। मगर कारखाने के व्यवस्थापकों ने इन नौजवानों के काम को रोक दिया।

उन्होंने कहा, "हमारे सामने ज्यादा अहम मसले हैं। हाते की सफाई अभी कुछ दिन तक रुक सकती है।"

लिहाजा एलेक्ट्रीशियनों ने वर्कशाप के दरवाजे के सामने की थोड़ी सी जगह को पक्का कर दिया, दरवाजे के बाहर तार का एक पांव-पोश रख दिया और फिलहाल बात इतने पर ही छोड़ दी। मगर वर्कशाप के अन्दर काम के घंटों के बाद सफाई का काम बदस्तूर चलता रहा। जब एक हफ्ते वाद चीफ इंजीनियर स्त्रिज आया तो उसने वर्कशाप को खूब रोशन पाया। लोहे के डण्डे लगी बड़ी-बड़ी खिड़कियों से अब खूब रोशनी आ रही थी क्योंकि उन पर से धूल और तेल की मोटी-मोटी परतें अलग कर दी गई थीं। खिड़की से आती हुई रोशनी डीजेल इंजनों के पालिश किये हुए तांबे के हिस्सों पर चमक रही थी। मशीनों के भारी-भारी पुरजों पर हरे रोगन की पुताई चमक रही थी और किसी ने पहियों की तीलियों पर रोगन से पीले-पीले तीर भी वना दिये थे।

"अच्छा अच्छा..." स्त्रिज ने आश्चर्य से बुदबुदा कर कहा।

वर्कशाप के दूर के एक कोने में कुछ लोग अपना काम पूरा कर रहे थे। स्त्रिज उनके पास गया। रास्ते में उसे रंग का टिन ले जाते कोर्चागिन मिला।

इंजीनियर ने उसको रोक कर कहा, "जरा एक मिनट रुकना दोस्त। तुमने यहां जो कुछ किया है, मैं उससे पूरी तरह सहमत हूं। मगर तुम्हें यह रंग कहां से मिला? मैंने तो इस बात का कड़ा हुक्म दे रखा है कि मेरी इजाजत के बिना रंग इस्तेमाल न किया जाय? ऐसे कामों के लिए हम रंग बरबाद नहीं कर सकते। हमारे पास जितना कुछ है, उसकी जरूरत हमें अपने इंजनों के लिए है।"

"यह रंग हमने फेंके हुए डब्बों में से खुरच-खुरच कर निकाला है। इसमें हमारे दो दिन लगे, मगर हमने करीब पच्चीस पौंड रंग निकाल लिया। कामरेड इंजीनियर, हम लोग किसी भी नियम को तोड़ नहीं रहे हैं।"

इंजीनियर ने अब भी गुस्से का इजहार किया, मगर बात बदल गई थी। उसके चेहरे से जाहिर था कि कहने को उसके पास कुछ खास है नहीं।

"अच्छा, तो करो जो कर रहे हो। ठीक है। मगर यह वाकई बड़ी दिलचस्प बात है। इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है...क्या नाम...इस बात का कि वर्कशाप में सब लोग अपनी मरजी से सफाई में दिलोजान से लगे हुए हैं? मैं समझता हूं यह सब काम के घंटों के बाद ही हुआ होगा?"

कोर्चागिन ने इंजीनियर की आवाज में सच्ची हैरानी को लक्ष्य किया।

उसने कहा, "इसमें शक क्या है, काम के घंटों के बाद ही सब काम हुआ है। आपने क्या समझा था?"

"हां मगर..."

"कामरेड स्त्रिज, इसमें अचम्भे की ऐसी कोई बात नहीं है। आपसे यह किसने कहा कि बोल्शेविक गन्दगी को हाथ नहीं लगायेंगे और जैसा का तैसा पड़ा रहने देंगे? जरा रुकिए कुछ दिन और, जब तक कि हमारा यह मामला ठीक से चल नहीं निकलता, फिर आपको और भी बहुत-सी अचम्भे की चीजें देखने को मिलेंगी।"

और फिर इंजीनियर से अपने आपको बचाते हुए, ताकि रंग उछल कर उसके ऊपर न जा पड़े, कोर्चागिन आगे बढ़ गया।

पावेल हर शाम को पब्लिक लाइब्रेरी जाता था और बड़ी रात तक वहीं रहता था। तीनों लाइब्रेरियनों से उसकी दोस्ती हो गई थी और समझाने-बुझाने की अपनी तमाम काबलियत का इस्तेमाल करके उसने आजादी के साथ किताबों को लेने और पढ़ने का हक पा लिया था। वह ऊंचे-ऊंचे टांडों में सीढ़ी लगाकर वहां पर घंटों अपने पढ़ने की सामग्री की तलाश में एक के बाद दूसरी किताब के पन्ने पलटता रहता था। ज्यादातर किताबें पुरानी थीं। आधुनिक साहित्य सिर्फ एक छोटी सी अलमारी में था। कुछ थोड़े से गृह-युद्ध के पैम्फलेट, मार्क्स का 'कैपिटल', जेक लंडन का 'आयरन हील' और ऐसी ही कुछ और। पुरानी किताबों को टटोलते हुए उसे 'स्पार्टाकस' नाम की किताब मिली। उसने दो रात में उसको पढ़ डाला और पढ़ कर मैक्सिम गोर्की की किताबों की बगल में रख दिया। कुछ दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा—धीरे-धीरे ऐसी अच्छी किताबों के चुनाव करने का सिलसिला जिनमें कोई आधुनिक क्रान्तिकारी सन्देश हो।

लाइब्रेरियनों ने कोई आपत्ति नहीं की: उनके लिए सब कुछ बराबर था।

रेलवे वर्कशाप में कोमसोमोल की जिन्दगी शांत ढंग से चली जा रही थी कि अचानक एक ऐसी घटना हुई जिसे पहले लोगों ने महत्वहीन समझा। मरम्मत का काम करने वाले काहिल, चेचक-रू, चपटी नाक के कोस्त्या फिदिन ने,

जो सेल की ब्यूरो का मेम्बर था, एक बहुत कीमती विदेशी ड्रिल तोड़ दी थी, लोहे के टुकड़े पर चला कर। यह दुर्घटना सरासर लापरवाही का नतीजा थी। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो यह भी लगता था कि जैसे फिदिन ने जान-बूझ कर बदमाशी की हो।

सवेरे के वक्त यह घटना हुई थी। मरम्मत के बड़े फौरमैन खोदोरोव ने लोहे की एक पट्टी में कई सूराख करने के लिए कोस्त्या से कहा था। कोस्त्या ने पहले तो इनकार किया, मगर जब फोरमैन ने बहुत इसरार किया तो उसने लोहा उठा लिया और उसमें सूराख करने लगा। फोरमैन सबसे बड़ी कड़ी मेहनत लेता था, इसलिए मजदूर उसे पसन्द नहीं करते थे। पहले वह मेन्शेविक रह चुका था। कारखाने की सामाजिक जिन्दगी में वह कोई हिस्सा नहीं लेता था और कम्युनिस्ट युवक उसे पसन्द नहीं थे। मगर अपने काम का वह माहिर था और दिल लगा कर अपने फर्ज को पूरा करता था। खोदोरोव ने देखा कि कोस्त्या अपनी ड्रिल में तेल डाले बगैर उसको सूखा ही चला रहा है। उसने जल्दी से मशीन के पास जाकर कोस्त्या को रोका।

"तुम अंधे हो क्या ? इसी तरह ड्रिल इस्तेमाल करनी चाहिए !" उसने कोस्त्या को डांटते हुए कहा, क्योंकि उसे मालूम था कि इस तरह ड्रिल ज्यादा दिन नहीं चलेगी।

कोस्त्या ने पलट कर उसको जवाब दिया और फिर से लेथ को चालू कर दिया। डिपार्टमेंट के प्रधान से शिकायत करने के लिए खोदोरोव उसके पास गया। इसी बीच कोस्त्या, मशीन को चलता हुआ छोड़ कर, जल्दी से तेल की कुप्पी लाने के लिए भागा ताकि प्रधान के आते-आते सब कुछ एकदम ठीक हो जाय। तेल लेकर लौटने-लौटने तक में ड्रिल टूट चुकी थी। प्रधान ने फिदिन की रिपोर्ट की और मांग की कि उसको बर्खास्त कर दिया जाय। मगर कोमसोमोल की सेल ब्यूरो ने यह कह कर फिदिन का साथ दिया कि खोदोरोव सभी सक्रिय कोमसोमोल सदस्यों से चिढ़ता है। मैनेजमेंट ने फिदिन के बर्खास्त किये जाने पर जोर दिया और मामला वर्कशापों की कोमसोमोल ब्यूरो के सामने रखा गया। लड़ाई शुरू हो गई।

ब्यूरो के पांच में से तीन सदस्य इस राय के थे कि कोस्त्या को सरकारी तौर पर चेतावनी देकर दूसरे किसी काम पर लगा दिया जाय। स्वेतायेव उन तीन में से एक था। बाकी दो का खयाल था कि फिदिन को कोई भी सजा न मिलनी चाहिए।

इस मामले की बहस के लिए ब्यूरो मीटिंग स्वेतायेव के दफ्तर में बुलाई गई थी। एक बड़ी-सी मेज के इर्द-गिर्द, जिस पर लाल कपड़ा बिछा हुआ था, कई बेंच और स्टूल रखे थे, जिन्हें बढ़ई का काम करने वाले नौजवान कम्यु-

निस्टों ने बनाया था। दीवार पर लीडरों की तसवीरें थीं और रेलवे वर्कशाप का अपना झंडा मेज के पीछे एक पूरी दीवार पर फैला हुआ था।

स्वेतायेव अब पूरे वक्त कोमसोमोल का काम करता था। पेशे से वह खरादघर का आदमी था मगर अपनी संगठनात्मक योग्यता के कारण वह कोमसोमोल के एक ऊंचे पद पर पहुंच गया था। अब वह कोमसोमोल की जिला कमिटी की ब्यूरो का मेम्बर था और साथ ही सूबा कमिटी का भी मेम्बर था। एक मशीन के कारखाने के खरादघर में उसने काम किया था और रेलवे के कारखाने के लिए नया था। शुरू से ही उसने प्रबंध की बागडोर मजबूती से अपने हाथों में ले ली थी। स्वभाव से वह जरा ज्यादा आत्म-विश्वासी था और फैसले बहुत जल्दी दे देता था। इस कारण, उसने शुरू से ही कोमसोमोल के दूसरे सदस्यों की स्वतंत्र काम करने की योग्यता को मार दिया था। वह सब काम अपने ही हाथों से करने पर जोर देता था और जब नहीं कर पाता था तो अपने सहायकों को सुस्त और कामचोर कह कर उनकी लानत-मलामत करता था।

यहां तक कि दफ्तर की सजावट भी उसकी निजी निगरानी में हुई थी।

मीटिंग की कार्यवाही वह कमरे में रखी हुई अकेली गद्देदार आरामकुर्सी पर बैठा हुआ चला रहा था। यह कुर्सी क्लब से उठा कर लाई गई थी। यह एक बन्द मीटिंग थी। पार्टी संगठनकर्ता खोमुतोव ने अभी-अभी बोलने की इजाजत मांगी थी जब कि भीतर से दरवाजे पर दस्तक पड़ी। इस आवाज से स्वेतायेव के माथे पर बल पड़ गये। दुबारा दस्तक पड़ी। कात्या जेलेनोवा उठी और उसने दरवाजा खोला। देहलीज पर कोर्चागिन खड़ा था। कात्या ने उसे अन्दर आने दिया।

पावेल एक खाली सीट की तरफ बढ़ता जा रहा था कि स्वेतायेव ने उससे कहा :

"कोर्चागिन, यह ब्यूरो की बन्द मीटिंग है जिसमें सबको आने की इजाजत नहीं है।"

पावेल के चेहरे पर खून उतर आया और वह धीरे-धीरे घूम कर मेज के सामने खड़ा हो गया।

"मुझे मालूम है। फिदिन के मामले में आपकी क्या राय है, मुझे यह सुनने में दिलचस्पी है। मैं इस सिलसिले में कुछ कहना चाहता हूं। क्यों क्या मामला है, क्या आपको मेरे यहां रहने में आपत्ति है?"

"मुझे आपत्ति नहीं है, मगर तुमको जानना चाहिए कि बन्द मीटिंगें सिर्फ ब्यूरो मेम्बरों के लिए ही होती हैं। जितने ही ज्यादा लोग हो जाते हैं, मसले पर ठीक से बहस करके किसी नतीजे पर पहुंचना उतना ही मुश्किल हो जाता है। मगर जब तुम आ ही गये हो, तो यहां बैठ सकते हो।"

कोर्चागिन को कभी ऐसी उपेक्षा नहीं मिली थी। उसके माथे पर एक और धारी पड़ गई।

"यह सब शिष्टाचार किसलिए ?" खोमुतोव ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा। मगर कोर्चागिन ने हाथ के इशारे से उसे चुप कर दिया और बैठ गया। खोमुतोव ने फिर अपना कहना शुरू किया, "हां तो जो बात मैं कहना चाह रहा था, वह यह है। यह सच है कि खोदोरोव पुराने विचारों का आदमी है, मगर अनुशासन के लिए हमें कुछ न कुछ करना ही होगा। अगर तमाम कोमसोमोल वाले इसी तरह ड्रिलें तोड़ते रहे तो हमारे पास काम करने के लिए ड्रिलें रहेंगी ही नहीं। और इससे भी बड़ी बात यह है कि इस तरह हम पार्टी के बाहर के मजदूरों के सामने बुरा उदाहरण रखेंगे। मेरी राय में उस लड़के को सख्त चेतावनी देनी चाहिए।"

स्वेतायेव ने उसको बात खतम करने का मौका नहीं दिया और अपनी दलीलें देनी शुरू कर दी। दस मिनट गुजर गये। इस बीच कोर्चागिन ने भांप लिया कि हवा का रुख किस तरफ है। आखिरकार जब मामला वोट के लिए पेश किया गया, तो कोर्चागिन ने उठ कर बोलने की इजाजत मांगी। स्वेतायेव ने बहुत अनिच्छा से उसको बोलने की इजाजत दी।

"साथियो, फिदिन के मामले में मैं आपको अपनी राय देना चाहता हूं" पावेल ने बोलना शुरू किया। न चाहते हुए भी उसकी आवाज रूखी और कठोर सुनाई पड़ रही थी।

"फिदिन का मामला एक सिगनल है और हमको यह देखना है कि सबसे अहम चीज कोस्त्या की, अकेले उसकी, हरकत नहीं है। मैंने कल कुछ तथ्य इकट्ठा किये हैं।" पावेल ने अपनी जेब से एक नोटबुक निकाली। "ये आंकड़े मुझे हाजिरी का रजिस्टर रखने वाले से मिले। अब जरा गौर से सुनिए : हमारे कोमसोमोलों में तेईस फीसदी लोग पांच से लेकर पन्द्रह मिनट तक की देरी करके काम पर आते हैं। यह रोज का सिलसिला है। नियम सा बन गया है। सत्रह फीसदी लोग हर महीने एक या दो रोज बिलकुल काम पर आते ही नहीं। गैर-पार्टी मजदूरों में काम पर न आने वाले चौदह फीसदी हैं। साथियो, ये आंकड़े चाबुक की तरह हमारी पीठ पर पड़ते हैं। मैंने और भी कुछ आंकड़े जमा किये हैं। हमारे पार्टी मेम्बरों में चार फीसदी लोग महीने में एक रोज काम पर नहीं आते और चार फीसदी देर से आते हैं। गैर-पार्टी मजदूरों में ग्यारह फीसदी लोग महीने में एक रोज नहीं आते हैं और तेरह फीसदी लोग हर रोज देर से पहुंचते हैं। नब्बे फीसदी टूट-फूट के लिए नौजवान मजदूर जिम्मेदार होते हैं जिनमें सात फीसदी बिलकुल नये लोग हैं। इन आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि हम कोमसोमोल के लोग पार्टी मेम्बरों

और वयस्क मजदूरों के मुकाबले में बहुत बुरा काम कर रहे हैं। मगर सब जगह यही हालत नहीं है। खरादघर के काम का रेकार्ड बहुत अच्छा है, बिजली वाले भी कुछ खास बुरे नहीं हैं, मगर बाकी लोग ज्यादातर एक ही सतह पर हैं। मेरी राय में कामरेड खोमुतोव ने अनुशासन के बारे में जितना कहना चाहिए, उसका शतांश ही कहा है। तात्कालिक समस्या यह है कि इन टेढ़े-मेढ़े मामलों को कैसे सीधा किया जाय। मैं आप लोगों को जोश दिलाने के लिए यहां पर कोई तकरीर नहीं करना चाहता, मगर इतना जरूर कहूंगा कि इस लापरवाही और ढीलढाल को हमें बन्द करना ही होगा। पुराने मजदूर ईमानदारी से इस बात को मान रहे हैं कि वे अपने पूंजीपति मालिकों के लिए ज्यादा अच्छा काम किया करते थे। मगर अब तो हम खुद अपने मालिक हैं और बुरा काम करने के लिए कोई कारण नहीं है। बात सिर्फ एक कोस्त्या और दूसरे किसी मजदूर की नहीं है जिसे दोष देकर हम छुट्टी पा लें। हम सभी लोगों की गलती है कि हम ठीक से इस बुराई से लड़ने के बदले किसी न किसी बहाने से कोस्त्या जैसे मजदूरों की वकालत करते हैं।

"समोखिन और बुतिलियाक ने अभी-अभी यहां पर कहा है कि फिदिन अच्छा लड़का है, हमारे बेहतरीन लोगों में से है, आगे बढ़कर कोमसोमोल का काम करता है, वगैरह-वगैरह। क्या हुआ अगर उसके हाथ से एक ड्रिल टूट गई, किसी के भी हाथ से टूट सकती थी। खास बात यह है कि कोस्त्या हममें से एक है और फोरमैन नहीं है...मगर क्या कभी किसी ने खोदोरोव से बात करने की कोशिश की। इस बात को न भूलिए कि वह चाहे जितना बड़बड़ाये, उसके पीछे काम का तीस साल का तजुर्बा है! हम उसकी राजनीति की चर्चा नहीं करना चाहते। पर इस खास मामले में उसी का पक्ष मजबूत है, क्योंकि वह पार्टी के बाहर का होते हुए भी सरकारी जायदाद की फिक्र करता है और हम हैं कि कीमती-कीमती औजारों को तोड़े डाल रहे हैं। ऐसे सूरते हाल को आप क्या कहोगे? मैं समझता हूं कि हमें अभी पहला वार करना चाहिए और इस मोर्चे पर हमला बोल देना चाहिए।

"मैं प्रस्ताव करता हूं कि फिदिन को काम से जी चुराने और उत्पादन में अव्यवस्था फैलाने के अभियोग में कोमसोमोल से निकाल दिया जाय। दीवार के अखबार में इस मामले पर बहस होनी चाहिए और बिना इस बात से डरे कि इसका क्या नतीजा होगा, सारे तथ्य सम्पादकीय में दे देने चाहिए। हम मजबूत हैं, हमारे पास ऐसी शक्तियां हैं जिन पर हम भरोसा कर सकते हैं। कोमसोमोल के अधिकांश सदस्य अच्छे काम करने वाले हैं। उनमें से साठ बोयार्का में रह चुके हैं और वह बड़ी कठिन परीक्षा थी। उनकी मदद और उनके सहयोग से हम तमाम कठिनाइयों को सुलझा लेंगे। जरूरत

सिर्फ इस इस बात की है कि हम इस मसले पर अपने रवैये को बिलकुल बदल दें।"

कोर्चागिन आमतौर पर बहुत खामोश और चुप रहने वाला आदमी था, मगर इस वक्त वह इतने जोश से बोल रहा था कि स्वेतायेव को अचम्भा हुआ। असली पावेल को वह आज पहली बार देख रहा था। उसने इस बात को समझा कि पावेल ठीक बात कह रहा है, मगर सावधानी बरतने के खयाल से वह खुलेआम अपनी सहमति नहीं दिखलाना चाहता था। उसने कोर्चागिन के भाषण को इस रूप में लिया कि जैसे वह पूरे संगठन की सामान्य दशा की बड़ी कठोर आलोचना हो, मानो वह स्वेतायेव की शक्ति को कम करने की कोशिश हो और इसलिए उसने अपने प्रतिद्वन्दी को कुचल देने का फैसला किया। उसने अपना भाषण कोर्चागिन पर यह अभियोग लगाते हुए शुरू किया कि कोर्चागिन मेन्शेविक खोदोरोव का पक्ष ले रहा है।

यह तूफानी बहस-मुबाहसा तीन घंटे तक चला। बहुत रात गये आखिरी बात पर लोग पहुंचे। तथ्यों के निर्मम तर्क से हार कर और यह देख कर कि बहुमत कोर्चागिन के साथ हो गया है, स्वेतायेव ने एक गलत कदम उठाया। उसने जनवाद के नियमों का उल्लंघन करते हुए, वोट लेने के ठीक पहले, कोर्चागिन को कमरे से निकल जाने का आदेश दिया।

"बहुत अच्छा, मैं चला जाऊंगा मगर स्वेतायेव, तुम्हारा यह आचरण ठीक नहीं। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं कि अगर तुम अपनी बात पर अड़े रहे तो कल मैं इस मामले को जनरल मीटिंग के सामने रखूंगा और मुझे इस बात का पक्का यकीन है कि वहां पर तुम बहुमत को अपने साथ न ले जा सकोगे। स्वेतायेव, तुम्हारी बात ठीक नहीं है। कामरेड खोमुतोव, मेरा खयाल है कि यह आपका कर्तव्य है कि आप इस मामले को जनरल मीटिंग में पार्टी-ग्रुप के सामने उठाएं।"

स्वेतायेव ने उद्दण्डता से चीखते हुए कहा, "मुझे डराने की कोशिश मत करो। मैं खुद पार्टी-ग्रुप के सामने जा सकता हूं और मैं तुम्हें बतला दूं कि उनको तुम्हारे बारे में बतलाने के लिए भी मेरे पास कुछ बातें हैं। अगर तुम खुद काम नहीं करना चाहते, तो कम-से-कम दूसरों के काम में अड़ंगा तो न लगाओ।"

पावेल बाहर निकल गया। बाहर निकल कर उसने कमरे का दरवाजा बन्द किया और अपने जलते हुए माथे पर हाथ फेरा और खाली दफ्तर में से होता हुआ बाहर के दरवाजे की तरफ बढ़ा। सड़क पर पहुंच कर उसने एक गहरी सांस ली, एक सिगरेट जलाई और बातियेवा पहाड़ी के उस छोटे से घर की तरफ चल दिया जहां तोकारेव रहता था।

उस बुड्ढे मैकेनिक को उसने खाना खाते पाया।

तोकारेव ने पावेल को खाने के लिए बुलाते हुए कहा, "आओ, कहो क्या खबर है। दार्या, इस लड़के के लिए एक रकाबी में खिचड़ी ले आओ।"

तोकारेव की बीवी दार्या फोमीनिचना अच्छी लम्बी-तगड़ी औरत थी जब कि उसका पति नाटा और दुबला सा आदमी था। उसने एक रकाबी में ज्वार की खिचड़ी लाकर पावेल के सामने रख दी और अपने गीले होंठों को अपने सफेद एप्रन के छोर से पोंछती हुई बड़ी दयालुता से बोली, "शुरू करो बेटा!"

उन दिनों जब बूढ़ा तोकारेव रेलवे के कारखाने में काम करता था, पावेल अक्सर उनके यहां जाया करता था और इस बूढ़े दम्पत्ति के साथ उसने बहुत सी अपनी अच्छी शामें गुजारी थीं। मगर इस बार शहर में लौटने पर वह पहली मर्तबा तोकारेव के यहां गया था।

बुड्ढे मेकेनिक ने बड़े ध्यान से पावेल की कहानी सुनी। कहानी सुनते समय वह बराबर चम्मच से खाना खाता जा रहा था और बीच-बीच में बस थोड़ा सा हां-हूं कर लेता था। इससे ज्यादा कोई टीका-टिप्पणी उसने नहीं की। अपनी खिचड़ी खतम करके उसने अपनी मूंछ रूमाल से पोंछी और खखार कर गला साफ किया।

उसने कहा, "तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। इस सवाल को ठीक से उठाने का यही मौका है, अब और देर करना अच्छा न होगा। कारखाने में हमारे इलाके भर में दूसरी किसी भी जगह से ज्यादा कम्युनिस्ट हैं और हमें अपनी बात की शुरुआत इसी जगह से करनी चाहिए। अच्छा तो तुम में और स्वेतायेव में ठन गई? बहुत बुरी बात है। इसमें तो खैर शक नहीं कि उसमें जरा प्यादे से फरजी बनने वाले का घमंड है। मगर उससे क्या, तुम तो पहले सबके साथ निभा लिया करते थे? अच्छा यह तो बताओ कि कारखाने में तुम क्या काम करते हो?

"मैं एक डिपार्टमेंट में काम कर रहा हूं और आम तौर पर जहां भी कोई काम होता रहता है मैं उसमें जरूर रहता हूं। अपने सेल में मैं एक राजनीतिक स्टडी सर्किल चलाता हूं।"

"तुम ब्यूरो में नहीं हो?"

कोर्चागिन ने कुछ हिचकते हुए जवाब दिया:

"मैंने सोचा कि जब तक मेरी टांगों में ठीक से ताकत नहीं आ जाती, और इस खयाल से भी कि मैं कुछ पढ़ना-लिखना चाहता था, मैं अभी कुछ दिन बाकायदा नेतृत्व में कोई हिस्सा न लूंगा।"

"अच्छा तो यह बात है !" तोकारेव ने बात बुरी लगने के अन्दाज में कहा। "भाईजान, अगर आपकी तन्दुरुस्ती की बात न होती, तो मैंने आज आपकी खबर ली होती। मगर यह तो कहो कि अब कैसे हो ? पहले से कुछ ज्यादा ताकत महसूस करते हो ?"

"हां।"

"अच्छा, अब तुम जरा जी लगा कर काम में जुट जाओ। इधर-उधर की बात करने से कोई फायदा नहीं। और न इस तरह अलग-थलग बैठे रहना ही ठीक होगा। तुम अपनी जिम्मेदारी से मुंह चुराते हो और खुद भी इस बात को जानते हो। बात और कुछ नहीं है। अब कल से ही तुम्हें चीजों को ठीक करने में लग जाना होगा। ओकुनेव को मैं इसकी खबर दे दूंगा।" तोकारेव के स्वर से उसकी खीझ साफ व्यक्त हो रही थी।

"न बाबा, आप उससे कुछ न कहियेगा," पावेल ने जल्दी से आपत्ति करते हुए कहा, "मैंने खुद ही उससे कहा था कि मुझे कोई काम न दे।"

तोकारेव ने कुछ नाराजगी से सीटी बजाई।

"अच्छा तो तुमने कहा और उसने तुम्हें छोड़ भी दिया ? खैर जो है ठीक है, तुम कोमसोमोलों के साथ हम कर ही क्या सकते हैं...अच्छा बेटा तुम जरा मुझे अखबार पढ़ कर सुनाओगे, जैसे पहले सुनाया करते थे ? मेरी आंखें अब उतनी ठीक नहीं।"

कारखानों की पार्टी ब्यूरो ने कोमसोमोल की ब्यूरो के बहुमत के फैसले की तसदीक की और पार्टी और कोमसोमोल के ग्रुप मजदूरों के अनुशासन का उदाहरण रखने के महत्वपूर्ण और मुश्किल काम में लग गये। स्वेतायेव पर ब्यूरो में बहुत कस कर डांट पड़ी। उसने पहले तो बहुत बढ़-बढ़ कर बात की, मगर मंत्री लोपाखिन ने उसे बिल्कुल पस्त कर दिया। लोपाखिन अधेड़ आदमी था और उसके चेहरे पर एक अजीब मोम जैसा पीलापन था जिससे उसकी तपेदिक का पता चलता था जो उसे घुन की तरह खाये जा रही थी। आखिरकार मजबूर होकर स्वेतायेव ने अंशत: अपनी गलती कबूल की।

अगले रोज दीवार के अखबारों में कई लेख थे जिनसे रेलवे कारखानों में अच्छी-खासी सनसनी फैल गई। वे लेख जोर-जोर से पढ़े गये और उन पर गरमागरम बहसें हुईं और उसी शाम को नौजवानों की जो मीटिंग हुई उसमें हमेशा से कहीं ज्यादा उपस्थिति रही और सारी बातचीत लेखों में उठाई गई समस्याओं के सम्बंध में ही हुई।

फिदिन को कोमसोमोल से निकाल दिया गया और ब्यूरो में एक नये

मेम्बर को लिया गया और उसे राजनीतिक शिक्षा का भार दे दिया गया। यह नया मेम्बर था कोर्चागिन।

जिस वक्त मीटिंग में नेज्दानोव, इस नई परिस्थिति में रेलवे के कारखानों के सामने आये हुए नये कामों की रूपरेखा बतला रहा था, उस समय हॉल में असाधारण शान्ति थी।

मीटिंग के बाद स्वेतायेव ने कोर्चागिन को बाहर अपना इन्तजार करते हुए पाया।

पावेल ने कहा, "चलो हम लोग साथ-साथ चलें। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"किस चीज के बारे में ?" स्वेतायेव ने अप्रिय ढंग से पूछा।

पावेल ने उसकी बांह अपनी बांह में ले ली और चार-छ: गज आगे जाकर एक बेन्च के पास रुक गया।

"आओ बैठें थोड़ी देर," कहते हुए वह बैठ गया।

स्वेतायेव की सिगरेट का जलता हुआ सिरा कभी जोर से जल उठता था और कभी बुझने सा लगता था।

"स्वेतायेव, मुझसे तुम्हें क्या शिकायत है ?"

कुछ मिनट तक खामोशी रही।

"ओह, तो यह बात है ? मैंने सोचा था कि तुम मुझसे कुछ काम की बात करना चाहते होगे," स्वेतायेव ने आश्चर्य दिखाते हुए कहा, मगर उसकी आवाज कांप रही थी।

पावेल ने मजबूती से अपना हाथ स्वेतायेव के घुटने पर रख दिया।

"दिमका, जरा अपना यह नखरा छोड़ कर सीधे से बात करो। तुम जिस तरह बातें कर रहे हो न, वैसे बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञ किया करते हैं। तुम मुझको यह बतलाओ कि तुम्हें मुझसे इस कदर चिढ़ क्यों है ?"

स्वेतायेव को बेचैनी महसूस हो रही थी और वह बार-बार उसके पहलू बदलने से प्रकट हो रही थी।

"तुम काहे के बारे में बात कर रहे हो ? मुझे तुमसे चिढ़ क्यों होने लगी। मैंने खुद तुम्हें काम दिया था कि नहीं ? तुमने वह काम करने से इनकार किया और अब तुम मुझ पर यह दोष लगाते हो कि मैं तुम्हें काम से बाहर रखने की कोशिश करता हूं।"

मगर उसके शब्दों में वह आत्मविश्वास नहीं था जो दूसरों के अन्दर विश्वास जगाता है। पावेल का हाथ अब भी स्वेतायेव के घुटने पर टिका हुआ था और उसने मार्मिक स्वर में कहा :

"अगर तुम वह बात नहीं कहोगे, तो मैं कहूंगा। तुम सोचते हो कि मैं

तुम्हारे काम करने के ढंग पर शिकंजा चढ़ाना चाहता हूं। तुम्हारा खयाल है कि मैं तुमसे तुम्हारा काम छीन लेना चाहता हूं। अगर तुम ऐसा न सोचते, तो उस कोस्त्या वाले मामले में हमारे बीच ऐसा झगड़ा न हुआ होता। इस तरह के आपसी सम्बंध हमारे काम को तबाह करके रख देंगे। अगर यह सिर्फ हम दोनों के बीच की बात होती तो कोई बात न थी, मुझे इसकी खाक परवाह न होती कि तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो। लेकिन कल से हम लोगों को साथ-साथ काम करना है। इस तरह भला कैसे काम चलेगा? अच्छा अब मेरी बात सुनो। हमारे बीच कोई दरार न होनी चाहिए। हम दोनों मेहनतकश हैं। अगर अपना लक्ष्य तुमको दुनिया में सबसे प्यारा हो तो लाओ अपना हाथ दो और चलो हम लोग कल से दोस्त की तरह काम करें। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि तुम अपने दिमाग से सारा कूड़ा-करकट निकाल दो और किसी तरह की साज-बाज में न पड़ो, वरना अगर काम में कोई जरा सी भी गड़बड़ी हुई तो हर बार हमारे बीच महाभारत होगा। लो ये लो, यह रहा मेरा हाथ, यह दोस्ती का हाथ है।"

स्वेतायेव की खुरदरी उंगलियां उसकी हथेली पर आकर जमीं तो कोर्चागिन को गहरे सन्तोष की अनुभूति हुई।

एक हफ्ता गुजर गया। पार्टी की जिला-कमिटी में काम का समय खतम होने आ रहा था। दफ्तरों में शान्ति छा गई थी। मगर तोकारेव अब भी अपनी मेज पर बैठा काम कर रहा था। वह अपनी कुरसी पर बैठा एकदम ताजी रिपोर्टों को देख रहा था जब कि दरवाजे पर एक दस्तक पड़ी।

"चले आओ!"

कोर्चागिन अन्दर आ गया और उसने सेक्रेटरी की मेज पर प्रश्नावलियों के दो भरे हुए फार्म रख दिए।

"यह क्या है?"

"यह गैर-जिम्मेदारी का खातमा है। और अगर आप मुझसे पूछें तो अब इस चीज को और टाला भी नहीं जा सकता। यों ही बहुत देर हो गई। अगर आप भी मेरी राय के हों और इस काम में मेरी सहायता कर सकें तो मैं आपका बड़ा कृतज्ञ होऊंगा।"

तोकारेव ने उड़ती हुई दृष्टि शीर्षक पर डाली, इस नौजवान को देखा और अपना कलम उठा लिया। "रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की उम्मीदवार मेम्बरी के लिए पावेल आन्द्रिएविच कोर्चागिन की सिफारिश करने वाले साथी की पार्टी जिन्दगी कब से शुरू हुई?" इस शीर्षक के नीचे उसने मजबूत हाथ से "१९०३" लिखा और अपना हस्ताक्षर कर दिया।

"यह लो बेटा। मैं जानता हूं कि तुम कभी मेरे सफेद बालों को लज्जित नहीं होने दोगे।"

कमरा इतना गरम था कि दम घुट रहा था। सबके दिमाग में बस एक यही खयाल सबसे ऊपर था कि कैसे जल्दी से जल्दी सोलोमेंका के शाहबलूत के दरख्तों की शीतल छांह में पहुंच जायें।

"खतम करो पावका, अब मुझसे एक मिनट भी और यह चीज बर्दास्त न होगी," स्वेतायेव ने, जिसके शरीर से पसीने का परनाला जारी था, अनुनय के स्वर में कहा। कात्युशा और दूसरों ने उसका समर्थन किया।

पावेल कोर्चागिन ने किताब बन्द कर दी और स्टडी सर्किल खतम हुआ।

जब वे लोग उठे तो दीवार पर टंगे हुए पुरानी चाल के एरिक्सन टेलीफोन की घंटी घनघनाई। स्वेतायेव ने टेलीफोन लिया, मगर कमरे में इतना शोर मच रहा था कि अपनी बात सुनाने के लिए उसे जोर से टेलीफोन में बोलना पड़ रहा था।

उसने रिसीवर रख दिया और कोर्चागिन की तरफ मुड़ा।

"पोलिश दूतावास के दो रेल के डब्बे स्टेशन पर हैं। उनकी बत्ती बुझ गई है, तार में कोई गड़बड़ी है। एक घंटे में गाड़ी छूटेगी। थोड़े से औजार ले लो पावेल और लपक कर उसे ठीक कर दो। यह बहुत जरूरी काम है।"

पहले प्लेटफार्म पर सोने वाले मुसाफिरों के दो डब्बे खड़े थे। उनके शीशे और पालिश किये हुए पीतल के उनके हिस्से चमक रहे थे। सब लोगों के बैठने के डब्बे में, जिसमें बड़ी-बड़ी खिड़कियां थीं, खूब रोशनी थी। मगर उससे लगे हुए डब्बे में अंधेरा था।

पावेल उस खूबसूरत शानदार पुलमैन के पावदान तक गया और डब्बे में दाखिल होने के इरादे से उसमें लगे हुए लोहे के डण्डे को पकड़ लिया।

स्टेशन की दीवार से जल्दी से अलग होती हुई एक आकृति ने पावेल के कंधे पकड़ लिये।

"कहां जा रहे हो?"

यह आवाज पहचानी हुई थी। पावेल मुड़ा और उसने उस आदमी की जाकट, चौड़े माथे की टोपी, उसकी पतली सी टेढ़ी नाक और उसकी सतर्क, शंकालु आंखों को देखा।

यह आर्त्युखिन था। उसने पहले पावेल को नहीं पहचाना। मगर अब उसका हाथ पावेल के कंधे से गिर पड़ा और उसके चेहरे का तनाव हलका हो गया, मगर वह बदस्तूर अपनी प्रश्न करती हुई आंखों से औजारों की पेटी को देखता रहा।

"तुम कहां जा रहे थे ?" उसने कुछ कम खिंचे-तने स्वर में पूछा।

पावेल ने संक्षेप में बतलाया। फिर डब्बे के पीछे से एक और आकृति सामने आई।

"एक मिनट रुकिए, मैं उनके कंडक्टर को बुलाता हूं।"

कोर्चागिन जब कंडक्टर के पीछे-पीछे उस सैलून गाड़ी में दाखिल हुआ तो उसने कई लोगों को बाकायदा सफरी कपड़े पहने हुए बैठे देखा। किसी के कपड़े में कोई नुक्स नहीं निकाला जा सकता था। एक औरत दमश्क के कपड़े के मेजपोश से ढंकी हुई एक मेज से लगी दरवाजे की तरफ पीठ किये बैठी थी। जिस वक्त पावेल अन्दर दाखिल हुआ, वह अपने सामने खड़े हुए एक लम्बे अफसर से बात कर ही थी। इलेक्ट्रीशियन के आते ही उन्होंने अपनी बातचीत बन्द कर दी।

कोर्चागिन ने फुर्ती से उन तारों की जांच की जो आखिरी बत्ती से गलियारे तक दौड़ रहे थे। मगर उसे बिलकुल ठीक पाकर वह गड़बड़ी की तलाश में उस डब्बे से निकल कर दूसरे डब्बे में चला गया। वह मोटा-तगड़ा सांड की सी गर्दन वाला कंडक्टर पावेल के पीछे-पीछे चल रहा था। उसकी वर्दी पीतल के बड़े-बड़े बटनों से चमक रही थी, जिन पर पोलैंड का राज्य-चिह्न ईगिल बना हुआ था।

"चलिए हम लोग अगला डब्बा देखें, यहां तो सब ठीक है। बैटरी काम कर रही है। गड़बड़ वहां पर होगी।"

कंडक्टर ने दरवाजे के अन्दर चाभी घुमाई और वे दोनों अंधेरे गलियारे में पहुंच गये। तारों के ऊपर अपनी टार्च की रोशनी फेंकते हुए पावेल को जल्दी ही वह जगह मिल गई जहां शार्ट-सर्किट हो रहा था। कुछ ही मिनट बाद गलियारे में बत्ती जल गई और गलियारा रोशनी से भर उठा।

कोर्चागिन ने अपने गाइड से कहा, "कम्पार्टमेंट के बल्ब बदलने होंगे। वे जल गये हैं।"

"उस हालत में हमें उस महिला को बुलाना होगा, उसी के पास चाभी है।" कंडक्टर इलेक्ट्रीशियन को डब्बे में अकेला नहीं छोड़ना चाहता था, इसलिए उसने पावेल को अपने पीछे-पीछे आने के लिए कहा।

पहले वह महिला कम्पार्टमेंट में दाखिल हुई और फिर उसके पीछे-पीछे कोर्चागिन आया। कंडक्टर रास्ता रोके हुए दरवाजे में खड़ा रहा। पावेल ने चमड़े के दो बहुत ठाठदार सफरी झोले, सीट पर लापरवाही से फेंका हुआ एक रेशमी चोगा, इत्र की एक बोतल और खिड़की के पास मेज पर एक छोटा सा फैशनेबुल स्त्रियों वाला वैनिटी केश देखा। वह स्त्री कोच के एक सिरे पर बैठी

हुई थी और अपने सुनहरे बालों में हाथ फेरती हुई बिजली वाले को काम करते हुए गौर से देख रही थी।

कंडक्टर ने कुछ मुश्किल से अपनी सांड जैसी गर्दन को झुकाते हुए बड़े स्वामिभक्त नौकर के ढंग से कहा, "श्रीमती जी, मुझे जरा देर के लिए जाने की इजाजत देंगी ? मेजर साहब ने थोड़ी सी ठंडी बियर मंगाई है।"

"तुम जा सकते हो," उस औरत ने बनावटी रोबदाब से जवाब दिया।

यह बात पोलिश जबान में हुई थी।

गलियारे से आती हुई रोशनी उस औरत के कंधे पर पड़ रही थी। लियों के बेहतरीन रेशम का बना हुआ लाजवाब गाउन, जिसे पैरिस के बेहतरीन दर्जियों ने सिया था, उसके कंधे से गिर पड़ा था और उसकी बांहें नंगी थीं। कानों में हीरे के बुन्दे दप-दप चमक रहे थे। कोर्चागिन सिर्फ एक कंधे और बांह को देख पा रहा था और वे हाथी दांत के बने हुए से जान पड़ते थे। चेहरा छाया में था। तेजी से पेंचकश को चलाते हुए पावेल ने छत में के तार बदल दिये और पल भर बाद कम्पार्टमेंट में बत्तियां जल उठीं। अब उसे सिर्फ उस सोफे के ऊपर का बल्ब देखना था जिस पर वह औरत बैठी हुई थी।

"मुझे उस बल्ब को देखना है," कोर्चागिन ने उस औरत के सामने जाकर रुकते हुए कहा।

औरत ने रूसी जबान में कहा, "अरे हां, मैं तुम्हारे रास्ते में आ रही हूं।" वह हलके कदमों से उठी और जाकर पावेल के बगल में खड़ी हो गई। अब पावेल उसको पूरी तरह देख सका। उसकी वह कमानीदार भवें और सम्पुटित, उपेक्षापूर्ण ओंठ उसके पहचाने हुए थे। इसमें कोई सन्देह ही न हो सकता था : यह वही वकील की लड़की नेली लेशचिन्स्की थी। पावेल के चेहरे पर अचम्भे का जो भाव था, उस स्त्री ने भी उसको लक्ष्य किया। मगर गोकि पावेल उसको पहचान रहा था, तो भी वह खुद इन पिछले चार बरसों में इतना बदल गया था कि नेली लेशचिन्स्की यह नहीं समझ सकी कि वह बिजली वाला उसी का फसादी पड़ोसी है।

पावेल आश्चर्य से उसको घूर रहा था। यह चीज लेशचिन्स्की को बुरी मालूम हुई और उसके माथे पर बल पड़ गये। वह कम्पार्टमेंट के दरवाजे के पास चली गयी और वहां खड़ी बेचैनी से अपने पेटेन्ट जूते की एड़ी जमीन पर धीमे-धीमे पटकने लगी। पावेल ने दूसरे बल्ब की जांच शुरू की उसने पेंच को खोला, बल्ब को रोशनी के सामने उठा कर देखा और न जाने कैसे अचानक उससे पोलिश में पूछ बैठा :

"क्या विक्टर भी यहीं है ?"

बोलते समय पावेल पीछे नहीं मुड़ा था। उसने नेली के चेहरे को नहीं देखा। मगर उसके सवाल के बाद जो लम्बी खामोशी आई, उससे यह बात जाहिर थी कि वह स्त्री घबराहट में पड़ गई थी।

"क्यों, तुम उसे जानते हो क्या ?"

"हां, और बहुत अच्छी तरह। लगता है आप भूल गईं। हम लोग पड़ोसी थे।" पावेल उसको देखने के लिए पीछे मुड़ा।

"तुम...तुम पावेल हो, मेरी..." नेली बात कहते-कहते मारे घबराहट के रुक गयी।

"...रसोईदारिन का बेटा," कोर्चागिन ने उसकी बात पूरी की।

"मगर देखने में तो तुम कैसे बड़े से हो गये! उस वक्त तो तुम बस छोकरे थे, हां, लड़ने-भिड़ने में तुम जरूर तेज थे।"

नेली ने उसे सिर से पैर तक बहुत ध्यान से देखा।

"तुम विक्टर के बारे में क्यों पूछते हो ? जहां तक मुझे याद है, तुम और वह आपस में कुछ बड़े दोस्त तो थे नहीं," उसने अपनी सुरीली आवाज में कहा। वह बड़ी उकताहट महसूस कर रही थी और इस अचानक मुलाकात से उसे कुछ राहत सी मिली।

पेंच तेजी से दीवार के अन्दर घुस गया।

"मेरा एक कर्ज है जिसे विक्टर ने अभी तक नहीं चुकाया। उससे मिलो तो कह देना कि उसे चुकता कराने की उम्मीद मैंने अभी नहीं छोड़ी है।"

"मुझे बता दो कि उसको तुम्हारा कितना देना है और मैं उसकी तरफ से दे दूंगी।"

उसको अच्छी तरह मालूम था कि कोर्चागिन किस कर्ज की बात कर रहा है। उसे मालूम था कि विक्टर ने ही पावेल को पेतलुरा के सिपाहियों के हाथ में दिया था। मगर इस 'आवारे' का मजाक बनाने के खयाल से उसने जान-बूझकर यह अपमानजनक रवैया अख्तियार किया था।

कोर्चागिन ने कुछ नहीं कहा।

"बताओ, क्या यह बात सच है कि हमारा मकान लूटा गया है और अब टूट-फूट रहा है ? निश्चय ही वह ग्रीष्म-कुंज और वे तमाम झाड़ियां उखाड़ डाली गई होंगी," नेली ने उत्सुकता के साथ पूछा।

"वह मकान अब तुम्हारा नहीं हमारा है और अपनी ही जायदाद को अब हम तबाह और बर्बाद नहीं करेंगे।"

नेली मजाक उड़ाने के ढंग पर धीरे से हंसी।

"ओह, देखती हूं कि तुम अब अच्छी तरह दीक्षित हो गये हो! मगर इस बात को न भूलना कि यह गाड़ी पोलिश मिशन की है और यहां पर मैं स्वामी

हूं और तुम नौकर, जैसे कि तुम हमेशा थे। तुम इसलिए काम कर रहे हो कि यहां रोशनी आ जाय ताकि मैं इस सोफे पर आराम से लेट कर पढ़ सकूं, समझे! तुम्हारी मां हमारे कपड़े धोती थी और तुम उसे पानी ला कर दिया करते थे। हम फिर बहुत-कुछ उन्हीं परिस्थितियों में एक-दूसरे से मिल रहे हैं।"

उसकी आवाज में विजय की द्वेषपूर्ण गूंज थी। अपने चाकू से तार को छीलते हुए पावेल ने उस पोलिश औरत को ऐसी निगाहों से देखा जिनमें घृणा साफ-साफ झलक रही थी।

"अगर तुम्हारे लिए काम करने की बात होती, तो मैं यहां एक जंग लगी कील भी न ठोंकता। लेकिन चूंकि पूंजीपतियों ने कूटनीतिज्ञों का आविष्कार किया है, इसलिए हमको भी वही खेल खेलना पड़ता है। हम उनकी गर्दन नहीं उड़ाते, इतना ही नहीं उनके साथ शिष्टचार का व्यवहार करते हैं, मगर तुममें तो इसका भी शऊर नहीं।"

नेली के गाल लाल हो गये।

"मान लो तुम वारसा फतह कर लो तो मेरे साथ क्या सलूक करोगे? मैं समझती हूं कि तुम मेरा कीमा बना दोगे, या शायद मुझको रख लो?"

वह दरवाजे में बड़ी अदा के साथ खड़ी थी, उसके नथुने, जो कोकीन से अब अपरिचित नहीं थे, फड़क रहे थे। सोफे के ऊपर की बत्ती जल गई थी। पावेल उठ कर सीधा खड़ा हो गया।

"तुमको? तुम्हें मार कर कौन अपना हाथ खामखाह खराब करेगा! तुम तो यों ही, हमारे हाथ लगाये बिना ही कोकीन की ज्यादती से टें हो जाओगी। और जहां तक तुमको रखने की बात है, मैं सड़क पर की किसी वेश्या को ज्याद पसन्द करूंगा।"

उसने अपना औजारों का डब्बा उठाया और दरवाजे की तरफ बढ़ा। नेली उसको रास्ता देने के लिए एक ओर हट गई। वह गलियारे में आधे रास्ते गया होगा कि उसने अपने पीछे नेली के मुंह से निकली हुई यह गाली सुनी:

"बदमाश बोल्शेविक!"

उसके अगले रोज शाम को जब पावेल लाइब्रेरी की ओर जा रहा था तो रास्ते में उसे कात्युशा जेलेनोवा मिली। उसने अपने छोटे-छोटे हाथों से उसकी आस्तीन पकड़ ली और हंसते हुए उसका रास्ता रोक कर खड़ी हो गई।

"कहां तेजी से भागे जा रहे हो, राजनीति और ज्ञान के पंडित?"

पावेल ने उसी दिल्लगी के स्वर में जवाब दिया, "लाइब्रेरी जा रहा हूं चाची, मुझे जाने दो!" उसने हल्के से कात्युशा के कंधों को पकड़ा और उसे

एक ओर को हटा दिया। कात्युशा ने उसके हाथों से अपने को छुड़ा लिया और उसके साथ-साथ चलने लगी।

"मेरी बात सुनो पावलुशा! यह भी कैसी बात है कि तुम हर वक्त पढ़ते ही रहते हो, जरा सोचो तो यह भी कहीं होता है। सुनो मैं एक बात कहती हूं—चलो हम लोग आज रात एक पार्टी में चलें। जीना ग्लेडिश के यहां सब लोग मिल रहे हैं। लड़कियां मुझसे बराबर कहा करती हैं कि मैं तुम्हें ले आऊं, मगर आजकल तुम्हें पढ़ने के अलावा कोई बात नहीं सूझती। क्या तुम्हें किसी मनोरंजन की जरूरत कभी नहीं पड़ती? ऐसे मौकों पर एकाध बार पढ़ाई को छोड़ देना भी तुम्हारे लिए अच्छा ही पड़ेगा," कात्युशा ने इसरार करते हुए कहा।

"कैसी पार्टी है यह? हम लोग क्या करेंगे वहां?"

"हम लोग क्या करेंगे!" कात्युशा ने मुस्करा कर उसका मजाक बनाने की कोशिश करते हुए कहा, "अरे करेंगे क्या, भगवान की प्रार्थना तो करेंगे नहीं, नाचेंगे, गायेंगे, मौज-मजा लेंगे और क्या। तुम अकार्डियन बजाते हो न? मैंने कभी तुमको बजाते नहीं सुना, एक बार भी नहीं! आज जरूर चलो और चल कर बजाओ, चलोगे न? मेरी खातिर? जीना के चचा के पास अकार्डियन तो है, मगर बजाना-वजाना उसे खाक नहीं आता। लड़कियों को तुममें बड़ी दिलचस्पी है, मगर तुम्हें अपनी किताबों से ही फ़ुरसत नहीं, अजब किताबी कीड़े हो। यह किसने कहा कि कोमसोमोलों को दिल-बहलाव के लिए कुछ न करना चाहिए? चलो-चलो, तुम्हें तो मनाते-मनाते मेरी जान पर बन आई। नहीं चलोगे तो हमारा झगड़ा हो जायगा और फिर मैं तुमसे महीने भर तक नहीं बोलूंगी।"

कात्या मकानों के रंग-रोगन का काम करती थी। वह बड़ी अच्छी कामरेड थी और कोमसोमोल की सबसे कर्मठ सदस्यों में से एक। पावेल इस लड़की का दिल नहीं दुखाना चाहता था। लिहाजा उसने कात्या की बात मान ली, गोंकि इसमें शक नहीं कि ऐसी पार्टियों में उसे बड़ा अटपटा सा लगता था, ख़ासी परेशानी होती थी।

इंजन ड्राइवर ग्लेडिश के घर पर तमाम नौजवानों की शोर मचाती हुई भीड़ इकट्ठा थी। बड़े लोग दूसरे कमरे में चले गए थे और वह बड़ा कमरा और सायबान, जो सामने वाले छोटे से बागीचे में खुलता था, उन्होंने इन पन्द्रह लड़के-लड़कियों के लिए छोड़ दिया था। "कबूतर चुगाने" का खेल चल रहा था जब कात्युशा पावेल को लेकर बागीचे में से होकर सायबान में आई। सायबान के बीचोबीच दो कुरसियां पी. से पीठ जुटा कर रखी हुई थीं। गृहस्वामिनी खेल का नेतृत्व कर रही थी। उसके आवाज देने पर एक लड़का और एक लड़की

आकर कुरसियों पर पीठ से पीठ लगा कर बैठ गए और जब उसने आवाज दी, "अब कबूतरों को चुगाओ !" तो लड़का और लड़की दोनों पीछे को झुके और उनके ओंठ मिल गए। दर्शकों को इसमें बड़ा आनन्द मिल रहा था। इसके बाद उन्होंने "अंगूठी" और "डाकिये के दस्तक" नाम के दो खेल खेले। यह दोनों चुम्बन के खेल थे गोकि "डाकिये के दस्तक" में खेलने वाले खुलेआम रोशनी से चमकते सायबान में एक-दूसरे को न चूम कर कमरे में रोशनी बुझा कर चूमते थे। उन लोगों के लिए, जिन्हें इन दोनों खेलों में दिलचस्पी न थी, एक कोने में छोटी सी गोल मेज पर "फ्लावर फ्लर्ट" तासों की गड्डी रखी थी। पावेल के बगल में करीब सोलह साल की एक लड़की थी जिसकी आखें हल्की नीली थीं और जिसने मुरा कह कर अपना परिचय दिया। उस लड़की ने नजाकत से उसको देखते हुए उसे एक ताश दिया और धीमे से कहा :

"वायलेट।"

कुछ बरस पहले पावेल ऐसी पार्टियों में शरीक हुआ था और गोकि वह खुद इन सारी मस्तियों में शरीक नहीं हुआ था, तो भी उसने इसमें कोई बुराई नहीं देखी थी और यही समझता था कि यह एक आम कायदा है। मगर अब कस्बे की निम्न मध्य-वर्गीय जिन्दगी से हमेशा के लिए नाता तोड़ लेने पर उसको यही पार्टी बड़ी घृणित लगी और उसे कुछ-कुछ हंसी भी आई !

मगर वह तो खैर जो था सो था, अभी उसके हाथ में वह "फूल वाला" ताश था।

"वायलेट" के सामने लिखा था : "मैं तुम्हें बहुत पसन्द करती हूं।"

पावेल ने आंख उठा कर उस लड़की को देखा। उस लड़की ने बिना झिझक पावेल की निगाह का जवाब दिया।

"क्यों ?"

अपना यह सवाल पावेल को बड़ा बेहूदा सा मालूम हुआ। मगर मुरा के पास जवाब तैयार था।

उसने धीरे से कहा, "गुलाब" और पावेल को दूसरा पत्ता पकड़ा दिया।

गुलाब वाले पत्ते पर लिखा था : "तुम मेरे आदर्श हो।"

कोर्चागिन उस लड़की की तरफ मुड़ा और अपनी आवाज को नर्म बनाने की कोशिश करते हुए उसने पूछा :

"यह सब बेहूदगियां तुम क्यों करती हो ?"

पावेल की बात सुन कर मुरा तो स्तब्ध सी रह गई और उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे।

"मेरी बात तुमको बुरी लगी क्या ?" उसने मान करती हुई छोकरी की तरह ओंठ निकालते हुए कहा।

पावेल ने इस सवाल पर कोई ध्यान नहीं दिया, मगर वह इस लड़की के बारे में और जानने के लिए उत्सुक था। उसने उससे बहुत से सवाल पूछे जिनका उस लड़की ने खुशी-खुशी जवाब दिया। कुछ ही मिनटों में वह जान गया कि वह लड़की माध्यमिक स्कूल में पढ़ने जाती है, उसका बाप कारखाने में काम करता है और यह कि वह पावेल को बहुत दिनों से जानती है और उससे परिचित होना चाहती थी।

पावेल ने पूछा, "तुम्हारा दूसरा नाम क्या है ?"

"वोलिन्तसेवा।"

"तुम्हारा भाई रेलवे यार्ड की कोमसोमोल सेल का मंत्री है न ?"

"हां।"

अब कोर्चागिन परिचित भूमि पर था। यह बात उनके नजदीक अब साफ थी कि उस इलाके के सबसे सक्रिय कोमसोमोलों में से एक वोलिन्तसेव अपनी ही बहन को किसी तरह की राजनीतिक शिक्षा या संस्कार नहीं दे रहा था। वह कस्बे की दूसरी मध्य-वर्गी लड़कियों की तरह, उन्हीं जैसे संस्कार लेकर बड़ी हो रही थी। पिछले साल वह और उसकी सहेलियां ऐसी न जाने कितनी ही चुम्बन-गोष्ठियों में शरीक हुई थीं। मुरा ने पावेल को बतलाया कि उसने कई बार उसे अपने भाई के यहां देखा था।

मुरा ने महसूस किया कि उसके पड़ोसी को उसका आचरण पसन्द नहीं आया। कोर्चागिन के चेहरे की उपेक्षापूर्ण मुस्कराहट को देख उसने आवाज दिये जाने पर भी "कबूतर चुगाने" के खेल में हिस्सा लेने से साफ इनकार कर दिया। वे दोनों और भी चन्द मिनट तक बैठे एक-दूसरे से बातें करते रहे और मुरा पावेल को अपने बारे में बतलाती रही जब कि जेलेनोवा उन लोगों के पास आई।

"मैं तुम्हारे लिए अकार्डियन ले आऊं ?" उसने पूछा और शरारत-भरी निगाहों से मुरा को देखते हुए इतना और जोड़ा, "लगता है तुम लोगों में बड़ी दोस्ती हो गई ?"

पावेल ने कात्युशा को अपने पास बिठाल लिया और अपने आसपास के शोर-शराबे और हंसी की आवाजों का फायदा उठाते हुए बोला :

"मैं नहीं बजाऊंगा। हम दोनों जा रहे हैं।"

जेलेनोवा ने ताने के स्वर में कहा, "ओहो ! अच्छा तो गरज तीर लग चुका है, क्यों ?"

"ठीक कहती हो ! अच्छा बताओ कात्युशा, हमारे अलावा यहां कोमसो-मोल के और भी कोई लोग हैं ? या सिर्फ हम लोग ही 'कबूतर प्रेमी' हैं ?"

कात्युशा ने जैसे पावेल को मनाते हुए कहा, "अब यह सब बचपना खतम करके हम लोग नाचना शुरू करेंगे।"

कोर्चागिन उठा।
"बहुत अच्छा, तुम नाचो मगर मुरा और मैं, दोनों चलते हैं।"

एक रोज शाम को आना बोर्हार्ट ओकुनेव के घर आई और वहां उसने कोर्चागिन को अकेले पाया।

"क्या तुम बड़े व्यस्त हो पावेल? मेरे साथ शहर की सोवियत के खुले इजलास में चलोगे? मैं अकेले नहीं जाना चाहती। खास कर इसलिए कि लौटने में काफी देर हो जायगी।"

कोर्चागिन जाने के लिए फौरन तैयार हो गया। वह अपने बिस्तरे के ऊपर लटकती हुई माउजर को उठाने ही वाला था, मगर यह सोच कर इरादा बदल दिया कि वह ज्यादा भारी पड़ेगा। लिहाजा उसने दराज में से ओकुनेव का रिवाल्वर निकाला और उसे अपनी जेब में डाल लिया। ओकुनेव के लिए उसने एक पुर्जा लिख कर रख दिया और चाभी ऐसी जगह रख दी जहां उसके कमरे के साथी को वह मिल जाय।

शहर सोवियत का इजलास थियेटर हॉल में हो रहा था। वहां पर उनकी मुलाकात पांक्रातोव और ओल्गा यूरेनेवा से हुई। वे सब साथ-साथ हॉल में बैठे और इण्टरवलों में संग-संग टोली बना कर स्क्वायर में टहलते रहे। आना का जैसा खयाल था, मीटिंग बड़ी देर में खत्म हुई।

ओल्गा ने प्रस्ताव किया, "कैसा हो अगर तुम मेरे घर पर चल कर रात गुजारो? देर हो गई है और तुम्हें बहुत दूर जाना है।

मगर आना ने इनकार कर दिया और बोली, "पावेल ने मुझे घर पहुंचाने का वादा किया है।"

पांक्रातोव और ओल्गा संग-संग बड़ी सड़क पर चल दिये और आना और पावेल ने सोलोमेंका का चढ़ाई वाला रास्ता पकड़ा।

रात बहुत अंधेरी थी, हवा बन्द थी और दम घुट रहा था। जिस वक्त शहर सोवियत की इजलास में हिस्सा लेने वाले ये लोग अपने-अपने घरों की तरफ जा रहे थे, शहर सो रहा था। धीरे-धीरे उनके कदमों की आहट और उनकी आवाजें डूब गईं। पावेल और आना शहर के बिचले हिस्से से दूर तेजी से चले जा रहे थे। बाजार में, जो रात के वक्त उजाड़ सा था, गश्त करने वाले सिपाहियों की एक टोली ने उनको रोका और उनके कागजात का मुआइना किया और फिर उन्हें आगे बढ़ जाने दिया। उन्होंने बड़ी सड़क को पार किया और फिर एक अंधेरी खामोश गली में पहुंचे जो एक सूने और उजड़े खित्ते को काटती थी। बाईं तरफ मुड़ते हुए वे रेलवे के खास गोदामों के समानान्तर बड़ी सड़क पर आगे बढ़ते रहे। रेलवे गोदाम की इमारतें सीमेंट की थीं और इस

अंधेरे में उनकी लम्बी कतार और भी डरावनी लग रही थी। आना के मन में न जाने क्यों एक धुंधली सी आशंका थी, वह घबराई हुई अंधेरे में आंख गड़ा कर देख रही थी जैसे अपनी निगाहों से अंधेरे को चीर रही हो और अपने साथी के सवालों का जवाब अटक-अटक और रुक-रुक कर दे रही थी। जब वह भयानक छाया जिससे आना को डर लग रहा था, केवल टेलीफोन का एक खंभा निकली तो वह जोर से हंस पड़ी और अपनी घबराहट की बात उसने पावेल से कही। उसने पावेल की बांह पकड़ ली और पावेल के कंधे के भार को अपने कंधे पर महसूस करते हुए उसके दिल को बहुत ढाढ़स मालूम हुआ।

"मैं अभी सिर्फ तेईस बरस की हूं, मगर घबराहट के मामले में किसी बुढ़िया से कम नहीं। अगर तुम मुझे बुजदिल समझो तो यह तुम्हारी गलती होगी। मगर पता नहीं क्यों आज रात मैं एक अजीब परेशानी और बेचैनी सी महसूस कर रही हूं, गो इसमें शक नहीं कि तुम्हारे साथ रहने से अपने आपको मैं काफी महफूज समझती हूं और सच बात तो यह है कि मुझे इस तरह अपने डरने पर शर्म आ रही है।"

और सचमुच पावेल की गंभीर शान्ति, उसकी जलती हुई सिगरेट जो बीच-बीच में पल भर के लिए उसके चेहरे के एक भाग को अलोकित कर देती थी और उस आलोक में उसकी साहसी लोगों जैसी भवें दिख जाती थीं—इन सब चीजों ने उन डरों और आशंकाओं को दूर भगा दिया जिन्हें अंधेरी रात, उस जगह के सूनेपन और उस कहानी ने पैदा किया था जिसे अभी उन्होंने मीटिंग में सुना था। मीटिंग की अगली रात को शहर के छोर पर एक बड़ा भयानक कत्ल हो गया था, उसी की कहानी उन्हें सुनने को मिली थी।

मालगोदाम पीछे छूट गया। एक छोटी सी खाड़ी थी जिस पर पुल बना हुआ था। उन्होंने उस पुल को पार किया और रेलवे लाइन के नीचे-नीचे चलने वाली टनेल को जाने वाली सड़क पर बढ़ते रहे। यही टनेल शहर के इस हिस्से को रेलवे के इलाके से जोड़ती थी।

स्टेशन की इमारत दाहिनी तरफ को अब उनके बहुत पीछे छूट गई थी। यह सड़क डिपो के उस पार एक अंधी गली में खतम होती थी। वे अब समतल जमीन पर पहुंच गये थे। ऊपर रेलवे लाइन के आसपास स्विचों और रेलगाड़ी की आमद बतलाने वाले आले की रंगीन रोशनियां अंधेरे में चमक रही थीं और डिपो के पास एक यार्ड इंजन रात को घर लौटता हुआ मारे थकान के लम्बी सांस छोड़ रहा था।

टनेल के मुहाने पर एक सड़क का लैम्प जंगदार कांटे से लटक रहा था। हवा में वह हलके-हलके हिल रहा था जिससे उसकी धुंधली पीली रोशनी कभी टनेल की एक दीवार पर और कभी दूसरी दीवार पर पड़ रही थी।

टनेल के मुहाने से करीब दस गज पर, बड़ी सड़क के पास, एक छोटी सी बंगलिया अकेली खड़ी थी। दो साल पहले तोप के एक गोले ने उसके भीतरी हिस्से को तबाह कर दिया था और उसके अगवाड़े को खंडहर बना दिया था। लिहाजा इस वक्त वहां एक बड़ा सा गढ़ा बना हुआ था और वह बंगलिया अपनी दरिद्रता का प्रदर्शन करते हुए सड़क के किनारे किसी भिखारी की तरह खड़ी थी। ऊपर से एक रेलगाड़ी के गरजने की आवाज आ रही थी।

"हम लोग अब करीब-करीब घर पहुंच गये," आना ने चैन की सांस लेते हुए कहा।

पावेल ने आना की नजर बचा कर अपनी बांह को छुड़ाने की कोशिश की। मगर आना ने उसकी बांह नहीं छोड़ी। वे लोग उस उजड़े हुए घर के पास से गुजर गये।

तभी अचानक उन्हें अपने पीछे कुछ आवाजें सुनाई दीं। ये दौड़ते हुए पैरों और जोर-जोर से सांस लेने की आवाजें थीं। पीछे के लोगों ने उन्हें आकर पकड़ लिया।

कोर्चागिन ने अपनी बांह को झटका दिया मगर डरी हुई आना उसे पूरे जोर से पकड़े हुए थी। और इसके पहले कि वह अपनी बांह को छुड़ा सके, मौका हाथ से निकल चुका था, उसकी गर्दन को किसी ने अपने मजबूत पंजे में ले लिया था। एक लहमा और गुजरा और उसे ऐसा झटका लगा कि वह घूम कर अपने हमला करने वाले के सामने आ गया। वह हाथ उसके गले की तरफ बढ़ा और उसके ट्यूनिक के कालर को इतना मरोड़ते हुए कि पावेल का गला घुटने लगा, उसने रिवाल्वर की नली उसके मुंह से अड़ा दी।

पावेल की डरी और ठहरी हुई आंखें अपने भीतर का सारा जोर लगा कर अतिमानवी तनाव से रिवाल्वर का घूमना देख रही थीं। रिवाल्वर की नली में से मौत उसे घूर रही थी और उसके अंदर न तो इतनी शक्ति थी, न इतनी इच्छा-शक्ति कि एक पल के लिए भी अपनी आंख को रिवाल्वर की नली से हटा सकता। वह अपनी मौत का इन्तजार करता रहा। मगर आक्रमणकारी ने गोली नहीं चलाई और पावेल की फैली हुई आंखों ने उस लुटेरे के चेहरे को देखा, उसके बड़े से खोपड़े को, उसके भारी जबड़े को, और उसकी कई दिन की दाढ़ी और मूंछ की काली छाया को। मगर टोपी की चौड़ी बारी के नीचे उसकी आंखें नहीं दिखाई दे रही थीं।

कोर्चागिन ने अपनी आंख की कोर से आना के खड़िये की तरह सफेद चेहरे की एक हलकी सी झलक पाई। आना को उसी वक्त उन तीन लुटेरों में से एक दीवार के उस बड़े से मोखे के अंदर घसीट ले गया। बेदर्दी से उसकी बांह को मरोड़ते हुए उसने आना को जमीन पर गिरा दिया। एक और छाया

पावेल की तरफ लपकी, पावेल ने केवल उसकी छाया टनेल की दीवार पर देखी। उसे पीछे के उस खंडहर मकान के भीतर हाथापाई की आवाज सुन पड़ी। आना जी-जान से लड़ रही थी, उसकी घुटती हुई आवाज एकाएक बन्द हो गई, जब उसके मुंह में एक टोपी ठूंस दी गई। वह बड़ी खोपड़ी वाला बदमाश जिसके हाथ में कोर्चागिन की जिन्दगी थी, बलात्कार के उस स्थल की ओर वसे ही खिंचा जैसे कोई जंगली जानवर अपने शिकार की ओर। स्पष्ट ही वह इस गिरोह का सरदार था और उसको यह शोभा नहीं देता था कि ऐसे मामले में निष्क्रिय दर्शक बना खड़ा रहे!. यह छोकरा तो अभी कल का लौंडा था, उससे डरने की कोई बात नहीं।

"इसके सिर पर कसकर दो घूंसे लगाओ और कह दो कि मैदान में होकर भाग जाय और तुम देखना वह बिना एक बार मुड़े और पीछे को ताके सरपट शहर तक भागता चला जायगा।" उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी।

"भाग जाओ.. जिधर से आये थे उधर ही को लौट जाओ और देखो चिल्लाना-विल्लाना मत, नहीं तो अभी एक गोली तुम्हारी गर्दन के पार हो जायगी," उसने अपनी बन्दूक की नली कोर्चागिन के माथे से अड़ाते हुए कहा। "अच्छा भागो," उसने अपनी फटी आवाज में धीरे से कहा और अपनी बन्दूक नीचे कर दी ताकि उसके शिकार को गोली का डर न रहे।

कोर्चागिन लड़खड़ाता हुआ पीछे हटा और आक्रमणकारी पर निगाह रखते हुए तिरछा होकर दौड़ने लगा। वह बदमाश यह देखकर कि उस छोकरे को अब भी गोली का डर लग रहा है, मुड़ा और उस खंडहर मकान की तरफ बढ़ा।

कोर्चागिन का हाथ तेजी से अपनी जेब पर गया। काश कि वह काफी फुर्ती से काम कर सकता! उसने घूम कर अपना बायां हाथ आगे बढ़ाया, जल्दी से निशाना लिया और गोली चला दी।

लुटेरे को अपनी गलती समझने में बहुत देर हो गई थी। उसे हाथ उठाने का भी वक्त नहीं मिला और गोली उसके पहलू को चीरती हुई निकल गई।

गोली लगने से वह धीमे से कराहता और लड़खड़ाता हुआ जाकर टनेल की दीवार से टकराया और दीवार को अपने पंजों से पकड़ने की कोशिश करता हुआ धीरे-धीरे वहीं जमीन पर ढेर हो गया। मकान के भीतर से एक छाया चुपके से बाहर आई और नीचे गली की तरफ भागी। कोर्चागिन ने उस पर भी गोली छोड़ी। एक दूसरी छाया झुक कर कमर दुहरी किये तीर की तरह टनेल की स्याह गहराई की तरफ भागी। एक गोली चलने की आवाज हुई। गोली ने कंकरीट को फोड़ दिया और धूल उड़ी। उस काली आकृति पर भी वह धूल पड़ी। वह आकृति उछल कर एक ओर हटी और अंधेरे में

खो गई। एक बार फिर ब्राउनिंग की गोली ने रात की निस्तब्धता को चीर दिया। दीवार के पास वह बड़े से खोपड़े वाला लुटेरा अपनी मृत्यु की यंत्रणा में ऐंठ रहा था।

कोर्चागिन ने आना को उसके पैरों पर खड़ा किया। अभी जो कुछ उस पर गुजरी थी, उसके आतंक से स्तब्ध वह लुटेरे का दर्द से ऐंठना देख रही थी। मगर अब भी उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सुरक्षित है।

कोर्चागिन उसे रोशनी के घेरे से हटा कर वापस शहर की ओर बढ़ते हुए अंधेरे में घसीट ले गया। जब वे दौड़ कर रेलवे स्टेशन की तरफ जा रहे थे, तो रोशनियां टनेल के पास ऊपर टीले पर चमक रही थीं और रेलवे लाइन पर एक राइफिल छूटने की आवाज हुई।

बातियेवा पहाड़ी पर आना के घर पहुंचते-पहुंचते मुर्गे बांग देने लगे थे। आना बिस्तर पर लेट गई। कोर्चागिन मेज के पास बैठा सिगरेट पीता और अपनी सिगरेट के धुएं का ऊपर उठना देखता रहा...उसने अपनी जिन्दगी में यह चौथी बार किसी की जान ली थी।

उसने अपने मन में सोचा, क्या सचमुच हिम्मत नाम की कोई चीज होती है ? कोई ऐसी चीज जो सदा अपने निर्विकार रूप में दिखलाई देती हो ? अपनी अनुभूतियों को दुहराते हुए उसने इस बात को अपने तईं स्वीकार किया कि उन कुछ क्षणों में जब बन्दूक की नली की भयानक काली आंख उसको घूर रही थी, उस वक्त वह दहशत से कांप गया था, मानो दहशत ने उसके दिल को अपनी बर्फानी गिरफ्त में ले लिया हो। और वे जो दो काली छायाएं बच कर निकल गईं, इसका कारण क्या सिर्फ यह था कि उसकी आंखें कम-जोर थीं या यह कि उसे बाएं हाथ से गोली चलानी पड़ रही थी ? नहीं। कुछ कदमों की दूरी पर उसका निशाना कभी नहीं चूक सकता था और वे जो दो लोग बच गये, उसका कारण सिर्फ यह था कि वह घबरा गया था और इसीलिए जल्दी में उसका हाथ कांप गया था।

टेबुल लैम्प की रोशनी उसके सिर पर ही सबसे ज्यादा पड़ रही थी। आना गौर से उसको देख रही थी और उसके चेहरे पर आते-जाते हर भाव को और उसके सिर के हिलने वगैरह को समझ रही थी। पावेल की आंखें शान्त थीं, उसकी पेशानी की झुर्रियों से ही उसके गहरे सोच का पता चल रहा था।

"तुम क्या सोच रहे हो पावेल ?"

अचानक पूछे गये इस सवाल से उसके विचार उसी तरह उड़ गये जिस तरह धुआं उड़ता हुआ रोशनी के घेरे से बाहर निकल जाता है। और उसने पहली बात जो दिमाग में आई, कह दी :

"मुझे कमांडेंट के दफ्तर जाना ही चाहिए। इस मामले की फौरन रिपोर्ट होनी चाहिए।"

बुरी तरह थकान महसूस करता हुआ वह बेमन से उठा।

आना ने उसका हाथ पकड़ लिया क्योंकि अकेले छूट जाने के ख्याल से उसे डर मालूम हो रहा था। फिर उसने पावेल को दरवाजे तक पहुंचाया और ड्योढ़ी पर खड़ी-खड़ी उस नौजवान को, जिसकी अब वह इतनी ऋणी थी, तब-तक देखती रही जब तक कि वह अंधेरे में खो नहीं गया।

कोर्चागिन की रिपोर्ट ने उस हत्या के रहस्य का पता चला दिया जिससे रेलवे के संतरी बहुत परेशान थे। फौरन उस लाश की शिनाख्त हुई और यह मालूम हुआ कि वह फिम्का नाम के एक नम्बरी मुजरिम की लाश थी। यह फिम्का नम्बरी हत्यारा और लूटेरा था और बहुत बार जेल काट आया था।

अगले रोज हर आदमी टनेल के पास की इस घटना के बारे में बात कर रहा था। इतना ही नहीं, यह घटना पावेल और स्वेतायेव के बीच एक अप्रत्याशित झगड़े का भी कारण बनी।

काम अभी चल ही रहा था जब स्वेतायेव वर्कशाप में आया और उसने कोर्चागिन को बात करने के लिए बुलाया। स्वेतायेव आगे-आगे खामोश चला जा रहा था और गलियारे के एक दूर कोने में पहुंच गया था। वह बहुत उद्विग्न हो रहा था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बात कैसे शुरू करे। आखिरकार उसने कहा :

"मुझे बतलाओ कल क्या हुआ।"

"मैं समझता था कि तुम्हें मालूम होगा।"

स्वेतायेव ने बेकली से अपने कंधे उचकाये। पावेल को इस बात का पता नहीं था कि उस टनेल वाले कांड का असर दूसरों से कहीं ज्यादा स्वेतायेव पर हुआ था। पावेल को यह बात नहीं मालूम थी कि चाहे वह लुहार स्वेतायेव ऊपर से कितनी ही उदासीनता क्यों न दिखलाता हो, सच बात यह थी कि उसे आना बोर्हार्ट से प्रेम था। उस लड़की की ओर आकृष्ट होने वाला वह अकेला आदमी नहीं था, मगर प्रेम के तीर ने उसी को सबसे ज्यादा बेधा था। लगुतिना ने अभी-अभी रात की टनेल वाली घटना के बारे में उसको बतलाया था और अब एक ही सवाल उसे तंग कर रहा था जिसका जवाब उसे नहीं मिला था। वह लट्ठमार तरीके से अपना सवाल पावेल से न कर सकता था, मगर तब भी जवाब तो उसे मिलना ही था। उसकी अच्छी भावनाओं ने उससे पूछा कि उसके मन को जो डर कुतर रहा है, वह बहुत क्षुद्र और स्वार्थी है। लेकिन उसके अंदर जो अंतर्द्वन्द चल रहा था, उसमें उसके भीतर के आदिम वन्य-पशु की ही जीत हुई।

"सुनो कोर्चागिन," उसने फटी हुई भारी आवाज में कहा, "यह बात केवल तुम्हारे और मेरे बीच रहनी चाहिए। मैं जानता हूं कि तुम आना की खातिर उस चीज के बारे में कुछ बोलना नहीं चाहते, मगर तुम मेरे ऊपर तो विश्वास कर सकते हो। तुम मुझे यह बतलाओ कि जब वह लुटेरा तुम्हें अपनी गिरफ्त में लिये हुए था, तो क्या उस वक्त उसके दूसरे साथियों ने आना के साथ बलात्कार किया ?"

घबरा कर उसने अपनी बात खतम करने के पहले ही अपनी आंखें नीची कर लीं।

कोर्चागिन की समझ में यह बात धुंधले तरीके से आने लगी कि वह कौन सी चीज है जो स्वेतायेव को तंग कर रही है। "अगर उसे आना की परवाह न होती और उससे कुछ लेना-देना न होता, तो वह हर्गिज इतना परेशान न होता। लेकिन अगर आना उसे प्रिय है तो..." और पावेल आना के प्रति उस अपमान से जल उठा जो स्वेतायेव के सवाल में निहित था।

"तुम क्यों पूछ रहे हो ?"

स्वेतायेव ने मुंह ही मुंह में कुछ उखड़ी-उखड़ी सी बात कही जो समझ में नहीं आती थी। उसको लगा कि पावेल समझ रहा है कि क्या मामला है और इसीलिए उसे गुस्सा आ गया :

"उलटे मुझसे सवाल करके तुम अब बचने की कोशिश न करो। मैं सीधा-सादा जवाब चाहता हूं।"

"तुम आना से प्यार करते हो ?"

बड़ी देर तक खामोशी रही। आखिरकार स्वेतायेव ने अपने ऊपर बहुत जब्र करके जवाब दिया, "हां।"

कोर्चागिन कोशिश करके अपने गुस्से को दबाता हुआ मुड़ा और एक बार भी पीछे की ओर देखे बिना सीधे गलियारे में आगे बढ़ता गया।

एक रात ओकुनेव, जो अनिश्चय की हालत में कुछ देर से अपने दोस्त के बिस्तर के पास मंडरा रहा था, आखिरकार बिस्तर के छोर पर बैठ गया और उसने उस किताब पर अपना हाथ रख दिया जिसे पावेल पढ़ रहा था।

"सुनो पावलुश्का, एक बात है जिसका बोझ मैं अपने सीने से उतारना चाहता हूं। एक दृष्टि से तो वह बिल्कुल महत्वहीन सी बात मालूम पड़ेगी, मगर दूसरी दृष्टि से वह उतनी ही महत्वपूर्ण है। मेरे और तालिया लगुतिना के बीच गलतफहमी हो गई है। बात यह है कि पहले मैं उसे काफी चाहता था।" ओकुनेव ने बड़े कातर ढंग से अपना सिर खुजलाया। मगर जब उसने अपने

दोस्त के चेहरे पर हंसी का कोई निशान नहीं देखा, तो उसे हिम्मत हुई।
"मगर तालिया...तुम जानते ही हो। ठीक तो है मैं तुम्हें तमाम तफसील की बातें न बतलाऊंगा, जरूरत भी नहीं है, उनके बिना भी बात काफी साफ है। कल हम दोनों ने शादी करने का फैसला किया। अब देखो मामला कैसा चलता है। मैं बाईस साल का हुआ, हम दोनों को वोट देने का अधिकार है। हम दोनों बराबरी के आधार पर रहना चाहते हैं। तुम्हारा क्या खयाल है?"

कोर्चागिन ने सवाल पर गौर किया।

"मैं क्या कहूं कोलिया? तुम दोनों मेरे दोस्त हो, हम सब एक ही बिरादरी के लोग हैं और हमारे सबके तौर-तरीके एक-दूसरे से बिल्कुल मिलते हैं। तालिया बहुत अच्छी लड़की है। मजे में चलेगी जिन्दगी, उसमें कहना क्या है।"

दूसरे रोज कोर्चागिन डिपो मजदूरों के होस्टल में चला गया और कुछ दिन बाद आना ने तालिया और निकोलाई के सम्मान में एक पार्टी दी, एक सादी सी कम्युनिस्ट पार्टी जिसमें खाना-पीना नहीं था। यह अपने संस्मरण सुनाने और अपनी प्रिय किताबों से टुकड़े पढ़ने की शाम थी। उन्होंने बहुत से गाने गाये और अच्छी तरह गाये। उनकी आवाजें दूर तक गूंजीं। उसके बाद कात्युशा जेलेनोवा और वोलिन्तसेवा एक अकार्डियन ले आईं और कमरा उसकी रुपहली लयों और भारी, जानदार आवाजों से गूंज उठा। उस शाम को पावेल ने और दिनों से भी ज्यादा अच्छा बजाया और जब सभी के दिलों में खुशी बिखेरते हुए भारी-भरकम पांक्रातोव ने नाचना शुरू कर दिया, तो पावेल भी अपने बजाने की उदास शैली को भूल गया और बड़ी मस्ती से बजाने लगा।

देनिकिन जब जायेगा जान
कोलचक के भी कट गये कान
होगा तब वह भी सिड़ी सुलतान

अकार्डियन पिछले जमाने के गीत गा रहा था, उन तूफानी सालों के गीत और आज की दोस्ती और संघर्षों और आनन्दों के गीत। मगर जब वह बाजा वोलिन्तसेव को दिया गया और जब उस मेकेनिक ने "यावलेञ्को" नृत्य की मस्त धुन शुरू की, तो कोर्चागिन से न रहा गया और वह सुधबुध भूलकर नाचने लगा। अपनी जिन्दगी में पावेल यह तीसरी और आखिरी बार नाचा था।

११ तेरह

यह सरहद है। दो चौकियां हैं जो दो अलग-अलग दुनिया की प्रतीक हैं और अपनी निश्शब्द शत्रुता लिये आमने-सामने खड़ी हैं। उनमें से एक पर अच्छी तरह रन्दा किया हुआ है। उस पर पालिश भी है और काले व सफेद रंग में वह रंगी हुई भी है और देखने में पुलिस बॉक्स जैसी जान पड़ती है। उसके मस्तक पर एक सिर वाला ईगल मोटे-मोटे कीलों से अपनी जगह पर अच्छी तरह टंका हुआ है। उसके डैने फैले हुए हैं, पंजे धारीदार खम्भे को पकड़े हुए हैं, टेढ़ी चोंच खुली हुई है और वह शिकारी पक्षी अपनी द्वेषपूर्ण आंखों से सामने के उस खम्भे को देख रहा है जिस पर हंसिये-हथौड़े का निशान है। यह एक ओक का मजबूत गोला, मोटा भद्दा गढ़ा हुआ खम्भा है जो मजबूती से जमीन के ऊपर पैर जमाये खड़ा है। दोनों खम्भे समतल जमीन पर हैं, मगर उनके बीच एक गहरी खाई है और वह खाई यह है कि दोनों दो दुनियाओं के प्रतीक हैं। उनके दरमियान छः कदमों के बराबर जो जगह है, उसे आप अपनी जान को खतरे में डाले बिना नहीं पार कर सकते।

यह सरहद है।

काले सागर से लेकर हजारों मील सुदूर उत्तर में आर्कटिक महासागर तक, सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र के ये शान्त पहरुए अपने लोहे के कवच पर श्रम का महान प्रतीक लगाये मूर्तिवत खड़े हैं। ईगल वाली चौकी पर सोवियत उक्रेन और पूंजीवादी पोलैंड की सरहदें मिलती हैं। वह उक्रेन के भीतरी प्रदेश में [illegible] जदोव नामक कस्बे से करीब आठ मील पर स्थित है और उसके सामने कोरेक नामक पोलिश कस्बा है। स्लावुता से लेकर अनापोल तक के सरहदी इलाके में उत्तरी सरहदी बटालियन का पहरा है।

सरहद पर के ये सैनिक बर्फ से ढंके हुए मैदानों पर मार्च करते हैं, जंगलों को काट कर उनके बीच से रास्ता बनाते हैं, नीचे वादियों में घुसते हैं और पहाड़ियों पर चढ़ते हैं, पहाड़ों की चोटियों के पीछे खो जाते हैं और एक नदी के घाट पर जाकर रुकते हैं और वहां से एक विरोधी देश के सर्द मैदानों को देखते हैं।

हड्डी को कंपा देने वाली सर्दी पड़ रही है। यह एक ऐसा दिन है जब पाले की वजह से फेल्ट जूते के तल्ले से दब कर बर्फ चरमर करती है। लाल सेना का एक भीमाकार सैनिक पौराणिक वीरों के योग्य हेलमेट लगाये हंसिये-हथौड़े वाली चौकी से निकल कर अपने भारी कदमों से गश्त पर निकल जाता है। वह एक बड़ा सा भूरा बरानकोट और फेल्ट जूते पहने है। बरानकोट के ऊपर वह एक बड़ा सा भेड़ के ऊन का कोट पहने है जो उसकी एड़ी तक

पहुंचता है और जिसका कालर भी वैसा ही बड़ा है। वह बर्फ के भयानक से भयानक तूफान में भी आदमी को गर्म रखता है। उसके सिर पर कपड़े का एक हेलमेट है और उसके हाथों में भेड़ की खाल के दस्ताने हैं। अपनी राइफल उसने कंधे पर लटका रखी है और गश्त लगाते समय जमीन पर लसरते हुए उसके कोट से बर्फ पर निशान बनता जाता है और वह अपने घर पर उगाई हुई तम्बाकू की सिगरेट का कश खूब मजे ले-लेकर खींच रहा है। खुले हुए मैदानों में सोवियत के ये सरहदी सन्तरी एक-एक किलोमीटर की दूरी पर तैनात हैं ताकि एक सन्तरी हमेशा दूसरे को देख सके। दूसरी ओर पोलिश सीमा में एक-एक किलोमीटर में दो-दो सन्तरी हैं।

एक पोलिश पैदल सिपाही अपनी गश्त के रास्ते पर बढ़ता हुआ लाल सैनिक की तरफ आता है। वह मोटे-मोटे फौजी बूट और कुछ हरापन लिये खाकी वर्दी पहने है और उसके ऊपर एक काला कोट है जिसमें चमचमाती बटनों की दो कतारें लगी हुई हैं। उसके सिर पर सफेद ईगल का चिह्न लिये उसकी वर्दी वाली चौखुटी टोपी है। उसके कंधों के फीतों और कालर पर और भी सफेद ईगल बने हुए हैं, मगर उनसे उसके जिस्म को कोई गरमी नहीं मिलती। उस जाड़े-पाले में वह बुरी तरह ठिठुर गया है और अपने शरीर को गरमाने के लिए अपने सर्दी से सुन्न पड़े हुए कानों को घिसता है और चलते-चलते एक एड़ी को दूसरी एड़ी से भी मिला लिया करता है। मगर पतले दस्तानों के भीतर उसके हाथ सर्दी से ऐंठे जा रहे हैं। पाला इतने जोरों से गिर रहा है और सर्दी ऐसी भयानक है कि वह पोल एक क्षण को भी कहीं रुकने की जुरंत नहीं कर सकता, क्योंकि खतरा है कि पाला उसके अंग को जकड़ देगा। लिहाजा वह बीच-बीच में दौड़ने भी लग जाता है। जब दोनों सन्तरी पास आ गए तो पोलिश सिपाही लाल सैनिक के साथ-साथ चलने के लिए घूम पड़ा।

सरहद पर सैनिकों का आपस में बातें करना मना है। मगर जब कोई आसपास न हो और एक किलोमीटर की दूरी पर ही दूसरा आदमी हो, तो फिर कौन कह सकता है कि सन्तरी चुपचाप गश्त लगा रहा है या अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन कर रहा है।

पोलिश सिपाही को सिगरेट की जबर्दस्त तलब लगी है, मगर अपनी माचिस वह बारक में भूल आया है और इस वक्त जैसे उसको और भी ललचाने के लिए सोवियत सरहद की तरफ से तम्बाकू की खुशबू आ रही है, गोया हवा उसको सताने के लिए ही यह खुशबू उड़ाकर ला रही हो। और उस पोलिश सिपाही की सिगरेट की प्यास और तेज हो जाती है। पोल अपना कान घिसना बंद कर देता है और गर्दन मोड़ कर पीछे देखता है, कौन जाने कप्तान साहब

या हुजूर लेफ्टिनेंट साहब अपने घोड़े पर सवार, किसी टीले के पीछे से सामने आ जायें। अक्सर ही तो वे निगरानी के लिए निकला करते हैं। मगर उसे कुछ दिखाई नहीं देता, सिवा धूप में चमकती हुई सफेद बर्फ के। आसमान में बादल का नाम नहीं है।

"दियासलाई है कामरेड ?" उस पोल ने ही सबसे पहले नियम को तोड़ा। और अपनी तलवार जैसी संगीन लगी फ्रांसीसी राइफिल को ठेल कर कंधे पर डालते हुए उसने अपनी अकड़ी हुई उंगलियों से बड़ी मुश्किल से अपने कोट की जेब में से सस्ती सिगरेट का एक पैकेट निकाला।

लाल सैनिक ने उसकी बात तो सुन ली, मगर सरहद की दूसरी तरफ के आदमी से बात करना कायदे के खिलाफ है, इसलिए उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसके अलावा यह भी था कि लाल सैनिक ठीक समझ नहीं पाया कि वह सिपाही क्या कहना चाहता है। इसलिए वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया। उसके नर्म और गर्म फेल्ट के जूतों के नीचे बर्फ चरमर कर रही थी।

"कामरेड बोल्शेविक, दियासलाई है ? माचिस की डिबिया फेंक दो न !" इस बार पोलिश सिपाही ने रूसी में बात की।

लाल सैनिक ने अपने पड़ोसी को बहुत गौर से देखा। उसने अपने मन में कहा, "लगता है कि पाले ने इन जनाब को बुरी तरह जकड़ लिया है। होने को तो बेचारा थैलीशाह का सिपाही है, मगर देखो कैसी भयानक जिन्दगी है। जरा सोचो, इतने कम कपड़ों में उसे बाहर की सर्दी में ढकेल दिया गया है ! क्या ताज्जुब कि वह खरहे की तरह उचकता फिर रहा है, और तब जब कि सिगरेट पीने का भी इंतजाम न हो।" बिना पीछे मुड़े लाल सैनिक ने माचिस की डिबिया उसकी तरफ फेंक दी। सिपाही ने उसे लपक लिया और कई बार की नाकाम कोशिश के बाद आखिरकार उसकी सिगरेट जली और उसने माचिस की डिबिया वापिस लाल सैनिक के पास फेंक दी। तब लाल सैनिक ने अनिच्छापूर्वक ही सही, नियम भंग करते हुए कहा :

"रखे रहो, मेरे पास और भी माचिस है।"

सरहद के उस पार से जवाब आया :

"धन्यवाद, मैं नहीं रखूंगा। कहीं उन्होंने मेरे पास यह डिबिया देख ली तो मुझे दो साल जेल में काटना पड़ेगा।"

लाल सैनिक ने गौर से अपनी माचिस की डिबिया को देखा। उसके लेबुल पर एक हवाई जहाज बना था जिसमें प्रोपेलर की जगह एक मजबूत मुट्ठी बनी हुई थी और अल्टीमेटम लिखा हुआ था।

"ठीक है, उनके यहां यह चीज नहीं चलेगी।"

वह सिपाही लाल सैनिक के साथ-साथ गश्त लगाता रहा। इस बीरान मैदान में वह बेहद अकेला महसूस कर रहा था।

घोड़े इतमीनान से दुलकी चाल से चले जा रहे थे और उनकी चाल के अनुसार काठियों के चूं-चूं करने में भी एक लय थी। पाले की हवा में घोड़ों के नथुनों से निकली हुई सांस थोड़ी देर के लिए जम कर सफेद भाप सी बन जाती थी। काले घोड़े के नथुने के इर्द-गिर्द थोड़ा सा पाला जमा हुआ था। अपनी खूबसूरत गर्दन को तिरछी किये और बड़ी खूबसूरती से डग भरती हुई बटालियन कमांडर की घोड़ी अपने मुंह में पकड़े लगाम से खिलवाड़ कर रही थी। दोनों घुड़सवार फौजी बरानकोट पहने हुए थे, उनकी कमर पर पेटी लगी थी और उनकी आस्तीनों पर तीन लाल चौखुटे बने हुए थे। दोनों में फर्क बस इतना ही था कि बटालियन कमांडर गाव्रिलोव की वर्दी के कफ-कॉलर वगैरह हरे रंग के थे और उसके साथी के लाल रंग के। गाव्रिलोव सरहदी सैनिकों के साथ था, इस पचपन मील लम्बे विस्तार में उसी की बटालियन सरहदी चौकियों की देखभाल करती थी, वही इस सरहदी इलाके का इंचार्ज था। उसका साथी बेरेजदोव से आया हुआ एक आदमी था—बटालियन कमिसार कोर्चागिन, जो सार्वजनिक फौजी शिक्षा-व्यवस्था की ओर से आया था।

रात को बर्फ गिरी थी और ताजी सफेद बर्फ के गाले कम्बल की तरह उस सारे इलाके पर पड़े हुए थे जिन्हें आदमी या जानवर किसी ने हाथ तक नहीं लगाया था। दोनों आदमी दुलकी चाल से अपने घोड़े को बढ़ाते हुए जंगल में से निकले और खुले मैदान को पार करने ही वाले थे, जहां से चालीस कदम पर सरहदी चौकियां थीं, जब कि गाव्रिलोव ने एकाएक अपने घोड़े को रोक लिया। कोर्चागिन ने पीछे मुड़ कर देखा कि गाव्रिलोव काठी से नीचे झुका हुआ बर्फ पर पड़े कुछ अजीब से निशानों का मुआइना कर रहा है। उसको देख कर ऐसा लगता था जैसे कोई छोटा सा दानेदार पहिया उस पर से गुजरा हो। कोई मक्कार जानवर इधर से गुजरा होगा जो बर्फ पर ये दाग छोड़ गया है जो अब उलझन पैदा कर रहे हैं। यह तो पता लगाना मुश्किल था कि जानवर किधर गया, मगर बटालियन कमांडर के रुकने की वजह यह नहीं थी। उस निशान से दो कदम पर, बर्फ के हलके से चूरे के नीचे एक और निशान था, किसी आदमी के पैर का निशान। पैर के निशानों में संशय की कोई बात न थी, वे सीधे जंगल की ओर निर्देश कर रहे थे और इसमें जरा सा भी सन्देह नहीं था कि पोलिश सीमा से कोई आदमी आया था। बटालियन कमांडर अपने घोड़े को आगे बढ़ाता हुआ सन्तरी की गश्त के रास्ते

के साथ-साथ चल रहा था। पैर के ये निशान पोलिश सरहद पर दस-बारह कदम तक दिखलाई दे रहे थे।

बटालियन कमांडर ने बड़बड़ाते हुए कहा, "रात को उधर से सरहद पार करके कोई आया था। तीसरा प्लैट्रन फिर ऊंघने लगा है—इस चीज का कोई हवाला उनकी सबेरे की रिपोर्ट में नहीं है। बहुत खराब बात है!" गाव्रिलोव की पकती हुई मूंछें बर्फ और पाले में उसकी सांस से और भी सफेद हो रही थीं और इस तरह उसके ओठों पर बैठी हुई थीं कि उनको देख कर डर लगता था।

दूर पर दो आकृतियां इन घुड़सवारों के पास आ रही थीं। उनमें से एक दुबला-पतला आदमी था जो काले कपड़े पहने था और जिसकी फ्रांसीसी संगीन धूप में चमक रही थी, और दूसरा एक बहुत ऊंचा-पूरा आदमी था जो पीले रंग का भेड़ की खाल का कोट पहने था। चित्ती घोड़ी एड़ के जवाब में तेजी से दौड़ रही थी और वे दोनों घुड़सवार इन लोगों के पास जल्दी से पहुंच गये। आकर लाल सैनिक ने राइफिल अपने कंधे से उतार ली और अपने मुंह में दबा हुआ सिगरेट का टुकड़ा बर्फ में थूक दिया।

"सुबह मुबारक हो कामरेड। तुम्हारे यहां क्या हालचाल है?" बटालियन कमांडर ने अपना हाथ उस लाल सैनिक की तरफ बढ़ाया। लाल सैनिक ने हाथ मिलाने के लिए जल्दी से अपने हाथ का दस्ताना अलग किया। वह सरहदी सन्तरी इतना लम्बा था कि उस तक पहुंचने के लिए कमांडर को अपनी काठी से आगे झुकने की भी जरूरत नहीं पड़ी।

वह पोल दूर से देखता रहा। यहां पर दो बोल्शेविक अफसर एक सैनिक का ऐसे अभिवादन कर रहे थे जैसे वह उनका बड़ा गहरा दोस्त हो। क्षण भर के लिए उसकी आंख के सामने भी यह तस्वीर आ गई कि जैसे वह मेजर जाक्रज्वेस्की से हाथ मिला रहा है। मगर यह विचार ही बेवकूफी से इतना भरा था कि उसने चौंक कर अपने इर्द-गिर्द देखा।

"मैंने आज ही चार्ज लिया है, कामरेड बटालियन कमांडर," उस लाल सैनिक ने रिपोर्ट दी।

"वहां का सारा रास्ता देख लिया है?"

"नहीं, अभी नहीं।

"यहां पर रात दो से छः बजे तक किसकी ड्यूटी थी?"

"सुरोतेंको की, कामरेड बटालियन कमांडर।"

"अच्छा अच्छा, मगर जरा आंखें खोल कर चलना।"

कमांडर ने अपने घोड़े को बढ़ाते-बढ़ाते चेतावनी के ये शब्द कहे:

"और देखो, उन आदमियों के साथ जरा कम घूमा करो।"

सरहद से बेरेजदोव जाने की चौड़ी सड़क पर उनके घोड़े दुलकी चाल से चले जा रहे थे। कमांडर ने अपने साथी से कहा, "यहां सरहद पर तुम अपनी आंखें जरा खुली रखना। जरा सी भी अगर कोई चूक हुई, तो उसका बुरा भुगतान करना पड़ेगा। हम लोगों का काम ऐसा है कि हम जरा भी सुस्ताने की जुर्रत नहीं कर सकते। दिन-दहाड़े तो सरहद में घुस आना आसान नहीं है, मगर रात को काफी होशियार रहने की जरूरत है। तुम्हीं सोचो कामरेड कोर्चागिन। मेरे हिस्से में, हमारी सरहद चार गांवों को काटती हुई जाती है, इससे मामला काफी पेचीदा हो जाता है। चाहे कितने ही पास-पास तुम सन्तरियों को क्यों न खड़ा करो, होगा यही कि सीमा-रेखा के एक तरफ के सम्बंधी, रेखा की दूसरी तरफ होने वाली हर शादी और जशन में जरूर शरीक होंगे। और क्या ताज्जुब—उन झोपड़ियों और खाड़ी के छिछले पानी के बीच मुश्किल से पच्चीस कदम का फासला होगा और वह पानी भी इतना छिछला है कि मुर्गी का बच्चा तक उसे पांव-पांव पार कर दे। इतना ही नहीं, सरहद पर माल का लेन-देन भी चोरी से होता है। यह सही है कि ज्यादातर बहुत छोटे पैमाने पर यह चीज होती है, जैसे कोई औरत पोलिश शराब की एक-दो बोतल ले आई या इसी किस्म की चीजें। मगर थोड़ा बहुत यह काम बड़े पैमाने पर भी होता है, बड़े-बड़े पैसेवाले इस काम को करते हैं। तुमने सुना है न कि सरहद पर के तमाम गांवों में पोलों ने दूकानें खोल दी हैं जिनमें तुम्हें जरूरत की हर चीज मिल सकती है ? और यकीन मानो कि ये दूकानें उन्होंने अपने गरीब किसानों के लिए नहीं खोली हैं।"

बटालियन कमांडर की बात सुनते-सुनते कोर्चागिन सोचने लगा कि सरहद की जिन्दगी स्काउटिंग करने जैसी जिन्दगी है जिसका कोई भी ओर-छोर नहीं।

"तुम्हारा क्या ख्याल है कामरेड गाव्रिलोव, मैं तो सोचता हूं कि शायद चोरी-चोरी माल की बिक्री के अलावा और भी कुछ ज्यादा गंभीर चीजें यहां पर चल रही हैं ?"

"यही तो मुसीबत है," बटालियन कमांडर ने चिन्ता के स्वर में जवाब दिया।

बेरेजदोव एक छोटा सा कस्बा था जिसमें खास आबादी यहूदियों की थी। उसमें दो-तीन सौ छोटे-छोटे मकान थे जो बेतरतीबी से इधर-उधर फैले हुए थे और एक बड़ा सा बाजार का चौक था जिसके बीचोबीच कोई दो दर्जन दूकानें थीं। वह चौक लीद-गोबर से गंदा रहता था। खास कस्बे के चारों तरफ किसानों की झोपड़ियां थीं। यहूदियों की आबादी वाले हिस्से

के बीच में बूचड़खाने के रास्ते पर एक पुराना यहूदी गिर्जाघर खड़ा था। उसकी बड़ी टूटी-फूटी गंदी सी इमारत थी। गोकि इस गिर्जाघर में सनीचर को भीड़ इकट्ठा होती थी, मगर तो भी अब उसके चहल-पहल के दिन गायब हो चुके थे और गिर्जाघर का यहूदी पादरी एक ऐसी जिन्दगी बसर करता था जो कि निश्चय ही उसको बहुत प्रिय न थी। १९१७ में जो कुछ हुआ था, वह जरूर ही बुरी चीज थी क्योंकि उसी की वजह से तो अब यह हालत थी कि इस मनहूस जगह में भी जरा-जरा से छोकरे तक उसकी कोई इज्जत न करते थे जब कि उसे यह इज्जत पाने का हक़ था। यह सच है कि बूढ़े-पुराने लोग सिर्फ कोशर (हलाल) खाना खाते थे, मगर न जाने कितने छोकरे थे जो सुअर के गोश्त जैसी हराम चीज के बने हुए सॉसेज खाते थे। इस ख्याल से ही यहूदी पादरी को मितली मालूम होने लगती थी! और रबाई बोरुख ने गुस्से में आकर जोर से एक सुअर के लात लगाई जो लीद-गोबर के ढेर में अपने खाने की चीज ढूंढ़ रहा था। पादरी को इस बात की जरा भी खुशी नहीं थी कि बेरेजदोव को जिले का केन्द्र बना दिया गया और न उसे ये कम्युनिस्ट ही पसन्द थे जो भगवान जाने कहां से आ गये थे और अब तमाम चीजों को उलट-पलट कर रखे दे रहे थे। हर रोज कोई नई बदमजगी पैदा हो जाती। मिसाल के लिए, कल उसने पादरी के मकान के दरवाजे पर यह साइनबोर्ड लगा देखा: "बेरेजदोव जिला कमिटी, उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग।"

रबाई ने सोचा कि इस साइनबोर्ड से सिवा बुराई के दूसरी किसी भी चीज की उम्मीद करना बेसूद होगा। वह अपने ख्याल में इतना डूबा हुआ था कि उसने अपने गिर्जाघर के दरवाजे पर चिपकी हुई नोटिस को देखा ही नहीं, जब तक कि वह उसके ठीक सामने न पहुंच गया। नोटिस में लिखा हुआ था:

> "मजदूर नौजवानों की एक आम सभा आज क्लब में होगी। कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन लिसित्सिन और नौजवान कम्युनिस्ट लीग की जिला कमिटी के कार्यवाहक मंत्री कोर्चागिन के भाषण होंगे। मीटिंग के बाद नौवर्षीय स्कूल के विद्यार्थी गाने-बजाने का कार्यक्रम पेश करेंगे।"

रबाई ने गुस्से में आकर नोटिस को नोच लिया और बोला, "अच्छा तो उन्होंने बिस्मिल्ला कर भी दिया!"

स्थानीय गिर्जाघर से लगे हुए एक लम्बे-चौड़े बाग के बीच में एक बड़ा सा पुराना मकान खड़ा था जो किसी जमाने में पादरी का था। मकान के

कमरों की, जिनमें पादरी अपनी बीवी के साथ रहता था, हवा में घुटन सी महसूस होती थी और ऐसा मालूम होता था कि वहां के कोने-कोने में भयानक ऊब और थकान भरी हुई है। यह मियां-बीवी उस मकान ही की तरह बुड्ढे और उतने ही जड़ थे और बहुत जमाने से एक-दूसरे से बिलकुल ऊबे हुए थे। मकान के नये मालिकों के आने के साथ ही वहां की सारी ऊब और थकान भी जैसे साफ हो गई। उस बड़े हॉल में, जिसमें वे धर्मप्राण लोग सिर्फ गिर्जा-घर की छुट्टियों के रोज अपने मेहमानों का स्वागत-सत्कार करते थे, अब हमेशा भीड़ लगी रहती थी क्योंकि वह मकान अब बेरेजदोव कम्युनिस्ट पार्टी कमिटी का हेडक्वार्टर था। सामने के हॉल के दाहिनी तरफ वाले छोटे कमरे के दरवाजे पर खड़िये से "कोमसोमोल जिला कमिटी" लिखा हुआ था। यहीं पर कोर्चागिन, जो दूसरी यूनिवर्सिल मिलिटरी ट्रेनिंग बटालियन का फौजी कमिसार होने के साथ ही साथ नवसंगठित कोमसोमोल जिला कमिटी का कार्यवाहक मंत्री भी था, अपने दिन का काफी वक्त गुजारता था।

आना के घर की उस गोष्ठी में गये उसको आठ महीने गुजर चुके थे, मगर उसको ऐसा लगता था कि जैसे यह अभी कल की ही बात हो। कोर्चा-गिन ने कागज के ढेर को एक तरफ सरका दिया और अपनी कुर्सी पर पीछे को झुका हुआ अपने ख्यालों में डूब गया...।

घर में शान्ति थी। रात काफी जा चुकी थी और पार्टी कमिटी का दफ्तर खाली हो गया था। कमिटी का मंत्री त्रोफीमोव कोर्चागिन को घर में अकेला छोड़ कर थोडी देर पहले अपने घर चला गया था। पहले से खिड़की पर अजीब-अजीब सी आकृतियां बनी हुई थीं, मगर कमरा गर्म था। मेज पर मिट्टी के तेल का लैम्प जल रहा था। कोर्चागिन अभी कुछ दिन पहले की बातें याद कर रहा था। उसे याद आया कि कैसे अगस्त के महीने में कारखाने के कोमसोमोल संगठन ने उसे नौजवानों का संगठनकर्ता बना कर एक मरम्मती गाड़ी के साथ एकातेरीनोस्लाव भेजा था। पतझड़ के आखिरी दिनों तक वह रेलगाड़ी के डेढ़ सौ लोगों के साथ-साथ एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन घूमता फिरा था। लड़ाई के बाद की गड़बड़ी को दूर करके व्यवस्था स्थापित करना, टूटी-फूटी चीजों की मरम्मत करना और रेल के जले हुए और टूटे-फूटे डब्बों के अवशेषों की सफाई करना—यही उसका काम था। सिनेलनिकोवो से पोलोगी तक उन लोगों ने सफर किया और यही वह इलाका था जिसमें माखनो डाकू लूटपाट करके चारों तरफ तबाही व बर्बादी फैलाया करता था। गुलियाई-पोलिये में वाटर-टावर की ईंट की बनी इमारत की मरम्मत करने और डाइनामाइट से उड़ाई गई पानी की टंकी की दीवारों पर जहां-तहां लोहे की पत्तरें बिछाने में पूरा एक हफ्ता लगा। गोकि पावेल फिटर नहीं था और इस

भारी काम का आदी नहीं था, तब भी औरों के साथ-साथ उसने भी रिंच संभाली और न जाने कितने हजार जंग लगे बोल्ट कसे।

पतझड़ बीतते-बीतते रेलगाड़ी घर लौटी और कारखाने फिर अपने डेढ़ सौ काम करने वालों को पा गये...।

इलेक्ट्रीशियन पावेल अब अक्सर आना के घर जाया करता। उसके माथे की झुर्रियां साफ हो गईं और उसकी हंसी फिर से सुनी जाने लगी।

रेलवे कारखाने के धूल-धक्कड़ से भरे चेहरे वाले मजदूर एक बार फिर उसके मुंह से संघर्ष के पिछले वर्षों की कहानी सुनने के लिए जुटे, उन प्रयत्नों की कहानी जो गुलाम मगर विद्रोही रूस के किसानों ने अपने कंधों पर सवार बादशाहों को उलटने के लिए किये थे, स्तेपान राजिन और पुगाचोव के विद्रोहों की कहानी।

एक शाम आना के घर पर, जब रोज से ज्यादा नौजवान इकट्ठा हुए थे, पावेल ने घोषणा की कि वह सिगरेट पीना छोड़ देगा, जिसकी आदत उसे लगभग अपने बचपन से ही पड़ी हुई थी।

उसने दृढ़ संकल्प के स्वर में घोषणा की, "अब मैं कभी सिगरेट नहीं पीऊंगा।"

यह चीज अचानक ही हुई। वहां पर मौजूद एक नौजवान ने यह कहा कि आदत—मसलन सिगरेट पीने की आदत—इच्छाशक्ति से ज्यादा मजबूत चीज होती है। इस सवाल पर दो मत थे। पहले तो पावेल ने कुछ नहीं कहा, मगर जब तालिया ने उसको बहस में खींचा तो आखिरकार वह भी बहस में शरीक हो गया।

"आदमी अपनी आदतों पर शासन करता है, न कि आदतें आदमी पर। अगर ऐसा न हो तो पता नहीं हम कहां पहुंच जायें।"

स्वेतायेव ने एक कोने में बैठे-बैठे अपनी जगह से कहा, "सुनने में बात बहुत अच्छी लगती है, है न? कोर्चागिन को बढ़-बढ़ कर बात करना पसन्द है। मगर अपनी विद्वत्ता का इस्तेमाल वह अपने ऊपर क्यों नहीं करता? वह सिगरेट पीता है, झूठ कहता हूं? यह भी उसे मालूम है कि यह बड़ी गंदी आदत है। अच्छी तरह उसे यह बात मालूम है। मगर उसमें इतनी मर्दानगी नहीं कि इस आदत को छोड़ दे।" फिर अपने स्वर को बदलते हुए स्वेतायेव ने तीखे व्यंग के स्वर में कहा: "अभी कुछ ही रोज पहले वह अध्ययन केन्द्रों में संस्कृति का प्रसार करने में लगा था, मगर इससे उसका गाली बकना बंद हुआ क्या? कोई भी आदमी जो पावका को जानता है, यही कहेगा कि वह बहुत गाली नहीं बकता, मगर एक बार जब शुरू करता है तो फिर उसे कोई

रोकटोक पसन्द नहीं होती। दूसरे को उपदेश पिलाना खुद आचरण करने से हमेशा ज्यादा सरल पड़ता है।"

इसके बाद खामोशी छा गई जिसमें काफी तनाव था। स्वेतायेव के स्वर के तीखेपन ने सबको जैसे ठण्डा कर दिया था। कोर्चागिन ने तत्काल कोई जवाब नहीं दिया। धीरे-धीरे उसने अपने ओठों के बीच से सिगरेट निकाली और कहा :

"अब मैं फिर कभी सिगरेट नहीं पीऊंगा।"

फिर थोड़ी देर की खामोशी के बाद उसने कहा :

"यह मैं दिम्का की खातिर नहीं, खुद अपने खयाल से कर रहा हूं। जो आदमी किसी बुरी आदत से अपना पीछा नहीं छुड़ा सकता, वह किस काम का आदमी है। इसके बाद अब सिर्फ वह गाली बकने वाली आदत रह जाती है, जिसकी मुझे फिक्र करनी होगी। मैं जानता हूं कि मैं इस जलील आदत पर अब तक काबू नहीं पा सका हूं, मगर दिम्का भी इस बात को मानता है कि अब वह मेरे मुंह से गालियां कम ही सुनता है। सिगरेट पीना बंद करने से किसी बुरे शब्द का मुंह से निकलना बन्द करना ज्यादा मुश्किल काम है। इसलिए अभी मैं यह नहीं कह सकता कि सिगरेट ही की तरह मैं आज से गाली बकना भी बन्द कर दूंगा। लेकिन इसका मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि यह बुरी आदत भी मैं छोड़ जरूर दूंगा।"

पाला शुरू होने के ठीक पहले नदी में बह कर आते हुए लकड़ी के कुन्दों ने नहर को जाम कर दिया। फिर पतझड़ की बाढ़ों ने उन्हें तोड़ दिया और तेज बहता हुआ पानी उस लकड़ी को, जिसकी इतनी सख्त जरूरत थी, बहा ले गया। और तब तक एक बार फिर सोलोमेंका ने अपने लोगों को रक्षा के काम पर भेजा, इस बार उस अनमोल लकड़ी की रक्षा के लिए।

कोर्चागिन दूसरे लोगों से पीछे नहीं छूटना चाहता था, इसलिए उसने हफ्ते भर तक, जब तक कि किनारे पर लकड़ी का ढेर नहीं लग गया, किसी को यह नहीं बतलाया कि उसे सर्दी लग गई है। उस बर्फानी पानी और पतझड़ की उस ठंडी सीलन ने उसके खून में सोते हुए उसके पुराने दुश्मन को जगा दिया और उसे तेज बुखार चढ़ आया। वह फिर बिस्तर पर पड़ गया। दो हफ्ते तक उसके शरीर में गठिये की सख्त तकलीफ रही और जब वह अस्पताल से लौटा तो उसकी यह हालत थी कि वह एक टांग बेन्च के इधर और एक टांग उधर रख कर ही अपनी जगह पर काम कर सका। फोरमैन उसको देखकर उदासी से सिर हिलाता था। कुछ दिन बाद एक मेडिकल बोर्ड

ने उसे काम के लिए अयोग्य घोषित कर दिया और उसको बर्खास्तगी की तनखा और पेंशन पाने के अधिकार का सर्टिफिकेट दे दिया गया। मगर कोर्चागिन ने गुस्से से उसको लेने से इनकार कर दिया।

वह कारखाने से चला तो उसका दिल भारी था। वह धीरे-धीरे अपनी छड़ी का सहारा लिए जा रहा था, मगर हर कदम पर उसे सख्त दर्द महसूस होता था। उसे अपनी मां के कई खत मिले थे जिसमें उसने पावेल को घर बुलाया था और हर बार जब उसे अपनी मां का खयाल आता, तो उसके मन में अपनी मां के विदाई के समय के ये शब्द गूंज जाते :

"मैं तो तुम्हें तभी देखती हूं जब तुम लाचार और मजबूर होते हो।"

सूबा कमिटी में उसे अपना कोमसोमोल और पार्टी का कार्ड दिया गया और फिर वह जाते समय कम से कम लोगों से मिल कर, ताकि जुदाई में उतना ही कम दर्द हो, चुपके से अपनी मां के पास जाने के लिए शहर से निकल गया। दो हफ्ते तक उसकी बुढ़िया मां ने उसकी सूजी टांगों को भाप से सेंका और उनकी मालिश की और महीने भर में ही वह इस काबिल हो गया कि बिना अपनी छड़ी का सहारा लिए चल सकता था। उसका मन उस समय खुशी से भर उठा जब उसकी जिन्दगी में गोधूलि की जगह यह एक नया सबेरा फिर से आया। एक बार फिर रेलगाड़ी उसे सूबे के केन्द्र में ले आई। तीन दिन उसने वहां पर गुजारे और संगठन विभाग ने उसे प्रादेशिक फौजी कमिसारियट में एक फौजी शिक्षा की यूनिट में राजनीतिक कार्यकर्ता का काम सौंप दिया।

एक हफ्ता और गुजरा और पावेल दूसरे नम्बर की बटालियन का फौजी कमिसार बन कर एक छोटे से, बर्फ से ढंके हुए, कस्बे में पहुंच गया। कोमसोमोल की एरिया कमिटी ने भी उसे एक काम सौंप दिया : वह काम था इलाके के बिखरे हुए कोमसोमोल सदस्यों को इकट्ठा करना और उस जिले में नौजवान सभा का संगठन कायम करना। और इस तरह जिन्दगी फिर चल निकली।

बाहर बड़ी सख्त, दम घोंटने वाली गर्मी थी। कार्यकारिणी समिति के दफ्तर की खुली खिड़की में से चेरी के पेड़ की एक शाख भीतर झांक रही थी। सड़क के उस पार एक पोलिश गिर्जे के गोथिक शैली के घंटाघर के ऊपर लगा हुआ सुनहरा क्रॉस धूप में चमक रहा था। और खिड़की के सामने हाते में छोटे-छोटे, आसपास की घास के समान हरे-हरे बत्तख के बच्चे खाने की तलाश में व्यस्त घूम रहे थे। ये बत्तख के बच्चे कार्यकारिणी समिति के रखवाले के थे।

कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन ने उस खत को जो अभी-अभी उसे मिला था, पढ़ कर खतम किया। उसके चेहरे पर एक छाया सी आ गयी और उसका बड़ा सा गंठीला हाथ उसके बड़े-बड़े बालों में घूमने लगा और वहीं रुक गया।

बेरेजदोव कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन निकोलाई निकोलायेविच लिसित्सिन की उम्र सिर्फ चौबीस साल की थी, मगर न तो उसके कर्मचारी और न कोई स्थानीय पार्टी कार्यकर्ता ही इस बात का विश्वास करता था। लिसित्सिन लम्बा-चौड़ा मजबूत आदमी था और देखने में इतना कठोर कि अक्सर डर लगता था और इसी सबसे उसकी उम्र कम से कम पैंतीस की मालूम होती थी। उसका शरीर खूब तगड़ा था, मोटी सी गर्दन और उस पर बड़ा सा सिर, भूरे रंग की तेज नुकीली आंखें जिनमें एक फौलादी चमक थी और मजबूत जबड़े जिनको देखकर लगता था कि यह उत्साही आदमी है। वह नीले रंग की बिजिस और भूरी वर्दी पहनता था जो अब घिस गई थी और जिसकी बाईं तरफ वाली जेब पर "ऑर्डर ऑफ द रेड बैनर" टंका हुआ था।

अपने बाप और दादा की तरह लिसित्सिन भी बचपन से ही धातु का काम करने वाला मजदूर रहा था। और अक्तूबर क्रान्ति के पहले तुला नगर के एक तोप के कारखाने में वह एक खराद का "कमांडर" था।

पतझड़ की उस रात से शुरू करके जब तुला का यह लुहार कंधे पर राइफिल रख कर मजदूरों के राज के लिए लड़ने गया, तब से अब तक वह घटनाओं के भंवर में ही चल रहा था। क्रान्ति और पार्टी ने कोलिया लिसित्सिन को एक कठिन जगह से दूसरी कठिन जगह भेजा और उन सभी जगहों में अपने काम को शान से पूरा करते हुए लिसित्सिन लाल सेना के साधारण सैनिक से रेजीमेंट का कमांडर और कमिसार बना।

लड़ाई की आग और तोपों की गरज अब अतीत का अंग हो गयी थी। अब निकोलाई लिसित्सिन सरहद पर के एक जिले में काम कर रहा था। जिन्दगी धीमे-धीमे सम-चाल से चली जा रही थी और कार्यकारिणी का चेयरमैन अपने दफ्तर में बैठा हर रोज बड़ी रात तक खेती की फसल की रिपोर्टों को उलटता-पलटता रहता था। इस वक्त उसके सामने जो खत था, उसने थोड़ी देर के लिए उसके हाल के गुजरे हुए जमाने की याद को ताजा कर दिया। यह तार की संक्षिप्त भाषा में एक चेतावनी थी :

"अत्यन्त गोपनीय। बेरेजदोव कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन लिसित्सिन के नाम।

"इधर देखने में आ रहा है कि सरहद पर पोल लोग हमारी सीमा में सरहदी इलाके के लोगों में आतंक फैलाने के लिए बड़े-बड़े गिरोहों को भेज रहे हैं। बचाव का इंतजाम करने की जरूरत है। हमारा प्रस्ताव है कि अर्थ-विभाग की तमाम कीमती चीजें, जिनमें जमा किया हुआ टैक्स भी शामिल है, एरिया सेंटर में भेज दी जायें।"

अपनी खिड़की में से लिसित्सिन जिला कार्यकारिणी समिति की इमारत में आनेवाले हर आदमी को देख सकता था। उसने नजर उठाई तो पावेल कोर्चागिन को सायबान में खड़ा पाया। क्षण भर बाद दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

लिसित्सिन ने पावेल से हाथ मिलाते हुए कहा, "बैठ जाओ, मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

पूरे एक घंटे तक दोनों दफ्तर में बैठे बातें करते रहे।

कोर्चागिन के दफ्तर से निकलते-निकलते दोपहर का वक्त हो गया था। जैसे ही वह दफ्तर से बाहर आया, लिसित्सिन की छोटी बहन, जो थी तो बच्ची मगर अपनी उम्र से कहीं ज्यादा गंभीर थी, बागीचे में से भाग कर उसके पास आई। कोर्चागिन को देख कर वह हमेशा बड़े प्यार से मुस्करा देती थी। कोर्चागिन उसे प्यार में अन्युत्का कह कर बुलाता था, जो उसके नाम का संक्षिप्त रूप था। इस वक्त भी उसने लजाते हुए पावेल का अभिवादन किया और सिर को झटका देकर एक बिखरी हुई लट को माथे पर से पीछे हटा दिया।

उसने पूछा, "क्या कोलिया बहुत व्यस्त है? मारिया मिखाइलोवना बड़ी देर से उसका खाना तैयार करके बैठी हुई है।"

"अंदर चली न जाओ अन्युत्का, वह अकेला बैठा है।"

दूसरे रोज सबेरे, भोर होने के बहुत पहले तीन गाड़ियां, जिन्हें अच्छे मोटे-ताजे घोड़े खींच रहे थे, आकर कार्यकारिणी समिति के सामने रुकीं। उन गाड़ियों के साथ जो लोग आये थे, उन्होंने धीमी आवाज में आपस में बातें की और इसके बाद कई मुहरबन्द बोरे अर्थ-विभाग से बाहर लाये गये। उन्हें गाड़ियों पर लादा गया और कुछ मिनट बाद गाड़ियां उनको लेकर चली गईं और सड़क पर उनकी दूर जाती हुई आवाज सुनाई देने लगी। इन गाड़ियों को हिफाजत से अपनी जगह पर पहुंचाने की जिम्मेदारी एक सैनिक दस्ते की थी जिसका नायक कोर्चागिन था। वहां से प्रादेशिक केन्द्र तीस मील दूर था (जिसमें से कोई बाईस मील का रास्ता जंगल होकर था)। सुरक्षित ढंग से वे सारी कीमती चीजें एरिया अर्थ-विभाग की तिजोरियों में पहुंच गईं।

इसके कुछ दिन बाद एक घुड़सवार, जिसके घोड़े के मुंह से फिचकुर निकल रहा था, सरहद की ओर से सरपट बेरेजदोव में आया। वह सड़कों के बीच से गुजरा तो शहर के नाकारे लोग अचंभे से उसको घूरने लगे।

कार्यकारिणी समिति के फाटक पर पहुंच कर सवार कूद कर घोड़े से नीचे आ गया और अपनी तलवार को एक हाथ से संभाले, अपने भारी-भारी बूट पहने सीढ़ियों पर धम-धम चढ़ गया। उसको देख कर लिसित्सिन के माथे पर परेशानी से बल पड़ गये और उसने उसके हाथ से खत ले लिया और लिफाफे पर दस्तखत करके लिफाफा उसे वापिस दे दिया। चिट्ठी देकर वह सरहदी संतरी अपने घोड़े पर सवार हुआ और घोड़े को सुस्ताने का जरा भी समय दिये बिना उसने घोड़े को एड़ लगाई और जिधर से आया था, सरपट उधर ही चला गया।

कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन के अलावा और किसी को नहीं मालूम था कि उस चिट्ठी में क्या लिखा है, और अभी ही उसने उस चिट्ठी को पढ़ा था। मगर शहर वालों की नाक भी अजीब होती है, उनको पता नहीं कैसे होने वाली घटनाओं का सुराग मिल जाता है। यहां के तीन में से दो छोटे-मोटे सौदागर चोरी से माल लाने-ले-जाने का काम कुछ-न-कुछ जरूर करते थे और इस काम को करने के ही सिलसिले में आने वाले खतरे को समझ जाने की एक सहज चेतना उनके अंदर पैदा हो गई थी।

दो आदमी तेजी से फौजी ट्रेनिंग बटालियन के हेडक्वार्टर को जाने वाले चौड़े रास्ते पर चले जा रहे थे। उनमें से एक पावेल कोर्चागिन था। वह हथियारों से लैस था मगर इससे दर्शकों को कोई आश्चर्य नहीं हो रहा था। यह तो उसकी आदत थी। मगर इस बात से उनको खतरे का कुछ-कुछ आभास हो रहा था कि पार्टी कमिटी के मंत्री त्रोफीमोव ने भी रिवाल्वर लटका रखी थी।

कुछ मिनट बाद एक दर्जन लोग अपनी राइफिलों में संगीनें लगाये हेडक्वार्टर में से निकले और फुर्ती से मार्च करते हुए चौराहे पर खड़ी मिल के पास पहुंच गये। स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टी और कोमसोमोल के बाकी सदस्यों को पार्टी दफ्तर में हथियार दिये जा रहे थे। कार्यकारिणी समिति का चेयरमैन कौसेकों वाली टोपी और हमेशा की तरह अपनी माउजर पेटी में लगाये घोड़े पर सरपट निकल गया। जरूर कुछ मामला है। खास चौक और आसपास की गलियां सूनी हो गईं। चिड़िया का पूत नजर नहीं आता था। देखते-देखते उन छोटी-मोटी दूकानों के दरवाजों पर बाबा आदम के वक्त के बड़े-बड़े ताले लटकने लगे और खिड़कियों की चिटखनियां चढ़ा दी गयीं। सिर्फ निडर मुर्गियां और सुअर गर्मी से परेशान होकर गंदगी के ढेर में अपने खाने की तलाश में घूमते रहे।

शहर के छोर पर के बागीचों में वे सिपाही छिप गये। वहां से खुला मैदान और सीधी दूर तक चली जाती हुई सड़क उन्हें साफ दिखाई देती थी।

लिसित्सिन को जो चिट्ठी मिली थी उसमें बहुत संक्षेप में बस यह लिखा था:

"कल रात लगभग सौ घुड़सवार दो हलकी मशीनगनें लेकर पोदुब्सी के इलाके में एक झड़प के बाद सोवियत क्षेत्र में घुस आये। बचाव की तदबीर करो। हमलावर गिरोह का निशान स्लावुता के जंगलों में जाकर खो गया है। गिरोह का पीछा करने के लिए एक बोल्शेविक कौसेक कंपनी भेजी गयी है। यह कंपनी दिन के वक्त बेरेजदोव से गुजरेगी। उनको दुश्मन न समझना। गाव्रिलोव; कमांडर, सरहदी बटालियन।"

मुश्किल से एक घंटा गुजरा होगा जब एक घुड़सवार शहर जाने वाली सड़क पर दिखाई दिया। उसके करीब पांच-छ: फर्लांग पीछे और भी घुड़सवार चले आ रहे थे। कोर्चागिन बड़े गौर से उनको देख रहा था। आगे-आगे चलने वाला घुड़सवार सातवीं लाल कौसेक रेजीमेंट का एक नौजवान सैनिक था। बावजूद इसके कि वह बहुत होशियारी से आगे बढ़ रहा था, उसे सड़क के पास के बागीचों में छिपे हुए लोग दिखाई नहीं दिये। इससे पहले कि वह मामले को समझ पाये, हथियारों से लैस लोगों ने हरियाली में से बाहर सड़क पर आकर उसे चारों ओर से घेर लिया। उसने उन लोगों की वर्दियों पर कोमसोमोल का निशान देखा, तो खिसिया कर मुस्कराया। संक्षेप में उसको बात समझाई गई और उसने अपना घोड़ा फेरा और पीछे दुलकी चाल से चले आते हुए घुड़सवारों के पास सरपट अपने घोड़े को भगा ले गया। कोमसोमोल के इन लोगों ने लाल कौसेकों को गुजर जाने दिया और वापस अपनी जगहों पर पहुंच कर पहरा देने लगे।

लिसित्सिन के कई दिन बड़ी चिंता में गुजरे। कई दिन बाद ही उसको यह खबर मिली कि हमलावर पोलों का वह गिरोह अपना काम करने में नाकाम रहा था। लाल घुड़सवारों ने उसका पीछा किया और उसे भाग कर अपनी सरहद में चला जाना पड़ा।

उन्नीस बोल्शेविकों ने इस इलाके में सोवियत जिंदगी के निर्माण के काम को उत्साह के साथ करना शुरू किया। यह एक नया इलाका था और इसलिए हर काम की शुरुआत नींव से करनी थी। इसके अलावा चूंकि सरहद यहां से बहुत पास थी, इसलिए सबको बहुत सावधान रहना पड़ता था।

लिसित्सिन, त्रोफीमोव, कोर्चागिन और दूसरे मुट्ठी भर कार्यकर्ता, जिन्हें उन्होंने इकट्ठा किया था, सबेरे से शाम तक सोवियतों के नये चुनाव का इंतजाम, डाकुओं से लड़ना, सांस्कृतिक काम का संगठन, चोरी से माल लाने-ले-जाने की रोकथाम वगैरह किया करते थे और इसके साथ-साथ अपनी सुरक्षा को मजबूत करने का पार्टी और कोमसोमोल का काम भी करते थे।

घोड़े की पीठ पर से मेज पर और फिर मेज से मैदान में, जहां फौजी शिक्षार्थी ड्रिल किया करते थे, फिर क्लब और स्कूल और दो-तीन कमिटी

मीटिंगें—दूसरी बटालियन के फौजी कमिसार की यही दिनचर्या थी। उसके बगल में माउजर लटकी रहती और अक्सर उसकी रातें घोड़े की पीठ पर गुजरती थीं—ऐसी रातें जिनकी निस्तब्धता "हाल्ट, कौन है ?" और चोरी से लाये गये माल से लदी हुई तेजी से भागती हुई गाड़ियों के पहियों की आवाज से ही भंग होती थी।

बेरेजदोव की कोमसोमोल जिला कमिटी में कोर्चागिन, लिदा पोलेविख और जेंका राजवालिखिन थे। लिदा वोल्गा की रहने वाली नीली आंख की एक लड़की थी जो महिला विभाग की अध्यक्षा थी और जेंका राजवालिखिन एक लम्बा खूबसूरत नौजवान था जो अभी कुछ ही समय पहले हाई स्कूल का विद्यार्थी था। राजवालिखिन के मन में रोमांचकारी साहसिक कारनामों के लिए जबरदस्त मोह था और शर्लक होम्स और लुई बुसेनार के बारे में तो उससे ज्यादा कोई जानता ही न था। पहले वह पार्टी की जिला कमिटी का आफिस मैनेजर था और गोकि कोमसोमोल में आये उसे अभी सिर्फ चार ही महीने हुए थे, वह दूसरे नौजवानों के सामने अपने को "पुराना बोल्शेविक" कहता था। एरिया कमिटी ने कुछ हिचकते हुए उसको राजनीतिक शिक्षा का भार देकर बेरेजदोव भेजा था और इसलिए भेजा था क्योंकि दूसरा कोई आदमी उपलब्ध नहीं था।

सूरज अपने शिखर पर था। हर तरफ गरमी थी और सभी जीवित प्राणी छाया में शरण ढूंढ़ रहे थे। यहां तक कि कुत्ते भी शेडों में घुसे हुए हांफते, ऊंघते और बेजान से पड़े थे। गांवों में जिंदगी की अकेली निशानी एक सुअर था जो कुएं के पास कीचड़ की एक तलैया में मौज से पड़ा हुआ था।

कोर्चागिन ने अपने घोड़े को खोला और घुटने के दर्द से ओठों को काटता हुआ कूद कर घोड़े की पीठ पर सवार हुआ। उस्तानी स्कूल की इमारत की सीढ़ियों पर खड़ी थी और धूप से बचने के लिए आंख पर हथेली की आड़ लिए हुए थी।

उसने मुस्करा कर कहा, "कामरेड फौजी कमिसार, उम्मीद करती हूं कि आप से फिर मुलाकात होगी।"

घोड़ा अधीर होकर पैर पटक रहा था और अपनी गर्दन तान कर रास पर जोर दे रहा था।

"अच्छा विदा कामरेड राकीतिना ! तो यह बात तय हो गई, कल पहला सबक आप ही पढ़ायेंगी।"

रास को ढीला पाकर घोड़ा तेजी से चल दिया। तभी एकाएक पावेल के कानों में जोर-जोर से चीखने की आवाजें आयीं। यह गांव में आग लग जाने

पर औरतों के चीखने जैसी आवाज थी। तेजी से अपने घोड़े को लौटाते हुए फौजी कमिसार पावेल ने एक नौजवान किसान स्त्री को बेतहाशा गांव में भाग कर आते देखा। राकीतिना ने जल्दी से आगे बढ़कर उस औरत को रोका। पास की झोपड़ियों से उनमें रहने वाले, जिनमें ज्यादातर बूढ़े स्त्री व पुरुष थे, क्योंकि मेहनत कर सकने वाले किसान खेतों में काम कर रहे थे, बाहर की ओर देखने लगे।

"ओह! भाइयो, जल्दी चलो, जल्दी चलो! वहां वे लोग एक-दूसरे को मारे डाल रहे हैं।"

कोर्चागिन जब सरपट भाग कर वहां पहुंचा तो लोग उस औरत के इर्द-गिर्द भीड़ लगा रहे थे, उसके सफेद ब्लाउज को पकड़ कर तान रहे थे और बहुत चिंतित होकर उससे सवाल पर सवाल किये जा रहे थे। मगर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि मामला क्या है, क्योंकि वह औरत बेतहाशा चीखे जा रही थी। "कत्ल हो रहा है! वे लोग काट कर रखे दे रहे हैं!" बस इतना ही कह पाती थी। उलझी हुई दाढ़ी वाला एक बुड्ढा अपने हाथ के कते-बुने पाजामे को एक हाथ से संभाले दौड़ने की कोशिश करता हुआ वहां आया।

उसने उस घबराई हुई औरत से चिल्ला कर कहा, "बंद करो अपना चीखना, साफ-साफ तो बोलो कुछ! किसका कत्ल हो रहा है? मामला क्या है? अपनी यह भौं-भौं तो बंद करो!"

"हमारे आदमियों में और पोदुब्सी वालों में लड़ाई हो रही है। वे हमारे आदमियों का कत्ल कर रहे हैं!"

इसी से सारी बात उनकी समझ में आ गई। औरतें रोने लगीं और बुड्ढे लोग गुस्से में जोर-जोर से सांस छोड़ने लगे। यह खबर गांव भर में, कोनों-अंतरों तक में लहर की तरह फैल गई: "वे पोदुब्सी वाले हंसियों से हमारे आदमियों को काटे डाल रहे हैं...फिर वही पुराना सरहद वाला झगड़ा है!" सिर्फ वे लोग जो बिस्तर पकड़े हुए थे, घर के अन्दर रहे, बाकी सारे लोग बाहर गांव की सड़क पर निकल आये और लाठी, गड़ांसा, कुल्हाड़ी, वगैरह से लैस होकर उन खेतों की तरफ दौड़े जहां दोनों लोग मेड़ के झगड़ों को लेकर एक दूसरे का खून बहा रहे थे। और साल में एक बार यह चीज जरूर होती थी।

कोर्चागिन ने अपने घोड़े को चाबुक लगाया और घोड़ा सरपट भाग चला। घुड़सवार कोर्चागिन की आवाजों से घोड़ा दौड़ता हुआ गांव वालों के पास से तीर की तरह निकल गया। उसके कान पीछे को दबे हुए थे और उसकी टापें जमीन को रौंद रही थीं और उसकी चाल बराबर तेज होती जा रही थी।

सामने एक पहाड़ी पर एक हवा की चक्की बाहें फैलाये खड़ी थी मानो घोड़े का रास्ता रोकना चाहती हो। दाहिनी तरफ नदी के किनारे खाले में चरागाह थी और बायीं तरफ एक राई का खेत था जो दूर क्षितिज तक चला गया था। पकी हुई राई की बालें हवा में झूम रही थीं। दोनों तरफ पॉपी के लाल-लाल फूल थे। यहां पर शान्ति थी और गर्मी असह्य थी। मगर दूर से, जहां पर नदी एक रुपहले फीते सी नजर आती और धूप खाती जान पड़ती थी, लड़ाई की आवाजें आ रही थीं।

घोड़ा चरागाहों पर बेतहाशा भागता चला जा रहा था। "अगर यह कहीं ठोकर खाकर गिरा तो हम दोनों का काम तमाम हो जायगा।" पावेल के मन में एकाएक यह खयाल आया। मगर अब रुकने का वक्त न था और उसे इसी तरह बढ़ते जाना था, काठी पर इसी तरह नीचे झुके हुए और कानों में तेज हवा की सीटी सी बजती हुई।

आंधी की तरह वह सरपट उस खेत पर पहुंचा जहां लोग गुस्से से अंधे होकर जंगली जानवरों की तरह आपस में लड़ रहे थे। बहुत से लोग लहू-लुहान होकर जमीन पर पड़े थे।

घोड़े ने एक दाढ़ी वाले किसान को अपने पैरों से कुचल दिया जो एक हंसिया के बेंट का सिरा हाथ में लिए एक नौजवान का पीछा कर रहा था और जिसके चेहरे से खून बह रहा था। उसके पास ही एक विशालकाय आदमी अपने बड़े-बड़े भारी बूटों से अपने जमीन पर पड़े हुए दुश्मन के पेट में बेदर्दी से ठोकर मार रहा था।

इन लड़ते हुए आदमियों की भीड़ में तेजी से घोड़े को दौड़ाते हुए कोर्चागिन ने उन सबको तितर-बितर कर दिया। इस अचानक हमले से संभलने के पहले कोर्चागिन कभी एक आदमी पर और कभी दूसरे आदमी पर जा चढ़ता था। क्योंकि यह बात उसने समझ ली थी कि ये खून में लिथड़े हुए आदमी जो इस वक्त जानवर हो गये हैं, डरा कर ही तितर-बितर किये जा सकते हैं।

पावेल ने गुस्से में जोर से चिल्ला कर कहा, "भाग जाओ, जानवर कहीं के! भाग जाओ लुटेरो, नहीं तो मैं तुममें से एक-एक को गोली से भून दूंगा!"

और अपनी पिस्तौल निकालते हुए उसने एक ऊपर उठे हुए, गुस्से से वहशियाना नजर आते हुए चेहरे पर गोली चलाई। घोड़ा फिर दौड़ा और पिस्तौल फिर बोली। कुछ लड़ने वालों ने अपने हंसिये छोड़ दिये और लौट पड़े। फौजी कमिसार पावेल ने अपने घोड़े पर सवार इधर से उधर तक मैदान को रौंद कर और लगातार गोली चलाते हुए स्थिति पर काबू पा लिया। किसान भाग निकले और चारों तरफ तितर-बितर हो गये, क्योंकि वे इस

खूनी झगड़े की जिम्मेदारी से बचना चाहते थे और इस खतरनाक घुड़सवार से भी जो गुस्से से पागल होकर बेतहाशा गोली चलाये जा रहा था।

सौभाग्य से कोई मरा नहीं। और घायल लोग ठीक हो गये। बहरहाल, थोड़ी ही देर बाद इस मामले की सुनवाई के लिए पोदुब्सी में जिले की अदालत बैठी, मगर बदमाशों के सरगना लोगों का पता लगाने की जज की सारी कोशिश नाकाम हुई। सच्चे बोल्शेविक की दृढ़ता और धैर्य से जज ने अपने सामने के बिगड़े हुए किसानों को यह दिखाने की कोशिश की कि उनका काम कितना वर्बर था। जज ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस तरह की मारकाट बर्दाश्त नहीं की जायगी।

किसानों ने कहा, "कामरेड जज, दोष हमारा नहीं, चौहद्दी का है। पता नहीं कैसे हर बार आपस में गडमड हो जाती है और हर साल हमें उसके पीछे लड़ना पड़ता है।"

मगर खैर वह जो भी हो, कुछ किसानों को इस लड़ाई की जवाबदेही करनी पड़ी।

हफ्ते भर बाद एक कमीशन वहां आया और झगड़े की जमीनों की छान-बीन करने लगा।

"जमीन की नाप-जोख करते मुझे तीस साल हो गये और मैंने देखा है कि हमेशा झगड़ा बटवारे की लाइन को लेकर होता है," कमीशन के बुड्ढे सर्वेयर ने अपना फीता लपेटते हुए कोर्चागिन से कहा। वह बुड्ढा गरमी के कारण और काफी पैदल चलने के कारण बिलकुल थक गया था और उसके शरीर से पसीना चू रहा था। "सचमुच अपनी आंख पर यकीन नहीं आता, जरा देखो कैसे ये चरागाहें वांटी गई हैं। कोई शराबी भी इससे ज्यादा सीधी रेखाएं खींच सकता था। और खेतों का हाल तो और भी बुरा है। तीन-तीन कदमों के बराबर जमीन की पट्टियां हैं और उस पर तुर्रा यह कि एक की टांग दूसरे में घुसी हुई है—कोई उनको अलग करने की कोशिश करे तो पागल हो जाय। इस पर से जब लड़के बड़े होते हैं और बाप अपनी जमीनों के और भी टुकड़े करते हैं, तो उन छोटी-मोटी पट्टियों के और भी टुकड़े हो जाते हैं। मेरी बात का यकीन करो कि आज से बीस बरस बाद जोतने के लिए कोई धरती बाकी न रहेगी, सिर्फ मेड़ें ही मेड़ें रह जायेंगी। यों भी कुल जमीन का दस फीसदी मेड़ों के पीछे बर्बाद हो रहा है।"

कोर्चागिन मुस्कराया।

"कामरेड सर्वेयर, आज से बीस बरस बाद एक भी मेड़ बाकी न रहेगी।"

उस बुड्ढे ने पावेल को बहुत बड़प्पन के भाव से देखा, जैसे उसकी बेवकूफी पर तरस खा रहा हो।

"तुम्हारा मतलब कम्युनिस्ट समाज से है ? वह जरा बहुत दूर की बात है। है न ?"

"आपने बुदानोव्का कोलखोज के बारे में सुना है ?"

"ओह, यह मतलब है तुम्हारा।"

"आपका क्या कहना है उसके बारे में ?"

"मैं बुदानोव्का में रह चुका हूं। मगर वह बात अपवाद है, कामरेड कोर्चागिन।"

कमीशन धरती की पट्टियों की पैमाइश करता रहा। दो नौजवान खूंटे गाड़ रहे थे। और दोनों तरफ खड़े हुए किसान बड़े गौर से यह देख रहे थे कि वे सड़ी सी डंडियां ठीक उस जगह पर गड़ें जहां विभाजन की रेखा पहले थी, जो घास में मुश्किल से दिखाई दे रही थी।

अपनी मरियल घोड़ी पर चाबुक फटकारते हुए बातूनी कोचवान अपनी सवारियों की तरफ मुड़ा।

उसने कहा, "मेरी समझ में ही नहीं आता, ये कोमसोमोल के छोकरे कहां से फट पड़े। आज से पहले ऐसी कोई चीज कभी न हुई थी, कम-से-कम मुझे तो याद नहीं। मैं तो दावे से कह सकता हूं कि यह वही उस्तानी है जिसने यह सारा खेल-तमाशा शुरू किया है। उसका नाम राकीतिना है, हो सकता है आपने भी उसका नाम सुना हो ? है तो वह जवान औरत मगर किसी काम की नहीं। वह गांव भर की तमाम औरतों को भड़काती है। उनके दिमाग में न जाने कहां-कहां की वाही-तबाही की बातें भर देती और उसीसे तो मुसीबत शुरू होती है। उसीके चलते तो आज यह हाल है कि कोई आदमी अपनी बीवी को पीट तक नहीं सकता। पुराने जमाने में जरा भी अपनी तबियत नाराज होने पर तुम अपनी बुढ़िया के डण्डा लगा सकते थे, फिर चाहे वह कहीं जाकर कोने में विसूरती रहे ! मगर अब तुमने कुछ किया नहीं कि वह इतना हल्ला मचाती है कि तुम कान पर हाथ धरने लगते हो कि मुझे क्या सूझी थी कि मैंने इसे छू दिया। आज तो वह तुम्हें जनता की अदालत की धमकी देती है। और जहां तक जवान लड़कियों की बात है, वे तो तलाक की बात करती हैं और दुनिया भर के कानून सुनाने लगती हैं। मेरी गांका को ही देखो, कैसी खामोश औरत थी वह जैसी दुनिया में न मिले। लेकिन अब उसे देखो जाकर, प्रतिनिधि बन गई है। इसका मतलब शायद यह होता है कि औरतों के समाज में उसे बड़ा समझा जाता है। गांव भर की औरतें उसके पास आती हैं। मैंने जब इस चीज के बारे में सुना तो मेरे जी में

आया कि चाबुक से उसकी जरा अच्छी तरह मरम्मत करूं, मगर फिर मैंने जाने दिया, कहा, इस मामले में हाथ डालना ठीक नहीं। जब सब जहन्नुम में जाना ही चाहती हैं, तो जायें। जहां तक घर के काम-काज की बात है, तो वह औरत बुरी नहीं है।"

कोचवान की गाढ़े की कमीज की खुली हुई जगह में से उसका बालदार सीना दिखाई दे रहा था। उसने अपने सीने को खुजलाया और घोड़े की पीठ पर अपना चाबुक फटकारा। गाड़ी में राजवालिखिन और लिदा बैठे हुए थे। उन दोनों को पोदुब्सी में काम था। लिदा महिला प्रतिनिधियों के एक सम्मेलन की योजना बना रही थी और राजवालिखिन को स्थानीय सेल के काम के संगठन में मदद पहुंचाने के लिए भेजा गया था।

लिदा ने मजाक के स्वर में कोचवान से पूछा, "तो तुम्हें कोमसोमोल अच्छे नहीं लगते ?"

कोचवान जवाब देने के पहले थोड़ी देर तक अपनी छोटी सी खसखसी दाढ़ी के बाल नोचता रहा।

"नहीं, मुझे बुरे नहीं लगते...मैं इस बात का हामी हूं कि नौजवानों को मस्ती का मौका देना चाहिए, लोग नाटक-वाटक किया करें। मुझे खुद हंसने-हंसाने वाले नाटक पसंद हैं, अगर अच्छे हों। शुरू में हमने जरूर सोचा था कि नौजवान हमारे काबू के बाहर हो जायेंगे, मगर बाद में उल्टी ही बात निकली। मैंने लोगों को कहते सुना है कि वे लोग शराब-वराब पीने और झगड़े करने वगैरह के मामले में बड़े सख्त हैं। उनका ज्यादा झुकाव किताब पढ़ने पर होता है। मगर पता नहीं क्यों वे लोग भगवान को अपनी जगह नहीं रहने देते, जब देखो तब वे गिर्जे छीन कर उनको क्लब में बदलने की फिराक में रहते हैं। यह बात ठीक नहीं है, इसी से हम बुड्ढे लोग उनके खिलाफ हो गये हैं। मगर कुल मिलाकर वे लोग बुरे नहीं हैं। अगर तुम मुझसे पूछो, तो मैं यह जरूर कहूंगा कि गांव के सभी दरिद्र लोगों को अपने में शरीक करके उन्होंने बड़ी गलती की। ऐसे लोगों को लेने से क्या फायदा जो खरीदे जा सकते हैं या जो अपनी खेती की देख-भाल ठीक से नहीं कर सकते। धनी किसानों के लड़कों से वे लोग कोई सरोकार ही नहीं रखते।"

गाड़ी खड़खड़ाती हुई पहाड़ी के नीचे उतरी और स्कूल की इमारत के सामने जाकर रुक गयी।

दरबान की बीवी इन नये आगंतुकों के ठहरने का इंतजाम करके पुआल पर सोने चली गयी थी। लिदा और राजवालिखिन अभी एक मीटिंग से लौटे थे जो जरा देर में खत्म हुई थी। झोपड़ी के अंदर अंधेरा था। लिदा ने जल्दी-जल्दी कपड़े उतारे, कूद कर बिस्तर पर गई और पलक मारते सो गई।

उसकी नींद अपने शरीर पर फिरते हुए राजवालिखिन के हाथों के स्पर्श से अचानक खुली। राजवालिखिन के हाथ उसके शरीर पर इस तरह से फिर रहे थे कि लिदा के मन में कोई संदेह न रहा कि राजवालिखिन का क्या इरादा है।

"क्या है ?"

"श् श्, लिदा, इतना हल्ला मत करो। अकेले पड़े-पड़े मैं तो उकता गया। इस तरह खर्राटे भरने से भी ज्यादा अच्छी कोई चीज हो सकती है, क्या यह तुम्हारी समझ में नहीं आता ?"

"अपने पंजों से मुझे इस तरह गूंथो मत और फौरन मेरे बिस्तर पर से चले जाओ !" लिदा ने उसको धक्का देते हुए कहा। राजवालिखिन की तेल जैसी चिकनी मुस्कराहट से उसे हमेशा नफरत होती थी और उसके जी में आया कि उसको लज्जित और अपमानित करने के लिए कोई कड़ी बात कहे, मगर नींद उस पर भारी हो रही थी और उसने आंखें मूंद लीं।

"अरे मान भी जाओ ! यह कैसी बात तुम कर रही हो ?" तुम कोई सन्यासिन तो हो नहीं, तुम्हारा लालन-पालन किसी मठ में तो हुआ नहीं, तब फिर ऐसा क्यों ? बहुत भोली न बनो, तुम मुझे चरका नहीं दे सकती। अगर तुम सचमुच प्रगतिशील स्त्री होती तो मेरी इच्छा पूरी करके फिर मन चाहे जितना सोती।"

इस मामले को तय जानकर वह फिर लिदा के बिस्तरे की पाटी पर जाकर बैठ गया और लिदा के कंधे पर उसने अपना हाथ रखा।

लिदा अब बिल्कुल अच्छी तरह जाग गई थी, बोली, "जहन्नुम में जाओ ! मैं कल कोर्चागिन को इसके बारे में बतला दूंगी।"

राजवालिखिन ने उसका हाथ पकड़ लिया और झुंझलाते हुए धीरे से बोला :

"मैं तुम्हारे कोर्चागिन की खाक परवाह नहीं करता और देखो मेरी बात मान जाओ, मुझे रोकने की कोशिश मत करो, नहीं तो मुझे तुम्हारे साथ जबर्दस्ती करनी पड़ेगी।"

जरा देर हाथापाई हुई और फिर रात की निस्तब्धता में कस कर जड़े गये दो तमाचे गूंज उठे। राजवालिखिन कूद कर अलग हो गया। लिदा टटोलती हुई दरवाजे के पास गई, धक्का देकर उसे खोला और दौड़ कर हाते में निकल गई। वहां वह चांदनी में खड़ी थी, उसके अंदर गुस्सा उबाल खा रहा था।

"अंदर चली आओ, बेवकूफ कहीं की !" राजवालिखिन ने दुष्टता से उसको पुकारते हुए कहा।

वह खुद अपना बिस्तर बाहर ओल्ती के नीचे निकाल लाया और बाकी रात उसने वहीं गुजारी। लिदा ने भीतर से कुंडी बंद कर ली और अपने बिस्तर में सिमट कर फिर से सो गई।

सबेरे वे लोग अपने घर के लिए रवाना हो गये। राजवालिखिन बूढ़े कोचवान के बगल में बैठा सिगरेट पर सिगरेट पीता जा रहा था।

"यह छुई-मुई कहीं सचमुच जाकर कोर्चागिन के सामने मेरा भंडाफोड़ न कर दे। अरे किसने सोचा था कि वह ऐसी सती-साध्वी निकलेगी! नखरे तो ऐसे हैं कि जैसे पता नहीं कहां की हसीना हो, मगर शकल-सूरत कुछ है नहीं। लेकिन उससे समझौता कर लेना अच्छा होगा, वरना मुसीबत होगी। यों भी कोर्चागिन की निगाह मुझ पर है।"

वह लिदा के पास पहुंच गया। उसने ऐसा दिखलाया कि जैसे उसे अपने ऊपर बड़ी शर्म आ रही हो, उदास चेहरा बना लिया और माफी मांगने के दो चार शब्द बुदबुदाये।

उससे काम बन गया। अभी उन्होंने गांव की सरहद पार भी न की थी कि लिदा ने उसे वादा दे दिया कि रात की बात वह किसी से न बतलायेगी।

सरहद पर के गांवों में एक के बाद दूसरी जगह कोमसोमोल के संगठन बन रहे थे। जिला कमिटी के मेम्बर बड़ी सावधानी से कम्युनिस्ट आन्दोलन की इन पहली नयी कोंपलों की देखभाल कर रहे थे। कोर्चागिन और लिदा पोलेविख अलग-अलग बस्तियों में स्थानीय संगठन के मेम्बरों के साथ बहुत वक्त गुजारते थे।

राजवालिखिन को गांवों में जाना अच्छा नहीं लगता था। वह नहीं जानता था कि कैसे किसान लड़कों का विश्वास पाये और बस कोई न कोई गड़बड़ी पैदा कर देता था। लिदा और पावेल को किसान नौजवानों से दोस्ती पैदा करने में कोई मुश्किल न होती थी। लड़कियां फौरन लिदा को चाहने लग जाती थीं। वे उसे फौरन अपने में से ही एक समझने लगतीं और लिदा धीरे-धीरे उनके मन में कोमसोमोल आन्दोलन के प्रति दिलचस्पी पैदा करती। जहां तक कोर्चागिन की बात थी, जिले के सारे नौजवान उसको जानते थे। सोलह सौ नौजवान जो फौजी सर्विस के लिए बुलाये जाने वाले थे, वे आरंभिक फौजी शिक्षा उसकी बटालियन में ही पाते थे। उसका अकार्डियन इस गांव में प्रचार के काम में जितना सहायक साबित हो रहा था, उतना पहले कभी नहीं हुआ था। अपने बाजे के कारण पावेल नौजवानों के बीच बड़ा लोकप्रिय था। वे नौजवान अक्सर शाम को गांव की गलियों में जमा हो जाते

थे और गाते-बजाते थे। और पता नहीं कितने बिगड़ैल जवानों ने यहीं से कोमसोमोल की तरफ अपना सफर शुरू किया था, अकार्डियन के इसी मोहक संगीत को सुन कर, जो कभी आवेगपूर्ण और उत्तेजक होता था, कभी ओजस्वी और साहसपूर्ण और कभी कोमल और दुलार-भरा जैसे कि उक्रैन के उदास, हसरत-भरे गाने ही हो सकते हैं। वे अकार्डियन सुनते थे और उस नौजवान आदमी की बात सुनते थे जो अकार्डियन बजाता था, जो कभी रेलवे मजदूर था और अब फौजी कमिसार और कोमसोमोल का मंत्री था। और तब उन्हें ऐसा महसूस होता कि जैसे अकार्डियन का संगीत उस नौजवान कमिसार की बात के अंदर डूब गया हो और दोनों के स्वर आपस में मिल गये हों। फिर जल्दी ही नये-नये गाने गांवों में गूंजने लगते और झोपड़ियों में बाइबिलों और प्रार्थना पुस्तकों के पास दूसरी नई-नई पुस्तकें दिखाई देने लगतीं।

चोरी-चोरी माल को लाने-ले-जाने वालों को अब सरहद के संतरियों के अलावा एक दूसरी शक्ति का भी सामना करना पड़ता था। कोमसोमोल के सदस्यों की शकल में सोवियत सरकार को अपने बड़े पक्के दोस्त और उत्साही सहायक मिल गये थे। कभी-कभी सरहदी कस्बे के कोमसोमोल संगठन दुश्मन को पकड़ने के उत्साह में हद से गुजर जाते थे और तब कोर्चागिन को अपने नौजवान साथियों की मदद के लिए आगे आना पड़ता था। एक बार ग्रिशुत्का खोरोवोदको को अपने निजी सूत्रों से यह पता चला कि उस रात को कुछ चोरी से लाया हुआ माल गांव की मिल में आने वाला था। नीली आंखों वाला ग्रिशुत्का खोरोवोदको पोदुब्सी ग्राम सेल का मंत्री था। वह गरम मिजाज का लड़का था और उसको बहस करना अच्छा लगता था और धर्म-विरोधी आन्दोलन में वह बहुत सक्रिय रहता था। उसने कोमसोमोल के सारे सदस्यों को जगाया और एक ट्रेनिंग राइफिल और दो संगीनों से लैस होकर वे लोग आधी रात को बाहर आये, चुपके से मिल में एक जगह छिप कर बैठ गये और अपने शिकार का इंतजार करने लगे। खुफिया विभाग की सरहदी चौकी को भी चोरी का माल लाने वालों के इस इरादे की खबर लग गयी थी और उन्होंने भी अपने आदमी भेजे थे। अंधेरे में ये दोनों लोग एक-दूसरे से लड़ पड़े और अगर सरहदी संतरियों ने सूझ-बूझ से काम न लिया होता, तो उस झगड़े में कोमसोमोल के बहुत से नौजवान मारे जाते या घायल होते। फिलहाल हुआ यह कि उन लड़कों से हथियार छीन लिये गये और उन्हें तीन मील दूर एक गांव में ले जाकर हवालात में बंद कर दिया गया।

संयोग से कोर्चागिन उस समय गाव्रिलोव के घर पर था। जब अगली सुबह को बटालियन कमांडर ने उसको यह खबर दी, तो पावेल घोड़े पर सवार होकर अपने लड़कों को बचाने के लिए सरपट भागा।

खुफिया विभाग के आदमी ने, जो उस जगह ड्यूटी पर था, हंसते हुए उसको यह कहानी सुनाई।

उसने कहा, "कामरेड कोर्चागिन, मैं तुमको बतलाऊं कि हम लोग क्या करने जा रहे हैं। ये अच्छे लड़के हैं और हम उन्हें परेशान करना नहीं चाहते, मगर अच्छा हो कि तुम उन्हें जरा डांट-डपट दो ताकि आगे से वे हमारा काम करने की कोशिश न करें।"

संतरी ने शेड का दरवाजा खोला और ग्यारहो लड़के खड़े हो गये और खिसियाये हुए से कभी इस और कभी उस पैर पर जोर देते खड़े रहे।

खुफिया विभाग के आदमी ने जान-बूझ कर और भी कठोरता से कहा, "इनको देखो, इन्होंने लेकर सारा मामला गड़बड़ कर दिया और अब मुझे इन लोगों को एरिया हेडक्वार्टर भेजना होगा।"

तब ग्रिशुत्का बोल उठा।

"मगर कामरेड सखारोव," उसने आवेशपूर्ण स्वर में कहा, "हमने कौन सा जुर्म किया है? हम लोग बहुत दिन से उन बदमाशों की टोह में थे। हम तो सोवियत अधिकारियों की मदद करना चाहते थे और आप हैं कि हमें लेकर यहां बंद कर दिया, जैसे हम कोई डाकू हों।" यह कहते हुए वह इस तरह दूसरी ओर मुंह फेर कर खड़ा हो गया कि जैसे उसके साथ बड़ा अन्याय हुआ हो।

कोर्चागिन और सखारोव में गंभीर परामर्श हुआ, मगर यह मामला ऐसा था कि उन्हें कई बार अपनी गंभीरता बनाये रखने में मुश्किल हुई। आखिरकार, सलाह-मशविरे के बाद उन्होंने फैसला किया कि बहुत हो गया, लड़कों को काफी तम्बीह हो गई, अब काफी डर गये होंगे।

सखारोव ने पावेल से कहा, "अगर तुम उनकी गारंटी लो और वादा करो कि अब वे फिर कभी चहलकदमी करते हुए सरहद पर न जा निकलेंगे, तो मैं उन्हें छोड़ दूंगा। अगर वे मदद ही करना चाहते हैं, तो उसके दूसरे तरीके हैं।"

"बहुत अच्छा, मैं उनकी गारंटी लेता हूं। मुझे उम्मीद है कि वे मुझे लज्जित होने का मौका न देंगे।"

कोमसोमोल के वे लड़के गाते हुए पोदुब्सी वापस आये। मामला दबा दिया गया। और कुछ ही दिन बाद वह मिल वाला पकड़ लिया गया। इस बार कानून ने उसको पकड़ा था।

मैदान-विला के जंगलों में धनी जर्मन किसानों की एक बस्ती थी। ये कुलक फार्म आधे-आधे किलोमीटर की दूरी पर थे और ऐसे मजबूत बने हुए थे मानो छोटे-मोटे किले हों। मैदान-विला को ही अपना केंद्र बना कर आन्तोन्युक

और उसके गिरोह वाले लूटपाट किया करते थे। आन्तोन्युक एक समय जारशाही फौज में सार्जेन्ट मेजर रह चुका था। अब उसने अपने अजीज रिश्तेदारों में से सात खूनियों को जमा कर लिया था और उन्हें पिस्तौलों से लैस करके गांव की सड़कों पर डकैतियां किया करता था। खून बहाने में उसे कोई दरेग न था। अमीर सट्टेबाजों और मुनाफाखोरों को लूटने में उसे आपत्ति न थी, मगर उसके साथ ही साथ वह सोवियत मजदूरों को भी लूटता था। आन्तोन्युक की खास बात उसकी तेज रफ्तार थी। एक रोज वह कोआपरेटिव स्टोर के दो क्लर्कों को लूटता और उसके अगले ही रोज अठारह मील दूर किसी गांव में डाकखाने के किसी कर्मचारी के हथियार वगैरह छीन लेता और उसके पास जो कुछ होता, कौड़ी-कौड़ी लूट लेता। आन्तोन्युक की प्रतियोगिता गोर्देई से थी जो उसी की तरह एक दूसरा लुटेरा था और किसी भी तरह आन्तोन्युक से बेहतर नहीं था। दोनों लुटेरों को लेकर उस इलाके की मिलीशिया और खुफियों के लोग बड़े परेशान रहते थे। आन्तोन्युक का इलाका बेरेजदोव के ठीक बाहर था और धीरे-धीरे यह हालत पैदा हो गयी कि शहर जाने वाली सड़क पर निकलना खतरनाक हो गया। उस लुटेरे को पकड़ना मुश्किल हो रहा था, वह हमेशा बच कर निकल जाता था। जब वह अपने को खतरे में देखता, तो सरहद के उस पार चला जाता और कुछ दिनों तक खामोश पड़ा रहता और फिर अचानक जब कि किसी को उसकी उम्मीद न होती, वह दुबारा अपनी लूटपाट शुरू कर देता। उसका यह बार-बार बच कर निकल जाना ही उसको और भी खतरनाक बना रहा था। इस लुटेरे की किसी नई लूटपाट की रिपोर्ट मिलने पर लिसित्सिन गुस्से से अपने होठों को चबाने लगता।

"कब यह सांप हमको काटना बन्द करेगा? मगर हरामजादे, अब जरा बच कर रहना नहीं तो मैं ही तेरी बोटी-बोटी अलग करूंगा," उसने दांत पीसते हुए कहा। दो बार जिला कार्यकारिणी के चेयरमैन ने कोर्चागिन और तीन दूसरे कम्युनिस्टों को लेकर उस लुटेरे का पीछा किया, मगर हर बार वह बच कर निकल गया।

लुटेरे से लड़ने के लिए एरिया सेंटर से एक खास टुकड़ी बेरेजदोव भेजी गयी। इस टुकड़ी का कमांडर फिलातोव नाम का बांका जवान था। कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन को अपने आने की रिपोर्ट देने के पहले, जैसा कि उसे सरहदी नियमों के अनुसार करना चाहिए था, यह घमंडी छैला जवान सीधे सबसे पास के गांव सेमाकी गया। आधी रात को वह गांव में पहुंचा और अपने आदमियों को लेकर गांव के छोर पर एक मकान पर ठहर गया। इन सशस्त्र लोगों के अचानक और रहस्यपूर्ण आगमन को बगल के घर के

एक कोमसोमोल मेम्बर ने लक्ष्य किया और झटपट गांव की सोवियत के चेयरमैन को इसकी रिपोर्ट देने चल दिया। गांव की सोवियत के चेयरमैन को इस टुकड़ी के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। इसलिए स्वभावत: उसने उन्हें लुटेरा समझा और उस युवा कम्युनिस्ट को फौरन जिला केन्द्र में मदद हासिल करने के लिए भेजा। फिलातोव की इस अहमकाना बहादुरी से कई लोगों की जानें चली गयी होतीं। लिसित्सिन ने आधी रात को मिलिशिया वालों को जगाया और एक दर्जन आदमियों को लेकर सेमाकी के इन "लुटेरों" का सफाया करने के लिए चला। वे अपने घोड़ों पर सरपट उस मकान तक आये, घोड़ों से उतरे और बाड़ी को फांदते हुए मकान के पास पहुंचे। उस सन्तरी के, जो दरवाजे पर खड़ा पहरा दे रहा था, सिर पर रिवाल्वर से चोट मार कर उसे गिरा दिया गया। लिसित्सिन और उसके आदमी तेजी से उस कमरे में घुसे जिसमें छत से लटकते हुए एक तेल के चिराग का मद्धिम प्रकाश था। एक हाथ में दस्ती बम और दूसरे में रिवाल्वर लिए लिसित्सिन इतने जोर से गरजा कि खिड़की के शीशे खड़खड़ा उठे :

"हथियार डाल दो, नहीं तो मैं तुम लोगों को गोली से उड़ा दूंगा !"

एक क्षण की ही बात और थी और वे निन्दासे लोग जो फर्श पर से उछल उछल कर खड़े हो रहे थे, गोलियों की बौछार से वहीं ढेर कर दिये गये होते। मगर उस आदमी की शक्ल, जो दस्ती बम फेंकने के लिए तैयार खड़ा था, इतनी भयानक थी कि उन्होंने डर के मारे हाथ उठा दिये। कुछ मिनट बाद जांघिया पहने "लुटेरों" को बाहर ले जाया गया तो फिलातोव ने लिसित्सिन की वर्दी पर लगे हुए तमगे को देखा और उसको हालत की सफाई देने लगा।

लिसित्सिन को बड़ा गुस्सा आया। उसने नफरत से कहा, "गधा कहीं का !"

जर्मन क्रान्ति की खबरें, हाम्बुर्ग के बैरीकेडों के राइफलों की हलकी गूंजें, इस सरहदी इलाके में भी पहुंचीं। वातावरण में बड़ा तनाव था। लोग बड़ी आतुर आशा से अखबार पढ़ते थे। क्रान्ति की हवा पश्चिम से आ रही थी। कोमसोमोल जिला कमिटी में नौजवान कम्युनिस्टों की अर्जियों पर अर्जियां आ रही थीं कि वे लाल फौज में भर्ती होना चाहते हैं। कोर्चागिन उन लोगों को समझाने में व्यस्त था कि सोवियत देश शान्ति की नीति का अनुसरण कर रहा है और उसका कोई इरादा अपने पड़ोसियों से लड़ने का नहीं है। मगर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा। हर इतवार को सारे जिले के कोमसोमोल सदस्य पादरी के मकान के बड़े बागीचे में मीटिंग करते थे और एक रोज दोपहर को

पोदुब्सी का सेल बाकायदा मार्च करता हुआ जिला कमिटी के हाते में आया। कोर्चागिन ने उन्हें खिड़की में से देखा और बाहर सायबान में निकल आया। वे ग्यारह लड़के थे और खोरोवोदको सबसे आगे-आगे था। सब बड़े-बड़े फौजी बूट पहने हुए थे और सबके कंधों पर बड़े-बड़े किरमिच के किटबैग थे। वे आकर दरवाजे पर रुके।

कोर्चागिन ने आश्चर्य से पूछा, "यह क्या है ग्रिशा ?"

खोरोवोदको ने जवाब देने के बदले पावेल को आंख का इशारा किया और उसके साथ मकान के अन्दर चला गया। लिदा, राजवालिखिन तथा दो और कोमसोमोल के सदस्य खोरोवोदको के पास घिर आये और उससे पूछने लगे कि यह क्या मामला है। खोरोवोदको ने दरवाजा बन्द कर दिया और अपनी भवों में झुर्री डालते हुए बोला :

"साथियो, यह एक तरह का टेस्ट मोबिलाइजेशन है। यह मेरी ही सूझ है। आज सवेरे मैंने लड़कों को बतलाया कि जिला केन्द्र से एक बहुत खुफिया तार आया है कि जर्मन पूंजीशाहों से हमारी लड़ाई ठननेवाली है और जल्दी ही पोलिश जागीरदारों से भी हमें लड़ना होगा। मैंने उनको बतलाया कि मास्को से हमको आदेश मिला है कि तमाम नौजवान कम्युनिस्टों को मोर्चे के लिए जमा करो। जिस किसी को भी डर लगता हो, वह अर्जी दे सकता है और उसे घर पर रहने की इजाजत मिल जायगी। मैंने उन्हें कहा कि किसी से लड़ाई के बारे में एक शब्द भी न कहें, बस एक डबल रोटी और थोड़ा सा गोश्त लेकर आ जायं और जिनके पास गोश्त न हो, वे लहसुन-प्याज भी ला सकते हैं। हम लोग गांव के बाहर गुप्त रूप से मिलने वाले थे और फिर वहां से जिला केन्द्र में जाने का हमारा इरादा था और फिर जिला केन्द्र से एरिया केन्द्र में जहां हथियार मिलने की बात थी। तुम देखते कि लड़कों पर इस चीज का कैसा गहरा असर पड़ा था! उन्होंने मुझको बहुत पम्प करने की कोशिश की, मगर मैंने उनसे कहा कि चटपट तैयारी करने में लग जाओ और फिजूल के सवालात में मत पड़ो। वे लोग जो मोर्चे पर न जाना चाहते हों, बतला दें। हमें सिर्फ स्वयंसेवकों की जरूरत है। खैर इसके बाद मेरे लड़के चले गये और मैं परेशान होने लगा। मान लो उनमें से कोई न लौटा? अगर ऐसा हुआ तो मैं पूरी सेल को तोड़ दूंगा और किसी दूसरी जगह चला जाऊंगा। मैं गांव के बाहर धड़कते हुए दिल से उनका इंतजार करता बैठा रहा। थोड़ी देर बाद, एक के बाद एक उनका आना शुरू हुआ। उनमें से कुछ रोये थे, उनके चेहरे से यह बात साफ थी गोकि वे छिपाने की कोशिश कर रहे थे। दस के दसों आ गये, हमारे बीच एक भी भगोड़ा नहीं था। ऐसा है हमारा पोदुब्सी सेल!" उसने विजयोल्लास के स्वर में अपनी बात खतम की।

उसकी बात से लिदा पोलेविख को झटका सा लगा और जब उसने खोरो-वोदको को डांटना शुरू किया तो वह उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगा।

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई ? मेरी समझ में तो यह उनकी परीक्षा का सबसे अच्छा तरीका है। इस तरह हर आदमी को एकदम आरपार देखा जा सकता है। यहां पर किसी धोखे-धड़ी की गुंजाइश नहीं है। मैं नाटक को पूरा करने के लिए उन्हें सीधे एरिया सेंटर तक घसीट ले जाना चाहता था, लेकिन वे बुरी तरह थक गए हैं। कोर्चागिन, तुम्हें उनके सामने छोटी सी तकरीर करनी होगी। करोगे न ? तकरीर के बिना बात कुछ बनेगी नहीं। उनसे बतला देना कि भरती बंद हो गई है या इसी किस्म की कोई बात, मगर उससे क्या, हमें अपने जवानों पर गर्व है।"

कोर्चागिन एरिया सेंटर में कम ही जाता था क्योंकि रास्ते में कई रोज लग जाते थे और काम की ऐसी भीड़ थी कि उसका हरदम अपने जिले में रहना जरूरी था। इसके विपरीत राजवालिखिन छोटे-छोटे बहाने से भी हरदम शहर जाने के लिए तैयार रहता था। सिर से पैर तक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर वह निकलता था और शायद अपने दिल में खुद को फेनीमोर कूपर का नायक समझता था। जंगल में से गुजरते वक्त वह कौओं और गिलहरियों पर गोली का निशाना लगाता, अकेले राहगीरों को रोक लेता और उनसे सवाल करता कि तुम कौन हो, कहां से आ रहे हो, कहां जा रहे हो। शहर के पास पहुंच कर वह अपने हथियार अलग रख देता, अपनी राइफिल गाड़ी में घास के नीचे डाल देता और रिवाल्वर अपनी जेब में छिपा कर रख लेता और जब कोमसोमोल की एरिया कमिटी के दफ्तर में पहुंचता तो अपने साधारण रूप में दिखाई देता।

"कहो बेरेजदोव की क्या खबर है ?" एरिया कमिटी के मंत्री फेदोतोव ने एक रोज दफ्तर से आने पर राजवालिखिन से पूछा।

फेदोतोव के दफ्तर में हर वक्त भीड़ लगी रहती थी और सब लोग एक साथ ही बातें करते थे। ऐसी हालत में काम करना आसान नहीं था। एक ही साथ चार लोगों की बात सुनना, पांचवें आदमी की बात का जवाब देना और फिर बीच-बीच में लिखते भी जाना। गोकि फेदोतोव की उम्र बहुत कम थी, तब भी वह १९१९ से ही पार्टी मेंबर था। उन तूफानी दिनों में ही यह बात मुमकिन थी कि कोई पन्द्रह बरस का लड़का पार्टी के अन्दर लिया जा सकता था।

राजवालिखिन ने लापरवाही से जवाब दिया, "अरे तमाम खबरें ही खबरें हैं। इतनी खबरें हैं कि सब एक साथ बतलाना भी मुश्किल है। सबेरे से

लेकर रात तक हम लोग पिसे रहते हैं। इतना ज्यादा काम है। आप जानते ही हैं कि हमें एकदम नींव से शुरू करना पड़ा। हमने दो नये सेल बनाये। अब बतलाइये कि आपने मुझे यहां काहे के लिए बुलाया है ?" और वह एक आराम कुरसी पर बड़े कामकाजी आदमी के ढंग से बैठ गया।

अर्थ विभाग के प्रधान, क्रिम्स्की ने एक पल के लिए अपनी मेज पर फैले हुए कागजों के ढेर से आंख उठाकर देखा।

उसने कहा, "हमने तो कोर्चागिन को बुलाया था, तुमको तो बुलाया नहीं था।"

राजवालिखिन ने मुंह से सिगरेट के धुएं का बादल छोड़ा।

"कोर्चागिन को यहां आना अच्छा नहीं लगता, इसलिए दूसरे कामों के अलावा यह काम भी मुझे ही करना पड़ता है...आम तौर पर कुछ सेक्रेटरियों की जिंदगी मजे से गुजर रही है। वे खुद कुछ काम नहीं करते और मुझ जैसे गधों को ही सारा बोझ ढोना पड़ता है। एक बार सरहद के इलाके में चले जाने पर कोर्चागिन फिर दो-तीन हफ्ते नहीं लौटता और फिर सारा काम मेरे सिर आ पड़ता है।"

राजवालिखिन के इस इशारे को सबने यही समझा कि जिला मंत्री बनने के लिए वह अपने को ज्यादा योग्य समझता है।

राजवालिखिन के चले जाने पर फेदोतोव ने अपने दूसरे साथियों से कहा, "यह आदमी मुझे अच्छा नहीं लगता।"

राजवालिखिन की चालबाजी का पर्दाफाश यों ही अचानक हो गया। एक रोज लिसित्सिन अपनी डाक लेने के लिए फेदोतोव के दफ्तर में आया। देहात में काम करने वालों का यही आम कायदा था। दोनों आदमियों की बातचीत के दौरान में राजवालिखिन का पर्दाफाश हो गया।

"कोर्चागिन को यहां जरूर भेजो। हम तो अभी तक उसे अच्छी तरह जानते भी नहीं," फेदोतोव ने लिसित्सिन से चलते समय कहा।

"बहुत अच्छा। मगर देखना, उसको हम लोगों के पास से छीनने की कोशिश मत करना। यह हम कभी न होने देंगे।"

इस साल सरहद पर अक्तूबर क्रांति की साल-गिरह और सालों से भी ज्यादा उत्साह से मनायी गई। सरहद के गांवों में इस उत्सव का संगठन करने के लिए जो कमिटी बनायी गई थी, उसका चेयरमैन कोर्चागिन को चुना गया। पोदुब्सी की मीटिंग के बाद आसपास के तीन गांवों के पांच हजार किसान आधा मील लम्बा जुलूस बना कर, बड़े-बड़े लाल झण्डे लिए और फौजी

बैण्ड और ट्रेनिंग बटालियन को आगे किये सीमांत की तरफ बढ़े। सोवियत सीमा में वे लोग बाकायदा मार्च कर रहे थे। वे सरहदी चौकी के बराबर-बराबर चले जा रहे थे और उन गांवों की तरफ बढ़ रहे थे जिन्हें विभाजन रेखा ने दो टुकड़ों में बांट दिया था। इसके पहले पोलों ने अपनी सीमा पर ऐसे लोगों को नहीं देखा था। बटालियन कमांडर गाव्रिलोव और कोर्चागिन अपने घोड़ों पर सवार जलूस के आगे-आगे चल रहे थे और उनके पीछे बैण्ड बज रहा था, झण्डे हवा में फरफरा रहे थे और लोगों के गाने की आवाज दूर-दूर तक गूंज रही थी। किसान नौजवान अपने बेहतरीन कपड़े पहने हुए थे और बड़े जोश में थे। गांव की लड़कियां खूब मगन थीं और हंस रही थीं। प्रौढ़ लोग गंभीरतापूर्वक मार्च कर रहे थे और बुड्ढों के चेहरों पर विजय के उल्लास का शांत भाव था। जहां तक दिखाई देता था, यह मानव समुद्र फैला हुआ था। इसका एक किनारा सरहद पर था, मगर किसी ने उस निषिद्ध रेखा के उस पार कदम भी नहीं रखा। कोर्चागिन ने आदमियों के इस समुद्र को गुजरते देखा। कोमसोमोल के गाने "घने जंगलों से लेकर ब्रिटेन के समुद्रों तक लाल फौज ही सबसे मजबूत है!" की जगह लड़कियों का यह समवेत गान चल रहा था: "उधर पहाड़ी के उस पार लड़कियां खेत काट रही हैं ...।"

सोवियत संतरियों ने अपनी संतुष्ट मुस्कराहट से इस जुलूस का स्वागत किया। पोलिश संतरी हैरान खड़े देख रहे थे। इस प्रदर्शन से सरहद की दूसरी तरफ काफी खलबली मची, बावजूद इसके कि पोलिश कमांड को पहले से ही इस चीज के बारे में पता था। घोड़े पर सवार सिपाही गश्त करते हुए बेचैनी से ऊपर-नीचे और आगे-पीछे आ-जा रहे थे। सरहदी संतरियों की संख्या पंचगुनी कर दी गयी थी और पहाड़ियों के पीछे रिजर्व फौज को भी रखा गया था जो जरूरत के वक्त तत्काल बुलाई जा सकती थी। मगर जलूस अपने ही हिस्से में घूमता और मस्ती से मार्च कर रहा था और हवा उसके गाने से भरी हुई थी।

एक पोलिश संतरी एक टीले पर खड़ा था। जलूस नपी-तुली चाल से करीब आता जा रहा था। मार्च करने के समय का एक गीत शुरू हुआ। उस पोल ने फुर्ती से अपनी राइफल नीचे कर ली और सलामी दी और कोर्चागिन ने उसके शब्द स्पष्ट सुने: "मजदूरों का राज जिंदाबाद!"

उस सैनिक की आंखों से पावेल को मालूम हो गया कि उसी के मुंह से ये शब्द निकले थे। पावेल मुग्ध होकर अपलक उसे देखता रहा।

एक दोस्त! सिपाही की वर्दी के भीतर जो दिल धड़क रहा है, उसे प्रदर्शनकारियों से सहानुभूति है। पावेल ने धीरे से पोलिश में जवाब दिया:

"बधाई कामरेड!"

संतरी उसी मुद्रा में खड़ा रहा और प्रदर्शनकारी गुजर गये। पावेल उस छोटी सी काली आकृति को देखने के लिए कई बार पीछे मुड़ा। यह एक और पोल था। उसकी गलमुच्छें पकने लगी थीं और उसकी टोपी के चमकदार छज्जे के नीचे उसकी आंखें एकदम भावशून्य थी। पावेल ने अभी थोड़ी देर पहले जो बात सुनी थी, उसका संस्कार अब भी उसके मन पर था, इसलिए उसने जैसे अपने आप से बुदबुदा कर पोलिश जबान में कहा :

"बधाई, कामरेड !"

मगर कोई जवाब न मिला।

गाव्रिलोव मुस्कराया। जो कुछ बातें हुई थीं उसने सुन लिया था।

उसने कहा, "तुम जरूरत से ज्यादा उम्मीद करते हो। वे सब के सब सीधे-सादे सिपाही नहीं हैं। उनमें से कुछ ऊंचे पद के सैनिक भी हैं। तुमने उसकी आस्तीन पर वह चिह्न नहीं देखा? निश्चय ही वह फौजी पुलिस का आदमी है।"

जलूस का अगला हिस्सा पहाड़ी के नीचे उतरने लगा था और एक गांव की तरफ बढ़ रहा था जिसे सरहद ने दो हिस्सों में बांट दिया था। गांव का सोवियत वाला आधा हिस्सा मेहमानों के स्वागत की जबर्दस्त तैयारी कर रहा था। गांव के सारे रहने वाले नदी के किनारे सरहद के पुल पर खड़े इंतजार कर रहे थे। सड़क के दोनों तरफ नौजवान खड़े थे। गांव के पोलिश हिस्से के घरों और शेडों की छतों पर लोग भरे हुए थे। वे नदी के इस पार की कार्र-वाइयों को बड़ी गहरी और सतर्क दिलचस्पी से देख रहे थे। घरों के सायबानों में और बागीचों की बाड़ियों पर किसानों की भीड़ थी। आदमियों के उस गलियारे में दाखिल होने पर जलूस ने "इंटरनेशनल" गान की तान छेड़ी। उसके बाद एक मंच पर से, जिसे हरी-हरी पत्तियों से सजाया गया था, खूब जोरदार तकरीरें हुईं। नौजवानों और सफेद बाल वाले बुड्ढे क्रांतिकारियों ने भाषण दिये। कोर्चागिन ने भी अपनी मातृभाषा उक्रेनी में भाषण दिया। उसके शब्द उड़ते हुए सरहद के उस पार पहुंचे और नदी पार के लोगों ने उनको सुना। फौजी पुलिस के आदमियों ने वहां पर जमा देहातियों को भगाना शुरू कर दिया क्योंकि उन्हें डर था कि वे शब्द उन सुनने वालों के दिलों में भी आग लगा देंगे। गोलियां हवा में छोड़ी जाने लगीं।

सड़कें खाली हो गई। नौजवान फौजी पुलिस की गोलियों से डर कर छतों पर से हट गये। सोवियत सरहद के लोग इन चीजों को देखते रहे और उनके चेहरे गंभीर हो गये। जो कुछ अभी देखा था, उससे अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक बुड्ढा गड़ेरिया गांव के कुछ लड़कों की मदद से मंच पर चढ़ आया और उत्तेजित होकर भाषण देने लगा।

"तुमने देखा मेरे बच्चो ! यही सलूक कभी हमारे साथ भी होता था। मगर अब किसान हमारे यहां गांव का राजा है और अब कहीं नगाइका नहीं है। जागीरदारों, ताल्लुकेदारों का राज खतम हो गया है और हमारी पीठ पर अब उनके कोड़े नहीं पड़ते। बच्चो, यह तुम्हारा काम है कि तुम अब फिर कभी उन जागीरदारों और थैलीशाहों को लौटने न दो। मैं बुड्ढा आदमी हूं और मुझे भाषण-वाषण देना नहीं आता। लेकिन अगर मैं बोल सकता, तो मेरे पास कहने को बहुत कुछ है। जारशाही में हम लोग सारी जिंदगी बैलों की तरह काम करते थे और भूख और बदहाली में रहते थे...उन बेचारों की ही तरह !" कहते हुए उसने अपने दुबले-पतले हाथ से नदी के उस पार इशारा किया और फूट-फूट कर रोने लगा जैसे बच्चे और बुड्ढे ही रो सकते हैं।

उसके बाद ग्रिशुत्का खोरोवोदको बोला। उसकी गुस्से से भरी हुई तकरीर को सुनते हुए गाव्रिलोव ने अपना घोड़ा मोड़ा और नदी के दूसरे किनारे पर यह देखने के लिए निगाह डाली कि कोई इन तकरीरों का नोट ले रहा है या नहीं। मगर नदी का किनारा वीरान था। पुल पर तैनात संतरी भी हटा लिया गया था।

उसने हंसते हुए कहा, "अच्छा है, लगता है कि विदेशी मामलों की कमिसारियट के पास कोई प्रतिवाद नहीं भेजा जायगा।"

पतझड़ के आखिरी दिनों में एक बरसाती रात को आन्तोन्युक और उसके सात आदमियों की खून और तबाही की कहानी आखिरकार खतम हो गई। वह लुटेरा मैदान-विला की जर्मन बस्ती में एक धनी किसान के घर एक शादी के मौके पर पकड़ा गया। खोलिन्स्की कम्यून के किसानों ने उसको पकड़ा था।

गांव की औरतों ने शादी में आये हुए इन मेहमानों के बारे में खबर दी और बाहर कोमसोमोल फौरन इकट्ठा हो गए और जो भी हथियार मिले, उनसे लैस होकर गाड़ी पर चढ़ कर मैदान-विला के लिए रवाना हुए और एक आदमी को खबर लेकर बेरेजदोव भेज दिया। सेमाकी में संयोग से उस खबर ले जाने वाले आदमी की मुलाकात फिलातोव की टुकड़ी से हो गई जो खबर मिलते ही लुटेरों को पकड़ने के लिए चल दी। खोलिन्स्की के आदमियों ने फार्म को घेर लिया और उनमें और आन्तोन्युक के गिरोह के लोगों में राइफिलें चलने लगीं। आन्तोन्युक के गिरोह वाले मकान के एक हिस्से में किलेबन्दी करके बैठ गये और जो भी उनकी राइफिल की मार में आता, उस पर फौरन गोली चलाते। उन्होंने एक बार भाग निकलने की भी कोशिश की। मगर उन्हें

मार कर फिर उस इमारत के अंदर घुसने पर मजबूर कर दिया गया। इस कोशिश में उनका एक आदमी मारा गया। आन्तोन्युक ऐसी अनेक कठिन घड़ियों से गुजर चुका था और अपने दस्ती बमों और अंधेरे की मदद से लड़ कर अपना रास्ता बनाने में कामयाब हुआ था। इस बार भी वह भाग गया होता, क्योंकि खोलिन्स्की के नौजवान कम्युनिस्टों के दो आदमी मारे जा चुके थे। मगर संयोग से उसी वक्त फिलातोव मौके पर पहुंच गया। आन्तोन्युक ने समझ लिया कि उसका खेल अब खतम हो गया। सबेरे तक वह तमाम खिड़कियों में से गोलियां चलाता ही रहा, मगर भोर होते-होते उसे पकड़ लिया गया। उन सातों में से एक ने भी आत्म-समर्पण नहीं किया। इन लुटेरों का सफाया करने में चार जानें गईं। उनमें से तीन हाल ही में संगठित खोलिन्स्की के कोमसोमोल दल के लड़के थे।

कोर्चागिन की बटालियन को इलाकाई फौजों की पतझड़ के दिनों की फौजी कार्रवाइयों के लिए बुला लिया गया। बटालियन मूसलाधार बारिश में एक ही दिन में तीस मील मार्च करके डिवीजनल कैम्प पर पहुंची। वे सवेरे रवाना हुए और बहुत रात गये अपनी मंजिल पर पहुंचे। बटालियन कमांडर गुसेव और उसका कमिसार दोनों घोड़ों पर सवार थे। बटालियन के आठ सौ ट्रेनिंग पाने वाले जब बारक में पहुंचे तो थक कर चूर हो रहे थे और वे फौरन सो गये। दांव-पेंच की कार्रवाइयां अगले रोज सुबह शुरू होने वाली थीं; टेरीटोरियल डिवीजन के हेडक्वार्टर ने बटालियन को बुलाने में देर कर दी थी। बटालियन के लोग जब अपनी वर्दियां पहने और राइफिलें लिये मुआइने के लिए कतार में खड़े हुए, तो उनकी शकल एकदम बदली हुई थी। इन नौजवानों को फौजी ट्रेनिंग देने में गुसेव और कोर्चागिन ने बहुत समय और शक्ति लगाई थी और उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि उनकी यूनिट इम्तहान में पास हो जायगी। जब सरकारी मुआइना खतम हो गया और बटालियन ने ड्रिल के मैदान में अपनी योग्यता भी दिखला दी, तब एक कमांडर ने, जो खूबसूरत मगर थुलथुल आदमी था, कोर्चागिन की तरफ मुड़कर तेज स्वर में जवाब तलब किया :

"तुम घोड़े पर क्यों सवार हो ? हमारी ट्रेनिंग बटालियनों के कमांडरों और कमिसारों को घोड़े पर सवार होने का हक नहीं। अपने घोड़े को अस्तबल में रख दो और पैदल आकर इन कार्रवाइयों में शरीक होओ।"

कोर्चागिन जानता था कि अगर वह घोड़े से उतर पड़ा तो परेड में हिस्सा न ले सकेगा क्योंकि उसकी टांगों में एक कदम भी चलने की ताकत न थी।

मगर वह अपनी बात कैसे इस बढ़-बढ़ कर बात करने वाले छैले को समझाये जो इतने ठाठबाट से अपने फीते-वीते लगाये हुए है ?

"मैं पैदल परेड में हिस्सा न ले सकूंगा।"

"क्यों ?"

यह समझ कर कि उसे कोई न कोई जवाब देना ही होगा, कोर्चागिन ने धीरे से कहा :

"मेरी टांगें सूजी हुई हैं और मैं एक हफ्ते तक इस दौड़ने-भागने को बर्दाश्त नहीं कर सकूंगा। मगर यह तो बतलाओ कामरेड कि तुम कौन हो ?"

"पहली बात तो यह कि मैं तुम्हारी रेजिमेंट का चीफ आफ स्टाफ हूं, और दूसरी बात यह कि मैं एक बार फिर तुमको घोड़े पर से उतरने का हुक्म देता हूं। अगर तुम बीमार हो, तो तुम्हें फौज में नहीं होना चाहिए।"

पावेल को ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने उसके मुंह पर चाबुक मार दिया। उसने जोर से लगाम को अपनी तरफ खींचा और जैसे उतरने को हुआ, मगर गुसेव के मजबूत हाथ ने उसे रोक दिया। कुछ देर तक पावेल के मन में आहत स्वाभिमान और आत्मसंयम के बीच द्वन्द्व हुआ। मगर पावेल कोर्चागिन अब मामूली लाल सैनिक न था जो बहुत आसानी से इस यूनिट से उस यूनिट तक जा सकता था। अब वह बटालियन कमिसार था और उसके पीछे उसकी बटालियन खड़ी थी। अगर वही हुक्म न माने, तो अपने आदमियों के सामने अनुशासन की दृष्टि से वह कैसा बुरा उदाहरण रखेगा ! इस घमंडी गधे के लिए तो उसने अपनी बटालियन को तैयार किया नहीं था। उसने रकाब में से अपने पैर निकाले, घोड़े से उतर पड़ा और घुटनों के भयानक दर्द से लड़ता हुआ दाहिनी तरफ चला गया।

कई दिन तक मौसम बहुत ही अच्छा रहा। परेड और दूसरी फौजी कार्रवाइयां अब खतम होने आ रही थीं। पांचवें रोज सैनिक शेपेतोवका के करीब थे और यहीं ये कार्रवाइयां खतम होने वाली थीं। वेरेजदोव की बटालियन को क्लिमेन्तोविची गांव की तरफ से स्टेशन पर कब्जा करने का काम दिया गया था।

कोर्चागिन ने, जो अब अपने घर की जमीन पर था, स्टेशन पर पहुंचने के सभी रास्ते गुसेव को दिखला दिये। बटालियन दो हिस्सों में बंट गई और एक लम्बा घेरा लेते हुए दुश्मन की पिछली पांतों में जा निकली और खुशी से जोर-जोर से चिल्लाते हुए स्टेशन की इमारत में घुस गई। इस काम की बड़ी प्रशंसा हुई। वेरेजदोव के लोगों का कब्जा स्टेशन पर कायम रहा और जिस

बटालियन ने स्टेशन की रक्षा की थी, वह जंगल में चली गई और फैसला करने वालों ने यह फैसला किया कि उन्होंने अपने आधे आदमी गंवा दिये थे।

कोर्चागिन बटालियन के आधे हिस्से का कमांडर था। उसने अपने आदमियों को मैदान में फैल जाने का हुक्म दे दिया था और कमांडर और तीसरी कम्पनी के राजनीतिक शिक्षक के साथ सड़क के बीच में खड़ा था, जब कि एक लाल सैनिक उसके पास दौड़ता हुआ आया।

उसने हांफते हुए कहा, "कामरेड कमिसार, बटालियन कमांडर जानना चाहते हैं कि क्या तोपची रेलवे क्रॉसिगों का बचाव करेंगे। कमीशन के लोग इधर ही आ रहे हैं।"

पावेल और उसके साथ के कमांडर एक क्रॉसिग पर गये। रेजिमेंटल कमांडर और उसके सहायक वहां पर थे। गुसेव को इस कामयाब फौजी कार्रवाई के लिए बधाई दी गई। हारी हुई बटालियन के प्रतिनिधि खिसियाये से खड़े थे और उन्होंने अपनी सफाई में भी कुछ नहीं कहा।

गुसेव ने कहा, "इस चीज का श्रेय मैं नहीं ले सकता। कोर्चागिन ने ही हमको रास्ता दिखलाया था। वह यहीं का आदमी है।"

चीफ आफ स्टाफ घोड़े पर सवार होकर पावेल के पास आया और व्यंग के स्वर में बोला, "तो तुम अच्छा-खासा दौड़ लेते हो, कामरेड। घोड़ा जो तुमने ले रखा था, वह केवल रोब जमाने के लिए, क्यों?" वह और भी कुछ कहने जा रहा था, मगर कोर्चागिन के चेहरे के भाव को देख कर रुक गया।

जब बड़े कमांडर चले गये तो कोर्चागिन ने गुसेव से पूछा, "तुम्हें इस आदमी का नाम तो नहीं मालूम?"

गुसेव ने उसके कंधे पर हाथ मारा।

"अरे छोड़ो भी, क्यों फिजूल उस छिछोरे के पीछे अपना दिमाग खराब करते हो। उसका नाम चुजानिन है। पहले वह शायद अलमबरदार था।"

उस रोज पावेल ने कई बार अपने दिमाग पर जोर डालकर यह याद करने की कोशिश की कि यह नाम उसने पहले कहां सुना था, मगर उसे याद नहीं आया।

दांव-पेंच की कार्रवाइयां खतम हो गई थीं। बटालियन बहुत प्रशंसित होकर बेरेजदोव लौट गई। कोर्चागिन अपनी मां से मिलने के लिए एक-दो दिन के लिए रुक गया। उसकी मां के दिन बड़ी मुश्किल से कट रहे थे। दो रोज तक वह बारह-बारह घंटे सोया और तीसरे रोज आर्तेम से मिलने के लिए यार्ड में गया। इस धूल से अटे हुए, धुएं से काले घर में पावेल को बड़ा अच्छा

मालूम हुआ। उसने भूखे आदमी की तरह कोयले के धुएं को अपने फेफड़ों में भरा। यही उसकी असली जगह थी और यहीं पर वह रहना चाहता था। उसको लगा कि जैसे उसकी कोई बहुत ही प्यारी चीज खो गई हो। इंजन की सीटी सुने महीनों हो गये थे और पहले के इस फायरमैन और बिजली वाले के मन में अपने परिचित परिवेश के लिए वैसी ही प्यास थी जैसी किसी मल्लाह के दिल में बहुत दिनों तक समुद्र के किनारे पर रहने के बाद समुद्र के असीम विस्तार के लिए होती है। इस भावना पर विजय पाने में उसे काफी समय लगा। वह अपने भाई से ज्यादा नहीं बोला। उसका भाई अब लुहारखाने में काम करता था। आर्तेम के माथे पर उसने नई झुर्रियां देखीं। अब वह दो बच्चों का बाप था। साफ जाहिर था कि आर्तेम की जिंदगी आराम की जिंदगी न थी। उसने कोई शिकायत नहीं की, मगर पावेल खुद इस बात को समझ गया।

दोनों ने संग-संग एक-दो घंटे काम किया और फिर अलग हो गये।

रेलवे क्रॉसिंग पर पावेल ने अपने घोड़े की लगाम खींची और रुका और बड़ी देर तक स्टेशन को देखता रहा। फिर उसने घोड़े को चाबुक लगाया और जंगल में होता हुआ सरपट सड़क पर निकल गया।

जंगल की सड़कें अब काफी सुरक्षित थीं। बोल्शेविकों ने सभी छोटे-बड़े लुटेरों का सफाया कर दिया था और उस इलाके के गांव अब शांति से जिंदगी बसर करते थे।

दोपहर होते-होते पावेल बेरेजदोव पहुंचा। लिदा पोलेविख उसके स्वागत के लिए दौड़ कर जिला कमिटी के सायबान में निकल आई।

उसने बड़ी प्यार-भरी मुस्कराहट के साथ कहा, "स्वागत! घर लौटने पर! तुम्हारे बिना यहां बहुत बुरा लगता था!" उसने पावेल को अपनी बांहों में ले लिया और फिर दोनों कमरे में चले गये।

अपना कोट उतारते हुए उसने लिदा से पूछा, "राजवालिखिन कहां है?"

लिदा ने अनमने ढंग से जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम। अरे हां, याद आया। उसने आज सुबह ही मुझसे कहा था कि वह तुम्हारे बदले समाज शास्त्र का क्लास लेने स्कूल जा रहा है। वह कहता है कि यह तुम्हारा नहीं, उसका काम है।"

पावेल को अचानक मिलने वाली इस खबर से तकलीफ हुई। राजवालिखिन उसे कभी अच्छा नहीं लगता था। पावेल ने चिढ़ते हुए अपने मन में कहा, "स्कूल में यह सारा मामला गड़बड़ कर देगा, पता नहीं क्या अनाप-शनाप पढ़ाये।"

उसने लिदा से कहा, "उसकी तुम फिक्र न करो। मुझे बतलाओ, यहां

की अच्छी-अच्छी खबरें क्या हैं। तुम क्रूसेव्का गई थीं ? वहां लड़कों का क्या हाल है ?"

लिदा जब उसको सारी खबरें दे रही थी, उस वक्त पावेल अपने थके हुए शरीर को आराम देने के लिए कोच पर लेटा हुआ था।

"परसों राकीतिना को पार्टी का उम्मीदवार सदस्य बना लिया गया। इससे हमारा पोदुब्सी सेल बहुत मजबूत हो जायगा। राकीतिना अच्छी लड़की है, मैं उसे बहुत पसन्द करती हूं। यहां की उस्तानियां अब हमारे साथ आने लगी हैं, उनमें से कुछ तो आ भी चुकी हैं।"

कोर्चागिन और पार्टी की जिला कमिटी का नया मंत्री लिची‌कोव, यह दोनों अक्सर शाम को लिसित्सिन के घर पर मिलते थे और फिर तीनों उस बड़ी मेज पर बैठे बड़ी रात तक पढ़ते रहते थे।

जिस कमरे में लिसित्सिन की बीवी और बहन सोती थीं, उसका दरवाजा कस कर बंद कर दिया जाता और फिर तीनों किसी छोटी सी किताब पर झुके हुए धीमे-धीमे आपस में बात करते। लिसित्सिन को पढ़ने का वक्त सिर्फ रात को मिलता था। तब भी जब कभी पावेल अपनी अक्सर होने वाली गांव की यात्राओं से लौटता, तो उसे यह देख कर बड़ी खीझ होती कि उसके साथी बहुत आगे निकल गये हैं।

एक दिन पोदुब्सी के संदेशवाहक ने यह खबर दी कि न जाने किन लोगों ने अगली रात को ग्रिशुत्का खोरोवोदको की हत्या कर दी थी। पावेल फौरन भागा-भागा कार्यकारिणी समिति के अस्तबल में गया और अपनी टांगों के दर्द को भूल कर पागल आदमी की तरह जल्दी-जल्दी एक घोड़े की जीन कसी और उस पर सवार होकर सरपट सरहद की तरफ चल दिया।

ग्रिशुत्का गांव की सोवियत के मकान में सनोबर की शाखों से ढंका एक मेज पर पड़ा था और सोवियत का लाल झंडा उस पर पड़ा हुआ था। एक सरहदी संतरी और एक कोमसोमोल दरवाजे पर खड़े पहरा दे रहे थे और जब तक कि अधिकारी नहीं आ गये, वे किसी को अंदर नहीं जाने देते थे। कोर्चागिन मकान के अंदर दाखिल हुआ, मेज के पास गया और झण्डे को उलट दिया।

ग्रिशुत्का का चेहरा मोम की तरह पीला था और उसकी आंखें फैली हुई थीं जैसी मौत की यंत्रणा में हो गई होंगी और उसका सिर एक तरफ को लुढ़का हुआ था। सनोबर की एक टहनी सिर के पिछले हिस्से में उस जगह को ढंके हुए थी, जिसे किसी तेज हथियार ने काट दिया था।

इस नौजवान की जान किसने ली ? विधवा खोरोवोदको के इस इकलौते बेटे की ? उस विधवा के बेटे की जिसका पति मिल का मजदूर था और बाद में गरीब किसानों की कमिटी का मेम्बर हो गया था और जिसने क्रांति के लिए लड़ते हुए जान दी थी ?

अपने बेटे की मृत्यु से बुढ़िया को जो आघात लगा, उससे उसने बिस्तर पकड़ लिया। अभागी मां को पड़ोसी सांत्वना देने की कोशिश कर रहे थे। और उसका बेटा सर्द और बेजान पड़ा था, अपनी असामयिक मृत्यु के रहस्य को छिपाये हुए।

ग्रिशुत्का के कत्ल से गांव के सारे लोगों में गुस्सा छा गया। कोमसोमोलों के इस नौजवान नेता और गरीब किसानों के हिमायती के गांव में दुश्मनों से कहीं ज्यादा दोस्त निकले।

राकीतिना को इस खबर से बड़ी सख्त चोट लगी और वह अपने कमरे में बैठी फफक-फफक कर रोती रही। कोर्चागिन कमरे में आया तो उसने आंख उठाकर भी नहीं देखा।

"राकीतिना, तुम्हारा क्या खयाल है. किसने यह हत्या की ?" कोर्चागिन ने थकान से बेदम होकर कुर्सी पर बैठते हुए भर्राई हुई आवाज में पूछा।

"यह वही मिल वाले बदमाश होंगे, वही जो चोरी से माल लाते-ले-जाते हैं। ग्रिशा उनके पहलू का कांटा था।"

दो गांव के लोग ग्रिशा खोरोवोदको के जनाजे में शरीक हुए। कोर्चागिन अपनी बटालियन को ले आया और कोमसोमोल के सभी लोग अपने साथी को अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए इकट्ठा हुए। गाव्रिलोव ने गांव सोवियत के सामने वाले चौक में ढाई सौ सरहदी संतरियों की एक कंपनी को जमा किया। अर्थी मार्च की मातमी धुनों के बीच लाल झण्डे में लिपटा हुआ ताबूत बाहर लाया गया और चौक में रखा गया। वहां गृहयुद्ध में जान देने वाले बोल्शेविक छापेमारों की कब्रों के पास एक नयी कब्र खोदी गई।

ग्रिशुत्का की मौत ने उन सभी लोगों को एकता की डोर में बांध दिया जिनके हितों के लिए वह बराबर उद्योग करता रहा था। नौजवान खेतिहर मजदूरों और गरीब किसानों ने कोमसोमोल की मदद करने की शपथ ली और उस मौके पर जितने लोग बोले, उन सबने गुस्से के साथ इस बात की मांग की कि खूनियों का पता लगाया जाय और यहीं इस चौक में, इस कब्र के पास ही उन पर मुकदमा चलाया जाय ताकि हर कोई देख सके कि वे दुश्मन कौन हैं जिन्होंने यह खून किया।

राइफिलें तीन बार गरजीं और सनोबर की ताजी टहनियां कब्र पर रखी गईं। उसी शाम को सेल ने राकीतिना को अपना नया मंत्री चुना। खुफिया की सरहदी चौकी से कोर्चागिन के पास खबर आई कि वे लोग खूनियों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

एक हफ्ते बाद जब कस्बे के थियेटर हॉल में जिले की सोवियत का दूसरा सम्मेलन शुरू हुआ, तो लिसित्सिन ने गंभीर उल्लास के स्वर में घोषणा की :

"साथियो, मुझे इस सम्मेलन को यह खबर देते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि पिछले एक साल में हमने बहुत सफलताएं प्राप्त की हैं। इस जिले में सोवियत सत्ता मजबूती से कायम हो गई है, लुटेरों का सफाया कर दिया गया है और चोरी से माल लाने-ले-जाने के व्यापार का भी लगभग खातमा कर दिया गया है। गांवों में गरीब किसानों के मजबूत संगठन पैदा हो गए हैं, कोमसोमोल के संगठन पहले से दस गुना ज्यादा मजबूत हैं और पार्टी के संगठनों में भी विस्तार आया है। पोदुब्सी के कुलकों की उस आखिरी काली करतूत का भी पर्दाफाश कर दिया गया है जिसने हमारे कामरेड खोरोवोदको की जान ली। खूनी पकड़ लिए गये हैं। मिल वाले और उसके दामाद ने यह खून किया था। कुछ ही दिनों में सूबे की अदालत में उन पर मुकदमा चलेगा। गांवों के कई प्रतिनिधि मंडलों ने मांग की है कि यह सम्मेलन प्रस्ताव पास करे कि इन लुटेरों और खूनियों को मौत की सजा दी जाय।"

इस बात के समर्थन में एक तूफान सा उठा जिससे हॉल हिल उठा।

"जरूर-जरूर! सोवियत सत्ता के दुश्मनों को मौत की सजा दी जाय!"

लिदा पोलेविख पीछे के एक दरवाजे पर दिखाई दी। उसने इशारे से पावेल को बुलाया।

बाहर गलियारे में पहुंच कर उसने पावेल को एक लिफाफा दिया जिस पर "बहुत जरूरी" लिखा हुआ था। पावेल ने लिफाफा खोला और पढ़ा :

> "कोमसोमोल की बेरेजदोव जिला कमिटी के नाम। नकल पार्टी की जिला कमिटी को। सूबा कमिटी के फैसले के अनुसार कामरेड कोर्चागिन को जिले से सूबा कमिटी में कोमसोमोल के जिम्मेदार काम के लिए बुलाया जाता है।"

पावेल ने इस जिले से छुट्टी ली जहां उसने पिछले साल भर काम किया था। उसके जाने के ठीक पहले पार्टी की जिला कमिटी की जो आखिरी मीटिंग हुई उसके सामने एजेंडे में ये दो खास बातें थीं : (१) कामरेड कोर्चागिन को

कम्युनिस्ट पार्टी की मेम्बरी देना; (२) कोमसोमोल की जिला कमिटी के मंत्री पद से पावेल को मुक्त करते हुए उसके सर्टिफिकेट की तसदीक करना।

विदा होते समय लिसित्सिन और लिदा ने जोर से पावेल से हाथ मिलाया और प्यार से उसे गले लगाया और जब उसका घोड़ा हाते में से निकल कर सड़क पर पहुंचा तो एक दर्जन रिवाल्वरों ने उसको विदा की सलामी दी।

चौदह

ट्राम फुन्दुकलियेव पहाड़ी पर चढ़ते हुए धीरे-धीरे रेंग रही थी और उसका इंजन जैसे थकान से कराह रहा था। ऑपेरा हाउस पर पहुंच कर वह रुक गई और उसमें से कुछ नौजवान बाहर निकले। ट्राम फिर चढ़ाई चढ़ने लगी।

पांक्रातोव ने दूसरों को ठेलते हुए कहा, "चलो जरा तेज रफ्तार से चलो, नहीं तो देर हो जायगी।"

ओकुनेव ने थियेटर के दरवाजे पर जाकर पांक्रातोव को पकड़ लिया।

"हम लोग ऐसी ही परिस्थितियों में तीन साल पहले यहां आये थे। तुम्हें याद है न गेंका? यह उस वक्त की बात है जब दुबावा अपना मजदूरों का विरोधी दल लेकर हमारे पास आया था। कैसी शानदार मीटिंग हुई थी! और आज फिर हमें उसी से मोर्चा लेना है!"

वे अपने पास देकर हॉल में दाखिल हो गये थे जब कि पांक्रातोव ने जवाब दिया।

"हां, इतिहास ठीक उसी जगह पर अपने-आपको दुहरा रहा है।"

हॉल में बैठे हुए दूसरे लोगों ने उन्हें चुप होने के लिए कहा। सम्मेलन का शाम का अधिवेशन शुरू हो गया था और जो भी सीट मिल जाय, उसी पर उन्हें बैठ जाना था। एक नौजवान औरत मंच से बोल रही थी।

पांक्रातोव ने ओकुनेव की पसली में उंगली गड़ाते हुए धीरे से कहा, "हम लोग बिलकुल ठीक वक्त पर आये हैं। अब चुप बैठो और सुनो बीवी जी क्या कहती हैं।"

"...यह सच है कि हम लोगों ने इस बहस में अपना बहुत वक्त और ताकत खर्च की है। मगर मेरा खयाल है कि हम सबने इससे बहुत-कुछ सीखा है। आज हमें यह देख कर बड़ी खुशी होती है कि हमारे संगठन में त्रॉत्स्की के अनुयायी हार गये हैं। वे यह शिकायत नहीं कर सकते कि लोगों ने उन्हें सुना

नहीं। बात इसकी उल्टी है : उन्हें अपना दृष्टिकोण दूसरों के सामने रखने का पूरा मौका दिया गया है। सच बात यह है कि उनको दी गई आजादी का उन्होंने बेजा इस्तेमाल किया है और पार्टी के अनुशासन को वहुत बार बुरी तरह भंग किया है।"

तालिया बहुत उत्तेजित थी। बोलते समय उसके बालों की जो लट आंखों पर आ जाती थी, उसको पीछे करने के लिए जिस तरह वह सिर को झटक रही थी, उससे यह बात साफ जाहिर थी।

"देहातों के बहुत से साथी यहां पर बोले हैं और उन सबके पास त्रॉत्स्की-पंथियों के कारनामों के बारे में कुछ-न-कुछ कहने को रहा है। इस सम्मेलन में काफी त्रॉत्स्की-पंथी भी हैं। देहात के लोगों ने समझ-बूझ कर उनको यहां भेजा है ताकि हम पार्टी के इस शहर सम्मेलन में उनकी बात को सुनने का एक और मौका पायें। अगर वे इस अवसर का पूरा लाभ नहीं उठा रहे हैं, तो इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। देहातों और सेलों में जिस प्रकार वे पूरी तरह पराजित हुए हैं, उससे जरूर उन्होंने कुछ-न-कुछ सबक लिया है। यही वजह है कि उन्हें इस बात का साहस नहीं हुआ कि जो बातें अभी वे कल तक कह रहे थे, उन्हें आज इस सम्मेलन के सामने कहें।"

हॉल के दाहिने कोने से आती हुई एक करख्त आवाज ने इस जगह पर तालिया को टोका :

"अभी तक हम अपनी पूरी बात नहीं कह पाये हैं !"

तालिया उस आवाज की तरफ मुड़ी :

"बहुत अच्छा दुबावा, तुम अभी आ जाओ और बोलो, हम तुम्हारी बात सुनेंगे।"

दुबावा ने चिंता में डूबे-डूबे उसको देखा और उसके ओंठ क्रोध में ऐंठ गये।

उसने चिल्ला कर कहा, "हम भी बोलेंगे, वक्त आने दो !" खुद अपने इलाके में एक रोज पहले उसे जो करारी हार खानी पड़ी थी, उसका खयाल दुबावा को आया। उसकी याद अब भी उसके दिल में खटक रही थी।

हॉल में एक धीमी भुनभुनाहट फैल गई। पांक्रातोव अब अपने को बस में नहीं रख सका और चिल्ला उठा :

"फिर पार्टी को उलटने-पुलटने का इरादा है क्या ?"

दुबावा ने आवाज को पहचान लिया, मगर उस ओर मुड़ा नहीं। उसने ओंठ भींच लिये और सिर झुका लिया।

तालिया बोली, "त्रॉत्स्की-पंथी किस तरह पार्टी-अनुशासन का उल्लंघन कर रहे हैं, खुद दुबावा इसकी बहुत अच्छी मिसाल है। उसने बहुत दिन कोमसोमोल

में काम किया है। हममें से बहुत से लोग उसको जानते हैं, और खासकर हथियार कारखाने के मजदूर। वह खारकोव कम्युनिस्ट यूनीवर्सिटी का छात्र है, फिर भी पिछले तीन हफ्ते से यहां पर शुम्स्की के साथ है और हमको यह बात मालूम है। यूनीवर्सिटी खुली हुई है, ऐसे वक्त वह कौन सी चीज है जो इन लोगों को यहां पर लाई है ? इस कस्बे में एक भी देहात नहीं है, जहां पर उन्होंने भाषण न दिये हों। यह सही है कि पिछले कुछ दिनों में यह देखने में आया है कि शुम्स्की की अकल ठिकाने पर आ रही है। उसको किसने यहां पर भेजा है ? उनके अलावा भिन्न-भिन्न संगठनों के और भी कई त्रॉत्स्की-पंथी यहां पर उपस्थित हैं। इन सभी ने एक न एक वक्त यहां पर काम किया है और अब ये लोग यहां पार्टी में गड़बड़ी फैलाने के लिए आये हैं। उनके पार्टी संगठनों को क्या यह बात मालूम है कि वे कहां गये हैं ? बिलकुल नहीं।"

सम्मेलन को यह आशा थी कि त्रॉत्स्की-पंथी आगे आकर अपनी गलतियों को कबूल कर लेंगे। तालिया को भी यह उम्मीद थी कि वह उनको ऐसा करने के लिए राजी कर लेगी, इसीलिए उसने सच्चे दिल से उनसे इस बात की अपील की। दोस्ताना लहजे में उसने सीधे-सीधे उनको संबोधित करते हुए कहा :

"तीन साल पहले इसी हॉल में दुबावा अपने 'मजदूरों के विरोधी दल' की बात लेकर आया था। याद है ? और उसने क्या कहा था, यह भी याद है ? तब उसने कहा था : 'हम कभी पार्टी झंडे को अपने हाथ से गिरने न देंगे।' मगर अभी मुश्किल से तीन साल ही गुजरे हैं और दुबावा ने फिर वही काम किया है। हां, मैं अपनी बात को दुहराती हूं कि उसने पार्टी झंडे को गिरा दिया है। वह कहता है, अभी हमने अपनी पूरी बात नहीं कही है। इसका मतलब है कि वह और उसके दूसरे सहयोगी त्रात्स्की-पंथी अभी और भी आगे बढ़ने का इरादा रखते हैं।"

पिछली कतारों से एक आवाज आई, "तुफ्ता हमको बैरोमीटर के बारे में बताए। वही इन लोगों के मौसमी उतार-चढ़ाव का विशेषज्ञ है।"

इसके जवाब में क्रुद्ध आवाजें आईं :

"यह इस तरह के मजाकों का वक्त नहीं है !"

"ये लोग पार्टी से लड़ना बंद करेंगे या नहीं ? हमें इस बात का उत्तर चाहिए !"

"ये लोग हमको बतायें कि वह पार्टी-विरोधी ऐलान किसने लिखा !"

हॉल के अन्दर गुस्सा तेज से और तेज होता गया और चेयरमैन ने लोगों को चुप कराने के लिए बार-बार और बड़ी-बड़ी देर तक घंटी बजाई। तालिया की आवाज शोर में डूब गई और तूफान के थमने में काफी देर लगी। और तूफान के हलके पड़ने पर ही वह अपनी बात जारी रख सकी।

"दूरदराज के अपने साथियों के जो खत हमको मिलते हैं, उनसे पता चलता है कि वे लोग हमारे साथ हैं और इस चीज से हमको बहुत बल मिलता है। मैं आपको ऐसे ही एक खत का कुछ हिस्सा पढ़ कर सुनाना चाहती हूं। यह खत ओल्गा यूरेनेवा ने भेजा है। आप में से बहुत से लोग उसको जानते हैं। वह कोमसोमोल की एक एरिया कमिटी के संगठन विभाग की इंचार्ज है।"

तालिया ने अपने सामने पड़े हुए ढेर में से एक कागज निकाला, उस पर निगाह दौड़ाई और पढ़ना शुरू किया।

"अमली काम की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया है। पिछले चार दिन से सारे ब्यूरो मेम्बर देहातों में गये हुए हैं जहां त्रात्स्की-पंथियों ने पहले से भी ज्यादा जहरीला प्रचार शुरू कर दिया है। कल एक ऐसी घटना हुई जिससे संगठन के सभी लोग बहुत बिगड़ उठे हैं। जब विरोधियों को शहर के एक भी सेल में बहुमत नहीं प्राप्त हुआ, तो उन्होंने अपनी सारी शक्ति को जमा करके एरिया फौजी कमिसारियट की सेल में लड़ने का फैसला किया। एरिया फौजी कमिसारियट की सेल में एरिया प्लैनिंग कमीशन और शिक्षा-विभाग में काम करने वाले कम्युनिस्ट भी शामिल हैं। इस सेल में बयालीस मेम्बर हैं। मगर वहां के सारे त्रात्स्की-पंथी एक होकर काम करते हैं। उस मीटिंग में जैसे पार्टी-विरोधी भाषण हुए, वैसे हमने पहले कभी नहीं सुने थे। फौजी कमिसारियट का एक मेम्बर उठ पड़ा और साफ-साफ बोला : 'अगर पार्टी की मशीन हमारी बात नहीं मानती तो हम उसे अपनी ताकत से तोड़ देंगे।' जब उसने यह बात कही तो विरोधी दल वालों ने खूब तालियां बजाईं। तब कोर्चागिन बोलने के लिए उठा। उसने कहा, 'आप कैसे पार्टी मेम्बर हैं जो उस फासिस्ट की बात पर ताली बजा रहे हैं?' मगर इन लोगों ने इतना शोर मचाया, चीखे-चिल्लाये, कुर्सियां बजाईं कि कोर्चागिन नहीं बोल सका। विरोधियों के इस बेहूदा आचरण से बिगड़ कर सेल के मेम्बरों ने मांग की कि कोर्चागिन को अपनी बात कहने का मौका दिया जाय। मगर जैसे ही कोर्चागिन ने बोलना शुरू किया कि फिर वैसा ही शोर मचा। कोर्चागिन ने उस शोर को अपनी आवाज से दबाते हुए और भी चीख कर कहा, 'इसी को आप जनवाद कहते हैं! मगर कोई बात नहीं, इतने पर भी मैं बोलूंगा और जरूर बोलूंगा!' उसी वक्त कई लोग उस पर टूट पड़े और उसे मंच से घसीट कर अलग करने लगे। बड़ा हंगामा मचा। पावेल उनका मुकाबला करता रहा और बोलता गया, मगर उन्होंने उसे मंच से घसीट कर, बगल के एक दरवाजे से बाहर सीढ़ी के पास धकेल

दिया । किसी बदमाश ने उसके चेहरे पर चाकू मार दिया । उसके बाद लगभग सभी सेल मेम्बर मीटिंग छोड़ कर चले गये । इस घटना ने बहुत से लोगों की आंखें खोल दीं...।"

इसके बाद तालिया मंच से हट गई ।

पार्टी की सूबा कमिटी के प्रचार-आन्दोलन विभाग के काम की देखभाल पिछले दो महीनों से सेगल कर रहा था । सेगल सभापति मंडली में तोकारेव के बगल में बैठा हुआ था और बड़े गौर से प्रतिनिधियों के भाषण सुन रहा था । अब तक सम्मेलन में नौजवान लोग ही बोले थे जो अभी कोमसोमोल में ही थे ।

सेगल सोच रहा था, "इन पिछले कुछ सालों में इनकी बुद्धि कितनी प्रौढ़ हो गई है !"

उसनें तोकारेव से कहा, "विरोधियों को अच्छी मार पड़ रही है और जब कि अभी बड़ी-बड़ी तोपें मैदान में उतारी ही नहीं गयीं । अभी तो यह लड़के ही त्रॉत्स्की-पंथियों को खदेड़े दे रहे हैं ।"

उसी वक्त तुफ्ता कूद कर मंच पर आ गया । उसके आते ही लोगों ने अपनी नापसन्दी का इजहार करते हुए भुनभुनाना शुरू किया और एक कहकहा भी पड़ा । तुफ्ता अपने इस स्वागत का प्रतिवाद करने के लिए सभापति मंडली की तरफ मुड़ा, मगर तब तक हॉल में काफी शान्ति छा गयी थी ।

"किसी ने यहां पर मुझको मौसम के उतार-चढ़ाव का विशेषज्ञ कहा है । आप साथियों का यहां पर बहुमत है और इस तरह आप मेरे राजनीतिक विचारों का मखौल उड़ाते हैं !" उसने एक सांस में कह डाला ।

एक जोर के कहकहे से उसके शब्दों का स्वागत हुआ । तुफ्ता ने बिगड़ कर चेयरमैन से अपील की ।

"आप हंस सकते हैं, मगर मैं एक बात फिर आपको बतलाना चाहता हूं कि युवक बैरोमीटर होते हैं । लेनिन ने बार-बार यह बात कही है ।"

पल भर के लिए हाल में शान्ति छा गयी ।

"लेनिन ने क्या कहा है ?" श्रोताओं में से आवाज आई ।

तुफ्ता की जान में जान आई ।

"जिस वक्त अक्तूबर क्रान्ति की तैयारियां हो रही थीं, लेनिन ने निर्देश किया था कि हिम्मतवर मजदूर युवकों को जमा करो, उन्हें हथियार दो और सबसे अहम मुकामों पर उन्हें जहाजियों के साथ-साथ भेजो । क्या आप चाहते हैं कि मैं वह टुकड़ा पढ़कर आपको सुनाऊं ? मेरे पास सारे उद्धरण यहां कार्ड पर लिखे हुए रखे हैं ।" कहते हुए तुफ्ता ने अपने बस्ते में हाथ डाला ।

"जाने दो, जाने दो, उसकी जरूरत नहीं, हमें मालूम है !"

"मगर यह तो बताओ कि लेनिन ने पार्टी की एकता के बारे में क्या लिखा है ?"

"और पार्टी अनुशासन के बारे में ?"

"लेनिन ने कब नये लोगों को पुराने बोल्शेविकों के मुकाबले में खड़ा किया ?"

लुफ्ता के विचारों की कड़ियां टूट गयीं और वह दूसरी ही बात कहने लगा :

"अभी लगुतिना ने यूरेनेवा का एक खत पढ़कर आपको सुनाया। बहस-मुबाहसे के दौरान में अगर कोई ज्यादतियां हो जाती हैं, तो हमसे उनका जवाब तलब करने का क्या मतलब है ?"

शुम्स्का के बगल में बैठे हुए स्वेतायेव ने गुस्से से दांत पीसते हुए कहा, "गदहा...।"

शुम्स्की ने वैसे ही फुसफुसा कर जवाब दिया, "हां, यह बेवकूफ हमारा काम बिलकुल बिगाड़ देगा।"

तुफ्ता की तीखी बुलन्द आवाज श्रोताओं के कान में सीसा उंडेलती रही :

"अगर आप बहुमत का दल संगठित कर सकते हैं, तो हमको भी अधिकार है कि हम अल्पमत का दल संगठित करें।"

हॉल में शोर मचा।

चारों तरफ से लोगों की क्रुद्ध आवाजें तुफ्ता पर बरसने लगीं :

"यह क्या ? फिर वही बोल्शेविक और मेंशेविक का झगड़ा !"

"रूसी कम्युनिस्ट पार्टी कोई पार्लियामेंट नहीं है !"

"ये लोग म्यासनिकोव से लेकर मार्तोव तक सबका काम कर रहे हैं।"

तुफ्ता ने इस तरह अपनी बाहें उठाईं जैसे नदी में कूदने जा रहा हो और जल्दी-जल्दी जवाब देने लगा।

"हां, हमको अपना दल बनाने की आजादी मिलनी चाहिए। वरना कैसे हम लोग, जो अलग विचार रखते हैं, अपने मत के लिए एक ऐसे संगठित अनुशासित बहुमत के खिलाफ लड़ सकते हैं ?"

शोर बढ़ता गया। पांक्रातोव उठा और चिल्ला कर बोला :

"उसको बोलने दो। हम सुनें तो कि वह क्या कहना चाहता है। तुफ्ता में इतनी बात तो अच्छी है कि जिन बातों को दूसरे लोग अपने दिल में रखे हुए हैं, उनको वह उगले दे रहा है।"

हॉल शांत हो गया। तुफ्ता ने महसूस किया कि वह हद से गुजरा जा रहा है। शायद उसको यह बात अभी नहीं कहनी चाहिए थी। उसके

विचार दूसरी ही ओर मुड़ गये और उसने तेजी से बोलते हुए अपनी बात खतम की :

"आप चाहें तो हमें निकाल बाहर कर सकते हैं। वह चीज शुरू भी हो गई है। आपने मुझे कोमसोमोल की सूबा कमिटी में से निकाल दिया है। मगर कोई बात नहीं, जल्दी ही यह बात साफ हो जायगी कि कौन सही था और कौन गलत।" यह कहते हुए वह मंच से कूद कर हॉल में आ गया।

स्वेतायेव ने एक पुर्जा लिख कर दुबावा के पास भेजा।

"मितियाई, अब तुम बोलो। मैं जानता हूं कि इससे बात कुछ खास बदलेगी नहीं। हमें यहां बुरी मार पड़ रही है। तुफ्ता की अक्ल हमें ठीक करनी होगी। यह बिल्कुल गदहा है और जो जी में आता है, बक डालता है।"

दुबावा ने बोलने की इजाजत मांगी जो उसे फौरन मिल गई।

वह मंच पर चढ़ा तो हॉल में शांति छा गई और लोग आतुरता से उसकी बात का इंतजार करने लगे। यह किसी भी भाषण के पहले छाने वाली शांति थी, मगर दुबावा को लगा कि जैसे उसमें शत्रुता का भाव मिला हुआ हो। जिस जोश से वह सेल मीटिंगों में बोला करता था, वह जोश अब ठंडा पड़ गया था। रोज-ब-रोज उसका उत्साह कम होता जा रहा था और अपने पुराने साथियों के हाथ ऐसी करारी हार खाकर और उनकी उस सख्त डांट-फटकार से उसकी हालत उस आग जैसी हो रही थी जिस पर पानी डाल दिया गया हो। आग अब नहीं थी और केवल धुआं रह गया था, उसके आहत अहंकार का तीखा धुआं जिसका तीखापन इस बात से ओर भी बढ़ जाता था कि वह अपनी गलती मानने से बराबर इनकार किये जा रहा था। उसने सीधे-सीधे अपनी बात कहने का संकल्प किया, गोकि वह समझ रहा था कि ऐसा करने से वह बहुमत के लोगों से और भी कट कर दूर जा पड़ेगा। बोलते समय उसकी आवाज में कोई उतार-चढ़ाव नहीं था, मगर आवाज साफ थी।

"बराय मेहरबानी मुझे टोकियेगा नहीं और न बेकार के सवाल पूछ कर मुझे चिढ़ाने की कोशिश कीजिएगा। मैं अपने लोगों का पूरा विचार आपके सामने रखना चाहता हूं, गोकि मैं पहले से जानता हूं कि इसका कोई फायदा नहीं है। आप बहुमत में हैं।"

उसने बोलना खतम किया तो ऐसा लगा कि जैसे हॉल में बम फूटा हो। चारों तरफ से लोगों की गुस्से से भरी बिफरी हुई आवाजों का तूफान उस पर टूटा और उसको लगा कि जैसे उसके शरीर पर कोड़े पड़ रहे हों।

"शर्म की बात है!"

"फूट डालने वालों का नाश हो!"

"यह कीचड़ उछालना बन्द करो!"

लोग मजाक उड़ाते हुए हंस रहे थे और उनकी इस हंसी के बीच दुबावा अपनी सीट पर जाकर बैठ गया और उस हंसी ने ही मानो उसका काम तमाम कर दिया। अगर लोगों ने अपने गुस्से का इजहार किया होता और बिगड़ कर उस पर हमला किया होता, तब शायद उसके मन को संतोष होता। मगर यह तो ऐसा था कि जैसे वह कोई निकृष्ट अभिनेता हो, जिसकी आवाज गलत जगह पर फट गई हो और लोग उसका मजाक उड़ा रहे हों।

सभापति ने ऐलान किया, "अब शुम्स्की बोलेगा।"

शुम्स्की ने खड़े होकर कहा, "मैं बोलने से इनकार करता हूं।"

तब पिछली कतारों में से पांक्रातोव की भारी आवाज गूंजती हुई सुनाई दी : "मुझको बोलने दो !"

उसकी आवाज से दुबावा जान गया कि पांक्रातोव के दिल में तूफान मचल रहा है। उस मल्लाह की भारी आवाज इसी तरह गूंजती थी जब उसका जबर्दस्त अपमान होता था और दुबावा के मन में तब बड़ी बेचैनी हुई जब उसने लम्बी, कुछ झुकी हुई उस आकृति को जल्दी-जल्दी मंच की ओर जाते हुए अपनी सचिन्त आंखों से देखा। वह जानता था कि पांक्रातोव क्या कहने जा रहा है। उसे दो रोज पहले सोलोमेंका में अपने पुराने दोस्तों के साथ अपनी मुलाकात की बात याद आई और याद आया कि कैसे उन्होंने उस पर जोर दिया था कि वह विरोधियों से अपना सम्बंध तोड़ ले। उसके साथ स्वेतायेव और शुम्स्की भी थे। तोकारेव के घर पर उससे मुलाकात हुई थी। पांक्रातोव, ओकुनेव, तालिया, वोलिन्तसेव, जेलेनोवा, स्तारोवेरोव और आर्त्यु-खिन भी मौजूद थे। एकता कायम करने की बड़ी कोशिश की गई, लेकिन दुबावा ने उस पर कोई कान न दिया। बहस के बीच मे ही वह स्वेतायेव के साथ बाहर निकल गया और इस तरह उसने यह चीज और भी दिखला दी कि अपनी गलती मानने के लिए वह कतई तैयार नहीं है। शुम्स्की रुक गया था। और अब उसने बोलने से इनकार कर दिया था। "बेदम, बुद्धिजीवी ! रीढ़ ही नहीं है ! जरूर उन लोगों ने उसको मिला लिया है," दुबावा ने गुस्से के साथ सोचा-विचारा।

इस कठिन संघर्ष में वह एक के बाद दूसरा दोस्त खोता जा रहा था। यूनिवर्सिटी में जार्की के संग उसकी दोस्ती टूट गई थी। जार्की ने पार्टी की ब्यूरो की एक मीटिंग में "छियालीस लोगों" की घोषणा की कड़ी आलोचना की थी। और बाद में जब संघर्ष और तेज हुआ, तो उनकी आपस में बोलचाल भी बन्द हो गई थी। उसके बाद जार्की कई बार आना से मिलने उसके घर आया था। दुबावा और आना की शादी हुए एक साल हो चुका था। दोनों अलग-अलग कमरों में रहते थे और दुबावा को इस बात का पक्का यकीन था

कि आना के साथ उसके बिगाड़ का कारण यही नहीं था कि आना का मत उससे नहीं मिलता था, बल्कि यह भी कि जार्की के बार-बार आने से आना और उसके सम्बंध में और भी तनाव आ गया था। यह ईर्ष्या की बात नहीं थी, उसने अपने मन को समझाने की कोशिश की। लेकिन उन हालतों में जार्की के साथ आना की दोस्ती से उसको चिढ़ जरूर मालूम होती थी। इसके बारे में उसने आना से बात की थी, मगर कोई खास नतीजा न निकला, सिर्फ लड़ाई होकर रह गई। आना को बिना यह बतलाये कि वह कहां जा रहा है, वह सम्मेलन में चला आया था।

उसके विचार तेजी से उड़े चले जा रहे थे जब कि पांक्रातोव की बात ने उसको बीच ही में काट दिया।

पांक्रातोव ने मंच के छोर पर खड़े होते हुए अपनी गूंजती हुई आवाज में कहा, "साथियो! पिछले नौ दिन से हम विरोधियों की बातें सुनते आ रहे हैं और मैं साफ-साफ कहना चाहूंगा कि वे लोग वर्गयुद्ध में हमारे साथियों की तरह, संग-संग लड़ने वालों की तरह, क्रांतिकारियों की तरह नहीं बोल रहे थे। उनकी तकरीरें दुश्मनों जैसी थीं, उनमें उनके मन का मैल था, वे गाली देने के अंदाज में बातें कह रहे थे। हां साथियो, गाली देने के अंदाज में! उन्होंने हम बोल्शेविकों की ऐसी तसवीर खींची है मानो हम पार्टी के अंदर लाठी का राज कायम करने की कोशिश कर रहे हों, जैसे हमने अपने वर्ग और क्रांति के हितों के साथ विश्वासघात किया हो। उन्होंने हमारे पुराने बोल्शेविकों को, जो हमारी पार्टी के सबसे तपे हुए और विश्वसनीय लोग हैं उनको, पार्टी तानाशाह कहा है—उन लोगों को जिन्होंने रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण किया है, जिन्होंने जारशाही कैदखानों में तकलीफें सही हैं, जिन्होंने कामरेड लेनिन के नेतृत्व में दुनिया भर के मेंशेविकों और त्रॉत्स्की के खिलाफ निर्मम संघर्ष किया है। क्या दुश्मन के अलावा और कोई इस तरह की बात कह सकता था? क्या पार्टी और उसके कार्यकर्ता एक सम्पूर्ण इकाई नहीं है? तब मैं यह जानना चाहता हूं कि ऐसी बातें क्यों कही जा रही हैं? हम ऐसे लोगों को क्या कहेंगे जो नौजवान लाल सैनिकों को अपने कमांडरों और कमिसारों के खिलाफ और फौजी हेडक्वार्टर के खिलाफ भड़का रहे हैं—और ऐसे समय में जब कि यूनिट दुश्मनों से घिरी हुई है। त्रॉत्स्की-पंथियों के अनुसार मैं जब तक मेकेनिक हूं तब तक ठीक हूं, लेकिन अगर कल के रोज मैं पार्टी का मंत्री हो जाऊं तो 'तानाशाह' और 'कुरसी तोडने वाला' हो जाऊंगा। क्या यह बात कुछ अजीब-सी नहीं है साथियो, कि विरोध करने वालों में, जो तानाशाही के खिलाफ और जनवाद के लिए संघर्ष कर रहे हैं, तुपता जैसे लोग हैं जिसे अभी हाल ही में तानाशाही के जुर्म में अपने काम से अलग किया गया था? या

स्वेतायेव को ही लीजिए जिसे सोलोमेंका के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि वह जनवाद का कैसा हामी है, या अफानासिएव को ही लीजिए जिसे सूबा कमिटी ने तीन-तीन बार पोदोल्स्क के इलाके में मनमाने ढंग से काम करने के जुर्म में अलग किया है ? देखने में यह आता है कि वे तमाम लोग जिन्हें पार्टी ने सजा दी है, पार्टी से लड़ने के लिए एक हो गये हैं। मैं चाहता हूं कि हमारे पुराने बोल्शेविक हमें त्रॉत्स्की के बोल्शेविज्म के बारे में बतलाएं। नौजवानों के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि कैसे त्रॉत्स्की ने बोल्शेविकों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, कैसे वह बराबर एक कैम्प से दूसरे कैम्प में पहुंचता रहा। विरोधियों के खिलाफ इस संघर्ष में हमारी एकता बढ़ी है और विचारों की सफाई के खयाल से हमारे नौजवानों का स्तर भी ऊंचा हुआ है। निम्न मध्य-वर्गीय प्रवृत्तियों के खिलाफ बोल्शेविक पार्टी और कोमसोमोल और भी मजबूत हुए हैं। हमारे विरोधी, जो लोगों में घबराहट फैलाना चाहते हैं, यह कह रहे हैं कि हमारा आर्थिक और राजनीतिक सर्वनाश हो जायगा। यह तो हमारा आगामी कल ही बतलाएगा कि इन भविष्यवाणियों में कोई सार था या नहीं। वे लोग मांग कर रहे हैं कि हम तोकारेव जैसे पुराने बोल्शेविकों को पीछे करके उनकी जगह दुबावा जैसे अवसरवादी को रख दें। उनका यह खयाल है कि पार्टी के खिलाफ वह जो संघर्ष कर रहा है, वह कोई बड़ी बहादुरी का काम है। नहीं साथियो, हम कभी यह बात नहीं मान सकते। पुराने बोल्शेविकों की जगह नये आदमी रखे जायेंगे, लेकिन ये नये आदमी उन लोगों में से नहीं आयेंगे जो हर कठिन घड़ी में पार्टी-नीति पर आक्रमण किया करते हैं। हम अपनी महान पार्टी की एकता को भंग नहीं होने देंगे। कभी भी पुराने और नये साथियों के बीच दरार नहीं पड़ने पायेगी। लेनिन के झंडे के नीचे हम निम्न मध्य-वर्गीय प्रवृत्तियों के खिलाफ जमकर संघर्ष करते हुए विजय की ओर आगे बढ़ते जायेंगे।"

पांक्रातोव तालियों की जबर्दस्त गड़गड़ाहट के बीच मंच से नीचे उतर आया।

अगले रोज दस लोग लुफ्ता के घर पर मिले।

दुबावा ने कहा, "मैं और शुम्स्की आज खारकोव जा रहे हैं। यहां पर अब हमारा कोई काम नहीं। तुम लोग अपनी एकता को बनाये रखने की कोशिश करना। अब हमें सिर्फ यह करना है कि इंतजार करें और देखें कि क्या होता है। यह बिलकुल जाहिर बात है कि अखिल रूसी सम्मेलन हमारी निन्दा करेगा, मगर मेरा खयाल है कि अभी हमारे खिलाफ दमन की कार्रवाइयों

का वक्त नहीं आया है। बहुमत वालों ने हमें और एक मौका देने का फैसला किया है। अब इस सम्मेलन के बाद खुलेआम संघर्ष चलाने का मतलब तो यह होगा कि हमें पार्टी में से ठोकर मार कर निकाल दिया जायगा। इसलिए अब खुलेआम लड़ाई चलाना तो हमारी योजना में नहीं है। यह तो कहना मुश्किल है कि भविष्य में क्या होगा। फिलहाल मैं समझता हूं कि कहने की बात इतनी ही है।" यह कह कर दुबावा जाने के लिए उठा।

दुबला-पतला स्तारोवेरोव भी उठा जिसके ओंठ पतले-पतले थे।

उसने कुछ-कुछ हकलाते हुए कहा, "मैं तुम्हारी बात नहीं समझ पाता मितियाई। क्या मैं यह समझूं कि सम्मेलन के फैसले हमारे ऊपर लागू नहीं होते?"

"जाब्ते के हिसाब से तो होते हैं," स्वेतायेव ने एकाएक बीच में कहा, "वरना तुम्हारा पार्टी-कार्ड छिन जायगा। मगर असल बात यह है कि हम इंतज़ार करेंगे और हवा का रुख देखेंगे और इस बीच इधर-उधर बिखर जायेंगे।"

तुफ्ता अपनी कुर्सी में बेचैनी से हिला। शुम्स्की जर्द हो रहा था, उसकी तबियत बुझी हुई थी और उसकी आंखों के नीचे नीले दाग पड़ गये थे। वह खिड़की के पास बैठा दांत से नाखून काट रहा था। स्वेतायेव की बात को सुन कर उसने नाखून काटना बंद कर दिया और मीटिंग की तरफ मुड़ा।

एकाएक उसने गुस्से से कहा, "मैं इस तरह की कार्रवाइयों के खिलाफ हूं। मेरा निजी खयाल यह है कि सम्मेलन के फैसले हमारे ऊपर लागू होते हैं। हम लोगों ने अपने विश्वासों के लिए संघर्ष किया, लेकिन अब हमें लिये गए फैसलों को मानना चाहिए।"

स्तारोवेरोव ने उसकी ओर समर्थन-सूचक आंखों से देखा।

उसने तुतलाते हुए कहा, "यही बात मैं कहना चाहता था।"

दुबावा ने शुम्स्की को तरेरा और अपनी आवाज में व्यंग भर कर कहा:

"यह कौन कह रहा है कि तुम कुछ करो। अब भी तुम्हें सूबा सम्मेलन में पश्चाताप करने का मौका मिलेगा!"

शुम्स्की उछल कर खड़ा हो गया।

"मुझे तुम्हारी बात के स्वर से एतराज है दिमित्री! और मैं साफ-साफ कहना चाहूंगा कि तुम जो बात कह रहे हो, उससे मुझे सख्त नफरत होती है और वह मुझे मजबूर कर रही है कि मैं दुबारा अपनी स्थिति पर विचार करूं।"

दुबावा ने ऐसे हाथ हिलाया जैसे उसकी बात को उड़ा रहा हो।

"मैं ठीक समझ रहा था कि तुम यही बात करने की सोचोगे। भाग कर जाओ और उनके सामने रो-गा आओ, कहीं देर न हो जाय।" यह कह कर दुबावा ने तुफ्ता और दूसरे लोगों से हाथ मिलाया और चला गया। उसके ठीक बाद शुम्स्की और स्तारोवेरोव भी चले गये।

बड़ी सख्त और बेदर्द सर्दी से सन १९२४ की शुरुआत हुई। जनवरी का बर्फानी पंजा बर्फ से ढंकी हुई धरती पर जमा हुआ था और महीने के दूसरे पखवारे में आंधी और तूफान का जबर्दस्त जोर था।

दक्षिण-पश्चिमी रेलवे लाइनें बर्फ से ढंकी हुई थीं। आदमी पगलाई हुई प्राकृतिक शक्तियों से लड़ रहे थे। बर्फ की सफाई करने वाले फावड़े बर्फ को काट-काट कर रेलगाड़ियों के लिए रास्ता बना रहे थे। टेलीग्राफ के तार बर्फ के बोझ से आंधी और तूफान के कारण टूटे जा रहे थे और बारह लाइनों में से कुल तीन काम कर रही थीं—एक इंडो-योरोपियन और दो सरकारी लाइनें।

शेपेतोवका स्टेशन के तार घर में तीन आले अनवरत खटखटा रहे थे, मगर उनकी भाषा ऐसी थी जो सिर्फ जानकार आदमी की ही समझ में आ सकती थी।

ऑपरेटर लड़कियां अभी जवान थीं, मगर अभी उन्होंने बीस किलोमीटर से ज्यादा फीता न टपटपाया होगा जब कि उनके बगल का बुड्ढा तार बाबू दो सौ किलोमीटर से ज्यादा कर चुका था। अपने नौजवान साथियों की तरह उस बुड्ढे को तार से भेजा गया संदेश समझने के लिए उस फीते को पढ़ना नहीं पड़ता था, न वह मुश्किल शब्दों और वाक्यांशों की ही पहेली में उलझता था, और न उसके माथे पर झुर्रियां ही पड़ती थीं। उसका ढंग यह था कि शब्द पढ़ता जा रहा था और मशीन टपटपाता जा रहा था। तभी उसके कान में शब्द पड़े, "सब के लिए, सब के लिए, सब के लिए !"

"बर्फ साफ करने के बारे में कोई दूसरा सरकुलर होगा," बुड्ढे तार बाबू ने उन शब्दों को लिखते हुए अपने मन में कहा। बाहर बर्फ का तूफान जोरों से चल रहा था जिससे कड़ी-कड़ी बर्फ आकर खिड़की से टकराती थी। तार बाबू ने सोचा कि खिड़की पर कोई दस्तक दे रहा है। उसकी आंखें आवाज की ओर मुड़ गईं और वह क्षण-भर के लिए खिड़की के शीशे पर बर्फ से बनी हुई आकृतियों को देखने लगा। कोई भी नक्काश पत्ती की ऐसी नक्काशी न कर सकता था।

उसके विचार इधर-उधर बहने लगे और थोड़ी देर के लिए उसने तार के आले को सुनना बन्द कर दिया। मगर थोड़ी ही देर बाद उसने निगाह नीची की और उन शब्दों को पढ़ने के लिए, जिन्हें उसने बीच में ही छोड़ दिया था, फीते की तरफ हाथ बढ़ाया।

तार की मशीन ने ये शब्द लिखे थे :

"२१ जनवरी की शाम को छः बज कर पचास मिनट पर..."

तार बाबू ने जल्दी-जल्दी ये शब्द लिखे, फीते को नीचे रख दिया और अपने सिर को हाथ पर टिका कर आगे की बात सुनने लगा।

"कल गोर्की में मृत्यु हो गई..." धीरे, धीरे उसने ये शब्द कागज पर उतार दिये। अपनी लम्बी जिन्दगी में उसने न जाने कितने संदेश लिखे थे,

खुशी के संदेश और गम के संदेश; कितनी बार दूसरों के दर्द और दूसरों की खुशी की खबर उसी ने सबसे पहले सुनी थी। अपने काम के सिलसिले में उसने न जाने कब से तार के उन छोटे संदेशों के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ दिया था। उसका तो काम बस इतना था कि ध्वनियों को पकड़े और मशीन की तरह उनको कागज पर उतार दे।

यह भी किसी की मौत की खबर थी और किसी को इसकी सूचना दी जा रही थी। तार बाबू को शुरू के वे शब्द "सबके लिए, सबके लिए, सबके लिए" भूल गये। मशीन ने टिक् टिक् करके "व्लादीमीर इलिच" लिखा और बुड्ढे तार बाबू ने उनको अक्षरों में उतार दिया। उसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ, बस थोड़ी-सी थकान मालूम हुई। व्लादीमीर इलिच नाम का आदमी कहीं मर गया था और किसी को दुख की यह खबर मिलेगी, दर्द की एक चीख किसी के सीने से निकलेगी मगर उसको इससे क्या? मशीन डेश-डॉट-डेश-डॉट बोलती जा रही थी। अपनी उस सुपरिचित ध्वनि में से तार बाबू ने पहला अक्षर पकड़ा और उसे तार के फारम पर लिखा। यह अंग्रेजी का "एल" था। फिर दूसरा अक्षर था "ई"। उसके बाद ही उसने लिखा "एन" फिर जल्दी ही जोड़ा "आई", फिर आखिरी अक्षर लिखा "एन"।

इसके बाद मशीन ने विराम दिया और क्षण भर के लिए तार बाबू की आंखें अपने लिखे हुए शब्द "लेनिन" पर ठहर गई।

मशीन टपटपाती रही, मगर अब वह परिचित नाम तार बाबू की चेतना में दाखिल हुआ। उसने एक बार फिर उस सन्देश के आखिरी शब्द पर निगाह डाली "लेनिन"। क्या? लेनिन? तार की सारी इबारत उसके मन में बिजली की तरह कौंध गई। वह तार के फारम को घूरता हुआ बैठा रहा और अपने काम की बत्तीस बरस की जिन्दगी में पहली बार वह अपने लिखे हुए शब्दों का विश्वास नहीं कर सका।

उसने तीन बार उस लाइन पर जल्दी-जल्दी निगाह दौड़ाई, मगर वे शब्द जरा भी नहीं बदले: "व्लादीमीर इलिच लेनिन की मृत्यु हो गई।" बुड्ढा उछल कर खड़ा हो गया, उसने फीते को उठा लिया और उसको ऐसे घूरने लगा जैसे उसमें छेद कर देगा। जिस बात का विश्वास करने से वह इनकार कर रहा था, उस पर कागज के उस टुकड़े ने तसदीक की मुहर लगा दी थी। उसका चेहरा ऐसा जर्द पड़ गया जैसे उसमें जान ही न बाकी हो। वह अपने दूसरे साथियों की तरफ मुड़ा और उसकी चीख उनके कानों में पड़ी: "लेनिन मर गए!"

इस भयानक मृत्यु की खबर तार घर के खुले हुए दरवाजे में से निकली और आंधी की तरह स्टेशन में फैल गई और तूफान के डैनों पर सवार होकर

रेल की पटरियों और स्विचों से जाकर टकराई और बर्फ के तूफान के साथ-साथ रेलवे वर्कशाप के बर्फ से ढंके हुए फाटकों को चीरती हुई अंदर घुस गई।

मरम्मत करने वाले कुछ मजदूर पहले से ही पिट पर खड़े हुए एक इंजन की मरम्मत कर रहे थे। बूढ़ा पोलेन्तात्व्स्की खुद अपने इंजन के नीचे घुस कर उन जगहों को बतला रहा था जिनमें गड़बड़ी थी। जखार, ब्रुजाख और आर्तेम आविशदान की मुड़ी हुई लोहों की सलाखों को सीधा कर रहे थे। जखार उसको निहाई पर रखे हुए था और आर्तेम हथौड़ा चला रहा था।

जखार अधेड़ हो गया था। पिछले कुछ सालों ने उसके माथे पर गहरी झुर्रियां डाल दी थीं और उसकी कनपटी के बाल सफेद हो चले थे। उसकी कमर झुक गई थी और उसकी गढ़े में धंसी हुई आंखों में स्याही थी।

दरवाजे में खड़े हुए किसी आदमी की छायाकृति क्षण-भर के लिए दिखाई दी और फिर रात का अंधेरा उसको निगल गया। लोहे पर हथौड़ों की चोटों ने उसकी पहली चीख को डुबा दिया, मगर जब वह इंजन पर काम करते हुए आदमियों के पास पहुंचा तो आर्तेम के हाथ का हथौड़ा उठा का उठा रह गया।

"साथियो! लेनिन मर गये!"

हथौड़ा धीरे-धीरे आर्तेम के कंधे से नीचे आ गया और उसके हाथों ने खामोशी से उसको नीचे कंकरीट के फर्श पर रख दिया।

"क्या हुआ? तुमने क्या कहा?" कहते हुए आर्तेम ने यह भयानक खबर लाने वाले आदमी की चमड़े की जाकट को पागल की तरह झटके से पकड़ लिया।

और उसने हांफते हुए, बर्फ से ढंके हुए, अपनी धीमी, टूटी हुई आवाज में दुहराया:

"हां साथियो, लेनिन मर गये!"

और चूंकि उस आदमी ने बात धीरे से कही थी, इसलिए आर्तेम ने समझ लिया कि यह भयानक खबर जरूर सही होगी। कुछ देर बाद उसने इस आदमी को पहचाना। यह स्थानीय पार्टी संगठन का मंत्री था।

इंजन की मरम्मत करने वाले मजदूर पिट में से कूद कर बाहर आये और उन्होंने मौन होकर उस आदमी की मौत की खबर सुनी जिसका नाम सारी दुनिया में गूंज रहा था।

फाटक के बाहर कहीं एक इंजन सीटी दे रहा था, जिसे सुन कर ये लोग कांप गये। इंजन की इस दर्द में डूबी हुई आवाज के बाद वैसी ही आवाज दूर पर एक और इंजन ने की, उसके बाद एक और ने। उनकी इस आवाज में बिजलीघर के साइरेन ने योग दिया। साइरेन की आवाज बुलन्द और बम

के उड़ते हुए छर्रों की तरह तेज और चुभने वाली थी। फिर ये आवाजें जरा देर बाद कीव के लिए रवाना होने वाली मुसाफिर गाड़ी के खूबसूरत "एस" इंजन की भारी गूंजती हुई आवाज में डूब गईं।

खुफिया का आदमी चौंक गया जब शेपेतोवका-वार्सा एक्सप्रेस के पोलिश इंजन के ड्राइवर ने इंजनों की इन सीटियों का कारण जानने पर, कान लगा कर उसको सुना और फिर धीरे-धीरे अपना हाथ उठा कर सीटी की रस्सी को खींचा। वह जानता था कि यह आखिरी बार उसको ऐसा करने का मौका मिल रहा है, इसके बाद उसे फिर कभी यह गाड़ी चलाने को न मिलेगी। मगर उसके हाथ ने सीटी के तार को न छोड़ा और उसके इंजन की चीख ने पोलिश दूतों और कूटनीतिज्ञों को चौंका कर उन्हें अपने नरम कोचों से उठा दिया।

रेलवे के हाते में लोगों की भीड़ जमा थी। वे तमाम फाटकों के अन्दर चले आ रहे थे और जब वह विशाल इमारत ठसाठस भर गई, तो शोक सभा निस्तब्ध शान्ति के वातावरण में आरम्भ हुई। पार्टी की शेपेतोवका एरिया कमिटी के मंत्री, पुराने बोल्शेविक शराब्रिन ने तकरीर की।

"साथियो! लेनिन, दुनिया भर के मजदूरों के नेता लेनिन मर गये। पार्टी की अपूरणीय क्षति हुई है क्योंकि वह आदमी उठ गया जिसने बोल्शेविक पार्टी का निर्माण किया और उसको दुश्मनों के प्रति निर्मम होना सिखलाया... हमारी पार्टी और हमारे वर्ग के नेता की मृत्यु मजदूर वर्ग की सर्वोत्तम सन्तानों के लिए एक पुकार है कि वे आकर हमारी पार्टी में शामिल हों...।"

शोक संगीत की धुनें गूंज उठीं। वहां पर उपस्थित उन सैकड़ों लोगों ने अपनी टोपियां उतार लीं और वह आर्तेम जो पन्द्रह बरस से नहीं रोया था, उसको लगा कि जैसे दर्द से उसका गला घुट रहा है और उसके वे मजबूत चौड़े कंधे हिल उठे।

आदमियों की भीड़ के दबाव से रेलवे मजदूरों के क्लब की दीवारें भी मानो कराह रही थीं। बाहर बड़ी सख्त सर्दी थी, हॉल के दरवाजे के पास खड़े हुए दो लम्बे-लम्बे फर के दरख्त बर्फ का लबादा पहने खड़े थे। मगर हॉल के अन्दर अंगीठियों और छः सौ लोगों की सांसों के कारण घुटन महसूस हो रही थी। ये छः सौ लोग पार्टी द्वारा बुलाई हुई इस शोक-सभा में आये थे।

हॉल में कहीं बातचीत की भुनभुनाहट नहीं थी। गहरे दर्द ने लोगों की आवाजें रूंध दी थी और वे एक-दूसरे से धीरे-धीरे फुस-फुसा कर बातें कर रहे थे और उन तमाम सैकड़ों लोगों की आंखों में दुख और चिन्ता के भाव थे। वे एक ऐसी किश्ती के मल्लाह थे जिसकी पतवार चलाने वाला तूफान में ही उनसे बिछुड़ गया था।

ब्यूरो के मेम्बरों ने शान्ति से मंच पर आसन ग्रहण किया। मोटे-तगड़े सिरोतेंको ने सावधानी से घंटी उठायी, धीरे से उसको बजाया और वापिस मेज पर रख दिया। इतने ही से हॉल में शान्ति छा गयी।

मुख्य भाषण के बाद पार्टी संगठन का मंत्री सिरोतेंको बोलने के लिए उठा। और यद्यपि उसने जो घोषणा की, वह शोक सभा के लिए कुछ असाधारण ही थी, मगर किसी को उससे आश्चर्य नहीं हुआ।

उसने कहा, "कई मजदूरों ने इस सभा से मांग की है कि वह पार्टी मेम्बरी की अर्जी पर विचार करे। इस अर्जी पर सैंतीस साथियों के हस्ताक्षर हैं।" और उसने वह अर्जी पढ़कर सुना दी :

> "दक्षिण-पश्चिम रेलवे शेपेतोवका स्टेशन की बोल्शेविक पार्टी के रेलवे संगठन की सेवा में।
>
> "हमारे नेता की मृत्यु हमारे लिए पुकार है कि हम बोल्शेविक पार्टी में शामिल हों। और हम इस सभा से अनुरोध करते हैं कि वह इस बात पर विचार करे कि हम लेनिन के पार्टी के सदस्य होने के योग्य हैं या नहीं।"

इस छोटे से वक्तव्य पर दो कालम भर कर हस्ताक्षर थे।

सिरोतेंको ने उन्हें पढ़ कर सुना दिया और हर नाम के बाद वह थोड़ी देर के लिए रुक जाता था ताकि श्रोताओं को वह नाम याद हो जाय।

"स्तानिस्लाव जिग्मन्दोविच पोलेनताव्स्की, इंजन ड्राइवर, छत्तीस साल की सर्विस।"

हॉल में समर्थन की ध्वनि गूंज गयी।

"आर्तेम आन्द्रीएविच कोर्चागिन, मेकेनिक, सत्रह साल की सर्विस।"

"जखार फिलिप्पोविच ब्रुजाक, इंजन ड्राइवर, इक्कीस साल की सर्विस।"

मंच पर बैठा हुआ वह आदमी जैसे-तैसे गठीले हाथों वाले और रेलवे मजदूरों की बिरादरी के पुराने तपे हुए लोगों के नाम पुकारता जाता था, वैसे-वैसे हॉल में शोर बढ़ता जाता था।

मगर फिर शांति छा गई जब पोलेनताव्स्की, जिसका नाम सूची में सबसे पहले था, आकर सभा के सामने खड़ा हुआ।

अपनी जिन्दगी की कहानी सुनाते समय उसके मन में जो उद्वेग था, उसको वह बुड्ढ़ा इंजन ड्राइवर छिपा नहीं सका।

"...मैं आपको क्या बतलाऊं साथियो? आप सभी जानते हैं कि उन दिनों में हम मजदूरों की जिन्दगी कैसी थी। मैंने जिन्दगी भर गुलाम की तरह मेहनत की, फिर भी बुढ़ापे में आकर मैं भिखमंगे का भिखमंगा ही रहा। जब

क्रांति आई तो मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि मैं अपने को गिरस्ती की परेशानियों के बोझ से दबा हुआ एक बुड्ढा आदमी समझता रहा और पार्टी के अन्दर नहीं आया। और गोकि मैंने कभी दुश्मन का साथ नहीं दिया, फिर भी खुद संघर्ष में मैंने कम ही भाग लिया। १९०५ में मैं वार्सा में मोटर के कारखाने में हड़ताल कमिटी का मेम्बर था और बोल्शेविकों के साथ था। तब मैं जवान था और मुझ में लड़ने की शक्ति थी। मगर अब उन बीती बातों को याद करने से क्या फायदा। इलिच के मरने से मेरे दिल पर भारी धक्का सा लगा है, हमने अपना दोस्त और साथी खो दिया है और आज यह आखिरी बार मैं अपने बुड्ढे होने की बात कह रहा हूं। मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि कैसे अपनी बात कहूं, क्योंकि मुझे कभी भाषण देना नहीं आया। मगर मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि मेरा रास्ता बोल्शेविकों का रास्ता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है।"

उस इंजन ड्राइवर ने अपने पके बालों वाले सर को झटका दिया और उसकी सफेद भवों के नीचे उसकी आंखें श्रोताओं को दृढ़ता से देखती रहीं जैसे उनके फैसले का इंतजार कर रही हों।

उस छोटे से पके बालों वाले आदमी की अर्जी के खिलाफ विरोध की एक भी आवाज नहीं उठी और सब लोगों ने वोट दिया। इस वोट में गैर-पार्टी लोगों को भी शरीक किया गया।

पोलेनताव्स्की जब सभापति मंडली की मेज से हटा, तो वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर था।

हर आदमी समझ रहा था कि कोई ऐतिहासिक बात हो रही है। अब उस इंजन ड्राइवर की जगह विशालकाय आर्तेम खड़ा था। उस मेकेनिक की समझ में नहीं आ रहा था कि अपने हाथों का क्या करे, लिहाजा वह बार-बार अपनी खूब बालों वाली फर की टोपी को तान रहा था। उसकी भेड़ की खाल की जाकट, जिसके सिरे एकदम घिस गए थे, खुली हुई थी। मगर उसकी भूरी फौजी वर्दी के गले तक पहुंचने वाले कालर में पीतल के दो बटन लगे हुए थे, जिससे उसकी आकृति बड़ी चुस्त-दुरुस्त नजर आ रही थी, जैसी छुट्टी के दिन अच्छे-अच्छे कपड़ों के पहनने पर नजर आती है। आर्तेम हॉल की ओर मुड़ा और उसे एक परिचित स्त्री के चेहरे की झलक मिली। यह राजगीर की लड़की गालिना थी जो अपनी दर्जिन साथियों के साथ वहां बैठी हुई थी। वह उसे सहानुभूतिपूर्ण मुस्कराहट की आंखों से देख रही थी और उस मुस्कराहट में आर्तेम ने समर्थन पाया, और और भी कुछ जिसे शब्दों में रख सकना उसके लिए संभव न था।

उसने सिरोतेंको को कहते सुना, "लोगों को अपने बारे में बतलाओ आर्तेम !"

मगर आर्तेम के लिए अपनी कहानी शुरू करना आसान न था। ऐसी बड़ी सभा में बोलने का वह आदी न था और उसने एकाएक महसूस किया कि जिंदगी ने जो कुछ उसके अंदर भर दिया था, उन सबको व्यक्त करना उसकी शक्ति के बाहर था। शब्दों के लिए वह अटक रहा था और अपनी घबराहट के कारण ही बोलने में उसे और भी मुश्किल हो रही थी। इसके पहले उसने कभी ऐसा नहीं महसूस किया था। उसको इस बात की तीक्ष्ण चेतना थी कि वह किसी बड़े परिवर्तन के मोड़ पर खड़ा है, कि वह एक ऐसा कदम उठाने जा रहा है जो उसकी कठोर, ऐंठी हुई, घुटी हुई जिंदगी में गरमाहट भर देगा और उसकी जिदगी फिर बेमानी न रह जायगी।

आर्तेम ने शुरू किया, "हम लोग चार आदमी थे।"

हॉल में शांति थी। छः सौ लोग उत्सुकता से इस टेढ़ी नाक वाले लम्बे मजदूर को सुन रहे थे, जिसकी आंखें घनी भवों के नीचे छिपी हुई थीं।

"मेरी मां अमीर लोगों के घरों में रसोई पकाया करती थी। मुझे अपने बाप की कुछ खास याद नहीं है, उसमें और मेरी मां में नहीं बनती थी। वह बहुत ज्यादा शराब पीता था। इसलिए मेरी मां को ही हम बच्चों की देखभाल करनी पड़ती थी। इतने लोगों के खाने का इंतजाम करना उसके लिए आसान न था। सबेरे से लेकर रात तक वह बैल की तरह काम में जुटी रहती थी और इसके लिए उसे महीने में चार रूबल और खाना मिलता था। मैं इतना खुशकिस्मत था कि मुझे दो साल स्कूल में पढ़ने का मौका मिला। उन्होंने मुझे पढ़ना-लिखना सिखाया। मगर मैं जब नौ साल का हुआ तो मेरी मां के सामने इसके अलावा कोई रास्ता न था कि मुझे ले जाकर एक कारखाने में भर्ती करा दे। तीन साल तक मैंने सिर्फ खाने पर काम किया... उस कारखाने का मालिक फेस्टर नाम का एक जर्मन था। पहले वह मुझे लेना न चाहता था, क्योंकि मैं बहुत छोटा था। मगर मैं बहुत तगड़ा था और फिर मेरी मां ने मेरी उम्र दो साल बढ़ा कर बतलाई थी। तीन साल तक मैंने उस जर्मन के लिए काम किया मगर कोई काम न सीख सका क्योंकि मुझे घर की सेवा-टहल के काम करने पड़ते थे और दौड़-दौड़ कर वोडका लानी पड़ती थी। मेरा मालिक बुरी तरह पीता था... वह मुझे कोयला और लोहा लाने के लिए भी भेजता!... मालकिन ने तो मुझे बिलकुल गुलाम ही बना लिया था: मुझे आलू छीलने पड़ते, बर्तन धोने पड़ते। अक्सर मार पड़ती और खामखाह, क्योंकि उनको मारने की आदत पड़ी हुई थी। अगर मैं अपनी मालकिन को खुश न कर सकता, तो वह कस कर मेरे मुंह पर थप्पड़ मारती और उसकी हालत यह थी कि अपने पति के पीने के कारण वह हमेशा गुस्से में भरी बैठी रहती थी। मैं उससे भाग कर सड़क पर पहुंच जाता, मगर कहां जाता, किससे

शिकायत करता ? मेरी मां चालीस मील दूर थी और फिर मुझे वह अपने पास रख भी तो नहीं सकती थी...और कारखाने में भी तो हालत कुछ बेहतर न थी। मालिक के भाई उसके इंचार्ज थे। बड़ा सूअर आदमी था वह। उसे मुझको तंग करने में मजा आता था। कभी वह मुझसे कहता, 'ए छोकरे, वह वाशर तो उठा ला,' और कोने में भट्ठी की तरफ इशारा करता। मैं दौड़ कर जाता और वाशर को उठा लेता और जोर से चीख पड़ता क्योंकि वह ताजा-ताजा भट्ठी से निकल कर पड़ा होता, और गोकि जमीन पर पड़ा हुआ वह काला नजर आता, मगर छूते ही आग लग जाती। और तब मैं दर्द से चीखता खड़ा होता और उसके पेट में हंसते-हंसते बल पड़ जाते। मैं यह तकलीफ बर्दाश्त न कर सका और भाग कर अपने घर मां के पास चला गया। मगर वह समझ नहीं पाती थी कि मेरा वह क्या बंदोबस्त करे, लिहाजा वह फिर मुझे एक जर्मन के यहां ले गई। मुझे याद है, वह पूरे रास्ते रोती गई। कहीं तीसरे साल जाकर उन्होंने मुझको कुछ-कुछ काम सिखलाना शुरू किया, मगर मार-पीट बदस्तूर चलती रही। मैं फिर भाग गया और इस बार स्तारोकोन्स्तान्तिनोव पहुंचा। वहां मुझे एक सॉसेज के कारखाने में काम मिल गया और मैंने डेढ़ साल डब्बे धोने के पीछे बरबाद किये। फिर हमारे मालिक ने जुए के पीछे कारखाने को तबाह कर दिया, चार महीने तक हमें एक कौड़ी भी न दी और गायब हो गया। इस तरह मैं उस खंदक में से निकला। तब मैंने जमेरिका की गाड़ी पकड़ी और वहां काम ढूंढ़ने निकला। संयोग से वहां पर मुझे एक रेलवे मजदूर मिला जिसे मुझ पर दया आई। जब मैंने उसको बतलाया कि मैं थोड़ा-बहुत मेकेनिक का काम जानता हूं, तो वह मुझको अपने मालिक के पास ले गया और बोला कि यह मेरा भतीजा है और मुझे काम देने की सिफारिश की। मेरा डील-डौल ऐसा था कि उन्होंने मुझको सत्रह साल का समझा और इस तरह मुझे एक मैकेनिक के मददगार का काम मिल गया। जहां तक मेरे मौजूदा काम का ताल्लुक है, मैं आठ साल से यहां काम कर रहा हूं। अपनी पिछली जिन्दगी के बारे में इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं कहना है। यहां की मेरी जिन्दगी के बारे में आप सब जानते ही हैं।"

आर्तेम ने अपनी टोपी से माथा पोंछा और एक लम्बी सांस ली। अभी तक उसने खास बात नहीं कही थी। और इसी को कहना सबसे कठिन काम था, मगर कहना तो था ही और कोई वह अनिवार्य सवाल पूछ बैठे, इसके पहले ही कहना था। लिहाजा अपनी घनी भवों में बल डालते हुए उसने अपनी कहानी को जारी रखा :

"आप सबको मुझसे यह सवाल पूछने का हक है कि मैं क्रांति के पहले दिनों में बोल्शेविक पार्टी में क्यों नहीं शरीक हुआ ? आप मुझसे यह सवाल

पूछ सकते हैं। मगर मैं इसका क्या जवाब दूं ? अभी मैं बुड्ढा तो हुआ नहीं, तब नहीं तो अब सही। मगर सवाल यह है कि अब तक मुझे यह रास्ता क्यों नहीं दिखाई दिया ? मैं सीधे-सीधे बात करूंगा, क्योंकि मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं। वह रास्ता हमें दिखाई नहीं दिया और यह हमारी ही गलती थी। हमें १९१८ में ही इस रास्ते को पकड़ना चाहिए था जब हमने जर्मनों के खिलाफ बगावत की थी। मल्लाह जुखराई ने हमसे बहुत बार यही बात कही। १९२० आकर ही मैंने पहली बार राइफिल उठाई। तूफान के खतम होने पर और श्वेत रूसियों को काले सागर में ढकेल कर हम लोग लौट आये। उसके बाद फिर परिवार, बच्चे...मैं घर-गृहस्थी में एकदम उलझ गया। मगर अब जबकि कामरेड लेनिन नहीं हैं और पार्टी ने हमको पुकारा है, तो मैंने पीछे मुड़कर अपनी जिन्दगी को देखा है और समझ रहा हूं कि उसमें किस चीज की कमी थी। अपने राज की हिफाजत करना ही काफी नहीं है, हमें लेनिन की जगह एक बड़े परिवार की तरह एकता की मजबूत डोर में बंध कर रहना है ताकि सोवियत राज फौलाद के पहाड़ की तरह मजबूती से खड़ा रहे और उसे कोई हिला न सके। हमको बोल्शेविक बनना ही है। यही हमारी पार्टी है, या मैं झूठ कहता हूं ?"

इन्हीं सीधे-सादे शब्दों से मगर गहरी ईमानदारी से मेकेनिक आर्तेम ने अपनी बात कही। और जब उसकी बात खतम हुई, तो जहां उसे थोड़ी-थोड़ी लाज भी लग रही थी कि वह कैसे यों धारा-प्रवाह बोलता गया, वहां उसे यह भी महसूस हुआ कि जैसे उसके कंधे पर से कोई भारी बोझ उतर गया और अच्छी तरह तनकर खड़े होते हुए वह आनेवाले सवालों का इंतजार करने लगा।

"कोई सवाल ?" सिरोतेंको की आवाज ने शांति को भंग किया।

उपस्थित लोगों में खलबली-सी मची, मगर किसी ने पहले सभापति की बात का जवाब नहीं दिया। तब एक फायरमैन, जो सीधे अपने इंजन से चला आ रहा था और कालिख की तरह काला हो रहा था, निश्चयात्मक स्वर में बोला :

"पूछने को क्या है ? हम उसे जानते नहीं क्या ? उसे पार्टी में ले लो और क्या !"

लुहार गिलियाका का चेहरा गर्मी और आवेश से लाल हो रहा था। उसने अपनी फटी हुई आवाज में चिल्ला कर कहा :

"यह बिलकुल ठीक ढंग का कामरेड है, कभी गद्दारी नहीं करेगा। तुम उस पर भरोसा कर सकते हो। वोट ले लो सिरोतेंको !"

हॉल के पिछले हिस्से में से, जहां कोमसोमोल बैठे हुए थे, और जो उस अंधेरे में दिखाई नहीं दे रहा था, कोई उठा और बोला :

"कामरेड कोर्चागिन बतलाएं कि उन्होंने क्यों किसानी जीवन अपनाया है और कैसे उसका मेल मजदूर मनोवृत्ति के साथ बिठाते हैं।"

हाल में नाराजगी की एक हलकी-सी भुनभुनाहट पैदा हुई और किसी ने एतराज करते हुए कहा :

"तुम ऐसे क्यों नहीं बोलते जिससे सीधे-सादे लोग भी तुम्हारी बात समझ सकें ? खूब वक्त चुना तुमने भी काबलियत बघारने के लिए...।"

मगर आर्तेम ने जवाब देना शुरू कर दिया था :

"यह बिलकुल ठीक बात उसने पूछी है, कामरेड। उसने बिलकुल ठीक कहा है कि मैंने किसानी जीवन अपना लिया है। मगर मैं कहना चाहता हूं कि मैंने अपने मजदूर विवेक के साथ विश्वासघात नहीं किया है। बहरहाल, आज से वह चीज खतम हो गई। मैं अपने परिवार को रेलवे यार्ड के और पास ले आ रहा हूं। यहां ज्यादा अच्छा रहेगा। वह मनहूस खेत बहुत दिन से मेरे गले में फंसता रहा है।"

एक बार फिर आर्तेम का दिल कांपा जब उसने अपने समर्थन में उठे हुए हाथों के उस जंगल को देखा, और सिर ऊंचा करके जब वह आकर अपनी सीट पर बैठा तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उड़ा जा रहा हो। अपने पीछे उसने सिरोतेंको को ऐलान करते सुना : "सर्वसम्मति से पास।"

मंच पर खड़ा होने वाला तीसरा आदमी पोलेनताव्स्की का पहले का मददगार जखार ब्रुजाक था। यह खामोश तबियत का बुड्ढा आदमी खुद बहुत दिनों से इंजन ड्राइवर था। उसने जब अपनी मेहनत की जिन्दगी का वर्णन खतम किया और कहानी को उस दिन तक ले आया, तो उसकी आवाज धीमी पड़ गयी और वह धीमे-धीमे बोलता रहा, पर इतने धीमे नहीं कि लोग उसकी बात सुन न सकें :

"मेरे बच्चों ने जो चीज शुरू की, उसको पूरा करना मेरा कर्तव्य है। उनको हरगिज यह बात पसन्द नहीं होती कि मैं अपने दर्द को लेकर एक कोने में मुंह छिपाये पड़ा रहूं। इस चीज के लिए उन्होंने जान नहीं दी। उनके मर जाने से जो कमी हो गयी है, अब तक मैंने उस कमी को पूरा करने की कोशिश नहीं की है। मगर हमारे नेता लेनिन की मृत्यु से मेरी आंखें खुल गयी हैं। मुझको अपने पिछले जमाने की जवाबदेही करने के लिए न कहो। आज से हमारी नयी जिन्दगी शुरू होती है।"

जखार के दिल में दर्द से भरी हुई यादें घुमड़ रही थीं, उसके चेहरे पर मानो बादल सा छा गया था, मगर उसका चेहरा कठोर था। लेकिन जब उसको पार्टी में लेने के समर्थन में हाथों का एक समुन्दर लहराया, तो उसकी आंखें चमकने लगीं और उसका पके बालों वाला सिर गर्व से तन गया।

नये लोगों को पार्टी में लेने की यह कार्रवाई बहुत रात गये तक चलती रही। सबसे अच्छे और ऐसे लोग ही लिए गये, जिन्हें सब लोग जानते थे और जिनके जीवन में कहीं कोई धब्बा न था।

लेनिन की मृत्यु ने लाखों मजदूरों को बोल्शेविक बनाया। नेता चला गया, मगर पार्टी बदस्तूर कायम रही, उसमें कहीं कोई कमजोरी नहीं आई। कोई दरख्त जिसकी विशाल जड़ें धरती में मजबूती के साथ गड़ी होती हैं, उसके सिरे को अगर काट भी दिया जाय, तब भी वह मरता नहीं।

पन्द्रह

होटल के कंसर्ट हॉल के दरवाजे पर दो आदमी खड़े थे। उनमें लम्बा वाला नाक के ऊपर ठहरा हुआ चश्मा लगाये था और उसकी बांह में एक लाल फीता बंधा था जिस पर लिखा था "कमांडेंट।"

रिता ने पूछा, "उक्रेन के डेलीगेशन की मीटिंग यहीं हो रही है?"

उस लम्बे आदमी ने सर्द शिष्टाचार के स्वर में जवाब दिया, "हां। आपको क्या काम है कामरेड?"

वह लम्बा आदमी रास्ते को रोक कर खड़ा हो गया और रिता को ऊपर से लेकर नीचे तक देखने लगा।

"आपके पास डेलीगेट कार्ड है?"

रिता ने अपना कार्ड पेश कर दिया जिस पर सुनहले अक्षरों में लिखा था: "केन्द्रीय समिति की सदस्य।" उसको देखते ही उस आदमी का बर्ताव फौरन बहुत नम्र और मीठा हो गया।

"अन्दर चलिए कामरेड, आपको उधर बाईं तरफ कुछ खाली सीटें मिल जायेंगी।"

रिता गई और एक खाली सीट पर जाकर बैठ गई।

स्पष्ट ही मीटिंग खतम होने जा रही थी क्योंकि सभापति का अन्तिम भाषण चल रहा था। उसकी आवाज रिता को परिचित लगी।

"अखिल रूसी कांग्रेस की कौंसिल का निर्वाचन हो गया। कांग्रेस की कार्रवाई दो घंटे में शुरू होगी। इस बीच मैं आपकी इजाजत से डेलीगेटों की फेहरिस्त को एक बार फिर दुहरा देना चाहता हूं।"

यह अकिम था ! रिता ध्यानावस्थित होकर सुनती रही और वह फेहरिस्त को जल्दी-जल्दी पढ़ रहा था। हर डेलीगेट अपना नाम पुकारे जाने पर अपना लाल या सफेद पास लेकर हाथ उठाता था।

तभी रिता ने एक परिचित नाम सुना : पांक्रातोव।

एक हाथ तेजी से उठा। रिता ने मुड़कर उसको देखा मगर बीच में इतनी कतारें थीं कि वह उस मल्लाह का चेहरा न देख सकी। नामों का पढ़ा जाना चलता रहा और फिर रिता ने एक परिचित नाम सुना—ओकुनेव और उसके बाद एक और, जार्की।

डेलीगेटों के चेहरों को गौर से देखते हुए उसकी नजर जार्की पर पड़ी। वह उससे थोड़ी ही दूर पर बैठा हुआ था और उसका चेहरा आधा उसी की तरफ मुड़ा हुआ था। हां, यह वान्या ही था। वह उस चेहरे को लगभग भूल ही गई थी। उसको देखे कई बरस भी तो बीत गये थे।

नाम पुकारे जाते रहे। और तब अकिम ने एक नाम पढ़ा जिसे सुन कर रिता जोर से चौंक पड़ी :

"कोर्चागिन।"

दूर पर सामने की कतार में एक हाथ उठा और गिरा और अजीब बात थी कि रिता उस्तिनोविच के मन में उस आदमी के चेहरे को देखने की दारुण चाह हुई जिसका नाम वही था जो उसके बिछुड़े हुए साथी का था। वह उस जगह से अपनी आंख अलग न कर सकी, जहां से वह हाथ उठा था। मगर पीछे से सामने की कतार में बैठे हुए सब लोगों के सिर एक-जैसे नजर आते थे। रिता उठ खड़ी हुई और बीच के रास्ते से सामने वाली कतारों की तरफ बढ़ी। उसी वक्त अकिम ने नाम पढ़ना खतम किया। लोगों ने जोर से अपनी कुर्सियां पीछे खिसकायीं और हॉल आवाजों की भुनभुनाहट और नौजवानों की हंसी से भर उठा। इस शोर में अपनी बात लोगों के कानों तक पहुंचाने के लिए अकिम ने चिल्ला कर कहा :

"बोलशोय थियेटर...सात बजे। देरी न हो !"

हॉल से निकलने के अकेले दरवाजे पर डेलीगेटों की भीड़ लग गई। रिता ने देखा कि इस भीड़ में वह अपने किसी भी पुराने दोस्त को कभी न ढूंढ़ सकेगी। अकिम के जाने के पहले उसी को पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए, दूसरों को ढूंढ़ने में उसी से मदद मिलेगी। तभी कुछ डेलीगेट दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए उसके पास से गुजरे और उसने किसी को कहते सुना :

"अच्छा कोर्चागिन, अब हम लोगों को भी चलना चाहिए।"

और एक आवाज ने, जो इतनी परिचित थी और हमेशा याद रहने वाली, जवाब दिया :

"हां, चलो।"

रिता झट से मुड़ी। उसके सामने एक लम्बा, दबे रंग का नौजवान खाकी वर्दी और नीली बिजिस पहने खड़ा था। उसकी वर्दी में एक पतली सी काके-शियन पेटी लगी हुई थी।

रिता ने आंख फाड़ कर उसको देखा। फिर उसने उसकी बांहों को अपने गिर्द महसूस किया और उसकी कांपती हुई आवाज को धीरे से कहते सुना : "रिता," और वह जान गई कि यह पावेल कोर्चागिन ही था।

"तो अभी तुम जिंदा हो ?"

इन शब्दों से पावेल की समझ में सारी बात आ गई। मतलब कि रिता को यह नहीं मालूम हुआ था कि उसकी मौत की खबर गलत थी।

हॉल बड़ी देर का खाली हो चुका था और त्वेस्कार्या का शोर-शरापा खुली हुई खिड़की में से अन्दर आ रहा था। घड़ी ने छः बजाया। मगर उन दोनों को ऐसा लग रहा था कि जैसे अभी क्षण भर पहले मिले हों। मगर घड़ी की आवाज सुन कर उनको बोलशोय थियेटर का खयाल आया। खूब चौड़ी सीढ़ी से उतर कर रिता ने एक बार और पावेल को गौर से देखा। अब वह उससे काफी ऊंचा हो गया था और ज्यादा परिपक्व और आत्मसंयमी दीख पड़ता था। इसके अलावा पावेल में कुछ भी नहीं बदला था और वह वही पुराना पावेल था।

रिता ने कहा, "मुझे देखो कि मैंने तुमसे यह भी नहीं पूछा कि कहां काम कर रहे हो ?"

पावेल ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मैं कोमसोमोल की एरिया कमिटी का मंत्री हूं, दुबावा के शब्दों में कलम-घिस्सू !"

"तुम उससे मिले हो ?"

"हां, और उस मुलाकात की मेरी याद बहुत कड़वी है।"

वे सड़क पर निकल आये। मोटरें जूं-जूं करती भागी जा रही थीं और शोर करती भीड़ पक्के फुटपाथों पर जमा थी। थियेटर के रास्ते में उनमें आपस में कोई बात नहीं हुई, एक ही से विचार दोनों के दिमागों में भरे हुए थे। उन्होंने जाकर देखा कि थियेटर बहुत से लोगों के एक तूफानी समुंदर से घिरा हुआ है, जिसकी लहरें थियेटर की इमारत के पत्थरों से आ-आ कर टकरा रही हैं ताकि दरवाजों पर पहरा देते हुए लाल सैनिकों के घेरे को तोड़ कर अंदर घुस जायें। मगर संतरी सिर्फ डेलीगेटों को अंदर आने दे रहे थे और वे अपने पास शान से दिखला कर अंदर चले आते थे।

यह कोमसोमोल का समुंदर था जो थियेटर को घेरे हुए था, नौजवानों का एक समुंदर जिन्हें कांग्रेस के उद्घाटन-समारोह का टिकट नहीं मिल पाया

था मगर जो किसी भी कीमत पर अंदर घुसने पर तुले हुए थे। उनमें से कुछ नौजवान जो ज्यादा फुर्तीले थे, डेलीगेटों की टोली में पहुंच गये थे और कागज का कोई लाल टुकड़ा दिखला कर दरवाजे तक पहुंचने में कामयाब हुए थे।

कुछ थोड़े से वे लोग दरवाजे के अंदर घुसने में भी कामयाब हुए थे। मगर अंदर पहुंच कर उन्हें ड्यूटी पर तैनात केंद्रीय समिति के आदमी या कमांडेंट से डांट खानी पड़ती थी जो अतिथियों और डेलीगेटों को उनकी नियुक्त जगहें दिखला रहे थे। और फिर उन्हें बाहर निकाल दिया जाता था जिससे उन तमाम लोगों को, जिनके पास टिकट नहीं थे, अपार संतोष होता था।

जितने लोग उपस्थित होना चाह रहे थे, उनके दसांश लोगों के लिए भी थियेटर में जगह नहीं थी।

रिता और पावेल बड़ी मुश्किल से हॉल के दरवाजे तक पहुंचे। डेलीगेट लोग आते रहे, कुछ लोग ट्राम गाड़ी से आये, कुछ लोग मोटर से आये। वे सब दरवाजे पर इकट्ठा हो गये थे और लाल सैनिक, जो खुद भी कोमसोमोल थे, दीवार से चिपक कर खड़े थे। उसी वक्त दरवाजे के पास भीड़ में से एक शोर उठा :

"बाउमान इंस्टीच्यूट, यह चला !"

"चलो दोस्तो, हमारी जीत हो रही है !"

"हुर्रा !"

पावेल और रिता के साथ ही हॉल में तेज आंखों वाला एक लड़का घुसा, जो कोमसोमोल का बैज लगाये हुए था और कमांडेंट की आंख बचा कर थियेटर के बाहर वाले बड़े कमरे की तरफ सीधे लपका। क्षण भर में वह भीड़ में खो गया।

रिता ने पीछे की कतार में एक कोने की दो सीटों की तरफ इशारा करते हुए कहा, "आओ यहां बैठें।"

बैठने पर रिता ने कहा, "मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहती हूं। इसका ताल्लुक गुजरे हुए जमाने से है, मगर मुझे यकीन है कि तुम जवाब देने से इनकार नहीं करोगे। बतलाओ तुमने क्यों उस वक्त हम लोगों का संग-संग पढ़ना छोड़ दिया और हमारी दोस्ती तोड़ दी ?"

और गोकि पावेल बड़ी देर से इस सवाल का इंतजार कर रहा था, जब से रिता मिली थी तभी से, फिर भी इस सवाल से उसे परेशानी हुई। उनकी आंखें मिलीं और पावेल ने देख लिया कि रिता असली कारण जानती है।

"मेरा खयाल है कि तुम खुद अपने सवाल का जवाब जानती हो रिता। यह चीज तीन बरस पहले हुई थी और अब मैं सिर्फ यह कह सकता हूं कि उस

बात के लिए पावका की निन्दा करूं । सच बात यह है कि कोर्चागिन ने अपनी जिन्दगी में बहुत-सी छोटी-बड़ी भूलें की हैं। वह भी उन्हीं में से एक है।"

रिता मुस्कराई ।

"भूमिका तो बहुत अच्छी है। मगर अब जवाब दो !"

पावेल ने धीमी आवाज में शुरू किया, "इसमें दोष अकेले मेरा न था। इसमें गैड-फ्लाई का भी दोष था, उसके क्रांतिकारी रोमांस का। उन दिनों मुझ पर ऐसी किताबों का बड़ा गहरा असर था, जिनमें तपे हुए साहसी क्रांतिकारियों का सजीव चित्रण होता था, ऐसे लोगों का जिन्होंने अपने पवित्र लक्ष्य के लिए अपने को न्यौछावर कर दिया। ऐसे लोगों का मुझ पर बड़ा गहरा असर पड़ता था और मैं भी उन्हीं की तरह बनना चाहता था। तुम्हारे प्रति मेरे मन के जो भाव थे, उन पर मैंने उस गैड-फ्लाई नाम की किताब का असर पड़ने दिया। अब वह बात बड़ी बेवकूफी की मालूम होती है और मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं बतला सकूं कि मुझे इस चीज के लिए कितना खेद है।"

"तो तुमने उस किताब के बारे में अपनी राय बदल दी है ?"

"नहीं रिता, बुनियादी तौर पर नहीं, लेकिन हां, इतना मैंने जरूर किया है कि अपनी इच्छाशक्ति की बार-बार परीक्षा लेने की कष्टदायी प्रक्रिया और उससे पैदा होने वाली अनावश्यक ट्रेजेडी की व्यर्थता को समझ लिया है। मैं अब भी उस किताब की सबसे अहम बातों का हामी हूं, उसके साहस का, उसकी असीम सहन शक्ति का। मेरे नजदीक वह एक ऐसे आदमी का रूप है जो अपने दर्द को हर ऐरे-गैरे को दिखलाये बगैर मौन होकर अपनी पीड़ा को झेल सकता है। मैं उस तरह के क्रांतिकारी होने का समर्थक हूं जो पूरे समाज की जिन्दगी के सामने अपनी निजी जिन्दगी को कुछ नहीं समझता हो।"

"कितने अफसोस की बात है पावेल कि तीन बरस पहले तुमने मुझे यह बात न बतलाई," रिता ने एक ऐसी मुस्कराहट के साथ कहा जिससे पता चल रहा था कि उसके विचार कहीं दूर भटक रहे हैं।

"अफसोस की बात तुम इसीलिए कहती हो न रिता कि मैं तुम्हारे नजदीक कभी एक कामरेड से ज्यादा कुछ नहीं था ?"

"नहीं पावेल, तुम उससे ज्यादा बन सकते थे।"

"मगर वह तो अब भी हो सकता है।"

"नहीं कामरेड गैड-फ्लाई, अब बहुत देर हो गई।"

रिता ने मुस्कराते हुए अपनी बात साफ की, "बात यह है कि अब मेरी एक छोटी-सी लड़की है। मैं उसके पिता को बहुत प्यार करती हूं। हम तीनों में बड़ी दोस्ती है और अभी तो तीनों अविभाज्य हैं।"

उसकी उंगलियां पावेल के हाथ को छू रही थीं। पावेल के प्रति सहानुभूति से ही उसने ऐसा किया था, मगर फौरन ही उसने समझ लिया कि इस चीज की जरूरत नहीं है। हां, इन तीन सालों में पावेल परिपक्व हुआ था और शारीरिक रूप से ही नहीं, मानसिक रूप से भी। उसकी आंखों को देख कर रिता ने समझ लिया कि उसकी स्पष्टोक्ति से पावेल को कितनी चोट लगी है। मगर पावेल ने सिर्फ यह कहा :

"जो कुछ मैंने अभी-अभी खोया है, उसके मुकाबले में जो कुछ अभी मेरे पास बचा हुआ है, वह कहीं बड़ा है, कहीं ज्यादा।" और रिता ने समझा कि यह कोई खोखले शब्द नहीं हैं जो पावेल ने कहे हैं, यह तो सीधा-सादा सत्य है।

मंच के पास जाकर बैठने का समय हो गया था। वे उठे और उस कतार की तरफ बढ़े जिसमें उक्रेन के डेलीगेशन के लोग बैठे हुए थे। बैंड बजने लगा। हॉल में लगी हुई झंडियों पर लिखा हुआ था, "भविष्य हमारा है!" हजारों लोग उस हॉल की सीटों पर बैठे हुए थे। ये हजारों लोग मिल कर एक विराट इकाई बन गये थे जिनमें अशेष उत्साह लहरें मार रहा था। देश के औद्योगिक मजदूरों की बिरादरी की श्रेष्ठतम नई संतानें यहां पर उपस्थित थीं। हजारों आंखों में सामने के भारी पर्दे के इन जलते हुए अक्षरों की प्रतिच्छाया चमक रही थी : "भविष्य हमारा है!" और अब भी लोगों की भीड़ अन्दर चली आ रही थी। कुछ ही क्षण बाद वह मखमल का भारी पर्दा हट जायगा और फिर रूसी कम्युनिस्ट युवक संघ की केन्द्रीय समिति का मंत्री इस महान अवसर पर क्षण भर के लिए उद्विग्न होकर घोषणा करेगा :

"अब रूसी कम्युनिस्ट युवक संघ की छठी कांग्रेस की कारवाई शुरू होती है।"

इसके पहले कभी पावेल कोर्चागिन को क्रांति की महत्ता और शक्ति की ऐसी गहरी मार्मिक चेतना नहीं हुई थी और यह सोच कर उसका मन वर्णनातीत आनन्द और गर्व से भर उठा कि जिन्दगी उसे नौजवान बोल्शेविकों की विराट रैली में ले आई थी, उसको जो खुद भी एक सैनिक और निर्माता था।

भोर से लेकर बहुत रात तक उसका सारा समय कांग्रेस में चला जाता था। इसलिए कई दिन बाद, जब कांग्रेस खतम होने आ रही थी और उसके आखिरी इजलास हो रहे थे, पावेल की रिता से दुबारा मुलाकात हुई। वह उक्रेनियनों के एक दल के साथ थी।

रिता ने उसको बतलाया, "कांग्रेस खतम होते ही मैं कल चली जाऊंगी। मैं नहीं जानती कि मुझे फिर तुमसे बात करने का मौका मिलेगा या नहीं और इसलिए मैंने अपनी डायरी की दो पुरानी नोटबुकें और एक छोटी-सी चिट्ठी

तुम्हारे लिए तैयार की है। उनको पढ़ लेना और पढ़ कर डाक से मुझे वापस भेज देना। वे तुम्हें वह सब कुछ बतला देंगी जो मैं तुम्हें नहीं बतला सकी।"

पावेल ने रिता का हाथ दबाया और बड़ी देर तक उसको देखता रहा जैसे उसके चेहरे को दिमाग में पक्की तरह बिठाल रहा हो।

अगले रोज वायदे के अनुसार वे दोनों बड़े दरवाजे पर मिले और रिता ने उसको एक पैकेट और एक बंद लिफाफा पकड़ा दिया। वे अकेले नहीं थे, उनके आस-पास और लोग थे, इसलिए उन्हें अपने ऊपर संयम रखते हुए एक-दूसरे से विदा होना पड़ा। मगर तब भी पावेल ने रिता की कुछ-कुछ आर्द्र आंखों में एक गहरे ममत्व को पढ़ा जिसमें दर्द भी मिला हुआ था।

अगले रोज उनकी गाड़ियां उन्हें अलग-अलग दिशाओं में लेकर चली गईं। जिस गाड़ी में पावेल सफर कर रहा था, उसके कई डब्बों में उक्रेन के डेलीगेशन के लोग थे। उसके कम्पार्टमेंट में कीव के कुछ डेलीगेट थे। शाम को जब दूसरे मुसाफिर सो गये और पास की बर्थ पर ओकुनेव आराम से खर्राटे भरने लगा, तब पावेल ने लैम्प को पास सरकाया और चिट्ठी को खोला।

"पावेल, मेरे प्यारे पावेल! यह सब बातें मैं तुम्हें उस वक्त बतला सकती थी जब हम साथ थे। मगर इस तरह और अच्छा होगा। मैं सिर्फ एक बात की कामना करती हूं कि कांग्रेस के पहले हम लोगों ने जो बातें कीं, उनके घाव का कोई निशान तुम्हारी जिन्दगी पर न रहे। मैं जानती हूं कि तुम मजबूत आदमी हो और मैं यह भी जानती हूं कि तुमने जो कुछ कहा था, उसको अच्छी तरह समझ-बूझ कर ही कहा था। जीवन के प्रति मेरा कोई बंधा-टका दृष्टिकोण नहीं है। मैं समझती हूं कि अपने व्यक्तिगत सम्बंधों में, चाहे कभी-ही-कभी, अपवाद किये जा सकते हैं बशर्ते कि वे एक सच्चे और गहरे प्यार पर आधारित हों। मैं तुम्हारे लिए यह अपवाद कर सकती थी, मगर मैंने जवानी के उस आवेश को ठुकरा दिया। मैं समझती हूं कि ऐसा करने से हम दोनों में से किसी को सच्चा सुख नहीं मिलेगा। मगर फिर भी मैं यह कहूंगी पावेल, कि तुम्हें अपने साथ इतना कठोर न होना चाहिए। हमारी जिन्दगी में केवल संघर्ष ही नहीं है, उसमें उस सुख के लिए भी जगह है जो सच्चे प्यार से मिलता है।

"जहां तक तुम्हारे जीवन के मूल अभिप्राय, उसके मर्म की बात है, मुझे उसके बारे में किसी तरह की कोई शंका नहीं है। मैं अपने हृदय के समस्त प्यार से तुम्हारे हाथ को अपने हाथ में लेती हूं।

—"रिता"

पावेल ने अपने विचार में डूबे-डूबे उस चिट्ठी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उसने खिड़की में से हाथ निकाला और हवा उसके हाथ से कागज के उन टुकड़ों को उड़ा ले गई।

सवेरा होते-होते उसने रिता की डायरी की दोनों नोटबुकें पढ़ ली थी और उन्हें लपेट और बांध कर डाक में छोड़ने के लिए तैयार कर दिया था। ओकुनेव, पांक्रातोव और दूसरे कुछ डेलीगेटों के साथ वह खारकोव में गाड़ी से उतर पड़ा। ओकुनेव तालिया को ले आने के लिए कीव जा रहा था। तालिया वहां पर आना के साथ ठहरी हुई थी। पांक्रातोव उक्रेन की कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति का सदस्य चुना गया था। उसको भी कीव में काम था। पावेल ने उनके साथ कीव जाने और वहां जाकर दुबावा और आना से मिलने का फैसला किया।

कीव स्टेशन के डाकघर में रिता के पार्सल को छोड़ कर वह बाहर आया तो उसने देखा कि बाकी लोग जा चुके थे, इसलिए वह अकेला ही चल पड़ा। ट्राम आना और दुबावा के घर के सामने रुकी। पावेल सीढ़ी चढ़ कर दूसरी मंजिल पर पहुंचा और बाईं तरफ आना के कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं मिला। अभी तो काम पर निकल जाने का समय नहीं हुआ। "जरूर सो रही होगी," उसने सोचा। पास के कमरे का दरवाजा खुला और आंखों में नींद भरे दुबावा बाहर निकला। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था और उसकी आंख के नीचे नीले हल्के धब्बे थे। उसके शरीर से प्याज की तेज गंध आ रही थी। और पावेल की तेज नाक को शराब की भी बदबू मिली। आधे खुले हुए दरवाजे में से पावेल ने बिस्तर पर लेटी हुई किसी औरत की मांसल जांघों और कंधों की झलक पाई।

दुबावा ने पावेल को उधर देखते हुए पाकर पैर से धक्का देकर दरवाजे को बंद कर दिया।

पावेल की आंखों को बचाते हुए उसने फटी हुई आवाज में पूछा, "तुम शायद कामरेड बोहॉर्ट से मिलने आये हो? अब वह यहां नहीं रहती। तुमको यह बात नहीं मालूम थी क्या?"

कोर्चागिन का चेहरा कठोर हो गया था। उसने दुबावा पर अपनी पैनी दृष्टि गड़ाई।

"नहीं, मुझे नहीं मालूम था। कहां चली गई?"

अचानक दुबावा के दिमाग का पारा गर्म हो गया।

उसने चिल्ला कर कहा, "मैं क्या जानूं!" उसने डकार ली और दबे हुए द्वेष के स्वर में कहा: "उसे ढाढ़स देने आये हो, है न? तुम ठीक मौके से आये हो, जो जगह खाली हुई है, उसको भर सकोगे। अब तुम्हारा मौका

है। फिक्र न करो, वह इनकार न करेगी। वह मुझे बहुत बार बतला चुकी है कि तुमको वह कितना चाहती है। जाओ जाओ, लोहा जब गरम हो, तभी उस पर घन की चोट मारनी चाहिए। ठीक अर्थों में यही शरीर और आत्मा का मिलन होगा।"

पावेल ने महसूस किया कि उसके चेहरे पर खून उतरा आ रहा है। उसने बड़ी मुश्किल से अपने को वश में किया और मद्धिम आवाज में कहा :

"अपनी यह तुम क्या गत बना रहे हो, मितियाई! मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि तुम्हारा ऐसा पतन होगा। एक समय ऐसा भी था जब तुम खासे अच्छे आदमी थे। तुम क्यों अपने-आपको बर्बाद कर रहे हो?"

दुबावा दीवार के सहारे टिक गया। स्पष्ट ही सीमेंट का फर्श उसके नंगे पैरों को बहुत ठंडा लग रहा था क्योंकि वह कांप रहा था।

दरवाजा खुला और एक औरत का चेहरा दिखाई दिया। उसकी आंखें सूजी हुई और गाल फूले हुए थे।

"अंदर आ जाओ प्यारे, बाहर खड़े क्या कर रहे हो?"

उसके और कुछ कहने के पहले दुबावा ने दरवाजा झटके से बंद कर दिया और टिक कर खड़ा हो गया।

"अच्छी शुरुआत है," पावेल ने कहा, "जरा देखो कैसे लोगों की संगत तुम कर रहे हो। इस चीज का अंत कहां होगा?"

मगर दुबावा अब और कुछ सुनने को तैयार न था।

उसने चीखते हुए कहा, "अब क्या तुम मुझे यह भी बतलाओगे कि मैं किसके साथ सोऊं और किसके साथ न सोऊं? बहुत हो चुका, अब मुझे तुम्हारे और उपदेश की जरूरत नहीं है। जहां से आये हो, वहीं लौट जाओ! भागते हुए जाओ और सबसे जाकर कह दो कि दुबावा शराब पीने लगा है और बदचलन औरतों के साथ सोता है।"

पावेल उसकी ओर बढ़ा और अपने मन के आवेग को दबाते हुए बोला :

"मितियाई, उस औरत को भगा दो। मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूं, आखिरी बार...।"

दुबावा का चेहरा काला पड़ गया। वह मुड़ा और बिना एक शब्द बोले अपने कमरे में वापस चला गया।

"सुअर का बच्चा!" पावेल ने कहा और धीरे-धीरे सीढ़ी से नीचे उतरने लगा।

दो साल गुजर गये। समय की निर्बाध गति से दिन और महीने बीतते जा रहे थे, मगर जिंदगी में रंगों का मेला था जिससे उसकी दीख पड़ने वाली

एकरसता में सदा कोई नवीनता रहती थी और दो दिन एक से न रहते थे। सोलह करोड़ जनता का यह महान राष्ट्र, धनधान्य से पूर्ण अपने विशाल देश के भविष्य को अपने हाथों में लेने वाली संसार की पहली जनता, युद्ध से तहस-नहस आर्थिक व्यवस्था को ठीक करने के विराट काम में लगी हुई थी। देश की शक्ति बढ़ी, उसकी रगों में नया उत्साह बढ़ने लगा और अब कहीं भी ऐसे उजड़े कारखाने नहीं थे जिनसे धुआं न उठता हो और जिन्हें देख दिल को तकलीफ होती हो।

पावेल के लिए वे दो साल अनवरत काम के प्रवाह में तेजी से बीत गये। वह जिंदगी को आराम से बिताने वाला आदमी नहीं था कि नये दिन का स्वागत इतमीनान की एक जम्हाई से करता और दस का घंटा बजते ही सोने के लिए बिस्तर पर पहुंच जाता। उसकी जिंदगी की रफ्तार तेज थी और वह न खुद अपने को और न किसी दूसरे को एक भी क्षण बर्बाद करने देता था।

सोने के लिए उसने कम-से-कम वक्त दिया था। अक्सर उसकी खिड़की की रोशनी बहुत रात गये तक जलती रहती और कमरे के भीतर लोग एक मेज के इर्द-गिर्द बैठे हुए पढ़ाई में मशगूल नजर आते। इन दो सालों में उन्होंने "कैपीटल" के तीसरे खंड का गहरा अध्ययन कर लिया था और पूंजीवादी शोषण की सूक्ष्म कार्य-प्रणाली का चित्र अब उनके सामने बिलकुल स्पष्ट हो गया था।

जिस इलाके में इन दिनों कोर्चागिन काम करता था, उसी में राजवालिखिन भी आ गया था। उसको सूबा कमिटी ने इस सिफारिश के साथ वहां भेजा था कि उसे देहात के किसी कोमसोमोल संगठन का मंत्री बना दिया जाय। राजवालिखिन जब आया तब पावेल कहीं बाहर गया हुआ था और उसकी अनुपस्थिति में ब्यूरो ने राजवालिखिन को एक देहात में भेज दिया। लौटने पर पावेल को यह खबर मिली और उसे सुन कर वह कुछ नहीं बोला।

महीने भर बाद पावेल एक रोज अचानक राजवालिखिन के देहात में पहुंच गया। वहां ज्यादा कुछ देखने को तो नहीं मिला, मगर जो कुछ मिला, वह काफी निन्दनीय था। नया मंत्री शराब पीता था, उसने अपने इर्द-गिर्द खुशामदी लोगों को जमा कर लिया था और ईमानदार सच्चे सदस्यों की आगे बढ़ कर काम करने की प्रवृत्ति को दबा रहा था। पावेल ने यह चीज ब्यूरो के सामने रखी और जब मीटिंग ने यह प्रस्ताव रखा कि राजवालिखिन को कड़ाई से फटकार सुनाई जाय, तो पावेल ने उठ कर कहा :

"मैं प्रस्ताव करता हूं कि उसको संगठन से निकाल दिया जाय और यह एक अंतिम निश्चय हो जिसकी कहीं भी सुनवाई न हो।"

पावेल के इस प्रस्ताव से दूसरे लोग हैरत में आ गये। उनका ख्याल था कि यह सजा परिस्थिति को देखते हुए जरूरत से ज्यादा कड़ी है। मगर पावेल ने अपनी बात पर जोर दिया :

"उस बदमाश को निकाल देना ही चाहिए। उसे एक अच्छे इंसान बनने के सारे मौके थे, मगर वह कोमसोमोल के अन्दर आज भी एक परदेसी बना हुआ है।" और पावेल ने ब्यूरो को बेरेजदोव वाली घटना के बारे में बतलाया।

राजवालिखिन ने चिल्ला कर कहा, "मैं इसका प्रतिवाद करता हूं। कोर्चागिन व्यक्तिगत झगड़ों के आधार पर ऐसा कह रहा है। उसकी बात में कोई सार नहीं है। उससे कहिए कि अपने अभियोगों के समर्थन में तथ्य पेश करे, कागजात पेश करे। मान लीजिए मैं आपके पास आकर यह कहूं कि कोर्चागिन चोरी से माल लाता-ले-जाता है, तो क्या उसकी बिना पर आप कोर्चागिन को कोमसोमोल से निकाल देंगे? उसे लिखित प्रमाण देना चाहिए।"

कोर्चागिन ने जवाब दिया, "फिक्र न करो, मैं सारे जरूरी प्रमाण दूंगा।"

राजवालिखिन कमरे से बाहर चला गया। आध घंटे बाद पावेल ने ब्यूरो को अपनी बात समझा कर इस फैसले के लिए राजी कर लिया था कि राजवालिखिन को कोमसोमोल से निकाल दिया जाय, क्योंकि वह कोमसोमोल के भीतर एक विजातीय तत्व है।

गर्मी आई और उसके साथ गर्मी की छुट्टियां आईं। पावेल के साथ काम करने वाले एक के बाद दूसरे अपनी छुट्टियां बिताने चले गये। ये छुट्टियां पाने का उन्हें हक था क्योंकि उन्होंने अपने कठिन श्रम से उन्हें अर्जित किया था। जिन लोगों को स्वास्थ्य के खयाल से समुद्र-किनारे जाने की जरूरत थी, वे लोग वहां गये और पावेल ने उनको सेनेटोरियम में जगह और रुपये-पैसे दिलाने में उनकी मदद की। वे गये तो पीले और कुम्हलाये हुए थे, मगर छुट्टियों के खयाल से बड़े खुश थे। उनके काम का बोझ पावेल के कंधों पर आ गया और पावेल ने बिना एक शब्द कहे इस अतिरिक्त बोझ को उठा लिया। कुछ समय बाद वे जीवन और उत्साह से भर कर और धूप में सिक कर लौट आये और दूसरे लोग चले गये। गर्मी भर दफ्तर में काम करने वालों की कमी रही। मगर उससे जीवन की तेज गति में कोई कमी नहीं पड़ी और पावेल एक दिन का भी काम छोड़ने की स्थिति में नहीं था।

गर्मी बीत गई। पावेल को इस खयाल से ही डर मालूम हो रहा था कि अब पतझड़ और उसके बाद जाड़ा आयेगा क्योंकि इन ऋतुओं में उसे बहुत शारीरिक यातना होती थी।

उस साल उसने विशेष उत्सुकता से गर्मी के आने की प्रतीक्षा की थी। क्योंकि चाहे उसे अपने तई भी यह बात मानने में कितनी ही तकलीफ क्यों न होती हो, यह बात सही थी कि वह साल-ब-साल अपनी ताकत को कम होते महसूस कर रहा था। उसके सामने सिर्फ दो रास्ते थे : या तो वह इस बात को मंजूर कर ले कि उतनी कड़ी मेहनत उसके लिए मुमकिन न थी और अपनी असमर्थता की घोषणा कर दे या जब तक दम-में-दम है, तब तक अपनी चौकी पर मुस्तैदी से जमा रहे। उसने यह बाद वाला रास्ता ही अख्तियार किया।

एक रोज पार्टी की एरिया कमिटी की ब्यूरो मीटिंग में डाक्टर बार्तेलिक उसके पास आकर बैठ गये। वह पार्टी के एक पुराने अंडरग्राउंड कार्यकर्ता थे जो इन दिनों पब्लिक हेल्थ के इंचार्ज थे।

"तुम काफी कमजोर नजर आ रहे हो, कोर्चागिन ! तुम्हारी सेहत कैसी है ? मेडिकल बोर्ड ने तुम्हारी जांच की है ? नहीं ? मेरा भी यही खयाल था। मगर दोस्त मैं समझता हूं कि तुम्हें पूरी ओवरहॉलिंग की जरूरत है। बृहस्पति की शाम को चले आना, हम लोग तुमको देख लेंगे।"

पावेल नहीं गया। वह बहुत व्यस्त था। मगर बार्तेलिक उसे नहीं भूले और कुछ दिन बाद आकर पावेल को जांच के लिए अपने साथ मेडिकल बोर्ड में ले गये। वहां वे न्यूरोपैथालॉजिस्ट की हैसियत से काम करते थे। मेडिकल बोर्ड ने पावेल की जांच करके लिखा : "पावेल कोर्चागिन को फौरन छुट्टी दी जानी चाहिए ताकि वह क्रीमिया जाकर रह सके और अपना इलाज काफी दिनों तक करा सके। उसके बाद उसका बाकायदा इलाज होना चाहिए। अगर यह नहीं किया गया तो परिणाम भयंकर हो सकता है।"

मेडिकल बोर्ड की सिफारिश के साथ लैटिन जबान में जिन तमाम बीमारियों की लम्बी फेहरिश्त थी, उनको देख पावेल की समझ में सिर्फ इतनी बात आई कि खास बीमारी उसकी टांगों में नहीं, बल्कि उसकी केन्द्रीय स्नायु व्यवस्था में है जो काफी खराब हो गयी है।

बार्तेलिक ने बोर्ड का फैसला ब्यूरो के सामने रखा और उनके इस प्रस्ताव का किसी ने विरोध नहीं किया कि कोर्चागिन को फौरन काम से छुट्टी दे दी जाय। मगर खुद कोर्चागिन ने जरूर यह बात कही कि उसकी छुट्टी तब तक स्थगित रखी जाय जब तक कि संगठन विभाग का प्रधान स्वितनेव लौट नहीं आता। वह कमिटी को नेतृत्वहीन नहीं छोड़ना चाहता था। ब्यूरो ने उसकी बात मान ली गोकि बार्तेलिक ने इस देरी पर आपत्ति की।

और इस तरह अब तीन हफ्ते बाद पावेल छुट्टी पर चला जायेगा जो कि उसकी जिन्दगी की पहली छुट्टी थी। योपेतोरिया के सेनेटोरियम में उसके लिए

जगह रिजर्व कर दी गयी थी और इस आशय का एक कागज उसकी मेज की दराज में पड़ा हुआ था।

इस बीच पावेल ने और भी तेजी से काम करना शुरू किया। उसने एरिया कोमसोमोल के सभी सदस्यों की एक मीटिंग की और अपने साथ बेदर्द होते हुए जी जान से इस बात की कोशिश की कि सभी बिखरे हुए सूत्रों को बटोर ले ताकि वह शान्ति से जा सके।

और उसके जाने के ठीक पहले, जब कि उसे समुद्र की पहली झलक मिलने वाली थी, एक बड़ी घृणित बात हुई जिस पर यों शायद वह विश्वास भी न करता।

उस दिन काम के बाद पावेल पार्टी के प्रचार आन्दोलन विभाग की एक मीटिंग में गया हुआ था। जब वह पहुंचा तब कमरे में कोई नहीं था और इसलिए वह दूसरे लोगों के आने के इंतजार में किताबों की आलमारी के पीछे खुली हुई खिड़की पर बैठा हुआ था। थोड़ी ही देर बाद कई लोग अन्दर आ गये। किताब की आलमारी के पीछे से वह उन्हें देख तो न सकता था, मगर एक आवाज पहचानी-सी मालूम हुई। यह फाइलो की आवाज थी। फाइलो एरिया के अर्थ-विभाग का इंचार्ज था, लम्बा, खूबसूरत, फौजी चाल-ढाल। शराब पीने और औरतों के पीछे भागने के लिए वह बदनाम था।

किसी जमाने में फाइलो छापेमार रहा था और अब भी वह डींग हांकने का कोई मौका हाथ से जाने न देता था और बहुत हंस-हंस कर बतलाया करता था कि कैसे उसने माखनो डाकू के दर्जनों लोगों के सिर उड़ा दिये। पावेल को इस आदमी से सख्त नफरत थी। एक रोज एक कोमसोमोल लड़की पावेल के पास रोती हुई आई और उसने बतलाया कि फाइलो ने उसको शादी करने का वचन दिया था, मगर एक हफ्ते तक उसे अपने पास रख कर उसे छोड़ कर चला गया और अब मुलाकात होने पर साधारण नमस्कार भी नहीं करता। जब यह मामला कंट्रोल कमीशन के सामने आया तो फाइलो साफ बच कर निकल गया क्योंकि वह लड़की कोई प्रमाण न दे सकी। मगर पावेल को उसकी बात का बिश्वास हो गया था। अब वह उन लोगों की बात सुन रहा था। वे लोग आपस में खुल कर बातें कर रहे थे और उन्हें पावेल की उपस्थिति का ज्ञान नहीं था।

"कहो फाइलो, क्या हाल-चाल है? इधर तुमने कौन से नये गुल खिलाये?"

यह ग्रिबोव था, फाइलो का लंगोटिया यार। किसी कारण से ग्रिबोव को अच्छा प्रचारक समझा जाता था गोकि वह बिलकुल अनपढ़, संकुचित दिमाग का और बेवकूफ आदमी था। मगर वह सब जो भी हो, ग्रिबोव को इस बात का

गर्व था कि उसे प्रचार कार्यकर्त्ता कहा जाता है और वह हर मौके पर लोगों को इस बात की याद दिला ही देता।

"मुझे बधाई दो दोस्त। कल मैंने एक नयी फतह की है—कोरोतायेवा की। तुम कहते थे कि कोई नतीजा न निकलेगा। यही तो तुम्हारी गलती है यार। जब मैं किसी औरत का पीछा करूं तो अच्छी तरह समझ लिया करो कि आगे-पीछे मैं उसे जरूर हथिया लूंगा," फाइलो ने घमंड से कहा और उसके साथ एक अश्लील बात कही।

पावेल के अन्दर जब कोई गहरी खलबली मचती तो उसका शरीर बुरी तरह कांपने लगता। इस वक्त भी उसका वही हाल हो रहा था। कोरोतायेवा महिलाओं के काम की देखभाल करती थी और उसके साथ ही एरिया कमिटी में आई थी। पावेल जानता था कि कोरोतायेवा एक खुशदिल लगन वाली पार्टी कार्यकर्ता है जो उन औरतों के साथ सहानुभूति का बरताव करती है जो उसके पास मदद के लिए और सलाह-मशविरे के लिए आती हैं। पावेल यह भी जानता था कि कमिटी के दूसरे लोग उसको आदर की दृष्टि से देखते थे। पावेल जानता था कि उसकी शादी नहीं हुई है और उसे कोई शक नहीं रहा कि फाइलो उसी की बात कर रहा है।

"सुनाओ फाइलो यह कैसे हुआ! उस औरत के बारे में इस बात पर यकीन नहीं आता। लगता है तुम यों ही उड़ा रहे हो।"

"मैं उड़ा रहा हूं? तुमने मुझे समझा क्या है? मैंने इससे भी बड़े-बड़े मार्के सर किये हैं, यह छोकरी किस खेत की मूली है! सारी बात यह है कि तुमको काम करने का ढंग आना चाहिए। हर लड़की के पास पहुंचने का अलग ढंग होता है और वही मालूम हो जाय तो मामला फतह समझो। उनमें से कुछ होती हैं जो फौरन अपने-आपको दे डालती हैं। मगर ऐसी लड़कियां किसी काम की नहीं होतीं। कुछ होती हैं जिन्हें पटियाने में पूरा एक महीना लग जाता है। महत्व की बात यह है कि उनके मनोविज्ञान को समझ लेना चाहिए। कैसे उन पर हमला किया जाय, यही खास बात है। अरे यार, यह तो पूरा विज्ञान है, मगर मैं भी तो आखिर उसका एक पंडित हूं। सारा विज्ञान घोंके बैठा हूं। हो-हो-हो।"

फाइलो अपनी ही बात पर बेइन्तहा मगन हो रहा था। उसका श्रोता उसे कुरेद रहा था ताकि वह उसको और भी रसभरी तफ़सीलें सुनाये।

कोर्चागिन उठ खड़ा हुआ। उसने कस कर अपनी मुट्ठी बन्द कर ली। उसका दिल जोरों से धड़क रहा था।

"मैं जानता था कि साधारण चारे से कोरोतायेवा को पकड़ने की कोई उम्मीद न थी। मगर मैं इस शिकार को छोड़ना न चाहता था, खास कर इसलिए

कि मैंने ग्रिबोव से इसी चीज के लिए शराब की एक दर्जन बोतलों की शर्त बदी थी। इसलिए मैंने अन्दरूनी दांव-पेंच का इस्तेमाल किया। मैं उससे मिलने के लिए एक-दो बार गया, मगर मैंने देखा कि उस पर कोई खास असर नहीं पड़ रहा है। इसके अलावा एक मुसीबत यह भी तो है कि मेरे बारे में दुनिया भर की बातें कही जा रही हैं और उनमें से कुछ बातें उसके कानों में भी पहुंची ही होंगी...। संक्षेप में यह कि जब सीधा वार खाली गया, तो मैंने बगल से वार किया। हो-हो! बड़ा मजा आया उसमें! हां तो मैंने उसे अपनी करुण कहानी सुनाई कि कैसे मैं मोर्चे पर लड़ा, दुनिया भर में भटका और ठोकरें खायीं, मगर मुझे अपने मन की स्त्री न मिली और इसी तरह भटक रहा हूं, एक अकेला आदमी जिसे कोई प्यार करने वाला नहीं...और इसी तरह की बहुत सी बकवास। देखते हो न, मैं उसके मर्म की कमजोर जगह पर चोट कर रहा था। यह तो मुझे मानना ही चाहिए कि उसे फंसाने में काफी मुश्किल हुई। एक बार मैंने यह भी सोचा कि क्या रखा है इसमें, जाने भी दो साली को! मगर अब तो सिद्धान्त की बात आ गयी थी और इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं मामले को यों ही अधूरा नहीं छोड़ सकता। कहने का मतलब कि आखिरकार मैंने उसे फतह कर ही लिया और जानते हो? वह कुमारी निकली, अक्षतयोनि कुमारी! हा-हा! बड़ा मजा आया!"

और इसी तरह फाइलो अपनी उस घिनौनी कहानी को सुनाता रहा।

पावेल गुस्से से उबलता हुआ फाइलो के बगल में जा पहुंचा था।

उसने गरज कर कहा, "सुअर!"

"ओह, मैं सुअर हूं और तुम क्या हो जो चोरी-चोरी दूसरों की बातें सुनते हो?"

पावेल ने जरूर और भी कुछ कहा, क्योंकि फाइलो ने, जो होश में नहीं था, उसकी वर्दी को सामने से पकड़ लिया था।

"मेरा अपमान करने आये हो?" वह चीखा और पावेल पर घूंसा चलाया।

पावेल ने ओक की लकड़ी का बना हुआ एक भारी स्टूल उठा लिया और एक ही चोट में उसे ढेर कर दिया। फाइलो किस्मत का धनी था कि उस समय पावेल के पास अपना रिवाल्वर नहीं था नहीं तो वह मर ही गया होता।

मगर वह अजीब बेसिर-पैर का कांड हो ही गया। अतएव जिस दिन पावेल क्रीमिया के लिए रवाना होने वाला था, उस दिन वह पार्टी की अदालत के सामने खड़ा था।

पार्टी के सभी लोग कस्बे के थियेटर हॉल में इकट्ठा हो गये थे। इस घटना से सब लोगों के अन्दर बड़ी खलबली मच गयी थी और मामले की सुनवाई पार्टी की नैतिकता, उसके आचार-बिचार और व्यक्तिगत सम्बंधों की एक गंभीर बहस में तब्दील हो गयी। इस मामले में जो सिद्धान्त की बातें निहित थीं, उनकी बहस के लिए इस मामले ने सिगनल का काम किया और खुद यह घटना गौण हो गयी। फाइलो ने बहुत ही उद्धत ढंग से आचरण किया, बड़ी दुष्टता से मुस्कराया और बोला कि इस मामले को जनता की अदालत के सामने ले जायगा और कोर्चागिन को उसका सिर फोड़ने के जुर्म में कड़ी मशक्कत की सजा मिलेगी। उसने किसी भी सवाल का जवाब देने से साफ इन्कार कर दिया।

"तुम मुझे लेकर गप-शप का मसाला पाना चाहते हो? वह नहीं होने का। तुम मुझ पर चाहे जो भी अभियोग लगाओ, मगर सचाई यह है कि यहां की औरतें मुझसे खार खाये रहती हैं क्योंकि मैं उनको कुछ समझता ही नहीं। और तुम्हारा यह पूरा मामला तो बिल्कुल फिजूल की बकवास है। अगर यह १९१८ होता तो मैंने अपने ही तरीके से इस पागल कोर्चागिन से अपना झगड़ा सुलझा लिया होता। और अब आप मेरे बिना भी काम चला सकते हैं," यह कहते हुए, फाइलो हॉल से निकल गया।

तब चेयरमैन ने पावेल से घटना का विवरण देने के लिए कहा। पावेल ने काफी शांति से आरम्भ किया गोकि अपने को संयत रखने में उसे काफी कठिनाई हो रही थी।

"यह सारी घटना इसलिए हुई कि मैं अपने को काबू में नहीं रख सका। अगर वे दिन कब के विदा हो गये जब कि मैं अपनी अक्ल की बनिस्पत अपने हाथों से ज्यादा काम लिया करता था। इस बार जो चीज हुई है, वह एक आकस्मिक घटना है। मुझे याद भी नहीं कि मैंने कब और कैसे फाइलो को मार कर गिरा दिया। पिछले कई वर्षों में यह मेरी पहली 'छापेमार' कार्रवाई है जिसका मैं दोषी हूं और जिसकी मैं खुद भी निन्दा करता हूं, गोकि मैं समझता हूं कि फाइलो की हरकत हँसी के योग्य थी। फाइलो घृणित आदमी है। मैं कभी नहीं समझ सकता और मैं कभी इस बात का विश्वास नहीं करूंगा कि एक क्रांतिकारी, एक कम्युनिस्ट ऐसा बदमाश और जालिम जानवर भी हो सकता है। इस मामले ने सिर्फ एक अच्छी बात की है और वह यह कि इसने हमारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित कर दिया है कि हमारे सहयोगी कम्युनिस्ट कार्यकर्ता अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी में कैसा आचरण करते हैं।"

सदस्यों के एक विशाल बहुमत ने इस प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया कि फाइलो को पार्टी से निकाल दिया जाय। ग्रिबोव को झूठी गवाही देने के जुर्म

में कड़ी फटकार मिली और उसे चेतावनी दी गई कि अगर फिर उसने कोई जुर्म किया, तो उसे भी पार्टी से निकाल दिया जायगा। बाकी लोगों ने, जो उस दिन की बातचीत में शरीक थे, अपनी गलती मान ली और उन्हें डांट कर छोड़ दिया गया।

तब बार्तेलिक ने सभा को पावेल की स्नायविक स्थिति के बारे में बतलाया और सभा ने कड़े शब्दों में अपना विरोध व्यक्त किया जब इस मामले की छानबीन के लिए पार्टी की ओर से नियुक्त साथी ने प्रस्ताव रखा कि कोर्चागिन को भी चेतावनी दी जाय। उस साथी ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया और पावेल निर्दोष घोषित करके रिहा कर दिया गया।

कुछ रोज बाद पावेल खारकोव के लिए रवाना हो गया। पार्टी की एरिया कमिटी ने आखिरकार उसका यह आग्रह मान लिया था कि उसे अपने मौजूदा काम से छुट्टी देकर उक्रेन के कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के साथ लगा दिया जाय। अकिम भी केन्द्रीय समिति का एक मंत्री था। खारकोव पहुंचते ही पावेल उससे मिलने गया और उसे पूरी कहानी सुनाई।

अकिम ने पावेल के सर्टिफिकेट पर नजर डाली। उसमें लिखा था कि वह "पार्टी में असीम श्रद्धा रखता है," मगर साथ ही यह भी लिखा था: "कुल मिला कर वह सन्तुलित बुद्धि का कार्यकर्ता है, मगर कभी-कभी अपना आत्म-संयम खो बैठता है। इसका कारण उसकी स्नायविक बीमारी है।"

अकिम ने कहा, "यह बात लिख कर उन्होंने एक अच्छे टेस्टीमोनियल को खराब कर दिया पावेल। मगर कोई बात नहीं दोस्त, ऐसी चीजें मजबूत से मजबूत आदमियों के साथ भी होती हैं। दक्षिण जाओ और अपनी सेहत बनाओ और जब तुम लौट आओगे तब हम तुम्हारे काम के बारे में बातें करेंगे।"

अकिम ने दिल खोल कर बड़ी मुहब्बत से उससे हाथ मिलाया।

केन्द्रीय समिति का कम्युनार्ड सेनेटोरियम। गुलाब की झाड़ियों के बागीचे के बीचोबीच सफेद इमारतें जिन पर लताएं चढ़ी हुई हैं, और चमकते हुए फव्वारे और वहां छुट्टियां बिताने के लिए आये हुए लोग गर्मी के सफेद कपड़े और नहाने के चुस्त कपड़े पहने हुए। एक नौजवान डाक्टरनी ने उसका नाम रजिस्टर में दर्ज किया और वह कोने वाली इमारत के एक बड़े कमरे में पहुंच गया। हंस के पर जैसे सफेद तकिए और बिस्तर की चादर, चारों ओर अत्यधिक स्वच्छता और शांति, पूर्ण शांति, कहीं कोई शोर-शराबा नहीं।

वह नहा कर ताजा हुआ और कपड़े बदल जल्दी-जल्दी समुद्र किनारे चला गया।

उसके सामने समुद्र फैला हुआ था, शांत, अत्यंत सुन्दर, शानदार मानो पॉलिश किये हुए संगमरमर का नीला-काला विस्तार दूर क्षितिज पर फैला हुआ हो। बहुत दूर पर, जहां समुद्र आकाश से मिलता था, नीला-सा कुहासा छाया हुआ था और उसकी सतह पर सूरज की लाल-लाल चमक फैली हुई थी। सबेरे के उस कुहासे के बीच से एक पर्वत शृंखला की रूपरेखा धुंधली-धुंधली दिखाई दे रही थी। पावेल ने गहरी सांस लेकर ताजी समुद्री हवा को अपने फेफड़ों में भरा और उस नीले विस्तार की असीम शांति को निर्निमेष देखता रहा।

एक लहर धीरे-धीरे उसके पैरों तक आई और किनारे पर की सुनहरी बालू को छू गई।

सोलह

सेंट्रल पोलिक्लिनिक का बागीचा केन्द्रीय समिति के सेनेटोरियम के मैदान से लगा हुआ था; केन्द्रीय समिति के सेनेटोरियम के मरीज समुद्र-किनारे से घर लौटते हुए उस बागीचे में से होकर गुजरते थे क्योंकि उधर से आने से कम चलना पड़ता था। पावेल को एक बड़े से प्लेन के पेड़ की छाया में विश्राम करना बहुत अच्छा लगता था। यह पेड़ चूने के पत्थर की एक ऊंची दीवाल के बगल में उगा हुआ था। अपनी इस शांत जगह से वह बागीचे के रास्ते पर टहलते हुए लोगों को देख सकता था और शाम को बैण्ड का संगीत सुन सकता था; अपने उस कोने में बैठ कर, उस बड़े सेनेटोरियम के मस्त लोगों की भीड़ के धक्के खाये बिना वह संगीत सुन सकता था।

आज भी वह अपनी चुनी हुई जगह पर पहुंच गया था। धूप और समुद्र में नहाने के कारण उसे नींद सी मालूम हो रही थी और वह इतमीनान से आराम कुर्सी पर लेट गया और तन्द्रा में डूब गया। उसकी तौलिया और वह किताब, जो वह पढ़ रहा था, फुर्मानोव का विद्रोह, दोनों चीजें उसकी बगल में कुर्सी पर पड़ी हुई थीं। अभी सेनेटोरियम आने के अपने पहले दिनों में तो उसके स्नायुओं को कोई फायदा नहीं पहुंचा था और उसके सिर का दर्द अब भी बदस्तूर चल रहा था। सेनेटोरियम के डाक्टर अब तक उसकी बीमारी को समझ नहीं पा रहे थे और परेशान थे, मगर वे बीमारी की जड़ को पकड़ने की कोशिश जरूर कर रहे थे। बार-बार की डाक्टरी जांच से पावेल परेशान

था। उससे उसको थकान मालूम होती थी और वह अपने वार्ड की डाक्टर से बचने की हर मुमकिन कोशिश करता था। उसके वार्ड की डाक्टर एक खुश-दिल औरत थी; वह पार्टी मेम्बर थी और उसका अजीब-सा नाम था, येरूसा-लिम्चिक। अपने इस मरीज को खोज निकालने में और उसे इस बात के लिए राजी करने में कि वह कभी एक विशेषज्ञ और कभी दूसरे विशेषज्ञ के यहां चले, उसे बहुत कठिनाई होती थी।

पावेल उससे याचना के स्वर में कहता, "मैं तो इस चीज से तंग आ गया हूं। दिन में पांच बार मुझे वही कहानी दुहरानी पड़ती है और एक-से-एक बेहूदा सवालों का जवाब देना पड़ता है : क्या तुम्हारी दादी का दिमाग खराब था, क्या तुम्हारे परदादा को गठिया हुआ था? मुझे क्या मालूम कि उन्हें क्या हुआ था, क्या नहीं हुआ था? मैंने तो उन्हें देखा तक नहीं। हर डाक्टर मुझे बहलाने की कोशिश करता है कि मैं मान लूं कि मुझे [illegible]ाक या उससे भी कोई बुरी बीमारी हुई थी और ऐसे सवाल इतनी देर तक चलते रहते हैं कि मेरा जी होने लगता है कि उनके गंजे सिरों पर कस कर एक धौल जमा दूं। मुझे आराम करने का मौका दो, मुझे किसी और चीज की जरूरत नहीं, बस आराम की जरूरत है। अगर पूरे छः हफ्ते, जब तक कि मुझे यहां रहना है, इसी तरह मेरा रोग-निदान चलता रहा, तो मैं निश्चय ही समाज के लिए एक खतरा बन जाऊंगा।"

येरूसालिम्चिक हंसती और उसके साथ मजाक करती, मगर फिर कुछ मिनट बाद बड़ी नरमी से उसकी बांह पकड़ती और रास्ते भर बकबक करती हुई उसे सर्जन के पास ले जाती।

मगर आज कोई जांच नहीं होनी थी और खाने में अभी घंटे भर की देर थी। तभी अपनी तंद्रा की अवस्था में उसने पास आते कदमों की आहट सुनी। उसने आंखें नहीं खोलीं, "वे सोचेंगे कि मैं सो रहा हूं और चले जायंगे," उसने अपने मन में कहा। मगर यह कोरी दुराशा थी। उसने अपने पास की कुर्सी का चरमराना सुना और कोई उस पर बैठा। उसे इत्र की हलकी-सी खुशबू मिली जिससे उसने समझ लिया कि यह कोई औरत है। उसने आंखें खोलीं। पहली चीज जो उसने देखी वह एक चमचमाती हुई सफेद पोशाक थी। उसके साथ ही उसने नर्म चमड़े की स्लीपर पहने हुए पैर देखे, फिर लड़कों की तरह के कटे हुए बाल, दो बड़ी-बड़ी आंखें और सफेद दांतों की एक पंक्ति, वैसे दांत जो चूहे के दांतों जैसे तेज नजर आते थे। वह स्त्री उसे देख कर कुछ झेंपी और मुस्कराई।

"मेरे यहां रहने से आपके आराम में खलल तो नहीं पड़ रही है?"

पावेल ने कोई जवाब नहीं दिया। यह शिष्टाचार के खयाल से कोई अच्छी बात न थी, मगर अब भी पावेल को उम्मीद थी कि वह चली जायगी।

"यह क्या आपकी किताब है ?" वह "विद्रोह" के पन्ने पलट रही थी।

"जी हां, मेरी ही है।"

क्षण भर को शांति छा गई।

"कम्युनार्ड सेनेटोरियम में हैं न ?"

पावेल बेचैनी से हिला। यह कैसी औरत है कि खामखाह परेशान कर रही है ? वाह रे, यह तो खूब आराम हो रहा है। अभी देखना, वह मेरी बीमारी के बारे में सवाल पूछने लग जायगी। कोई चारा नहीं, मुझे यहां से जाना ही होगा।

उसने रुखाई से जवाब दिया, "नहीं।"

"मेरा तो खयाल है, मैंने आपको वहां देखा है।"

पावेल उठने ही वाला था कि उसे अपने पीछे किसी स्त्री की एक गहरी और अच्छी लगने वाली आवाज सुनाई दी।

"क्यों डोरा, तुम यहां क्या कर रही हो ?"

एक मोटी-ताजी, धूप से तपे हुए रंग की, सुनहरे बालों वाली लड़की समुद्र किनारे लेटने के कपड़े पहने हुए एक कुर्सी के छोर पर बैठ गई थी। उसने तेजी से कोर्चागिन पर निगाह डाली।

"मैंने तुमको कहीं देखा है, कामरेड ! तुम खारकोव के हो न ?"

"हां।"

"कहां काम करते हो ?"

पावेल ने इस बातचीत को खतम करने का फैसला किया।

उसने जवाब दिया, "कूड़े-करकट की सफाई के विभाग में।" उसके इस मजाक पर जो हंसी हुई, उससे पावेल चौंक पड़ा।

"तुम्हें कोई यह दोष नहीं दे सकता कामरेड कि तुम जरूरत से ज्यादा शिष्ट हो !"

इसी तरह उनकी दोस्ती शुरू हुई। बाद में मालूम हुआ कि डोरा रादकिना खारकोव की पार्टी की शहर कमिटी ब्यूरो की मेम्बर थी और बाद में जब दोनों में दोस्ती हो गई, तो वह अक्सर अपनी पहली मुलाकात की इस मजेदार घटना को लेकर पावेल को चिढ़ाया करती।

एक रोज तीसरे पहर थलासा सेनेटोरियम के मैदान की खुली जगह में संगीत का एक आयोजन हुआ और वहां पर पावेल की अचानक अपने पुराने दोस्त जार्की से मुलाकात हो गई। और अजीब बात यह थी कि एक नाच के सिलसिले में उनकी मुलाकात हुई।

सबसे पहले एक अच्छी, खूबसूरत, भरे जिस्म की स्त्री ने अपनी पतली, सुरीली और तेज आवाज में, वह दिलफरेब गाना "आह, हमारी वो रंग-रंगीली मद-भरी रातें !" बड़े मार्मिक स्वर में श्रोताओं को सुनाया। उसके बाद एक स्त्री और पुरुष कूद कर स्टेज पर आ गये। पुरुष एकदम नंगा था, बस उसके सिर पर एक लाल टॉप हैट थी और कूल्हों पर कुछ चमकदार सलमा-सितारे, बदन पर एक चमकदार सफेद कमीज का सामने का हिस्सा और गले में बो-टाई, और कुल मिला कर वह आदमी किसी हबशी की नकल मालूम हो रहा था। गुड़िये के-से चेहरे वाली उसकी संगिन ढेरों कपड़ों में लिपटी हुई थी। आराम कुर्सियों और खाटों पर सेनेटोरियम के मरीज बैठे थे और उनके पीछे मोटी-मोटी गर्दनों वाले नेपमेनों की भीड़ बेहद मगन होकर तरह-तरह की आवाजें कर रही थी और वह जोड़ा स्टेज पर फाक्स-ट्रॉट की ताल पर चक्कर लगा-लगा कर नाच रहा था। इससे ज्यादा घृणित दृश्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वह मोटा थुलथुल आदमी घामड़ की तरह टॉप हैट लगाये अपनी संगिन को कस कर अपने शरीर से चिपकाये ऐसी मुद्राओं में नाच रहा था जिसके अन्दर नंगे इशारे छिपे हुए थे। पावेल ने पीठ पीछे किसी मोटे थुलथुल आदमी की भारी सांस की एक गड़गड़ाहट सुनी। वह जाने के लिए मुड़ा ही था कि सामने बैठा हुआ कोई आदमी उठा और जोर से चिल्लाया :

"यह वेश्यालयों का तमाशा बन्द करो ! भाड़ में जाय !"

यह जार्की था।

पियानो बजाने वाले ने बजाना बन्द कर दिया और वायलिन एक पतली चीख की आवाज करके चुप हो गयी। सामने स्टेज पर नाचते हुए जोड़े ने नाच बन्द कर दिया जिसे देखकर नर-मादा कीड़ों की किलबिल का आभास मिलता था। पीछे की भीड़ ने मारपीट पर उतारू ढंग से शोर मचाना शुरू किया।

"कैसी बदतमीजी है, बीच में लेकर नाच को रोक दिया !"

"सारा योरप नाच रहा है, एक इन्हीं को...।"

"हद हो गयी बदतमीजी की !"

मगर सर्योजा जबानोव ने, जो चेरेपोवेत्स कोमसोमोल का मंत्री था और कम्युनार्ड सेनेटोरियम में रहता था, अपनी चार उंगलियां मुंह में डाली और जोर से सीटी बजाई। दूसरों ने भी उसका अनुकरण किया और देखते-देखते वे दोनों नाचने वाले स्टेज से ऐसे गायब हो गये जैसे हवा उन्हें उड़ा ले गयी हो।

नाचने वाली मंडली के खुशामदी सरदार ने, जो देखने में अर्दली मालूम होता था, ऐलान किया कि मंडली जा रही है।

"चलो गलाजत मिटी, पाप कटा!" एक लड़के ने, जो नहाने के कपड़े पहने हुए था, चिल्ला कर कहा और सब लोग उसकी बात सुन हंसने लगे।

पावेल सामने की कतार में पहुंचा और वहां जार्की से उसकी मुलाकात हुई। दोनों दोस्तों में बड़ी देर तक पावेल के कमरे में बातचीत होती रही। जार्की ने पावेल को बतलाया कि वह पार्टी की एक एरिया कमिटी के प्रचार—आन्दोलन विभाग में काम कर रहा है।

जार्की ने कहा, "तुम्हें पता है या नहीं कि मेरी शादी हो गयी? जल्दी ही मेरी बीवी को बच्चा होने वाला है, पता नहीं लड़का है कि लड़की।"

पावेल ने आश्चर्य से कहा, "शादी हो गयी? किससे?"

जार्की ने अपनी जेब से एक फोटो निकाली और पावेल को दिखाई।

"पहचानते हो?"

यह उसकी और आना बोहर्ट की फोटो थी।

"और दुबावा का क्या हुआ?" पावेल ने और भी आश्चर्य से पूछा।

"वह मास्को में है। पार्टी से निकाले जाने के बाद उसने यूनीवर्सिटी छोड़ दी। अब वह बाउमान टेकनिकल इन्स्टीच्यूट में है। मैंने सुना है कि उसे फिर पार्टी में ले लिया गया। अगर यह खबर सही है, तो कहना होगा कि बहुत बुरा हुआ। वह तो ऊपर से नीचे तक एकदम सड़ गया था...जानते हो, पांक्रातोव क्या कर रहा है? वह एक शिपयार्ड का सहायक डाइरेक्टर है। दूसरों के बारे में मुझे कुछ खास नहीं मालूम। इधर हम लोगों का सम्बंध टूट-सा गया है। हम सब देश के अलग-अलग कोनों में काम करते हैं। मगर कभी-कभी इस तरह मिल लेने और पुराने दिनों की याद कर लेने से बहुत अच्छा मालूम होता है।"

डोरा अन्दर आयी और अपने साथ और भी कई लोगों को लाई। उसने जार्की के जाकेट हर लगे हुए तमगे को देखा और पावेल से पूछा:

"क्या तुम्हारे यह साथी पार्टी मेम्बर हैं? कहां काम करते हैं?"

पावेल को कुछ हैरानी हुई, मगर उसने संक्षेप में उस लड़की को जार्की के बारे में बतलाया।

लड़की ने कहा, "अच्छा, तब इनके रहने में कोई बुराई नहीं है। यह साथी अभी-अभी मास्को से आये हैं। यह हमको पार्टी की ताजी खबरें सुनायेंगे। हमने तय किया है कि तुम्हारे कमरे में चलकर एक छोटी-सी पार्टी मीटिंग की जाय," उसने बात साफ की।

पावेल और जार्की को छोड़ बाकी वे सब पुराने बोल्शेविक थे। बार्तशेव

ने, जो मास्को कन्ट्रोल कमीशन का मेम्बर था, उन लोगों को उस नये विरोधी दल की बात बतलाई जिसके नेता त्रॉत्स्की, जिनोवियेव और कामेनेव थे।

बार्तशेव ने अपनी बात खतम करते हुए कहा, "ऐसे संगीन मौके पर हम सबको अपनी-अपनी जगह पर होना चाहिए। मैं कल यहां से जा रहा हूं।"

पावेल के कमरे की इस मीटिंग के तीन दिन बाद सेनोटोरियम एकदम खाली हो गया। पावेल भी कुछ रोज बाद, अपना वक्त खतम होने के पहले ही वहां से चला गया।

कोमसोमोल की केंद्रीय समिति ने उसको अपने पास नहीं रोका। उसे कोमसोमोल का मंत्री बना कर एक औद्योगिक इलाके में भेज दिया गया और हफ्ते भर में ही वह फिर स्थानीय संगठन की एक मीटिंग में बोल रहा था।

उसी पतझड़ के आखिरी दिनों में वह मोटर, जिसमें पावेल तथा दो और पार्टी कार्यकर्ता दूर के देहात जा रहे थे, एक खाई में जा गिरी और उलट गई।

मोटर में बैठे हुए सभी लोगों को चोटें लगीं। पावेल का दाहिना घुटना पिस गया था। कुछ दिन बाद उसे खारकोव के सर्जिकल इन्स्टीच्यूट में ले जाया गया। जांच के बाद और जख्मी घुटनें का एक्सरे करके मेडिकल बोर्ड ने राय दी कि फौरन ऑपरेशन होना चाहिए।

पावेल के स्वीकृति दे दी।

"तो फिर कल सबेरे," उस मोटे प्रोफेसर ने कहा जो बोर्ड का प्रधान था। वह उठा और बाकी लोग भी उसके पीछे-पीछे चले गये।

एक छोटा खूब रोशनीदार वार्ड था जिसमें सिर्फ एक खाट पड़ी थी। वहां खूब सफाई थी और अस्पताल की वह खास गंध थी जिसे वह बहुत दिनों से भूला हुआ था। उसने आसपास निगाह डाली। खाट की बगल में एक छोटी मेज थी जिस पर बर्फ जैसा सफेद मेजपोश पड़ा हुआ था और उसके पास ही सफेद रोगन से पुता हुआ एक स्टूल था। और बस।

नर्स उसका खाना लाई। पावेल ने उसे लौटा दिया। अपने बिस्तर पर बैठ कर वह चिट्ठियां लिख रहा था। घुटने का दर्द उसके विचार क्रम को भंग कर रहा था और इसी दर्द के कारण उसकी भूख भी गायब हो गई थी।

उसने अपनी चौथी चिट्ठी लिख ली थी, तभी दरवाजा धीरे से खुला और सफेद साया पहने और टोपी लगाये एक युवती उसके बिस्तर के पास आई।

उस धुंधलके में पावेल ने उसकी नाजुक भवों और बड़ी-बड़ी आंखों को देखा जो काली नजर आ रही थीं। उसके एक हाथ में एक चमड़े का बैग था और दूसरे में एक पन्ना कागज और एक पेंसिल।

युवती ने कहा, "मैं तुम्हारे वार्ड की डाक्टर हूं। अब मैं तुमसे बहुत से सवाल पूछूंगी और तुम्हें अच्छा लगे चाहे न लगे, मुझको अपने बारे में सब कुछ बतलाना होगा।"

बड़े प्यारे ढंग से वह मुस्कराई और उसकी मुस्कराहट से पावेल के मन से आनेवाली "जिरह" का डर टूट गया। करीब एक हफ्ते तक पावेल उसको न सिर्फ अपने बारे में, बल्कि कई पुश्त पीछे तक के अपने तमाम रिश्तेदारों के बारे में बतलाता रहा।

ऑपरेशन थियेटर। लोग नाक पर और मुंह पर बारीक जालियां लगाये हुए थे। चमचमाते हुए निकेल के औजार, एक लम्बी संकरी-सी मेज, जिसके नीचे एक बड़ी-सी चिलमची रखी थी।

प्रोफेसर अभी हाथ धो रहा था जबकि पावेल ऑपरेशन टेबुल पर लेट गया। उसकी पीठ पीछे ऑपरेशन की तैयारियां जल्दी-जल्दी की जा रही थीं। उसने उधर को अपना सिर घुमाया। नर्स ऑपरेशन के तमाम औजार, नश्तर के चाकू और चिमटियां वगैरह निकाल कर रख रही थी।

"इधर मत देखो कामरेड कोर्चागिन," उसकी वार्ड डाक्टर बाजानोवा ने उसकी टांग की पट्टी खोलते हुए कहा, "यह स्नायुओं के लिए अच्छा नहीं पड़ता, खामखाह घबराहट मालूम होने लगती है।"

"किसके स्नायु और कैसी घबराहट, डाक्टर ?" पावेल ने मजाक के ढंग से मुस्कराते हुए पूछा।

कुछ मिनट बाद उसके चेहरे पर एक भारी मास्क लगा दिया गया और उसने प्रोफेसर साहब की आवाज को कहते सुना :

"हम तुम्हें क्लोरोफार्म देने जा रहे हैं। नाक से लम्बी सांस लो और गिनती गिनना शुरू करो।"

"बहुत अच्छा," मास्क के भीतर से एक घुटी हुई शांत आवाज ने जवाब दिया, "बेहोशी की हालत में अगर मैं कोई बहुत भद्दी बात बोल बैठूं तो मैं नहीं जानता। मैं पहले से ही उसके लिए माफी मांग लेता हूं।"

प्रोफेसर बरबस मुस्करा पड़ा।

क्लोरोफार्म की पहली बूंदें। वह दम घोंटनेवाली, घिनौनी गंध।

पावेल ने लम्बी सांस ली और जोर लगा कर साफ स्वर में गिनना शुरू किया। उसके जीवन के दुखान्त नाटक के पहले अंक का पर्दा उठ गया था।

आर्तेम ने लिफाफा फाड़ा और चिट्ठी की परतें खोलीं। पहली कुछ पंक्तियों पर उसने जोर से आंख गड़ाई और बाकी चिट्ठी को जल्दी-जल्दी पढ़ गया।

"आर्तेम ! हम लोग एक-दूसरे को कितनी कम चिट्ठियां लिखते हैं, साल में मुश्किल से एक-दो बार ! मगर कितनी बार लिखते हैं, यह तो मेरी समझ में कोई बड़ी अहम बात नहीं है। तुमने लिखा है कि तुम अपने परिवार को लेकर शेपेतोवका से कजातिन के रेलवे यार्ड में पहुंच गये हो, क्योंकि तुम देहात से अपना सम्बंध काटना चाहते हो, वहां की जमीन से अपनी जड़ों को उखाड़ना चाहते हो। मैं जानता हूं कि असल में वे जड़ें स्त्योशा और उनके सम्बंधियों की पिछड़ी हुई, निम्न-पूंजीवादी मनोवृत्ति में हैं। स्त्योशा की तरह के लोगों का पुनर्निर्माण कठिन काम है और मुझे आशंका है कि तुम इसमें भी सफल नहीं होगे। तुमने लिखा है कि अब इस बुढ़ापे में तुम्हें अध्ययन करने में काफी कठिनाई हो रही है, मगर मैं तो सोचता हूं कि तुम्हारी प्रगति बुरी नहीं है। तुम जो कारखाने को छोड़ शहर की सोवियत के चेयरमैन का काम संभालने से बराबर इनकार करते जा रहे हो, यह बात ठीक नहीं है। बतलाओ कि क्या तुम इसी मजदूर राज के लिए लड़े थे या नहीं ? तब फिर अब उसे अपने हाथ में क्यों नहीं लेते ! कल ही तुम शहर की सोवियत का काम अपने हाथ में ले लो और उसमें जुट जाओ !

"अब मैं तुम्हें अपने बारे में बतलाऊं। मेरे साथ कोई बड़ी गड़बड़ी हो गई है। मैं बार-बार अस्पताल पहुंचने लगा हूं। दो बार मेरा ऑपरेशन हो चुका है, काफी खून भी गया है और ताकत भी, कुछ पता नहीं चलता कि यह चीज कब खतम होगी।

"मैं अपने काम से अलग पड़ गया हूं और अब एक नया ही धंधा मैंने अपना लिया है और वह धंधा यह है कि मैं मरीज हूं। मुझे बहुत दर्द सहना पड़ता है और कुल मिला कर इस सबका नतीजा यह है कि मैं अपने दाहिने घुटने को हिला भी नहीं सकता, मेरे शरीर के तमाम अंगों में नश्तर के तमाम घावों के निशान हैं और उसके बाद यह ताजी डॉक्टरी खोज सुनने को मिली है : सात बरस पहले मेरी रीढ़ की हड्डी में चोट लगी थी और अब उन लोगों का कहना है कि यह चोट मेरे लिए बहुत महंगी पड़ सकती है। मगर मैं कुछ भी सहने के लिए तैयार हूं बशर्ते मैं लौट कर अपने मोर्चे पर फिर पहुंच सकूं।

"जिंदगी में मेरे लिए इससे ज्यादा भयानक बात कोई नहीं है कि मैं अपनी फौज से कट कर अलग जा पड़ूं। यह एक ऐसी संभावना है जिस पर विचार करने के लिए भी मैं कभी तैयार नहीं हो सकता। और इसलिए वे लोग मेरे साथ जो भी करना चाहते हैं, मैं सब कुछ उन्हें करने देता हूं। मगर मेरी हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा है और

बादल रोज-ब-रोज और भी काले, और भी घने होते जा रहे हैं। पहले ऑपरेशन के बाद मैं जैसे ही चलने-फिरने के काबिल हुआ, फौरन अपने काम पर वापिस पहुंच गया। मगर कुछ ही दिन बाद वे लोग फिर मुझे यहां ले आये। अब मुझे योपेतोरिया के एक सेनेटोरियम में भेजा जा रहा है। मैं कल यहां से चला जाऊंगा। मगर उदास मत हो आर्तेम, तुम जानते हो कि मैं जल्दी हार मानने वाला आसामी नहीं हूं। मुझमें तीन आदमियों के बराबर प्राण-शक्ति है। मेरे भाई, अभी तुमको और मुझको बहुत काम करना है। अब तुम अपनी सेहत की फिक्र करो, बूते से बाहर अपनी ताकत को खर्च न करो क्योंकि सेहत की मरम्मत की भारी कीमत पार्टी को चुकानी पड़ती है। वह सारा तजुर्बा जो हमें काम के दौरान में मिलता है, और ज्ञान जो हमें अध्ययन से मिलता है, बड़ी अनमोल चीजें हैं और उन्हें इस तरह अस्पताल में बंद रह कर बर्बाद नहीं किया जा सकता। प्यार के साथ... —"पावेल"

जिस वक्त आर्तेम, माथे पर झुर्रियां डाले अपने भाई का खत पढ़ रहा था, पावेल अस्पताल में डाक्टर बाजानोवा से विदा हो रहा था।

युवती ने पावेल के हाथ में अपना हाथ देते हुए कहा, "तो कल तुम क्राइमिया के लिए रवाना हो जाओगे ? बाकी दिन भर तुम्हें क्या करना है ?"

पावेल ने जवाब दिया, "कामरेड रादकिना थोड़ी देर में यहां आने वाली हैं। वह मुझे अपने परिवार वालों से मिलाने के लिए अपने घर ले जायेंगी। रात मैं वहीं गुजारूंगा और कल वही मुझे स्टेशन ले जायेंगी।"

बाजानोवा डोरा को जानती थी क्योंकि वह पावेल से मिलने कई बार अस्पताल आयी थी।

"मगर कामरेड कोर्चागिन, क्या तुम अपने वायदे को भूल गये कि जाने से पहले एक बार मेरे पिता से मिलोगे ? मैंने उनको तुम्हारी बीमारी के बारे में विस्तार से बताया है और मैं चाहती हूं कि वह एक बार तुम्हारी जांच कर लें। क्या आज शाम को नहीं हो सकता ?"

पावेल ने फौरन उसकी बात मान ली।

उसी शाम को बाजानोवा पावेल को अपने पिता के बड़े और साफ-सुथरे दफ्तर में ले गई।

उस मशहूर सर्जन ने बड़ी सावधानी से पावेल की जांच की। उनकी बेटी क्लिनिक से पावेल के एक्सरे की तमाम तसवीरें और रिपोर्ट लेती आई थी। पावेल ने भी लक्ष्य किया कि जब बाजानोवा के पिता ने लैटिन में कोई बात कही, तो उसका चेहरा अचानक पीला पड़ गया। पावेल ने अपने ऊपर झुके

हुए प्रोफेसर के बड़े गंजे सिर को बहुत गौर से देखा और उनकी तेज आंखों में अपने सवाल का जवाब ढूंढ़ने की कोशिश की। मगर बाजानोवा के चेहरे के भाव से उसे कुछ पता न चल सका।

पावेल ने कपड़े पहन लिये तो प्रोफेसर ने बड़ी आजिजी से उससे छुट्टी ली और बतलाया कि उन्हें एक सम्मेलन में जाना है और अपनी जांच का नतीजा पावेल को बतलाने का काम अपनी लड़की पर छोड़ दिया।

पावेल बाजानोवा के खूबसूरती से सजे हुए कमरे में कोच पर लेटा हुआ डॉक्टरनी के बोलने का इंतजार कर रहा था। मगर बाजानोवा की समझ में नहीं आ रहा था कि बात कैसे शुरू करे। उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि उसके पिता ने जो कुछ उसे बतलाया था, उसको दुहरा दे—कि दवाइयां अब तक पावेल के शरीर में होने वाली घातक सूजन की रोक-थाम नहीं कर सकी थीं। प्रोफेसर साहब ऑपरेशन के हक में नहीं थे। "इस नौजवान को लकवे का खतरा है और इस दुखदाई बात को रोकना हमारी ताकत के बाहर है।"

न तो डाक्टर की हैसियत से और न दोस्त की हैसियत से ही उसने पूरी बात पावेल को बतलाना ठीक समझा। इसलिए थोड़े से शब्दों में उसने पावेल को सचाई का एक अंश ही बतलाया।

"मुझे यकीन है कामरेड कोर्चागिन कि योपेतोरिया की गीली मिट्टी से तुम्हें फायदा होगा और पतझड़ आते-आते तुम अपने काम पर लौट सकोगे।"

मगर वह भूल गई थी कि पावेल की तेज आंखें उसे गौर से देख रही थीं।

"तुम जो कुछ कह रही हो, बल्कि यों कहूं कि जो कुछ तुमने नहीं कहा है, उससे मैं समझ रहा हूं कि मेरी हालत संगीन है। याद करो, मैंने तुमसे कहा था कि मुझे खोल कर पूरी बात बतला दिया करना। मुझसे कुछ छिपाने की जरूरत नहीं है। सुन, न तो मैं बेहोश हो जाऊंगा और न अपना गला ही काटने की कोशिश करूंगा। मगर यह मैं जरूर जानना चाहता हूं कि मुझे आगे अभी और क्या भुगतना है।"

बाजानोवा जी को खुश करने वाली दिल्लगी की बात कह कर सीधे जवाब को बचा गई और पावेल को उस रात सच्ची बात नहीं मालूम हो सकी।

विदा होते समय डाक्टर ने धीमे से कहा, "मेरी दोस्ती को मत भूल जाना, कामरेड कोर्चागिन। कौन जाने हमारे लिए जिन्दगी में कब क्या होना है। अगर कभी तुम्हें मेरी मदद या मेरे सलाह-मशविरे की जरूरत पड़े, तो मुझे लिखना। मैं जो कुछ भी तुम्हारे लिए कर सकूंगी, जरूर करूंगी।"

खिड़की में से उसने उस लम्बी, चमड़े का कोट पहनी हुई, आकृति को छड़ी का सहारा लेकर बहुत दर्द के साथ दरवाजे से बस तक जाते देखा जो उसका इंतजार करती खड़ी थी।

एक बार फिर योपेतोरिया की गरम दक्खिनी धूप। धूप से संवलाये हुए, शोर मचाते लोग, बेल-बूटेदार टोपियां लगाये हुए। मोटर का दस मिनट का सफर नये आने वालों को चूने के पत्थर की बनी एक दुमंजिला भूरी इमारत पर ले आया — यह माइनाक सेनेटोरियम था।

ड्यूटी पर तैनात डाक्टर को जब यह मालूम हुआ कि पावेल के रहने की जगह उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने रिजर्व की है, तो वह उसे ग्यारह नम्बर के कमरे में ले गया।

"मैं तुम्हें कामरेड एबनर के साथ रखूंगा। वह जर्मन हैं और उन्होंने अपने कमरे में एक रूसी साथी की मांग की है," डाक्टर ने दरवाजे पर दस्तक देते हुए कहा। भीतर से किसी जर्मन की आवाज सुनाई दी, "आ जाओ।"

पावेल ने अपना सफरी थैला रख दिया और उस सुनहले बालों और चमकती हुई नीली आंखों वाले आदमी की तरफ मुड़ा जो बिस्तर पर लेटा हुआ था। उस जर्मन ने मुहब्बत-भरी मुस्कराहट से उसका स्वागत किया।

जर्मन ने पहले अपनी भाषा में उसका अभिवादन किया, मगर फिर अपने को सुधारते हुए रूसी में कहा, "दिन मुबारक हो," और अपनी लम्बी-लम्बी उंगलियों वाला पीला हाथ पावेल की तरफ बढ़ाया।

कुछ क्षण बाद पावेल उसके बिस्तर के पास बैठा हुआ था और दोनों "अन्तर्राष्ट्रीय भाषा" में घुट-घुट कर बातें कर रहे थे, उस भाषा में जिसमें शब्दों का महत्त्व गौण होता है और कल्पना, मुद्राएं और संकेत—अलिखित भाषा के वे सारे माध्यम—शब्दों की कमी को पूरा कर देते हैं।

पावेल को मालूम हुआ कि एबनर एक जर्मन मजदूर था जिसे १९२३ के हाम्बुर्ग विद्रोह में कूल्हे पर चोट लगी थी। वह पुराना जख्म फिर खुल गया था और इसीलिए वह बिस्तर पकड़ने पर मजबूर हुआ था। वह प्रसन्न चित्त से अपनी सारी यातनाओं को सह रहा था और इसीलिए तत्काल पावेल का मन उसके लिए आदर से भर उठा।

उससे अच्छे साथी की आकांक्षा पावेल नहीं कर सकता था। सबसे अच्छी बात उसमें यही थी कि सुबह से लेकर रात तक वह अपनी तकलीफों और बीमारियों का दुखड़ा न रोयेगा। इसके विपरीत, उसकी संगत में आदमी खुद अपनी तकलीफ को भूल जा सकता था।

"मगर कितनी बुरी बात है कि मुझे जर्मन नहीं आती," पावेल ने खिन्न होते हुए सोचा।

सेनेटोरियम के मैदान के एक कोने में कुछ "झूलने वाली कुर्सियां," बांस की एक मेज और दो लम्बी आराम कुर्सियां रखी हुई थीं। इसी जगह पर ये

पांच मरीज, जिन्हें बाकी लोग "कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्यकारिणी" के नाम से पुकारते थे, इलाज के बाद अपना समय गुजारा करते थे।

एबनर आराम कुर्सी पर अधलेटा पड़ा था। पावेल भी, जिसे टहलने की मुमानियत थी, दूसरी कुर्सी पर लेटा हुआ था। इनके अलावा उस टोली के बाकी तीन सदस्य ये लोग थे : वाइमान, जो एस्तोनिया का रहने वाला एक मोटा-तगड़ा मजदूर था, और वाणिज्य-व्यापार की कमसारियट में काम करता था; मार्ता लॉरिन, जो एक नौजवान, भूरी आंखों की, लताविया की रहने वाली स्त्री थी और देखने में अठारह साल की लड़की मालूम होती थी; और लम्बा-तगड़ा साइबेरियन लेदेनेव, जिसकी कनपटी के बाल पक चले थे। इस छोटी-सी टोली में वस्तुत: पांच भिन्न जातियों के प्रतिनिधि थे—जर्मन, एस्तोनियन, लतावियन, रूसी और उक्रेनियन। मार्ता और वाइमान जर्मन जबान बोलते थे और एबनर उनसे दुभाषिये का काम लेता था। पावेल और एबनर दोस्त थे क्योंकि दोनों एक ही कमरे में रहते थे; मार्ता, वाइमान और एबनर भी दोस्त थे क्योंकि उनकी जबान एक थी। लेदेनेव और कोर्चागिन के बीच दोस्ती का आधार शतरंज थी।

लेदेनेव के आने से पहले कोर्चागिन सेनेटोरियम में शतरंज का चैम्पियन था। उसने बड़ी कठिन लड़ाई के बाद वाइमान से यह पद जीता था। अपनी हार से उस मोटे एस्तोनियन को काफी धक्का-सा लगा था और बहुत दिन तक वह कोर्चागिन को इस बात के लिए माफ नहीं कर सका कि उसने उसको हराया था। मगर एक रोज एक लम्बा आदमी सेनेटोरियम में आया जो अपनी पचास बरस की उम्र को देखते हुए बहुत ही नौजवान नजर आता था। उसने कोर्चागिन से शतरंज की एक बाजी खेलने के लिए कहा। पावेल को इस बात का कोई गुमान नहीं था कि कैसे खिलाड़ी से उसका पाला पड़ा है, इसलिए उसने बड़े इतमीनान से एक ऐसी चाल चली जिससे जाहिरा तो उसका वजीर कट जाता था, मगर दूसरे खिलाड़ी की मात हो जाती थी। लेदेनेव मंजा खिलाड़ी था, इसलिए वह मजे में चाल समझ गया और उसका जवाब उसने बीच के पैदलों को आगे बढ़ा कर दिया। चैम्पियन की हैसियत से पावेल को हर नये आने वाले के साथ बाजी खेलनी पड़ती थी और खेल में दिलचस्पी रखने वाले बहुत से दर्शक शतरंज की बिसात के इर्द-गिर्द खड़े हो जाते थे। नवीं चाल के बाद पावेल ने महसूस किया कि उसका विरोधी बराबर अपने पैदलों को आगे बढ़ाता हुआ उसके खेल को अपंग करके रखे दे रहा है। अब पावेल की समझ मे आया कि खतरनाक खिलाड़ी से उसका पाला पड़ा है और उसे मन में दुख होने लगा कि वह शुरू में इतनी लापरवाही से क्यों खेला।

तीन घंटे तक उनकी लड़ाई चली और इस बीच पावेल ने पूरा जोर

लगाया। आखिरकार उसे हार माननी पड़ी। दर्शकों के बहुत पहले ही उसने इस बात को देख लिया था कि उसकी हार लाजमी है। उसने अपने विरोधी की ओर नजर उठाई और देखा कि लेदेनेव विजेता-सुलभ मुस्कराहट से उसकी ओर देख रहा है। स्पष्ट था कि उसने भी देख लिया था कि बाजी का क्या अन्त होने वाला है। वह एस्तोनियन भी खेल देख रहा था जिसे पावेल ने हराया था। वह बड़े गौर से खेल को देख रहा था और अपनी इस ख्वाहिश को छिपा भी नहीं रहा था कि कोर्चागिन हार जाय। मगर अभी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऊंट किस करवट बैठेने वाला है।

"मैं हमेशा अपने आखिरी पैदल तक खेल खेलता हूं और हार नहीं मानता," पावेल ने कहा और लेदेनेव से उसके समर्थन में अपना सिर हिलाया।

पांच दिन में पावेल ने लेदेनेव के साथ दस बाजी खेली जिनमें से सात वह हारा, दो जीता और एक में बाजी बराबरी पर छूट गयी।

वाइमान बहुत खुश था।

"शुक्रिया, शुक्रिया कामरेड लेदेनेव! उसकी तुमने अच्छी मरम्मत की! उसको इसी की जरूरत थी! उसने हम सब पुराने खिलाड़ियों को हरा कर नाक में दम कर दिया था और आखिरकार उसे एक पुराने खिलाड़ी से हार खानी ही पड़ी। हा...हा!"

पहले के विजयी और अब के हारे हुए पावेल को चिढ़ाते हुए उसने कहा, "कहो, हारने में कैसा लगता है?"

लेदेनेव के आने से पावेल का चैम्पियन का पद तो छिन गया, मगर उसे एक दोस्त जरूर मिल गया जो आगे चल कर उसके लिए बहुत अनमोल साबित हुआ। अब उसकी समझ में आया कि शतरंज में उसकी हार स्वाभाविक ही थी। शतरंज के दांव-पेंच की उसकी जानकारी बहुत उथली थी। और उसने एक ऐसे खिलाड़ी के हाथ हार खाई थी जिसे खेल के सारे राज, खेल के दांव-पेंच का पूरा रहस्य मालूम था।

कोर्चागिन और लेदेनेव को पता चला कि उनकी जिन्दगी में एक तारीख समान थी: पावेल जिस साल पैदा हुआ था, उसी साल लेदेनेव पार्टी में दाखिल हुआ था। दोनों अपनी-अपनी जगह पुराने और नये बोल्शेविकों के ठेठ प्रतिनिधि थे। एक के पीछे गहरे राजनीतिक कामों की, हलचलों की लम्बी जिंदगी थी, अंडरग्राउंड आंदोलन में छिप-छिप कर कई साल का काम और जारशाही की कैदें और उन सबके बाद महत्व का सरकारी काम; दूसरे के पीछे थी उसकी जलती हुई जवानी और सिर्फ आठ साल का संघर्ष। मगर ये आठ साल ऐसे थे जो एक पूरी जिन्दगी को जलाकर खाक कर देने के लिए

काफी थे। और ये दोनों, जिनमें से एक बूढ़ा था और दूसरा नौजवान, जिन्दगी से बेहद प्यार करते थे, मगर उनकी तंदुरुस्ती टूटी हुई थी।

शाम के वक्त एबनर और कोर्चागिन का कमरा क्लब जैसा बन जाता था। सारी राजनीतिक खबरें यहीं से शुरू होती थीं। कमरा कहकहों और बातचीत से गूंजता रहता। वाइमान अक्सर बातचीत में छोटा-मोटा गंदा लतीफा घुसेड़ने की कोशिश करता। मगर हमेशा दो तरफ से उसके ऊपर हमला होता, मार्ता की तरफ से और कोर्चागिन की तरफ से। आम तौर पर मार्ता कोई तेज व्यंगपूर्ण बात कह कर उसका मुंह बन्द करने में कामयाब होती। मगर जब उससे काम न चलता तो कोर्चागिन को दखल देना पड़ता।

मार्ता कहती, "वाइमान, तुम्हारा मजाक हमें कुछ पसंद नहीं आता।"

कोर्चागिन गुस्से में भरते हुए कहता, "मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे मुंह से ऐसी गंदी बात क्योंकर निकलती है।"

वाइमान अपना मोटा निचला होंठ निकाल कर अपनी छोटी-छोटी आंखों में व्यंग्य की चमक भर कर देखता।

"हमें राजनीतिक शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत एक सदाचार का विभाग भी खोलना पड़ेगा और मैं प्रस्ताव करता हूं कि कोर्चागिन को उसका चीफ इंस्पेक्टर बनाया जाय। मार्ता क्यों आपत्ति करती है, यह बात मेरी समझ में आ सकती है, क्योंकि वह स्त्री है और विरोध करना उसका धर्म है। मगर कोर्चागिन तो खामखा भोला बनने की कोशिश करता है, जैसे वह कोई नन्हा-सा कोमसोमोल बच्चा हो और जंगल में खो गया हो... इतना ही नहीं, खास आपत्ति तो मुझे इस बात पर है कि अंडा मुर्गी को पाठ पढ़ाने की कोशिश कर रहा है।"

कम्युनिस्ट नैतिकता के सवाल पर गरमागरम बहस हुई और उसके बाद गंदे मजाकों के मसले पर सिद्धांत की दृष्टि से बहस की गई। लोगों की अलग-अलग रायों को मार्ता ने अनुवाद करके एबनर को बतलाया।

एबनर ने कहा, "ये गंदे लतीफे अच्छे नहीं कहे जा सकते। मैं पावेल से सहमत हूं।"

वाइमान को मजबूर होकर पीछे हटना पड़ा। उसने भरसक इस मामले को हंस कर उड़ाने की कोशिश की। मगर इतना हुआ कि इसके बाद उसने फिर कभी अपने गंदे लतीफे नहीं सुनाये।

पावेल ने मार्ता को कोमसोमोल का मेम्बर समझा था क्योंकि उसका खयाल था कि वह उन्नीस से ज्यादा की न होगी। उसे यह जान कर बड़ा अचरज हुआ कि वह १९१७ से पार्टी में थी, उसकी उम्र इकतीस साल की थी और वह लताविया की कम्युनिस्ट पार्टी की बहुत सक्रिय मेम्बर थी। १९१८ में क्रांति-विरोधी श्वेत-रूसियों ने उसको गोली से उड़ाने की सजा दी

थी, मगर वह बच गई क्योंकि जब कैदियों की अदला-बदली हुई तो कुछ और साथियों के साथ वह सोवियत सरकार के हवाले कर दी गई। इन दिनों वह "प्रावदा" के सम्पादकीय विभाग में काम कर रही थी और इसके साथ ही यूनीवर्सिटी में पढ़ रही थी। न जाने कब उसके और पावेल के बीच दोस्ती पैदा हो गई और वह छोटी-सी लताबियन स्त्री, जो अक्सर एबनर से मिलने आया करती थी, इन पांचों की टोली का एक जरूरी अंग बन गई।

इस मामले को लेकर एग्लिट, जो लताविया का एक अंडरग्राउंड कार्यकर्ता था, उसे अक्सर चिढ़ाया करता था, 'अब उस बेचारे ओजोल का क्या होगा जो मास्को में घर पर बैठा तुम्हारे लिए आहें भर रहा है? अरे मार्ता, यह तुमने क्या गजब किया?"

एक रोज सुबह को, बिस्तर छोड़ने की घंटी बजने से ठीक पहले, एक मुर्गे ने सेनेटोरियम में जोर से बांग दी। उसकी आवाज सुन कर परेशान नौकर इधर-उधर उस चिड़िया की तलाश में दौड़ने लगे जिसने यह गलत काम किया था। उनको इस बात का खयाल भी नहीं आया कि एबनर ने, जो मुर्गे की बांग की हू-बहू नकल कर लेता था, उनको हैरान करने के लिए ऐसा किया था। कई रोज तक सुबह यही चीज होती रही और एबनर इस चीज का मजा लेता रहा।

सेनेटोरियम में अपने महीने भर रहने के आखिरी दिनों में पावेल की हालत और खराब हो गई। डाक्टरों ने उसे बिस्तर पर लेटे रहने का आदेश दिया। एबनर को इससे बड़ी बेचैनी हुई। वह इस हिम्मती नौजवान बोल्शेविक से बहुत प्यार करने लगा था, जिसमें इतना जीवन और इतना उत्साह था और जो इतनी कच्ची उम्र में अपनी सेहत खो बैठा था। और जब मार्ता ने एबनर को बतलाया कि कोर्चागिन के भविष्य के बारे में डाक्टर कैसी दर्दनाक बात कहते हैं, तो एबनर को सख्त तकलीफ हुई।

बाकी जितने दिन पावेल सेनेटोरियम में रहा, उसमें वह लगातार बिस्तर पर ही पड़ा रहा। वह अपने आसपास के लोगों से अपनी तकलीफ छिपा लेता था और अकेले मार्ता उसके चेहरे की भयानक जर्दी से भांप जाती थी कि उसे बहुत दर्द हो रहा है। अपने जाने के एक हफ्ता पहले पावेल को उक्रेनियन केन्द्रीय समिति का खत मिला जिसमें लिखा था कि डाक्टरों की सलाह के अनुसार उसकी छुट्टी और दो महीने बढ़ाई जाती है क्योंकि उनका कहना है कि वह काम करने के अयोग्य है। खत के साथ ही खर्चे के लिए पैसा आया।

पावेल ने इस पहली चोट को उसी तरह सह लिया जिस तरह उसने बरसों पहले घूंसेबाजी का सबक लेते हुए जुखराई के घूंसे खाये थे। तब भी वह गिर पड़ा था, मगर फौरन ही फिर उठ खड़े होने के लिए।

उसको मां की एक चिट्ठी मिली जिसमें उसने पावेल को यह लिखा था कि वह जाकर उसकी एक पुरानी दोस्त से मिल आये। इस दोस्त का नाम अलबिना क्युत्सम था। वह योपेतोरिया के पास ही समुद्र के किनारे एक छोटे से कस्बे में रहती थी। पावेल की मां अपने दोस्त से पन्द्रह साल से नहीं मिली थी और उसने पावेल से बहुत अनुरोध किया था कि जब तक वह क्राइमिया में है, उसी बीच जाकर उससे मिल ले। इस चिट्ठी ने पावेल की जिन्दगी में आगे चल कर बहुत महत्त्व की भूमिका अदा की।

एक हफ्ते बाद उसके सेनेटोरियम के दोस्तों ने उसे जहाज के घाट पर जाकर बहुत मोहब्बत से विदा किया। एबनर ने भाई की तरह गले से लगाया और चूमा। मार्ता उस वक्त कहीं गई हुई थी और पावेल बिना उससे विदा लिये हुए ही चला गया।

दूसरे रोज सुबह जब वह घाट पर पहुंचा, तो घोड़ागाड़ी उसे एक छोटे से मकान में ले गई जिसके सामने एक वैसा ही छोटा-सा बगीचा था।

क्युत्सम परिवार में पांच लोग थे: मां अलबिना, जो एक अधेड़ स्थूल-काय स्त्री थी और जिसकी आंखें काली और उदास थीं। उसके बूढ़े हो रहे चेहरे पर पुराने सौन्दर्य की निशानियां थीं। मां के अलावा उस परिवार में थीं दो बेटियां—लोला और ताया; लोला का नन्हा-सा बेटा और बूढ़ा क्युत्सम, जो घर का स्वामी था। बूढ़ा क्युत्सम मोटा-सा चिड़चिड़ा आदमी था और देखने में सुअर-जैसा था।

बूढ़ा क्युत्सम को-ऑपरेटिव स्टोर में काम करता था। छोटी लड़की ताया जो भी काम हाथ लग जाय, करती थी और लोला, जो टाइपिस्ट रह चुकी थी, हाल ही में अपने पति से अलग हुई थी। उसका पति शराबी और बदमिजाज आदमी था। लोला अब घर पर रहकर अपने छोटे से लड़के की देखभाल करती थी और घर के काम में अपनी मां का हाथ बंटाती थी।

इन दो बेटियों के अलावा घर में एक बेटा भी था जिसका नाम जौर्ज था और जो उस वक्त, जब पावेल वहां पहुंचा तब, लेनिनग्राद में था।

घरवालों ने पावेल का हार्दिक स्वागत किया। सिर्फ बुड्ढे ने अतिथि को सन्देह और शत्रुता की आंखों से देखा।

पावेल ने धैर्यपूर्वक अलबिना को अपने घर के बारे में सारी खबरें बतायीं और उसके जवाब में उसे भी क्युत्सम के कुनबे की जिन्दगी के बारे में बहुत कुछ जानने का मौका मिला।

लोला बाईस बरस की थी। वह एक सीधी-सादी लड़की थी जिसके भूरे बाल कटे हुए थे। उसका चौड़ा-सा खुला हुआ चेहरा था और उसने फौरन पावेल को अपना अन्तरंग बना लिया और उसे अपने घर के सारे राज बतला

दिये। उसने बतलाया कि बुड्ढा निरंकुश राजा की तरह पूरे परिवार पर शासन करता है और घर के लोगों में किसी भी तरह की स्वतंत्रता की भावना के आते ही फौरन उसे दबा देता है। वह संकीर्ण बुद्धि का कट्टर और जिद्दी आदमी था और घरवालों को आतंकित करके रखता था। इसी वजह से घर के सारे बच्चे उससे बहुत चिढ़ते थे और उसकी बीवी उससे नफरत करती थी। उसकी बीवी ने पच्चीस साल तक उसकी निरंकुशता के खिलाफ संघर्ष किया मगर कोई नतीजा न निकला। लड़कियां हमेशा अपनी मां का साथ देतीं थीं। घर में होने वाले उन रोज-रोज के झगड़ों ने उनकी जिन्दगी में जहर घोल दिया था। दिन-के-दिन गुजर जाते थे और झगड़े, गाली-गुफ्ता, तू-तू मैं-मैं खत्म ही न होने आते थे।

लोला ने पावेल को बतलाया कि घर की जिन्दगी का एक और पाप उसका भाई जौर्ज था जो एक बिलकुल नाकारा, जीटियल, घमंडी लड़का था, जिसे अच्छे खाने, तेज शराबों और ठाठदार कपड़ों के अलावा और किसी चीज की फिक्र न थी। स्कूल की पढ़ाई खतम करने पर जौर्ज ने ऐलान किया कि वह राजधानी जा रहा है और उसने अपने इस सफर के लिए पैसे मांगे।

"मैं यूनीवर्सिटी में जा रहा हूं। लोला अपनी अंगूठी बेच सकती है और तुम्हारे पास भी कुछ चीजें हैं जिन्हें गिरवी रख कर तुम पैसे पा सकती हो। मुझे पैसों की जरूरत है और मुझे इससे बहस नहीं कि तुम कहां से उन पैसों को लाती हो।"

जौर्ज को अच्छी तरह मालूम था कि उसकी मां कभी किसी चीज के लिए उससे इनकार नहीं करेगी और इसलिए वह अपने प्रति मां के प्यार का बेजा फायदा उठाता था। अपनी बहनों के साथ उसका बर्ताव ऐसा था जैसे वे उसके सामने कुछ न हों, जैसे वे उसकी बांदियां हों। मां अपने पति से जो भी पैसे खींचतान कर निकाल पाती थी, उन्हें अपने बेटे के पास भेज देती थी और उसके अलावा ताया जो कुछ भी कमाती थी वह भी। इस बीच जौर्ज मैट्रिक की परीक्षा में फेल होकर अब लेनिनग्राद में मजे उड़ा रहा था। वह अपने मामा के साथ रहता था और बार-बार तार से पैसे मंगा-मंगा कर अपनी मां को सताया करता था।

पावेल जिस रोज वहां पहुंचा, उस रोज कहीं रात में जाकर उसकी मुलाकात ताया से हुई। उसकी मां अपनी बेटी से मिलने के लिए झट से बाहर हॉल वाले रास्ते में गई और पावेल ने मां को फुसफुसा कर उसके आने की खबर अपनी बेटी को देते सुना। उस लड़की ने शर्माते हुए इस अपरिचित नौजवान से हाथ मिलाया और मारे शर्म के उसका चेहरा लाल हो गया। पावेल काफी देर तक उसके मजबूत घाठीदार हाथको अपने हाथ में लिए रहा।

ताया उन्नीसवें साल में चल रही थी। वह खूबसूरत न थी, मगर फिर भी उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आंखें और उसका मंगोलों जैसा चेहरा, अच्छी-सी नाक और भरे हुए ताजे होंठ, इन सबको मिलाकर वह आकर्षक लगती थी। धारीदार ब्लाउज के नीचे उसकी कसी हुई जवान छातियां उभरी हुई थीं।

दोनों बहनों के पास अपनी-अपनी दो छोटी-छोटी कोठरियां थीं। ताया के कमरे में लोहे की एक तंग खाट थी, दराजों की एक आलमारी थी जिसमें दुनिया भर की छोटी-मोटी चीजें भरी हुई थीं, एक छोटा-सा आइना था और दीवारों पर दर्जनों फोटों और तसवीरों वाले पोस्टकार्ड थे। खिड़की पर दो गुलदान रखे थे जिनमें लाल जेरेनियम और हलके पीले और गुलाबी ऐस्टर के फूल लगे हुए थे। लैस के परदे में एक हल्का नीला फीता टंका हुआ था।

लोला ने अपनी बहन को चिढ़ाते हुए कहा, "आम तौर पर ताया पुरुषों को अपने कमरे में नहीं घुसने देती। तुम्हारे लिए वह इस नियम का अपवाद कर रही है।"

दूसरे रोज शाम को घर के लोग बूढ़े दम्पत्ति के रहने की जगह में चाय पर बैठे हुए थे। वयुत्सम तेजी से अपनी चाय चला रहा था और बीच-बीच में सामने बैठे हुए अतिथि पावेल को अपनी ऐनक के ऊपर से देख लेता था!

उसने कहा, "आजकल जो शादी के कानून बन रहे हैं, उनको मैं बिलकुल बेकार समझता हूं। आज शादी हुई और कल के रोज शादी नहीं रही। जो जी चाहे कीजिए। पूरी आजादी है।"

बुड्ढे का गला फंस रहा था और वह बड़बड़ा रहा था। उसकी सांस लौटी तो उसने लोला की तरफ इशारा किया।

"इसको देखो, यह गई और बिना किसी की इजाजत लिए अपने उस आदमी से शादी कर बैठी और फिर उसी तरह बिना किसी से कुछ पूछे-जांचे उससे अलग भी हो गई। और अब मुझे ही उसके और उसके छोकरे दोनों के खाने का बंदोबस्त करना पड़ता है। कैसी बेहूदा बात है!"

लोला को बड़ी चोट लगी और वह शर्म से गड़ गई। उसने अपनी नम आंखें पावेल से छिपा लीं।

"तो आपका खयाल है कि उसे उस बदमाश के साथ रहना चाहिए था, क्यों?" पावेल ने पूछा और उसकी आंखों में गुस्से की चमक आ गई।

"उसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए था कि वह किससे शादी कर रही है।"

अलबिना ने बीच-बचाव किया। किसी-न-किसी तरह अपने गुस्से को दबाते हुए उसने तेजी से कहा, "कैसे हो, एक नये आदमी के सामने ऐसी बातों पर बहस कर रहे हो? तुम्हारे पास बात करने के लिए और कुछ नहीं है?"

बुड्ढा मुड़ा और उसी पर झपट पड़ा :

"मैं खूब जानता हूं कि मैं क्या बात कह रहा हूं ! यह तुम कब से मुझे नसीहत करने लगी कि मुझे क्या कहना चाहिए !"

उस रात को पावेल बड़ी देर तक अपने बिस्तर में जागता पड़ा रहा और क्युत्सम परिवार के बारे में सोचता रहा। संयोग से ही वह यहां आ गया था और अनजाने ही इस पारिवारिक नाटक में शरीक हो गया था। उसकी समझ में नहीं आता था कि वह किस तरह मां और बेटियों को इस बंधन से मुक्त करने में सहायक हो सकता था। खुद उसकी जिन्दगी बिलकुल अव्यवस्थित थी, बहुत से मसले थे जिन्हें अभी हल करना बाकी था और कोई हिम्मत का कदम उठाना उसके लिए और दिनों से ज्यादा मुश्किल काम था।

स्पष्ट ही केवल एक रास्ता था : यह कि इस परिवार को तोड़ दिया जाय और मां और बेटियां बुड्ढे को छोड़ कर अलग हो जायं। मगर यह आसान काम न था। पावेल इस पारिवारिक क्रांति का बोझ उठाने की स्थिति में नहीं था क्योंकि उसे कुछ ही दिनों में वहां से चला जाना था और मुमकिन है कि फिर कभी उसकी उन लोगों से मुलाकात भी न हो। क्या यह ज्यादा अच्छा न होगा कि वह उस चीज को जैसे-का-तैसा छोड़ दे और जो होना हो, हो ? तलैया के इस गंदे पानी को हिलाने-डुलाने से क्या फायदा ? मगर उस बुड्ढे के घिनौने चेहरे की याद उसे चैन न लेने देती। बहुत-सी योजनाएं पावेल के दिमाग में आईं, मगर उन्हें अव्यावहारिक समझ कर उसने छोड़ दिया।

अगले दिन इतवार था और जब पावेल टहल कर शहर से वापस आया तो उसने ताया को घर में अकेला पाया। बाकी लोग रिश्तेदारों से मिलने बाहर गये हुए थे।

पावेल उसके कमरे में गया और थका हुआ तो था ही, एक कुरसी पर लस्त होकर पड़ गया।

उसने ताया से पूछा, "तुम कभी बाहर क्यों नहीं जातीं और अपनी खुशी का कोई सामान क्यों नहीं करतीं ?"

ताया ने धीमे स्वर में जवाब दिया, "मेरा कहीं जाने को जी नहीं चाहता।"

पावेल को अपनी रात की सोची हुई योजनाओं की याद आई और उसने उन्हें ताया के सामने रखने का फैसला किया।

जल्दी-जल्दी बोलते हुए ताकि दूसरों के आने के पहले ही वह अपनी बात खतम कर ले, पावेल सीधे अपनी खास बात पर आ गया।

"सुनो ताया, हम दोनों अच्छे दोस्त हैं। तब फिर हम लोग क्यों एक-दूसरे के साथ झूठा शिष्टाचार बरतें। मैं जल्दी ही यहां से चला जाऊंगा। बड़े दुख की बात है कि मैंने तुम्हारे परिवार को ठीक ऐसे समय में जाना जब कि मैं

खुद मुसीबत में हूं, नहीं तो सूरत कुछ दूसरी ही होती। अगर यह चीज साल-भर पहले हुई होती तो हम सब लोग एक साथ यहां से चले जा सकते थे। तुम्हारे और लोला जैसे लोगों के लिए चारों तरफ तमाम काम-ही-काम है। बुड्ढे को छोड़ो, उसकी बात अलग है, उसकी अकल को ठीक नहीं किया जा सकता। मगर वह तो खैर जो भी है, इस वक्त कोई रास्ता नहीं है। मैं अभी यही नहीं जानता कि मेरा क्या होगा। इस वक्त मैं बिलकुल असहाय हूं। मगर उसका तो खैर कोई इलाज नहीं है। मैं इस बात पर जोर देने जा रहा हूं कि मुझे वापिस काम पर भेजा जाय। डाक्टरों ने मेरे बारे में पता नहीं क्या-क्या वाहियात बातें लिख दी हैं और साथी लोग मेरा पीछा ही नहीं छोड़ते। उनका कहना है कि मैं कयामत के रोज तक अपना इलाज कराता बैठा रहूं। मगर खैर उसके बारे में देखेंगे कि क्या किया जा सकता है। मैं मां को चिट्ठी लिखूंगा और तुम्हारे यहां के झगड़े के बारे में उससे सलाह लूंगा। मैं इस तरह इस चीज को चलने नहीं दे सकता। मगर तुम्हें समझना चाहिए ताया कि इसका मतलब होगा कि तुम्हें अपने को अपनी मौजूदा जिन्दगी से काट कर जबरन अलग करना होगा। क्या तुम्हें यह चीज पसंद होगी और इसकी ताकत तुम अपने अंदर पाओगी?"

ताया ने आंख ऊपर उठा कर देखा।

फिर धीमे से कहा, "मुझे यह चीज जरूर पसंद होगी और जहां तक ताकत की बात है, मैं नहीं कह सकती।"

पावेल उसके अनिश्चय को समझ गया।

"कोई बात नहीं ताया! अगर तुम्हारे अंदर इस चीज की चाह है तो सब ठीक हो जायगा। क्या तुम सचमुच अपने परिवार को बहुत चाहती हो?"

इस सवाल ने ताया को थोड़ा परेशानी में डाल दिया क्योंकि वह इसके लिए तैयार न थी और जवाब देने में पल भर को हिचकिचाई।

आखिरकार उसने कहा, "मुझे मां के लिए बड़ा दुख है। पिताजी ने उसकी जिन्दगी दूभर कर रखी है और अब जौर्ज उसको सता रहा है। मुझे उसके लिए सचमुच बेहद दुख होता है गोकि मैं जानती हूं कि उसने कभी मुझे जौर्ज के बराबर प्यार नहीं किया...।"

दोनों बड़ी देर तक इसी तरह दिल खोल कर बातें करते रहे। घर वालों के लौटने के थोड़ी देर पहले पावेल ने मजाक में कहा:

"ताज्जुब की बात है कि बुड्ढे ने अब तक तुम्हें किसी से व्याह नहीं दिया।"

इस विचार से ही डर के मारे ताया ने हाथ फटकारे।

"न बाबा, मैं कभी शादी न करूंगी। मैंने देखा है कि बेचारी लोला को क्या-क्या भुगतना पड़ा है। मैं कभी किसी कीमत पर शादी न करूंगी।"

पावेल हंसा।

"अच्छा तो तुमने अपनी पूरी जिन्दगी के लिए आखिरी बार इस मामले का फैसला कर डाला है ? और मान लो कोई अच्छा-भला खूबसूरत नौजवान तुम्हारी जिन्दगी में आ जाय, तो क्या हो ?"

"नहीं, मैं कभी शादी न करूंगी। शादी के पहले सब बड़े अच्छे रहते हैं।"

पावेल ने उसको मनाने के अंदाज में उसके कंधे पर अपना हाथ रखा।

"बहुत अच्छी बात है ताया। पति के बिना भी तुम बड़े मजे में चल सकती हो। मगर तुम्हें सभी नौजवानों के बारे में ऐसी बेइंसाफी की बात न कहनी चाहिए। यह अच्छा है कि तुम मुझ पर यह सन्देह नहीं कर रही हो कि मैं तुमसे प्रणय-निवेदन करने की कोशिश कर रहा हूं, वरना मुसीबत ही थी !" और उसने बड़े भाई के अंदाज में ताया की बांह को थपथपाया।

ताया ने धीमे से कहा, "तुम्हारी तरह के आदमी किसी और ही तरह की लड़कियों से शादी करते हैं।"

कुछ दिन बाद पावेल खारकोव के लिए रवाना हो गया। ताया, लोला और अपनी बहन रोजा के साथ अलबिना उसे विदा करने स्टेशन पर आईं। अलबिना ने पावेल से वचन ले लिया कि वह उनकी लड़कियों को न भूलेगा और उन्हें अपनी मौजूदा परेशानी में से निकलने में मदद पहुंचायेगा। उन्होंने पावेल को उसी तरह विदा किया जैसे किसी बहुत सगे और प्यारे आदमी को किया जाता है। उस वक्त ताया की आंखों में आंसू थे। अपने डब्बे की खिड़की में से पावेल ने लोला की सफेद रूमाल और ताया के धारीदार ब्लाउज को बराबर छोटे-से-छोटा होते देखा जब तक कि वे नजर से ओझल न हो गये।

खारकोव पहुंच कर वह सीधे अपने दोस्त पेत्या नोवीकोव के घर गया क्योंकि वह डोरा को परेशान नहीं करना चाहता था। सफर की थकान मिटते ही वह केंद्रीय समिति में गया। वहां उसने अकिम का इंतजार किया और आखिर में जब दोनों अकेले रह गये, तो उसने कहा कि उसे फौरन काम पर भेजा जाय। अकिम ने अस्वीकृति में सिर हिलाया।

"यह चीज नहीं हो सकती पावेल ! हमारे सामने मेडिकल बोर्ड और सेंट्रल कमिटी का फैसला है। उसके मुताबिक तुम्हारी तंदुरुस्ती की संगीन हालत को देखते हुए तुम्हें इलाज के लिए न्यूरो-पैथोलॉजिकल इंस्टीच्यूट भेजा जाना चाहिए और यह कि किसी हालत में तुम्हें काम नहीं करने देना चाहिए।"

"मुझे खाक परवाह नहीं कि वे लोग क्या कहते हैं, अकिम ! मैं तुमसे विनती करता हूं, मुझे काम करने का मौका दो ! एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल में जाना मुझे कोई फायदा नहीं पहुंच रहा है।"

अकिम ने इनकार करने की कोशिश की, "हम लोग फैसले के खिलाफ नहीं जा सकते। तुम इस बात को नहीं देखते पावलुशा कि यह तुम्हारे फायदे की बात है!" उसने तर्क करते हुए कहा। मगर पावेल ने इतने जोरों से वकालत की कि आखिर में अकिम को उसकी बात माननी ही पड़ी।

अगले ही रोज पावेल केंद्रीय समिति के सेक्रेटेरियट के विशेष विभाग में काम करने लगा। उसका खयाल था कि काम शुरू करते ही उसकी गई हुई ताकत लौट आयेगी। मगर जल्दी ही उसने देख लिया कि ऐसा सोचना उसकी भूल थी। वह दोपहर का खाना खाये बगैर आठ-आठ घंटे तक मेज पर बैठा काम करता रहता था और सिर्फ इसलिए कि खाना खाने के लिए तीन-तीन जीना नीचे उतर कर पब्लिक भोजनालय में जाने की ताकत उसके अंदर नहीं थी। अक्सर उसके हाथ-पैर अचानक सुन्न पड़ जाते और कभी-कभी उसका पूरा शरीर थोड़ी देर के लिए ऐसा हो जाता जैसे उसे लकवा मार गया हो। हरारत उसे हमेशा ही बनी रहती। किसी-किसी रोज सुबह को वह अपने अंदर इतनी ताकत भी न पाता कि बिस्तर से उठ सके और जब तक लकवे का हमला थमता, तब तक उसे काम पर जाने में एक घंटे की देर हो गई रहती और उसका उसे बहुत दुख होता। आखिरकार वह दिन आया जब उसे काम पर देर से आने के लिए सरकारी तौर पर तम्बीह की गई। यह उस चीज की शुरुआत थी जिससे अपनी जिन्दगी में वह सबसे ज्यादा डरता था—वह आगे बढ़ने वाले सैनिकों की कतार में पीछे छूटा जा रहा था।

दो बार अकिम ने उसको दूसरे काम पर लगा कर उसकी मदद की, मगर जो चीज अनिवार्य थी वह होकर रही। काम पर लौटने के महीने भर बाद पावेल ने फिर से बिस्तर पकड़ लिया। उस वक्त उसे विदाई के समय कहे हुए वाजानोवा के शब्द याद आये। उसने उसको चिट्ठी लिखी और वह उसी दिन आ गई। और आकर उसने पावेल को वह बात बतलाई जिसे वह जानना चाहता था: यह कि अस्पताल में जाना एकदम जरूरी नहीं है।

"तो मेरा हाल इतना अच्छा है कि मुझे इलाज की भी जरूरत नहीं है?" उसने दिल्लगी के स्वर में कहा। मगर वह दिल्लगी का मौका न था, इसलिए मजाक बेमानी होकर रह गया।

जैसे ही उसने अपने भीतर कुछ और ताकत महसूस की, वह वापिस केन्द्रीय समिति में पहुंच गया। इस बार अकिम ने दृढ़ता से उसका विरोध किया। उसने इस बात पर जोर दिया कि पावेल अस्पताल जाय।

पावेल ने थके हुए स्वर में कहा, "मैं कहीं नहीं जा रहा हूं। उससे कोई फायदा नहीं। यह बात मुझे अच्छे-अच्छे डाक्टरों से मालूम हुई है जिन्हें इस चीज के बारे में राय देने का हक है। मेरे लिए करने को सिर्फ अब एक चीज

बची है कि पेन्शन ले लूं और रिटायर हो जाऊं। मगर मैं ऐसा नहीं करूंगा ! तुम मुझे काम छोड़ने पर मजबूर नहीं कर सकते। मैं अभी सिर्फ चौबीस साल का हूं और बीमार की तरह इस अस्पताल से उस अस्पताल का चक्कर लगाते हुए अपनी जिन्दगी काटने के लिए तैयार नहीं हूं। मैं यह जानता हूं कि अस्पताल में जाने से मुझे कोई फायदा नहीं होगा। तुम्हें चाहिए कि मुझे कोई काम दो, ऐसा काम जो मेरी स्थिति के अनुकूल हो। मैं घर पर बैठकर काम कर सकता हूं या दफ्तर में रह सकता हूं। बस एक दरख्वास्त है कि क्लर्की का ऐसा काम मत दो जिसमें मुझे सिर्फ दफ्तर से बाहर जाने वाले कागजात पर नम्बर दर्ज करना पड़े। मुझे ऐसा काम मिलना चाहिए जिससे मुझे यह सन्तोष हो कि अब भी मेरी कुछ उपयोगिता है।"

भावावेश में पावेल की आवाज बुलन्द से बुलन्द होती गई।

अकिम को पावेल से गहरी सहानुभूति थी। वह समझता था कि इस जोशीले नौजवान की जिन्दगी की यह सबसे बड़ी ट्रैजेडी थी—इस नौजवान की जिसने अपनी छोटी-सी जिन्दगी का एक-एक क्षण पार्टी को दिया था। पावेल को संघर्ष से मजबूरन अलग होना पड़ रहा था और दूर एक कोने में घुटने तोड़ कर बैठना पड़ रहा था। इस विचार से पावेल को कितनी मानसिक यातना हो रही होगी, यह बात अकिम समझ रहा था। उसने तय किया कि उसकी मदद के लिए जो कुछ बन पड़ेगा, वह जरूर करेगा।

"बहुत अच्छा पावेल, तुम परेशान न हो। कल सेक्रेटेरियट की मीटिंग होगी और मैं तुम्हारे मामले को साथियों के सामने रखूंगा। मैं तुम्हें वचन देता हूं कि मुझ से जो कुछ बन पड़ेगा, मैं तुम्हारे लिए करूंगा।"

पावेल थका हुआ, भारी पैरों से उठा और अकिम का हाथ पकड़ लिया।

"अकिम, क्या तुम सचमुच यह सोचते हो कि जिन्दगी एक कोने में ढकेल कर मुझे कुचल सकती है ? जब तक मेरे दिल में यहां यह धड़कन बाकी है"—कहते हुए उसने अकिम का हाथ अपने सीने पर रख लिया ताकि वह उसके दिल की धड़कन को महसूस कर सके—"जब तक यह धड़कन है, तब तक कोई भी मुझे पार्टी से काट कर अलग नहीं कर सकता। सिर्फ मौत ही मुझे लड़ने वाले सैनिकों की कतार से अलग कर सकती है। इसे याद रखना, मेरे दोस्त।"

अकिम ने कुछ नहीं कहा। वह जानता था कि यह कोरी लफ्फाजी नहीं है। यह एक ऐसे सिपाही की चीख थी जिसे लड़ाई में सख्त चोट लगी है। वह जानता था कि कोर्चागिन जैसे लोग इसके सिवा किसी और तरह से बोल नहीं सकते और न महसूस ही कर सकते हैं।

दो दिन बाद अकिम ने पावेल को बतलाया कि उसे एक बड़े अखबार के कार्यालय में काम करने का अवसर दिया जाने वाला है, बशर्ते उसमें साहित्यिक

काम करने की योग्यता हो। सम्पादकीय दफ्तर में पावेल का बहुत अच्छा स्वागत हुआ और सहायक सम्पादिका ने, जो एक पुरानी पार्टी कार्यकर्ता और उक्रेन की केन्द्रीय कंट्रोल कमिटी की सदस्या थी, उससे पूछताछ की।

उसने पावेल से पूछा, "तुम्हें क्या शिक्षा मिली है कामरेड ?"

"प्राथमिक पाठशाला में तीन साल।"

"क्या तुम पार्टी के किसी सियासी स्कूल में भी रहे हो ?"

"नहीं।"

कोई बात नहीं, कुछ लोग इसके बिना भी अच्छे पत्रकार बनते देखे गये हैं। कामरेड अकिम ने तुम्हारे बारे में हमको बतलाया है। हम तुम्हें ऐसा काम दे सकते हैं जिसे तुम घर बैठे कर सको और मोटे तौर पर हम तुम्हारे लिए ऐसा इंतजाम करने के लिए तैयार हैं कि तुम सहूलियत से काम कर सको। मगर इस तरह के काम में काफी जानकारी की जरूरत होती है। खास करके साहित्य और भाषा के क्षेत्र में।"

इस सबसे पावेल को लगा कि इस काम में उसकी हार अवश्यंभावी है। आध घंटे की उस पूछताछ से उसे पता चल गया कि उसकी जानकारी काफी नहीं है। और उसका इम्तहान लेने के लिए जो लेख उससे लिखाया गया था, वह जब उसके पास लौटा तो उसमें शैली और हिज्जे की तीन दर्जन गलतियां थीं जिन पर लाल पेंसिल से निशान लगा हुआ था।

सम्पादिका ने कहा, "कामरेड कोर्चागिन, तुममें काफी योग्यता है और अगर कुछ मेहनत करोगे तो काफी अच्छा लिखने लगोगे। मगर इस वक्त तुमसे व्याकरण की भूलें हो जाती हैं। तुम्हारे लेख से पता चलता है कि तुम अच्छी तरह रूसी भाषा नहीं जानते। यों इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं है क्योंकि तुम्हें पढ़ने का मौका ही नहीं मिला। हमें खेद है कि हम तुम्हारा उपयोग नहीं कर सकते, गोकि जैसा मैंने अभी कहा, तुम्हारे अन्दर योग्यता है। अगर तुम्हारे लेख को सुधारा जाता, बिना उसके विषय-वस्तु को बदले, तो इसमें सन्देह नहीं कि वह बहुत अच्छा हो जाता। मगर बात यह है कि हमें ऐसे लोगों की जरूरत है जो दूसरों के लेखों को सुधार सकें।"

कोर्चागिन छड़ी का सहारा लेते हुए उठा। उसकी दाहिनी पलक फड़की।

"ठीक है, मैं आपकी बात समझ गया। सचमुच मैं किस काम का पत्रकार होऊंगा। किसी जमाने में मैं बुरा फायरमैन नहीं था और इलेक्ट्रीशियन भी बुरा नहीं था। घुड़सवारी मैं अच्छी करता था और कोमसोमोल के नौजवानों को आन्दोलित करना भी मुझे आता था। लेकिन जहां तक अपने मोर्चे की बात है, निश्चय ही मैं उसके लिए किसी काम का साबित नहीं होऊंगा, यह बात मेरी समझ में आ गई।"

उसने हाथ मिलाया और चला गया।

गलियारे के एक मोड़ पर वह लड़खड़ाया और अगर पास से गुजरती हुई एक औरत ने उसे पकड़ न लिया होता, तो वह गिर पड़ता।

"क्या बात है कामरेड ? तुम तो काफी बीमार नजर आते हो !"

पावेल को होश आने में कुछ क्षण लगे। तब उसने धीरे से उस औरत को एक ओर कर दिया और अपनी छड़ी के सहारे आगे बढ़ गया।

उस दिन के बाद से पावेल ने महसूस किया कि उसकी जिन्दगी ढलवान पर है। काम करने का अब सवाल ही नहीं उठता था। उसे बार-बार और पहले से कहीं ज्यादा बिस्तर पकड़ना पड़ता। केन्द्रीय समिति ने उसे काम से छुट्टी दे दी और उसकी पेन्शन का प्रबन्ध कर दिया। ठीक समय पर पेंशन आ गई और उसके साथ-साथ बीमार होने का सार्टिफिकेट भी। केन्द्रीय समिति ने उसे पैसा दिया और उसके कागजात उसके हवाले कर दिये जिनसे उसे हक मिल गया कि वह जहां चाहे जाय।

मार्ता के पास से उसे एक खत मिला जिसमें उसने पावेल को मास्को आने और उसके यहां रह कर कुछ दिन आराम करने की दावत दी थी। मास्को जाने का तो पावेल का इरादा यों भी था, क्योंकि उसके मन में अभी तक यह धुंधली-सी आस बाकी थी कि ऑल यूनियन सेन्ट्रल कमिटी उसे ऐसा कोई काम दे सकेगी जिसमें इधर-उधर दौड़ने-भागने की जरूरत न होगी। मगर मास्को में भी उसे डाक्टरी इलाज कराने की सलाह दी गई और एक अच्छे अस्पताल में जगह देने की बात कही गई। मगर उसने इनकार कर दिया।

उसके उन्नीस दिन तो मार्ता के घर में, जहां वह अपने दोस्त नादिया पीटर्सन के साथ रहती थी, जल्दी से बीत गये। पावेल ज्यादातर घर में अकेला ही रहता क्योंकि दोनों युवतियां सबेरे ही घर से काम पर निकल जातीं और शाम को लौटतीं। पावेल मार्ता की अच्छी लाइब्रेरी में से किताबें ले-लेकर पढ़ने में अपना वक्त गुजारता। शामें उन दोनों लड़कियों और उनके दोस्तों की सोहबत में मजे से कट जातीं।

क्युत्सम परिवार के खत आते जिनमें उसे वहां बुलाया जाता। वहां पर जिन्दगी असह्य होती जा रही थी और पावेल की मदद की जरूरत थी।

लिहाजा एक रोज सबेरे कोर्चागिन ने गुस्यातनिकोव स्ट्रीट का वह खामोश छोटा सा फ्लैट छोड़ दिया। रेलगाड़ी उसे तेजी से दक्खिनी समुद्र की तरफ ले चली, नम बरसाती पतझड़ से दूर दक्खिनी क्राइमिया के गर्म तट की तरफ। वह खिड़की पर बैठा तार के खंभों का तेजी से गुजरना देखता रहा। उसके माथे पर बल पड़े हुए थे और उसकी काली-काली आंखों में हठीली चमक थी।

नीचे समुद्र की लहरें चट्टान से टकरा कर पछाड़ खा रही थीं। दूर तुर्की से आती हुई तेज खुश्क हवा उसके चेहरे को स्पर्श कर रही थी। बन्दरगाह, जिसे सीमेन्ट का एक रास्ता बनाकर समुद्र के सीधे हमले से बचाया गया था, टेढ़े-मेढ़े अर्धवृत्त आकार में फैला हुआ था। और उस सबके ऊपर से दीख पड़ रही थीं शहर के छोर पर की छोटी-छोटी सफेद इमारतें जो पहाड़ के ढलवान पर बनी थीं और ठीक नीचे समुद्र का नीला विस्तार था।

शहर के बाहर इस पुराने पार्क में बहुत शांति थी। मेपुल के दरख्त की पीली-पीली पत्तियां उड़-उड़ कर धीरे-धीरे पार्क के रास्तों पर गिर रही थीं और रास्तों पर घास उगी हुई थी।

वह बूढ़ा ईरानी गाड़ीवान, जो पावेल को शहर से वहां ले आया था, पावेल के गाड़ी से उतरने पर यह सवाल पूछ ही बैठा :

"यहां क्यों आये हो ? न यहां जवान औरतें हैं, न दिल बहलाने का और कोई सामान। यहां तो बस गीदड़ हैं... यहां क्या करोगे ? मिस्टर कामरेड, बेहतर हो कि मैं तुम्हें शहर में वापस ले चलूं !"

पावेल ने गाड़ी का किराया चुकाया और बूढ़ा गाड़ी लेकर चला गया।

वह पार्क सचमुच एक जंगल था। पावेल को पहाड़ी पर एक खाली बेंच मिल गई और वह उस पर बैठ गया। पावेल ने पतझड़ के हलके सूरज की ओर मुंह उठाया। पहाड़ी समुद्र के किनारे पर थी।

वह इस खामोश जगह में यह सोच कर आया था कि अपनी जिन्दगी पर गौर करेगा, उसकी जिन्दगी जो रुख पकड़ रही थी, उसके बारे में और यह कि अब उसको क्या करना चाहिए। परिस्थिति पर विचार करने और कोई फैसला लेने का वक्त आ गया था।

दूसरी बार जब वह क्युत्सम के यहां गया तो घर के झगड़े और भी बढ़ गये और ऐसी हालत पैदा हो गई कि उस झगड़े को खतम करने के लिए कोई-न-कोई कदम उठाना जरूरी जान पड़ने लगा। बुड्ढे को जब उसके आने की बात मालूम हुई तो वह आग-बबूला हो गया और उसने इस चीज के खिलाफ बड़ा शोर मचाया। स्वभावतः उसका मुकाबला करने की जिम्मेदारी कोर्चागिन पर आ गई। बुड्ढे को बड़ा ताज्जुब हुआ जब उसकी बीवी और लड़कियों ने डट कर उसका विरोध किया, क्योंकि उसको इस चीज की उम्मीद न थी। पावेल के आने के पहले रोज से ही घर दो विरोधी शिविरों में बंट गया। मकान के जिस आधे हिस्से में मां-बाप रहते थे, उसके दरवाजे में ताला जड़ दिया गया और बगल का एक छोटा कमरा कोर्चागिन को किराये पर दे दिया गया।

पावेल ने किराया पेशगी दे दिया और इस चीज से बुड्ढे का गुस्सा कुछ कम हुआ। अब उसकी लड़कियां उससे अलग हो गई थीं और इसलिए उनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी उसकी न रह गई थी।

कूटनीतिक कारणों से अलबिना अपने पति के साथ ही रही। जहां तक बुड्ढे की बात थी, तो वह अपने ही हिस्से में रहता था और उस आदमी से मिलना बचाता था जिससे उसको इतनी सख्त नफरत थी। मगर बाहर हाते में वह ज्यादा से ज्यादा शोर मचाता था ताकि यह बात किसी को भूलने न पाये कि वही घर का मालिक है।

को-आपरेटिव में काम करने से पहले बुड्ढा क्युतसम जूते बना कर और बढ़ईगिरी के काम से अपनी रोजी चलाता था और अब अपने लिए उसने एक छोटी सी वर्कशाप घर के पिछवाड़े के हाते में बना ली थी। अब पावेल को तंग करने के लिए उसने अपने काम करने की बेन्च शेड से हटाकर पावेल की खिड़की के ठीक सामने हाते में जमा ली थी और वहां बैठा घंटों ताबड़तोड़ हथौड़ी चलाया करता और उसको इस बात से एक ढंग का संतोष मिलता कि उसके काम से कोर्चागिन की पढ़ाई में बाधा पड़ रही है।

वह दांत पीस कर अपने मन में कहता, "रुको बच्चू, मैं ऐसी हालत पैदा कर दूंगा कि सर पर पैर रख कर भागोगे...।"

दूर क्षितिज पर स्टीमर का काला धुआं पानी पर फैला हुआ था। समुद्री चिड़ियों का झुंड तीखी आवाज में शोर करता हुआ समुद्र पर टूटता था।

पावेल हथेली पर अपनी ठुड्डी टिकाये अपने विचारों में डूबा बैठा था। उसकी पूरी जिन्दगी, बचपन से लेकर आज तक, जल्दी-जल्दी उसकी मन की आंखों के आगे घूम गई। उसकी जिन्दगी के चौबीस बरस कैसे बीत गये थे? उसने अपनी जिन्दगी को ठीक से बिताया था या नहीं? उसने साल-के-साल उनके ऊपर दुबारा गौर किया, गंभीरता से, निष्पक्ष होकर, और तब उसे यह जान कर बड़ा सन्तोष मिला कि उसने जिन्दगी को कुछ यों ही नहीं बिताया था, उसका ठीक ही इस्तेमाल उसने किया था। उसमें गलतियां जरूर हुई थीं, जवानी की अनुभवहीनता की गलतियां और मुख्य रूप से समझदारी की कमी की गलतियां। मगर सोवियत सत्ता के लिए होने वाले संघर्ष के तूफानी दिनों में वह लड़ाई के तूफान में रहा था और क्रांति के लाल झंडे पर उसके अपने खून की भी कुछ बूंदें जरूर थीं।

जब तक उसकी शक्तियों ने जवाब न दे दिया, वह बराबर लड़ने वालों की कतार में रहता आया और अब घायल हो जाने पर, जबकि गोली चलाने वालों की कतार में खड़े रहना उसके लिए मुमकिन न था, इसके सिवा वह और कर भी क्या सकता था कि मैदानी अस्पताल में दिन गुजारे? उसे उस समय की

याद आई जब उन लोगों ने वारसॉ पर हमला किया था और लड़ाई जब अपने शिखर पर थी, तो कैसे एक सिपाही को गोली लगी थी। वह अपने घोड़े की टापों के नीचे जमीन पर गिर पड़ा। उसके साथियों ने जल्दी-जल्दी उसके जख्म पर पट्टी बांधी, उसे स्ट्रेचर वालों के सिपुर्द किया और दुश्मन का पीछा करते हुए तेजी से आगे निकल गये। एक घायल सैनिक के लिए आगे बढ़ता हुआ दस्ता रुका न था। एक महान लक्ष्य के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई में ऐसा ही हो सकता था और ऐसा ही हुआ। यह सही है कि उसने ऐसे तोपची भी देखे थे जिनकी टांगें न थीं और जो तोप को खींचने वाली गाड़ियों पर सवार होकर लड़ाई में जाते थे। ऐसे आदमी दुश्मन को दहला कर रख देते थे, उनकी तोपें चारों तरफ मौत और तबाही बिखेर देती थीं और अपनी इस्पाती हिम्मत और कभी न चूकने वाली आंख के कारण वे अपनी टुकड़ियों के लिए गौरव योग्य भी होते थे। मगर ऐसे लोग बहुत कम थे।

अब उसे क्या करना था, जब पराजय ने उसे छा लिया था और लड़ने वालों की कतार में वापस पहुंचने की कोई उम्मीद न थी? क्या उसने बाजानोवा से खोद-खोद कर यह बात नहीं पूछ ली थी कि उसे भविष्य में और भी बड़ी यातनाएं भुगतनी पड़ेंगी? तो अब क्या किया जाय? यह सवाल, उसके पैरों के पास फैली हुई चौड़ी-सी खाई की तरह, मुंह बाये उसके सामने खड़ा था और इसका कोई जवाब उसके पास न था।

अब वह किस चीज के लिए जीये, जब वही चीज न रही जो उसकी नजर में सबसे अनमोल थी, यानी लड़ सकने की क्षमता? वह क्या कह कर अपने मन को समझाये कि वह आज किस चीज के लिए जी रहा है और कल किस चीज के लिए जीयेगा, जब कहीं कोई खुशी नहीं? किस तरह वह अपनी जिंदगी के दिनों को गुजारे? जीये सिर्फ सांस लेने के लिए, खाने के लिए, पीने के लिए? जब उसके साथी लड़ते हुए आगे बढ़ रहे हों, तो क्या वह असहाय दर्शक की तरह खड़ा रहे? एक बोझ बन जाय अपनी फौजी टुकड़ी के लिए? क्या यह बेहतर न होगा कि वह अपने शरीर को खतम कर दे जिसने उसके साथ दगा की? सीने में एक गोली—और मामला साफ, यह बेमतलब जिंदगी खत्म! एक जिंदगी जो अच्छी तरह बिताई गई, जिसके लिए आदमी को फख्र हो सकता है! उसका यही मुनासिब अंत होगा! इसके बाद भी जीना तो लाश को घसीटना होगा! अपनी यंत्रणा को खतम करने के लिए जिस सिपाही ने अपने-आपको खतम कर दिया, उसकी निंदा कोई क्यों करेगा?

उसने अपनी जेब में पड़ी हुई चपटी ब्राउनिंग पिस्तौल का स्पर्श अनुभव किया। उसके हत्थे पर उसकी उंगलियां मजबूती से जम गईं और धीरे-धीरे उसने अपनी पिस्तौल बाहर निकाली।

"किसने सोचा था कि तुम्हारा यह अंत होगा ?"

पिस्तौल की नली ठंडी उपेक्षा से उसकी ओर देख रही थी। उसने पिस्तौल अपने घुटने पर रख ली और अपने-आपको बुरा-भला कहने लगा।

"वीरता का यह प्रदर्शन बहुत सस्ता है दोस्त ! खुद को गोली मार कर तुम दिखलाना चाहते हो कि बड़ी बहादुरी का काम कर रहे हो ! मगर इसमें क्या रखा है, कोई भी अपने-आपको गोली मार सकता है, बेवकूफ-से-बेवकूफ आदमी भी। यह तो सबसे आसान रास्ता है, कायर आदमी का रास्ता। जब जिंदगी भारी हो जाय, तब गोली तो मारी ही जा सकती है। मगर क्या तुमने जिंदगी से लड़ कर उसे हराने की कोशिश की ? क्या तुम विश्वास के साथ यह कह सकते हो कि इस फौलादी घेरे को तोड़ कर निकलने की तुमने हर मुमकिन कोशिश की ? क्या तुम नोवोग्राद-वोलिन्स्की की उस लड़ाई को भूल गये जिसमें हमने दिन-भर में सत्रह बार हमले किये और आखिरकार सभी मुश्किलों के बावजूद कामयाबी हासिल की ? पिस्तौल को रख दो और फिर कभी इसकी बात किसी से न कहो। जीवन जब असह्य हो उठे, तब भी जीने की कला सीखो। अपने जीवन को उपयोगी बनाओ।"

वह उठ खड़ा हुआ और सड़क पर चलने लगा। उधर से गुजरते हुए एक पर्वतारोही ने उसे अपनी गाड़ी पर चढ़ा लिया। शहर पहुंच कर वह उतर गया और उसने एक अखबार खरीदा और देमियान बेदनी क्लब में शहर के पार्टी ग्रुप की एक मीटिंग का ऐलान पढ़ा। उस रात को जब पावेल घर लौटा तो बहुत देर हो गई थी। वह उस मीटिंग में बोला भी था और उसे इस बात का कतई गुमान न था कि वह अपनी जिंदगी में आखिरी बार किसी बड़ी आम मीटिंग में बोल रहा है।

वह घर लौटा तो उसने देखा कि ताया अब भी जगी हुई थी। पावेल के इतनी देर तक न आने से वह परेशान हो रही थी। सोच रही थी कि उसके साथ क्या बात हो गई जो वह घर नहीं लौटा। उसे इसलिए और भी परेशानी हो रही थी कि उस सुबह को उसने पावेल की आंखों में एक अजीब कठोर, ठंडा भाव देखा था, उन आंखों में जो हमेशा जिंदगी से इतनी भरपूर नजर आती थीं। उसे अपने बारे में बात करना अच्छा नहीं मालूम होता था। मगर ताया महसूस कर रही थी कि पावेल को कोई गहरी मानसिक परेशानी है।

उसकी मां के कमरे की दीवाल घड़ी ने जिस वक्त दो का घंटा बजाया, उसने फाटक के चूं करने की आवाज सुनी और अपनी जाकट चढ़ाती हुई दरवाजे को खोलने के लिए गई। ताया उसके पास से गुजरी तो लोला, जो अपने कमरे में सो रही थी, बेचैनी से बड़बड़ाई।

"मुझे परेशानी होने लगी थी," ताया ने खुशी और इतमीनान से फुस-फुसा कर उस समय कहा जब कि पावेल हॉल के अंदर दाखिल हुआ।

पावेल ने भी वैसे ही धीमे से जवाब दिया, "ताया, जब तक मैं जिंदा हूं, मुझे कुछ नहीं हो सकता। लोला सो रही है? किसी वजह से मुझे जरा भी नींद नहीं आ रही है। मुझे तुमसे कुछ बात कहनी है। चलो हम लोग तुम्हारे कमरे में चलें ताकि लोला की नींद खराब न हो।"

ताया हिचकिचाई। रात बहुत जा चुकी थी। इतनी रात गये वह कैसे पावेल को अपने कमरे में ले जाय? मां क्या सोचेगी? मगर वह इनकार न कर सकी क्योंकि उसे डर था कि पावेल का जी दुखेगा। उसने मन में कहा, "क्या बात हो सकती है," और उसे अपने कमरे में ले गई।

"बात यह है ताया," पावेल ने धीमी आवाज में कहना शुरू किया। कमरे में मद्धिम प्रकाश था और पावेल ताया के ठीक सामने बैठ गया, इतने पास कि ताया उसकी सांस को महसूस कर सकती थी। "जिंदगी कभी-कभी ऐसे अजीब मोड़ ले लेती है कि आदमी हैरान रह जाता है। मेरे पिछले कुछ दिन बहुत ही बुरे गुजरे हैं। मेरी समझ ही में नहीं आता था कि मैं जीऊं कैसे। इसके पहले कभी मुझे जिंदगी इतनी अंधेरी न नजर आई थी। मगर आज मैंने अपने मन के पोलिटिकल ब्यूरो की एक मीटिंग की और उसमें एक बहुत अहम फैसला किया। मैं जो कुछ तुमसे कहने जा रहा हूं, उसे सुन कर चौंकना मत।"

उसने ताया को वह सब-कुछ बतलाया जो पिछले महीनों उस पर गुजरा था और बहुत-सी वे बातें भी जो उस दिन पार्क में उसके मन में आई थीं।

"तो यही मेरी परिस्थिति है। अब वह सबसे जरूरी बात मैं तुमसे कहना चाहता हूं। इस घर के अंदर तूफान अब शुरू ही हो रहा है। हमें इस कुएं में से जितनी दूर मुमकिन हो सके, बाहर ताजी हवा में चले जाना चाहिए। हमें नये सिरे से अपनी जिंदगी शुरू करनी चाहिए। एक बार जब मैंने इस लड़ाई में हिस्सा लिया है, तो मैं अंत तक उसको निबाहूंगा। हम लोगों की, यानी तुम्हारी और मेरी जिंदगी इस वक्त कुछ बहुत सुखी नहीं है। मैंने फैसला किया है कि इसके अंदर कुछ नई गरमाहट डालूंगा। क्या तुम जानती हो कि मेरा क्या मतलब है? तुम क्या मेरी जीवन-संगिनी, मेरी पत्नी बनोगी?"

ताया सांस रोक कर उसकी बातों को सुन रही थी और इन अंतिम शब्दों को सुन कर चौंक पड़ी।

पावेल अपनी बात कहता गया, "मैं आज रात ही तुमसे जवाब देने के लिए नहीं कह रहा हूं। तुम अच्छी तरह इस चीज पर विचार कर लो। मैं समझता हूं कि तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि पहले बहुत दिन तक प्रेम का किस्सा चलाये बिना कैसे यह चीज ऐसे लट्ठमार तरीके से कही

जा सकती है। मगर हमको इस तरह की वाहियात बातों की कोई जरूरत नहीं है ? यह लो, मैं तुम्हें अपना हाथ देता हूं। अगर तुम मुझ पर विश्वास करोगी तो मुझे गलत न समझोगी। हम दोनों एक-दूसरे को बहुत कुछ दे सकते हैं। मैंने जो निश्चय किया है, वह यह कि हमारा सम्बंध तब तक कायम रहेगा जब तक कि तुम एक सच्ची इंसान, एक सच्ची बोल्शेविक नहीं बन जाती। अगर मैं तुम्हारे लिए इतना भी न कर सकूं तो मेरा मोल कौड़ी के बराबर भी नहीं। तब तक हमें यह सम्बंध नहीं तोड़ना होगा। मगर जब तुम बड़ी हो जाओगी, समझदार हो जाओगी, तब तुम्हारे ऊपर किसी किस्म की कैद नहीं रहेगी। कौन जानता है क्या हो ? हो सकता है कि मेरा शरीर बिलकुल टूट जाय और उस हालत में इस बात को याद रखना कि तुम अपने-आपको किसी भी तरह मुझसे बंधा हुआ न समझना।"

कुछ क्षणों के लिए वह खामोश हो गया और फिर प्यार से भरी हुई, नरम आवाज में बोला : "और फिलहाल मैं तुम्हें अपनी दोस्ती और अपना प्यार देना चाहता हूं।"

उसने ताया का हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़ा इतमीनान महसूस करने लगा मानो ताया अपनी रजामंदी दे चुकी हो।

"तुम वादा करते हो कि मुझे कभी नहीं छोड़ोगे ?"

"मैं तुम्हें सिर्फ वचन दे सकता हूं ताया। तुम चाहे विश्वास करो, चाहे न करो, लेकिन तुम्हें समझना चाहिए कि मेरे जैसे आदमी अपने दोस्तों के साथ दगा नहीं करते...इतना बहुत है कि वे मेरे साथ दगा न करें," उसने तीखेपन से इतना और जोड़ दिया।

ताया ने जवाब दिया, "मैं आज रात तुमको जवाब नहीं दे सकती। मुझे सोचने का समय दो, यह तो बड़ी अचानक बात हो गई।"

पावेल उठ खड़ा हुआ।

"सो जाओ ताया। सुबह होने में अब देर नहीं है।"

वह अपने कमरे में चला गया और बिना कपड़े उतारे बिस्तर पर लेट गया और इधर उसका सिर तकिये से लगा और उधर वह नींद में डूब गया।

पावेल के कमरे में खिड़की के पास वाली मेज पर पार्टी की लाइब्रेरी की किताबों, अखबारों और कई कापियों का ढेर लगा था जिनमें पावेल ने अपने नोट लिख रखे थे। इसके अलावा उसके कमरे में था एक बिस्तर, दो कुर्सियां और चीन का एक बड़ा-सा नक्शा जिस पर काली और लाल झंडियां पिन से खुसी हुई थीं और जो उसके और ताया के कमरे के बीच के दरवाजे के ऊपर पिन से जड़ा हुआ था। स्थानीय पार्टी कमिटी के लोगों ने पावेल को उसकी जरूरत की किताबें और पत्र-पत्रिकाएं देना मंजूर कर लिया था और वादा

किया था कि शहर की सबसे बड़ी पब्लिक लाइब्रेरी के मैनेजर से कह देंगे कि पावेल जो-कुछ भी मांगे, वह उसे भेज दिया करे। कुछ ही दिन बाद किताबों के बड़े-बड़े पार्सल आने लगे। लोला को यह देख कर बड़ी हैरानी होती थी कि वह बड़े सबेरे से उठ कर अपनी किताबें लिये बैठा होता और सारा दिन पढ़ता और नोट बनाता रहता। सिर्फ नाश्ते और खाने के लिए थोड़ी-थोड़ी देर के लिए उठता। शाम का वक्त वह दोनों लड़कियों के साथ गुजारता और उन्हें अपनी दिन भर की पढ़ी हुई बातें बतलाया करता।

आधी रात के भी बहुत बाद तक बुड्ढा क्युत्सम अपने इस आवांछिय अतिथि, पावेल के कमरे के दरवाजे की संध में से आती हुई रोशनी की पतली किरणों को देखता। वह पंजे के बल खिड़की तक जाता और दरवाजे की संध से भीतर को झांकता तो देखता कि पावेल मेज पर सिर झुकाये पढ़ रहा है।

बुड्ढा अपने कमरे में लौटते हुए बड़बड़ाता, "शरीफ लोग न जाने कब सो गये मगर इसे देखो कि रात-भर रोशनी जलाता रहता है। समझता है जैसे वही यहां का मालिक हो। जब से वह यहां आया है, लड़कियां भी हाथ से बिलकुल निकल गई।"

आठ साल में पहली बार पावेल को खूब अवकाश मिल रहा था और उस पर किसी तरह के काम की कोई जिम्मेदारी न थी। उसने अपने वक्त का अच्छा इस्तेमाल किया और खूब उत्साह से पढ़ता रहता, ऐसा उत्साह जो नये जिज्ञासुओं में ही पाया जाता है। वह दिन में अठारह घंटे पढ़ता रहता। कहा नहीं जा सकता कि इस कदर मेहनत को उसकी सेहत और कितने दिन तक बर्दाश्त कर सकेगी। मगर एक रोज ताया ने यूं ही एक बात कह दी जिसने सारा नक्शा ही बदल दिया।

"तुम्हारे कमरे में खुलने वाले दरवाजे से जो आलमारी अड़ी हुई थी, उसको मैंने अलग कर दिया है। अब अगर कभी तुम्हारी इच्छा मुझसे बात करने की हो तो तुम सीधे मेरे कमरे में आ सकते हो। लोला के कमरे में से होकर आने की कोई जरूरत नहीं।"

आवेग से पावेल का चेहरा तमतमा गया। ताया खुशी से मुस्कराई। उनके सम्बंध पर मुहर लग गई।

बुड्ढे को अब कोने वाले कमरे की बंद खिड़की की संध में से रोशनी नजर नहीं आती। ताया की मां ने भी बेटी की आंखों में एक ऐसी चमक देखी जो एक ऐसे सुख का पता दे रही थी जिसे वह लड़की छिपा न पाती थी। उसकी आंखों के नीले हलके विनिद्र रातों की कहानी कहते थे। अब अक्सर उस छोटे-से घर में ताया के गाने और गिटार के बजने की गूंज सुनाई देती।

मगर ताया का सुख बिना कांटों का नहीं था। उसका जागा हुआ नारीत्व उनके सम्बंध की गोपन प्रकृति के खिलाफ विद्रोह करता था। हर आवाज पर वह कांप-कांप जाती थी, क्योंकि उसे लगता था कि जैसे वह अपनी मां के कदमों की आहट सुन रही हो। मान लो अगर वे पूछ बैठें कि वह क्यों रात को अपने कमरे की कुंडी चढ़ा लेती है तो? पावेल ने उसके इस भय को लक्ष्य किया और उसे आश्वस्त करने की कोशिश की।

वह बड़ी नरमी से कहता, "तुम्हें किस चीज का डर है? हम दोनों ही तो यहां के मालिक हैं। इतमीनान से सोओ। कोई हमारी जिन्दगी में मदाखलत नहीं करने पायेगा।"

आश्वस्त होकर वह अपना गाल उसके सीने पर रख लेती और अपने प्रेमी को वाहों में भरे हुए सो जाती और वह जागता पड़ा रहता और उसकी निश्चिन्त निर्द्वन्द्व सांसें सुनता रहता। वह जरा भी न हिलता-डुलता ताकि ताया की नींद न खराब हो और भीतर-बाहर से उसका मन इस लड़की के लिए गहरे प्यार से भर उठता जिसने अपनी जिन्दगी उसके हाथों में सौंप दी थी।

ताया की आंखों की चमक का राज सबसे पहले लोला ने समझा और उस दिन से दोनों बहनों के बीच एक खाई-सी पड़ गई। जल्दी ही मां ने भी इस चीज का पता पा लिया, या यूं कहें कि उसने भांप लिया। और तब उसे परेशानी हुई। उसे कोर्चागिन से इस चीज की उम्मीद न थी।

उसने लोला से कहा, "ताया का इस आदमी के साथ ठीक जोड़ नहीं बैठता। मैं तो समझ नहीं पा रही हूं कि इसका क्या नतीजा निकलेगा?"

उसके मन में तरह-तरह की चिन्ताएं उठीं। मगर उसे इतना साहस न हुआ कि कोर्चागिन से कुछ कह सके।

बहुत से नौजवान पावेल के पास आने लगे और कभी-कभी इतने लोग हो जाते कि उस छोटे से कमरे में उन सब के लिए काफी जगह ही न रहती। मधुमक्खियों की गुंजार की तरह उन लोगों की आवाजें बुड्ढे के कान में पड़तीं और अक्सर वह उन लोगों का कोरस गान सुनता:

गूंज रहा है यह डरावना पागल सागर
गूंज रहा दिन-रात क्रुद्ध भीषण इसका स्वर...

और पावेल का प्रिय गाना:

सारी दुनिया भीज गई आंखों के जल से

यह नौजवान कार्यकर्ताओं का वह स्टडी सर्किल था जिसे पार्टी कमिटी ने पावेल के जिम्मे सौंपा था, क्योंकि वह बार-बार मांग कर रहा था कि उसे प्रचार का काम दिया जाय। इसी तरह पावेल के दिन गुजरते थे।

उसने एक बार फिर अपने दोनों हाथों से मजबूती से पतवार पकड़ ली थी और उसकी जिंदगी की किश्ती, जो कई बार चट्टानों से टकराते-टकराते बची थी, अब फिर एक नई राह पर आगे बढ़ी जा रही थी। उसका यह सपना कि वह अध्ययन के जरिये फिर से लड़ने वाले सैनिकों की कतार में शरीक हो सकेगा, पूरा होने आ रहा था।

मगर जिंदगी उसकी राह में कांटे बिछाती जा रही थी और वह हर कांटे को बहुत तकलीफ और क्षोभ के साथ देखता था, क्योंकि उसके कारण उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में देर हो रही थी।

एक रोज वह अभागा विद्यार्थी जौर्ज मास्को से आ गया और अपने साथ अपनी बीवी को भी लेता आया। वह अपने बैरिस्टर ससुर के घर ठहरा और वहां से अपनी मां को पैसे के लिए परेशान करने लगा।

जौर्ज के आने से क्युत्सम घराने की खाई और चौड़ी हो गई। जौर्ज ने निस्संकोच होकर अपने बाप का साथ दिया और अपनी बीवी के घर वालों की मदद से, जो कुछ-कुछ सोवियत-विरोधी थे, उसने बेजा तरीकों का इस्तेमाल करके कोर्चागिन को घर से निकालने की कोशिश की और ताया को बहलाना चाहा कि वह कोर्चागिन से सम्बंध-विच्छेद कर ले।

जौर्ज के आने के दो हफ्ते बाद लोला को एक दूसरे शहर में नौकरी मिल गई और वह अपनी मां और छोटे-से लड़के को लेकर चली गई। कुछ रोज बाद पावेल और ताया भी समुद्र तट के एक शहर में चले गये।

आर्तेम को अपने भाई के खत बहुत कम ही मिलते थे। मगर कभी-कभी जब उसे अपनी परिचित लिखावट का लिफाफा शहर की सोवियत में अपनी मेज पर पड़ा मिलता तो वह बड़े आवेग से उसके पन्नों पर नजर दौड़ाता। यह आवेग आर्तेम के लिए असाधारण चीज थी। आज भी जब उसने लिफाफा खोला तो प्यार से भरते हुए सोचा :

"आह पावेल! काश कि तुम मेरे और पास रहा करते। मुझे तुम्हारी सलाह की कितनी जरूरत पड़ती है!"

उसने पढ़ा :

"आर्तेम, मैं आज तुम्हें वह सब-कुछ बतलाने के लिए खत लिख रहा हूं जो पिछले दिनों मुझ पर गुजरा है। ऐसी बातें मैं तुम्हें छोड़ और किसी को नहीं लिखता। मगर मैं जानता हूं कि मैं अपनी गुप्त-से-गुप्त बात तुमसे कह सकता हूं क्योंकि तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो और मेरी बात को समझोगे।

"तन्दुरुस्ती के मोर्चे पर जिंदगी मुझे बराबर दबाती जा रही है और एक के बाद दूसरी चोट लगा रही है। एक चोट के बाद मैं किसी-किसी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो पाता हूं कि दूसरी चोट, पहली से भी ज्यादा निर्मम, ज्यादा कठोर, आकर मुझे ढेर कर देती है। सबसे भयानक बात यह है कि इसका मुकाबला करने की ताकत अब मेरे अंदर नहीं है। पहले मेरी बाईं बांह में लकवा लगा। और अब जैसे कि उतना ही काफी न हो, मेरी टांगों ने जवाब दे दिया है। पहले ही मैं मुश्किल से चल फिर सकता था (यानी अपने कमरे के अंदर)। मगर अब तो मेरे लिए बिस्तर से मेज तक घिसट कर जाना भी मुश्किल हो गया है। और अभी और भी पता नहीं क्या-क्या देखना है। कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा।

"मैं कभी घर से बाहर नहीं जाता और मेरी खिड़की से समुद्र का एक बहुत छोटा-सा टुकड़ा दिखाई देता है। क्या इससे ज्यादा करुण कोई बात हो सकती है कि एक ही आदमी में दो विरोधी चीजों का मेल हो जाय—एक दगाबाज शरीर जिस पर किसी का वश न हो और एक बोल्शेविक का दिल, ऐसे बोल्शेविक का जो काम के लिए तरसता है, लड़ने वालों की कतार में, तुम्हारी बगल में, आकर खड़ा होना चाहता है, उन लोगों की कतार में जो आंधी और तूफान में पूरे मोर्चे पर आगे बढ़ रहे हैं।

"मुझे अब भी विश्वास है कि मैं लड़ने वालों की कतार में शरीक हो सकूंगा और हमला करने वाले दस्तों में मेरी संगीन की भी अपनी जगह होगी। मुझे यह विश्वास करना ही होगा। इस विश्वास को मैं छोड़ दूं, इसका मुझे अधिकार नहीं है। दस साल तक पार्टी और कोमसोमोल ने मुझे लड़ना सिखाया है और हमारे नेता के शब्द, जो सबको सम्बोधित करके कहे गये थे, मेरे ऊपर उसी तरह लागू होते हैं: 'ऐसे कोई किले नहीं हैं जिन्हें बोल्शेविक फतह नहीं कर सकते।'

"मेरी जिन्दगी इन दिनों पूरी तरह पढ़ाई में ही गुजर रही है। किताबें, किताबें और किताबें। मैंने बहुत-कुछ पढ़ लिया है, आर्तेम। मैंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की तमाम बुनियादी किताबें अच्छी तरह पढ़ ली हैं और कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी की पत्रों द्वारा दी गयी शिक्षा का पहले साल का इम्तहान पास कर लिया है। शाम को मैं कम्युनिस्ट नौजवानों का स्टडी सर्किल लेता हूं। ये नौजवान साथी पार्टी-संगठन की असली जिन्दगी के साथ मेरे सम्बंध की कड़ी हैं। फिर ताया है जिसकी राजनीतिक शिक्षा और सामान्य ज्ञान को बढ़ाने की मैं भरसक कोशिश कर रहा हूं। और फिर प्यार तो है ही और मेरी छोटी-सी बीवी की मुहब्बत की बातें। हम दोनों, ताया और मैं, एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त हैं। हमारा घर

बड़ी सादगी से चलता है – मेरी बत्तीस रूबल की पेन्शन और ताया की कमाई से हमारा काम अच्छी तरह चल जाता है। ताया उसी रास्ते पर चल रही है जिस रास्ते से मैं पार्टी में पहुंचा : कुछ दिन तक उसने एक घर में नौकरानी का काम किया और अब एक पब्लिक डाइनिंग रूम में (इस कस्बे में कोई उद्योग-धंधे नहीं हैं) रकाबी धोने का काम करती है।

"अभी उस रोज की बात है कि ताया ने बड़े गर्व से मुझे अपना डेलीगेट का पहला पास दिखलाया जो उसे महिला विभाग ने दिया है। उसके लिए यह कोरी एक दफ्ती का टुकड़ा नहीं है। उसके अन्दर मैं नई जिन्दगी को जन्म लेते देख रहा हूं और नये के इस जन्म में मैं उसकी मदद करने की हर कोशिश कर रहा हूं। इसके बाद का अगला कदम होगा एक बड़े कारखाने में काम करना। वहां मेहनतकशों की एक बड़ी जमात के अंग के रूप में उसमें धीरे-धीरे राजनीतिक परिपक्वता आयेगी। मगर यहां तो जो अकेला रास्ता उसके लिए खुला है, उसी को वह ले रही है।

"ताया की मां दो बार हमसे मिलने आ चुकी हैं। अपने अनजाने में ही वह इस बात की कोशिश कर रही हैं कि ताया को फिर उन्हीं ओछी बातों की जिन्दगी में घसीट लिया जाय, उसी टुच्ची जिन्दगी में जो चारों तरफ छोटे-मोटे स्वार्थों से घिरी हुई है। मैंने अलबिना को यह समझाने की कोशिश की कि उसे ऐसा कुछ न करना चाहिए जिससे कि उसके पिछले कुत्सित जीवन की छाया उस रास्ते को अंधेरा कर दे जिसे उसकी लड़की ने अपने लिए चुना है। मगर कोई नतीजा नहीं निकला। मैं महसूस कर रहा हूं कि एक-न-एक रोज मां अपनी बेटी के रास्ते में आड़े आयेगी और तब झगड़ा होकर रहेगा। प्यार लो,

"तुम्हारा—पावेल"

पुराने मत्सेस्ता में सेनेटोरियम नम्बर पांच...ईंट की एक तिमंजिला इमारत, पहाड़ के कगार पर खड़ी हुई। चारों तरफ घना जंगल और एक टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता समुद्र की तरफ को। खिड़कियां खुली हुई हैं और हवा के साथ गंधक के सोतों की गंध कमरे में आ रही है। पावेल कोर्चागिन कमरे में अकेला है। कल नये मरीज आयेंगे और तब उसे अपने कमरे का साथी मिलेगा। खिड़की के बाहर वह पैरों की आहट और एक परिचित आवाज सुनता है। कई लोग बात कर रहे हैं। मगर यह गहरी भारी आवाज उसने पहले कहां सुनी है ? स्मृति के धुंधले पर्दों के पीछे से, जहां वह छिपा पड़ा था मगर भूला न था, वह नाम उसके दिमाग में आता है : लेदेनेव इन्नोकेंती पावलोविच। वही है और कोई नहीं।

पावेल ने विश्वास से अपने मित्र को आवाज दी और क्षण भर बाद लेदेनेव उसके बिस्तर के बगल में खड़ा उससे हाथ मिला रहा था।

"तो कोर्चागिन अब भी मजे में चला जा रहा है? हां, तो तुम्हें अपने बारे में क्या कहना है? मैं यह नहीं सुनना चाहता कि तुमने लम्बी बीमारी का फैसला किया है? नहीं, यह नहीं होने का! तुम्हें मुझसे नसीहत लेनी चाहिए। डाक्टरों ने मुझे भी उठाकर ताक पर रखने की कोशिश की, मगर मैं बावजूद उनके मजे में चला जा रहा हूं।" और लेदेनेव दिल खोल कर हंसा।

मगर पावेल ने उस हंसी के पीछे छिपी हुई सहानुभूति और वेदना को अनुभव किया।

उन्होंने दो घंटे साथ गुजारे। लेदेनेव ने पावेल को मास्को की ताजी-ताजी खबरें सुनाईं। उसी से पावेल को खेती के समूहीकरण और गांवों की जिन्दगी के पुनर्संगठन के बारे में पार्टी के अहम फैसलों की बात पहले-पहल मालूम हुई और उसने प्यासे की भांति उसके एक-एक शब्द को पी लिया।

लेदेनेव ने कहा, "मैं तो सोच रहा था कि तुम अपने उक्रेन में कुछ हलचल मचा रहे होगे। मगर तुमने तो मुझे निराश कर दिया। पर कोई बात नहीं, मेरी हालत तो तुम से भी खराब थी। मैं तो सोचता था कि मैंने हमेशा के लिए बिस्तर पकड़ लिया और अब देखो मैं मजे में चल-फिर रहा हूं। आजकल जिन्दगी में आराम नहीं है। उसके बिना काम ही नहीं चल सकता! मैं अपने दिल का चोर तुमसे कहूं, मैं कभी-कभी सोचता हूं कि कैसा अच्छा हो अगर थोड़ा आराम कर सकूं। यही समझो कि चैन से सांस ले सकूं। यह भूलने से तो काम नहीं चलेगा कि मैं अब पहले की तरह जवान नहीं हूं और कभी-कभी दिन में दस-बारह घंटे काम करना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है। मगर उससे होता क्या है, मैं थोड़ी देर इस विचार से अपने जी को बहला लेता हूं और अपने बोझ को कम भी करने लग जाता हूं। मगर उसका नतीजा कुछ खास नहीं निकलता। पता नहीं कब और कैसे फिर तुम काम के पहाड़ के नीचे दब जाते हो और आधी रात के पहले घर लौटना नसीब नहीं होता। जितनी ही ताकतवर मशीन होती है, उतने ही तेज उसके पहिये दौड़ते हैं और हम लोगों का तो यह हाल है कि हमारी रफ्तार रोज-ब-रोज बढ़ती जाती है, यहां तक कि हमारे जैसे बुड्ढों को भी नौजवान बने रहना पड़ता है।"

लेदेनेव ने अपनी चौड़ी पेशानी पर हाथ फेरा और नरमी से बोला:

"और अब तुम मुझे अपने बारे में बतलाओ।"

अपनी पिछली मुलाकात से लेकर अब तक पावेल ने लेदेनेव को अपनी जिन्दगी का ब्यौरा दिया और बोलते समय उसने अपने दोस्त की प्यार भरी निगाहें अपने ऊपर महसूस कीं, मानो वे उसकी बात का समर्थन कर रही हों।

चट्टान के एक कोने में पेड़ों की छाया में सेनेटोरियम के कुछ मरीज एक छोटी-सी मेज के चारों तरफ बैठे हुए थे। उनमें से एक "प्रावदा" पढ़ रहा था, उसकी घनी भवों में बल पड़े हुए थे। उसकी काली रूसी कमीज, पुरानी-सी चिगुड़ी-मिगुड़ी टोपी, और दाढ़ी बढ़ा हुआ चेहरा, गढ़े में धंसी हुई नीली आंखें—इन सबमे पता चलता था कि वह पुराना खान मजदूर है। खिसांफ चेर्नोकोजोव को खान छोड़े और एक महत्वपूर्ण सरकारी पद पर पहुंचे बारह बरम हो चुके थे, मगर उमको देखकर ऐसा लगता था कि जैसे वह अभी-अभी खान में मे निकल कर आ रहा हो। उसकी चाल-ढाल, उसका बोलने का तरीका, उसकी हर चीज मे पता चलता था कि वह खान-मजदूर है।

चेर्नोकोजोव पार्टी की इलाकाई व्यूरो का मेम्बर और सरकार का सदस्य था। एक बहुत तकलीफदेह बीमारी उसकी ताकत को खाये जा रही थी: चेर्नोकोजोव की टांग में गैंगरीन था जिससे उसे सख्त नफरत थी, क्योंकि उसीके कारण वह करीब छः महीने से विस्तर पर पड़ा हुआ था।

उसके सामने, अपने विचार में डूबी हुई और सिगरेट का कश खींचती हुई जिगारेवा बैठी थी—अलेक्जांड्रा अलेक्सीयेवना जिगारेवा। उसकी उम्र सैंतीस साल थी और उनमें मे उन्नीस साल से वह पार्टी मेम्बर थी। पीटर्सवर्ग के अंडरग्राउंड आन्दोलन के साथी उसे "धातु मजदूर शुरोचका" पुकारते थे। वह जब लड़की ही थी, तभी उसे साइबेरिया निर्वासित किया गया था।

इस टोली का तीसरा सदस्य पांकोव था। उसका खूबसूरत सिर, जो किसी मूर्तिकार की छेनी से तराशा हुआ मालूम होता था, एक जर्मन पत्रिका पर झुका हुआ था। वह बीच-बीच में हाथ उठा कर सींग की डंडी वाली अपनी बड़ी-सी ऐनक को ठीक कर लेता था। कसरती शरीर वाले इस तीस साल के आदमी को अपनी लकड़ी की भारी टांग को घसीटते देख कर बड़ी तकलीफ होती थी। पांकोव सम्पादक और लेखक था और शिक्षा की कमिसारियट में काम करता था। योरप के बारे में उसे बहुत जानकारी थी और उसे कई विदेशी जबानें आती थीं। वह काफी पढ़ा-लिखा आदमी था, और कम बोलने वाला चेर्नोकोजोव उसके साथ आदर का बरताव करता था।

"तो वही तुम्हारे कमरे का साथी है?" जिगारेवा ने धीमे से चेर्नोकोजोव से कहा और उस कुर्सी की तरफ इशारा किया जिस पर पावेल बैठा था।

चेर्नोकोजोव ने अखबार पर से निगाह उठाई और उसकी पेशानी की झुर्रियां साफ हो गईं।

"हां! वह कोर्चागिन है। तुम्हें उसे जानना चाहिए शुरा। बड़ी बुरी बात है, बीमारी ने उसको लंगी मार दी है, नहीं तो वह हमारे बड़े काम का हो सकता था। वह कोमसोमोल की पहली पीढ़ी का आदमी है। मुझे इस बात

का यकीन है कि अगर हम उसकी मदद करें—और वही करने का मैंने फैसला किया है—तो वह अब भी काम कर सकेगा।"

पांकोव ने भी चेर्नोकोजोव की बात सुनी।

"उसे क्या बीमारी है?" शुरा जिगारेवा ने धीमे से पूछा।

"गृह-युद्ध का उपसंहार। उसकी रीढ़ की हड्डी में कोई तकलीफ है। मैंने यहां के डाक्टर से बात की थी और उसने मुझे बतलाया कि उसके पूरे शरीर में लकवा मार जाने का खतरा है। बेचारा लड़का!"

"मैं जाकर उसे यहां ले आती हूं," शुरा ने कहा।

यही उनकी दोस्ती की शुरुआत थी। पावेल उस समय यह नहीं जानता था कि आगे चल कर उसे जिगारेवा और चेर्नोकोजोव से इतना प्यार हो जायगा और आगामी बीमारी के सालों में वे ही उसका सहारा बनेंगे।

जिन्दगी बदस्तूर बढ़ती रही। ताया काम करती थी और पावेल पढ़ता था। स्टडी सर्किल के काम को दुबारा शुरू करने से पहले एक और मुसीबत अनचिते में उस पर टूट पड़ी। लकवे से उसकी दोनों टांगें बिलकुल बेकार हो गईं। अब उसे सिर्फ अपने दाहिने हाथ पर बस रह गया। जब बार-बार कोशिश करने के बाद आखिरकार उसकी समझ में यह बात आ गई कि अपने शरीर पर उसका कोई बस नहीं रहा, तो उसने इतने जोर से दांत अपने होंठ पर गड़ाये कि खून आ गया। ताया को इस बात से बड़ा क्षोभ और बड़ी पीड़ा होती थी कि वह पावेल की कोई मदद करने में असमर्थ थी। मगर उसने बड़ी वीरता से अपने मन के उस भाव को छिपा लिया। लेकिन पावेल ने मुस्करा कर मानो क्षमा मांगते हुए ताया से कहा:

"ताया अब हम दोनों को एक-दूसरे से अलग हो जाना चाहिए। यह चीज हमारे इकरारनामे में नहीं थी। आज मैं इस बारे में ठीक से सोचूंगा।"

ताया ने उसको बोलने नहीं दिया। वह सिसकियां लेने लगी और रोते-रोते अपना चेहरा उसने पावेल के सीने में छिपा लिया।

आर्तेम को जब अपने भाई की इस आखिरी बदनसीबी की खबर मालूम हुई तो उसने अपनी मां को खत लिखा। मारिया याकोव्लेव्ना सब कुछ छोड़ कर फौरन अपने बेटे के पास गई। अब तीनों साथ रहने लगे। ताया और पावेल की मां में शुरू से ही बनने लगी।

पावेल सब कुछ के बावजूद अपना अध्ययन चलाता रहा।

जाड़े की एक शाम को ताया ने घर आकर अपनी पहली विजय का समाचार दिया—वह शहर सोवियत के लिए निर्वाचित हुई थी। उसके बाद पावेल की ताया से बहुत कम मुलाकात हो पाती। सेनेटोरियम की रसोई में दिन भर काम करने के बाद, और उसका काम रकाबियां धोना था, ताया

सीधे सोवियत में जाती और खुद बहुत रात गये घर लौटती, तो थकी होती। मगर तमाम खयालात उसके अन्दर भरे होते। कुछ ही रोज बाद वह पार्टी मेम्बर की उम्मीदवारी के लिए दरखास्त देगी और वह बड़ा आतुर उत्सुकता से अपने उस चिर-प्रतीक्षित दिन की तैयारी कर रही थी। और तभी दुर्भाग्य ने पावेल पर एक और चोट की। पावेल की बराबर बढ़ती हुई बीमारी अन्दर-ही-अन्दर अपना काम किये जा रही थी। पावेल की दाहिनी आंख में तेज जलन और भयानक दर्द हुआ जो तेजी से बाईं आंख में भी पहुंच गया। एक काला पर्दा गिर गया और उसके चारों तरफ की दुनिया बुझ गई और जिन्दगी में पहली बार पावेल ने अंधे हो जाने की भयानकता को समझा।

एक नई बाधा चुपके-चुपके आकर उसके रास्ते में खड़ी हो गई थी—एक भयंकर, अजेय दीख पड़ने वाली बाधा। उसके कारण ताया और पावेल की मां को बड़ी निराशा हुई। मगर पावेल बर्फ की तरह सर्द और खामोश था। उसने मन में संकल्प करते हुए कहा :

"मुझे इन्तजार करना चाहिए, देखूं क्या होता है। अगर सचमुच आगे बढ़ने की कोई संभावना न हो, अगर लड़ने वालों की कतार में वापस पहुंचने की मेरी तमाम कोशिशों को यह आंख की रोशनी का चला जाना खतम किये दे रहा हो, तो मैं जिन्दगी की कहानी को ही समाप्त कर दूंगा।"

पावेल ने अपने दोस्तों को चिट्ठियां लिखीं और उसके दोस्तों ने उसे जवाब देते हुए यह लिखा कि हिम्मत से काम लो और अपनी जिन्दगी की लड़ाई को बुलन्दी से जारी रखो।

कठिन संघर्ष के इन्हीं दिनों में एक रोज ताया बहुत खुश-खुश घर आई और उसने ऐलान किया :

"मैं पार्टी की उम्मीदवार हो गई, पावलुशा।"

पावेल ने उस सेल-मीटिंग का वृत्तान्त आवेश में भरी हुई ताया के मुंह से सुना जिसमें उम्मीदवारी की उसकी अर्जी मंजूर हुई थी और उस समय पावेल को अपने वे दिन याद आये जब उसने पार्टी के अन्दर कदम रखा था।

उसने ताया का हाथ दबाते हुए कहा, "अच्छा तो कामरेड कोर्चागिन, तुम और मैं मिल कर अब एक कम्युनिस्ट फ्रैक्शन बन गये।"

अगले रोज उसने पार्टी की जिला कमिटी के मंत्री को एक खत लिखा जिसमें उससे दरखास्त की कि वह आकर उससे मिले। उसी शाम को कीचड़ में सनी हुई एक गाड़ी मकान के सामने आकर रुकी और उसके एक मिनट बाद वोलमर पावेल का हाथ खूब जोरों से दबा रहा था। वोलमर एक अधेड़ लातावियन था और उसकी खूब फैली हुई, कानों तक पहुंचती हुई दाढ़ी थी।

"कहो क्या हाल है ? तुम्हारी इन हरकतों का क्या मतलब है ? फौरन उठ बैठो। हम तुम्हें गांव में काम करने भेज देंगे," उसने हंसते हुए कहा।

वह दो घंटे तक पावेल के पास रहा और उस मीटिंग के बारे में भी भूल गया जिसमें उसे जाना था। वह कमरे में टहलता रहा और पावेल के इस आग्रहपूर्ण अनुरोध को सुनता रहा कि उसे कोई काम दिया जाय।

पावेल ने जब अपनी बात खतम कर ली तो उसने कहा, "स्टडी सर्किलों की बात करना छोड़ दो। तुम्हें आराम करना है। और हमें तुम्हारी आंख की भी फिक्र करनी है। मुमकिन है अब भी कुछ हो सके। कैसा रहे अगर तुम अपनी आंख मास्को के किसी विशेषज्ञ को दिखलाओ ? सोच देखो...।"

मगर पावेल ने उसको बीच में ही टोकते हुए कहा :

"कामरेड वोलमर, मुझे आदमी चाहिए, जीते-जागते रक्त व मांस के आदमी ! आज मुझे उन्हीं की जरूरत है और जितनी जरूरत आज है, उतनी पहले कभी नहीं थी। मेरे पास लड़कों को भेजिए, उनको जिनके पास सबसे कम अनुभव है। वे यहां गांवों में बहुत उग्र वामपक्षी होते जा रहे हैं। पंचायती खेती से उनकी शक्तियों को काफी निकास नहीं मिलता, वे अपने कम्यून बनाना चाहते हैं। कोमसोमोलों को तो आप जानते ही हो, अगर उन्हें पीछे न खींचा जाय तो कुछ अजब नहीं कि वे दस्ते के आगे-आगे चलने लगें। मैं खुद भी ऐसा ही था।"

वोलमर टहलता-टहलता रुक गया।

"तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई ? आज ही तो देहात से यह खबर मिली है।"

पावेल मुस्कराया।

"मेरी बीवी ने मुझे बतलाया। तुम्हें शायद उसकी याद हो। उसे कल पार्टी के अन्दर ले लिया गया।"

"तुम्हारा मतलब कोर्चागिन से है जो रकाबियां धोती है ? अच्छा तो वह तुम्हारी बीवी है ! मुझे नहीं मालूम था !" कुछ देर के लिए वह चुप हो गया। मगर तभी उसे कोई खयाल आया और उसने अपने माथे पर हाथ मारा। मैं समझ गया कि तुम्हारे पास किसे भेजूंगा—लेव बर्सेनेव को। उससे अच्छे साथी की तुम आकांक्षा नहीं कर सकते। वह बिलकुल तुम्हारे दिल का आदमी है। तुम दोनों में खूब पटेगी—दो हाई फ्रीक्वेन्सी ट्रान्सफार्मरों की तरह। मैं भी कभी बिजली का काम करता था और उसी के शब्द अब तक मुझे याद हैं। लेव तुम्हारे लिए रेडियो तैयार कर देगा। इस काम में वह बहुत उस्ताद है। मैं अक्सर उसके घर पर कान में इयरफोन लगाये दो-दो बजे रात तक बैठा रहता हूं। मेरी बीवी को तो मुझ पर शक होने लगा। वह जानना चाहती थी कि मैं क्यों इतनी-इतनी देर करके घर लौटता हूं।"

कोर्चागिन मुस्कराया।

उसने पूछा, "बर्सेनेव कौन है ?"

वोलमर ने टहलना बंद कर दिया और बैठ गया।

"वह हमारा नाजिर है, मगर सच पूछो तो उसको यह काम उतना ही आता है जितना मुझे बैले नृत्य करना। अभी हाल तक वह एक महत्वपूर्ण पद पर था। सन् १९१२ से वह आंदोलन में है और क्रांति के समय से ही पार्टी मेम्बर है। गृहयुद्ध के दिनों में वह दूसरी घुड़सवार फौज की क्रांतिकारी अदालत में काम कर चुका है। यही वह वक्त था जब व्हाइट-गार्ड पिस्सुओं की सफाई की जा रही थी। वह जारित्सिन में भी था और दक्खिनी मोर्चे पर भी। फिर कुछ दिनों तक वह सुदूर-पूर्वी प्रजातंत्र की सर्वोच्च फौजी अदालत का भी सदस्य था। वहां उसे बहुत काम करना पड़ता था; और उसके दिन आसान नहीं गुजरते थे। आखिरकार उसे तपेदिक हो गया। तब वह उस सुदूर-पूर्वी इलाके को छोड़ कर यहां काकेशस में चला आया। पहले वह वहां एक सूबाई अदालत का चेयरमैन और टेरीटोरियल अदालत का नायब चेयरमैन रहा। फिर उसकी फेफड़े की बीमारी ने उसे बिलकुल ही माजूर कर दिया। तब इसके सामने यही रास्ता रह गया कि या तो यहां आकर आराम करे या मर जाय। इस तरह हमको इतना अच्छा नाजिर मिला। यह काम भी अच्छा ही है। इसमें बहुत भाग-दौड़ नहीं करनी पड़ती और उसके लिए ऐसे ही काम की जरूरत थी। धीरे-धीरे यहां के लोगों ने उसके जिम्मे एक सेल कर दिया। उसके बाद वह जिला कमिटी के अन्दर चुना गया। और फिर देखते-देखते एक राजनीतिक स्कूल का भार उसे सौंप दिया गया और अब वह कन्ट्रोल कमीशन में है। वह ऐसे तमाम महत्वपूर्ण कमीशनों का स्थायी सदस्य है जो कठिन झगड़ों को सुलझाने के लिए बनाये जाते हैं। इसके अलावा उसे शिकार का शौक है। उसे रेडियो भी बहुत अच्छा लगता है और गोकि अब उसके पास सिर्फ एक फेफड़ा है, लेकिन यह तुम उसको देख कर भांप नहीं सकते। उसके अन्दर शक्ति तो फूटी पड़ती है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि उसकी मौत जिला कमिटी और अदालत के रास्ते में ही कहीं होगी।"

पावेल ने उसकी बात को काटा।

तेज स्वर में उसने पूछा, "तुम लोगों ने आखिर क्यों उस पर इतना बोझ लाद दिया है ? यहां तो वह पहले से भी ज्यादा काम कर रहा है।"

वोलमर ने उसको मजाक के अन्दाज में देखा और कहा :

"और मान लो मैं तुम्हें कोई स्टडी सर्किल या ऐसा ही कोई काम थमा दूं, तो लेव जरूर यही कहेगा : 'तुम लोगों ने आखिर क्यों उस पर इतना बोझ

लाद दिया है ?' मगर जहां तक उसकी अपनी बात है, वह यही कहता है कि मुझे एक साल तक डट कर काम करना मंजूर है, मगर पांच साल अस्पताल में पड़े रह कर खटिया तोड़ना मंजूर नहीं। ऐसा लगता है कि समाजवाद कायम होने के पहले हम लोग अपने आदमियोंकी ठीक देखभाल न कर सकेंगे।"

"यह बात बिलकुल सच है। मुझे खुद जीवन और उत्साह का एक वर्ष, बेकार के पांच वर्षों से ज्यादा पसंद है। मगर यह भी मानना पड़ेगा कि हम लोग कभी-कभी अपनी शक्तियों को बहुत बुरी तरह बर्बाद कर देते हैं, जिसका हमें कोई हक नहीं है। अब मैं इस बात को समझ गया हूं कि यह चीज वीरता का चिह्न उतना नहीं है, जितना कि अयोग्यता और गैर-जिम्मेदारी का। अब मैं इस बात को समझने लगा हूं कि मुझे अपनी तंदुरुस्ती के बारे में इतनी लापरवाही करने का हक नहीं था। अब मैं देख रहा हूं कि ऐसा करके मैंने कोई बडी वीरता का काम नहीं किया। अगर मैंने अपने साथ वे सब फिजूल सख्तियां न की होतीं, तो शायद कुछ और साल चल सकता था। दूसरे शब्दों में, वामपंथी बालव्याधि ही एक मुख्य खतरा है।"

वोलमर ने सोचा, "अभी तो यह ऐसी बात कह रहा है, मगर जरा पैर पर खड़े होने दो और फिर वह सारी बातें भूल जायगा और उसे सिर्फ काम की ही याद रह जायगी।" मगर उसने कुछ कहा नहीं।

दूसरे रोज शाम को लेव बर्सेनेव आया। आधी रात को वह पावेल के यहां से गया तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे अपना भाई मिल गया हो।

सबेरे के वक्त लोग कोर्चागिन के घर की छत पर रेडियो का एरियल लगाने लगे और लेव घर में बैठा रेडियो तैयार करने लगा। वह काम करता जाता था और पावेल को अपनी पिछली जिन्दगी की दिलचस्प कहानियां सुनाता जाता था। पावेल उसको देख नहीं सकता था, मगर उसके बारे में ताया ने पावेल को जो-कुछ बताया था, उसके आधार पर उसने समझ लिया था कि लेव एक लम्बा, सुनहरे बालों और नीली आंखों वाला नौजवान है जिसकी भाव-भंगिमाओं में हृदय का आवेग भरा होता है। लेव से पहली बार मिलने पर पावेल ने अपने मन में उसकी ठीक यही छवि उतारी थी।

शाम होते-होते कमरे में रेडियो के तीन वॉल्व चमकने लगे। लेव ने गर्व से पावेल को इयरफोन पकड़ाया। तमाम आवाजें हवा में भरी हुई थीं। पोर्ट के ट्रांसमिटर चिड़ियों की तरह चूं-चूं कर रहे थे और पास ही समुद्र पर किसी जहाज का वायरलेस डॉटों और डैशों की लहरें भेज रहा था। मगर इन सब तरह-तरह के शोरों और आवाजों के बीच से तार ने एक शांत और आत्म-विश्वास से भरी हुई आवाज को पकड़ लिया :

"यह मास्को है...।"

उस छोटे से वायरलेस ने दुनिया के तमाम हिस्सों के आठ ब्राडकास्टिंग स्टेशन पावेल की पहुंच के भीतर ला दिये। वह जिन्दगी, जिससे अब वह वंचित कर दिया गया था, इयरफोन के अन्दर से अब फिर उसके पास तक पहुंचने लगी। एक बार फिर वह जिन्दगी की तेज धड़कन महसूस करने लगा।

पावेल की आंखों में खुशी की चमक देखकर थका हुआ बर्सेनेव संतोष से मुस्कराया।

उस बड़े से मकान में चारों ओर निस्तब्धता थी। ताया नींद में बेचैनी से बड़बड़ा रही थी। इन दिनों पावेल की मुलाकात अपनी बीवी से बहुत कम ही हो पाती थी। वह बहुत रात गये थकी और सर्दी से कांपती हुई घर लौटती। उसका काम उसका ज्यादा-से-ज्यादा समय लेता जा रहा था और शायद ही कभी उसको एक खाली शाम मिलती। इस चीज के बारे में बर्सेनेव ने उससे जो-कुछ कहा था, उसकी याद पावेल को आई :

"अगर किसी बोल्शेविक की बीवी भी पार्टी कामरेड हो, तो दोनों में शायद ही कभी भेंट हो पाती है। मगर इसके दो फायदे हैं : एक तो वे कभी एक-दूसरे से ऊबते नहीं और दूसरे उन्हें झगड़ने का वक्त ही नहीं मिलता!"

और सचमुच पावेल आपत्ति करता भी तो किस आधार पर? आखिर इसी चीज की तो संभावना थी। एक वक्त था कि ताया की सभी शामें उसी को समर्पित थीं। तब उनके आपसी सम्बंध में ज्यादा गरमाहट, ज्यादा प्यार और नरमी थी। मगर तब वह केवल उसकी पत्नी थी, अब वह उसकी शिष्या और पार्टी कामरेड है।

वह जानता था कि ताया में जितनी ही राजनीतिक प्रौढ़ता आयेगी, उतना ही कम वक्त वह दे सकेगी और उसने इस अनिवार्यता के आगे सिर झुका दिया।

उसे एक स्टडी सर्किल लेने का काम दिया गया और एक बार फिर शाम के वक्त घर में आवाजें गूंजने लगीं। ये घंटे, जो पावेल इन नौजवानों के साथ गुजारता था, उसके अंदर नई शक्ति और नया उत्साह भर देते थे।

बाकी वक्त रेडियो सुनने में निकल जाता था, यहां तक कि खाने के वक्त भी उसकी मां को उसके हाथ से इयरफोन छुड़ाने में मुश्किल होती थी।

रेडियो उसे वह चीज देता था जो उसके अंधेपन ने उससे छीन लिया—ज्ञान प्राप्त करने का अवसर। उसके अंदर ज्ञान प्राप्त करने की यह जो जबर्दस्त भूख थी, उसके कारण वह उस दर्द को भूल जाता था जो उसके शरीर को तोड़े डाल रहा था, उस आग को जो उसकी आंखों में सलाखें चुभो रही थी और उन मुसीबतों को जिनका पहाड़ उसके ऊपर टूटा था।

जब पावेल की पीढ़ी के बाद के नौजवान कम्युनिस्टों की सफलताओं की खबर मैगनितोगोर्स्क से रेडियो पर आई तो पावेल को बेहद खुशी हुई।

उसकी सूनी आंखों के आगे उन निर्मम बर्फ के तूफानों की तसवीर खिच गई, यूराल के उस तीखे जाड़े-पाले की जो भूखे भेड़ियों की तरह क्रूर था। उसने हवा का तेज सनसनाना सुना और उड़ती हुई बर्फ के बीच से दूसरी पीढ़ी के कोमसोमोलों की एक टुकड़ी को, आर्क लैम्पों की रोशनी में, एक विशाल कारखाने की इमारत की छत पर, उस कारखाने को बर्फ के हमले से बचाने के काम में लगा देखा। इसकी तुलना में जंगल का वह रेल की पटरी बिछाने का काम, जिसमें कीव के कोमसोमोलों की पहली पीढ़ी ने प्रकृति के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, कितना छोटा था! देश ने प्रगति की थी और उसके साथ ही जनता ने।

और नीपर नदी पर पानी ने लोहे के बांधों को तोड़ दिया था, आदमी और मशीनों को बहा ले गया था। और एक बार फिर कोमसोमोल नौजवानों ने उस दरार के बीच अपने को झोंक दिया था और दो दिन तक उस निरंकुश प्रवाह के खिलाफ डट कर मोर्चा लेते हुए उस पर काबू पा लिया था। इस महान संघर्ष में एक नई पीढ़ी आगे-आगे चल रही थी और इन वीरों में पावेल ने अपने पुराने साथी पांक्रातोव का नाम सुना।

अठारह

मास्को में पहले कुछ दिन वे लोग एक संस्था के पुराने कागजात रखने की जगह में रहे। उसका प्रधान पावेल को एक खास क्लिनिक में ठहराने का बंदोबस्त कर रहा था।

अब पावेल की समझ में आया कि तब बहादुरी कितनी आसान थी, जब उसके पास अपनी जवानी थी और एक मजबूत जिस्म था। लेकिन अब जब जिन्दगी ने उसे अपने फौलादी पंजे में दबोच लिया था, यह सब उसके लिए इज्जत की बात हो गई थी।

पावेल कोर्चागिन को मास्को आये डेढ़ साल हो गये थे—वर्णनातीत पीड़ा के अठारह महीने।

आंख के क्लिनिक में प्रोफेसर आवरबाक ने पावेल को साफ-साफ बतला दिया था कि उसकी आंख की रोशनी लौटने की कोई उम्मीद नहीं है।

भविष्य में जब सूजन गायब हो जायगी, तब मुमकिन है आपरेशन हो सके। तब तक उसने सूजन को रोकने के लिए एक आपरेशन की सलाह दी।

पावेल से जब उसकी अनुमति मांगी गई, तो उसने डाक्टरों से कहा कि वे जो कुछ भी जरूरी समझें, करें।

तीन बार उसने मौत के स्याह डैनों के स्पर्श को अनुभव किया जब वह घंटों आपरेशन की मेज पर लेटा रहा और डाक्टर का चाकू उसके थाइरॉयेड ग्लैन्ड को निकालने के लिए उसके गले में घूमता रहता था। मगर पावेल कस कर जिन्दगी को पकड़े हुए था और कई घंटों की अनिश्चय-भरी प्रतीक्षा की यातना के बाद ताया फिर अपने प्रिय पावेल को पा लेती। उसके चेहरे पर मौत सरीखा पीलापन होता, मगर वह हमेशा की तरह सजीव, शांत और नम्र दिखाई देता :

"घबराओ मत प्यारी, मुझे मारना इतना आसान नहीं है। मैं जिन्दा रहूंगा, अगर और किसी के लिए नहीं तो इसीलिए कि मैं इन विद्वान डाक्टरों की कही हुई तमाम बातों को उलट-पुलट कर रख देना चाहता हूं। मेरी तन्दुरुस्ती के बारे में वे जो कुछ कहते हैं, सब ठीक है, मगर उनकी सबसे बड़ी गलती यह है कि वे मुझे काम के लिए बिलकुल अयोग्य करार देकर घूर पर उठा कर रख देना चाहते हैं। देखूंगा कि वे ऐसा कैसे कर पाते हैं।"

पावेल का संकल्प था कि नई जिन्दगी के निर्माताओं की कतार में अपनी जगह लिये बिना वह नहीं रहेगा। अब उसे मालूम हो गया था कि उसे क्या करना चाहिए।

जाड़ा बीत गया था और खुली खिड़कियों में से बसन्त अन्दर घुस रहा था। पावेल का एक और ऑपरेशन हुआ और वह उससे जिन्दा निकल आया। उसने संकल्प किया कि वह कितना ही कमजोर क्यों न हो, अस्पताल में अब और नहीं रहेगा। इतने महीनों तक लोगों की इतनी पीड़ा के बीच रहना, चारों तरफ ऐसे लोगों के रोने-कराहने से घिरे रहना, जिनके लोगों के बचने की कोई उम्मीद न थी, खुद अपनी तकलीफ को सहने से ज्यादा मुश्किल था।

और इसलिए जब एक और ऑपरेशन का प्रस्ताव किया गया तो उसने रुखाई से जवाब दिया :

"नहीं, अब नहीं। बहुत हो चुका। मैंने विज्ञान के लिए अपना काफी खून दे दिया। अब जो बचा है, उसके लिए मेरे पास दूसरा उपयोग है।"

उसी रोज पावेल ने केंद्रीय समिति को खत लिखा जिसमें उसने बतलाया कि चूंकि इलाज की तलाश में अब और भटकना बेकार है, इसलिए वह मास्को में रहना चाहता है जहां उसकी बीवी इन दिनों काम करती है। यह पहला मौका था जब उसने पार्टी से सहायता मांगी थी। उसकी दरखास्त मंजूर

हो गई और मास्को की सोवियत ने उसको रहने की जगह दे दी। वह अस्पताल से चला तो उसके मन में यही कामना थी कि फिर कभी यहां लौटना न पड़े।

क्रोपोत्किन्स्काया के पास की एक खामोश गली में उसका यह मामूली-सा कमरा उसके लिए शान-शौकत की सबसे ऊंची चोटी था। और अक्सर रात को जागते समय पावेल को यह विश्वास करने में कठिनाई होती कि अब अस्पताल सचमुच उसके लिए बीते दिनों की एक चीज हो गया था।

ताया अब तक पूरी पार्टी मेम्बर हो गई थी। वह बहुत अच्छी कार्यकर्ता थी और व्यक्तिगत जिन्दगी की दुखद घटनाओं के बावजूद कारखाने के सबसे आगे बढ़े हुए मजदूरों से किसी मामले में पीछे नहीं रहती थी। उसके साथ के मजदूरों ने इस शांत और विनम्र युवती के प्रति अपना सम्मान दिखलाने के लिए उसे कारखाने की ट्रेड यूनियन कमिटी का मेम्बर चुन लिया। पावेल को अपनी पत्नी के लिए गर्व होता था क्योंकि वह धीरे-धीरे एक सच्ची बोल्शेविक बनती जा रही थी और इससे पावेल को खुद अपनी तकलीफ को सहने में मदद मिलती थी।

बाजानोवा किसी काम से मास्को आई और पावेल से मिलने गई। उन दोनों में बड़ी देर तक बातें हुईं। पावेल जब उसको अपनी योजनाएं बतलाने लगा कि कैसे वह जल्दी ही नई जिन्दगी के निर्माताओं की कतार में पहुंच जायगा, तो उस वक्त वह आवेश से चंचल हो उठा।

बाजानोवा ने पावेल की कनपटी पर चांदी के तारों को देखा और धीमे से कहा :

"साफ दिखाई देता है कि तुम्हें बहुत तकलीफों के बीच से गुजरना पड़ा है, मगर तब भी तुम्हारा उत्साह जरा भी कम नहीं हुआ। तुम्हें और क्या चाहिए ? मुझे खुशी है कि तुमने उस काम को शुरू करने का फैसला किया है जिसके लिए तुम पिछले पांच सालों से अपने-आपको तैयार करते आ रहे हो। मगर कैसे करोगे ?"

पावेल आत्मविश्वास से मुस्कराया।

"कल मेरे दोस्त मुझे दफ्ती का एक स्टेंसिल लाकर देंगे जिसकी मदद से मैं लाइनों को एक-दूसरे पर चढ़ाये बिना सीधे-सीधे लिख सकूंगा। उसके बिना मैं लिख ही नहीं सकता। बहुत सोचने के बाद मुझे यह तदबीर सूझी। होगा यह कि दफ्ती के बड़े सिरे मेरी पेन्सिल को सीधी लाइन से इधर-उधर बहकने न देंगे। इसमें क्या शक कि ऐसे बिना देखे लिखना, और जब कि तुम अपने लिखे हुए को पढ़ भी न सको, बहुत मुश्किल काम है। मगर नामुमकिन

नहीं। मैंने उसे करके देखा है, और जानता हूं कि किया जा सकता है। इसका तरीका समझने में मुझे बहुत वक्त लगा, मगर अब मैंने धीरे-धीरे, हर अक्षर को रुक-रुक कर लिखना सीख लिया है और परिणाम काफी संतोषजनक है।"

और इस तरह पावेल ने काम शुरू किया।

उसने वीर कोतोव्स्की डिवीजन के बारे में एक उपन्यास लिखने की बात सोची थी, उसका शीर्षक अपने-आप उसे सूझ गया : तूफान के बेटे।

उसकी समूची जिन्दगी अब इस उपन्यास के लिखने में ही लगी हुई थी। धीरे-धीरे एक-एक लाइन करके पन्ने निकलने लगे। काम करते वक्त वह अपनी तसवीरों की दुनिया में पूरी तरह डूबा रहता और उसे अपने आस-पास की किसी चीज का ध्यान न रह जाता। जीवन में पहली बार उसे सृजन की पीड़ा की अनुभूति हुई और उसने उस क्षोभ और दर्द को महसूस किया जिसे कलाकार उस वक्त महसूस करता है जब जीते-जागते, कभी न भूलने वाले दृश्य, जो आंखों के सामने खड़े दिखते हैं, कागज पर उतरते ही बेजान और पीले लगने लगते हैं।

उसे अपना लिखा हुआ एक-एक शब्द याद रखना पड़ता। जरा-सी भी बाधा से उसके विचारों की शृंखला टूट जाती और उसका काम रुक जाता। उसकी मां अपने बेटे के काम को भय और शंका की दृष्टि से देखती थी।

कभी-कभी उसे पूरे-पूरे सफे और यहां तक कि अध्याय भी अपनी याद से सुनाने पड़ते थे और ऐसे मौके आते थे जब उसकी मां को डर लगने लगता था कि पावेल का दिमाग खराब हो रहा है। उसके काम करते समय उसके पास जाने का भी [illegible] साहस न होता, मगर फर्श पर गिरे हुए कागजों को चुनते समय [illegible]ते-डरते पावेल से कहती :

"[illegible] की इच्छा है पावलुशा कि तुम और कोई काम करो। इस तरह जो तुम [illegible]दम बैठे लिखा करते हो, यह तुम्हारे लिए अच्छी बात नहीं ...।"

पावेल हंस कर उसकी शंकाओं को उड़ा [illegible] और अपनी बुड्ढी मां को आश्वासन देता कि घबराने की कोई बात नहीं है। अभी उसका दिमाग ठीक है।

उसकी किताब के तीन अध्याय हो गये थे। पावेल ने उन्हें कोतोव्स्की डिवीजन के अपने पुराने सैनिक साथियों के पास राय के लिए ओदेसा भेजा और थोड़े ही रोज बाद उसे एक [illegible] मिला जिसमें उसके काम की तारीफ की गई थी। मगर उसकी पांडुलिपि लौटते समय डाक में खो गई। छः महीनों के काम पर पानी फिर गया। यह उसके लिए एक भयानक आघात था। उसे बहुत क्षोभ हो रहा था कि उसने क्यों अपनी पांडुलिपि, जिसकी नकल भी उसके पास नहीं थी, बाहर भेजी। लेदेनेव को जब यह बात मालूम हुई तो उसने पावेल को डांटा :

"तुम इतने लापरवाह कैसे हो गये? मगर कोई बात नहीं, बीती बात को भूल जाओ, उस पर सिर धुनने से कोई लाभ नहीं। अब फिर से शुरू करो।"

"मगर इन्नोकेंती पावलोविच ! मेरी तो छः महीने की मेहनत लुट गई। हर रोज मैंने आठ-आठ घंटे काम किया था। जहन्नुम में जायें सब।"

लेदेनेव ने अपने दोस्त को सांत्वना देने की पूरी कोशिश की।

काम को दुबारा शुरू करने के अलावा कोई चारा न था। लेदेनेव ने उसे कागज लाकर दिया और पांडुलिपि के टाइप कराने में उसकी मदद की। छः हफ्ते बाद पहला अध्याय दुबारा लिख लिया गया था।

कोर्चागिन के घर के ही एक हिस्से में अलेक्सियेव नाम का एक परिवार रहता था। उनका बड़ा लड़का अलेक्जांडर कोमसोमोल की एक जिला कमिटी का मंत्री था। उसकी बहन गालिया एक कारखाने के ट्रेनिंग स्कूल में पढ़ती थी। गालिया अठारह साल की एक खुशमिजाज लड़की थी। पावेल ने अपनी मां से कहा कि वह गालिया से बात करे और पता लगाये कि क्या वह पावेल के सेक्रेटरी की हैसियत से उसके काम में मदद करने के लिए तैयार होगी। गालिया फौरन राजी हो गई। वह एक रोज मुस्कराती हुई आई और उसे बड़ी खुशी हुई जब उसे मालूम हुआ कि पावेल एक उपन्यास लिख रहा है।

उसने कहा, "कामरेड कोर्चागिन, मैं बड़ी खुशी से तुम्हारे काम में हाथ बटाऊंगी। पिता जी की उन उबा देने वाली गश्ती चिट्ठियों से, जिनमें बतलाया जाता है कि पंचायती घरों में कैसे सफाई रखनी चाहिए, कहीं ज्यादा मजा इस काम में आयेगा।"

उस दिन से पावेल का काम दुगनी तेजी से हो[illegible] लगा। स[illegible] एक महीने में इतना काम हो गया कि पा[illegible] को अचम्भा हुआ[illegible] गालिया के प्रसन्नचित्त सहयोग और सहानुभूति से उसे अपने काम [illegible] थी। उसकी पेन्सिल तेजी से कागज [illegible] चलती जाती थी और ज[illegible] उसे खास तौर पर अच्छा मालूम होता, तो वह उसे कई-कई बार प[illegible] पावेल की सफलता से उसे [illegible] खुशी होती। उस घर में संभवतः वह अकेली थी जिसे पावेल के काम में विश्वास था। बाकी लोग सोचते थे कि इसका कोई नतीजा न निकलेगा और पावेल मजबूर होकर बेकार बैठे रहने की हालत में अपनी सूनी घड़ियों को भरने के लिए कुछ कर रहा है।

लेदेनेव किसी काम से शहर से बाहर गया हुआ था। मास्को लौटने पर उसने पहले के कुछ अध्याय पढ़े और कहा :

"लिखे जाओ दोस्त। मुझे कोई संदेह नहीं कि तुम्हारी विजय होगी। कामरेड पावेल, तुम्हारे सामने महान सुख का साम्राज्य बिखरा हुआ है। मुझे पक्का विश्वास है कि तुम्हारा लड़ने वालों की कतार में वापस पहुंचने का सपना जल्द ही पूरा होगा। उम्मीद मत हारो बेटा !"

वह बुड्ढा पावेल को इतने उत्साह में देखकर वहां से लौटा तो संतुष्ट था।

गालिया नियमित [illegible] से आती और उसकी पेन्सिल सफों पर तेजी से दौड़ती रहती और अविस्मरणीय अतीत के दृश्य फिर से जी उठते। उन क्षणों में जब पावेल स्मृतियों की बाढ़ में बहता हुआ अपने विचारों में खो जाता, तो गालिया को उसकी बरौनियों का फड़कना दिखाई देता और उसकी आंखों से पता चलता कि विचार कैसी तेजी से उसके आगे आ रहे हैं। इस बात पर विश्वास करने को जी नहीं होता कि वे आंखें देख नहीं सकती थी क्योंकि उसकी साफ बेदाग पुतलियों में बहुत जान नजर आती थी।

दिन का काम खतम होने पर वह अपना लिखा हुआ पावेल को पढ़ कर सुनाती। पावेल गौर से उसे सुनता और उसकी पेशानी पर झुर्रियां पड़ जातीं।

"तुम्हारी त्यौरी में बल क्यों पड़ रहे हैं? अच्छा नहीं हुआ क्या?"

"नहीं गालिया, बात बनी नहीं।"

जो सफे उसे अच्छे न लगते, उन्हें वह फिर से खुद ही लिखता। स्टेन्सिल के उस तंग, संकरे-से टुकड़े के कारण उसे काम में रुकावट होती और वह कभी-कभी झुंझला कर उसे दूर फेंक देता। और फिर जीवन से क्रुद्ध होकर, क्योंकि उसीने उसकी आंख की रोशनी छीन ली थी, वह अपनी पेन्सिल को तोड़ देता और ओठों को चबाने लगता, यहां तक कि खून निकल आता।

जैसे-जैसे काम समाप्ति पर आ रहा था, निषिद्ध भावनाएं उसकी चिर जागरूक [illegible] के बंधनों को तोड़े डाल रही थीं। ये निषिद्ध भावनाएं थीं—[illegible] सच्ची मानवीय अनुभूतियां, प्यार की और दुलार की अनुभूतियां, [illegible] अधिकार अकेले उसको छोड़ कर दुनिया में सब को था। [illegible] था कि अगर उनमें से किसी एक के सामने भी उसने घुटना [illegible] तो उसका परिणाम अत्यंत करुण होगा।

[illegible] जब [illegible] कारखाने से घर लौटती तो उस वक्त भी पावेल को काम करता [illegible] और पारिशा याकोवलेवना से बहुत धीमे-धीमे दो-एक बात करके, ताकि पावेल के काम में रुकावट न पड़े, वह सोने के लिए चली जाती।

आखिरकार अंतिम अध्याय लिखा गया। फिर कुछ दिन तक गालिया ने पावेल को पूरी किताब पढ़ कर सुनाई।

कल पांडुलिपि प्रादेशिक पार्टी कमिटी के सांस्कृतिक विभाग के पास लेनिनग्राद भेजी जायगी। अगर किताब मंजूर होती है, तो उसे प्रकाशक को दिया जायगा और फिर...।

इस खयाल से उसका दिल जोर से धड़कने लगा। अगर सब-कुछ ठीक-ठाक रहा तो उसकी नई जिन्दगी शुरू होगी जिसके लिए उसने बरसों हाड़तोड़ मेहनत की थी, मगर हिम्मत न हारी थी।

किताब की किस्मत का फैसला खुद पावेल की [illegible] का फैसला होगा। अगर पांडुलिपि अस्वीकृत होती है, तो इसका मतलब होगा कि पावेल का जीवन शेष। अगर उसके कुछ अंशों को ही खराब पाया जाता है और उसके दोषों को और मेहनत करके दूर किया जा सकता है, तो वह फिर फौरन अपने नये उद्योग में लग जायगा।

उसकी मां पांडुलिपि का पार्सल डाकखाने में ले गई। आतुर प्रतीक्षा के दिन शुरू हुए। इसके पहले जीवन में कभी पावेल ने किसी चिट्ठी के लिए ऐसी आतुर प्रतीक्षा न की थी और न कभी उसे इस दुविधा ने इतना सताया था कि पता नहीं कैसी चिट्ठी आये। सवेरे से लेकर शाम तक वह डाक का इन्तजार करता रहता मानो यही उसकी जिन्दगी का अकेला काम हो। मगर लेनिनग्राद से कोई समाचार न आया।

प्रकाशकों की इस चुप्पी से पावेल को डर मालूम होने लगा। रोज-ब-रोज उसकी यह आशंका बढ़ती गई और पावेल ने इस बात को अपने तईं स्वीकार किया कि किताब के पूरी तरह अस्वीकृत किये जाने के बाद वह जी नहीं सकेगा। यह चीज उसकी सहन-शक्ति के बाहर होगी। तब जीने के लिए उसके पास कोई कारण ही नहीं बचेगा।

ऐसे क्षणों में उसे समुद्र के किनारे वाली पहाड़ी के [illegible] पार्क की याद आती और वह यही सवाल अपने से बार-बार पूछ[illegible]

"क्या तुमने इस फौलादी शिकंजे से बाहर निकलने और लड़ने वालों की कतार में वापस पहुंचने की, अपने जीवन को उपयोगी बनाने की, हर मुमकिन कोशिश की ?"

और उसे जवाब देना पड़ता : "हां, मैं समझता [illegible] किया।"

आखिरकार जब प्रतीक्षा की पीड़ा प्राय: असह्य हो गई तो उसकी मां, जिसे अपने बेटे के बराबर ही वह पीड़ा हो रही थी, एक [illegible] दौड़ती और चिल्लाती हुई कमरे में आई :

यह प्रादेशिक कमिटी का तार था। तार की संक्षिप्त भाषा में लिखा हुआ था : "उपन्यास बहुत पसंद किया गया। प्रकाशकों को दे दिया गया। सफलता पर बधाई !"

उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। उसका हमेशा-हमेशा का संजोया हुआ सपना पूरा हो रहा था। वह फौलादी शिकंजा छिन्न-भिन्न पड़ा था और अब एक नये हथियार से लैस होकर पावेल एक बार फिर जिन्दगी के मैदान में लड़नेवालों की कतार में वापस आ गया था।